बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय

बुद्धकाल में भारतवर्ष तीन मण्डलों, पाँच प्रदेशों और सोलह महाजनपदों में विभक्त था। महामण्डल, मध्यमण्डल और अन्तर्मण्डल—ये तीन मण्डल थे। जो क्रमश ९००, ६००, ३०० योजन विस्तृत थे। सम्पूर्ण भारतवर्ष (= जम्बूद्वीप) का क्षेत्रफल १०,००० योजन था। मध्यम देश, उत्तरापथ, अपरान्तक, दक्षिणापथ और प्राच्य—ये पाँच प्रदेश थे। हम यहाँ इनका सक्षेप में वर्णन करेंगे, जिससे बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय प्राप्त हो सके।

§ १ मध्यम देश

भगवान् बुद्ध ने मध्यम देश में ही विचरण करके बुद्धधर्म का उपदेश किया था। तथागत पद-चारिका करते हुए पश्चिम में मथुरा[१] और कुरु के थुल्लकोट्ठित[२] नगर से आगे नहीं बढ़े थे। पूरब में कजगला निगम के सुखेलु वन[३] और पूर्व-दक्षिण की सललवती नदी[४] के तीर को नहीं पार किया था। दक्षिण में सुसुमारगिरि[५] आदि विन्ध्याचल के आसपास वाले निगमों तक ही गये थे। उत्तर में हिमालय की तलहटी के सापुग[६] निगम और उसीरध्वज[७] पर्वत से ऊपर जाते हुए नहीं दिखाई दिये थे। विनय पिटक में मध्यम देश की सीमा इस प्रकार बतलाई गई है—"पूर्व दिशा में कजगला निगम । पूर्व दक्षिण दिशा में सललवती नदी । दक्षिण दिशा में सेतकण्णिक[८] निगम । पश्चिम दिशा में थूण[९] नामक ब्राह्मणों का ग्राम...। उत्तर दिशा में उसीरध्वज पर्वत ।[१०]"

मध्यम देश ३०० योजन लम्बा और २५० योजन चौड़ा था। इसका परिमण्डल ९०० योजन था। यह जम्बूद्वीप (= भारतवर्ष) का एक बृहद् भाग था। तत्कालीन सोलह जनपदों में से ये १४ जनपद इसी में थे—काशी, कोशल, अंग, मगध, वज्जी, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पञ्चाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्वक और अवन्ति। शेष दो जनपद गन्धार और कम्बोज उत्तरापथ में पड़ते थे।

§ काशी

काशी जनपद की राजधानी वाराणसी (बनारस) थी। बुद्धकाल से पूर्व समय समय पर

---

१ अगुत्तर निकाय ५ २ १०। इस सूत्र में मथुरा नगर के पाँच दोष दिखाये गये हैं।
२ मज्झिम निकाय २ ३ ३२। दिल्ली के आसपास कोई तत्कालीन प्रसिद्ध नगर।
३ मज्झिम निकाय ३ ५ १७। कंकजोल, सथाल परगना, बिहार।
४ वर्तमान सिलई नदी, हजारी बाग और बीरभूमि।
५ चुनार, जिला मिर्जापुर।
६ अगुत्तर निकाय ४ ४ ५ ४।
७ हरिद्वार के पास कोई पर्वत।
८. हजारीबाग जिले में कोई स्थान।
९ आधुनिक थानेश्वर।
१०. विनय पिटक ५ ३ २।

बुद्धकालीन भारत का मानचित्र
६०० ई० पूर्व
द क्षि ण प थ

बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय

बुद्धकाल में भारतवर्ष तीन मण्डलों, पाँच प्रदेशों और सोलह महाजनपदों में विभक्त था।
महामण्डल, मध्यमण्डल और अन्तर्मण्डल—ये तीन मण्डल थे। जो क्रमशः ९००, ६००, ३०० योजन
विस्तृत थे। सम्पूर्ण भारतवर्ष (= जम्बूद्वीप) का क्षेत्रफल १०,००० योजन था। मध्यम देश, उत्तरापथ,
अपरान्तक, दक्षिणापथ और प्राच्य—ये पाँच प्रदेश थे। हम यहाँ इनका सक्षेप में वर्णन करेंगे, जिससे
बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय प्राप्त हो सके।

§ १. मध्यम देश

भगवान् बुद्ध ने मध्यम देश में ही विचरण करके बुद्धधर्म का उपदेश किया था। तथागत पद-
चारिका करते हुए पश्चिम में मथुरा[1] और कुरु के थुल्लकोट्ठित[2] नगर से आगे नहीं बढ़े थे।
पूरब में कजगला निगम के सुखेलु वन[3] और पूर्व-दक्षिण की सललवती नदी[4] के तीर को नहीं पार किया
था। दक्षिण में सुसुमारगिरि[5] आदि विन्ध्याचल के आसपास वाले निगमों तक ही गये थे। उत्तर में
हिमालय की तलहटी के सापुग[6] निगम और उसीरध्वज[7] पर्वत से ऊपर जाते हुए नहीं दिखाई दिये
थे। विनय पिटक में मध्यम देश की सीमा इस प्रकार बतलाई गई है—"पूर्व दिशा में कजगला निगम
। पूर्व दक्षिण दिशा में सललवती नदी । दक्षिण दिशा में सेतकण्णिक[8] निगम । पश्चिम दिशा
में थूण[9] नामक ब्राह्मणों का ग्राम । उत्तर दिशा में उसीरध्वज पर्वत ।[10]"

मध्यम देश ३०० योजन लम्बा और २५० योजन चौड़ा था। इसका परिमण्डल ९०० योजन
था। यह जम्बूद्वीप (= भारतवर्ष) का एक बृहद् भाग था। तत्कालीन सोलह जनपदों में से ये १४
जनपद इसी में थे—काशी, कोशल, अंग, मगध, वज्जी, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पञ्चाल, मत्स्य, शूरसेन,
अश्वक और अवन्ति। शेष दो जनपद गन्धार और कम्बोज उत्तरापथ में पड़ते थे।

§ काशी

काशी जनपद की राजधानी वाराणसी (बनारस) थी। बुद्धकाल से पूर्व समय समय पर

---

१ अंगुत्तर निकाय ५ २ १०। इस सूत्र में मथुरा नगर के पाँच दोष दिखाये गये हैं।
२ मज्झिम निकाय २ ३ ३२। दिल्ली के आसपास कोई तत्कालीन प्रसिद्ध नगर।
३. मज्झिम निकाय ३ ५ १७। ककजोल, सथाल परगना, बिहार।
४ वर्तमान सिलई नदी, हजारी बाग और बीरभूमि।
५ चुनार, जिला मिर्जापुर।
६ अंगुत्तर निकाय ४ ४ ५ ४।
७ हरिद्वार के पास कोई पर्वत।
८ हजारीबाग जिले में कोई स्थान।
९. आधुनिक थानेश्वर।
१० विनय पिटक ५ ३ २।

सुरुन्धन सुदर्शन ब्रह्मवर्द्धन पुष्पवती मालिनी और रम्यनगर इसके नाम थे। इस नगर का विस्तार १२ योजन था। भगवान् बुद्ध से पूर्व काशी राजनीतिक क्षेत्र में शक्तिशाली जनपद था। काशी और कोसल के राजाओं में प्रायः युद्ध हुआ करते थे जिनमें काशी का राजा विजयी होता था। उस समय सम्पूर्ण उत्तर भारत में काशी जनपद सब से बलशाली था। किन्तु, बुद्धकाल में उसकी राजनीतिक शक्ति क्षीण हो गई थी। इसका कुछ भाग कोसल नरेश और कुछ भाग मगध नरेश के अधीन था। उनमें भी प्रायः काशी के लिये ही युद्ध हुआ करते थे। अन्त में काशी कोसल नरेश प्रसेनजित् के अधिकार से निकलकर मगध नरेश अजातशत्रु के अधीन हो गया था।

वाराणसी के पास ऋषिपतन मृगदाय (सारनाथ) में भगवान् बुद्ध ने धर्मचक्र प्रवर्तन करके इसके महत्त्व को बढ़ा दिया। ऋषिपतन मृगदाय बौद्ध धर्म का एक महातीर्थ है।

वाराणसी शिल्प व्यवसाय विद्या आदि का बहुत बड़ा केन्द्र था। इसका व्यावसायिक सम्बन्ध श्रावस्ती तक्षशिला, राजगृह आदि नगरों से था। काशी का चन्दन और काशी के रंग-बिरंगे वस्त्र बहुत प्रसिद्ध थे।

§ कोशल

कोसल की राजधानियाँ श्रावस्ती और साकेत नगर थे। अयोध्या सरयू नदी के किनारे स्थित एक कस्बा था किन्तु बुद्धकाल में इसकी प्रसिद्धि न थी। कहा जाता है कि श्रावस्ती नामक ऋषि के नाम पर ही श्रावस्ती नगर का नाम पड़ा था किन्तु पपञ्चसूदनी के अनुसार सब कुछ होने के कारण (= सर्व+अस्ति) इसका नाम श्रावस्ती पड़ा था।

श्रावस्ती नगर बड़ा समृद्धिशाली एवं सुन्दर था। इस नगर की आबादी सात करोड़ थी। भगवान् बुद्ध ने यहाँ २५ वर्षावास किया था और अधिकांश उपदेश यहीं पर किया था। अनाथपिण्डिक यहाँ का बहुत बड़ा सेठ था और मृगारमाता विशाखा बड़ी श्रद्धावान् उपासिका थी। पटाचारा कृशा गौतमी नन्द कंखा रेवत और कोसल नरेश की बहिन सुमना इसी नगर के प्रसिद्ध व्यक्ति थे।

प्राचीन कोसल राज्य दो भागों में विभक्त था। सरयू नदी दोनों भागों के मध्य स्थित थी। उत्तरी भाग को उत्तर-कोसल और दक्षिणी भाग को दक्षिण-कोसल कहा जाता था।

कोसल जनपद में अनेक प्रसिद्ध निगम और ग्राम थे। कोसल का प्रसिद्ध आचार्य पोक्खरसाति उक्कट्ठा नगर में रहता था जिसे प्रसेनजित् ने उसे प्रदान किया था। कोसल जनपद के साला नगरविन्द और वेनागपुर ग्रामों में जाकर भगवान् बुद्ध ने बहुत से लोगों को दीक्षित किया था। बावरी कोसल का प्रसिद्ध अध्यापक था जो दक्षिणापथ में जाकर गोदावरी नदी के किनारे अपना आश्रम बनाया था।

हम ऊपर कह आये हैं कि कोसल और मगध में वाराणसी के लिए प्रायः युद्ध हुआ करता था किन्तु बाद में दोनों में सन्धि हो गई थी। सन्धि के पश्चात् कोसल नरेश प्रसेनजित् ने अपनी पुत्री वजिरा का विवाह मगध नरेश अजातशत्रु से कर दिया था। कोसल की उत्तरी सीमा पर स्थित कपिलवस्तु के शाक्य प्रसेनजित् के अधीन थे और वे कोसल नरेश प्रसेनजित् से बड़ी ईर्ष्या रखते थे।

दण्डकप्पक नळकपान तोरणवत्थु और पङ्कधम—ये कोसल जनपद के प्रसिद्ध ग्राम थे जहाँ पर भगवान् समय-समय पर गये थे और उपदेश दिये थे।

§ अङ्ग

अङ्ग जनपद की राजधानी चम्पा नगरी थी जो चम्पा और गंगा के संगम पर बसी थी। चम्पा मिथिला से ६ योजन दूर थी। अंग जनपद वर्तमान भागलपुर और मुँगेर जिलों के साथ उत्तर में कोसी नदी तक फैला हुआ था। कभी यह मगध जनपद के अन्तर्गत था और सम्भवतः समुद्र के किनारे तक विस्तृत था। अंग की प्राचीन राजधानी के खँडहर सम्प्रति भागलपुर के निकट चम्पा नगर

और चम्पापुर—इन दो गाँवो में विद्यमान हैं। महापरिनिर्वाण सुत्त के अनुसार चम्पा बुद्धकाल में भारत के छ. बड़े नगरों में से थी। चम्पा से सुवर्ण-भूमि (लोअर बर्मा) के लिये व्यापारी नदी और समुद्र-मार्ग से जाते थे। अंग जनपद में ८०,००० गाँव थे। आपण अग का एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। महागोविन्द सुत्त से प्रगट है कि अग भारत के सात बड़े राजनीतिक भागों में से एक था। भगवान् बुद्ध से पूर्व अंग एक शक्तिशाली राज्य था। जातक से ज्ञात होता है कि किसी समय मगध भी अग नरेश के अधीन था। बुद्धकाल में अग ने अपने राजनीतिक महत्व को खो दिया और एक युद्ध के पश्चात् अंग मगध नरेश सेनिय बिम्बिसार के अधीन हो गया। चम्पा की रानी गग्गरा द्वारा गग्गरा-पुष्करिणी खोदवाई गई थी। भगवान् बुद्ध भिक्षुसंघ के साथ वहाँ गये थे और उसके किनारे वास किया था। अग जनपद का एक दूसरा नगर अश्वपुर था, जहाँ के बहुत से कुलपुत्र भगवान् के पास आकर भिक्षु हो गये थे।

§ मगध

मगध जनपद वर्तमान गया और पटना जिलों के अन्तर्गत फैला हुआ था। इसकी राजधानी गिरिव्रज अथवा राजगृह थी, जो पहाड़ियों से घिरी हुई थी। इन पहाड़ियों के नाम थे—ऋषिगिलि, वेपुल्ल, वेभार, पाण्डव और गृद्धकूट। इस नगर से होकर तपोदा नदी बहती थी। सेनानी निगम भी मगध का ही एक रमणीय वन-प्रदेश था। एकनाला, नालकग्राम, खाणुमत, और अम्बकविन्द इस जनपद के प्रसिद्ध नगर थे। वज्जी और मगध जनपदों के बीच गगा नदी सीमा थी। उस पर दोनों राज्यों का समान अधिकार था। अग और मगध में समय-समय पर युद्ध हुआ करता था। एक बार वाराणसी के राजा ने मगध और अंग दोनों को अपने अधीन कर लिया था। बुद्धकाल में अग मगध के अधीन था। मगध और कोशल में भी प्राय युद्ध हुआ करता था। पीछे अजातशत्रु ने लिच्छवियों की सहायता से कोशल पर विजय पाई थी। मगध का जीवक कौमारभृत्य भारत-प्रसिद्ध वैद्य था। उसकी शिक्षा तक्षशिला में हुई थी। राजगृह में वेलुवन कलन्दक निवाप प्रसिद्ध बुद्ध विहार था। राजगृह में ही प्रथम सगीति हुई थी। राजगृह के पास ही नालन्दा एक छोटा ग्राम था। मगध का एक सुप्रसिद्ध किला था, जिसकी मरम्मत वर्षकार ने करायी थी। बाद में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र नगर हुआ था। अशोक-काल में उसकी दैनिक आय ४००,००० कार्षापण थी।

§ वज्जी

वज्जी जनपद की राजधानी वैशाली थी, जो इस समय विहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर जिले के बसाढ़ गाँव में मानी जाती है। वज्जी जनपद में लिच्छवियों का गणतन्त्र शासन था। यहाँ से खोदाई में प्राप्त लेखों से वैशाली नगर प्रमाणित हो चुका है। इस नगर की जनसख्या की वृद्धि से नगर-प्राकार को तीन बार विशाल करने के ही कारण इसका वैशाली नाम पड़ा था। वैशाली समृद्धिशाली नगरी थी। उसमें ७७०७ प्रासाद, ७७०७ कूटागार (कोठे), ७७०७ उद्यान-गृह (आराम) और ७७०७ पुष्करिणियाँ थीं। वहाँ ७७०७ राजा, ७७०७ युवराज, ७७०७ सेनापति और इतने ही भण्डागारिक थे। नगर के बीच में एक सस्थागार (ससद-भवन) था। नगर में उदयन, गौतमक, सप्ताम्रक, बहुपुत्रक, और सारदद चैत्य थे। भगवान् बुद्ध ने वैशाली के लिच्छवियों की उपमा तावतिंस लोक के देवों से की थी। वैशाली की प्रसिद्ध गणिका अम्बपाली ने बुद्ध को भोजन दान दिया था। विमला, सिंहा, वासिष्ठी, अम्बपाली और रोहिणी वैशाली की प्रसिद्ध भिक्षुणियाँ थीं। वर्द्धमान स्थविर, अजनवनिय, वज्जीपुत्त, सुयाम, पियञ्जह, वसभ, वल्लिय और सब्बकामी यहाँ के प्रसिद्ध भिक्षु थे। सिंह सेनापति, महानाम, दुर्मुख, सुनक्खत्त आर उग्र गृहपति वैशाली के प्रसिद्ध गृहस्थ थे। वैशाली के पास महावन में कूटागारशाला नामक विहार था। वहीं पर सर्वप्रथम महाप्रजापति गौतमी के साथ अनेक शाक्य महिलायें भिक्षुणी हुईं

थी। वैशाली में ही दूसरी संगीति हुई थी। वैशाली गणतंत्र को बुद्ध-परिनिर्वाण के तीन वर्ष बाद ही फूट डालकर मगध-नरेश अजातशत्रु ने हड़प लिया था।

§ मल्ल

मल्ल गणतन्त्र जनपद था। यह दो भागों में विभक्त था। कुसीनारा और पावा इसकी दो राजधानियाँ थीं। अनूपिया भूणग्राम, उरुवेलकप्प बलिहरण वनसण्ड भोगनगर और आम्रग्राम इसके प्रसिद्ध नगर थे। देवरिया जिले का कुसीनगर ही कुसीनारा थी और फाजिलनगर-सठियाँव पावा। कुसीनारा राजधानी के महावशेष कुसीनगर के निकट अनुरुधवा ग्राम में विद्यमान हैं। कुसीनारा का प्राचीन नाम कुसावती था। यह नगर बड़ा समृद्ध एवं उन्नतिशील था। बोधिसत्व यहाँ कई बार चक्रवर्ती राजा होकर उत्पन्न हुए थे। पूर्व काल में यह १२ योजन लम्बा और ७ योजन चौड़ा था। महापरिनिर्वाण सुत्त से राजगृह से कुसीनारा तक आने का मार्ग विदित होता है। भगवान् बुद्ध ने अन्तिम समय में इसी मार्ग से यात्रा की थी—राजगृह अम्बलट्ठिका नालन्दा पाटलिग्राम कोटिग्राम नादिका वैशाली भण्डग्राम हत्थिग्राम (वर्तमान हाथीखाल), आम्रग्राम (अमया) जम्बुग्राम भोगनगर और पावा। पावा में चुन्द के घर बुद्ध ने अन्तिम भोजन ग्रहण किया था। पावा और कुसीनारा के मध्य तीन नदियाँ थीं जिनमें ककुत्था (घाघी) और हिरञ्ञवती के नाम ग्रन्थों में मिलते हैं। हिरञ्ञवती के पश्चिमी तट पर ही कुसीनारा थी और यहीं सालवन उपवत्तन में बुद्ध का परिनिर्वाण हुआ था। पावा के चुन्द कम्मारपुत्त चण्डसुमन पाथिक सुयाम खण्डिय और उग्गिय प्रसिद्ध व्यक्ति थे। कुसीनारा की महा विभूतियों थीं दब्ब स्थविर आयुष्मान् सिंह यशदत्त स्थविर बन्धुलमल्ल दीर्घकारायण रोजमल्ल वज्रपाणि मल्ल और वीरांगना मल्लिका। बुद्ध-परिनिर्वाण के बाद पावा और कुसीनारा में धातु-स्तूप बने थे।

§ चेदि

चेदि जनपद यमुना के पास कुरु जनपद के निकट था। यह वर्तमान बुन्देलखण्ड को लिये हुए विस्तृत था। इसकी राजधानी सोत्थिवती नगर था। इसके दूसरे प्रमुख नगर सहजाति और त्रिपुरी थे। वेदब्भ जातक से ज्ञात होता है कि काशी और चेदि के बीच बहुत डाकू रहते थे। जेतुत्तर नगर से चेदि राष्ट्र ३० योजन दूर था। सहजाति में महाचुन्द ने उपदेश दिया था। यह बौद्ध धर्म का एक बड़ा केन्द्र था। आयुष्मान् अनुरुद्ध ने चेदि राष्ट्र के प्राचीनवंश मृगदाव में रहते हुए अर्हत्व प्राप्त किया था। सहजातिक भी चेदि जनपद का एक प्रसिद्ध ग्राम था जहाँ भगवान् बुद्ध गये थे।

§ वत्स

वत्स जनपद भारत के सोलह बड़े जनपदों में से एक था। इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। इस समय उसके महावशेष इलाहाबाद से ३० मील पश्चिम यमुना नदी के किनारे कोसम नामक ग्राम में स्थित हैं। सुंसुमारगिरि का भग राज्य वत्स जनपद में ही पड़ता था। कौशाम्बी बुद्धकालीन बड़ी नगरी थी। जटिलों के नेता बावरी ने कौसाम्बी की यात्रा की थी। कौसाम्बी में घोषिताराम कुक्कुटाराम और पावारिकाराम तीन प्रसिद्ध विहार थे जिन्हें क्रमशः यहाँ के प्रसिद्ध सेठ घोषित कुक्कुट और पावारिक ने बनवाये थे। भगवान् बुद्ध ने इन विहारों में निवास किया था और भिक्षु संघ को उपदेश दिया था। यहीं पर संघ में फूट भी पड़ी हुई थी जो पीछे शान्त हो गई थी। बुद्धकाल में राजा उदयन यहाँ राज्य करता था उसकी मागन्दी श्यामावती और वासुलदत्ता तीन रानियाँ थीं जिनमें श्यामावती परम बुद्ध-भक्त उपासिका थी।

§ कुरु

प्राचीन साहित्य में दो कुरु जनपदों का वर्णन मिलता है—उत्तर कुरु और दक्षिण कुरु

ऋग्वेद में वर्णित कुरु सम्भवत उत्तर कुरु ही है। पालि साहित्य में वर्णित कुरु जनपद ८००० योजन विस्तृत था। कुरु जनपद के राजाओं को कौरव्य कहा जाता था। कम्मासदम्म कुरु जनपद का एक प्रसिद्ध नगर था, जहाँ बुद्ध ने महासतिपट्ठान और महानिदान जैसे महत्वपूर्ण एव गम्भीर सूत्रों का उपदेश किया था। इस जनपद का दूसरा प्रमुख नगर थुल्लकोट्ठित था। राष्ट्रपाल स्थविर इसी नगर से प्रव्रजित हुए प्रसिद्ध भिक्षु थे।

कुरु जनपद के उत्तर सरस्वती तथा दक्षिण दृश्यवती नदियाँ वहती थीं। वर्तमान सोनपत, अमिन, कर्नाल और पानीपत के जिले कुरु जनपद में ही पड़ते हैं। महासुतसोम जातक के अनुसार कुरु जनपद ३०० योजन विस्तृत था। इसकी राजधानी इन्दपट्टन (इन्द्रप्रस्थ) नगर था, जो सात योजन में फैला हुआ था।

§ पञ्चाल

पञ्चाल जनपद भागीरथी नदी से दो भागों मे विभक्त था—उत्तर पञ्चाल और दक्षिण पञ्चाल। उत्तर पञ्चाल की राजधानी अहिच्छत्र नगर था, जहाँ दुर्मुख नामक राजा राज्य करता था। वर्तमान समय मे बरेली जिले का रामनगर ही अहिच्छत्र माना जाता है। दक्षिण पञ्चाल की राजधानी काम्पिल्य नगर था, जो फरुक्खाबाद जिले के कम्पिल के स्थान पर स्थित था। समय-समय पर राजाओं की इच्छा के अनुसार काम्पिल्य नगर मे भी उत्तर पञ्चाल की राजधानी रहा करती थी। पञ्चाल-नरेश की भगिनी का पुत्र विशाख श्रावस्ती जाकर भगवान् के पास दीक्षित हुआ और छ अभिज्ञाओं को प्राप्त किया था। पञ्चाल जनपद में वर्तमान बदाऊँ, फरुक्खाबाद, और उत्तर प्रदेश के समीपवर्ती जिले पड़ते हैं।

§ मत्स्य

मत्स्य जनपद वर्तमान जयपुर राज्य मे पड़ता था। इसके अन्तर्गत पूरा अलवर राज्य और भरतपुर का कुछ भाग भी पड़ता है। मत्स्य जनपद की राजधानी विराट नगर था। नादिका के गिञ्जिकावसथ में विहार करते हुए भगवान् बुद्ध ने मत्स्य जनपद का वर्णन किया था। यह इन्द्रप्रस्थ के दक्षिण-पश्चिम और सूरसेन के दक्षिण स्थित था।

§ शूरसेन

शूरसेन जनपद की राजधानी मधुरा नगरी (मथुरा) थी, जो कौशाम्बी की भाँति यमुना के किनारे बसी थी। यहाँ पर भगवान् बुद्ध गये थे और मथुरा के विहार में वास किया था। मधुरा प्रदेश में महाकात्यायन ने घूम-घूम कर बुद्ध धर्म का प्रचार किया था। उस समय शूरसेन का राजा अवन्तिपुत्र था। वर्तमान मथुरा से ५ मील दक्षिण पश्चिम स्थित महोली नामक स्थान प्राचीन मधुरा नगरी मानी जाती है। दक्षिण भारत में भी प्राचीन काल में मथुरा नामक एक नगर था, जिसे दक्षिण मधुरा कहा जाता था। वह पाण्ड्य राज्य की राजधानी था। उसके नष्टावशेष इस समय मद्रास प्रान्त में वैगी नदी के किनारे विद्यमान है।

§ अश्वक

अश्वक जनपद की राजधानी पोतन नगर था। अश्वक-नरेश महाकात्यायन द्वारा प्रव्रजित हो गया था। जातक से ज्ञात होता है कि दन्तपुर नरेश कालिंग और अश्वक नरेश मे पहले संघर्ष हुआ करता था, किन्तु पीछे दोनों का मैत्री सम्बन्ध हो गया था। पोतन कभी काशी राज्य में भी गिना जाता था। यह अश्वक गोदावरी के किनारे तक विस्तृत था। बावरी गोदावरी के किनारे अश्वक जनपद में ही

जिले की मवान तहसील में विद्यमान हैं। सिंहपुर हुएनसांग के समय में तक्षशिला से ११७ मील पूर्व स्थित था। अन्य नगरों का कुछ पता नहीं।

अल्लकप्प—वैशाली के लिच्छवियों, मिथिला के विदेहों, कपिलवस्तु के शाक्यों, रामग्राम के कोलियों, सुंसुमारगिरि के भर्गों और पिप्पलिवन के मौर्यों की भाँति अल्लकप्प के बुलियों का भी अपना स्वतन्त्र राज्य था, किन्तु बहुत शक्तिशाली न था। यह १० योजन विस्तृत था। इसका सम्बन्ध वेठदीप के राजवंश से था। श्री बील का कथन है कि वेठदीप का द्रोण ब्राह्मण शाहाबाद जिले में मसार से वैशाली जानेवाले मार्ग में रहता था। अत अल्लकप्प वेठदीप से बहुत दूर न रहा होगा। अल्लकप्प के बुलियों को बुद्धधातु का एक अंश मिला था, जिसपर उन्होंने स्तूप बनवाया था।

भद्दिय—अङ्ग जनपद के भद्दिय नगर में महोपासिका विशाखा का जन्म हुआ था।

वेलुवग्राम—यह वैशाली में था।

भण्डग्राम—यह वज्जी जनपद में स्थित था।

धर्मपाल ग्राम—यह काशी जनपद का एक ग्राम था।

एकशाला—यह कोशल जनपद में एक ब्राह्मण ग्राम था।

एकनाला—यह मगध के दक्षिणागिरि प्रदेश में एक ब्राह्मण ग्राम था, जहाँ भगवान् ने वास किया था।

एरकच्छ—यह दसण्ण राज्य का एक नगर था।

ऋषिपतन—यह ऋषिपतन मृगदाय वर्तमान सारनाथ है, जहाँ भगवान् ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था।

गया—गया में भगवान् बुद्ध ने सूचिलोम यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिया था। प्राचीन गया वर्तमान साहबगंज माना जाता है। यहाँ से ६ मील दक्षिण बुद्धगया स्थित है। गयातीर्थ बुद्धकाल में स्नानतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध था और यहाँ बहुत से जटिल रहा करते थे।

हस्तिग्राम—यह वज्जी जनपद का एक ग्राम था। भगवान् बुद्ध वैशाली से कुशीनगर जाते हुए हस्तिग्राम से होकर गुजरे थे। वर्तमान समय में यह विहार प्रान्त के हथुवा से ८ मील पश्चिम शिवपुर कोठी के पास अवस्थित है। आजकल उसके नष्टावशेष को हाथीखाल कहा जाता है। हस्तिग्राम का उग्गत गृहपति संघसेवकों में सबसे बढ़कर था, जिसे बुद्ध ने अग्र की उपाधि दी थी।

हलिद्दवसन—यह कोलिय जनपद का एक ग्राम था। यहाँ भगवान् बुद्ध गये थे। कोलिय जनपद की राजधानी रामग्राम थी और यह जनपद शाक्य जनपद के पूर्व तथा मल्ल जनपद के पश्चिम दोनों के मध्य स्थित था।

हिमवन्त प्रदेश—कोशल, शाक्य, कोलिय, मल्ल और वज्जी जनपदों के उत्तर में फैली पहाड़ी ही हिमवन्त प्रदेश कहलाती है। इसमें नेपाल के साथ हिमालय प्रदेश के सभी दक्षिणी प्रदेश सम्मिलित हैं।

इच्छानङ्गल—कोशल जनपद में यह एक ब्राह्मण ग्राम था। भगवान् ने इच्छानंगल वनसण्ड में वास किया था।

जन्तुग्राम—चालिका प्रदेश के चालिका पर्वत के पास जन्तुग्राम था। भगवान् के चालिका पर्वत पर विहार करते समय मेघिय स्थविर जन्तुग्राम में भिक्षाटन करने गये थे और उसके बाद किमिकाला नदी के तीर जाकर विहार किया था।

कलवालगामक—यह मगध में एक ग्राम था। यहीं पर मौद्गल्यायन स्थविर को अर्हत्व की प्राप्ति हुई थी।

आश्रम बना कर रहता था। वर्तमान पैठन जिला ही अस्सक जनपद माना जाता है। वहाँ से अस्सक नरेश का एक शिलालेख भी प्राप्त हो चुका है। महागोविन्द सुत्त के अनुसार यह महागोविन्द द्वारा निर्मित हुआ था।

§ अवन्ति

अवन्ति जनपद की राजधानी उज्जैनी नगरी थी जो अच्चुतगामी द्वारा बसायी गई थी। अवन्ति जनपद में वर्तमान मालवा, निमार और मध्यभारत के निकटवर्ती प्रदेश पड़ते थे। अवन्ति जनपद दो भागों में विभक्त था। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैनी में थी और दक्षिणी भाग की राजधानी माहिष्मती में। महागोविन्द सुत्त के अनुसार अवन्ति की राजधानी माहिष्मती थी वहाँ का राजा वेस्सभू था। कुररघर और सुदर्शनपुर अवन्ति जनपद के प्रसिद्ध नगर थे।

अवन्ति जनपद बौद्धधर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र था। अभयकुमार, इसिदासी, इसिदत्त, सोणकुटि कण्ण और महाकात्यायन अवन्ति जनपद की महाविभूतियाँ थीं। महाकात्यायन उज्जैनी-नरेश चण्ड-प्रद्योत के पुरोहित पुत्र थे। चण्डप्रद्योत को महाकात्यायन ने ही बौद्ध बनाया था। भिक्षु इसिदत्त अवन्ति के वेणुग्राम के रहने वाले थे।

कौशाम्बी और अवन्ति के राजघरानों में वैवाहिक सम्बन्ध था। चण्डप्रद्योत तथा उदयन में कई बार युद्ध हुए। अन्त में चण्डप्रद्योत ने अपनी पुत्री वासवदत्ता का विवाह उदयन से कर दिया था और दोनों मित्र हो गये थे। उदयन ने मगध के साथ भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया था जिससे कौशाम्बी दोनों ओर से सुरक्षित थी।

अवन्ति की राजधानी उज्जैनी से अशोक का एक शिलालेख मिल चुका है।

§ नगर, ग्राम और कस्बे

अपर गया—भगवान् उरुवेला से गया गये थे और गया से अपर-गया जहाँ उन्हें नागराज सुदर्शन ने निमन्त्रित किया था।

अम्बसण्ड—राजगृह के पूरब अम्बसण्ड नामक एक ब्राह्मण ग्राम था।

अन्धकविन्द—मगध के अन्धकविन्द ग्राम में भगवान् रहे थे जहाँ सहम्पति ब्रह्मा ने उनका दर्शन करके स्तुति की थी।

अयोध्या—यहाँ भगवान् गये थे और वास किया था। पालि साहित्य के अनुसार यह गंगा नदी के किनारे स्थित था। फिर भी वर्तमान अयोध्या नगर ही माना जाता है। बुद्धकाल में यह बहुत छोटा नगर था।

अन्धपुर—यह एक नगर था जो तेलवाह नदी के किनारे बसा था।

आळवी—आळवी में अग्गाळव नामक प्रसिद्ध चैत्य था जहाँ बुद्ध ने वास किया था। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के नवल (या नेवल) को आळवी माना जाता है।

अनूपिया—यह मल्ल जनपद का एक प्रमुख निगम (कस्बा) था। यहीं पर सिद्धार्थ कुमार ने प्रव्रजित होने के बाद एक सप्ताह निवास किया था और यहीं अनुरुद्ध, भद्दिय, किम्बिल, भृगु, देवदत्त, आनन्द और उपालि प्रव्रजित हुए थे। दब्बमल्ल भी यहीं प्रव्रजित हुए थे। वर्तमान समय में देवरिया जिले में दाहा के पास मझना नदी के किनारे का खँडहर ही अनूपिया नगर माना जाता है जिसे आजकल 'बादरप' कहते हैं।

अस्सपुर—राजा चेति के लड़कों ने हस्तिपुर, अस्सपुर, सिंहपुर, उत्तर पञ्चाल और दद्दरपुर नगरों को बसाया था। हत्थिपुर ही पीछे हस्तिनापुर हो गया था और इस समय इसके भग्नावशेष मेरठ

जिले की मवान तहसील में विद्यमान हैं। सिंहपुर हुएनसाग के समय में तक्षशिला से ११७ मील पूरब स्थित था। अन्य नगरों का कुछ पता नहीं।

अल्लकप्प—वैशाली के लिच्छवियों, मिथिला के विदेहों, कपिलवस्तु के शाक्यों, रामग्राम के कोलियो, सुसुमारगिरि के भर्गों और पिप्पलिवन के मौर्यों की भाँति अल्लकप्प के बुलियो का भी अपना स्वतन्त्र राज्य था, किन्तु बहुत शक्तिशाली न था। यह १० योजन विस्तृत था। इसका सम्बन्ध वेठदीप के राजवंश से था। श्री बील का कथन है कि वेठदीप का द्रोण ब्राह्मण शाहाबाद जिले में मसार से वैशाली जानेवाले मार्ग में रहता था। अत. अल्लकप्प वेठदीप से बहुत दूर न रहा होगा। अल्लकप्प के बुलियों को बुद्धधातु का एक अंश मिला था, जिसपर उन्होंने स्तूप बनवाया था।

भद्दिय—अङ्ग जनपद के भद्दिय नगर में महोपासिका विशाखा का जन्म हुआ था।

वेलुवग्राम—यह वैशाली में था।

भण्डग्राम—यह वज्जी जनपद में स्थित था।

धर्मपाल ग्राम—यह काशी जनपद का एक ग्राम था।

एकशाला—यह कोशल जनपद में एक ब्राह्मण ग्राम था।

एकनाला—यह मगध के दक्षिणागिरि प्रदेश में एक ब्राह्मण ग्राम था, जहाँ भगवान् ने वास किया था।

एरकच्छ—यह दसण्ण राज्य का एक नगर था।

ऋषिपतन—यह ऋषिपतन मृगदाय वर्तमान सारनाथ है, जहाँ भगवान् ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था।

गया—गया में भगवान् बुद्ध ने सूचिलोम यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिया था। प्राचीन गया वर्तमान साहबगज माना जाता है। यहाँ से ६ मील दक्षिण बुद्धगया स्थित है। गयातीर्थ बुद्धकाल में स्नानतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध था और यहाँ बहुत से जटिल रहा करते थे।

हस्तिग्राम—यह वज्जी जनपद का एक ग्राम था। भगवान् बुद्ध वैशाली से कुशीनगर जाते हुए हस्तिग्राम से होकर गुजरे थे। वर्तमान समय में यह विहार प्रान्त के हथुवा से ८ मील पश्चिम शिवपुर कोठी के पास अवस्थित है। आजकल उसके नष्टावशेष को हाथीखाल कहा जाता है। हस्तिग्राम का उग्गत गृहपति सघसेवकों में सबसे बढ़कर था, जिसे बुद्ध ने अग्र की उपाधि दी थी।

हलिद्दवसन—यह कोलिय जनपद का एक ग्राम था। यहाँ भगवान् बुद्ध गये थे। कोलिय जनपद की राजधानी रामग्राम थी और यह जनपद शाक्य जनपद के पूर्व तथा मल्ल जनपद के पश्चिम दोनों के मध्य स्थित था।

हिमवन्त प्रदेश—कोशल, शाक्य, कोलिय, मल्ल और वज्जी जनपदों के उत्तर में फैली पहाड़ी ही हिमवन्त प्रदेश कहलाती है। इसमें नेपाल के साथ हिमालय प्रदेश के सभी दक्षिणी प्रदेश सम्मिलित हैं।

इच्छानङ्गल—कोशल जनपद में यह एक ब्राह्मण ग्राम था। भगवान् ने इच्छानगल वनसण्ड में वास किया था।

जन्तुग्राम—चालिका प्रदेश के चालिका पर्वत के पास जन्तुग्राम था। भगवान् के चालिका पर्वत पर विहार करते समय मेघिय स्थविर जन्तुग्राम में भिक्षाटन करने गये थे और उसके बाद किमिकाला नदी के तीर जाकर विहार किया था।

कलवालगामक—यह मगध में एक ग्राम था। यहीं पर मौद्गल्यायन स्थविर को अर्हत्त्व की प्राप्ति हुई थी।

कजंगल—यह मध्यम देश की पूर्वी सीमा पर स्थित एक ग्राम था। यहाँ के वेळुवन और सुवेळुवन में तथागत ने विहार किया था। मिलिन्द प्रश्न के अनुसार यह एक ब्राह्मण ग्राम था और इसी ग्राम में नागसेन का जन्म हुआ था। वर्तमान समय में बिहार प्रान्त के संथाल परगना में कंकजोल नामक स्थान को ही कजंगल माना जाता है।

कोटिग्राम—यह वज्जी जनपद में एक ग्राम था। भगवान् पाटलिग्राम से यहाँ आये थे यहाँ से नादिका गये थे और नादिका से वैशाली।

कुण्डिय—यह कोलिय जनपद में एक ग्राम था। कुण्डिय के कुण्डिधानवन में भगवान् ने विहार किया था और सुप्पवासा को स्वस्ति-पूर्वक पुत्र जनने का आशीर्वाद दिया था।

कपिलवस्तु—यह शाक्य जनपद की राजधानी थी। सिद्धार्थ गौतम का जन्म कपिलवस्तु के ही शाक्य राजवंश में हुआ था। शाक्य जनपद में चातुमा सामगाम उलुम्प सक्कर खोमदुस्स प्रसिद्ध ग्राम एवं नगर थे। इसे कोशलनरेश विडूडभ ने आक्रमण करके नष्ट कर दिया था। वर्तमान समयमें इसके महावशेष नेपाल की तराई में बस्ती जिले के सुहरतगढ़ स्टेशन से १२ मील उत्तर तौलिहवा बाजार के पास तिलौराकोट नाम से विद्यमान हैं।

केसपुत्त—यह कोशल जनपद के अन्तर्गत एक छोटा-सा स्वतन्त्र राज्य था। यहाँ के कालाम मल्ल शाक्य मौर्य और लिच्छवी राज्यों की भाँति गणतन्त्र प्रणाली से शासन करते थे।

खेमावती—यह खेमनरेश के राज्य की राजधानी थी।

मिथिला—मिथिला विदेह की राजधानी थी। बुद्धकाल में यह वज्जी जनपद के अन्तर्गत थी। वज्जी जनपद की वैशाली और विदेहों की मिथिला—यह प्रसिद्ध नगरियाँ थीं। प्राचीनकाल में मिथिला नगरी सात योजन विस्तृत थी और विदेह राष्ट्र ३ योजन। चम्पा और मिथिला में ६ योजन की दूरी थी। विदेह राज्य में १५ ग्राम ११ भण्डारगृह और ११ नर्तकियाँ थीं—ऐसा जातक-कथा से ज्ञात होता है। मिथिला एक व्यापारिक केन्द्र था। श्रावस्ती और वाराणसी से व्यापारी यहाँ आते थे। वर्तमान तिरहुत (तीर भुक्ति) ही विदेह माना जाता है। मिथिला के प्राचीन अवशेष बिहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिलों के उत्तर में नेपाल की सीमा पर जनकपुर नामक कस्बे में पाये जाते हैं।

मचलग्राम—यह मगध में एक ग्राम था।

नालन्दा—यह मगध में राजगृह से १ योजन की दूरी पर स्थित था। यहाँ के पावारिक-आम्र-वन में भगवान् ने विहार किया था। वर्तमान समय में यह पटना जिले के राजगृह से ७ मील उत्तर पश्चिम में अवस्थित है। इसके विशाल खण्डहर दर्शनीय हैं। यह छठीं और सातवीं शताब्दी ईस्वी में प्रधान बौद्ध-विद्या-केन्द्र था।

नालक—यह राजगृह के पास मगध में एक ग्राम था। इसी ग्राम में सारिपुत्र का जन्म हुआ था और यहीं उनका परिनिर्वाण भी। वर्तमान समय में राजगृह के पास का नानन्द ग्राम ही प्राचीन नालक माना जाता है।

नादिका—यह वज्जी जनपद का एक ग्राम था। पाटलिग्राम से गंगा पार कर कोटिग्राम और नादिका में भगवान् गये थे और वहाँ से वैशाली।

पिप्पलिवन—यह मौर्यों की राजधानी थी। यहाँ के मौर्यों ने भगवान् बुद्ध की चिता से प्राप्त अंगार (कोयला) पर स्तूप बनवाया था। वर्तमान समय में इसके महावशेष जिला गोरखपुर के कुसुम्ही स्टेशन से ११ मील दक्षिण उपधौली नामक स्थान में प्राप्त हुए हैं।

रामग्राम—कोलिय जनपद के दो प्रसिद्ध नगर थे रामग्राम और देवदह। भगवान् के परिनिर्वाण के बाद रामग्राम के कोलियों ने उनकी अस्थि पर स्तूप बनाया था। श्री ए सी एल

कारलायल ने वर्तमान रामपुर-देवरिया को रामग्राम प्रमाणित किया है जो कि मरघा ताल के किनारे बस्ती जिले में स्थित है, किन्तु महावंश (३१, २५) के वर्णन से ज्ञात है कि रामग्राम अचिरवती (राप्ती) नदी के किनारे था और बाद के समय वहाँ का चैत्य टूट गया था। सम्भवत गोरखपुर के पास का रामगाँव तथा रामगढ़ ही रामग्राम है।

सामगाम—यह शाक्य जनपद का एक ग्राम था। यहीं पर भगवान् ने सामगाम सुत्त का उपदेश दिया था।

सापुग—यह कोलिय जनपद का एक निगम था।

शोभावती—यह शोभ-नरेश की राजधानी थी।

सेतव्य—यह कोशल जनपद में एक नगर था। इसके पास ही उक्कट्ठा थी और वहाँ से सेतव्य तक एक सड़क जाती थी।

संकस्स—भगवान् ने श्रावस्ती में यमक प्रातिहार्य कर, तुषित-भवन में वर्षावास करके महा-प्रवारणा के दिन संकस्स नगर में स्वर्ग से भूमि पर पदार्पण किया था। संकस्स वर्तमान समय में सकिसा-वसन्तपुर के नाम से कालिन्दी नदी के उत्तरी तट पर विद्यमान है। यह एटा जिले के फतेहगढ़ से २३ मील पश्चिम और कनौज से ४५ मील उत्तर-पश्चिम स्थित है।

सालिन्दिय—यह राजगृह के पूरब एक ब्राह्मण ग्राम था।

सुंसुमागिरि नगर—यह भर्ग राज्य की राजधानी था। बुद्धकाल में उदयन का पुत्र बोधि-राजकुमार यहाँ राज्य करता था। जो बुद्ध का परम श्रद्धालु भक्त था। किन्तु, भर्ग राज्य पूर्णरूपेण प्रजातन्त्र राज्य था, क्योंकि गणतन्त्र राज्यों में इसकी भी गणना की जाती थी। भर्ग आजकल के मिर्जापुर जिले का गंगा से दक्षिणी भाग और कुछ आस-पास का प्रदेश है, इसकी सीमा गंगा-टोंस-कर्मनाशा नदियाँ एव विन्ध्याचल पर्वत का कुछ भाग रही होगी। सुंसुमारगिरि नगर मिर्जापुर जिले का वर्तमान चुनार कस्बा माना जाता है।

सेनापति ग्राम—यह उरुवेला के पास एक ग्राम था।

थूण—यह एक ब्राह्मण ग्राम था और मध्यम देश की पश्चिमी सीमा पर स्थित था। आधुनिक थानेश्वर ही थूण माना जाता है।

उक्काचेल—यह वज्जी जनपद में गंगा नदी के किनारे स्थित एक ग्राम था। उक्काचेल बिहार प्रान्त के वर्तमान सोनपुर या हाजीपुर के आसपास कहीं रहा होगा।

उपतिस्सग्राम—यह राजगृह के निकट एक ग्राम था।

उग्रनगर—उग्रनगर का सेठ उग्र श्रावस्ती में व्यापार के कार्य से आया था। इस नगर के सम्बन्ध में अन्य कोई जानकारी प्राप्त नहीं है।

उसीरध्वज—यह मध्यमदेश की उत्तरी सीमा पर स्थित एक पर्वत था, जो सम्भवत कनखल के उत्तर पड़ता था।

वेरञ्जा नगर—भगवान् श्रावस्ती से वेरञ्जा गये थे। यह नगर कन्नौज से संकस्स, सोरेय्य होते हुए मथुरा जाने के मार्ग में पड़ता था। वेरञ्जा सोरेय्य और मथुरा के मध्य कहीं स्थित था।

वेत्रवती—यह नगर वेत्रवती नदी के किनारे बसा था। वर्तमान वेतवा नदी ही वेत्रवती मानी जाती है।

वेणुवग्राम—यह कौशाम्बी के पास एक छोटा ग्राम था। वर्तमान समय में इलाहाबाद से ३० मील पश्चिम कोसम से थोड़ी दूर उत्तर-पूर्व स्थित वेनपुरवा को ही वेणुवग्राम माना जाता है।

६ नदी और जलाशय

बुद्धकाल में मध्यम देश में जो नदी जलाशय और पुष्करिणी थीं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार जानना चाहिए—

अचिरवती—इसे वर्तमान समय में राप्ती कहते हैं। यह भारत की पाँच महानदियों में एक थी। इसी के किनारे कोशल की राजधानी श्रावस्ती बसी थी।

अनोमा—इसी नदी के किनारे सिद्धार्थ कुमार ने प्रव्रज्या ग्रहण की थी। श्री कनिंघम ने गोरखपुर ज़िले की आमी नदी को अनोमा माना है और श्री कारलायल ने बस्ती ज़िले की कुड़वा नदी को। किन्तु इन पंक्तियों के लेखक की दृष्टि में देवरिया ज़िले की मझना नदी ही अनोमा नदी है। (देखो कुशीनगर का इतिहास, प्रथम प्रकरण पृष्ठ ५८)।

बाहुका—बुद्धकाल में यह एक पवित्र नदी मानी जाती थी। वर्तमान समय में इसे धुमेल नाम से पुकारते हैं। यह राप्ती की सहायक नदी है।

बाग्मती—वर्तमान समय में इसे बागमती कहते हैं जो नेपाल से होती हुई बिहार प्रान्त में आती है। इसी के किनारे काठमाण्डू नगर बसा है।

चम्पा—यह मगध और अंग जनपदों की सीमा पर बहती थी।

छद्दन्त—यह हिमालय में स्थित एक सरोवर था।

गंगा—यह भारत की प्रसिद्ध नदी है। इसी के किनारे हरिद्वार प्रयाग और वाराणसी स्थित हैं।

गग्गरा पुष्करिणी—अंग जनपद में चम्पा नगर के पास थी। इसे रानी गग्गरा ने खोदवाया था।

हिरण्यवती—कुशीनारा और मल्लों का शालवन उपवत्तन हिरण्यवती नदी के किनारे स्थित थे। देवरिया ज़िले का सोनरा नाला ही हिरण्यवती नदी है, यह कुकुरघट्टा स्थान के पास बाढ़ी नदी में मिलती है। इसी को हिरना की नारी और कुसम्हीं नारा भी कहते हैं जो 'कुशीनारा' का अपभ्रंश है।

कोसिकी—यह गंगा की एक सहायक नदी है। वर्तमान समय में इसे कुसी नदी कहते हैं।

ककुत्था—यह नदी पावा और कुशीनारा के बीच स्थित थी। वर्तमान घागी नदी ही ककुत्था मानी जाती है। (देखो कुशीनगर का इतिहास पृष्ठ ६)।

कद्दमदह—इस नदी के किनारे महाकात्यायन ने कुछ दिनों तक विहार किया था।

किमिकाला—यह नदी चालिका में थी। मेघिय स्थविर ने जन्तुग्राम में भिक्षाटन कर इस नदी के किनारे विहार किया था।

मंगल पुष्करिणी—इसी के किनारे बैठे हुए तथागत को राहुल के परिनिर्वाण का समाचार मिला था।

मही—यह भारत की पाँच बड़ी नदियों में से एक थी। बड़ी गण्डक को ही मही कहते हैं।

रथकार—यह हिमालय में एक सरोवर था।

रोहिणी—यह शाक्य और कोलिय जनपद की सीमा पर बहती थी। वर्तमान समय में भी इसे रोहिनी ही कहते हैं। यह गोरखपुर के पास राप्ती में गिरती है।

सप्पिनी—यह नदी राजगृह के पास बहती थी। वर्तमान पञ्चान नदी ही सम्भवतः सप्पिनी नदी है।

सुतनु—इस नदी के किनारे आयुष्मान् अनुरुद्ध ने विहार किया था।

निरञ्जना—यह नदी उरुवेला प्रदेश में बहती थी। इसी के किनारे बुद्धगया स्थित है। इस समय इसे निलाजना नदी कहते हैं। निलाजना और मोहना नदियाँ मिलकर ही फल्गु नदी कही जाती है। निलाजना नदी हजारीबाग ज़िले के सिमेरिया नामक स्थान के पास से निकलती है।

सुन्दरिका—यह कोशल जनपद की एक नदी थी।

सुमागधा—यह राजगृह के पास एक पुष्करिणी थी।

सरभू—इस समय इसे सरयू कहते हैं। यह भारत की पाँच बड़ी नदियों में से एक थी। यह हिमालय से निकल कर बिहार प्रान्त में गंगा से मिलती है। इसी के किनारे अयोध्या नगरी बसी है।

सरस्वती—गंगा की भाँति यह एक पवित्र नदी है, जो शिवालिक पर्वत से निकल कर अम्बाला के आदि-बद्री में मैदान में उतरती है।

वेत्रवती—इसी नदी के किनारे वेत्रवती नगर था। इस समय इसे वेतवा नदी कहते हैं और इसी के किनारे भेलसा (प्राचीन विदिशा) नगर बसा हुआ है।

वैतरणी—इसे यम की नदी कहते हैं। इसमें नारकीय प्राणी दुःख भोगते हैं। (देखो, संयुत्त निकाय, पृष्ठ २२)।

यमुना—यह भारत की पाँच बड़ी नदियों में से एक थी। वर्तमान समय में भी इसे यमुना ही कहते हैं।

पर्वत और गुहा

चित्रकूट—इसका वर्णन अपदान में मिलता है। यह हिमालय से काफी दूर था। वर्तमान समय में बुन्देलखण्ड के काम्पतनाथ गिरि को ही चित्रकूट माना जाता है। चित्रकूट स्टेशन से ४ मील दूर स्थित है।

चोरपपात—यह राजगृह के पास एक पर्वत था।

गन्धमादन—यह हिमालय पर्वत के कैलाश का एक भाग है।

गयाशीर्ष—यह पर्वत गया में था। यहीं से सिद्धार्थ गौतम उरुवेला में गये थे और यहीं पर बुद्ध ने जटिलों को उपदेश दिया था।

गृद्धकूट—यह राजगृह का एक पर्वत था। इसका शिखर गृद्ध की भाँति था, इसीलिये इसे गृद्धकूट कहा जाता था। यहाँ पर भगवान् ने बहुत दिनों तक विहार किया और उपदेश दिया था।

हिमवन्त—हिमालय को ही हिमवन्त कहते हैं।

इन्द्रशाल गुहा—राजगृह के पास अम्बसण्ड नामक ब्राह्मण ग्राम से थोड़ी दूर पर वैदिक पर्वत में इन्द्रशाल गुहा थी।

इन्द्रकूट—यह भी राजगृह के पास था।

ऋषिगिलि—राजगृह का एक पर्वत।

कुररघर—यह अवन्ति जनपद में था। महाकात्यायन ने कुररघर पर्वत पर विहार किया था।

कालशिला—यह राजगृह में थी।

पाचीनवंश—यह राजगृह के वैपुल्य पर्वत का पौराणिक नाम है।

पिप्फलि गुहा—यह राजगृह में थी।

सत्तपण्णी गुहा—प्रथम संगीति राजगृह की सत्तपण्णी गुहा में ही हुई थी।

सिनेरु—यह चारों महाद्वीपों के मध्य स्थित सर्वोच्च पर्वत है। मेरु और सुमेरु भी इसे ही कहते हैं।

श्वेत पर्वत—यह हिमालय में स्थित है। कैलाश को ही श्वेत पर्वत कहते हैं। (देखो, संयुत्त निकाय, पृष्ठ ११)।

सुसुमारगिरि—यह भर्ग प्रदेश में था। चुनार के आसपास की पहाड़ियाँ ही सुसुमार गिरि हैं।

सप्पसोण्डिक पब्भार—राजगृह में।

वेपुल्ल—राजगृह में।

वेभार—राजगृह में।

§ वाटिका और वन

आम्रवन—आम के बने बाग को आम्रवन कहते हैं। तीन आम्रवन प्रसिद्ध हैं। एक राजगृह में जीवक का आम्रवन था। दूसरा ककुत्था नदी के किनारे पावा और कुसीनारा के बीच, और तीसरा कमम्मा में तोदेय्य ब्राह्मण का आम्रवन था।

अम्बपालिवन—यह वैशाली में था।

अम्बाटक वन—यह चेदी जनपद में था। अम्बाटक वन के मच्छिकासण्ड वनखण्ड में बहुत से भिक्षुओं के विहार करते समय चित्त गृहपति ने उनके पास जाकर धर्म-चर्चा की थी।

अनूपिय-अम्बवन—यह मल्लराष्ट्र में अनूपिया में था।

अञ्जनवन—यह साकेत में था। अञ्जनवन मृगदाव में भगवान् ने विहार किया था।

अन्धवन—यह श्रावस्ती के पास था।

इच्छानङ्गल वन-सण्ड—यह कोशल जनपद में इच्छानंगल ब्राह्मण ग्राम के पास था।

जेतवन—यह श्रावस्ती के पास था। वर्तमान महेट ही जेतवन है। खोदाई से शिलालेख आदि प्राप्त हो चुके हैं।

जातियावन—यह भद्दिय राज्य में था।

कप्पासिय वन-सण्ड—तीस भद्रवर्गीयों ने इसी वन-सण्ड में बुद्ध का दर्शन किया था।

कलन्दकनिवाप—यह राजगृह में था। गिलहरियों को अभय दान देने के कारण ही कलन्दक-निवाप कहा जाता था।

लट्ठिवन—लट्ठिवन में ही बिम्बिसार ने बुद्धधर्म को ग्रहण किया था।

लुम्बिनी वन—यहीं पर सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ था। वर्तमान रुम्मिनदेई ही प्राचीन लुम्बिनी है। यह गोरखपुर जिले के नौतनवा स्टेशन से १० मील पश्चिम नेपाल राज्य में स्थित है।

महावन—यह कपिलवस्तु से लेकर हिमालय के किनारे-किनारे वैशाली तक और वहाँ से समुद्रतट तक विस्तृत महावन था।

मद्दकुच्छि मृगदाव—यह राजगृह में था।

मोर निवाप—यह राजगृह की सुमागधा पुष्करिणी के किनारे स्थित था।

नागवन—यह वज्जी जनपद में हस्तिग्राम के पास था।

पावारिकम्बवन—यह नालन्दा में था।

भेसकलावन—भर्ग प्रदेश के सुंसुमारगिरि में भेसकलावन मृगदाव था।

सिंसपावन—यह कोशल जनपद में सेतव्य नगर के पास उत्तर दिशा में था। कौशाम्बी और आलवी में भी सिंसपावन थे। शीशम के वन को ही सिंसपावन कहते हैं।

सीतवन—यह राजगृह में था।

उपवत्तन शालवन—यह मल्लराष्ट्र में हिरण्यवती नदी के तट कुसीनारा के पास उत्तर ओर था।

वेळुवन—यह राजगृह में था।

§ चैत्य और विहार

बुद्धकाल में जो प्रसिद्ध चैत्य और विहार थे, उनमें से वैशाली में चापाल चैत्य, सत्तम्बक चैत्य,

चुकी हैं जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। ग्रंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्राचीन ग्रंथों की प्रशस्तियां एवं परिचय लिये जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी इन भंडारों में प्रचुर संख्या में मिलते हैं। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह खोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से क्षेत्र ने साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर खोज करने का प्रयास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में यथाशक्ति सहयोग देंगे।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र भंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री नाथूलालजी बज, अनूपचन्दजी दीवान, पं० भंवरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोधा, समीरमलजी छाबड़ा, कपूरचन्दजी रांवका, एवं श्री सुल्तानसिंहजी जैन का आभारी हूं जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारों की सूचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के ग्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य में भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

हम श्री डा० वासुदेव शरणजी अग्रवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। भविष्य में उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस ग्रंथ के विद्वान् सम्पादक श्री डा० कस्तूरचंदजी कासलीवाल एवं उनके सहयोगी श्री पं० अनूपचंदजी न्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचन्दजी जैन का भी मैं आभारी हूं जिन्होंने विभिन्न शास्त्र भंडारों का देखकर लगन एवं परिश्रम से इस ग्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् श्री पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूं कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों में पथ प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

ता० ३१–८–६१

केशरलाल बख्शी

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्त्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी संस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध सस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठात् अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप मे एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकल्प बल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों मे जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर उठा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पड़ताल करके उनमे संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप मे ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकांचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्त्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत् में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों मे शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्त्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोध कर्त्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र मे तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों मे विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की ब्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमे से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ मे भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों मे इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचियां मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ८८ देशों की संख्या रख हो गई थी। ज्ञात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (ग्रंथ संख्या ५४०२) में नगरों की बसापत का संवतवार ब्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अकबर पातसाह आगरो बसायो संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो सवत् १२४५ विमल मंत्री स्वर हुयो विमल वसाई।

विकास की इन पिछली शतियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्रश्नोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निशाणी, जकड़ी, व्याहलो, बधावा, विनती, पत्री, आरती, बोल, चरचा, विचार, बात, गीत, लीला, चरित्र, छंद, छप्पय, भावना, विनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चोढालिया, चौमासिया, बारामासा, बटोई, वेलि, हिंडोलणा, चूनड़ी, सज्झाय, बाराखड़ी, भक्ति, बन्दना, पच्चीसी, बत्तीसी, पचासा, बावनी, सतसई, सामायिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरुवावली, स्तवन, संबोधन, मोड़लो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कब आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ, यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी बहुमूल्य सामग्री इन भंडारों में सुरक्षित है।

राजस्थान में कुल शास्त्र भंडार लगभग दो सौ हैं और उनमें संचित ग्रंथों की संख्या लगभग दो लाख के आंकी जाती है। हर्ष की बात है कि शोध संस्थान के कार्य कर्ता इस भारी दायित्व के प्रति जागरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और बहुव्यय की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार अपने देश में पूना का भंडारकर इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लाइब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मेनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी या कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का ग्रंथ भंडार हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महावीर अतिशय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की ओर भी जनता और शासन दोनों का ध्यान शीघ्र आकृष्ट होगा और यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे सुलभ की जायगी। संस्था ने अब तक अपने साधनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष है वह कहीं अधिक बड़ा है और इसमें संदेह नहीं कि अवश्य करने योग्य है। ११ वीं शती से १६ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी संचित निधि का कुबेर जैसा समृद्ध कोष ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन भंडारों के अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों को था और उनके संबंध में छान बीन का कार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्वागत किया जाना चाहिये।

काशी विद्यालय
३–१०–१९६१

वासुदेव शरण अग्रवाल

प्रस्तावना

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासते यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां अधिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन मे सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों मे पूर्ण प्रमुत्व रहा। शताब्दियों तक वहां के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्षता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरक्षा एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एव समाज के सभी वर्गो ने उस ओर बहुत ही रुचि दिखलायी इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हे नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनो पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हीं भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हीं भन्डारों मे संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि मे नागौर एवं जयपुर के भन्डार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, डूंगरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भट्टारकों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहा से ग्रन्थों को बटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी मे सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों मे बांट सकते हैं।

१. पाच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार
२ पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

३ एक हजार से कम एवं पांचसौ से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार
४ पांचसौ ग्रंथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इन शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक साहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी ग्रंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी ग्रंथों का संग्रह मिलता है। कुछ भंडारों में जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये अलभ्य ग्रंथ भी संग्रहीत किये हुये मिलते हैं। ये शास्त्र भंडार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों में साहित्य की इतनी अमूल्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षों पूर्व तक ये विद्वानों के पहुँच के बाहर रहे। अब कुछ समय बदला है और भंडारों के व्यवस्थापक भी उनके दिखलाने में उतनी आना कानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में खोज में लीन विद्वानों के लिये शुभ है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० प्रतिशत भंडारों को न तो किसी जैन विद्वान ने देखा और न किसी जैनेतर विद्वान ने इन भंडारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १०, १५ वर्षों से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्व प्रथम हमने राजस्थान के ७५ के करीब भंडारों को देखा है और शेष भंडारों को देखने की योजना बनाई जा चुकी है।

ये ग्रंथ भंडार प्राचीन युग में पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें बैठ कर स्वाध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। उस समय इन ग्रंथों की सूचियां भी उपलब्ध हुआ करती थी तथा ये ग्रंथ लकड़ी के पुट्ठों के बीच में रखकर सूत अथवा सिल्क के फीतों से बांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के वेष्टनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार ग्रंथों के वैज्ञानिक रीति से रखे जाने के कारण इन भंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये ग्रंथ पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि ये ग्रंथ भंडार नगर कस्बे एवं गांवों तक में पाये जाते हैं इसलिये राजस्थान में उनकी वास्तविक संख्या कितनी है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी यहां अनुमानतः छोटे बड़े २०० भंडार होंगे जिनमें १॥, २ लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

जयपुर प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १२० से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत् १७८४ में महाराजा सवाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा उसी समय आमेर के बजाय जयपुर को राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राजकीय पोथीखाने की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये हुये हैं। यहां के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान् थे। इन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संगीतसार जयपुर के बड़े मन्दिर के शास्त्र भंडार में संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमे दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १६ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वी शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छाबडा (१६ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१६ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१६ वीं शताब्दी नन्दलाल छाबड़ा (१६ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द विलाला (१६ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१६ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१६ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१६ वीं शताब्दी) जैतराम (१६ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१६ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१६ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमे अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर मे ग्रथ भन्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रन्थों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भन्डारों में रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भंडार यहां के प्रमुख शास्त्र भंडार है और इनमे दस हजार से भी अधिक ग्रथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा ञ भन्डार प्रमुख हैं। ग्रथ सूची मे आये हुये इन भंडारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भंडार)

यह भंडार दि० जैन पाटोदी के मंदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ मे आदिनाथ चैत्यालय[1] भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भंडार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भंडार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्त्ति सुरेन्द्रकीर्त्ति, सुखेन्द्रकीर्त्ति एवं नरेन्द्रकीर्त्ति का क्रमश संवत् १८१५,

१. देखिये ग्रंथ सूची पृष्ठ संख्या १६६, व ४६०

१८२९, १८६३, तथा १८७६ में यहीं पट्टाभिषेक[1] हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहां का शास्त्र भंडार भट्टारकों की देख रेख में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये श्रावकों के अनुरोध पर यहीं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी होती रहती थी। भट्टारकों का जब प्रभाव क्षीण होने लगा तथा जब वे साहित्य की ओर उपेक्षा दिखलाने लगे तो यहां के भंडार की व्यवस्था श्रावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संग्रहीत ग्रंथों को देखने के पश्चात यह पता चलता है कि श्रावकों ने शास्त्र भंडार के ग्रंथों की संख्या वृद्धि में विशेष अभिरुचि नहीं दिखलाई और उन्होंने भंडार को उसी अवस्था में सुरक्षित रखा।

हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संख्या २२५७ तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। भक्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार में कपडे पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं अढाईद्वीप के चित्र एवं यन्त्र, मन्त्र आदि का उल्लेखनीय संग्रह है।

भंडार में महाकवि पुष्पदन्त कृत जसहर चरिउ (यशोधर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत १४०७ में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके अतिरिक्त यहां १५ वीं, १६ वी, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तत्वार्थ सूत्र (सं० १४४८) द्रव्यसंग्रह वृत्ति (प्रभादेव—सं० १६१५), उपासकाचार दोहा (सं० १५५५), धर्म संग्रह श्रावकाचार (संवत् १५४०) श्रावकाचार (गुणभूषणाचार्य संवत् १५६२,) समयसार (१५६४), विद्यानन्दि कृत अष्टसहस्री (१७६१) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाचन्द्र (सं० १५७५) शान्तिनाथ पुराण (असग कवि सं १५५२) णेमिणाह चरिउ (लक्ष्मण देव सं १६१६) नागकुमार चरित्र (मल्लिषेण कवि सं १५६४) वरांग चरित्र (वर्द्धमान देव सं १५६४) नवकार श्रावकाचार (सं० १६१२) आदि सैकडों ग्रंथों की उल्लेखनीय प्रतियां हैं। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र भंडार में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

---

१ भट्टारक पट्टावली: आमेर शास्त्र भंडार जयपुर वेष्टन सं १७२४

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी

गृहत्यागी दिगम्बर श्रावक दुलीचन्दजी

पूना निवासी

पं० दौलतरामजी कासलीवाल कृत जीवन्धर चरित्र की

मूल पाण्डुलिपि के दो पत्र

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसखे इन्हीं गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से वहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्राय सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमे कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही है और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कवीर, सूरदास, मलूकराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा मे लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों मे व्रतकथा कोष (सकलकीर्त्ति एवं देवेन्द्रकीर्त्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्त्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद का मुनिसुव्रत छंद, आशाधर के शिष्य विनयचंद की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों मे लक्ष्मण देव कृत णेमिणाह चरिउ, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा, विमल सेन की सुगंधदशमीकथा अज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रल्ह कविकृत जिनदत्त चौपई (सं १३५४) मुनिसकलकीर्त्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, बूचराज का भुवनकीर्त्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएं हैं जिनके सम्वन्ध में हम पहिले अन्धकार मे थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अव तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

२. वावा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

वावा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन वड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार है जिनमे एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर में बाबा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुए आये और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र समहालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र भंडार में ८५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के पश्चात् संग्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। ये एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा, लेखन आदि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। ये संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भण्डार में संग्रहीत हैं।

यह शास्त्र भंडार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी ग्रंथ अलग अलग वेष्टनों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेष्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा जयपुर के किसी भंडार में नहीं मिलेगी। शास्त्र भंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां ग्रंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराण, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों ही का यहां अधिक संग्रह है।

भंडार में आप्तमीमांसालंकृति (आ० विद्यानन्दि) की सुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५२४ की लिखी हुई प्रति इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ में सुल्तान गयासुद्दीन के राज्य में लिखी गई थी। तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मटसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियां हैं। ऐसी अच्छी प्रतियां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी बारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि यह देखते ही बनती है। पन्नालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई बख्तराम कृत प्रादशांग पूजा की प्रति भी (सं० १८७६) दर्शनीय ग्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं० पन्नालालजी संघी का अधिकांश साहित्य यहां संग्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों में भल्हू कवि का प्राकृतछन्दकोष, विनयचन्द्र की द्विसंधान काव्य टीका, वादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, ज्ञानार्णव पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मटसार पर सकलभूषण एवं धर्मचन्द्र की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं में दबीसिंह छाबडा कृत

उपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (सं० १७८७) छत्रपति जैसवाल की मनमोदन पंचविशति भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार मे हिन्दी पदोंका भी अच्छा संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एवं जयचन्द छाबडा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोवनेर मे स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल बाजार मे स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय मे स्थापित हुई थी। पंडितजी जोवनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि ग्रंथ भी इस भंडार मे मिलते है। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य पं० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, अयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है। भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमे २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मनन्दिपंचविंशति की है जिसकी संवत् १५७८ मे प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय ग्रंथों में पं० आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपंथामंडलपूजन उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास मे अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भडार में सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शांतिकुशल का अंजनारास एवं पृथ्वीराज का रूक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। यहां बिहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

४. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर बौंली के कुआ के पास चौकड़ी मोदीखाना मे स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर' के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान मे यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा

सा शास्त्र भडार है जिसमें केवल १०८ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इनमें ७५ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं। संग्रह सामान्य है तथा प्रतिदिन स्वाध्याय के उपयोग में आने वाले ग्रंथ हैं। शास्त्र भडार करीब १४० वर्ष पुराना है। कालूरामजी साह यहां उत्साही सज्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखवाकर शास्त्र भडार में विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुए ग्रंथों में पं जयचन्द्र छावड़ा कृत ज्ञानार्णव भाषा (सं १८७७) सुरालचन्द कृत त्रिलोकसार भाषा (स० १८८४) दौलतरामजी कासलीवाल कृत आदि पुराण भाषा सं १८८३ एवं दीतर ठोलिया कृत होलिका चरित (स १८८३) के नाम उल्लेखनीय हैं। भडार व्यवस्थित है।

५ शास्त्र भडार दि जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर (घ भडार)

'घ' भडार जौहरी बाजार मोतीसिंह भोमियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर में संग्रहीत है। यह मन्दिर वैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र भडार में १५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें वीरनन्दि कृत चन्द्रप्रभ चरित की प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १५२४ माघवा बुदी ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र संग्रह की दृष्टि से भंडार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण (स० १६०६,) ब्रह्मजिनदास कृत हरिवंश पुराण (स० १६४१,) श्रीपद्मनन्दि कृत ज्ञानदर्पण एवं लोकसेन कृत दशलक्षणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसोपाध्याय की षष्ठ्यधिक शतक की टीका संवत् १५७१ के ही अगहन मास की लिखी हुई है। ब्रह्मजिनदास कृत अठावीस मूलगुणरास एवं दान कथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म अजित का हंसतिलकरास उल्लेखनीय प्रतियों में हैं। भडार में ऋषिमडल स्तोत्र, ऋषिमडल पूजा, निर्वाणकाण्ड, भक्तामिरस्तोत्र जयमाला की स्वर्णाक्षरी प्रतियां हैं। इन प्रतियों के बार्डर सुन्दर बेल बूटों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो बेल एक बार एक पत्र पर आगई वह फिर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र भंडार सामान्यतः व्यवस्थित है।

६ शास्त्र भडार दि जैन मन्दिर संघीजी जयपुर (ङ भडार)

संघीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यह चौकड़ी मोदीखाना में महावीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण दीवान झू थारामजी संघी द्वारा कराया गया था। ये महाराजा जयसिंहजी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चंवरी में सोने एवं कांच का कार्य हो रहा है। वह बहुत ही सुन्दर एवं कला पूर्ण है। कांच का ऐसा अच्छा कार्य बहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र भंडार में ६७६ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुए हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे नवीन ग्रंथ णमोकारकाव्य है जो संवत् ११६५ में लिखा गया था। इससे पता चलता है कि समाज में अब भी ग्रंथों की प्रति

लिपियां करवा कर भंडारों में विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचास्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भंडार में प्राचीन प्रतियों मे भ हर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मनन्दि श्रावकाचार संवत् १६१३, भ शुभचंद्र कृत पाण्डवपुराण सं. १६१३, बनारसी विलास सं० १७१५, मुनि श्रीचन्द कृत पुराणसार सं० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार मे संवत् १५३० की किरातार्जुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीक्षा की भाषा संवत् १७१८ मे पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद सं० १७१६ की ही लिखी हुई भंडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भंडार मे महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णबालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार मे ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमे हर्षकवि कृत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की ज्ञानोपदेश बत्तीसी (हिन्दी) मुनिभद्र कृत शांतिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनाये हैं।

७. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचंदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय मे दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पंथ आम्नाय के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत ग्रंथों का विशेषत पूजा एवं सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १४७, अध्यातम ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचंदजी दीवान ने बहुत रूचि ली थी क्योंकि उनके

समकालीन विद्वानों में से नवलराम, गुमानीराम, जयचन्द छावड़ा, डालूराम। मन्नालाल खिन्दूका, स्वरूपचन्द बिलाला के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से ये ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे। प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन सं १८७७, गोम्मटसार सं १८८६, पञ्चतन्त्र स १८८७, छत्र चूडामणि स० १८६१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्होंने भंडार में विराजमान की थी।

भंडार में अधिकांश संग्रह १६ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं। इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं।

पूर्णचन्द्राचार्य	उपसर्गहरस्तोत्र	ले का स० १५५३	संस्कृत
प० अभ्रदेव	लब्धिविधानकथा	स० १६०७	"
अमरकीर्ति	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	स० १६ २	अपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं० १६२५	संस्कृत
पुष्पदन्त	यशोधर चरित्र	सं० १६३०	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिदत्त	नेमिनाथ पुराण	स० १६४६	संस्कृत
जोधराज	प्रवचनसार भाषा	स० १७३०	हिन्दी

अज्ञात कवियों में तेजपाल कविकृत सम्भवजिणणाह चरिए (अपभ्रंश) तथा हरचन्द गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (र० का० १६१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

८ दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ भंडार)

गोधों का मन्दिर घी वालों का रास्ता, नागारियों का चौक जौहरी बाजार में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था। बहुत से ग्रंथ यहां सांगानेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे। वर्तमान में यहां एक सुव्यवस्थित शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं। भंडार में पुराण, चरित, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है। अधिकांश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये हैं। शास्त्र भंडार में प्रवतकथाकोश की संवत् १५८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है। यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है। हिन्दी की निम्न रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं।

चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ वीं शताब्दी	
सीमन्धर स्तवन	"	"	"	"
गीत एवं आदिनाथ स्तवन	पल्ह कवि	"	"	"

नेमीश्वर चौमासा	मुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वी शताब्दि	
चेतनगीत	,,	,,	,,	,,
नेमीश्वर रास	मुनि रतनकीर्ति	,,	,,	,,
नेमीश्वर हिंडोलना	,,	,,	,,	,,
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	,,	र० का० १७१६	
चतुर्दशीकथा	डालूराम	,,	१७६५	

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें बूचराज, छीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द्र, मुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषत उल्लेखनीय है। संवत् १६२६ मे रचित डूंगरकवि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८३० मे रचित हरचंद गगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संस्कृत ग्रथों मे उमास्वामि विरचित पचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची मे उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित सं० १६५२, विदग्धमुखमंडन सं० १६८३, सारस्वत दीपिका सं० १६५७, नाममाला (धनंजय) सं १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगति) स १६५३, समयसार नाटक (बनारसीदास) सं० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय है।

९ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १८४८ मे बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय पश्चात ही यहा शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वय साहित्यिक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोडे समय मे ही अपने यहा शास्त्रों का अच्छा सकलन कर लिया। वर्तमान मे शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके है। अधिकारा ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एव उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों मे चन्द्रप्रभकाव्य पंजिका सं० १५६४, प० देवीचन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, है। प्राचीन प्रतियों मे आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्मामृत सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौडा रास्ते मे स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (झ भंडार)

विजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर बसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पानों का दरीबा चौ० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहां का शास्त्र भंडार भी कोई अच्छी दशा में नहीं है। बहुत से ग्रंथ जीर्ण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहां २७५ ग्रंथ एवं ५६ गुटके हैं। शास्त्र भंडार को देखते हुये यहां गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विश्वभूषण की नमीश्वर की लहरी, पुण्यरत्न की नमिनाथ पूजा, श्याम कवि की तीन चौबीसी चौपाई (र का १७४६) स्योजी राम सोगाणी की लग्नचन्द्रिका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दरिगह, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि कवियों के पद भी संग्रहीत हैं साह लोहट कृत दटलेश्यावेलि एवं जमुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें हैं।

११ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर (ञ भंडार)

दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह लवासजी का रास्ता चौ० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८०४ में सोनी गोत्र वाले किसी श्रावक ने कराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां एक शास्त्र भंडार है जिसमें ४४० ग्रंथ एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के ग्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोदय काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४४५ की लिखी हुई है। यद्यपि भंडार में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहां अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञात ग्रंथों में अपभ्रंश भाषा का विजयसिंह कृत अजितनाथ पुराण, कवि दामोदर कृत णेमिणाह चरिए, गुणनन्दि कृत वीरनन्दि के चन्द्रप्रभकाव्यकी पंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ कृत नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मनन्दि कृत वर्द्धमान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत पुराणसार (संस्कृत) ब्रह्मजीत कृत मुनिसुव्रत पुराण (हि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां ग्रंथों की प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत है। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र सं	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले काल	भाषा
१५३५	पटपाहुड़	आ० कुन्दकुन्द	१५१६	प्रा०
२३५०	वर्द्धमानकाव्य	पद्मनन्दि	१५१८	संस्कृत
१८३६	स्याद्वादमंजरी]	मल्लिषेण सूरि	१५२१	"
१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	१५८०	अपभ्रंश
२०६८	णेमिणाहचरिए	दामोदर	१५८२	"
२३२३	यशोधरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	१५८५	संस्कृत
११७६	सागारधर्मामृत	आशाधर	१५६५	

सूची की क्र. सं	ग्रंथ नाम	ग्रंथ कार नाम	ले काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिषेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५६४	"
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	"
२०७६	क्षत्रचूडामणि	वादीभसिंह	१६०५	"
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	"
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भंडार मे कपडे पर संवत् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों मे उपलब्ध कपडे पर लिखे हुये ग्रंथों मे यह ग्रंथ सवसे प्राचीन है। यहां यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची मे देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीव २०० वर्ष पुरानी है।

१२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों मे से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १६४८ मे क्षेत्र के शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची मे १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षो में भंडार मे जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यत. जयपुर के छावड़ों के मन्दिर के तथा वावू ज्ञानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची मे आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग मे दे दिया गया है।

इन ग्रंथों मे पुष्पदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों मे सवसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी मे लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छंदसीय कवित्त (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पान्डवचरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उदयभानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कवित्त, तिपरदास कृत रुकिमणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत स्नेहलीला, श्याममिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाह्निका रासो तथा वंसीदास कृत रोहिणीविधिकथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंभार मे प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

ग्रंथ सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिए ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विविध विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं रहा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहां इन्होंने धार्मिक एवं आगम साहित्य लिख कर भंडारों को भरा है वहां दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोश आदि लिख कर अपनी विद्वत्ता की छाप लगाई है। श्रावकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय का विश्लेषण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूक्ष्म चर्चा शायद ही अन्य धर्मों में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने में भी ये किसी से पीछे नहीं रहे। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर श्रावकों को इनको जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाओं की जयमालाओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है। ग्रंथ सूची के इसही भाग में १५०० से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूब लिखा है। तीर्थंकरों एवं शलाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं काव्य ग्रंथ मिलते हैं। ग्रंथ सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के ग्रंथ आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में वर्णन करने में जैनाचार्यों ने अपने पाण्डित्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन भंडारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये कथायें रोचक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों में अच्छा साहित्य संग्रहीत है। गुटकों में आयुर्वेद के नुसखों का अच्छा संग्रह है। सैकड़ों ही प्रकार के नुसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अत्यधिक आवश्यकता है॥ इस बार हमने फागु, रासो एवं वेलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त वर्णन दिया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे बड़े सैकड़ों रासो ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों संग्रहीत हैं। अकेले ब्रह्म जिनदास के ४० से भी अधिक रासो ग्रंथ मिलते हैं। जैन भंडारों में १४ वी शताब्दी के पूर्व से रासो ग्रंथ मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन करने की दृष्टि से संग्रहीत किये हुये इन भंडारों में जैनेतर विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोष, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि आदि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु उन पर विस्तृत टीकायें भी लिखी हैं। ग्रंथ सूची के इसी भाग में ऐसे कितने ही ग्रन्थों का उल्लेख आया है। भंडारों में ऐतिहासिक रचनायें भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें भट्टारक पट्टावलियां, भट्टारकों के छन्द, गीत, चौमासा वर्णन, वंशोत्पत्ति वर्णन देहली के बादशाहों एवं अन्य राज्यों के राजाओं के वर्णन एवं नगरों की बसापत का वर्णन मिलता है।

विविध भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों मे उत्तरी भारत की प्राय सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा मे जैन विद्वानों ने वृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकडों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने सस्कृत भाषा मे विविध विषयों पर सैकडों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों मे मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकाये भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा मे लिखे हुये यशस्तिलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वर्द्धमानदेव का वरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक्ष बिठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यो का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र मे तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशत योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची मे अपभ्रंश मे एवं प्राकृत भाषा मे लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा मे उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से[1] भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध मे भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग मे जब कि इस भाषा मे साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी मे साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों मे हमे १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएं मिल चुकी हैं। इनमे जिनदत्त चौपई सबसे प्रमुख है जो संवत् १३५४ (१२६७ ई) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, बूचराज, ठक्कुरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहां अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेलि, बिहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कबीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों मे प्राप्त हुये है। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना मे एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रबन्ध इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

---

१ देखिये कासलीवालजी द्वारा लिखे हुये Jain Granth Bhandars in Rajsthan का चतुर्थ परिशिष्ट।

स्वयं ग्रंथकारों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों की मूल प्रतियां

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियां राष्ट्र की धरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति हैं। ऐसी पाण्डुलिपियों का प्राप्त होना सहज बात नहीं है लेकिन जयपुर के इन भंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियां प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र सं	ग्रंथकार	ग्रंथ नाम	लिपि संवत्
८४८	कनककीर्ति के शिष्य सदाराम	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	१७०७
१०४२	रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा	सदासुख कासलीवाल	१६२०
६७	गोम्मटसार जीवकांड भाषा	पं टोडरमल	१८ वी शताब्दी
२६२५	नाममाला	प० भारामल्ल	१६४३
३६५७	पंचमंगलपाठ	बुलाखचन्द काला	१८४४
४४३३	शीलरासा	जोधराज गोदीका	१७५६
५३८७	मिथ्यात्व खंडन	बखतराम साह	१८३५
५७२८	गुटका	टेकचंद	—
५६५७	परमात्म प्रकाश एवं तत्वसार	डालूराम	—
६०४४	छीयालीस ठाणा	ब्रह्मरायमल्ल	१६१३

गुटकों का महत्व

शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाओं के संकलन की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संकलन किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। ग्रंथ सूची में आये हुये बारह भंडारों में ८२० गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके ड भंडार में हैं। अधिकांश गुटकों में पूजा स्तोत्र एवं कथायें ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक भंडार में कुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अलभ्य पाठों का संग्रह होता है। ऐसे गुटकों का घ, ज, ञ एवं ट भंडार में अच्छा संकलन है। १३ वी शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई ख भंडार के एक गुटके में ही प्राप्त हुई है। इसी तरह अपभ्रंश की कितनी ही कथायें, ब्रह्मजिनदास, रामचन्द, छीहल, ठक्कुरसी, पल्ह, मनराम आदि प्राचीन कवियों की रचनायें भी इन्हीं गुटकों में मिली हैं। हिन्दी पदों के संकलन के तो ये एकमात्र स्रोत है। अधिकांश हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमें संकलित किया हुआ होता है। एक एक गुटके में कभी कभी तो ३००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। पट्टावलियां, छन्द, गीत, वंशावलि, बादशाहों के विवरण, नगरों की बसापत आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों को बहुत ही सम्हाल कर रखें जिसमे वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके बिना वेष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आज्ञा देदी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढ़ना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तति तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी बस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, कोटा, बूंदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाडा आदि स्थानों पर इनके बडे बडे संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बडा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं हैं तो कहीं विना पुट्ठों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हमारा यह संग्रहालय जयपुर के दर्शनीय स्थानों में से गिना जायेगा। प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आवेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे। इस संग्रहालय में शास्त्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रबन्ध एक संस्था के अधीन हो। आशा है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वांग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां दी गई हैं जिससे विद्वानों को उनके कर्त्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्त्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमणिका, ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं। ग्रंथानुक्रमणिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र मालूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमणिका में ४२०० ग्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट ये सभी ग्रंथ मूल ग्रंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने ग्रंथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन भंडारों में किस किस ग्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये ग्रंथ संग्रहीत हैं यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें आभास मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में ग्रंथ भंडारों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४१ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के साथ में ही एक अज्ञात एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अन्य सूचियों से सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। ग्रंथों के नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, उनके रचनाकाल, भाषा आदि के साथ-साथ उनके आदि अन्त भाग पूर्णतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है। इसलिये विद्वानों से हमारा उदार दृष्टि अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम 'क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी वख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की खोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अनुकरणीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। ग्रंथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी बज, समीरमलजी छाबड़ा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें ग्रंथ भंडार की सूचियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर भंडार के ग्रंथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका ग्रंथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं. परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा वासुदेवशरणजी सा अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर
दिनाक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासलीवाल
अनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एव अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतधर्मरस काव्य

श्रावक धर्म पर यह एक सुन्दर एवं सरल संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं भट्टारक गुणचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे वोहट के पुत्र सावलदास के पठनार्थ लिखा था। स्वयं ग्रन्थकार ने अपनी प्रशस्ति निम्न प्रकार लिखी है—

पट्टे श्रीकुन्दकुन्दाचार्ये तत्पट्टे श्रीसकलकीर्ति तत्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरु रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री श्रीगुणचन्द्रदेवभट्टारकविरचितमहाग्रंथ धर्मोपायार्थे वोहट सुत पंडित श्री सावलदास पठनार्थ ॥ काव्य की एक प्रति भ भंडार में है। प्रति अपूर्ण है तथा उसमें प्रथम २ पृष्ठ नहीं है।

२ आध्यात्मिक गाथा

इस रचना का दूसरा नाम षट्_पद छप्पय है। यह भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र की रचना है जो संभवतः भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में हुये थे। रचना अपभ्रंश भाषा में निबद्ध है तथा उच्चकोटि की है। इसमें संसार की नश्वरता का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें ९८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विरला जाणंति गुणो विरला सेवंति अप्पणो सामि, विरला ससहावरया परदव्व परम्मुहा विरला।
ते विरला जगि अत्थि किंचिवि परवत्थु ण इच्छहिं, ते विरला ससहाव करहिं रइ णियमणि पिच्छहिं ॥
विरला सेवहिं सामि णिरु णिय देह वसंतउ, विरला जाणहिं अप्पु सुद्ध चेयण गुणवंतउ।
मणु वयणु सुकाय लहिवि सरवस इच्छु अप्पु लियउ, जिणु एम पयंपइ णिच्छयणि सुह गाह मंथिण छप्पउ कियउ ॥

इसकी एक प्रति भ भंडार में सुरक्षित है। यह प्रति आचार्य नेमिचन्द्र के पढ़ने के लिये लिखी गई थी।

३ आराधनासार प्रबन्ध

आराधनासार प्रबन्ध में मुनि प्रभाचंद्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रभाचन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनंदि जिनके द्वारा विरचित 'वर्द्धमान पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रभाचन्द ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलसंघे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये।
श्रीकुन्दकुन्दाख्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्र ॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्मर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण।
अनुग्रहार्थं रचितः सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते च।
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोके॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है। यह अभीतक अप्रकाशित है।

४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं। एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है। हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था। ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे। विहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी। इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की। इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है। पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं। संवत् १८५२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छाबडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे। ये जिनदास के पुत्र थे। संवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दोबद्ध रचना की थी। मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है। कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है। पूरे ग्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों में निबद्ध है। कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, संचई सकल बखान।
गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की वांनी, जगत मांहि प्रगटै सुखदानी।
या विधि चिंता मनि सुभाषी, भाषा छंद मांहि अभिलाषी॥
श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा।
देवीस्यंघ नाम सब भाषै, कवित मांहि चिंता मनि राखै॥

गीता छन्द

श्री सिद्धान्त उपदेशमाला रतनगुन मंडित करी।
सम सुकवि कंठा कयु, भूपित सुमनसोभित बिधिकरी॥
जिम सूर्य के प्रकास सेती तम वितान विनाश है।
इमि पढ़ै परमागम सुवांनी विघट रुचि अवदात है॥

दोहा

सुकतिवान नरवरपती, छत्रसंघ अवतंस।
कीरति वंत प्रवीन मति, राजत कूरम वंश॥१६४॥
ताके राज सुचैन सौं, विनों ईति अरु भीति।
रच्यो ग्रन्थ सिद्धान्त शुभ, पढ़ उपगार सुनीति॥१६५॥
सत्रहसै अरु छप्पनै, संवत् विक्रमराज।
भादव सुदि एकादसी, शनिदिन सुविधि समाज॥१६६॥
ग्रन्थ कियो पूरन सुविधि नरवर नगर मंझार।
जो समझै याको अरथ ते पावै भवपार॥१६७॥

चौबोला

सावन वदि की तीज आदि सौं आरंभ्यो यह ग्रन्थ।
भादव वदि एकादशि तक लौं परमपुन्य को पंथ॥
एक महिनां आठ दिनां मैं कियौ समापत आनि।
पढ़ै गुनै प्रकटै चिंतामनि बोध सदा सुख दांनि॥१६८॥

इति उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा॥

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आ० सकलभूषण द्वारा विरचित है। टीका के प्रारम्भ में लिपिकार ने टीकाकार के विषय में लिखा है वह निम्न प्रकार है—

"अथ गोम्मटसार ग्रन्थ गाथा बंध टीका करणाटक भाषा मैं है उसके अनुसार सकलभूषण नें संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है।

टीका का नाम मन्दप्रबोधिका है जिसका टीकाकार ने मंगलाचरण में ही उल्लेख किया है—

मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रजिनेश्वरं।
टीकां गुम्मटसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिकां ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्मटसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है। [1]मुख्तार साहब ने उसको गाथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आ० सकल भूषण दिया है। इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये। टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है।

विक्रमादित्यभूपस्य विख्यातो च मनोहरे।
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासन-गुहाअंतरनिवासि प्रवादिमदांधसिंधुरसिंहायमानसिंहनंदि मुनींद्राभिनंदित गंगवंशललामराज सर्वज्ञाद्यनेकगुणनामधेय-श्रीमद्रामल्लदेव महावल्लभ—महामात्य पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनाम समासादितकीर्तिकांतश्रीमच्चामुंडराय भव्यपुंडरीक द्रव्यानुयोगप्रश्नानुरूपरूपं महाकर्म्मप्राभृतसिद्धान्त जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंग्रहं गोम्मटसारनामधेयं पंचसंग्रहशास्त्र प्रारभ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोमटसारप्रथमावयवभूतं जीवकांडं विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावाप्ति शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थ विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञासूचकं गाथा सूचकं कथयति।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवर्द्धमानांतान् वृषभादि जिनेश्वरान्।
धर्ममार्गोपदेशत्वात् सर्व्वकल्याणदायिकान् ॥ १ ॥
श्रीचन्द्रादिप्रभांतं च नत्वा स्याद्वाददेशकं।
श्रीमद्गुम्मटसारस्य कुर्व्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥ २ ॥
श्रीमतः शकराजस्य शाके वर्त्तति सुन्दरे।
चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥ ३ ॥
विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे।
दशपंचशते वर्षे षड्भि संयुतसप्ततौ ॥ ४ ॥

---

१. देखिये पुरातन जैन वाक्य सूची प्रस्तावना पत्र ८८:

कार्तिके चासिते पक्षे त्रयोदश्यां शुभ दिने।
शुक्रे च हस्तनक्षत्रे योगो च प्रीति नामनि ॥ ५ ॥
श्रीमच्छ्रीमूलसंघे च संघाम्नाये सरस्वतीगच्छे।
बलात्कारे गणे नाम्ने गच्छे सारस्वताभिधे ॥ ६ ॥
श्रीमत्कुंदकुंदाख्य सूरेरन्वयके मयं।
पद्मादिनंदि विख्यातो भट्टारकशिरोमणिः ॥ ७ ॥
तत्पट्टांभोजमार्तंडः चंद्रांतश्च शुभादिकः।
तस्य पट्टे मवधश्रीमान् जिनचंद्राभिधो गणी ॥ ८ ॥
तत्पट्टे सद्गुणैर्युक्तो भट्टारकपदेश्वर।
पंचाचाररतो नित्यं प्रभाचन्द्रो जितेन्द्रिय ॥ ९ ॥
तत्शिष्यो धर्मचन्द्रश्च तत्कर्माबुधि चंद्रमा।
तदाम्नाये भवत भव्यास्ते वर्यन्ते यथाक्रमं ॥१०॥
पुरे नागपुरे रम्ये राज्ञो महम्मदखानके।
पाटणीगोत्रके पूर्वे खंडेलवालान्वयभूषणे ॥११॥
दानादिभिर्गुणैर्युक्तः बणानामविचक्षणः।
तस्य भार्या भवत् शान्ता बणाश्री चाभिधानिका ॥१२॥
तयो पुत्रः समाख्यात पर्वताख्यो विचारकः।
राज्यमान्यो जनैः सेव्य संघभारधुरंधर ॥१३॥
तस्य भार्यास्ति सत्साध्वी पर्वतश्रीति नामिका।
शीलादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विता ॥१४॥
प्रथमो जिनदासाख्यो गृहभारधुरंधर।
तस्य भार्या भवत्साध्वी चौधारेयविचक्षण्या ॥१५॥
दानादिगुणसंयुक्ता द्वितीया च सुहागिणी।
प्रथमायास्तु पुत्रः स्यात् तेजपालो गुणान्वितो ॥१६॥
द्वितीयो देवदत्ताख्यो गुरुभक्तः प्रसन्नधी।
पतिव्रता गुणैर्युक्ता भार्यायैवासिरीति च ॥१७॥
पितृभक्तो गुणैर्युक्तो होलानामातृतीयकः।
होलादेया च तद्भार्या होलश्री द्वितीयिका ॥१८॥
लिखापि दत्त विधिना सुभक्तितः।
सिद्धान्तसारशास्त्रमिदं हि गुम्मट ॥

धर्मादिचंद्राय स्वकर्महानये।
हितोकये श्री सुखिने नियुक्तये ॥१६॥

७ चन्दनमलयागिरि कथा

चन्दनमलयागिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है। यह रचना मुनि भद्रसेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार, वंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है। कुछ पद्य पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं:—

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप झणकार। पणघट पांणी भरण कौं, लार बहुत पणिहार॥

× × × × ×

चंदन विनु मलयागरी, दिन दिन सूकत जात। ज्यौं पावस जलधार विनु, वनवेली कुमिलात॥

× × × × ×

अगनि मांझि जरिवौ भलौ, भलौ ज विष कौ पान। शील खंडिवौ नहिं भलौ, कहि कछु शील समान॥

× × × × ×

चंदन आवत देखि करि, ऊठि दियो सनमान। उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान॥

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं। पद्य संख्या १८८ है। रचनाकाल एवं लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिये। भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है। श्री मोतीलाल[1] मेनारिया ने इसका रचना काल सं १६७५ माना है। इसका दूसरा नाम कलिकापंचमी[2] कथा भी मिलता है। अभीतक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है। इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भट्टारकीय शास्त्र भंडार डूंगरपुर में प्राप्त हुई है।

८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है। ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देवकीर्ति के शिष्य थे। कल्याणकीर्ति ने चारुदत्त चरित्र को संवत् १६६२ में समाप्त किया था। रचना मे

१. राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १६१
२ राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारो की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० स० २३६

सेठ चारुदत्त के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुदत्तरास भी है।

कल्याणकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्श्वनाथ[1] रासो (सं० १६६७) बावनी[2], जीरावलि पार्श्वनाथ स्तवन (सं०) नवग्रह स्तवन (सं०) तीर्थंकर विनती[3] (सं० १७२३) आदी श्वर[4] बधावा आदि रचनायें मिल चुकी हैं।

९ चौरासी जातिजयमाल

ब्रह्म जिनदास १५ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही अगाढ विद्वान थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। जयपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिजयमाल का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने वाली ८४ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली बढाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों में बड़ी उत्सुकता रहती थी। इस जयमाल में सबसे पहिले गोलालारे जाति में चतुर्थ जैन श्रावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४१ पद्य हैं। ब्रह्म जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

ते समकित वंतह बहु गुण जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमनि।
ब्रह्म जिनदास भासैं विबुध प्रकासैं, पढई गुणे ते धन्न धनि ॥४१॥

इती चौरासी जाति जयमाला समाप्त।

इति जयमाल के आगे चौरासी जाति की दूसरी जयमाल है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

१० जिनदत्तचौपई

जिनदत्त चौपई हिन्दी का आदिकालिक काव्य है जिसको रल्ह कवि ने संवत् १३५४ (सन् १२९७) भादवा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

---

१ राजस्थान जैन शास्त्र भंडारों की ग्रन्थ सूची भाग २ पृष्ठ ७४
२ „ „ „ पृष्ठ १ १
३ „ „ भाग ३ पृष्ठ १४१
४ „ „ „ पृष्ठ १५२

रल्ह कवि द्वारा संवत् १३५४ मे रचित हिन्दी की अति प्राचीन कृति जिनदत्त चौपई का एक चित्र — पान्डुलिपि जयपुर के दि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है ।

(इसका विस्तृत परिचय प्रस्तावना की पृष्ठ संख्या ३० पर देखिये)
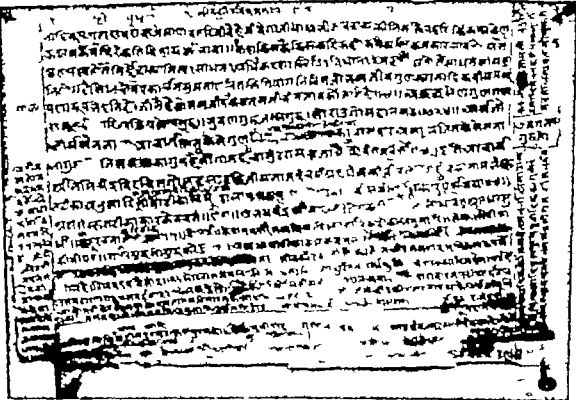
१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा रचित एवं लिखित गोम्मटसार की मूल पाण्डुलिपि का एक चित्र ।

यह ग्रन्थ जयपुर के दि० जैन मंदिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।

(सूची क्र सं ६७ प सं ४०३)

संवत् तेरहसे चउवरणो, भादव सुदिपंचमगुरु दिरणे।
स्वाति नखत्त चंदु तुलहती, कवइ रल्हु पणवइ सुरसती ।।२८।।

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे। उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम आते था।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उतपाति।
पंचऊलीया आतेकउपूतु, कवइ रल्हु जिणदत्तु चरित्तु ।।

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है। ग्रंथ का आधार पं. लाखू द्वारा विरचित जिणयत्तचरिउ (सं १२७५) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयउ अइसू पमाण ।।

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था। रचना प्रधानत. चौपई छन्द मे निबद्ध है किन्तु वस्तुबंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। इसमें कुल पद्य ५५४ हैं। रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है। वैसे भाषा सरल एवं सरस है। अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है। काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है।

काव्य मे जिनदत्त मगध देशान्तर्गत बसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था। जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था। जिनदत्त व्यापार के लिये सिंघल आदि द्वीपों में गया था। उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहां से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थीं। इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है।

११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है। इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ मे इसकी रचना की थी। कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे। पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केदरियों चौथो भवन, सपतमदसमौ जान। पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान ।।६।।
तीजो षसटम ग्यारमों, अर दसमों कर लेखि। इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ।।७।।

बरप लग्यो जा अंस में, सोह दिन चित धारि। वा दिन छतनी भई, जु पक्ष बीते सुप्रविचारि ॥४०॥
लगन लिखे ते गिरह जो, जा घर बैठो आय। ता घर के मूल सुफल का कीजे मित बनाय ॥४१॥

१२ ज्ञानार्णव टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्णव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्रायः प्रत्येक शास्त्र भंडार में हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं। इसकी एक टीका विद्यानन्दि के शिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी। ज्ञानार्णव की एक अन्य संस्कृत टीका जयपुर के भ भंडार में उपलब्ध हुई है। टीकाकार है पं नयविलास। उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट अकबर जलालुद्दीन के राजस्व मंत्री टोडरमल के सुत रिषिदास के श्रवणार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी। इसका उल्लेख टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवमूलसूत्रे योगप्रदीपाधिकारे पं नयविलासेन साह पासा तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिषिदासेन स्वश्रवणार्थं पंडित जिनदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशभावना प्रकरण द्वितीयः।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है—

शास्वत् साहि जलालदीनपुरतः प्राप्य प्रतिष्ठोदयं।
श्रीमान् मुगलवंशशारद-शशि-विश्वोपकारोद्यतः।
नाम्ना कृष्ण इति प्रसिद्धिरभवत् सद्धात्रधर्मोन्नतेः।
तन्मंत्रीश्वर टोडरो गुणयुतः सर्वाधिकाराधितः ॥६॥
श्रीमत् टोडरसाह पुत्र निपुणः सदानचिंतामणिः।
श्रीमत् श्रीरिषिदास धर्मनिपुणः प्राप्तोन्नतिरश्रिया।
तेनाहं समवादि निपुणो न्यायाद्यलीलाह्वयः।
श्रोतु वृत्तिमता परं सुविपया ज्ञानार्णवस्य स्फुटं ॥७॥

इस प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे। इनके पिता का नाम साह पासा था। स्वयं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक भजन "अब तेरो मुख देखू जिनंदा" जैन भंडारों में कितने ही गुटकों में मिलता है।

नयविलास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है। पं नयविलास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है।

१३ ग्रेमिणाह चरिए—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर कृत ग्रेमिणाह चरिए अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर काव्य है। इस काव्य में पांच संधियां हैं जिनमें भगवान नेमिनाथ के जीवन का वर्णन है। महाकवि ने इसे संवत् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निम्न दुवई छन्द (एक प्रकार का दोहा) में दिया हुआ है—

वारहसयाइं सत्तसियाइं, विक्कमरायहो कालहं। पमारहं पट्ट समुद्धरगु, गारवर देवापालहं ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे। इन्होंने इस ग्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी। ग्रंथ की भाषा सुन्दर एवं ललित है। इसमे घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है। कुल पद्यों की संख्या १४५ है। इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनै. शनै: हिन्दी भाषा मे किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है।

इसकी एक प्रति ञ भंडार में उपलब्ध हुई है। प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं। प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है।

१४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संक्षिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है। रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं। प्रारम्भ में ग्रंथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञं सार्व्वं सर्व्वगुणाकरं। वीरं नत्वा प्रवक्ष्येऽहं जीवद्रव्यादिलक्षणं ॥१॥
जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्ममाहु र्जिनेश्वरा। जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भापा सरल है। ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्त्तिसद्दे वै: शुभेंदुमुनितेरितैं। जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं। ये १७ वीं शताव्दी के विद्वान थे। इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनाये मिली हैं। यह रचना ञ भंडार में संग्रहीत है। यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

१५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद वहुत कम विद्वानों ने किया है। अभी क भंडार मे इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ प्रान्त के मेडूगांव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम मोतीलाल था। ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर मे आकर रहने लगे थे। इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १६३२ मे समाप्त किया था।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। इनकी अव तक तत्त्वार्थसूत्र भापा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं। ये रचनायें-चौवीस-तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं। तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है।

मोक्ष की राह बनावत से। अरु कर्म पहार करै चकचूरा,
विश्वसुतत्त्व के ज्ञायक है वाही, लक्ष्मि के देव नमौं परिपूरा।
सम्यग्दर्शन चरित ज्ञान कहे, याहि मारग मोक्ष के सूरा,
तत्त्व को अर्थ करो सरधान सो सम्यग्दर्शन मजबूरा ॥१॥

कवि ने जिन पद्यों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं—

लिखो अलीगढ आनियो मेढ्गाम सुधाम। मोतीलाल सुपुत्र है जोरेलाल सुनाम ॥१॥
जैसवाल कुल जाति है श्रेणी बीसा जान। वश इष्वाकु महान में लयो जन्म भू आन ॥२॥
काशी नगर सुआय के सैनी संगति पाय। उदयराज भाई लखो सिखरचन्द गुण काय ॥३॥
छंद भेद जानों नहीं और गणागण सोय। केवल भक्ति सुधर्म की बसी सुहृदय मोय ॥४॥
ता प्रभाव या सूत्र की छंद प्रतिज्ञा सिद्धि। भाई सु भवि जन सोधियो होय जगत प्रसिद्ध ॥५॥
मंगल श्री अर्हंत हैं सिद्ध साध चपसार। तिन नुति मनवच काय यह मेटो विघन विकार ॥६॥
छंद बंध श्री सूत्र के किये सु बुधि अनुसार। मूलग्रंथ कू देखिके श्री जिन हिरदै धारि ॥७॥
क्वारमास की अष्टमी पहलो पक्ष निहार। अठसठि ऊन सहस्र दो संवत रीति विचार ॥८॥

इति छंदबद्धसूत्र संपूर्ण।
संवत १६५१ चैत्र कृष्णा ११ बुधे।

१६ दर्शनसार भाषा

नथमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नथमल बिलाला थे जो मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरापुर (हिण्डौन) आकर रहने लगे थे। इस विद्वान के अतिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी। दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का लिखा हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था। इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निम्न प्रकार किया है।

बीस अधिक उगणीस सै शात, श्रावण प्रथम चोथि शनिवार।
कृष्णपक्ष में दर्शनसार, भाषा नथमल लिखी सुधार ॥५६॥

दर्शनसार मूलतः देवसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६० में समाप्त किया था। नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है।

नथमल द्वारा लिखे हुये अन्य ग्रंथों में महीपालचरित्रभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१६), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १६१६), रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा (संवत् १६२०), षोडश

कारणभावना भाषा (संवत् १६२१) अष्टाह्निकाकथा (संवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं ।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर मे हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं। इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था। इन्हीं विद्वानों मे से प० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है। ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी। गद्य मे राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है। इसका एक उदाहरण देखिये·—

सांच कहतां जीव के उपरिलोक दूखो वा तूषो। सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देता है वा जूंवा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटकि देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, सांच बोला तो सांच कहै।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध मे मुनि धर्मचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। मुनि, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है। रचना प्राकृत भाषा मे है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। ये सकल कला में प्रवीण एवं आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान थे। भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रमुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है।

१६ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है। कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है। इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान ब्र० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं। इन्होंने प्रथम मंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है।

भव्वकमलमायंडं सिद्धजिण तिहुपर्णिद सदपुज्जं। नेमिशसिं गुरुवीरं पणमीय तियशुद्धभोवमहणं ।।१।।

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है। यह प्राकृत भापा मे निवद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथाये हैं। ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रस्य प्रियशिष्यब्रह्मजिनदासविरचित धर्मपंच-विंशतिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

२० निजामणि

यह प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनदास की कृति है जो जयपुर के 'क' भण्डार में उपलब्ध हुई है। रचना छोटी है और उसमें केवल ५४ पद्य हैं। इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति एवं अन्य शलाका महापुरुषों का नामोल्लेख किया गया है। रचना स्तुति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देव, हूं तस पाय करूं सेव ।
हवे निजामणि कहु सार, जिम क्षपक तरे संसार ॥ १ ॥
हो क्षपक सुणो जिनवाणि, संसार अथिर तू जाणि ।
इहां रह्या नहि कोई थीर, हवे मन दृढ करो निज धीर ॥ २ ॥
ज्या आदीश्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार ।
ज्या अजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म नो भंग ॥ ३ ॥
ज्यो संभव भव हर स्वामी, ते जिनेश्वर मुक्ति हि गामी ।
ज्या अभिनंदन आनंद, जिने मोड्यो भव भो फंद ॥ ४ ॥
ज्या सुमति सुमति दातार, जिने रंग सुमी जित्यो मार ।
ज्या पद्मप्रभ जगिवास, ते मुक्ति तणा निवास ॥ ५ ॥
ज्या सुपार्श्व जिन जगीसार, जसु पास न रहियो भार ।
ज्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिन त्रिभुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × ×

ए निजामणि कहि सार, ते सयल सुख भंडार ।
जे क्षपक सुणे ए चंग, ते सौख्य पावे अभंग ॥ ५३ ॥
श्री सकलकीर्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणेसार, ए निजामणि भवतार ॥ ५४ ॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है। ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा टोडारायसिंह (जयपुर) के रहने वाले थे। अब तक इनकी श्वेताम्बर पराजय (केवलि भुक्ति निराकरण), सुख निधान, चतुर्विंशति संधान स्वोपज्ञ टीका एवं शिव साधन नाम के चार ग्रन्थ उपलब्ध हुये थे। नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है —

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्त्तिरतुलं चित्तोत्सवं च क्रतात्।
पूर्व्वानेकभवार्जितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात्॥
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो ' '' ।
शाश्वत् छ्रीजगदीशनिर्मलहृदि प्रायः सदा वर्त्ततात्॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति ञ भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्त्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूघलि के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति ८ भण्डार मे संग्रहीत है। इस प्रति में ८ से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ संधियों का विवरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रइयं कइ तेजपाल साणंदं अणुसंणियसुहद्दं घूघलि सिवदास पुत्तेण सग्गग्गवाल छीजा सुपसाएण लब्भए णूणं अरविंद दिक्खा अट्ठमसंधी परिसमत्तो॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सवके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्श्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ मे समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान थे तथा बसहटका ग्राम के रहने वाले थे। उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब का शासन था। पार्श्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं। रचना सरस भाषा में निबद्ध है।

१५ पिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है। रचना का दूसरा नाम माखन छंद विलास भी है। माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल था स्वयं भी कवि थे। रचना में दोहा चौबोला, छप्पय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमालिका संखधारी, मालती, डिल्ल, करहंचा समानिका, भुजंगप्रयात, मंजुभाषिणी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमरावलि, मालिनी आदि कितने ही छन्दों के लक्षण दिये हुये हैं।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था। इसकी एक अपूर्ण प्रति 'ख' भण्डार के संग्रह में है। इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है।

२६ पुण्यास्रवकथा कोश

टेकचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं। अबतक इनकी २० से भी अधिक रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं। जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८२८) सुदृष्टि तरंगिणी (सं० १८३८) सोलहकारण पूजा, व्यसनराज वर्णन (सं० १८२७) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु, पूजा, दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, अध्यात्म बारहखडी, आदि। इनके पद भी मिलते हैं जो अध्यात्म रस से ओतप्रोत हैं।

टेकचंद के पितामह का नाम दीपचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। दीपचंद स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे। कवि खण्डेलवाल जैन थे। ये मूलतः जयपुर निवासी थे लेकिन फिर साहिपुरामें जाकर रहने लगे थे। पुण्यास्रवकथाकोश इनकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'क' भण्डार में प्राप्त हुई है। कवि ने इस रचना में जो अपनापरिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

> दीपचन्द साधर्मी भए, ते जिनधर्म विषै रत थए।
> तिन सुत पुरस लघु सगपाय, कम जोग्य नहीं धर्म सुहाय ॥ ३२ ॥
> दीपचन्द तन तैं तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो।
> रामकृष्ण तैं जो तन थाय, टेकचंद ता नाम धराय ॥ २३ ॥
> सो फिरि कर्म उदै तैं आय, साहिपुरै थिति कीनी जाय।
> तहां भी बहुत काल विन ज्ञान, खोया मोह उदै तैं आनि ॥

× × ×

साहिपुरा सुभथान मे, भलो सहारो पाय।
धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय।।
नृप उमेद ता पुर विषै, करै राज बलवान।
तिन अपने भुजबलथकी, अरि शिर कीहनी आनि।।
ताके राज सुराज मैं ईतिभीति नहीं जान।
अचलूं पुर मे सुखथकी तिष्ठे हरप जु आनि।।
करी कथा इस ग्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि।
ग्रंथ करन कछू वीचि में, आकुल उपजी नांहि।। ५३।।
साहि नगर साह्यै भयो, पायो सुभ अवकास।
पूरण ग्रंथ सुख तै कीयौ, पुण्याश्रव पुण्यवास।। ५४।।

चौपई एवं दोहा छन्दों मे लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रंथ है। इसमें ७६ कथाओं का संग्रह है। कवि ने इसे संवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

संवत् अष्टादश सत जांनि, उपरि बीस दोय फिरि आंनि।
फागुण सुदि ग्यारसि निसमांहि, कियो समापत उर हुल साहि।। ५५।।

प्रारम्भ मे कवि ने लिखा है कि पुण्यास्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निवद्ध था लेकिन जब उमे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्त्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की। जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे में धनराम ने उसकी वचनिका की। टेकचंद ने संभवत इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोवद्ध रचना की होगी। कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है.—

साधर्मी धनराम जु भए, संसकृत परवीन जु थए।
तीं यह ग्रंथ आगरै थान, कीयो वचनिका सरल बखान।।
जिन धुनि तो बिन अक्षर होय, गणधर समझै और न कोय।
तो प्राकृत मैं करै बखान, तब सब ही सुंनि है गुणखानि।। ३।।
तब फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत वानी श्रुति ठई।
फेरि अलप बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्त्ति आदिक जोय।।
तिन यह महा सुगम करि लीए, सस्कृत अति सरल जु कीए।।

२७ बारहभावना

पं० रइधू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनकी प्राय सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश-ग्वालियर के रहने वाले थे। बारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३१ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है —

कथन कहाणी ज्ञान की, कहन सुनन की नांहि। आपम्हीं मैं पाइए, जब देखै घट मांहि॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार हैं —

ससार रूप कोई वस्तु नांही, भेदभाव अज्ञान। ज्ञान दृष्टि धरि देखिए, सब ही सिद्ध समान॥

× × × × × ×

धर्म करावौ धरम करि, क्रिरिया धरम न होय। धरम जु जानत वस्तु है, जो पहचानै कोय॥

× × × × × ×

करन करावन ग्यान नहिं, पढि अर्थ बखानत और। ग्यान दिष्टि बिन ऊपजै मोहा तणी हु कौर॥

रचना में रइधू का नाम कहीं नहीं दिया है केवल ग्रंथ समाप्ति पर "इति श्री रइधू कृत बारह भावना संपूर्ण" लिखा हुआ है जिससे इसको रइधू कृत लिखा गया है।

२८ भुवनकीर्ति गीत

भुवनकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पश्चात् ये ही भट्टारक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों में भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें बूचराज एवं भ० शुभचन्द्र द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बूचराज ने भट्टारक भुवनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी बहुश्रुतता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे भुवन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बूचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान[1] थे इनके द्वारा रची हुई अबतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत अविकल रूप से सूची के पृष्ठ ६६६—६६७ पर दिया हुआ है।

२९ भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका

महा प० आशाधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखे गये कितने ही ग्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अप्राप्य थी लेकिन अब इसकी २ प्रतियां जयपुर के भंडार में उपलब्ध हो चुकी हैं। आशाधर ने इसकी टीका अपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिये

1 विस्तृत परिचय के लिए देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बूचराज एवं उनका साहित्य—जैन सन्देश शोधांक—११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपशम इव मूर्त्तिः पूतकीर्त्तिः स तस्माद्। अजनि विनयचन्द्रः सच्चकोरैकचन्द्रः ॥
जगदमृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः। शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाचः ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपालस्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपणजगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश मे आचुका है जिसमे तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संग्रह मे है। ये अवांगढ के निवासी थे। पं० वनवारीलालजी के शब्दों मे छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नही रखते थे तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचशति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचशती को कवि ने संवत १९१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये असरीर गई षट सत पन वरसहि। प्रघटो विक्रम दैत तनौ संव्रत सर सरसहि ॥
उनिसइसत षोडशहि पोष प्रतिपदा उजारी। पूर्वाषांड नछत्र अर्क दिन सब सुखकारी ॥
वर वृद्धि जोग मिध्दत इहग्रंथ समापित करिलियो। अनुपम असेष आनंद घन भोगत निवसत थिर थयो ॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सवैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह। तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमौं धरि मन नेह ॥
नहि अधिकार प्रबंध नहि फुटकर कवित्त समस्त। जुदा जुदा रस वरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त ॥

मित्र की प्रशंसा मे जो पद्य लिखे हैं उनमे से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करें चारि बात कौं। उछेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के ॥
दोष देखि दावै पीठ पीछे होय जस गावै। कारज करत रहै सदा उपकार के ॥

साधारन रीति नहीं स्वारथ की प्रीति जाके। अद तत यचन प्रशसत पयार के ॥
दिल को ध्यार निरवाहै जो पै दे ध्यार। मति को सुठार गुनवीसरै न पार के ॥२१३॥
अंतरंग बाहिज मधुर जैसी किसमिस। मनवरषन को कुवेरयोनि घर है ॥
गुन के बधाय कू जैसे चन्द सायर कू। दुख तम चूरिबे कू दिन दुपहर है ॥
आरज के सारिबे कू हरू बहु विधना है। मंत्र के सिखायव कू मानों सुरगुर है ॥
ऐसे सार मित्र सो न कीजिये जुदाई कभी। धन मन तन सब वारि देना पर है ॥२१४॥

इस तरह मनमोहन पचशाती हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है।

३१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह ग्रंथ है जिसमें कवि घासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का सकलन है। घासी के पिता का नाम महाकसिंह था। कवि ने अपने पिता एव अपने मित्र भारामल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी। ये भारामल संभवत वे ही विद्वान हैं जिन्होने दर्शनकथा, शीलकथा, दानकथा आदि कथायें लिखी हैं। कवि ने इसे संवत् १७८८ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख ग्रंथ के अन्त में निम्न प्रकार हुआ है —

कर्म रिपु सो तो चारों गति में घसीट फिरयौ, ताही के प्रसाद सेती घासी नाम पायौ है।
भारामल मित्र वो महाकसिंह पिता मेरो, तिनकीसहाय सेती ग्रंथ ये बनायौ है॥
या में भूल चूक जो हो सुधि सो सुधार लीजो, मो पै कृपा दृष्टि कीज्यो भाव ये जनायौ है।
दिगनिधि सतवान हरि को चतुर्थ ठान, फागुण सुदि चौथ मान निजगुण गायौ है॥

कवि ने ग्रंथ के प्रारम्भ में वर्णनीय विषय का निम्न प्रकार उल्लेख किया है —

मित्र विलास महासुखदैन, बरनु वस्तु स्वभाविक पैन।
प्रगट देखिये लोक मंझार, संग प्रसाद अनेक प्रकार॥
शुभ अशुभ मन की प्रापति होय, सग कुसंग तणो फल सोय।
पुद्गल वस्तु की निरणय ठीक, इस कू करनी है तहकीक॥

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर है तथा पाठकों के मन को लुभावने वाली है। ग्रंथ प्रकाशन योग्य है।

घासी कवि के पद भी मिलते हैं।

३२ रागमाला—श्यामभिश्र

राग रागनियों पर निबद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है। इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखां के संरक्षणता में जाकर लाहौर मे इसकी रचना की थी। कासिमखां उस समय वहां का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखांन सुजान कृपा कवि पर करी।
रागनि की माला करिवे को चित धरी।।

दोहा

सेख खांन के वंश में उपज्यौ कासमखांन।
निस दीपग ज्यौं चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ भान।।
कवि वरनै छवि खान की, सौ वरनी नहीं जाय।
कासमखांन सुजान की अंग रही छवि छाय।।

रागमाला मे भैरोंराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्भुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

संवत् सौरहसे वरष, उपर बीते दोइ।
फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ।।

सोरठा

पोथी रची लाहौर, स्याम आगरे नगर के।
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरभुज मिश्र के।।

इति रागमाला ग्रंथ स्याममिश्र कृत संपूरण।

३२ रुक्मणिकृष्णजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ मे महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दय का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणि के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलवल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सदलबल के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान, पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर आना, रुक्मिणी का सौन्दर्य वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रुक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान आदि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कवित्त, त्रोटक, नाराच आदि छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

नाराच आदि छंद

आणंद मंरीप सोहवी, त्रिभवणरूप माहवी।
रूप्प मरणंस नेवरी, सुचक्ष चरण घुघरी॥
झव झबै झलक झलक, अमया हंस सोमती।
रतन हीर जडत थाम, हीर की अनोपती॥
मर्लमर्ल ध चंद सूर, सीसं फूल सोहए।
वासिगं वेणि रूले जेम, सिरद मणिाज मोहए॥
सोवन मै रत्नहार, अडित कंठ मैं रुले।
अर्वच मोति अडित जोति, न्याकिस वक्षाकुले॥

३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रंथ है जिसकी भाषा स्योजीराम सौगाणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम रूपचन्द तथा गुरु का नाम प० जगरूपजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८७४ में समाप्त की थी। लग्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। भाषा टीका में ४२१ पद्य हैं। इसकी एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते हैं—

३५ लब्धि विधान चौपई

लब्धि विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें लब्धिविधान व्रत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह व्रत चैत्र एवं भादव मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस व्रत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीषम जिनका नाम प्रथमबार सुना जा रहा है। कवि सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका गोत्र था। सांगानेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खूब प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१७ (सन् १५६०) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरौ, फागुण मास जबै ऊतरौ।
उजल पाखि तेरसि तिथि जांण, ता दिन कथा गढी परवाणि ॥१६६॥
बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति।
यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुरांण मांहि जैसी लही ॥१६७॥
सांगानेरी वसै सुभ गांव, मांन नृपति तस चहु खड नाम।
जहि कै राजि सुखी सब लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥१६८॥
जैनधर्म की महिमां वणी, संतिक पूजा होई तिहघणी।
श्रावक लोक वसै सुजांण, सांझ संवारा सुणै पुराण ॥१६६॥
आठ विधि पूजा जिणेश्वर करै, रागदोप नहीं मन मैं धरै।
दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेय ॥२००॥
कडा बंध चौपई जांणि, पूरा हूवा दोइसै प्रमाण।
जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥२०१॥
इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण।

३६ वर्द्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिव्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों मे विभक्त है। प्रथम सर्ग मे ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमे नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवत वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विपहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमे विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विपहरन विधि संतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरष के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य मे लिखकर इसे संवत् १७४१ मे पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विषहरन लिख्यते—

दोहरा—श्री गनेस सरस्वती, सुमरि गुर चरननु चितलाय।
पेत्रपाल दुखहरन को, सुमति सुबुधि बताय॥

चौपई

श्री जिनचंद सुवाच वखांनि, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरष मुनिज्ञान।
इन सील दीनी जीव दया आंनि, संतोष मैया खड़ तिरहमनि॥२॥

३८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३७ से भी अधिक है। कथाकार प० दामोदर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे। ऐसा मालूम पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर था इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थीं उनमें दामोदर नाम लिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया। दामोदर का उल्लेख प्रथम, पष्ठ, एकादश, द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समाप्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत गद्य में है तथा भाषा, भाव एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति भंडार में सुरक्षित है। इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति ग्रंथ संख्या २५४३ पर देखें। इसमें ४४ कथाओं तक पाठ हैं।

३६ व्रतकथाकोश

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत ग्रंथ लिखे हैं जिनमें आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमान पुराण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा को जन्म दिया जिसमें ब्र० जिनदास, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र जैसे उच्चकोटि के विद्वान हुये।

व्रतकथा कोश भी उनकी रचनाओं में से एक रचना है। इसमें अधिकांश कथायें उन्हीं के द्वारा विरचित हैं। कुछ कथायें अभ्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं।¹ कथायें संस्कृत पद्य में हैं। भ० सकलकीर्ति ने सुगन्धदशमी कथा के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है —

असमगुण समुद्रान, स्वर्ग मोक्षाप देशून।
प्रकटित शिवमार्गान्, सद्गुरुन् पंचपूज्यान्॥

विस्तृत परिचय देखिये डा० कासलीवाल द्वारा लिखित बुधराज एवं उनका साहित्य—जैन सन्देश शोधांक अंक ११

त्रिभुवनपतिभव्यैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् ।
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाप्त्यै ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४५) वाद में लिखे गये हैं। प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है। कथा कोश में कुल कथाओं की संख्या ५० है।

४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी मे ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है। इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्त्ति के आश्रित थे। ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे। एक वार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी वन गये। इनके द्वारा विरचित अव तक ८ रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं। जिसमें त्रेपन क्रिया (संवत् १६६५) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृपण जगावन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं।

'समोसरण' एक स्तोत्र के रूप मे रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था। इसमे भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है। इन्होंने इसमे अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे।

स रहसै अढसठिसमै, माघ दसै सित पक्ष।
गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिक्ष ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन वहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है। सोनागिर पहिले दतिया स्टेट मे था अव वह मध्यप्रदेश मे है। कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था। रचना मे क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूनौ को,
हाट हू वजार नाना भांति जुरि आए हैं।
भावधर वंदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,
पाप मूल निकंदन कौ दूर हू सै धाए है ॥
गोठै जैउ नारे पुनि दान दैह नाना विधि,
सुर्ग पंथ जाइवे कौ पूरन पद पाए है।

कीजिये सहाइ पाइ आए हैं भागीरथ,
गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं ॥

दोहा

जेठ सुदी चौदस भली, वा दिन रची बनाइ।
संवत् अष्टादस इकसठ, संवत् लेउ गिनाइ ॥
पढ़े सुने जो भाव भर, औरे देइ सुनाइ।
मनवंछित फल कौ लिये, सो पूरन पद को पाइ ॥

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश कवि ने महिमासाह का बादशाह अला-उद्दीन के साथ झगड़ा, महिमासाह का भागकर रणथम्भौर के महाराजा हम्मीर की शरण में आना, बादशाह अलाउद्दीन का हम्मीर को महिमासाह को छोड़ने के लिये बार २ समझाना एवं अन्त में अलाउद्दीन एवं हम्मीर का भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है। कवि की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है।

रासो कब और कहां लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है। उसने केवल अपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है।

मिले रावपति साही पीर ज्यौं नीर समाही।
ज्यों पारिस को परसि बजर कंचन होय जाई ॥
अलावीन हमीर से हुआ न होस्यो होवसे।
कवि महेस यम उचरै मैं समौसाहै बहु पुरबसे ॥

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची

क्रमांक	ग्रं, सू क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१	४३८१	अनंतव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचद्र	स०	अ	१६३०
२	४३६२	अनंतचतुर्दशीपूजा	शातिदास	स०	ख	×
३	२८६५	अभिधान रत्नाकर	धर्मचद्रगणि	स०	अ	×
४	४३६१	अभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	ज	×
५	५६६	अमृतधर्मरसकाव्य	गुणचद्र	स०	ञ	१६ वी शताब्दी
६	४४०१	अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	स०	अ	१८५१
७	२५३५	आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचद्र	स०	ट	×
८	६१६	आराधनासारवृत्ति	प० आशाधर	स०	ख	१३ वी शताब्दी
९.	४४३५	ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	स०	ख	×
१०.	४४८०	कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्त्ति	स०	अ	×
११.	२५४३	कथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	स०	अ	×
१२.	५४५६	कथासंग्रह	ललितकीर्त्ति	स०	अ	×
१३.	४४४६	कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	स०	छ	×
१४.	३८२८	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	अ	×
१५	३८२७	कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	प० आशाधर	स०	अ	१३ वी "
१६	४४६७	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	प्रभाचद्र	स०	अ	१५ वी "
१७	२७५८	कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिह	स०	अ	१६ वी "
१८.	४४७३	कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	सं०	अ	×
१९	२०२३	कुमारसंभवटीका	कनकसागर	स०	अ	×
२०.	४४८४	गजपंथामण्डलपूजनविधान	भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति	स०	ख	×
२१.	२०२८	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	स०	ङ	×
२२	३८३६	गीतवीतराग	अभिनव चारुकीर्त्ति	स०	अ	×
२३.	११७	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	स०	क	×
२४.	११८	गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	सं०	क	×
२५.	६१	गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	स०	क	×
२६.	५४३६	चंदनषष्ठीव्रतकथा	छत्रसेन	स०	अ	×
२७	२०४८	चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुणनंदि	स०	ञ	×

क्रमांक	ग्रं सू क	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२८	४११२	चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	सं	च	×
२९.	४११४	ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन	भ सुरेन्द्रकीर्ति	स	च	×
३०	४१२१	णमोकारपैंतीसीव्रतविधान	कनककीर्ति	सं	झ	×
३१	२११	तत्त्ववर्णन	शुभचंद्र	स	म	×
३२.	५४४१	त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	सं	घ	×
३३	४७ ५	दशलक्षणव्रतपूजा	जिनचन्द्रसूरि	सं	झ	×
३४	४७ १	दशलक्षणव्रतपूजा	मल्लिभूषण	सं	छ	×
३५.	४७ २	दशलक्षणव्रतपूजा	सुमतिसागर	स	झ	×
३६	४७२१	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	स०	घ	१७७२
३७	४७२४	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनंदि	सं	घ	×
३८	४७२५	” ” ”	जगत्कीर्ति	स	च	×
३९	७७२	धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्ति	सं	म	×
४०	२११२	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	स	ट	×
४१	४८१	नित्यस्मृति	×	सं	ट	×
४२.	४८११	नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	सं	घ	×
४३	४८२१	पंचकल्याणकपूजा	”	सं	क	×
४४	१९७१	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	स	घ	×
४५	५४२८	प्रशस्ति	दामोदर	सं	घ	×
४६	११९८	पुराणसार	श्रीचन्द्रमुनि	सं	घ	१ ७७
४७	५४४	भावनाचौतीसी	भ पद्मनन्दि	सं	घ	×
४८	४ ५१	भूपालचतुर्विंशतिटीका	आशाधर	सं	म	१३ वीं शताब्दी
४९.	४ ५५	भूपालचतुर्विंशतिटीका	विनयचंद	स	म	१३ वीं ”
५०	५ ५७	मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	स	च	१७५६
५१	५१८१	मुनिसुव्रतछंद	प्रभाचंद्र	सं हि	म	×
५२	१७९	मूलाचारटीका	वसुनंदि	प्रा सं	म	×
५३	२१२१	यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचंद्र	सं	म	×
५४	२१८१	रत्नत्रयविधि	आशाधर	सं	म	×
५५.	३१५५	रूपमञ्जरीनाममाला	रूपचंद	सं	म	१६४४
५६	३१५	वर्द्धमानकाव्य	मुनिपद्मनंदि	सं	म	१३ वीं ”

क्रमांक	ग्रं सू. क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
५७.	३२६५	वाग्भट्टालंकारटीका	वादिराज	स०	अ	१७२९
५८	५४४७	वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	स०	अ	×
५९.	५२२५	शरदुत्सवदीपिका	सिंहनंदि	स०	अ	×
६०.	५८२९	शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	स०	छ	×
६१.	४१०७	शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	अ	×
६२.	५१९६	पणवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	स०	अ	×
६३.	५४९	पष्ट्यधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	स०	घ	×
६४.	१८२३	सप्तनयावबोध	मुनिनेमिसिंह	सं०	अ	×
६५.	५४६७	सरस्वतीस्तुति	आशाधर	सं०	अ	१३ वीं ”
६६.	४९४९	सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचंद	सं०	ड	×
६७	२७३१	सिंहासनद्वात्रिंशिका	क्षेमकरमुनि	स०	ख	×
६८.	३८१८	कल्याणक	समन्तभद्र	प्रा०	ड	×
६९	३९३१	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	अ	×
७०.	१००५	यत्याचार	आ० वसुनंदि	प्रा०	अ	×
७१.	१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	अप०	ञ	१५०५
७२.	६४५४	कल्याणकविधि	विनयचंद	अप०	अ	×
७३.	५४४	चूनडी	”	”	अ	×
७४	२६८८	जिनपूजापुरंदरविधानकथा	अमरकीर्ति	अप०	अ	×
७५	५४३९	जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अप०	अ	१७ वीं
७६	२०९७	णेमिणाहचरिउ	लक्ष्मणदेव	अप०	अ	×
७७.	२०९८	णेमिणाहचरिय	दामोदर	अप०	अ	१२८७
७८.	५६०२	त्रिशतजिनचउवीसी	महणसिंह	अप०	अ	×
७९.	५४३९	दशलक्षणकथा	गुणभद्र	अप०	अ	×
८०	२६८८	दुधारसविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
८१.	४९८६	नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अप०	ञ	×
८२.	२६८८	निर्झरपंचमीविधानकथा	विनयचंद	अप०	अ	×
८३.	२१७९	पासचरिय	तेजपाल	अप०	ट	×
८४.	५४३९	रोहिणीविधान	गुणभद्र	अप०	अ	×
८५	२६९३	रोहिणीचरित	देवनंदि	अप०	अ	१५ वीं

क्रमांक	ग्रं सू क	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा		ग्रंथ भंडार	रचना काल
८६	२४१७	सम्मयविणणाहचरिउ	तेजपाल	अप		भं	×
८७	२४४४	सम्यक्त्वकौमुदी	सहणपाल	अप		भ	×
८८	२६८८	सुखसपत्तिविधानकथा	विमलकीर्ति	अप		भ	×
८९	२४११	सुगन्धदशमीकथा	,,	अप		भं	×
९०	२१११	अंजनारास	धर्मभूषण	हि	प	भ	×
९१	४११७	अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	हि	प	ड	×
९२	२१ ८	अठारहनातेकीकथा	ऋषिलालचन्द	हि	प	भ	×
९३	१ १	अनन्तकेछप्पय	धर्मचन्द्र	हि	प	भ	×
९४	४१८१	अनन्तव्रतरास	ब्र जिनदास	हि	प	भ	१२ वीं
९५	४२१५	अर्हनकचौढालियागीत	विमलकीर्ति	हि	प	भ	११८१
९६	१७६७	आदित्यवारकथा	रायमल्ल	हि	प	ङ	×
९७	१४२५	आदित्यवारकथा	भाविचन्द्र	हि	प	भ	×
९८	१११२	आदीश्वरकासमवसरन	×	हि	प	भ	१११७
९९	५७१	आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हि	प	भ	१७४१
१	१११५	आदिनाथस्तवन	पल्ह	हि	प	ख	११ वीं
१ १	१४८७	आराधनाप्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हि	प	भ	×
१ २	१८६४	आरतीसंग्रह	ब्र जिनदास	हि	प	भ	१५ वीं शताब्दी
१ ३	१४	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	हि	प	भं	×
१ ४	४४२८	ऋषिमंडलपूजा	आ गुणनंदि	हि	प	भ	×
१ ५	९१४	कठियारकानड़रीचौपई	×	हि	प	भं	१७४७
१ ६	६ ५२	कवित्त	अगरदास	हि	प	ट	१८ वी शताब्दी
१ ७	६ ६१	कवित्त	बनारसीदास	हि	प	ट	१७ वीं शताब्दी
१ ८	१११७	कर्मचूरव्रतवेलि	मुनिसकलचन्द	हि	प	भं	१७ वीं शताब्दी
१ ९	५६ ८	कलियुगलक्षण	हरिचरणदास	हि	प	भ	×
११	१८६४	कृपणछंद	चन्द्रकीर्ति	हि	प	भ	१६ वीं शताब्दी
१११	१४८७	कृष्णरुक्मिणीवेलि	पृथ्वीराज	हि	प	भ	११६७
११२	२५५७	कृष्णरुक्मिणीमंगल	पदमभगत	हि	प	भं	१८६
११३	११११	गीत	पल्ह	हि	प	ख	१६ वीं शताब्दी
११४	१८६४	गुरुछंद	शुभचंद	हि	प	भं	१६ वीं शताब्दी

क्रमांक	ग्रं सू क	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
११५	४६३२	चतुर्दशीकथा	डालूराम	हि० प०	छ	१७६५
११६	५४१७	चतुर्विंशतिछप्पय	गुणकीर्त्ति	हि० प०	अ	१७७७
११७.	४५२९	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	नेमिचंदपाटनी	हि० प०	क	१८८०
११८.	४५३५	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	सुगनचंद	हि० प०	च	१९२६
११९	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि० प०	ज	१८४१
१२०.	२५६४	चन्दनमलयागिरीकथा	चतर	हि० प०	अ	१७०१
१२१.	२५६३	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि० प०	अ	×
१२२	१८७९	चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	हि० प०	क	१९१३
१२३	१५७	चर्चासागर	चम्पालाल	हि० ग०	अ	×
१२४.	१५४	चर्चासार	प० शिवजीलाल	हि० ग०	क	×
१२५	२०५८	चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्त्ति	हि० प०	अ	१६९२
१२६	५६१५	चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१२७	५९१५	चेतनगीत	मुनिसिंहनंदि	हि० प०	छ	१७ वी शताब्दी
१२८.	५४०१	जिनचौवीसीभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हि० प०	अ	×
१२९	५५०२	जिनदत्तचौपई	रल्हकवि	हि० प०	अ	१३५४
१३०.	५४१४	ज्योतिपसार	कृपाराम	हि० प०	अ	१७९२
१३१	६०६१	ज्ञानबावनी	मतिशेखर	हि० प०	ट	१५७४
१३२	५८२९	टंडाणागीत	बूचराज	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१३३.	३६९	तत्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्त्ति	हि० ग०	ङ	१८ वी ,,
१३४.	३६८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि० ग०	छ	१८ वी ,,
१३५.	३७४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि० ग०	अ	१७ वी ,,
१३६.	३७८	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिखरचंद	हि० प०	क	१९ वी ,,
१३७.	४६२७	तीनचौबीसीपूजा	नेमीचंदपाटणी	हि० प०	क	१८९४
१३८.	६००६	तीसचौबीसीचौपई	श्याम	हि० प०	झ	१७४९
१३९.	५८८१	तेईसबोलविवरण	×	हि० प०	छ	१६ वी शताब्दी
१४०.	१७३९	दर्शनसारभाषा	नथमल	हि० प०	क	१९२०
१४१.	१७४०	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि० ग०	क	१९२३
१४२.	४२४५	देवकीकीढाल	लूणकरणकासलीवाल	हि० प०	अ	×
१४३.	४६८	द्रव्यसंग्रहभाषा	बाबा दुलीचंद	हि० ग०	क	१९६६

क्रमांक	ग्र सू क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रन्थभंडार	रचना काल
१४४	५८८१	द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	हि ग	ग	१७११
१४५	५४ २	नगरों की बसापतका विवरण	×	हि ग	म	×
१४६	२६ ७	नागमंता	×	हि प	म	१८६१
१४७	४२४६	नागश्रीसज्झाय	विनयचंद	हि प	म	×
१४८	८११	निशामणि	ब्र जिनदास	हि प	क	१५ वी शताब्दी
१४९	५४४६	नेमिजिनव्याहलो	खेतसी	हि प	म	१७ वीं "
१५	२१५८	नमीश्वरचरित्र	मारुकन्द	हि प	म	१८ ४
१५१	५१६२	नमिश्रीकोमंगल	विश्वभूषण	हि प	म	१६९८
१५२	१८६४	नमिनाथछंद	शुभचंद	हि प	म	१६ वीं "
१५३	४२५४	नेमिराजमतिगीत	हीरानंद	हि० प	म	×
१५४	२६१४	नेमिराजुलव्याहलो	गोपीकृष्ण	हि प	म	१८६१
१५५	५४२६	नेमिराजुलविवाद	ब्र ज्ञानसागर	हि प	म	१७ वीं "
१५६	५६१५	नेमीश्वरकाचौमासा	मुनिसिंहनंदि	हि प	म	१७ वीं "
१५७	५८२६	नेमिश्वरकाहिंडोलना	मुनिरत्नकीर्ति	हि प	म	×
१५८	४८२६	नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्ति	हि प	म	×
१५९	११५	पंचकल्याणकपाठ	हरचंद	हि प	म	१८२१
१६	२१७१	पांडवचरित्र	लाभवर्द्धन	हि प	ट	१७६८
१६१	४२५७	पद	ऋषिशिवलाल	हि प	म	×
१६२	१४१६	परमात्मप्रकाशटीका	ज्ञानचंद	हि	क	१८६६
१६३	५८३	प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हि प	म	×
१६४	५१६८	पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	हि	म	१७ वीं "
१६५	४२६	पार्श्वनाथचौपई	प लाखो	हि प	ट	१७३४
१६६	१८६४	पासवछन्द	ब्र नथराज	हि प	म	१६ वीं "
१६७	१२७७	पिंगलछन्दशास्त्र	माखनकवि	हि प	म	१ ६३
१६८	२६२१	पुण्याश्रवकथाकोश	टेकचंद	हि प	क	१८२८
१६९	५२२	बंभरदपसराचौपई	मीडाल	हि प	ट	१८८१
१७	५८५६	बिहारीसतसईटीका	कृष्णराम	हि प	म	×
१७१	५६ ८	बिहारीसतसईटीका	हरचरणदास	हि प	म	१८३४
१७२	५४६७	भुवनकीर्तिगीत	बूचराज	हि प	म	१६ वीं "

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१७३.	२२५४	मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रंगविनयगणि	हि० प०	अ	१७१४
१७४.	३४८९	मनमोदनपंचशती	छत्रपति	हि० प०	क	१९१६
१७५	६०४६	मनोहरमन्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ट	×
१७६.	३८६४	महावीरछंद	शुभचद	हि० प०	अ	१६ वीं ,,
१७७.	२६३८	मानतुंगमानवर्तिचौपई	मोहनविजय	हि० प०	छ	×
१७८.	३१८५	मानविनोद	मानसिंह	हि० प०	ख	×
१७९.	३४९१	मित्रविलास	घासी	हि० प०	क	१७८९
१८०.	१९४८	मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	अ	१८८५
१८१	२३१३	यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१५८१
१८२	२३१५	यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१९३२
१८३.	५११३	रत्नावलिव्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	हि० प०	अ	१६ वीं
१८४.	५५०१	रविव्रतकथा	जयकीर्ति	हि० प०	अ	१७ वीं ,,
१८५.	६०३८	रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२
१८६	३४६४	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि० प०	झ	×
१८७.	५३६८	राजसभारंजन	गगादास	हि० प०	अ	×
१८८.	६०५५	रुक्मणिकृष्णजीकोराम	तिपरदास	हि० प०	ट	×
१८९.	२६८९	रैदव्रतकथा	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वीं ,,
१९०	६०२७	रोहिणीविधिकथा	वंसीदास	हि० प०	ट	१६९५
१९१	५९६६	लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×
१९२	६०८६	लब्धिविधानचौपई	भीषमकवि	हि० प०	ट	१६१७
१९३	५९५१	लहुरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×
१९४	६१०५	वसतपूजा	अजयराज	हि० प०	ट	१८ वीं ,,
१९५	५५१९	वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	हि० प०	अ	×
१९६	२३५६	विक्रमचरित्र	अभयसोम	हि० प०	अ	१७२४
१९७.	३८६४	विजयकीर्त्तिछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वीं. ,,
१९८	३२१३	विषहरनविधि	संतोषकवि	हि० प०	छ	१७४१
१९९.	२६७५	वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	अ	×
२००	३७०४	षटलेश्यावेलि	साहलोहट	हि० प०	झ	१७३०
२०१.	५४०२	शहरमारोठ की पत्री		हि० ग०	अ	×

क्रमांक	ग्रं सू क	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथप्रकार	रचना काल
२ २	५४१०	शीलरास	गुणकीर्ति	हि॰ प॰	ग्र	१७११
२ ३	२६४१	शीलरास	ब्र रायमलदेवसूरि	हि प॰	ग्र	१६ वी
२०४	३६६६	शीलरास	विजयदेवसूरि	हि प	ग्र	१६ वी
२०५	२७०१	श्रेणिकचौपई	डू गावेद	हि प	ग्र	१८२६
२०६	२४३२	श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्ति	हि॰ प	ग्र	१८२
२ ७	३३६२	समोसरण	ब्र गुलाल	हि प	ग्र	१६६८
२ ८	५५२८	स्यामबत्तीसी	नरदास	हि प	ग्र	×
२ ६	२४३८	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	हि प	ग्र	१७२४
२१	१२१६	सामायिकपाठमीणी	तिलोकचंद	हि प	ग्र	×
२११	३७ ६	हम्मीररासो	महेशकवि	हि प	ग्र	×
२१२	१६६४	हरिवंशपुराण	×	हि॰ प	ग्र	१३७०
२१३	२०४२	होलिका चौपई	डूंगरकवि	हि प	ग्र	१६६६

भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र

यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार मे संग्रहीत है।
राजा यशोधर दु स्वप्न की शाति के लिये अन्य जीवों की बलि न
चढा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है।
रानी हाहाकार करती है।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]
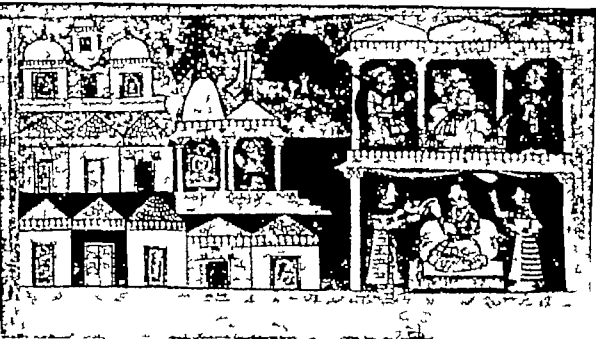
जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य
(ग्रंथ सूची क्र सं २२६४ पत्र संख्या ११४)

❀ श्री महावीराय नम ❀

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

१ अर्थदीपिका—जिनभद्रगणि । पत्र स० ५७ से ६८ तक । आकार १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जैन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सख्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

२. अर्थप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ३०३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×८ इंच । भा० राजस्थानी (ढूढारी गद्य) विषय—सिद्धान्त । र० काल स० १९१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र की यह विशद व्याख्या है

३ प्रति सं० २ । पत्र स० ११० । ले० काल × । वे० स० ४८ । प्राप्ति स्थान झ भण्डार ।

४ प्रति स० ३ । पत्र स० ४२७ । ले० काल स० १९३५ आसोज बुदी ६ । वे० स० १८१६ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर एव आकर्षक है ।

५. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन · । पत्र स० ४९ । आ० ९×६ इ च । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुणस्थानो का भी अच्छा विवेचन किया गया है । अन्त मे व्रतो एव प्रतिमाओ का भी वर्णन दिया हुआ है ।

६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स० ७ । आ० ८×५ इ च । भा० हिन्दी । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

७ अर्हत्प्रवचन । पत्र स० २ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इ च । भा० सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८२ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सूत्र मात्र है। सूत्र संख्या ८६ है। पांच अध्याय हैं।

८. अर्हत्प्रवचनव्याख्या………। पत्र सं० ११। आ० १ ×४½ इंच। भा० संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६१। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम चतुर्दश सूत्र भी है।

९. आचारांगसूत्र………×। पत्र सं० ५३। आ० १ ×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १८२। अपूर्ण। वे० सं० ९९। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है।

१० आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक………। पत्र सं० २। आ० १ ×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २८। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

११ आस्रवत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ११। आ० ११½ × ५½ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८७। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१२ प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० १८८। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

१३ प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० २६५। प्राप्ति स्थान भ भण्डार।

१४ आस्रवत्रिभंगी………। पत्र सं० ६। आ० १२×५½ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २ १५। प्राप्ति स्थान भ भण्डार।

१५ आस्रववर्णन………। पत्र सं० १४। आ० ११½×६½ इंच। भा० हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६। प्राप्ति स्थान म भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है।

१६ प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १६६। प्राप्ति स्थान म भण्डार।

१७ इक्कीसठाणाचर्चा—सिद्धसेन सूरि। पत्र सं० ४। आ० ११×४½ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६५। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम एकविंशतिस्थान प्रकरण भी है।

१८ उत्तराध्ययन………। पत्र सं० ९५। आ० ६½×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८। प्राप्तिस्थान घ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१९ उत्तराध्ययनभाषाटीका · · । प० सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भा० हिन्दी । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२४४ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयाल दया करू, आसा पूरण काज ।
चउवीसे जिणवर नमुं, चउवीसे गणधार ।। १ ।।
धरम ग्यान दाता सुगुरु, अहनिस ध्यान धरेस ।
वाणी वर देसी सरस, विघन हार विघनेस ।। २ ।।
उत्तराध्ययन चउदमड, मित्र छए अधिकार ।
अलप अकल गुण छइ घणा, कहू वात मति अनुसार ।। ३ ।।
चतुर चाह कर साभलो, ए अधिकार अनुप ।
निश विकथा परिहरी, सुण ज्यो आलस मूढ ।। ४ ।।

आगे साकेत नगरी का वर्णन है । कई ढाले दी हुई है ।

२०. उदयसत्ताबंधप्रकृति वर्णन । पत्र सं० ५ । आ० ११×५½ इंच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१ कर्मग्रन्थमत्तरी · · ··· । पत्र स० २८ । आ० ६×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० स० १२२ । प्राप्तिस्थान व्य भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० १२ । आ० १०½×४½ इंच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १६८१ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २९७ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—पांडे डालू के पठनार्थ नागपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत मे सक्षिप्त टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—सवत् १६८१ वरषे मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णीकृता पांडे डालू पठनार्थ लिखित सुरजन मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ८५ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२४ प्रति स० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० १४० । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

२५ प्रति स० ४। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १७६८। अपूर्ण। वे० सं० ११६१। ङ भण्डार।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी।

२६ प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८ २ फाल्गुन बुदी ७। वे० सं० १ १। ङ भण्डार।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि विद्यालब्धि के शिष्य धर्मैराम मसूदाबाद में स्वपठन के लिये की थी। प्रति के दोनों ओर तथा ऊपर नीचे संस्कृत में संक्षिप्त टीका है।

२७ प्रति सं० ६। पत्र सं० ७७। ले० काल सं० १६७१ आसाढ सुदी २। वे० सं० २६। छ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। मालपुरा में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई तथा सं० १६८७ में मुनि नन्दकीर्ति ने प्रति का संशोधन किया।

२८ प्रति सं० ७। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८२१ ज्येष्ठ सुदी १४। वे० सं० १ ५ छ। भण्डार।

२६ प्रति सं० ८। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ६। वे० सं० ६१। च भण्डार।

३० प्रति सं० ९। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० ६१। छ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं।

३१ प्रति सं० १०। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० २८६। छ भण्डार।

विशेष—१२६ गाथायें हैं।

३२. प्रति सं० ११। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १७६१ वैसाख सुदी ११। वे० सं० ११२। ज भण्डार।

विशेष—अम्बावती में पं० तथा माधवा में पं० जीवाराम के शिष्य मोहनलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३३ प्रति सं० १२। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वे० सं० १२१। ञ भण्डार।

३४ प्रति सं० १३। पत्र सं० १७। ले० का० सं० १६४४ कार्तिक सुदी १। वे० सं० १२६। ञ भण्डार।

३५ प्रति सं० १४। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २१२। ञ भण्डार।

विशेष—वृन्दावन में राव सुरसेन के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

३६. प्रति स० १५ । पत्र स० १६ । ले० काल X । वे० स० ४०५ । ञ भण्डार ।

३७ प्रति सं० १६ । पत्र स० ३ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २८० । ञ भण्डार ।

३८ प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे० स० ४०५ । ञ भण्डार ।

३६. प्रति स० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० स० १३० । ञ भण्डार ।

४०. प्रति स० १६ । पत्र स० ५ से १७ । ले० काल स० १७६० । अपूर्ण । वे० स० २००० । ट भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगरी मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधसिंह के विजय राज्य मे आचार्य उदयभूषण के प्रशिष्य प० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने संशोधन करके प्रतिलिपि की। प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४१ प्रति स० २० । पत्र स० १३ से ४३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। गुजराती टीका सहित है।

४२. **कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्त्ति** । पत्र सं० २ से २२ । आ० १२×५¾ इच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल स० १८२२ । वे० स० १२५२ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषण के सहाय्य से लिखी थी।

४३. **कर्मप्रकृति** · · । पत्र स० १० । आ० ८¾×४⅗ इच । भा० हिन्दी । र० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६४ । अ भण्डार ।

४४. **कर्मप्रकृतिविधान—बनारसीदास** । पत्र स० १६ । आ० ८⅔×४½ इच । भा० हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे स० ३७ । ङ भण्डार ।

४५. **कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्त्ति** । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल सं० १७६८ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्त्ता आ० नेमिचन्द्र हैं।

४६. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल X । वे स० १२ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४७. **कर्म्मस्तवसूत्र—देवेन्द्रसूरि** । पत्र सं० १२ । आ० ११×६ इच । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । वे० स० १०५ । छ भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है।

१ कल्पसूत्र—भद्रबाहु । पत्र म० ६ । आ० ११×४½ इच । भा० प्राकृत । विषय-आगम । र० का × । ल० का स० १५६० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० म० १८४६ । ट भण्डार ।

५२. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ मे २७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १८६४ । ट भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है । गाथाओ के ऊपर अर्थ दिया हुआ है ।

५३ कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपध्याय । पत्र स० २५ । आ० ६×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल स० १७२५ कार्तिक । पूर्ण । वे० स० २८ । ख भण्डार ।

विशेष—लूणकर्णसर ग्राम मे ग्र थ की रचना हुई थी । टीका का नाम कल्पलता है । सारक ग्राम मे प० भाग्य विशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५४ कल्पसूत्रवृत्ति । पत्र स० १२६ । आ० ११×६½ इच । भा० प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८१८ । ट भण्डार ।

५५ कल्पसूत्र । पत्र स० १० मे ४८ । आ० १०½×४½ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २००२ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे टिप्पण भी दिया हुआ है ।

५ . क्षपणासारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र म० ६७ । आ० १२×७½ इच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल शक स० ११२५ वि० स० १२६० । ले० काल स० १८१६ बैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० स ११७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्र थ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्राचार्य है ।

५७. प्रति स० २ । पत्र स० १४८ । ले० काल स० १९५५ । वे० स० १२० । क भण्डार ।

५८ प्रति स० ३ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १८४७ आषाढ बुदी २ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५६ क्षपणासार—टीका । पत्र स० ६१ । आ० १२½×५½ इच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११८ । क भण्डार ।

६० क्षपणासारभाषा—पं० टोडरमल । पत्र स० २७३ । आ० १३×८ इच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल १९४६ । पूर्ण । वे० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र है । जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है । महा प० टोडरमलजी की गोमट्टसार (जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड) लब्धिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका है । इन तीनो की भाषा टीका एक ग्रन्थ मे भी मिलता है । प्रति उत्तम है ।

६१ गुणस्थानचर्चा………। पत्र सं० ४५। आ० १२×५ इंच। भाषा प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३। अ भण्डार।

६२ प्रति सं० २। ले० काल ×। वे० सं० ५४। अ भण्डार।

६३ गुणस्थानक्रमारोहसूत्र—रत्नशेखर। पत्र सं० ५। आ० १×४$_{\frac{1}{2}}$ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११५। ड भण्डार

६४ प्रति सं० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १७१५ आसोज बुदी १४। वे० सं० १७१। ड भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित।

६५ गुणस्थानचर्चा………। पत्र सं० ३। आ० ६×४$_{\frac{1}{2}}$ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ११६। अपूर्ण। अ भण्डार।

६६ प्रति सं० २। पत्र सं० २ से २४। वे० सं० ११७। ड भण्डार।

६७ प्रति सं० ३। पत्र सं० २२ से ३१। अपूर्ण। ले० काल ×। वे० सं० ११३ ड भण्डार।

६८ प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १६६१। वे० सं० २३६। च भण्डार।

६९ प्रति सं० ५। पत्र सं० १२। ले० का० ×। वे० सं० २३१ छ भण्डार।

७० प्रति सं० ६। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० १४६। झ भण्डार।

७१ गुणस्थानचर्चा—चन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ३६। आ० ७×७ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल। ले० काल ×। वे० सं० ११६।

७२ गुणस्थानचर्चा एवं चावीस ठाणा चर्चा………। पत्र सं० ८। आ० १०×५$_{\frac{1}{2}}$ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० का० ×। ले० का० ×। अपूर्ण। वे० सं० २११। ट भण्डार।

७३ गुणस्थानप्रकरण………। पत्र सं० ३। आ० ११×४ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० का० ×। ले० का० ×। पूर्ण। वे० सं० १३८। 'क' भण्डार।

७४ गुणस्थानभेद………। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६१। अ भण्डार।

७५ गुणस्थानमार्गणा………। पत्र सं० ४। आ० ८×६$_{\frac{1}{2}}$ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३७। च भण्डार।

७६ गुणस्थानमार्गणारचना………। पत्र सं० १८। आ० ११×४$_{\frac{1}{2}}$ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७३। च भण्डार।

७७ **गुणस्थानवर्णन** · ...... । पत्र स० २० आ० १०×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७८ । च भण्डार ।

विशेष—१४ गुणस्थानों का वर्णन है ।

७८ **गुणस्थानवर्णन** · । पत्र स० १५ से ३१ । आ० १२×५½ इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३६ । ङ भण्डार ।

७९. प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १७६३ । वे० स० ४९६ । व्य भण्डार ।

८० **गोम्मटसार (जीवकाण्ड)**—आ० नेमिचन्द्र । पत्र स० १३ । आ० १३×५ इंच । भा०—प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १५५७ आषाढ सुदी ९ । पूर्ण । वे० स० ११८ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५५७ वर्षे आषाढ शुक्ल नवम्या श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तच्छिष्य मुनि श्री मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति देवास्तच्छिष्य मुनि हेमचंद्र नामा तदाम्नाये सहलवालवंसे सा० देल्हा भार्या देल्ही तत्पुत्र सा० भोजा तद्भार्या अणाभास्तत्पुत्रा सा० भावघो द्वितीय अमरघो तृतीय जाल्हा एतै सास्त्रमिदं लेखयित्त्वा तस्मै ज्ञानपात्राय मुनि श्री हेमचंद्राय भक्त्या प्रदत्तं ।

८१. **प्रति सं० २** । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ११९४ । अ भण्डार ।

८२. **प्रति स० ३** । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७२६ । वे० सं० १११ । अ भण्डार ।

८३. **प्रति स० ४** । पत्र स० ५ से ४८ । ले० काल स० १६२४ । चैत्र सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० १२८ । क भण्डार ।

विशेष—हरिश्चन्द्र के पुत्र सुनपथी ने प्रतिलिपि की थी ।

८४ **प्रति स० ५** । पत्र स० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३६ । क भण्डार ।

८५. **प्रति स० ६** । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १३६ । ख भण्डार ।

८६. **प्रति स० ७** । पत्र स० ३७५ । ले० काल सं० १७३८ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० १५ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है । श्री वीरदास ने अकबराबाद में प्रतिलिपि की थी ।

८७. **प्रति सं० ८** । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६६ आषाढ सुदी ७ । वे० सं० १३८ । क भण्डार ।

६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७६ । ले० काल सं० १६८८ भादवा सुदी १५ । वे० स० १४१ । क भण्डार ।

१००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६५ । अ भण्डार ।

१०१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७६ । ले० काल सं० १८८५ माघ सुदी १५ । वे० स० १८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह तथा मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—२७४ से आगे ५४ पत्रों पर गुणस्थान आदि पर यंत्र रचना है ।

१०३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० स० १५० । ङ भण्डार ।

विशेष—केवल यंत्र रचना ही है ।

१०४. गोम्मटसार-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २१३ । आ० १५×१० इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १६४२ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १५१ । ङ भण्डार ।

विशेष—लब्धिसार तथा क्षपणासार की टीका है । गणेशलाल सुन्दरलाल पांड्या ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी ।

१०५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११११० । ले० काल सं० १८५७ सावण सुदी ५ । वे० सं० ५३८ । च भण्डार ।

१०६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७१ से ७६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६ । ज भण्डार ।

१०७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८१८ । ले० काल सं० १८८७ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० २२१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़े आकार एवं सुन्दर लिखाई की है तथा दर्शनीय है । कुछ पत्रों पर बीच में कलापूर्ण गोलाकार दिये हैं । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

१०८. गोम्मटसारपीठिका-भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६२ । आ० १५×७ इंच । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । झ भण्डार ।

१०९. गोम्मटसारटीका (जीवकाण्ड)...... । पत्र सं. २१२ । आ. ११×५½ इंच । भा. संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । लि. काल × । अपूर्ण । वे. सं. १९६ । ञ भण्डार

विशेष—टीका का नाम तत्वप्रदीपिका है ।

११० प्रति सं० २ । पत्र सं. १२ । लि. काल × । अपूर्ण । वे. सं. १११ । ञ भण्डार ।

१११ गोम्मटसारसदृष्टि—पं० टोडरमल्ल । पत्र सं. ८५ । आ. १२×७ इंच । भा. हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. २ । ग भण्डार ।

११२. प्रति सं० २ । पत्र सं. ४८ से २८ । ले. काल × । अपूर्ण । वे. सं. ५३६ । च भंडार ।

११३ गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं. ११६ । आ. ११×५½ इंच । भा. प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र. काल × । ले. काल सं. १८८५ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे. सं. ८६ । च भण्डार ।

११४ प्रति सं० २ । पत्र सं. १४१ । ले. काल । अपूर्ण । वे. सं. ८ । च भण्डार ।

११५ प्रति सं० ३ । पत्र सं. १६ । ले. काल × । अपूर्ण । वे. सं. ८१ । च भण्डार ।

११६ प्रति सं० ४ । पत्र सं. १३ । ले. काल सं. १५४४ चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे. सं. १८२ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य सर्वसुख के अध्ययनार्थ मरोठिया नगर में प्रतिलिपि की गई ।

११७ गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—कनकनन्दि । पत्र सं. १ । आ. ११½×५ इंच । भा. संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । (तृतीय अधिकार तक) । वे. सं. १३५ । क भण्डार ।

११८. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं. ५४ । आ. ११½×७½ इंच । भा. संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र. काल × । ले. काल सं. ११७० माह सुदी ५ । पूर्ण । वे. सं. ११८ । क भण्डार ।

विशेष—सुमतिकीर्ति की सहायता से टीका लिखी गयी थी ।

११९. प्रति सं० २ । पत्र सं. ८३ । ले. काल सं. ११७३ फागुण सुदी ५ । वे. सं. १३६ । क भण्डार ।

१२० प्रति सं० ३ । पत्र सं. २१ । ले. काल × । अपूर्ण । वे. सं. ८७० । ञ भण्डार ।

१२१ प्रति सं० ३ । पत्र स० ५१ । ले० काल × । वे० स० २५ । ख भण्डार ।

१२२. प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १७५· । वे० स० ४९० । ञ भण्डार ।

१२३. **गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—प० टोडरमल ।** पत्र स० ६९४ । आ० १३×८ इ च । भा० हिन्दी गद्य (ढू ढारी) । विषय-सिद्धान्त । र० काल १९ वी शताब्दी । ले० काल स० १९४९ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १३० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

१२४. प्रति स० २ । पत्र स० २४० । ले० काल × । वे० स० १४८ । ङ भण्डार ।

विशेष—सदृष्टि सहित है ।

१२५. **गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज ।** पत्र स० ५२ । आ० ९×५ इ च । भा० हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० २०१७ । ले० काल स० १७८८ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० स १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रश्न साह आनन्दरामजी खण्डेलवाल ने पूछया तिस ऊपर हेमराज ने गोम्मटसार को देख के क्षयोपशम माफिक पत्री मे जबाब लिखने रूप चर्चा की वासना लिखी है ।

१२६ प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । । ले० काल स० १७१७ आसोज बुदी ११ । वे. स १२९ ।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर मे कल्याण पहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति जीर्ण है । हेमराज १८ वी शताब्दी के प्रथम पाद के हिन्दी गद्य के अच्छे विद्वान हुये हैं । इन्होने १० से अधिक प्राकृत व सस्कृत रचनाओं का हिन्दी गद्य मे रूपातर किया है ।

१२७. **गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका** । पत्र स० १६ । आ० ११½×५ इ च । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१२८ प्रति सं० २ । पत्र स० ६८ । ले० काल स० × । वे० स० ९९ । ङ भण्डार ।

१२९ प्रति स० ३ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० ९१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है —

इति प्राय श्रीगुमट्टसारमूलान्टीकाच्च नि वा श्यक्रमेणएकीकृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्रसैद्धान्ती विरचितकर्मप्रकृतिग्र थस्य टीका समाप्ता ।

१३० गौतमकुलक—गौतम स्वामी। पत्र सं० २। आ० १×४, इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति गुजराती टीका सहित है २ पत्र है।

१३१ गौतमकुलक……। पत्र सं० १। आ० १×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल-×। ले० काल-×। पूर्ण। वे० सं० १२४२। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

१३२ चतुर्दशसूत्र……। पत्र सं० १। आ० १×४ इंच। भा० प्राकृत। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। ख भण्डार।

१३३ चतुर्दशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि। पत्र सं० २६। आ० १×४ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल सं० १६८२ पौष बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १८२। क भण्डार।

१३४ चतुर्दशागबाह्यविवरण— । पत्र सं० १। आ० ११×६ इंच। भा० संस्कृत। विषय-आगम। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४। ख भण्डार।

विशेष—प्रत्येक अंग का पद प्रमाण दिया हुआ है।

१३५ चर्चाशतक—द्यानतराय। पत्र सं० १९। आ० ११½×८ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सिद्धान्त। र० काल १८ वीं शताब्दी। ले० काल सं० १९२१ आषाढ बुदी ९। पूर्ण। वे० सं० १४६। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका भी दी है।

१३६ प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १९१७ फागुण सुदी १२। वे० सं० १५।
क भण्डार।

१३७ प्रति सं० । पत्र सं० १ । ले० काल ×। वे० सं० ४६। अपूर्ण। ख भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित।

१३८ प्रति सं० ४। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १९११ मंगसिर सुदी २। वे० सं० १७१।
क भण्डार।

१३९ प्रति सं० ५। पत्र सं० १८। ले० काल-×। वे० सं० १७२। ड भण्डार।

१४० प्रति सं० ६। पत्र सं० ६४। ले० काल सं० १९१४ कार्तिक सुदी ८। वे० सं० १७३।
ड भण्डार।

विशेष—नीले कागजो पर लिखी हुई है। हिन्दी गद्य मे टीका भी दी हुई हैं।

१४१. प्रति सं० ७ । पत्र स० २२ । ले० काल सं० १६६८ । वे० सं० २८३ । म्ह भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनाये और है।

१ अक्षर बावनी – द्यानतराय – हिन्दी
२ गुरु विनती – भूधरदास – ,,
३ बारह भावना – नवल – ,,
४ समाधि मरण – ,,

१४२. प्रति सं० ८ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५६३ । ट भण्डार ।

विशेष—गुटकाकार है।

१४३ चर्चावर्णन— । पत्र स० ८१ से ११४ । आ० १०३/४×६ इञ्च । भाषा हिन्दी। विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७० । ड भण्डार ।

१४४. चर्चासंग्रह । पत्र स० ३६ । आ० १०१/४×६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७६ । छ भण्डार ।

१४५ चर्चासंग्रह । पत्र स० ३ । आ० १२×५१/४ इञ्च । भाषा संस्कृत–हिन्दी । विषय सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २०५१ । अ भण्डार ।

१४६ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ८६ । ज भण्डार ।

विशेष—विभिन्न आचार्यों की संकलित चर्चाओ का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान—भूधरदास । पत्र स० १३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धात । र० काल स० १८०६ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वे० स० ३८६ । अ भण्डार ।

१४८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल स० १९०८ आषाढ बुदी ६ । वे० स० ४४३ । अ भण्डार ।

१४९. प्रति स० ३ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १८२२ । वे० स० २६ । अ भण्डार ।

१५० प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६४१ वैशाख सुदी ५ । वे० स० ५० । ख भंडार ।

१५१ प्रति स० ५ । पत्र स० ८० । ले० काल स० १६६४ चैत सुदी १५ । वे० स० १७४ । ड भंडार ।

१५२. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३४ से १६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३ । छ भण्डार ।

१५३ प्रति स० ७। पत्र सं ७८। ले काल स १८८३ पौष सुदी ११। वे स १३७। छ् भण्डार।

विशेष—चकवार निवासी महात्मा चंदालाल ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपी की थी।

१५४ चर्चासार—प० शिवजीलाल। पत्र सं १११। आ १ ३/४×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र काल–×। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं १४८। क भण्डार।

१५५ चर्चासार ……। पत्र स १६२। आ ८×४३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सिद्धान्त। र काल ×। अपूर्ण। वे सं १४। छ् भण्डार।

१५६ चर्चासागर……। पत्र सं १६। आ ११×५3/4 इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय–सिद्धान्त। र काल ×। अपूर्ण। वे सं ७८६। अ भण्डार।

१५७ चर्चासागर—चंपालाल। पत्र सं १ ८। आ ११×६१/२ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–सिद्धान्त। र० काल सं १६१। ले काल सं १६३१। पूर्ण। वे सं ४१६। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में १४ पत्र विषय सूची के अलग दे रखे हैं।

१५८. प्रति स० २। पत्र सं ४१। ले का सं १६३८। वे सं १८७। क भण्डार।

१५९ चौदहगुणस्थानचर्चा—अखयराज। पत्र सं ४१। आ ११×५१/२ इञ्च। भा हिन्दी गद्य। (राजस्थानी) विषय–सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६२। अ भण्डार।

१६० प्रति स० २। पत्र सं १–४१। ले का ×। वे सं ८६। अ भण्डार।

१६१ चौदहमार्गणा…… । प सं १ । आ १२×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २ १६। अ भण्डार।

१६२. प्रति स० २। पत्र सं ११। ले काल ×। वे सं १८११। ड भण्डार।

१६३. चौबीसठाणाचर्चा–नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं ६। आ १ ३/४×४३/४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–सिद्धान्त। र काल ×। ले काल। स १८२ वैसाख सुदी १ । पूर्ण। वे सं १२७। क भण्डार।

१६४ प्रति स० २। पत्र सं ६। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १११। क भण्डार।

१६५. प्रति स० ३। पत्र सं ७। ले काल सं १८१७ पौष सुदी १२। वे सं १६ । क भण्डार।

विशेष–पं ईश्वरदास के शिष्य रूपचन्द के पठनार्थ मरामपुरा ग्राम में ग्रन्थ की प्रतिलीपि की।

१६६ प्रति सं० ४। पत्र सं ११। ले काल सं १९४६ कार्तिक बुदि ५। वे सं ५१। ज भण्डार।

विशेष–प्रति सस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या बाई शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।

१६७. प्रति स ५। पत्र स० २२। ले० काल स० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० स० ५२। ख भण्डार।

विशेष–श्रेष्ठी मानसिहजी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थ प० प्रेम से प्रतिलिपि करवायी।

१६८ प्रति स० ६। पत्र स० १ से ४३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५३। ख भण्डार।

विशेष–सस्कृत टब्बा टीका सहित है। १४३वी गाथा मे ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९ प्रति स० ७। पत्र स० ५६। ले० काल ×। वे० स० ५४। ख भण्डार।

विशेष–प्रति सस्कृत टब्बा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थसार टिप्पण' है। आनन्दराम के पठनार्थ टिप्पण लिखा गया।

१७०. प्रति स० ८। पत्र स० २५। ले० का० स० १६४६ चैत सुदी २। वे० स० १८६। ङ भडार।

१७१ प्रति स० ९। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० १३५। छ भण्डार।

१७२ प्रति स० १०। पत्र स० ३२। ले० काल ×। वे० स० १३५। छ भण्डार।

१७३ प्रति स० ११। पत्र स० ५३। ले० काल ×। वे० स० १४५। छ भण्डार।

विशेष–२ प्रतियो का मिश्रण है।

१७४ प्रति स० १२। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० २६१। ज भण्डार।

१७५. प्रति स० १३। पत्र स० २ से २५। ले० काल सं० १६६५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्ण। वे० स० १८१५। ट भण्डार।

विशेष–सस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्ति —सवत् १६६५ वर्षे कार्त्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये चौबीस ठाणे ग्रन्थ सपूर्ण भवति।

१७६ प्रति स० १४। पत्र स० ३३। ले० काल स० १८१४ चैत बुदि ९। वे० स० १८१६। ट भण्डार।

प्रशस्ति–सवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चद्रमिते १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्या सोमवासरे हडुवती देशे अराह्वयपुरे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति नेद विद्वद् छात्र सर्व सुखह्वयाध्यापनर्थ लिपिकृत स्वशयेना चन्द्र तारक स्थीयतामिद पुस्तक।

१७७ प्रति स० १५। पत्र स० ६६। ले० का० स० १८४० माघ सुदी १५। वे० स० १८१७। ट भण्डार।

विशेष–नैणवा नगर मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८ प्रति स० १६। पत्र स० १२। ले० काल ×। वे० स० १८८९। ट भण्डार।

विशेष–५ पत्र तक चर्चायें है इसमे आगे शिक्षा की बातें तथा फुटकर दसाक है। चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न आदि का वर्णन है।

१७६ चतुर्विंशति स्थानक–नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं ४। आ ११×५ इञ्च। भा प्राकृत। विषय–सिद्धांत। र काल ×। ल काल ×। पूर्ण। वे सं १६५। ङ भण्डार।

विशेष–संस्कृत टीका भी है।

१८० चतुर्विंशति गुणस्थान पीठिका······। पत्र स० १८। आ १२×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १६२५। ट भण्डार।

१८१ चौबीस ठाणा चर्चा ····। पत्र सं २ से २४। आ १२×५ इञ्च। भा संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १६६४। अ भण्डार।

१८२ प्रति स० २। पत्र सं ३२ से ५१। आ ११×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। ले काल सं १८६१ पौष सुदी १। वे सं १६६६। अपूर्ण। अ भण्डार।

विशेष–पं रामचन्द्रेण बाणगगरमध्ये लिखितं।

१८३ प्रति स० ३। पत्र सं० ६१। ले काल ×। वे स १६८। अ भण्डार।

१८४ चौबीस ठाणा चर्चा वृत्ति········। पत्र सं १२३। आ ११×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ३२८। अ भण्डार।

१८५ प्रति स २। पत्र सं १५। ले काल स १८४१ जेठ सुदी ३। अपूर्ण। वे सं ७७७। अ भण्डार।

१८६ प्रति स ३। पत्र स ११। ले काल ×। वे सं १५२। क भण्डार।

१८७ प्रति स० ४। पत्र सं १०। ले काल सं १८८१ कार्तिक बुदि १। जीर्ण-शीर्ण। वे सं १५६। क भण्डार।

विशेष–पं ईश्वरदास के शिष्य तथा शोभाराम के गुरुभाई रामचन्द्र के पठनार्थ मिश्र गिरधारी के द्वारा प्रतिलिपि करवायी गई। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१८८ चौबीस ठाणा चर्चा······। पत्र सं ११। आ ६ ×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय–सिद्धांत। र काल । ले काल । पूर्ण। वे सं ४१ । अ भण्डार।

विशेष–समाप्ति में ग्रन्थ का नाम 'इक्कीस ठाणा' प्रकरण भी लिखा है।

१८९ प्रति स । पत्र सं ८। ले काल सं १८२६। वे सं १२४७। अ भण्डार।

१९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१९१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१९२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष–हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१९३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १९१ । क भण्डार ।

१९४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९२ । क भण्डार ।

१९५ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १९७९ । वे० सं० २३ । ख भण्डार ।

विशेष–चैनीराम की पुस्तक में प्रतिलिपि की गई ।

१९६ छियालीसठाणाचर्चा .... । पत्र सं० १० । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल–× । ले० काल सं० १८२२ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २९८ । ख भण्डार ।

१९७ जम्बूद्वीपफल । पत्र सं० ३२ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

१९८ जीवस्वरूप वर्णन .... । पत्र सं० १४ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा प्राकृत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२१ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रों में तत्त्व वर्णन भी है । गोम्मटसार में से लिया गया है ।

१९९ जीवाचारविचार .... । पत्र सं० ५ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । अ भण्डार ।

२०० प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८१८ मगसिर बुदी १० । वे० सं० २०५ । क भण्डार ।

२०१ जीवसमासटिप्पण । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । ञ भण्डार ।

२०२. जीवसमासभाषा । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १९७१ । ट भण्डार ।

२०३ जीवाजीवविचार । पत्र सं० ६२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २००४ । ट भण्डार ।

२०४ जैन समाचार मार्तण्ड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—बाबा दुलीचन्द । पत्र सं २१ । आ १२×७ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–चर्चा समाधान । र काल सं १९४६ । ले काल × । पूर्ण । वे सं २ ८ । क भण्डार ।

२०५ प्रति स० २ । पत्र सं २१ । लि काल × । वे सं २१७ । क भण्डार ।

२०६ ठाणांगसूत्र ...... । पत्र सं ८ । आ १ ½×४ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–आगम । र काल × । ले काल । अपूर्ण । वे सं १९२ । ख भण्डार ।

२०७ तत्त्वकौस्तुभ—प० पन्नालाल संघी । पत्र सं ७२७ । आ १२×७ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र का × । ले काल सं १९४४ । पूर्ण । वे सं २७१ । क भण्डार ।

विशेष–यह ग्रन्थ तत्त्वार्थराजवार्तिक की हिन्दी गद्य टीका है । यह १ अध्यायों में विभक्त है । इस प्रति में ४ अध्याय तक है ।

२०८ प्रति स० २ । पत्र सं ५४९ । ले काल सं १९४५ । वे सं २७२ । क भण्डार ।

विशेष–४वें अध्याय से १ वें अध्याय तक की हिन्दी टीका है । नवां अध्याय अपूर्ण है ।

२०९. प्रति स० ३ । पत्र सं ४२८ । र काल सं १९३४ । ले काल × । वे सं ९४ । ङ भंडार
विशेष–राजवार्तिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है ।

२१० प्रति स ४ । पत्र सं ४२८ से ७७६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २४१ । ङ भण्डार । विशेष–तीसरा तथा चौथा अध्याय है । तीसरे अध्याय के २ पत्र अलग और हैं । ४७ अलग पत्रों में सूचीपत्र है ।

२११ प्रति सं० ५ । पत्र सं १ ७ से ४ ७ । ले काल × । वे सं २४२ । ङ भण्डार ।

विशेष–५ ६ ७ ८ ९ १ वें अध्याय की भाषा टीका है ।

२१२. तत्त्वदीपिका—। पत्र सं ११ । आ ११×६½ भाषा हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २ १४ । क भण्डार ।

२१३ तत्त्वसमुच्चय—शुभचन्द्र । पत्र स ४ । आ १ ×४ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धांत र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७९ । ञ भण्डार ।

विशेष–आचार्य नमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

२१४ तत्त्वसार—देवसेन । पत्र सं ६ । आ ११×५½ इंच । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र काल × । ले काल सं १०११ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वे सं २२१ ।
विशेष–पं बिहारीदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

विशेष–हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है। अन्तिम पत्र नही है।

२१६. प्रति सं० ३ । पत्र म० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७. तत्त्वसारभाषा–पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ४४ । आ० १२$\frac{3}{4}$×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय–सिद्धान्त । र० काल सं० १६३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६७ । क भण्डार ।

विशेष–देवसेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है।

२१८. प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । क भण्डार ।

२१६. तत्त्वार्थदर्पण   । पत्र सं० ३६ । आ० १३$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । च भण्डार ।

विशेष–केवल प्रथम अध्याय तक ही है।

२२०. तत्त्वार्थबोध— पत्र सं० १८ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । । वे० सं० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष–पत्र ६ से धी देवसेन कृत आलापपद्धति दी हुई है।

२२१. तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सिद्धात । र० काल स० १८७६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध   । पत्र सं० ३६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

२२३. तत्त्वार्थदर्पण   । पत्र स० १० । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष–प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भौसा का भेट किया हुआ है।

२२४ तत्त्वार्थबोधिनीटीका—। पत्र स० ४२ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १६५२ प्रथम वैशाख सुदि ३ । पूर्ण । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष–यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भौंसा का है। श्लोक स० २२५ ।

२२५. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १२६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १६७३ आसोज बुदी ५ । वे० स० ७२ । ख भण्डार ।

विशेष–प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। ब्र० हरदेव के लिए ग्र थ बनाया था। समही कँवर ने जोशी गगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी।

२२६ प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल सं० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० सं० १३७ । ख भण्डार ।

, ~७ प्रति स० | पत्र सं ७२ । । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० म ९१ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६१६ । ट भण्डार ।

विशेष-अन्तिम पुष्पिका— इति तत्वार्थ रत्नप्रभाकरग्रन्थे मुनि श्री धर्मचन्द्र शिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव विर चित ब्रह्मजैत साधु हाबादेव देव भावना निमित्ते मोक्ष पदार्थ कथन दशम सूत्र विचार प्रकरण समाप्ता ॥

~२६ तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंकदेव । पत्र सं ३ । आ १६×७ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र काल × । ले काल सं १८७८ । पूर्ण । वे सं १ ७ । अ भण्डार ।

विशेष—इस प्रति का प्रतिलिपि सं १२७८ वाली प्रति म जयपुर नगर में की गई थी ।

२३ प्रति स० । पत्र सं १२२८ । ले काल स १६४१ भादवा सुदी १ । वे सं २३७ । क भण्डार ।

विशेष-यह ग्रन्थ २ वेष्टनों में है । प्रथम वेष्टन म १ म ६ तथा दूसरे म ६ ७ से १२ ८ तक पत्र है । प्रति उत्तम है । मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

२३१ प्रति स० ३ । पत्र सं ६२ । ले काल × । वे सं ६४ । म भण्डार ।

विशेष-मूलमात्र ही है ।

२३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं ३० । ले काल सं १६७४ पौष सुदी ११ । वे स २४४ । ए भण्डार ।

विशेष-जयपुर मे म्होरीलाल भांवसा ने प्रतिलिपि की ।

३३ प्रति स ५ । पत्र सं ? । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६६६ । ङ भण्डार ।

२ ४ प्रति स० ६ । पत्र सं १७४ म २१ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १२७ । च भण्डार ।

२३५ तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा ~ । पत्र सं ७०२ । आ १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २४४ । क भण्डार ।

२३६ तत्त्वार्थवृत्ति—पं० योगदेव । पत्र सं ६७ । आ ११½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र काल × । ले काल सं १६५८ चैत सुदी ११ । पूर्ण । वे सं २५२ । क भण्डार ।

विशेष-वृत्ति का नाम सुखबोध वृत्ति है । तत्त्वार्थ सूत्र पर यह उत्तम टीका है । पं योगदेव कुम्भनगर के निवासी थे । यह नगर कनारा जिल में है ।

३७ प्रति स । पत्र सं १४७ । ले काल × । वे सं १० । म भण्डार ।

३८ तत्त्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं ५ । आ १२×? इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र काल × । ले काल । पूर्ण । वे सं २३८ । क भण्डार ।

विशेष-इस ग्रन्थ मे ६१ श्लोक है जो ६ अध्यायों मे विभक्त है । प्रथम ७ तत्त्वों का वर्णन किया गया है ।

२३९ प्रति सं० २ । पत्र स० ४४ । ले० काल × । वे० म० २३९ । क भण्डार ।

२४० प्रति स० ३ । पत्र स० ३९ । ले० काल × । वे० म० २४२ । क भण्डार ।

२४१. प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० ६५ । ख भण्डार ।

२४२ प्रति सं० ५ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० स० ९९ । छ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान ज्ञानचन्द की है ।

२४३ प्रति सं० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १३२ । व्य भण्डार ।

२४४. **तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्त्ति** । पत्र स० ९१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८४ । अ भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्त्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' मे जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तो का वर्णन किया है। रचना १२ अध्यायो मे विभक्त है। यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नही है जैसा कि इसके नाम मे प्रकट होता है।

२४५ प्रति स० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २४० । क भण्डार ।

२४६ प्रति स० ३ । पत्र स० ८६ । ले० काल स० १८६४ आसोज सुदी २ । वे० स० २४१ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिलिपि की ।

२४७ **तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी** । पत्र स० २८९ । आ० १२३⁄४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल स० १९३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६९ ।

विशेष—जिन २ ग्रन्थो की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूची दी हुई है ।

२४८ प्रति स० २ । पत्र स० २८७ । ले० काल × । वे० स० २४३ । क भण्डार ।

२४९ **तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्वाति** । पत्र स० २९ । आ० ७×३½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १४५८ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २१९९ (क) अ भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र है जिन पर श्वेत (रजत) अक्षर है। प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है। तत्त्वार्थ सूत्र समाप्ति पर भक्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है।

प्रशस्ति—स० १४५८ श्रावण सुदी ६ ।

२५० प्रति स० २ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १९९९ । वे० स० २२०० अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है। पत्रो के किनारो पर सुन्दर वेलें हैं। प्रति दर्शनीय एव प्रदर्शनी मे रखने योग्य है। नवीन प्रति है। स० १९९९ मे जौहरीलालजी नदलालजी घी वालो ने व्रतोद्यापन मे प्रति लिखा कर चढाई।

२५१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २२०२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय एव प्रदर्शनी योग्य है।

२५२. प्रति स० ४ । पत्र सं ११ । लि काल × । वे सं० १८२५ । अ भण्डार ।

२५३ प्रति स० ५ । पत्र सं १० । लि काल सं १८८८ । वे सं २८१ । अ भण्डार ।

२५४ प्रति स० ६ । पत्र सं १८ । लि काल स १८८१ । वे सं ११ । अ भण्डार ।

५५ प्रति स० ७ । पत्र सं १ । लि काल × । अपूर्ण । वे सं १४८ । अ भण्डार ।

२५६ प्रति स० ८ । पत्र सं १३ । लि काल सं० १८३७ । वे सं ३६२ । अ भण्डार ।
विशेष— हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

२५७ प्रति स० ६ । पत्र सं ११ । लि काल × । वे सं १ ७२ । अ भण्डार ।

२५८. प्रति सं० १० । पत्र सं ५५ । ले काल × । वे सं १ १ । अ भण्डार ।
विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । पं धर्मचंद मे मालवर म प्रतिलिपि की ।

२५९. प्रति स० ११ । पत्र सं १४ । ले काल × । वे सं ६५ । अ भण्डार ।

२६० प्रति स० १२ । पत्र सं २८ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ७७५ अ भण्डार ।
विशेष—पत्र १७ से २० तक नहीं है ।

२६१ प्रति स० १३ । पत्र सं ६ से ११ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १० ८ । अ भण्डार ।

२६२. प्रति स० १४ । पत्र सं १६ । ले काल सं १८६२ । वे सं ४७ । अ भण्डार ।
विशेष—संस्कृत टीका सहित ।

२६३ प्रति स० १५ । पत्र सं २ । लि काल × । वे सं ४८ । अ भण्डार ।

२६४ प्रति स० १६ । पत्र सं २५ । लि काल सं १८२ चैत बुदी ६ । वे सं ८११ ।
विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

६५ प्रति स० १७ । पत्र सं २४ । लि काल × । वे सं २ ८ । अ भण्डार ।

२६६ प्रति सं० १८ । पत्र सं ११ से २२ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १२१४ । अ भण्डार ।

२६७ प्रति स० १६ । पत्र सं० १६ से काल सं १८६८ । वे सं १२४४ । अ भण्डार ।

२६८. प्रति स० २० । पत्र स २४ । लि काल × । वे सं १२७५ । अ भण्डार ।

२६९. प्रति स० २१ । पत्र सं ८ । ले काल × । वे सं १३११ । अ भण्डार ।

२७ प्रति स २२ । पत्र सं ५ । ले काल × । वे सं २१४१ । अ भण्डार ।

२७१ प्रति स० २३ । पत्र सं १२ । ले काल × । वे स २१५६ । अ भण्डार ।

२७२. प्रति स० २४ । पत्र सं १८ । लि काल सं १८४६ कार्तिक सुदी ४ । वे सं २ ६ ।
अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है । फूलचन्द बिलाला ने प्रतिलिपि की ।

२७३. प्रति सं० २५ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६ ' ''' । वे सं० २००७ । अ भण्डार ।

२७४ प्रति सं० २६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५. प्रति सं० २७ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० स० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदास दौलतराम ने जैसिंहपुरा मे इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

२७६. प्रति स० २८ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६३६ भादवा सुदी ४ । वे० स० २५८ । क भण्डार ।

२७७. प्रति सं० २६ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० २५६ । क भण्डार ।

२७८ प्रति सं० ३० । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १६४५ वैशाख सुदी ७ । वे० स० २५० । क भण्डार ।

२७६. प्रति सं० ३१ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० २५७ । क भण्डार ।

२८० प्रति स० ३२ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी प० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० ३३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२ प्रति स० ३४ पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

२८३ प्रति सं० ३५ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८६१ माघ बुदी ४ । वे० स० ४० । ग भण्डार ।

२८४ प्रति स० ३६ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ३३ । घ भण्डार ।

२८५ प्रति स० ३७ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० स० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२८६ प्रति स० ३८ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३५ । घ भण्डार ।

२८७ प्रति स० ३६ । पत्र स० ५८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८. प्रति स० ४० । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे स० २४७ । ङ भण्डार ।

२८९. प्रति सं० ४१ । पत्र स० ८ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २४८ । ङ भण्डार ।

२९०. प्रति स० ४२ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० २४६ । ङ भण्डार ।

२९१ प्रति स० ४३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी है ।

२९२ प्रति सं० ४४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८८६ । वे सं० २११ । क भण्डार ।

२९३ प्रति सं० ४५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे सं० २१२ । क भण्डार ।

विशेष—सूत्रों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२९४ प्रति सं० ४६ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे सं० २१३ । क भण्डार ।

२९५ प्रति सं० ४७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे सं० २१४ । क भण्डार ।

२९६ प्रति सं० ४८ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १९२१ कार्तिक सुदी ४ । वे सं० २४५ । क भंडार

२९७ प्रति सं० ४९ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २१६ । क भण्डार ।

२९८ प्रति सं० ५० । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे सं० २१७ । क भण्डार ।

२९९ प्रति सं० ५१ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८ । क भण्डार ।

३०० प्रति सं० ५२ । पत्र सं० ६ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० २१९ । क भण्डार ।

३०१ प्रति सं० ५३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१० । क भण्डार ।

३०२ प्रति सं० ५४ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०३ प्रति सं० ५५ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० २१२ । क भण्डार ।

३०४ प्रति सं० ५६ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० २१३ । क भण्डार ।

३०५ प्रति सं० ५७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे सं० २१५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय ही है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०६ प्रति सं० ५८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे सं० १२८ । ख भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३०७ प्रति सं० ५९ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० १२९ । ख भण्डार ।

३०८ प्रति सं० ६० । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १३ । जीर्ण । वे सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—मुरलीधर महाजन बीकानेर वाले ने प्रतिलिपि की ।

३०९ प्रति सं० ६१ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९९२ ज्येष्ठ सुदी १ । वे सं० १३१ । ख भण्डार ।

३१० प्रति सं० ६२ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८७१ जेठ सुदी १२ । वे सं० १३२ । ख भंडार ।

३११ प्रति सं० ६३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १९१९ । वे सं० १३४ । ख भण्डार ।

विशेष—बाबूलाल सेठी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३१२ प्रति सं० ६४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे सं० १३३ । ख भण्डार ।

३१३ प्रति सं० ६५ । पत्र सं० २१ से २८ । ले० का० × । अपूर्ण । वे सं० १३५ । ख भण्डार ।

३१४ प्रति सं० ६६ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे सं० १३६ । ख भण्डार ।

३१५ प्रति सं० ६७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० १३७ ख भण्डार ।

विशेष—टव्वा टीका सहित। १ ला पत्र नही है।

३१६. प्रति सं० ६८। पत्र सं० ६४। ले० काल स० १६६३। वे० स० १३८। च भण्डार।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

३१७. प्रति सं० ६९। पत्र स० ६४। ले० काल स० १६६३। वे० स० ५७०। च भण्डार।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

३१८. प्रति स० ७०। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० १३६। छ भण्डार।

विशेष—प्रथम ४ पत्रो मे तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम अधिकार हैं। इससे आगे भक्तामर स्तोत्र है।

३१९. प्रति सं० ७१। पत्र स० १७। ले० काल ×। वे० स० १३६। छ भण्डार।

३२०. प्रति सं० ७२। पत्र स० १४। ले० काल ×। वे० सं ३८। ज भण्डार।

३२१ प्रति स० ७३। पत्र स० ६। ले० काल स० १६२२ फागुन सुदी १५। वे० स० ८८। ज भण्डार।

३२२ प्रति स० ७४। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० १४२। झ भण्डार।

३२३. प्रति स० ७५। पत्र स० ३१। ले० काल ×। वे० सं० ३०५। झ भण्डार।

३२४. प्रति सं० ७६। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० सं० २७१। ञ भण्डार।

विशेष—पन्नालाल के पठनार्थ लिखा गया था।

३२५. प्रति सं० ७७। पत्र स० २०। ले० काल सं० १६२६ चैत सुदी १४। वे० स० २७३। ञ भडार

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी।

३२६. प्रति स० ७८। पत्र स० ११। ले० काल ×। वे० स० ४४८। ञ भण्डार।

३२७. प्रति सं० ७९। पत्र स० ३४। ले० काल ×। वे० सं० ३४।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है।

३२८ प्रति सं० ८०। पत्र स० २७। ले० काल ×। वे० सं० १६१५ ट भण्डार।

३२९. प्रति सं० ८१। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० स० १६१६। ट भण्डार।

३४० प्रति स० ८२। पत्र स० २०। ले० काल ×। वे० सं० १६३१। ट भण्डार।

विशेष—हीरालाल विंदायक्या ने गोरूलाल पाड्या से प्रतिलिपि करवायी। पुस्तक लिखमीचन्द छाबडा सजार्ता की है।

३४१ प्रति सं० ८२। पत्र स० ५३। ले० काल स० १६३१। वे० स० १६४२। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है। ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय सवाई रामसिंह जी के शासनकाल मे जीवणलाल काला ने जयपुर मे हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की।

३४२ प्रति सं० ८४। पत्र स० ३ से १८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०६६।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य मे सुन्दर टीका है।

३५५. प्रति सं० २। पत्र स० १५१। ले० काल स० १६४३ श्रावण सुदी १५। वे० स० २४६। क भण्डार।

३५६. प्रति स० ३। पत्र स० १०२। ले० काल स० १६४० मंगसिर बुदी १३। वे० स० २४७। क भण्डार।

३५७. प्रति स० ४। पत्र स० ६६। ले० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी ६। वे० स० ६६। अपूर्ण। ख भण्डार।

३५८ प्रति स० ५। पत्र स० १००। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४२।

विशेष—पृष्ठ ६० तक प्रथम अध्याय की टीका है।

३५६ प्रति सं० ६। पत्र स० २८३। ले० काल सं० १६३५ माह सुदी ८। वे० स० ३३। ङ भण्डार

३६० प्रति सं० ७। पत्र स० ६३। ले० काल स० १६६६। वे० स० २७०। ङ भण्डार।

३६१. प्रति स० ८। पत्र स० १०२। ले० काल ×। वे० सं० २७१। ङ भण्डार।

३६२. प्रति स० ६। पत्र स० १२८। ले० काल सं० १६४० चैत्र बुदी ८। वे० स० २७२। ङ भण्डार।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई।

३६३. प्रति स० १०। पत्र स० ६७। ले० काल सं० १६३६। वे० स० ५७३। च भण्डार।

विशेष—मागीलाल श्रीमाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया।

३६४. प्रति सं० ११। पत्र स० ४४। ले० काल स० १६५५। वे० स० १८५। छ भण्डार।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई।

३६५. प्रति सं० १२। पत्र स० ७१। ले० काल १६१५ आषाढ सुदी ६ वे० स० ६१। झ भण्डार।

विशेष—मोतीलाल गगवाल ने पुस्तक चढाई।

३६६ तत्त्वार्थ सूत्र टीका—प० जयचन्द छाबड़ा। पत्र स० ११८। आ० १३×७ इञ्च। भाषा हिन्दी (गद्य)। र० काल स० १८५६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २५१। क भण्डार।

३६७. प्रति स० २। पत्र सं० १६७। ले० काल स० १८४६। वे सं० ५७२। च भण्डार।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पाडे जयवत। पत्र स० ६६। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल स० १८४६। वे० स० २४१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है —

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पाडे जयवत कृत सपूर्ण समाप्ता। श्री सवाई के कहने मे वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य मे सुन्दर टीका है।

३५५. प्रति सं० २ । पत्र स० १५१ । ले० काल म० १९४३ श्रावण सुदी १५ । वे० स० २४६ । क भण्डार ।

३५६. प्रति स० ३ । पत्र स० १०२ । ले० काल सं० १९४० मगसिर बुदी १३ । वे० स० २४७ । क भण्डार ।

३५७. प्रति स० ४ । पत्र स० ९६ । ले० काल स० १९१५ श्रावण सुदी ६ । वे० स० ६६ । अपूर्ण । ग भण्डार ।

३५८ प्रति स० ५ । पत्र स० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२ ।

विशेष—पृष्ठ ९० तक प्रथम अध्याय की टीका है ।

३५९ प्रति सं० ६ । पत्र स० २८३ । ले० काल सं० १९३५ माह सुदी ८ । वे० स० ३३ । ङ भण्डार

३६० प्रति सं० ७ । पत्र स० ९३ । ले० काल स० १९९६ । वे० सं० २७० । ङ भण्डार ।

३६१. प्रति सं० ८ । पत्र स० १०२ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । ङ भण्डार ।

३६२. प्रति स० ९ । पत्र स० १२८ । ले० काल सं० १९४० चैत्र बुदी ८ । वे० स० २७२ । ङ भण्डार ।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई ।

३६३. प्रति सं० १० । पत्र स० ९७ । ले० काल सं० १९३६ । वे० स० ५७३ । च भण्डार ।

विशेष—मागीलाल श्रीमाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया ।

३६४. प्रति सं० ११ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १९५५ । वे० स० १८५ । छ भण्डार ।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६५. प्रति सं० १२ । पत्र स० ७१ । ले० काल १९१५ आषाढ सुदी ६ वे० स० ९१ । झ भण्डार ।

विशेष—मोतीलाल गगवाल ने पुस्तक चढाई ।

३६६ **तत्त्वार्थ सूत्र टीका—प० जयचन्द छाबड़ा** । पत्र स० ११८ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । र० काल स० १८५९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५१ । क भण्डार ।

३६७. प्रति स० २ । पत्र स० १६७ । ले० काल स० १८४६ । वे स० ५७२ । च भण्डार ।

३६८. **तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पाडे जयवत** । पत्र स० ६६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १८४६ । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है :—

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि ।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पाडे जयवत कृत सपूर्ण समाप्ता । श्री सवाई के कहने से वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

३६६. तत्त्वार्थसूत्र टीका—भा० कनककीर्ति। पत्र सं १४२। आ १२¾×५½ इञ्च। भाषा हिन्दी (गद्य)। विषय-सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २६६। क भण्डार।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र की श्रुतसागरी टीका के आधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है। १४२ से आगे पत्र नहीं है।

३७० प्रति स० २। पत्र सं १ २। ले काल ×। वे सं ११८। ग्र भण्डार।

३७१ प्रति स० ३। पत्र सं १६१। ले काल सं १७८३। चैत्र सुदी ६। वे सं २७२। ख भण्डार।

विशेष—लालसोट निवासी ईश्वरलाल मजमरा ने प्रतिलिपि की थी।

३७२. प्रति स० ४। पत्र सं १६२। ले काल ×। वे सं ४४६। ञ भण्डार।

३७३ प्रति स० ५। पत्र सं ११८। ले काल सं १९११। वे सं १६१८। ट भण्डार।

विशेष—वैद्य धर्मचन्द्र कासा ने ईसरदा में शिवनारायण जोशी से प्रतिलिपि करवायी।

३७४ तत्त्वार्थसूत्र टीका—प० राजमल्ल। पत्र सं ५ से ४८। आ १२×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ ६१। ञ भण्डार।

३७५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा—छोटीलाल जैसवाल। पत्र सं २१। आ ११×५½ इञ्च। भाषा हिन्दी पद्य। विषय-सिद्धान्त। र काल सं १९३१ आसोज सुदी ८। ले काल सं १९५२ आसोज सुदी १। पूर्ण। वे सं २४४। क भण्डार।

विशेष—मथुराप्रसाद ने प्रतिलिपि की। छोटीलाल के पिता का नाम मोतीलाल था यह अलीगढ जिला के मेडू ग्राम के रहने वाले थे। टीका हिन्दी पद्य में है जो अत्यन्त सरल है।

३७६ प्रति स० २। पत्र सं २ । ले काल ×। वे सं २६७। क भण्डार।

३७७ प्रति स० ३। पत्र सं १७।। ले काल ×। वे सं० २६८। ङ भण्डार।

३७८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—शिखरचन्द। पत्र सं २७। आ १ ३×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सिद्धान्त। र काल सं १८६८। ले काल सं १९५३। पूर्ण। वे सं २४८। क भण्डार।

३७६ तत्त्वार्थसूत्र भाषा ……। पत्र सं ६४। आ १२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धांत। र काल ×। ल काल ×। पूर्ण। वे सं ४१६।

३८० प्रति स २। पत्र सं २ से ४६। ले काल सं १८२ वैशाख सुदी १३ । अपूर्ण। वे सं ६७। ख भण्डार।

३८१ प्रति स० ३। पत्र सं १६। ले काल ×। वे सं ६८। ख भण्डार।

विशेष—द्वितीय अध्याय तक है।

३८२ प्रति स० ४। पत्र सं १२। ले काल सं १९४१ फागुण सुदी १४। वे सं ९६। ग भण्डार

३८३ प्रति सं० ५। पत्र सं ६६। ले काल ×। वे सं ४१। ग भण्डार।

३८४ प्रति स ६। पत्र सं ४२८ से ६१। ले काल सं ×। अपूर्ण। वे सं २६४। ङ भण्डार।

३८५ प्रति सं० ७। पत्र स० ८७। र० काल—×। ले० काल स० १९१७ । वे० स० ५७१। च भण्डार।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित।

३८६ प्रति स० ८। पत्र स० ५३। ले० काल ×। वे० सं० ५७४। च भण्डार।

विशेष—प० सदासुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है।

३८७. प्रति स० ९। पत्र स० ३२। ले० काल ×। वे० स० ५७५। च भण्डार।

३८८. प्रति स० १०। पत्र स० २३। ले० काल ×। वे० स० १८५ । छ भण्डार।

३८९ तत्त्वार्थसूत्र भाषा ·।। पत्र स० ३३। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८८९।

विशेष—१५वा तथा ३३ से आगे पत्र नही है।

३९० तत्त्वार्थसूत्र भाषा । पत्र स० ६० से १०८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—× । हिन्दी। र० काल ×। ले० काल सं० १७१९। अपूर्ण। वे० स० २०८१। अ भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १७१९ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह औरंगसाहि राज्य प्रवर्त्तमाने इद तत्त्वार्थ शास्त्र सुज्ञानात्मेक अन्य जन बोधाय विदुषा जयवता कृत साह जगन पठनार्थ बालाबोध वचनिका कृता। किमर्थं सूत्राणा। मूलसूत्र अतीव गभीरतर प्रवर्त्तत तस्य अर्थ केनापि न अवबुध्यते। इद वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित भव्य इमा पठति ज्ञानोद्योत भविष्यति। लिखापित साह विहारीदास खाजानची सावडावासी आमेर का कर्म्मक्षय निमित्त लिखाई साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिंहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद।

३९१ प्रति स० २। पत्र स० २९। ले० काल स० १८९०। वें० स० ७०। ख भण्डार।

विशेष—हिन्दी मे टिप्पण रूप मे अर्थ दिया है।

३९२ प्रति स० ३। पत्र स० ४२। र० काल ×। ले० काल स० १९०२ आसोज बुदी १०। वे० स० १९८। झ भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित है। हीरालाल कासलीवाल फागी वाले ने विजयरामजी पाड्या के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिपि की थी।

३९३. त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ६६। आ० ६½×४¼ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धात। र० काल ×। ले० काल स० १८५० सावन सुदी ११। पूर्ण। वे० स० ७४। ख भण्डार।

विशेष—लालचन्द टोग्या ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की।

३९४. प्रति स० २। पत्र स० ५८। ले० काल स० १९१९। अपूर्ण। वे० स० १४६। च भण्डार।

विशेष—जौहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की।

३९५ प्रति सं० ३। पत्र स० ६९। ले० काल स० १८७६ कार्तिक सुदी ४। वे० स० २४। व्य भण्डार।

विशेष—भ० क्षेमकीर्त्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी।

३९६ त्रिभंगीसार टीका—विवेकनन्दि। पत्र सं ४८। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र काल ×। ले काल सं १८२४। पूर्ण। वे० सं० २८। क भण्डार।

विशेष—पं महाचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३९७ प्रति सं० २। पत्र सं १११। ले काल ×। वे सं २८१। क भण्डार।

३९८ प्रति सं० ३। पत्र सं १६ से ६५। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २९१। छ भण्डार।

३९९ दशवैकालिकसूत्र……। पत्र सं १८। आ १ ३×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २२९१। अ भण्डार।

४०० दशवैकालिकसूत्र टीका……। पत्र सं १ से ४२। आ १ ३×४ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—आगम। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १ १। छ भण्डार।

४०१ द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं ६। आ ११×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। र काल ×। ले काल सं १६१५ माघ सुदी १। पूर्ण। वे सं १८५। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १६१५ वर्षके माघ मासे शुक्लपक्षे १ तिथौ।

४०२ प्रति सं० २। पत्र सं १२। ले काल ×। वे सं ९२१। अ भण्डार।

४०३ प्रति सं० ३। पत्र सं ४। ले काल सं १८४१ आसोज सुदी ११। वे सं १३१। अ भण्डार

४०४ प्रति सं० ४। पत्र सं ६ से ९। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १ २५। अ भण्डार।

विशेष—टब्बा टीका सहित।

४०५ प्रति सं० ५। पत्र सं ६। ले काल ×। वे सं २१२। अ भण्डार।

४०६ प्रति सं० ६। पत्र सं ११। ले काल सं १८२। वे सं ३१२। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित।

४०७ प्रति सं० ७। पत्र सं १। ले काल सं १८१९ भादवा सुदी ३। वे सं ३१३। क भण्डार

४०८ प्रति सं० ८। पत्र सं ८। ले काल सं १८१५ पौष सुदी १। वे सं ३१४। क भण्डार।

४०९ प्रति सं० ९। पत्र सं ९। ले काल सं १८४४ भादवा सुदि १। वे सं ३१५। क भण्डार।

विशेष—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित।

४१० प्रति सं० १०। पत्र सं १३। ले काल सं १८१७ ज्येष्ठ सुदी १२। वे सं ३१५। क भण्डार।

४११ प्रति सं० ११। पत्र सं ६। ले काल ×। वे सं ३१६। क भण्डार।

४१२ प्रति सं० १२। पत्र सं ७। ले काल ×। वे सं ३११। क भण्डार।

विशेष—गाथाओं के नीचे संस्कृत में छाया दी हुई है।

४१३ प्रति सं० १३। पत्र सं ११। ले काल सं १७८९ ज्येष्ठ सुदी ८। वे सं ८६। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं। टोंक में पार्श्वनाथ चैत्यालय में पं कु गरसी के शिष्य चैनराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई।

४१४. प्रति सं० १४ । पत्र स० १२ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४१५ प्रति सं० १५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ४० । घ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४१६. प्रति सं० १६ । पत्र स० २ मे ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२ । घ भण्डार ।

४१७ प्रति स० १७ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० स० ४३ । घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४१८ प्रति स० १८ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३१२ । ङ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४१९. प्रति सं० १९ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३१३ । ङ भण्डार ।

४२०. प्रति स० २० । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० सं० ३१४ । ङ भण्डार ।

४२१. प्रति स० २१ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० स० ३१६ । ङ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित है ।

४२२ प्रति स० २२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४२३ प्रति स० २३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १६९ । च भण्डार ।

४२४. प्रति सं० २४ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८६६ द्वि० आषाढ सुदी २ । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे बालावबोध टीका सहित है । प० चतुर्भुज ने नागपुर ग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

४२५. प्रति स० २५ । पत्र स० ४ । ले० काल सं० १७८२ भादवा बुदी ९ । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ऋषभसेन खतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी ।

४२६. प्रति सं० २६ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० १०६ । ज भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है ।

४२७. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । ञ भण्डार ।

४२८ प्रति सं० २८ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० स० २०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४२९. प्रति सं० २९ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ञ भण्डार ।

४३०. प्रति सं० ३० । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० २७५ । ञ भण्डार ।

४३१. प्रति सं० ३१ । पत्र स० २१ । ले० काल × । वे० सं० ३७८ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३२ प्रति सं० ३२ । पत्र स० १० । ले० काल स० १७८५ पौष सुदी ३ । वे० स० ४९४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है। सीमोर नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में मूलसंघ के मंडलाचार्य पट्ट में भट्टारक जगतकीर्ति तथा उनके पट्ट में भ देवेन्द्रकीर्ति के आम्नाय के शिष्य मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४३३ प्रति स० ३३। पत्र सं १५। ले० काल ×। वे सं ४६५। क भण्डार।

विशेष—३ पत्र तक ग्रन्थ संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके बाद सज्जनचित्तवल्लभ मल्लिषेणाचार्य कृत दिया हुआ है।

४३४ प्रति स० ३४। पत्र सं २। ले० काल सं १६२२। वे सं १६४६। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४३५ प्रति स० ३५। पत्र सं० २ से ६। ले काल सं १७८४। अपूर्ण। वे सं १८४५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४३६ द्रव्यसंग्रहवृत्ति—प्रभाचन्द्र। पत्र सं ११। आ १११/२×५१/२ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र काल ×। ले काल सं १८२२ मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे सं १ ३१। क भण्डार।

विशेष—महाचन्द्र ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३७ प्रति स० २। पत्र सं २५। ले कालसं १६६६ पौष सुदी ३। वे सं ३१७। क भण्डार।

४३८ प्रति स० ३। पत्र सं २ से १२। ले काल सं १७१ । अपूर्ण। वे सं ३१७। क भण्डार

विशेष—आचार्य कनककीर्ति ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३९ प्रति स ४। पत्र सं २५। ले काल सं १७१४ द्वि श्रावण बुदी ११। वे स १९८। ख भण्डार।

विशेष—यह प्रति जोधराज गोदीका के पठनार्थ रूपसी भांवसा जोबनेर वालों ने सांगानेर में लिखी।

४४० द्रव्यसंग्रहवृत्ति—ब्रह्मदेव। पत्र सं १ ८। आ ११×५ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र काल ×। ले काल सं १६६५ आसोज बुदी १। पूर्ण। वे सं ६।

विशेष—इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजाधिराज भगवन्तदास विजयराज मानसिंह के शासनकाल में मालपुरा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—*शुक्लाधिपक्षे नवमदिने पुष्यनक्षत्रे सोमवासरे संवत् १६६५ वर्षे आसोज बदि १ शुभ दिने* राजाधिराज भगवन्तदास विजयराज मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने मालपुर वास्तव्य श्री चंद्रप्रभनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भं श्री प्रभाचन्द्र देवास्तत्शिष्य मं श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मं श्री ललितकीर्तिदेवास्तत्शिष्य मं श्री चन्द्रकीर्ति देवास्तदाम्नाए खंडेलवालान्वये गंगवालगोत्रे सा नानिग द्वि पदारथा। सा नानिग भार्या नामल्दे तत्पुत्र सा मामा तद्भार्या द्व। प्र अमिसिरि। द्व हरमदे तत्पुत्र कमा तद्भार्या करणादे। द्वि सा पदा म तद् भार्या पिरिमदे तत्पुत्र सा नाइक तद्भार्या मांराके तत्पुत्रार्थ प्र बीना द्वि नराइण तृ उदा चतुर्थ बिरम ५ दसरथ। प्र बिना भार्या बिरमदे एतेषां सा कमा इदं शास्त्र लिखाप्य आचार्य श्री सिद्धनंदए घटापितं।

४४१ प्रति स० २ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १२४ । अ भण्डार ।

४४२ प्रति स० ३ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० स ३२३ । क भण्डार ।

४४३ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८०० । वे० स० ४४ । छ भण्डार ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र स० १४६ । ले० काल सं० १७८४ अपाढ बुदी ११ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

४४५ द्रव्यसग्रहटीका । पत्र स० ५८ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । र० काल × । ले० काल स० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० स० ५१० । व्य भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ मे लिखा है कि ग्रा० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी मे भोजदेव के शासनकाल मे श्रीपाल मडलेश्वर के ग्राश्रम नाम नगर मे मोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-सगह की रचना की थी ।

४४६ प्रति सं० २ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेप—टीका का नाम वृहद् द्रव्य सग्रह टीका है ।

४४७ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७७८ पौप सुदी ११ । वे० स० २६५ । व्य भण्डार ।

४४८ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६७० भादवा सुदी ५ । वे० स० ८५ । ख भडार ।

विशेष—नागपुर निवासी खडेलवाल जातीय सेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलदे ने पल्य व्रतोद्यापन मे प्रतिलिपि कराकर चढाया ।

४४९. प्रति स० ६६ । ले० का० स० १६०० चैत्र बुदी १३ । वे० स० ४५ । घ भण्डार ।

४५०. द्रव्यसग्रह भाषा । पत्र स० ११ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १७७१ सावरण बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेप—हिन्दी मे निम्न प्रकार ग्रर्थ दिया हुग्रा है ।

गाथा—दव्व-सगहमिरण मुरिणरणाहा दोस-सचयचुदा सुदपुण्णा ।
सोधयतु तरणुसुत्तधरेरण रणेमिचंद मुरिणरणा भरिणयं ज ।।

ग्रर्थ— भो मुनि नाथ । भो पडित कैसे हौ तुम्ह दोष सचय नुति दोषनि के जु सचय कहिये समूह तिनते जु रहित हौ । मया नेमिचद्र मुनिना भरिणत । यत् द्रव्य सग्रह इम प्रत्यक्षी भूर्ता मे जु हौ नेमिचद मुनि तिन जु कह्यौ यह द्रव्य सग्रह शास्त्र । ताहि सोधयतु । सौ धौ हु कि कि सौ हू । तनु सुत्त धरेरण तनु कहिये थोरो सौ सूत्र कहिये । सिद्धात ताकौ जु धारक ह्यौ । ग्रल्प शास्त्र करि सयुक्त हौ जु नेमिचद्र मुनि तेन कह्यौ जु द्रव्य सग्रह शास्त्र ताकौ भो पडित सोधौ ।

इति श्री नेमिचद्राचार्य विरचित द्रव्य सग्रह बालबोध सपूर्ण ।

सवत् १७७१ शाके १६३६ प्र० श्रावरण मासे कृष्णपक्षे तृयोदश्या १३ बुधवासरे लिप्यकृत विद्याधरेरण स्वात्मार्थे ।

४५१ प्रति स० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० स० २६३ । अ भण्डार ।

४४२ प्रति स० ३ । पत्र सं० २ स ११ । ले० काल सं १८१५ ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं ७०४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी सामान्य है ।

४४३ प्रति स० ४ । पत्र स ४८ । ले काल सं १८१४ मंगसिर सुदी ६ । वे०सं ३६३ । अ भण्डार

विशेष—पर्वतधर्मार्थी रामचन्द्र की टीका के आधार पर भाषा रचना की गई है ।

४४४ प्रति सं० ५ । पत्र सं २३ । ले काल सं १८८७ आसोज सुदी ८ । वे सं० ८८ । ज भण्डार

४४५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ । ले काल × । वे सं० ४४ । ग भण्डार ।

४४६ प्रति स० ७ । पत्र स २७ । ले काल सं १७४३ श्रावण सुदी ११ । वे सं १११ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—बालानामुपकाराय रामचन्द्र ए सभाषया । द्रव्यसंग्रहशास्त्रस्य व्याख्यालेशो वितन्यते ॥१॥

४४७ द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं १६ । आ ११×५½ इञ्च । भाषा–गुजराती । लिपि हिन्दी । विषय–छह द्रव्यों का वर्णन । र काल × । ले काल सं १८ माघ सुदि १३ । वे सं २१/२९२ छ भण्डार ।

४४८ द्रव्यसंग्रह भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं १६ । आ ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–छह द्रव्यों का वर्णन । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ४२ । घ भण्डार ।

४४९. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं ११ । आ ११½×५½ इच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–छह द्रव्यों का वर्णन। र० काल सं १८६३ सावन सुदि १४ । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ १२ । क भण्डार ।

४६० प्रति स० २ । पत्र सं० १६ । ले काल सं १८६३ सावण सुदी १४ । वे सं ३२१ । क भण्डार ।

४६१ प्रति स० ३ । पत्र सं २१ । ले काल × । वे० सं ३१८ । क भण्डार ।

४६२. प्रति स० ४ । पत्र सं ४१ । ले काल सं १८६३ । वे सं १६५८ । ड भण्डार ।

विशेष—पत्र ४२ के आगे द्रव्यसंग्रह पद्य में है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६२. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं ५ । आ १२×५ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) विषय–छह द्रव्यों का वर्णन । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ३२२ । क भण्डार ।

४६३ प्रति स० २ । पत्र सं ७ । ले काल सं १६३९ । वे सं ३१८ । क भण्डार ।

४६४ प्रति स० ३ । पत्र सं ३ । ले काल सं १६३३ । वे सं ३१६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

४६५. प्रति स० ४ । पत्र सं ५ । ले काल सं १८७९ कार्तिक सुदी १४ । वे सं ५६१ । च भण्डार ।

विशेष—पं सदासुख कासलीवाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की है ।

४६६ प्रति स० ५ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । म्ह भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य मे भी अर्थ दिया गया है ।

४६७. प्रति स० ६ । पत्र स० ३७ । ले० काल × । वे० स० २४० । म्ह भण्डार ।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा—बाबा दुलीचन्द । पत्र स० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—छह द्रव्यो का वर्णन । र० काल स० १९६६ आसोज सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२० । क भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छावडा की हिन्दी टीका के अनुसार बाबा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली मे भाषा लिखी थी ।

४६९ द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र स० ६ से १६ तक । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—छह द्रव्यो का लक्षण वर्णन । र० काल × । ले० काल स० १६०५ सावन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० २१३७ । ट भडार ।

४७०. धवल । पत्र स० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—जैनागम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति स० २ । पत्र स० १ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ३५२ । क भण्डार ।

४७३. नन्दीसूत्र । पत्र स० ८ । आ० १२×४½ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल स० १५९० । वे० स० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—स० १५९० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि प० नयसमुद्रगणि नामा देश ? तस्मु शिष्यै वी गुणलाभ गणिभि लिलेखि ।

४७४. नवतत्त्वगाथा । पत्र स० ३ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—९ तत्त्वो का वर्णन । र० काल × । ले० काल स० १८१३ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—प० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० स० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

४७६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

४७७ नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र स० १४ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—९ तत्त्वो का वर्णन । र० काल स० १७४७ । ले० काल सं० १८०९ । वे० स० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । राघवचन्द शक्तावत ने शक्तिसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की ।

४७८ नवतत्ववर्णन..........। पत्र सं १। आ० ८३/४×४१/२ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-जीव अजीव आदि ९ तत्वों का वर्णन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ९ १। च भण्डार।

विशेष—जीव अजीव पुण्य पाप तथा आश्रव तत्त्व का ही वर्णन है।

४७९. नवतत्त्व वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं ११। आ १२×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-९ तत्वों का वर्णन। र काल सं १६१४ आषाढ सुदी ११। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ३९४। क भण्डार।

४८० नवतत्त्वविचार ....। पत्र सं ६ स २४। आ ९×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-९ तत्वों का वर्णन। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २२६। ख भण्डार।

४८१ निगसमृति—जयतिलक। पत्र सं ९ स ११। आ १०×४१/२ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २११। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इत्याममिकावार्यश्रीजयतिलकरचिते निगसमृते बंध-स्वामित्वाख्यं प्रकरणमतच्चतुर्थः। संपूर्णोऽयं ग्रन्थ। ग्रन्थाग्रन्थ ६६ प्रमाणं। केतरांतरा श्री तपोगच्छीय पंडित रत्नाकर पंडित श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री सौभाग्य-विजयगणि तच्छिष्य मु तिलकविजयेन। पं कामाताल ब्यपसचन्द की पुस्तक है।

४८२ नियमसार—आ० कुन्दकुन्द। पत्र सं १ । आ १ x×५१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-सिद्धात। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ३३। घ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४८३ नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव। पत्र सं० २२२। आ १२३/४×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र काल ×। ले काल सं १७३७ माघ बुदी २। पूर्ण। वे सं ३८ । क भण्डार।

४८४ प्रति स० २। पत्र सं ८७। ले० काल सं १८६६। वे सं ३७१। ञ भण्डार।

४८५ निरयावलीसूत्र.........। पत्र सं ११ से १६। आ १ ×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-आगम। र काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे सं १७६। घ भण्डार।

४८६ पञ्चपरावर्तन.........। पत्र सं ३। आ ११×५१/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं १८३८। ञ भण्डार।

विशेष—जीवों के द्रव्य क्षेत्र आदि पञ्चपरिवर्तना का वर्णन है।

४८७. प्रति स० २। पत्र सं ७। ले काल ×। वे सं ४३३। क भण्डार।

४८८ पञ्चसग्रह—आ नेमिचन्द्र। पत्र सं २६ से २८८। आ १२×५१/२ इञ्च। भाषा-प्राकृत संस्कृत। विषय-सिद्धान्त। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं० ४ । ङ भण्डार।

४८९. प्रति स० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल स० १८१२ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० स० १३८ । ञ भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर मे रत्नरुचिगरिण ने प्रतिलिपि की थी । कही कही हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४९०. प्रति स० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल × । वे० स० ५०९ । ञ भण्डार ।

४९१. पञ्चसग्रहवृत्ति—अभयचन्द । पत्र स० १२० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४–२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४९२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ से २५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०९ अ भण्डार ।

विशेष—केवल जीव काण्ड है ।

४९३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४५२ से ६१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११० । अ भण्डार ।

विशेष–कर्मकाण्ड नवमां अधिकार तक । वृत्ति–रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट मे साधु तागा के सहयोग मे की थी ।

४९४. प्रति स० ४ । पत्र स० ५८६ मे ७९२ तक । ले० काल स० १७२३ फागुन सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ७८१ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्द्रावती मे पार्श्वनाथ मन्दिर मे औरंगशाह (औरगजेब) के शासनकाल मे हाडा वशोत्पन्न राव श्री भावसिंह के राज्यकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४९५. प्रति स० ५ । पत्र स० ४३० । ले० काल स० १८६८ माघ बुदी २ । वे० सं० १२७ । क भण्डार

४९६. प्रति स० ६ । पत्र स० ६२४ । ले० काल स० १९५० वैशाख सुदी ३ । वे० स० १३१ । क भण्डार

४९७. प्रति स० ७ । पत्र स० २ से २०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र भी नही है ।

४९८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ से २१४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५ । च भण्डार ।

४९९ पचसंग्रह टीका—अमितगति । पत्र स० ११४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल स० १०७३ (शक) । ले० काल स० १८०७ । पूर्ण । वे० स० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ सस्कृत गद्य और पद्य मे लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाथुराणामनघद्युतीना सघोऽभवद् वृत्त विभूषितानाम् ।
हारो मौक्तिर्नामवतापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मि शुभ्र. ॥ १ ॥

माधवसेनगणीगणनीयः शुद्धतमोऽजनि तत्र अमीयः ।
भूयसि सत्यवतीव शशांकः श्रीमति सिंधुपतावकलंकः ॥ २ ॥
शिष्यस्तस्य महात्मनोऽमितगतिर्मोक्षार्थिनामग्रणी ।
रेतच्चाकृतवानशेषकर्मार्थमितिप्रख्यापनापाकृतं ॥
वीरस्येव जिनेश्वरस्य गणभृद्भव्योपकारोद्यतो ।
दुर्वारस्मरदंतिदारणहरिः श्रीगौतमोऽमुत्तम ॥ ३ ॥
यदत्र सिद्धान्त विरोधिबद्ध ग्राह्य निराकृत्यतदेतदार्थे ।
कृत्ता हि लोका ह्युपकारियमार्ग निराकृत्य फलं पवित्र ॥ ४ ॥
यावद्वरं केवलमर्चनीयं यावत्स्थिरं तिष्ठति मुक्तपंक्ती ।
तावद्धरामामिवसत्वधात्र्यं स्तेयाच्छ्रुतं कर्मनिरासकारि ॥
त्रिसप्तत्यधिकेऽब्दानां सहस्रे शकविद्विष ।
मसूतिकापुरे जातमिदं शास्त्रं मनोरमं ॥ ५ ॥
इत्यमितगतिकृता संसारसपताच्छे ।

५०० प्रति स० २ । पत्र स २१५ । ले काल सं १७२६ माघ बुदी ? । वे सं १८७ । अ भण्डार

५०१ प्रति स० ३ । पत्र सं १८ । ले काल स १७२४ । वे सं २१२ । अ भण्डार ।

विशेष—जीर्ण प्रति है ।

५०२. पञ्चसग्रह टीका— । पत्र सं ४५ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं० ११९ । ज भण्डार ।

५०३ पचास्तिकाय—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं ४१ । आ ९×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र काल × । ले काल सं १७ ३ । पूर्ण । वे सं १ ३ । अ भण्डार ।

५०४ प्रति स० २ । पत्र सं ४३ । ले काल सं १९४ । वे सं ४ ४ । अ भण्डार ।

५०५. प्रति स० ३ । पत्र सं १४ । ले काल × । वे सं ४ २ । क भण्डार ।

५०६ प्रति स० ४ । पत्र सं १३ । ले काल सं १८९९ । वे सं ४ १ । क भण्डार ।

५०७ प्रति स० ५ । पत्र सं १२ । ले काल × । वे सं १२ । ङ भण्डार

विशेष—द्वितीय स्कन्ध तक है । गाथाओं पर टीका भी दी है ।

५०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं १८ । ले काल × । वे सं १८७ । छ भण्डार ।

५०९. प्रति स० ७ । पत्र सं ११ । ले काल सं १७२४ आसोज बदी ५ । वे सं १९९ । च भंडार ।

विशेष—चंपावती म प्रतिलिपि हुई थी ।

५१०. प्रति सं० ८ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स १६६ । ङ भण्डार ।

५११. पचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र स० १२४ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा सस्कृत विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १६३८ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ४०५ । क भण्डार ।

५१२. प्रति सं० २ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १४८७ वैशाख सुदी १० । वे० स० ४०२ । ङ भण्डार ।

५१३ प्रति स० ३ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । वे० स० २०२ । च भण्डार ।

५१४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १६५६ । वे० स० २०३ । च भण्डार ।

५१५ प्रति स० ५ । पत्र स० ७५ । ले० काल सं० १५४१ कार्त्तिक बुदी १४ । वे० स० । व्य भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा फहरौ भार्या धमला तयो पुत्रवानु तस्य भार्या धनसिरि ताभ्या पुत्र सा होलु भार्या सुनखत तस्य दामाद सा हसराज तस्य भ्राता देवपति एवं पुस्तक पचास्तिकायाभिधं लिखाया कुलभूषणस्य कर्म्मक्षयार्थ दत्त ।

५१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द । पत्र स० ६३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानाबाद मे बादशाह जहागीर के समय मे प्रतिलिपि हुई ।

५१७ पञ्चास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र स० १७५ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०६ । क भण्डार ।

५१८ प्रति सं० २ । पत्र स० १३५ । ले० काल स० १६४७ । वे० स० ४०८ । क भण्डार ।

५१९. प्रति स० ३ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० स० ४०३ । ङ भण्डार ।

५२०. प्रति स० ४ । पत्र स० १५० । ले० काल स० १६५४ । वे० स० ६२० । च भण्डार ।

५२१. प्रति स० ५ । पत्र स० १४४ । ले० काल स० १६३६ आषाढ सुदी ४ । वे० स० ६२१ । च भण्डार

५२२ प्रति स० ६ । पत्र स० १३६ । र० काल × । वे० स० ६२२ च भण्डार ।

५२३ पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र स० ६११ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धात । र० काल सं० १८९२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । झ भण्डार ।

५२४. पुण्यतत्त्वचर्चा— । पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८८१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०४१ । ट भण्डार ।

५२५ बंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र स० ६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८८१ । ले० काल × । वे० सं० १६०५ । पूर्ण । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रणमु पाय, मुनिसुव्रत कू सीस नवाय ।
सतगुरु सारद हिरदै धरू, बध उदय सत्ता उचरू ॥ १ ॥

विशेष—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर अमितिगनि का टिप्पण है।

५३१. मार्गणा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र स० ३–५५ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७४२ । ट भण्डार ।

५३२. मार्गणा समास—। पत्र सं० ३ से १८ । आ० ११३⁄४×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय–सिद्धान्त र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१४६ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

५३३. रायपसेणी सूत्र—। पत्र स० १५३ । आ० १०×४३⁄४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल स० १७६७ आसोज सुदी १० । वे० स० २०३२ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है। सेमसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने स्वपठनार्थ टीका की। गाथाओ के ऊपर छाया दी हुई है।

५३४. लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ५७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धांत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष—५७ से आगे पत्र नही है। संस्कृत टीका सहित है।

५३५. प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३२२ । च भण्डार ।

५३६. प्रति स० ३ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८४६ । वे० स० १६०० । ट भण्डार ।

५३७ लब्धिसार टीका—। पत्र स० १५७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १९५६ । पूर्ण । वे० स० ६३८ । क भण्डार ।

५३८ लब्धिसार भाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० १८० । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धात । र० काल × । ले० काल १९४९ । पूर्ण । वे० स० ६३९ । क भण्डार ।

५३९. प्रति स० २ । पत्र स० १६३ । ले० काल × । वे० स० ७५ । ग भण्डार ।

५४०. लब्धिसार क्षपणासार भाषा—प० टोडरमल । पत्र सं० १०० । आ० १५×६३⁄४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६ । ग भण्डार ।

५४१ लब्धिसार क्षपणासार संदृष्टि—प० टोडरमल । पत्र स० ४६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र० काल स० १८८६ चैत बुदी ७ । वे० स० ७७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

५४२ विपाकसूत्र—। प० स० ३ से ३५ । आ० १२×४३⁄४ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१३१ । ट भण्डार ।

५४३ विशेषसत्ताित्रभगी—आ० नेमिचन्द्र । पत्र स० ६ । आ० ११×४१⁄२ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४३ । अ भण्डार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की बृहद् टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तीन वेष्टनो मे बधा हुआ है। हिन्दी अर्थ सहित हैं।

५५१. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ७८ । ञ भण्डार ।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १९५ । ञ भण्डार ।

५५३. सग्रहणीसूत्र ... । पत्र सं० ३ से २८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०२ । ख भण्डार ।

विशेष—पत्र स० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नही है। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय हैं। ४, २१ और २८वें पत्र को छोडकर सभी पत्रो पर चित्र हैं।

५५४. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० २३३ । छ भण्डार । ३११ गाथायें हैं।

५५५. सग्रहणी बालावबोध—शिवनिधानगणि । पत्र स० ७ से ५३ । आ० १०½×४½ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । विषय-आगम । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १००१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६. सत्ताद्वार ... । पत्र स० ३ से ७ तक । आ० ८¾×४¾ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धात र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६१ । च भण्डार ।

५५७. सत्तात्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० २ से ४० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८४२ । ट भण्डार ।

५५८. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्र सं० ११८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धात र० काल × । ले० काल सं० १८७९ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । अ भण्डार ।

५५९. प्रति स० २ । पत्र स० ३६८ । ले० काल स० १९४४ । वे० सं० ७६८ । क भण्डार ।

५६० प्रति सं० ३ । पत्र स० ... । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८०७ । ङ भण्डार ।

५६१ प्रति स० ४ । पत्र स० १२२ । ले० काल × । वे० स० ३७७ । च भण्डार ।

५६२ प्रति सं० ५ । पत्र स० ७२ । ले० काल × । वे० सं० ३७८ । च भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १-१३३, २००-२६३ । ले० काल स० १६२५ माघ सुदी ५ । वे० स० ३७९ । च भण्डार ।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

स० १६६३ माघ शुक्ला ७-६ कालाडेरा मे श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी। स० १७१७ कार्त्तिक सुदी १३ ब्रह्म नायू ने भेंट मे दिया था।

५६४ प्रति सं० ७ । पत्र सं १८१ । ले काल × । वे सं ३८ । ख भण्डार ।

५६५ प्रति स० ८ । पत्र स १५८ । ले० काल × । वे सं ८४ । छ भण्डार ।

५६६ प्रति स० ९ । पत्र सं० १३४ । ले काल सं १८८३ ज्येष्ठ सुदी २ । वे सं ८५ । छ भण्डार ।

५६७ प्रति स० १० । पत्र सं २७४ । ले काल सं० १७ ४ वैशाख सुदी ९ । वे सं २११ । म भण्डार ।

५६८ सर्वार्थसिद्धि भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र सं ९४१ । आ ११×७½ इञ्च । भाषा हिन्दी विषय–सिद्धान्त । र काल सं १८६१ चैत सुदी ५ । ले काल सं १९२९ कार्तिक सुदी ९ । पूर्ण । वे सं ७१२ क भण्डार ।

५६९. प्रति स० २ । पत्र सं ११८ । ले काल × । वे सं ८ ८ । क भण्डार ।

५७० प्रति स० ३ । पत्र सं ४६७ । ले काल सं १९१७ । वे सं ७ ५ । घ भण्डार ।

५७१ प्रति सं० ४ । पत्र सं २७ । ले काल स १८८३ कार्तिक सुदी २ । वे सं १६७ । ज भण्डार ।

५७२. सिद्धान्तधर्मसार—प० रइधू । पत्र सं ११ । आ ११×८ इंच । भाषा अपभ्रंश । विषय–सिद्धान्त । र काल × । ले काल सं १९५९ । पूर्ण । वे सं ७११ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति सं १५६३ वाली प्रति से लिखी गई है ।

५७३ प्रति स० २ । पत्र सं १९ । ले काल सं १८९४ । वे० स ८ । घ भण्डार ।

विशेष—यह प्रति भी सं १५६३ वाली प्रति से ही लिखी गई है ।

५७४ सिद्धान्तसार भाषा— । पत्र सं ७५ । आ १४×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ७१९ । घ भण्डार ।

५७५. सिद्धान्तलेशसंग्रह— । पत्र सं १४ । आ ९×४½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय सिद्धांत । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १४४८ । अ भण्डार ।

विशेष—वैदिक साहित्य है । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५७६ सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र सं २२२ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १९१ ।

५७७ प्रति सं० २ । पत्र सं १८४ । ले काल सं १८२६ पौष सुदी ११ । वे सं १९८ । अ भंडार ।

विशेष—पं चोखचन्द के शिष्य पं विद्यादास के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

५७८ प्रति स० ३ । पत्र स १५५ । ले काल सं १७१२ । वे सं ११२ । क भण्डार ।

५७९ प्रति स० ४ । पत्र सं २९१ । ले काल सं १८१२ । वे सं ८ । क भण्डार ।

विशेष—मनोहराम शास्त्री ने प्रतिलिपि की थी ।

५८० प्रति स० ५ । पत्र सं १७ । ले काल सं १८११ । वैशाख सुदी ८ । वे सं १२९ । घ भण्डार ।

विशेष—शाहजहानावाद नगर मे लाला शीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५८१. प्रति सं० ६ । पत्र स० १७३ । ले० काल स० १८२७ वैशाख बुदी १२ । वे० स० २६२ । ञ भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हैं।

५८२ प्रति सं० ७ । पत्र स० ७८–१२४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २५२ । छ भण्डार ।

५८३. सिद्धान्तसारदीपक । पत्र स० ६ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२४ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल ज्योतिलोक वर्णन वाला १४वा अधिकार है।

५८४. प्रति स० २ । पत्र स० १८४ । ले० काल X । वे० स० २२५ । ख भण्डार ।

५८५. सिद्धान्तसार भाषा—नथमल बिलाला । पत्र स० ८७ । आ० १३½X५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८४५ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२४ । घ भण्डार ।

५८६. प्रति सं० २ । पत्र स० २५० । ले० काल X । वे० स० ८५० । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल 'ङ' भण्डार की प्रति मे है।

५८७. सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेन्द्रदेव । पत्र स० १४ । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ११९५ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है।

५८८. प्रति स० २ । पत्र स० १०० । ले० काल स० १८९९ । वे० स० १९४ । अ भण्डार ।

५८९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८३० मगसिर बुदी ४ । वे० स० १५० । ञ भडार

विशेष—प० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

५९० सूत्रकृतांग । पत्र स० १६ से ५९ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय–आगम । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २३३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नही है। प्रति सस्कृत टीका सहित है। बहुत से पत्र दीमको ने खा लिये है। बीच मे मूल गाथाये हैं तथा ऊपर नीचे टीका है। इति श्री सूत्रकृतागदीपिका पोडपमाध्याय।

विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

५६१ अट्ठाईसमूलगुणवर्णन । पत्र सं १ । आ १ ३/४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मुनिधर्म वर्णन । र काल × । पूर्ण । वेष्टन सं २ ३ । ग भण्डार ।

५६२ अनगारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र सं० १७७ । आ ११₃×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—मुनिधर्म वर्णन । र काल सं १३ । ले काल सं १७७७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वे सं ६११ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । बौंसी नगर म श्रीमहाराजा कुशलसिंहजी के शासनकाल मे साहजी रामचन्द्रजी ने प्रतिलिपि करवायी थी । स १८२६ म पं सुखराम के शिष्य पं केशव ने ग्रन्थका संशोधन किया था । ६२ से १६१ तक नवीन पत्र हैं ।

५६३ प्रति स० २ । पत्र सं १२१ । ले काल × । वे० सं १८ । ग भण्डार ।

५६४ प्रति स० ३ । पत्र सं १७७ । ले काल सं १६५१ कार्तिक सुदी ५ । वे सं १६ । ग भण्डार ।

५६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं ३७ । ले काल × । वे सं ४६७ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पं माधव ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मामृतसूक्ति संग्रह' भी है ।

५६६ अनुभवप्रकाश—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४४ । आकार १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) गद्य । विषय—धर्म । र काल सं १७८१ पौष बुदी ५ । ले काल सं १८१४ । अपूर्ण । वे सं १ । घ भण्डार ।

५६७ प्रति स० २ । पत्र सं २ से ७४ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २१ । ङ भण्डार ।

५६८ अनुभवानन्द— । पत्र स ५६ । आ ११₃×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र काल × । ले काल । पूर्ण । वे सं ११ । क भण्डार ।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुणचन्द्रदेव । पत्र सं १ से ६६ । आ १ ₃×४½ भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र काल × । ले काल सं १६८५ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे सं २१४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नहीं है । अन्तिम पुष्पिका—इति श्री गुणचन्द्रदेवविरचितअमृतधर्मरसकाव्य श्रावकगर्णितं श्रावकप्रतिक्रमणं चतुर्विंशति प्रकरण संपूर्ण । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

पट्ट श्री कुंदकुंदाचार्य तत्पट्ट श्री महेन्द्रकीर्ति तत्पट्ट त्रिभुवनकीर्तिदेवभट्टारक तत्पट्टे श्री पद्मनंदिदेव भट्टारक तत्पट्टे श्री जसकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री ललितकीर्तिदेव तत्पट्ट श्री मुनिरत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ? गुणचन्द्रदेव भट्टारक

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थं। लोहटमुत पडितश्री मावलदास पठनार्थं। अन्तिसीश्यसावपट्टप्रकाशन धर्मउपदेशकलार्थं। चन्द्रप्रभ चैत्यालय माघ मासे कृष्णपक्षे पुष्यनक्षत्रे पार्थिवि दिने १ शुक्रवारे स० १६८५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्रसेनिमहाये तत्सुत चतुर्भुज जगमनि परसरामु खेमराज भ्राता पच सहायिका। शुभ भवतु।

६०० **आगमविलास—द्यानतराय**। पत्र स० ७३। आ० १०३/४×६३/४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य) विषय–धर्म। र० काल स० १७८३। ले० काल स० १९२८। पूर्ण। वे० स० ४२। क भण्डार।

विशेष—रचना सवत् सम्बन्धी पद्य—"गुण वसु शैल सितग"

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय के पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को झाभू को वेचा तथा उसक मे वह मूल प्रति जगतराय के हाथ मे आयी। ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही मे स्वर्गवास होजाने के कारण जगतराय ने सवत् १७८४ मे मैनपुरी मे ग्रन्थ को पूर्ण किया। आगम विलास मे कवि की विविध रचनाओ का सग्रह है।

६०१ प्रति स० २। पत्र स० १०१। ले० काल स० १९५४। वे० स० ४३। क भण्डार।

६०२. **आचारसार—वीरनदि**। पत्र स० ४६। आ० १२×५३/४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६४। पूर्ण। वे० स० १२७। अ भण्डार।

६०३ प्रति स० २। पत्र स० १०१। ले० काल ×। वे० स० ४४। क भण्डार।

६०४ प्रति सं० ३। पत्र स० १०६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४। घ भण्डार।

६०५. प्रति स० ४। पत्र स० ३२ से ७२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४८५। व्य भण्डार।

६०६ **आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी**। पत्र स० २०३। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचारशास्त्र। र० काल स० १९३४ वैशाख बुदी ६। ले० काल ×। वे० स० ४५। क भडार।

६०७. प्रति स० २। पत्र स० २६२। ले० काल० ×। वे० स० ४६। क भडार।

६०८ **आराधनासार—देवसेन**। पत्र स० २०। आ० ११×४३/४। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र० काल १०वी शताब्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७०। अ भण्डार।

६०९ प्रति स० २। पत्र स० ६४। ले० काल ×। वे० स० २२०। अ भण्डार।

विशेष–प्रति सस्कृत टीका सहित है

६१० प्रति स० ३। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० ३३७। अ भण्डार

६११ प्रति स० ४। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० २८४। ख भण्डार।

६१२ प्रति स० ५। पत्र स० ९। ले० काल ×। वे० स० २१५१। ट भण्डार।

६१३ **आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी**। पत्र स० १३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल स० १९३१ चैत्र बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६७। क भण्डार।

विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

४६१ अट्ठाईसमूलगुणवर्णन.... । पत्र सं० १ । आ० १ ३/४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मुनिधर्म वर्णन । र० काल × । पूर्ण । वैष्टन सं० २१ । अ भण्डार ।

४६२. अनगारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र सं० १७७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मुनिधर्म वर्णन । र० काल सं० १३ । ले० काल सं० १७७७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६३१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । बौंली नगर म श्रीमहाराजा कुशलसिंहजी के शासनकाल में साहजी रामचन्द्रजी ने प्रतिलिपि करवायी थी । सं० १८२६ में पं० सुखराम के शिष्य पं० केशव ने ग्रन्थका संशोधन किया था । १२ से १६१ तक नवीन पत्र है ।

४६३ प्रति स० २ । पत्र सं० १२१ । ले० काल × । वे० सं० १८ । ग भण्डार ।

४६४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७७ । ले० काल सं० १६६१ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० १६ । ग भण्डार ।

४६५ प्रति स० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ४६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पं० माधव ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्मामृतसूक्ति संग्रह' भी है ।

४६६ अनुभवप्रकाश—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४४ । आकार १२×५ १/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) गद्य । विषय-धर्म । र० काल सं० १७८१ पौष सुदी ५ । ले० काल सं० १८१४ । अपूर्ण । वे० सं० १ । घ भण्डार ।

४६७ प्रति स० २ । पत्र सं० २ से ७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१ । छ भण्डार ।

४६८. अनुभवानन्द .... । पत्र स० ६५ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० ११ । क भण्डार ।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुणचन्द्रदेव । पत्र सं० १ से ६१ । आ० १ ×४ १/२ भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६८५ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं । अन्तिम पुष्पिका—इति श्री गुणचन्द्रदेवविरचितममृतधर्मरसकाव्य श्रावकाचारे श्रावकवर्णनविचारो चतुर्विशति प्रकरण संपूर्ण । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

पट्टे श्री कुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे त्रिभुवनकीर्तिदेवभट्टारक तत्पट्टे श्री पद्मनंदिदेव भट्टारक तत्पट्टे श्री यशकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री ललितकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री धर्मकीर्ति तत्पट्टे श्री ५ गुणचन्द्रदेव भट्टारक

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थ। लोहटसुत पडितश्री सावलदास पठनार्थं। अन्तिसीश्यसावपट्टप्रकाशन धर्मउपदेशकनार्थं। चन्द्रप्रभ चैत्यालय माघ मासे कृष्णपक्षे पूष्यनक्षत्रे पार्थिवि दिने १ शुक्रवारे स० १६८५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्रसेनिमहाये तत्सुत चतुर्भुज जगमनि परसरामु खेमराज भ्राता पच सहायिका। शुभ भवतु।

६०० **आगमविलास—द्यानतराय**। पत्र स० ७३। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-धर्म। र० काल स० १७८३। ले० काल स० १६२८। पूर्ण। वे० सं० ४२। क भण्डार।

विशेष—रचना सवत् सम्बन्धी पद्य—"गुण वसु शैल सितश"

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय के पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को झाभू को बेचा तथा उसके पास से वह मूल प्रति जगतराय के हाथ मे आयी। ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही मे स्वर्गवास होजाने के कारण जगतराय ने सवत् १७८४ मे मैनपुरी मे ग्रन्थ को पूर्ण किया। आगम विलास मे कवि की विविध रचनाओ का सग्रह है।

६०१ **प्रति स० २**। पत्र स० १०१। ले० काल स० १६५४। वे० स० ४३। क भण्डार।

६०२. **आचारसार—वीरनंदि**। पत्र स० ४६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६४। पूर्ण। वे० स० १२७। अ भण्डार।

६०३ **प्रति स० २**। पत्र स० १०१। ले० काल ×। वे० स० ४४। क भण्डार।

६०४ **प्रति सं० ३**। पत्र स० १०६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४। घ भण्डार।

६०५. **प्रति स० ४**। पत्र स० ३२ से ७२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४८५। ञ भण्डार।

६०६ **आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी**। पत्र स० २०३। आ० ११×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आचारशास्त्र। र० काल स० १६३४ वैशाख बुदी ६। ले० काल ×। वे० स० ४५। क भडार।

६०७. **प्रति स० २**। पत्र स० २६२। ले० काल० ×। वे० स० ४६। क भडार।

६०८ **आराधनासार—देवसेन**। पत्र स० २०। आ० ११×४½। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म। र० काल-१०वी शताब्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७०। अ भण्डार।

६०९ **प्रति स० २**। पत्र स० ६४। ले० काल ×। वे० स० २२०। अ भण्डार।

विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है

६१० **प्रति स० ३**। पत्र स० १०। ले० काल ×। वे० स० ३३७। अ भण्डार

६११ **प्रति स० ४**। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० २८४। ख भण्डार।

६१२ **प्रति स० ५**। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० २१५१। ट भण्डार।

६१३ **आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी**। पत्र स० १३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल स० १६३१ चैत्र बुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६७। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति का अंतिम पत्र नहीं है।

६१४ प्रति स० २। पत्र सं ४। ले काल ×। वे सं १८। क भण्डार।

६१५ प्रति स० ३। पत्र सं ५२। ले काल ×। वे सं० ६६। क भण्डार।

६१६ प्रति स ४। पत्र सं २४। ले काल ×। वे सं ७१। ज भण्डार।

विशेष—गाथायें भी है।

६१७ आराधनासार भाषा ...। पत्र सं ११। आ ११×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं २१२१। ट भण्डार।

६१८ आराधनासार वचनिका—बाबा दुलीचन्द्। पत्र सं० २२। आ १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र काल २०वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं १८१। छ भण्डार।

६१९ आराधनासार वृत्ति—प० आशाधर। पत्र सं ८। आ १ ×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र काल १३वीं शताब्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १ । ख भण्डार।

विशेष—मुनि नयचन्द्र के लिए ग्रन्थरचना की थी। टीका का नाम आराधनासार दर्पण है।

६२० आहार के छियालीस दोष वर्णन—भैया भगवतीदास। पत्र सं २। आ ११×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचारशास्त्र। र काल सं १७५ । ले० काल ×। पूर्ण। वे सं २ ४। म्ह भण्डार।

६२१ उपदेशरत्नमाला—धमदासगणि। पत्र सं २ । आ १ ×४। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र काल ×। ले काल सं १७५५ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वे सं ८२८। अ भण्डार।

६२२ प्रति स० २। पत्र सं १४। ले काल ×। वे सं ३४८। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है।

६२३ उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण। पत्र सं १२६। आ ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र काल सं १६२७ श्रावण सुदी ६। ले काल सं १७६७ श्रावण सुदी १४। पूर्ण। वे सं ११। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर नगर म श्री गोपीराम बिलाला ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६२४ प्रति स० । पत्र सं १३६। ले काल ×। वे सं २७। अ भण्डार।

२५ प्रति स० । पत्र सं १२६। ले काल सं १७२ श्रावण सुदी ४। वे सं २८ । अ भण्डार।

६ ६ प्रति स ४। पत्र सं १३६। ले काल सं० १६८८ कार्तिक सुदी १२। अपूर्ण। वे सं ८२ अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं १ म ६१ तथा १ ८ नहीं है। प्रशस्ति में निम्नप्रकार लिखा है— भरतपुर की समस्त श्रावकगणी द्वारा कर्माक्षय निमित्त इस शास्त्र को श्री पार्श्वनाथ निमित्त भण्डार म रखवाया।

६२७. प्रति स० ५ । पत्र सं० २५ से १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११७५ । अ भण्डार ।

६२८ प्रति स० ६ । पत्र म० १३८ । ले० काल × । वे० स० ७७ । क भण्डार ।

६२९ प्रति सं० ७ । पत्र म० १२८ । ले० काल × । वे० स० ८२ । ङ भण्डार ।

६३०. प्रति स० ८ । पत्र म० ३६ मे ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । ङ भण्डार ।

६३१ प्रति सं० ९ । पत्र स० ६४ से १४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०९ । छ भण्डार ।

६३२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४६ । छ भण्डार ।

६३३ प्रति स० ११ । पत्र स० १६७ । ले० काल म० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० स० ३१ । ञ भण्डार

६३४. प्रति स० १२ । पत्र स० १८१ । ले० काल × । वे० स० २७० । ञ भण्डार ।

६३५. प्रति स० १३ । पत्र स० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वे० स० ४५२ । ञ भण्डार ।

६३६. **उपदेशसिद्धानतरत्नमाला—भडारी नेमिचन्द** । पत्र स० १६ । ग्रा० १२×७½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल स० १९४३ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे टीका भी दी हुई है ।

६३७ प्रति स० २ । पत्र म० ९ । ले० काल × । वे० स० ७९ । क भण्डार ।

६३८ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १८३४ । वे० स० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६३९ **उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागचन्द** । पत्र स० २८ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल स० १९१२ आषाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५९ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को स० १९६७ मे कालूराम पोल्याका ने खरीदा था । यह ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशमाला का हिन्दी अनुवाद है ।

६४०. प्रति म० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल म० १९२९ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० म० ८० । क भण्डार

६४१ प्रति स० ३ । पत्र स० ४९ । ले० काल × । वे० स० ८१ । क भण्डार ।

६४२ प्रति स० ४ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १९४३ सावण बुदी ३ । वे० स० ८२ । क भडार ।

६४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७९ । ले० काल × । वे० स० ८३ । क भण्डार ।

६४४ प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ८४ । क भण्डार ।

६४५ प्रति स० ७ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५८ । ले० काल × । वे० स० ८४ । ङ भण्डार ।

६४७. प्रति स० ९ । पत्र स० ५९ । ले० काल × । वे० स० ८५ । ङ भण्डार ।

६४८ **उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द** । पत्र स० २० । ग्रा० १०¾×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल म० १९६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ८५ । क भण्डार ।

६४९. उपदेश रत्नमाला भाषा—देवीसिंह छाबड़ा। पत्र सं० २ । आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। र० काल सं० १७६९ भादवा बुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६। क भण्डार।

विशेष—नरवर नगर में ग्रन्थ रचना की गई थी।

६५०. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ८८। क भण्डार।

६५१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० ८६। क भण्डार।

६५२. उपसर्गार्थ विवरण—कुपाचार्य। पत्र सं० १। आ० १ ¾×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १ । क भण्डार।

६५३. उपासकाचार दोहा—आचार्य लक्ष्मीचन्द्र। पत्र सं० २७। आ० ११×७ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल सं० १५५५ कार्तिक सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २२३। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम श्रावकाचार भी है। पं० लक्ष्मण के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। विस्तृत प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति संवत् १५५५ वर्षे कार्तिक सुदी १५ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० विद्यानंदी पट्टे भ० मल्लिभूषण तच्छिष्य पंडित लक्ष्मण पठनार्थं दूहा श्रावकाचार शास्त्रं समाप्तं। ग्रन्थ सं० २७ । दोहों की संख्या २२४ है।

६५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० २४८। अ भण्डार।

६५५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० १७। अ भण्डार।

६५६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

६५७. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७७। ले० काल ×। वे० सं० ६६५। क भण्डार।

६५८. उपासकाचार..........। पत्र सं० ६५। आ० ११½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण (१५ परिच्छेद तक) वे० सं० ४२। च भण्डार।

६५९. उपासकाध्ययन..........। पत्र सं० ११४-१४१। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वे० सं० २ ६। अ भण्डार।

६६०. ऋषिशतक—स्वरूपचन्द बिलाला। पत्र संख्या ६। आ० १ ¾×५। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल सं० १९ २ ज्येष्ठ सुदी १। ले० काल सं० १९ ९ बैशाख बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २ । ख भण्डार।

विशेष—हीरानन्द की प्रेरणा से सवाई जयपुर में इस ग्रन्थ की रचना की गई।

६६१. कुशीलखंडन—जयलाल। पत्र सं० २१। आ० १२×७½। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल सं० १९९ । ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४११। अ भण्डार।

६६२ प्रति सं० २। पत्र स० ५२। ले० काल ×। वे० स० १२७। ङ भण्डार।

६६३ प्रति स० ३। पत्र स० ३८। ले० काल ×। वे० स० १७६। छ भण्डार।

६६४ केवलज्ञान का व्योरा ··· । पत्र स० १ । आ० १२३⁄४×५१⁄२ । भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २६७। ख भण्डार।

६६५. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र। पत्र स० १२२। आ० ११३⁄४×५१⁄२। भाषा-सस्कृत। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३। अ भण्डार।

६६६ प्रति स० २। पत्र स० ११७। ले० काल स० १६५६ चैत्र सुदी १। वे० स० ११५। क भडार।

६६७ प्रति सं० ३। पत्र स० ७४। ले० काल स १७६५ भादवा सुदी ४। वे० स० ७५। च भण्डार।

विशेष—प्रति सवाई जयपुर मे महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे लिखी गई थी।

६६८ प्रति सं० ३। पत्र स० २०७। ले० काल स० १५७७ वैशाख बुदी ४। वे० स० १८८७। ट भण्डार।

विशेष—'प्रशस्ति सग्रह' मे ६७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है।

६६६ क्रियाकलाप ···। पत्र स० ७। आ० ६१⁄२×४१⁄२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २७७। छ भण्डार।

६७०. क्रियाकलाप टीका ··· । पत्र स० ६१। आ० १३×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल स० १५३६ भादवा बुदी ५। पूर्ण। वे० स० ११६। क भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज माडौगढदुर्गे श्री सुलतानगयासुद्दीनराज्ये चन्देरीदेशेमहाशेरखानव्याप्रीयमाने वेसरे ग्रामे वास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री राघौ लिखित।

६७१ प्रति स० २। पत्र स० ४ से ६३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १०७। ञ भण्डार।

६७२ क्रियाकलापवृत्ति ··· । पत्र स० ६६ । आ० १०×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल ×। ले० काल सं० १३६६ फागुण सुदी ५। पूर्ण। वे० स० १८७७। ट भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

एव क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता। छ ॥ छ ॥ छ ॥ सा० पूना पुत्रेण छाजूकेन लिखित श्लोकानामष्टादशशतानि ॥ पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति सग्रह' मे पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है।

६७३ क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह। पत्र स० ८१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–श्रावक धर्म वर्णन। र० काल स० १७८४ भादवा सुदी १५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४०२। अ भण्डार।

६७४ प्रति सं० २। पत्र स० १२६। ले० काल स० १८३३ मगसिर सुदी ६। वे० स० ४२६। अ भण्डार।

६७५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं ७२८ । ख भण्डार ।

६७६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं १८८३ माघसुदी १० । वे सं० ८ । ग भंडार

विशेष—स्योलालजी साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६७७ प्रति सं० ५ । पत्र सं ११ से ११५ । ले काल सं० १८८८ । अपूर्ण । वे० सं ११० । ङ भण्डार ।

६७८ प्रति सं० ६ । पत्र सं ६७ । ले० काल × । वे सं १११ । ङ भण्डार ।

६७९ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ५३४ । च भण्डार ।

६८० प्रति सं० ८ । पत्र सं १४२ । ले काल सं १८२१ मंगसिर सुदी ११ । वे सं० १६९ । छ भण्डार ।

६८१ प्रति सं० ९ । पत्र सं ६१ । ले काल सं १६५९ माघ सुदी ९ । वे सं १६९ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति कियानमछ के मन्दिर की है ।

६८२ प्रति सं० १० । पत्र सं ४ से ९ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १ ४ । झ भण्डार ।

६८३ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १ से १४ । ले काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ ८७ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं हैं ।

६८४ क्रियाकोश……। पत्र सं २ । आ १ ३/४×२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० १०१ । क भण्डार ।

६८५ क्षुल्लकप्रकरण……। पत्र सं १ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १७११ । क भण्डार ।

६८६ क्षमाबत्तीसी—जिनचन्द्रसूरि । पत्र सं० १ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे सं० २१४१ । क भण्डार ।

६८७ क्षेत्र समासप्रकरण……। पत्र सं १ । आ १ ×४½ । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र काल × । ले काल सं १० ७ । पूर्ण । वे सं ८२९ । क भण्डार ।

६८८ प्रति सं० २ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे सं × । क भण्डार ।

६८९ क्षेत्रसमासटीका—टीकाकार हरिभद्रसूरि । पत्र सं ७ । आ ११×४½ । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ८३ । क भण्डार ।

६९० गणसार ……। पत्र सं ८ । आ ११½×४½ भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २३५ । क भण्डार ।

६९१ चउसरण प्रकरण……। पत्र सं ४ । आ ११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । पूर्ण । वे सं १८४९ । क भण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—सावज्जजोगविरइ उकित्तण गुणवउ अपडिवत्ती ।

रवलि अस्सय निंदणावण तिगिच्छ गुण धारणा चेव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण किलइहय ।

सावज्जे अरजोगाण वज्जणा सेवणत्तणउ ॥२॥

दसणयारविसोही चउवीसा इच्छाएण किज्जइय ।

अच्चपत्त अग्गुंण कित्तण रुवेण जिणवरिंदाणं ॥३॥

अन्तिम—मदणभावावद्धा तिव्वणु भावाउ कुणई ताचेव ।

असुहाऊ निरणु बधउ कुणई निव्वाउ मदाउ ॥ ६० ॥

ता एवं कायव्व बुहेहि निच्चंपि सकिलेसंमि ।

होई तिक्काल सम्म असकिले समि सुगइफलं ॥ ६१ ॥

चउरगो जिणधम्मो नकउ चउरगसरण मवि नकमं ।

चउरगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि वीरभद्द तमेव अम्भयण ।

झाए सुति संभम वंझं कारण निव्वुइ सुहाण ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरणं संपूर्णं । लिखितं गणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थं ।

६६२. **चारभावना**........ । पत्र सं० ६ । आ० १०½×६½ । भाषा–सस्कृत । विसय–धर्म । र० काल × ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३. **चारित्रसार—श्रीमच्चामुण्डराय** । पत्र स० ६६ । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १५४५ बैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ३४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसयमसम्पन्न श्रीमज्जिनसेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रासादासारित्त चतुरनुयोगपारावार पारगधर्मविजयश्रीमच्चामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारसग्रहे चरित्रसारे अनागारधर्म्मसमाप्त ॥ ग्रन्थ सख्या १८५० ॥

सं० १५४५ वर्षे बैशाख वदी ५ भौमवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवा तत् शिष्य आचार्य श्री मुनिरत्नकीर्ति तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दोवरी तयो पुत्रा साह डावर भार्या लक्ष्मी साह अर्जुन भार्या दामातयो पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्म्मा तयो पुत्र साह रामा साह चोजा भार्या होली तयो पुत्री रणमल क्षेमराजसा डाकुर भार्या खेत्त तयो पुत्र हरराज । सा जालप साह तेजा भार्या त्यजमिरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीना एतेषा मध्ये सा अर्जुन इद चारित्रसारं शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय आर्यसारंगाय प्रदत्तं लिखित ज्योतिर्गुणा ।

६६४ प्रति स० । पत्र सं १४१ । ले काल सं १८३५ आषाढ सुदी ४ । वे सं १११ । क भण्डार ।

विशेष—श्री कुशीचन्द ने लिखवाया ।

६६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं ७७ । ले काल सं० १५८५ मंगसिर सुदी २ । वे सं १७७ । ड भण्डार ।

६६६ प्रति स० ४ । पत्र सं० ५५ । ले काल × । वे सं ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

६६७ प्रति स० ५ । पत्र सं ११ । ले काल सं १७०३ कार्तिक सुदी ८ । वे सं १११ । घ भण्डार ।

विशेष—हीरापुरी में प्रतिलिपि हुई ।

६६८ चारित्रसार भाषा—मन्नालाल । पत्र सं ३७ । आ १०×६ । भाषा–हिन्दी(गद्य) । विषय-धर्म । र काल सं १८७१ । ले काल × । अपूर्ण । वे स २७ । ग भण्डार ।

६६९ प्रति स २ । पत्र सं ११८ । ले० काल सं १८७७ आसोज सुदी ६ । वे सं १७४ । ङ भण्डार ।

७०० प्रति स० ३ । पत्र सं ११८ । ले काल सं १८६ कार्तिक सुदी १३ । वे सं १७६ । ङ भण्डार ।

७०१ चारित्रसार । पत्र सं २२ से ७६ । आ० ११×५ । भाषा—संस्कृत । विषय–आचारशास्त्र । र काल × । ले० काल सं १६४३ ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्ण । वे सं २१ ४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं १६४३ वर्षे शाके १५ ७ प्रवर्तमाने ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ मामवासरे पातिसाह श्री अक बरराज्यप्रवर्तते पोथी लिखितं माधो तत्पुत्र जोसी मोया लिखितं मालपुरा ।

७०२ चौबीस दण्डकभाषा—दौलतराम । पत्र स ६ । आ ८½×४½ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल १८वीं शताब्दि । ले काल सं १८४७ । पूर्ण । वे सं ४५७ । क भण्डार ।

विशेष—महतीराम ने रामपुरा में पं सिद्धान्तचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की था ।

७०३ प्रति स० २ । पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं १८६६ । ख भण्डार ।

७०४ प्रति स० ३ । पत्र स ११ । ले काल सं १८६७ फागुण सुदी ४ । वे सं १८४ । ङ भंडार ।

७०५ प्रति स० ४ । पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं १६ । छ भण्डार ।

७०६ प्रति स ५ । पत्र स ६ । ले काल × । वे सं १६१ । छ भण्डार ।

७०७ प्रति स० । पत्र सं ८ । ले काल × । वे सं १६२ । छ भण्डार ।

७०८ प्रति स० ७ । पत्र सं ६ । ले काल स १८१८ । वे सं ७३५ । च भण्डार ।

७०६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ७३६ । च भण्डार ।

७१० प्रति स० ६ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—५७ पद्य हैं ।

७११. चौरासी आसादना । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन मन्दिरो मे वर्जनीय ८४ क्रियाओ के नाम हैं ।

७१२. प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ४४७ । ञ भण्डार ।

७१३ चौरासी आसादना । पत्र स० १ । आ० १०×४½" । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७१४ चौरासीलाख उत्तर गुण । पत्र स० १ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२३३ । अ भण्डार ।

विशेष–१८००० शील के भेद भी दिये हुए हैं ।

७१५ चौसठ ऋद्धि वर्णन । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५१ । ञ भण्डार ।

७१६ छहढाला— दौलतराम । पत्र स० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२२ । अ भण्डार ।

७१७ प्रति स० २ । पत्र स १३ । ले० काल स० १९५७ । वे० स० १३२५ । अ भण्डार ।

७१८ प्रति सं० ३ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १८९१ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७७ । क भडार

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० स० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २२ परीषह, पचमगलपाठ, महावीरस्तोत्र एव सकटहरणविनती आदि भी दी हुई है ।

७२० छहढाला—बुधजन । पत्र सं० ११ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । र० काल स० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । ङ भण्डार ।

७२१ छेदपिण्ड—इन्द्रनन्दि । पत्र स० ३६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–प्रायश्चित शास्त्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १८२ । क भण्डार ।

७२२ जैनागारप्रक्रियाभाषा—बा० दुलीचन्द । पत्र स० २४ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल स० १९३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८ । क भण्डार ।

७२३ प्रति स० २ । पत्र सं ८५ । ले काल सं० १६६६ मासोज सुदी १ । वे सं २ ६ । क भण्डार ।

७२४ ज्ञानानन्दश्रावकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल । पत्र सं २११ । आ ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र काल १८वीं शताब्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं २३१ । क भण्डार ।

७२५ प्रति स० २ । पत्र सं १२६ । ले काल × । वे सं २६६ । ङ भण्डार ।

७२६ प्रति स० २ । पत्र सं ३ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २२१ । ड भण्डार ।

७२७ प्रति स० ३ । पत्र सं २१२ । ले काल सं १८३२ श्रावण सुदी १४ । वे सं २२२ । क भण्डार ।

७२८ प्रति सं० ४ । पत्र सं १ २ से २७४ । ले काल × । वे स १६७ । च भण्डार ।

७२९ प्रति स० ५ । पत्र स १ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६८ । च भण्डार ।

७३० ज्ञानचिंतामणि—मनोहरदास । पत्र सं १ । आ ११½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १५११ । अ भण्डार ।

विशेष—५ से ८ तक पत्र नहीं है ।

७३१ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ले काल स १८६४ श्रावण सुदी ६ । वे सं ३१ । ग भण्डार

७३२ प्रति स० ३ । पत्र सं ८ । ले काल × । वे सं १८७ । च भण्डार ।

विशेष—१२८ पद्य हैं ।

७३३. तत्त्वज्ञानतरंगिणी—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं २७ । आ ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत विषय–धर्म । र काल स १५६ । ले काल सं १६३५ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे सं १८६ । अ भण्डार ।

७३४. प्रति स० २ । पत्र सं २६ । ले काल सं १७६६ चैत सुदी ८ । वे सं ३३३ । अ भंडार ।

७३५ प्रति स० ३ । पत्र सं २६ । ले काल सं १६३४ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे सं २६३ । क भण्डार

७३६ प्रति स० ४ । पत्र सं ४० । ले काल सं १८१४ । वे सं २६४ । क भण्डार ।

७३७ प्रति स० ५ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे स २४१ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं २६ । ले काल सं १७८ फागुण सुदी १५ । वे सं २११ । अ भण्डार ।

७३९ त्रिवर्णाचार—भ० सोमसेन । पत्र सं १ ७ । आ ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार-धर्म । र काल सं १६६७ । ले काल सं १८४२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे स २८८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र दूसरी लिपि के हैं ।

७४० प्रति स २ । पत्र स ८१ । ले काल सं १८३८ कार्तिक सुदी ११ । वे सं ८१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंडित बखतराम और उसके शिष्य सम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

७४१. **प्रति स० ३** । पत्र स० १४३ । ले० काल X । वे० स० २८६ । ञ भण्डार ।

७४२ **त्रिवर्णाचार** · । पत्र स० १८ । आ० १०३/४X४३/४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० ० ७८ । ख भण्डार ।

७४३ **प्रति स० २** । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० २८५ । अपूर्ण । ङ भण्डार ।

७४४ **त्रेपनक्रिया** ····। पत्र स० ३ । आ० १०X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक की क्रियाओ का वर्णन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५८४ । च भण्डार ।

७४५. **त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम** । पत्र स० ८२ । आ० १२X६१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार । र० काल स० १७६५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५८५ । च भण्डार ।

७४६. **दण्डकपाठ** । पत्र स० २३ । आ० ८X३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य (आचार) । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १६६० । अ भण्डार ।

७४७. **दर्शनप्रतिमास्वरूप** । पत्र स० १६ । आ० ११३/४X५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओ मे से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८ **दशभक्ति** । पत्र स० ५६ । आ० १२X४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल X । र० काल स० १६७३ आसोज बुदी ३ । वे० स० १०६ । ञ भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियो का वर्णन है । भट्टारक पद्मनदि के आम्नाय वाले खण्डेलवाल ज्ञातीय सा० ठाकुर वश मे उत्पन्न होने वाले साह भीखा ने चन्द्रकीर्त्ति के लिए मौजमावाद मे प्रतिलिपि कराई ।

७४६ **दशलक्षणधर्मवर्णन—प० सदासुख कासलीवाल** । पत्र स० ४१ । आ० १२X५३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० २६५ । ङ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार की गद्य टीका मे से है ।

७५०. **प्रति स० २** । पत्र स० ३१ । ले० काल X । वे० स० २६६ । ङ भण्डार ।

७५१. **प्रति स० ३** । पत्र स० २५ । ले० काल X । वे० स० २६७ । ङ भण्डार ।

७५२ **प्रति स० ४** । पत्र स० ३२ । ले० काल X । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

७५३ **प्रति स० ५** । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६६३ कार्त्तिक सुदी ६ । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४ **प्रति सं० ६** । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६४१ । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ७ पत्र बाद मे लिखे गये है ।

७५५ प्रति सं० ७। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। वे० सं० १८६। छ भण्डार।

७५६ प्रति सं० ८। पत्र सं० ३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६। छ भण्डार।

७५७ प्रति सं० ६। पत्र सं० ४२। ले० काल ×। वे० सं० १७६। ट भण्डार।

७५८ त्र्यलक्षणधर्मवर्णन। पत्र सं० २८। आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८७। क भण्डार।

७५९. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ११६७। ञ भण्डार।

विशेष—जवाहरलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७६० दानपञ्चाशत—पद्मनंदि। पत्र सं० ८। आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० १२४। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री पद्मनंदि मुनिराश्रित मुनि पुगवदान पंचाशत ललितवर्ण त्रयो प्रकरणं ॥ इति दान पंचाशत समाप्त ॥

७६१ दानकुलक……। पत्र सं० ७। आ० १ ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७२६। पूर्ण। वे० सं० ८३१। क भण्डार।

विशेष—गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है। लिपि नागरी है। प्रारम्भ में ४ पत्र तक चैत्यवंदन भाष्य दिया है।

७६२. दानशीलतपभावना—धर्मसी। पत्र सं० १। आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११६। ट भण्डार।

७६३ दानशीलतपभावना……। पत्र सं० ६। आ० १ ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६१६। क भण्डार।

विशेष—४ ५ पत्र नहीं है। प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

७६४ दानशीलतपभावना……। पत्र सं० १। आ० ६$\frac{3}{4}$×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२६६। क भण्डार।

विशेष—मोती और कौरव का संवाद भी बहुत सुन्दर रूप में दिया गया है।

७६५ दीपमालिकानिर्णय……। पत्र सं० १२। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३ ६। क भण्डार।

विशेष—निर्णयकार बाबूराम व्यास।

७६६ प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल । पूर्ण। वे० सं० ३ ७। क भण्डार।

७६७ दादापाहुड—रामसिंह। पत्र सं० २। आ० ११ ४ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–आचार शास्त्र। र० काल १ वीं शताब्दि। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७ २। क भण्डार।

विशेष—कुल ३३३ दोहे हैं। ६ से ११ तक पत्र नहीं हैं।

७६८ धर्मचाहना । पत्र स० ८ । आ० ८३/४×७ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२८ । ङ भण्डार ।

७६९. धर्मपचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र स० ३ । आ० १११/२×४१/२ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल १५वी शताब्दी । ले० काल स० १८२७ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचित धर्मपचविंशतिका नामशास्त्र समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीपभाषा—पन्नालाल संघी । पत्र स० ६४ । आ० १२×७१/२ । भाषा–हिन्दी । र० काल स० १९३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—सस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १९६२ आसोज सुदी १४ । वे० स० ३३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । प० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य मे अर्थ लिखा है ।

७७२ धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्त्ति । पत्र सं० ५० । आ० १०१/२×४१/२ । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १८१६ फागुन सुदी ५ । ञ भण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नो का उत्तर है । ग्रन्थ मे ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदो मे निम्न विषय के प्रश्नो के उत्तर हैं— १ दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २ श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३ रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व पृच्छा वर्णन । ५ कर्म विपाक पृच्छा । ६ सज्जन चित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण — तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरून् ।
अनन्तमहिमारूढान् वदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखचन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर मे शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

७७३ धर्मप्रश्नोत्तर । पत्र स० २७ । आ० ८१/२×४ । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० स० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४ धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र स० ४ मे ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १९३३ । अपूर्ण । वे० स० ५९८ । च भण्डार ।

विशेष—प० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र स० १७७ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावको के आचार का वर्णन है । र० काल स० १८६८ । ले० काल स० १८९० । पूर्ण । वे० सँ० ३३८ । ङ भण्डार ।

७५५ प्रति सं० ७। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। । वे० सं० १८६। छ भण्डार।

७५६ प्रति सं० ८। पत्र सं० ३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६। छ भण्डार।

७५७ प्रति सं० ९। पत्र सं० ४२। ले० काल ×। वे० सं० १७२। ट भण्डार।

७५८ दशलक्षणधर्मवर्णन। पत्र सं० २८। आ० १×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८७। च भण्डार।

७५९. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १११७। ट भण्डार।

विशेष—जवाहरलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७६० दानपंचाशत—पद्मनंदि। पत्र सं० ८। आ० ११×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२५। च भण्डार।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री पद्मनंदि मुनिराजित मुनि पुंगवस्य पंचाशत ललितवर्ग मयो प्रकरणं ॥ इति दान पंचाशत समाप्त ॥

७६१ दानकुलक.... । पत्र सं० ७। आ० १ ×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७५६। पूर्ण। वे० सं० ८३३। क भण्डार।

विशेष—गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है। लिपि नागरी है। प्रारम्भ में ४ पत्र तक वीरधर्मवलम भाष्य दिया है।

७६२. दानशीलतपभावना—धर्मसी। पत्र सं० १। आ० ६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१११। ट भण्डार।

७६३ दानशीलतपभावना.... ....। पत्र सं० ९। आ० १ ×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११६। क भण्डार।

विशेष—४ ५ पत्र नहीं है। प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

७६४ दानशीलतपभावना.... ....। पत्र सं० १। आ० १½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२६१। क भण्डार।

विशेष—मोती और कांचले का संवाद भी बहुत सुन्दर रूप में दिया गया है।

७६५ दीपमालिकानिर्णय.... ....। पत्र सं० १२। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३ १। छ भण्डार।

विशेष—लिपिकार बापूराम व्यास।

७६६ प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल । पूर्ण। वे० सं० ३ १। छ भण्डार।

७६७ ...पाहुड—रामसिंह। पत्र सं० ? । आ० ११×४ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–आचार शास्त्र। र० काल १ वीं शताब्दि। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २ १२। क भण्डार।

विशेष—कुल १११ पत्र हैं। ६ से ११ तक पत्र नहीं है।

७६८ धर्मचाहना । पत्र स० ८ । आ० ८½×७ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२८ । ङ भण्डार ।

७६९ धर्मपचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र स० ३ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल १५वी शताब्दी । ले० काल स० १८२७ पौष बुदी ९ । पूर्ण । वे० स० ११० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचित धर्मपचविंशतिका नामशास्त्रं समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीपभाषा—पन्नालाल सघी । पत्र स० ६४ । आ० १२×७½ । भाषा-हिन्दी । र० काल स० १९३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—सस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १९६२ आसोज सुदी १४ । वे० स० ३३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । प० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य मे अर्थ लिखा है ।

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्त्ति । पत्र स० ५० । आ० १०½×४½ । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १८१६ फागुन सुदी ५ । ञ भण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नो का उत्तर है । ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदो मे निम्न विषय के प्रश्नो के उत्तर हैं— १ दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २ श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३ रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व पृच्छा वर्णन । ५ कर्म विपाक पृच्छा । ६ सज्जन चित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण .— तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरून् ।
अनन्तमहिमारूढान् वदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखचन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर मे शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

७७३ धर्मप्रश्नोत्तर । पत्र स० २७ । आ० ८½×४ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० स० ४०० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४ धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र स० ४ से ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय- धर्म । र० काल × । ले० काल स० १९३३ । अपूर्ण । वे० स० ५९८ । च भण्डार ।

विशेष—प० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र स० १७७ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय- श्रावको के आचार का वर्णन है । र० काल स० १८६८ । ले० काल स० १८९० । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । ङ भण्डार ।

७७६. धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार .... । पत्र सं० १ से ३५ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१ । ग भण्डार ।

७७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । ञ भण्डार ।

७७८. धर्मरत्नाकर—संग्रहकर्त्ता पं० मंगल । पत्र सं० १११ । आ० ११×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल सं० १६८० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४ । म भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६८ वर्षे काष्ठासंघे नंदतट ग्रामे भट्टारक श्रीभूषण शिष्य पंडित मङ्गल कृत शास्त्र रत्नाकर नाम शास्त्र संपूर्ण । संग्रह ग्रन्थ है ।

७७९. धर्मरसायन—पद्मनन्दि । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । क भण्डार ।

७८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७६७ वैशाख सुदी १ । वे० सं० ४१ । म भण्डार ।

७८१. धर्मरसायन .... । पत्र सं० ८ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १११५ । अ भण्डार ।

७८२. धर्मलक्षण .... । पत्र सं० १ । आ० १×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११५ । ट भण्डार ।

७८३. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी । पत्र सं० ४८ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० का० सं० १५४१ । ले० काल सं० १५४२ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति बाद में संशोधित की हुई है । मंगलाचरण भी काट कर दूसरा मंगलाचरण लिखा गया है । तथा पुष्पिका में शिष्य के स्थान में अंतेवासिना शब्द जोड़ा गया है । लेखक प्रशस्ति निम्न है—

श्री विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४२ वर्षे कार्तिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्द्धमानचैत्यालयविराजमाने श्रीहिस र पैरोजाकोटे सुलतानश्रीबहलोलसाहिराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सारस्वतगच्छे बलात्कारगण भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवा । तत्पट्टे शुभचन्द्रविकासनैकचन्द्र श्री शुभचन्द्रदेवाः । तत्पट्टे षट्तर्कचक्रवर्तित्तदेवाः भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तच्छिष्य मंडलाचार्य मुनि श्री रत्नकीर्त्तिः तस्य शिष्यो दिगम्बर मुनिर्मुनि श्री विमलकीर्त्ति पंडितश्रीमीहाख्यः तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सौंसा गोत्रे परमश्रावकसाधु साधुनामा तद्भार्या भार्या देवगुरुपादारविंद मधुकरा साध्वी नाम्निसंज्ञिका तयो श्रावकाचारोत्पन्नी साधुभोजा—नैषीभिधानी । साधुनाम्ना द्वितीय भार्या साहुवी इति नाम्नी । तन्नन्दनौ निमित्तज्ञानविचारसाधुसावलाभिधैः प्रथ साधुभोजाख्यौपार्जितद्रव्याविपुलनिसवालोलाहिरि संज्ञा । तयोः प्रथमपुत्रः साधुधर्मसिंह । तद्भार्यादेवगुरुचरणारविन्दचञ्चरीका साध्वी धनश्रीः । द्वितीय पुत्रः श्री गिर नारगिरी श्री नेमीश्वर यात्राकारक संघपति मन्हा नामा । तस्य गेहिनी शीलधारिणी जही इति संज्ञिका । तयोर्मध्ये पुत्रचतुर्विधदानवितरणपरायण सन्तिदासः तस्य भामिनी अनेकगुणधारिणी साध्वी हिरु सिरि नाम

धेया । द्वितीय पुत्र पचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदास तस्य भार्या विहितानेकधर्म्मकार्या गुणसिरि इति प्रसिद्धि तत्पुत्रौ चिरंजीविनौ ससार चदराय चदाभिधानौ । अथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिगुणरत्नखानि साध्वी कमलश्री द्वितीयअनेकव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासाध्वी सूवरीनामा तत्तनूज. सम्यक्त्वालंकृतद्वादशव्रतपालक । सघपति डूगराह । तत्कलत्र नानाशीलविनयादिगुणपात्र साधु लाडी नाम धेय । तयो सुतो देवपूजादिषट्क्रिया कमलिनीविकास-नैकमार्त्तण्डोपमो जिनदास तन्महिलाधर्म्मकर्म्मठ कर्म श्रीरतिनाम । एतेषा मध्येसघपति ल्हाख्य भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शातिदासनेमिदासयो न्योपार्जितवित्तेन इद श्री धर्मसग्रह पुस्तकपचकं पंडितश्रीमीहाख्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापित भव्याना पठनाय । निजज्ञानावरणकर्म्मक्षयार्थं आचन्द्रार्क्कादिनदतान् ।

७८४. प्रति स० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ३४५ । क भण्डार ।

७८५. प्रति स० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १७८६ । वे० स० ३४२ । ङ भण्डार ।

७८६. प्रति स० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल स० १८८६ चैत सुदी १२ । वे० स० १७२ । च भण्डार ।

७८७. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४८ से ५५ । ले० काल स० १६४२ वैशाख सुदी ३ । वे० स० १७३ । च भण्डार ।

७८८ प्रति सं० ६ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० स० १०८ । छ भडार ।

विशेष—भखतराम के शिष्य सपतिराम हरिवशदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९ धर्मसंग्रहश्रावकाचार । पत्र स० ६९ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा ली है ।

७९०. धर्मसग्रहश्रावकाचार । पत्र स० २ से २७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४१ । ङ भण्डार ।

७९१ धर्मशास्त्रप्रदीप । पत्र स० २३ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४६९ । अ भण्डार ।

७९२ धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका । पत्र स० ३६ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्मोपदेश । र० काल सं० १७२४ आषाढ सुदी ऽऽ । ले० काल स० १९४७ । पूर्ण । वे० स० ३३४ । क भडार

विशेष—नागवद्ध, धनुपवंद्ध तथा चक्रबद्ध कविताओ के चित्र हैं । प्रति स० २ के आधार से रचना सवत् है

७९३. प्रति स० २ । ले० काल स० १७२७ कार्त्तिक सुदी ५ । वे० स० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सागानेर मे हुई थी ।

७९४. धर्मसार—प० शिरोमणिदास । पत्र स० ३१ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०४० । अ भण्डार ।

७९५ प्रति सं० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८८५ फागुण बुदी ५ । वे० स० ४६ । ग भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साह ने सवाई माधोपुर मे सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि करवाई ।

७९६ धर्मामृतसूक्तिसंग्रह—आशाधर। पत्र सं ६५। आ ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचारएवं धर्म। र काल सं १२९६। ले काल सं १७४७ आसोज सुदी २। पूर्ण। वे० सं २६५।

विशेष—संवत् १७४७ वर्षे आसौज सुदी २ बुधवासरे ग्रंथं द्वितीय सागरधम्म स्कंध पत्तास्यत्रयटसप्तम्यधिकानि चत्वारिंशाशतानि ॥४७९॥ ग्र ॥

प्रतमह्रुतमत्लेपी रस मुखिर्य सिमारुत्वा ॥
इति प्रसस्य श्रीवानितिहिम सम्बदरसी ॥ कुत्था गाथा ॥
संगर कट्टु मिथीमूगवरोमसू कम्मार्स।
एव सर्व्व विरल बज्जोपम्बाययमेण ॥ १ ॥
विरसं जी मी पछा मुहं च पत्तं च हाविमो विज्जा।
महुवावि सम पत्तो मुंजिज्ज गोरसाईय ॥ २ ॥

इति विरस गाथा ॥ श्री ॥

रचना का नाम धर्मामृत' है। यह दो भागों में विभक्त है। एक सागारधर्मामृत तथा दूसरा अनागार धर्मामृत।

७९७ धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार—सिंहनंदि। पत्र सं ११। आ १२×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १७८५ माघ सुदी ११। पूर्ण। वे सं ४८। घ भण्डार।

७९८. धर्मोपदेशश्रावकाचार—अमोघवर्ष। पत्र सं ११। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १७८५ माघ सुदी ११। पूर्ण। वे सं ४८। घ भण्डार।

विशेष—मौटा में प्रतिलिपि की गई थी।

७९९. धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्म नेमिदत्त। पत्र सं २६। आ १ ×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स २४५। छ भण्डार। अन्तिम पत्र नहीं है।

८०० प्रति सं० २। पत्र स १५। ले काल स १८९९ ज्येष्ठ सुदी १। वे सं ८। ञ भण्डार।

विशेष—भवानीचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

८०१ प्रति सं० ३। पत्र सं १८। ले काल ×। वे सं २१। ञ भण्डार।

८०२. धर्मोपदेशश्रावकाचार.........। पत्र स २१। आ १२¾×४¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १७४।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

८०३ धर्मोपदेशसंग्रह—सेवाराम साह। पत्र स २१८। आ १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र काल सं १८३८। ले काल ×। वे० सं १४३।

विशेष—ग्रन्थ रचना सं १८३८ में हुई किन्तु कुछ पंश स १८६१ में पूर्ण हुआ।

८०४ प्रति सं० २। पत्र सं १९। ले काल ×। वे सं ५६०। च भण्डार।

८०५ प्रति सं० ३। पत्र सं २०६। ले काल ×। वे सं १८६५। ट भण्डार।

८०६ नरकदुखवर्णन—भूधरदास । पत्र स० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–नरक के दुखो का वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६४ । अ भण्डार ।

विशेष—भूधर कृत पार्श्वपुराण मे से है ।

८०७ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ६६३ । अ भण्डार ।

८०८ नरकवर्णन । पत्र स० ८ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–नरको का वर्णन । र० काल × । ले० काल स० १८७९ । पूर्ण । वे० स० ६०० । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की ।

८०९ नवकारश्रावकाचार । पत्र सं० १४ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–श्रावको का आचार वर्णन । र० काल × । ले० काल स० १६१२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ६५ । अ भण्डार

विशेष—श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे खडेलवाल गोत्र वाली बाई तील्ह ने श्री आर्यिका विनय श्री को भेट किया । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६१२ वर्षे वैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कार-गणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्-शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये सोनी गोत्रे बाई तील्ह इद शास्त्र नवकारे श्रावकाचार ज्ञानावरणी कर्मक्षय निमित्त अर्जिका विनैसिरीए दत्त ।

८१०. नष्टोदिष्ट । पत्र स० ३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११३३ । अ भण्डार ।

८११ निजामणि—ब्र० जिनदास । पत्र स० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६८ । क भण्डार ।

८१२ नित्यकृत्यवर्णन । पत्र स० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । ङ भण्डार ।

८१३. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३५६ । ङ भण्डार ।

८१४. निर्माल्यदोषवर्णन—बा० दुलीचन्द । पत्र स० ६ । आ० १०¾×८½ भाषा–हिन्दी । विषय–श्रावक धर्म वर्णन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८१ । क भण्डार ।

८१५ निर्वाणप्रकरण । पत्र स० ६२ । आ० ६½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १८६६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३१ । ज भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज मे है । यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमे २६ सर्ग हैं ।

८१६ निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र स० ११ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

८१७ पचपरमेष्ठीगुण ....। पत्र स० ५ । मा ७×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १६२० । क भण्डार ।

८१८ पचपरमेष्ठीगुणवर्णन—डालूराम । पत्र सं ७१ । मा ४३×४३ । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय एवं सर्व साधु पंच परमेष्ठियों के गुणों का वर्णन । र० काल सं १८६२ फागुण सुदी १ । ले काल सं १८६६ माघाढ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं १७ । ङ भण्डार ।

विशेष—१ वें पत्र से द्वादशानुप्रेक्षा भाषा है ।

८१९. पद्मनंदिपंचविंशतिका—पद्मनंदि । पत्र सं २ से ८१ । मा १२३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र काल × । ले काल सं १५८६ चैत सुदी १० । अपूर्ण । वे सं १६७१ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है—

श्री धर्मचन्द्रास्तदाम्नाये चैद गोत्रे खंडेलवालान्वये रामसरिवासस्तव्ये राव श्री जगमाल राज्यप्रवर्त्तमाने साह सीमदास ....।

८२० प्रति स० २ । पत्र सं १२१ । ले काल सं १५७ ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा । वे सं २४५ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—संवत् १५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १ रवौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तच्छिष्य भ भुवनकीर्तिस्तच्छिष्य भ श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य ब्रह्म तेजपाल पठनार्थं । देसुलि ग्रामे वास्तव्ये व्या शाकदास लिखिता । शुभं भवतु ।

विषय सूची पर सं १६८२ वर्षे लिखा है ।

८२१ प्रति सं० ३ । पत्र सं १ । ले काल × । वे सं ९२ । ख भण्डार ।

८२२ प्रति स० ४ । पत्र सं ८ । ले काल सं १८७२ । वे सं ४२२ । ङ भण्डार ।

८२३ प्रति सं० ५ । पत्र सं १२१ । ले काल × । वे सं ४२० । ङ भण्डार ।

८२४ प्रति स० ६ । पत्र सं ५१ । ले काल × । वे सं ४२१ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

८२५. प्रति स० ७ । पत्र सं ५६ । ले काल सं १७४८ माघ सुदी ४ । वे सं १२ । ज भण्डार ।

विशेष—भट्ट बल्लभ ने मर्वली में प्रतिलिपि की थी । ब्रह्मचर्याष्टक तक पूर्ण ।

८२६ प्रति स० ८ । पत्र सं ११६ । ले काल सं १५७८ माघ सुदी २ । वे सं १३ । ज भण्डार ।

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— संवत् १५७८ माघ सुदी २ बुधे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्तत् शिष्य आचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्शिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तत्शिष्य आचार्य श्री यशःकीर्ति उपदेशात् हूंबड

ज्ञातीय बागडदेशे सागवाड शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये हूबड ज्ञातीय गाधी श्री पोपट भार्या धर्मादिस्तयोःसुत गाधी रामा भार्या रामादे सुत डूगर भार्या दाडिमदे ताभ्या स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थं लिखाप्य इय पचविंशतिका दत्ता।

८२७. प्रति सं० ६। पत्र सं० २८८। ले० काल स० १६३८ आषाढ सुदी ६। वे० स० ५४। ख भण्डार

विशेष—बैराठ नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

८२८. प्रति सं० १०। पत्र स० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४१८। ङ भण्डार।

८२६. प्रति सं० ११। पत्र सं० ५१ से १४६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४१६। ङ भण्डार।

८३०. प्रति सं० १२। पत्र स० ७६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४२०। ङ भण्डार।

८३१. प्रति सं० १३। पत्र स० ८१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४२१। ङ भण्डार।

८३२. प्रति सं० १४। पत्र स० १३१। ले० काल स १६८२ पौष बुदी १०। वे० स० २६०। ज भण्डार

विशेष—कही कही कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये है।

८३३. प्रति सं० १५। पत्र स० १६८। ले० काल स० १७३२ सावण सुदी ६। वे० स० ४६। ञ भण्डार।

विशेष—पडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई।

८३४ प्रति सं० १६। पत्र सं० १३७। ले० काल स० १७३५ कार्त्तिक सुदी ११। वे० स० १०८। ञ भण्डार।

८३५. प्रति सं० १७। पत्र स० ७८। ले० काल ×। वे० स० २६४। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सामान्य सस्कृत टीका सहित है।

८३६. प्रति सं० १८। पत्र स० ५८। ले० काल स० १५८५ बैशाख सुदी १। वे० स० २११०। ट भण्डार।

विशेष—१५८५ वर्षे बैशाख सुदी १५ सोमवारे श्री काष्ठासघे मात्रार्णके (माथुरान्वे) पुष्करगणे भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेव। तत् ” –।

८३७ पद्मनंदिपंचविंशतिटीका · । पत्र स० २००। आ० १३×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल स० १६५० भादवा बुदी ३। अपूर्ण। वे० स० ४२३। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नही हैं।

८६८. पद्मनदिपच्चीसीभाषा—जगतराय। पत्र स० १८०। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। र० काल स० १७२२ फागुण सुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४१६। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ रचना औरङ्गजेब के शासनकाल मे आगरे मे हुई थी।

८३६ प्रति सं० २। पत्र स० १७१। र० काल स० १७५८। वे० सं० २६२। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

८४० पद्मनंदिपंचविंशतिभाषा—मन्नालाल खिन्दूका। पत्र सं० १४१। आ० ११×८½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र० काल सं० १९१५ मंगसिर बुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। क भण्डार

विशेष—इस ग्रन्थ की वचनिका मिश्रमा शामकमणजी के पुत्र जौहरीलालजी ने प्रारम्भ की थी। 'सिद्ध स्तुति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार की मृत्यु होगई। पुनः मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया। रचनाकाल प्रति सं० २ के आधार से लिखा गया है।

८४१ प्रति स० २। पत्र सं० ४१७। ले० काल ×। वे० सं० ४१७। क भण्डार।

८४२ प्रति स० ३। पत्र सं० ३२७। ले० काल सं० १९४४ चैत्र बुदी ३। वे० सं० ४१७। क भण्डार।

८४३ पद्मनंदिपंचविंशतिभाषा······। पत्र सं० ९७। आ० ११×७½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४१८। क भण्डार।

८४४ पद्मनंदिश्रावकाचार—पद्मनंदि। पत्र सं० ४ से ५३। आ० ११¼×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल सं० १९११। अपूर्ण। वे० सं० ४२८। क भण्डार

८४५ प्रति स० २। पत्र सं० १ से ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१७। ट भण्डार।

८४६ परीषहवर्णन······। पत्र सं० ६। आ० १ ३½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४४१। क भण्डार।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह भी है।

८४७ पुष्पाञ्जलिसेवा······। पत्र सं० २। आ० १ ×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२७। पूर्ण। ख भण्डार।

८४८ पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचन्द्राचार्य। पत्र सं० ११। आ० ११¼×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७ ७ मंगसिर सुदी ३। वे० सं० ५१। ख भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति के शिष्य सदाराम ने फागुईपुर में प्रतिलिपि की थी।

८४९ प्रति स० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ५५। छ भण्डार।

८५० प्रति स० ३। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८३२। वे० सं० १७५। ख भण्डार।

८५१ प्रति स० ४। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १९५४। वे० सं० ४७१। क भण्डार।

विशेष—श्लोकों के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है।

८५२ प्रति स० ५। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ४७२। क भण्डार।

८५३ प्रति सं० ६। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ६७। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। ग्रन्थ का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है।

८५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है तथा जयपुर मे लिखी गई थी ।

८५५ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३१ । ज भण्डार ।

८५६ पुरुषार्थसिद्ध्युपायभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८२७ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । अ भण्डार ।

८५७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १९५२ । वे० सं० ४७३ । ङ भण्डार ।

८५८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १८२७ मगसिर सुदी २ । वे० सं० ११८ । झ भण्डार ।

८५९ पुरुषार्थसिद्ध्युपायभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ११६ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल सं० १९५२ । पूर्ण । वे० सं० ४७३ । क

८६०. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र सं० १३६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल सं० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७२ । क भण्डार ।

८६१ पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र सं० ३८ से ६७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १८५३ भादवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है । श्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

८६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७१ । ले० काल × । वे० सं० ४७० । क भण्डार ।

८६४ प्रतिक्रमण । पत्र सं० १३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुये दोषो की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । च भण्डार ।

८६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । च भण्डार ।

८६६ प्रतिक्रमण पाठ । पत्र सं० २६ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय किये हुये दोषो की आलोचना र० काल × । ले० काल सं० १८९९ । पूर्ण । वे० सं० ३२ । ज भण्डार ।

८६७ प्रतिक्रमणसूत्र । पत्र सं० ६ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–किये हुये दोषो की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । अ भण्डार ।

८६८ प्रतिक्रमण । पत्र सं० २ से १८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–किये हुये दोषो की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

८६९ प्रतिक्रमणसूत्र—(वृत्ति सहित) । पत्र सं० २२ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय किये हुए दोषो की आलोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । घ भण्डार ।

८७० प्रतिमासत्थापक कू उपदेश—ज्ञानरूप। पत्र सं ४७। आ ६×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र काल ×। ले काल सं १८२१। पूर्ण। वे सं ११२। ख भण्डार।

विशेष—औरङ्गाबाद में रचना की गयी थी।

८७१ प्रत्याख्यान······। पत्र सं १। आ १×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–धर्म। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७७२। ट भण्डार।

८७२ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार······। पत्र सं २५। आ ११×८ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १११८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है।

८७३ प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा—बुलाकीदास। पत्र सं १६८। आ ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–आचार शास्त्र। र काल सं १७४७ वैशाख सुदी २। ले काल सं १८८१ मंगसिर सुदी १। वे सं ६२। ग भण्डार।

विशेष—स्योलालजी के पुत्र लालूलालजी साह ने प्रतिलिपि करायी। इस ग्रन्थ का ¾ भाग जहानाबाद तथा चौथाई ¼ भाग पानीपत में लिखा गया था।

'तीन हिस्से या ग्रन्थ को भये जहानाबाद।
चौथाई जलपथ विषै वीतराग परसाद॥

८७४ प्रति सं २। पत्र सं ५६। ले काल सं १८८१ सावण सुदी १। वे सं ६३। ग भण्डार।

विशेष—स्योलालजी साह ने सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर ग्रन्थ चढ़ाया।

८७५ प्रति सं० ३। पत्र सं १५। ले काल सं १८६४ चैत्र सुदी ५। वे सं ५२१। क भण्डार।

विशेष—सं १८२१ फागुण सुदी ११ को बखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी और उसी प्रति से इस की नकल उतारी गई है। महात्मा सीताराम के पुत्र लालचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की।

८७६ प्रति सं ४। पत्र सं २१। ले काल ×। वे सं ६४८। अपूर्ण। ख भण्डार।

८७७ प्रति सं० ५। पत्र सं १५। ले काल सं १९६६ माघ सुदी १२। वे सं १११। छ भण्डार।

८७८ प्रति सं० ६। पत्र सं १२। ले काल सं १८८३ पौष सुदी १४। वे सं ११। झ भण्डार।

८७९ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं १४८। आ १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–आचार शास्त्र। र काल सं १९३१ पौष सुदी १४। ले काल सं १९३८। पूर्ण। वे सं २१। क भण्डार।

८८० प्रति सं० २। पत्र सं ४। ले काल सं १९३१। वे० सं ५१५। क भण्डार।

८८१ प्रति स० ३ । पत्र स० २३१ से ४६० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६४६ । च भण्डार ।

८८२ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार । पत्र स० ३३ । आ० ११३/४X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल X । ले० काल स० १८३२ । पूर्ण । वे० स० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३ प्रति स० २ । पत्र स० १३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६४७ । च भण्डार ।

८८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३०० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१८ । ङ भण्डार ।

८८५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३०० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१६ । ङ भण्डार ।

८८६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० १३१ । आ० ११X४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल X । ले० काल स० १६६५ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १४२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ सख्या २६०० ।

प्रशस्ति—सवत् १६६५ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे खिराडदेशे पनवाडनगरे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सोमकीर्त्तिदेवास्ततरट्टे भ० श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयसेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूपणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्त्तिस्तच्छिष्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखितं ।

८८७ प्रति स० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वे० स० १७४ । अ भण्डार ।

८८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १८८१ मगसिर सुदी ११ । वे० स० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल मे जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या ने प्रतिलिपि कराई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर मे अबावती (आमेर) बाजार मे स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे जती ननसागर के शिष्य मन्नालाल के यहा सवाईराम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के घडो मे (१२वें दिन पर) श्योजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर मे स० १८६३ मे भेंट की ।

८८६ प्रति स ४ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १६०० । वे० स० २१७ । अ भण्डार ।

८६०. प्रति सं० ५ । पत्र स० २१६ । ले० काल स० १६७६ आसोज बुदी ५ । वे० स० २११ । अ भण्डार ।

विशेस—नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—सवत् १६७६ वर्षे आसोज वदि शनिवासरे रोहणी नक्षत्रे मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभावसिंध राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्त्तितत्पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये गोवा गोत्रे जाचक-जनसदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित साह श्री धनराज

तद्भार्या सीलशील-तरंगिणी विनय-वागेश्वरी धनसिरि तया पुत्रा नव प्रथमपुत्र धर्मधुराधरण धीरसाह श्री म्ना तद्भार्या दानसीलगुणभूषणभूषितवाणानाम्ना पूरुरि तया पुत्र रामलमा ग्रु भारहारस्वप्रतापविकरमुकुलिकृतगुनुमुकुमुदा-कर स्वव'''' ''निसाकरमाह्णादित कुवलयदामगुण मन्दीकृतकरपादप श्री पंचपरमेष्ठिचितन गविनितवित सकलभूमि-जनविश्रामस्थान साह श्री मानूतन्मनोरमा पंच प्रथमभार्यापदे द्वितीया हरकमदे तृतीया मुजानदे चतुर्था सजासदे पंचम भार्या साठी । हरकमदेजनितपुत्राः नव स्वकुलसमामप्रकाशमेव चन्द्राः प्रथम पुत्र साहु भावकर्म तद्भार्या महंकारदेपुत्र नाथु । तुतीभार्यासाढमदे पुत्र केसवदास भार्या समूरदे द्वितीय पुत्र चि नुगुणरत्न भार्या है प्रथमसमताने पुत्र रामकर्ण द्वितीय साढमदे । तृतीय पुत्र चि बलिकर्ण भार्या बालमदे । चतुर्थ पुत्र चि पूर्णमल भार्या पुरवद । साहु धनराज द्विती पुत्र साहु धो जोषा तद्भार्या बौणादेतयो पुत्रास्रय प्रथमपुत्रधार्मिक साहु नरमचन्द तद्भार्या सोहगदे तयो पुत्र चि दयालदास भार्या दाडमदे । द्वितीपुत्र साहु धर्मदास तद्भार्याद्वे । प्रथम भार्या धारदे द्वितीय भार्या लाडमदे तयो पुत्र साहु डूगरसी तद्भार्या दाडिमदे तत्पुत्रौ द्व । प्र पु मदमीदास द्वि पुत्र चि तुलसीदास । जोषा तृतीय पुत्र जिणचरणकमल मधुप साहु पदारथ तद्भार्या हमीरदे । साहु धनराज तृतीय पुत्र दानगुणश्रेयांससकल बननिश्चकारस्वचनप्रतिपालन समर्थसर्वोपकारकसाहुश्रीरतनसी तद्भार्या द्व प्रथम भार्या रत्नादे द्वितीय भार्या सौभादे तयो पुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र सुरास तद्भार्या सुप्यारदे तयो पुत्र चि मौजराज तद्भार्या भावलदे । श्रीरतनसी द्वितीय पुत्र साहु गेगराज तद्भार्या गौरादे तयोपुत्रा त्रय प्रथम पुत्र चि सालू ल द्वि पुत्र चि मिना तृतीय पुत्र चि समहवी । साहु रतनसी तृतीय पुत्र साहु भरथा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि परवत तद्भार्या पान्मदे । एतेषां मध्ये सिमवी श्री साहु भार्या प्रथम नारंगदे । भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्ति शिष्य मा श्री शुभचन्द्र इदं शास्त्र प्रतनिमित्तं वटापित कर्मक्षयनिमित्तं । ज्ञानवान ज्ञानदाने''''

८६१ प्रति सं० ६ । पत्र सं ४६ से १६४ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६८१ । क भण्डार ।

८६२ प्रति स० ७ । पत्र सं ११ । ले काल सं १८६२ । अपूर्ण । वे सं १ १६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं । पं केसरीसिंह के शिष्य लालचन्द ने महात्मा संभुराम स सवाई जयपुर में प्रतिलिपि कराकी ।

८६३ प्रति स ८ । पत्र सं ११५ । ले काल सं १८८२ । वे सं ५११ । क भण्डार ।

८६४ प्रति स० ६ । पत्र सं ८१ । ले काल सं १६५८ । वे सं ६२ । क भण्डार ।

८६५ प्रति स० १० । पत्र सं २२१ । ले काल स १६७७ पौष सुदी । वे सं ५१७ । क भण्डार ।

८६६ प्रति स० ११ । पत्र सं ११ । ले काल सं १८८ ' । वे सं ११५ । ख भण्डार ।

विशेष—पं रूपचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८६७ प्रति स १२ । पत्र सं ११६ । ले काल × । वे सं ६४ । ख भण्डार ।

८६८ प्रति स० १३ । पत्र सं २ से २६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ५१७ । क भण्डार ।

८६९ प्रति स १४ । पत्र सं ६६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ५१० । क भण्डार ।

९०० प्रति स० १५ । पत्र सं १२९ । ले काल × । वे सं ५२ । क भण्डार ।

९०१ प्रति स० १६ । पत्र स० १४५ । ले० काल X । वे० स० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र वाद मे लिखा हुआ है ।

९०२ प्रति स० १७ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० स० १०८ । छ भण्डार ।

९०३ प्रति सं० १८ । पत्र स० १०४ । ले० काल स० १७७४ फागुण बुदी ८ । वे० स० १०९ ।

विशेष—पाचोलास मे चातुर्मास योग के समय प० सोभागविमल ने प्रतिलिपि की थी । स० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे घासीराम छाबडा ने सागानेर में गोधो के मन्दिर मे चढाई ।

९०४ प्रति सं० १९ । पत्र स० १९० । ले० काल स० १८२६ मगसिर बुदी १४ । वे० स० ७८ । ञ भण्डार ।

९०५ प्रति स० २० । पत्र स० १३२ । ले० काल X । वे० स० २२३ । ञ भण्डार ।

९०६ प्रति स० २१ । पत्र स० १३१ । ले० काल स० १७५९ मगसिर बुदी ८ । वे० स० ३०२ ।

विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

९०७. प्रति स० २२ । पत्र स० १६४ । ले० काल स० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० स० ३७५ । ञ भण्डार ।

९०८ प्रति स० २३ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १६८८ पौष सुदी ५ । वे० स० ३४३ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये पहाड्या साह श्री कान्हा इद पुस्तकं लिखापित ।

९०९. प्रति स० २४ । पत्र स० १३१ । ले० काल X । वे० स० १८७३ । ट भण्डार ।

९१० प्रश्नोत्तरोद्धार । पत्र सख्या ५० । आ०–१०½×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–X । ले० काल–स० १९०५ सावन बुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० १९९ । छ भण्डार ।

विशेष—चूरू नगर मे स्योजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

९११ प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्ण । पत्र सख्या १९ । आ० ६½×४½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल–X । ले० काल–स० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वे० स० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—वख्तराम के शिष्य शभु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गणपति देव सर्व विघ्न विनाशन ।
गुरु च करुणानाथ ब्रह्मानदाभिधानक ॥१॥
प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णेन रच्यते ।
सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥
चतुर्णामपि वर्णाना क्रमत कार्यकारिका ।
लिख्यते सर्वविद्यार्थि प्रबोधाय प्रशस्तिका ॥ ३ ॥

मत्वा सकल मार्गेण विद्याकीर्तिपगोपि च।
प्रतिष्ठा सम्पठे शीघ्रमनायासेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२ प्रात' क्रिया······। पत्र सं ४। आ १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आचार। र काल–×। ले काल–×। पूर्ण। वे सं १६११। ट भण्डार।

६१३ प्रायश्चित ग्रन्थ ·····। पत्र सं १। आ ११×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–किये हुए दोषों की आलोचना। र काल–×। ले काल–×। अपूर्ण। वे सं १२२। ख भण्डार।

६१४ प्रायश्चित विधि—अकलङ्क देव। पत्र सं १। आ १×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–किये हुए दोषों की आलोचना। र काल–×। ले काल–×। पूर्ण। वे सं १५२। ख भण्डार।

६१५ प्रति सं० २। पत्र सं २१। ले काल–×। वे सं १५२। ख भण्डार।
विशेष—१ पत्र से आगे अन्य ग्रन्थों के प्रायश्चित पाठों का संग्रह है।

६१६ प्रति सं० ३। पत्र सं ४। ले काल सं १६३४ चैत बुदी १। वे सं ११७। ग भण्डार।
विशेष—पं पन्नालाल ने जोबनेर के मंदिर जयपुर प्रतिलिपि की थी।

६१७ प्रति सं० ४। ले काल–×। वे सं २२१। ङ भण्डार।

६१८ प्रति सं० ५। ले काल–सं १७४४। वे सं २४४। च भण्डार।
विशेष—आचार्य महेन्द्रकीर्ति ने भू बावती (चंपावती) में प्रतिलिपि की।

६१९ प्रति सं० ६। ले काल–सं १७६१। वे सं ८। छ भण्डार।
विशेष—बागड़ नगर में पं हीरानंद के शिष्य पं चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६२० प्रायश्चित विधि······। पत्र सं ५१। आ १×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–किये हुए दोषों की आलोचना। र काल–×। ले काल सं १८ ५। अपूर्ण। वे सं –१२८। ख भण्डार।
विशेष—२२ वां तथा २१ वां पत्र नहीं है।

६२१ प्रायश्चित विधि······। पत्र सं १। आ ८½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–किये हुए दोषों का पश्चात्ताप। र काल–×। ले काल–×। पूर्ण। वे सं १२८१। ख भण्डार।

६२२ प्रायश्चित विधि—भ० एकसंधि। पत्र सं ४। आ १×४' इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–किये हुए दोषों की आलोचना। र काल–×। ले काल–×। पूर्ण। वे सं ११ ७। ख भण्डार।

६२३ प्रति सं० । पत्र सं २। ले काल–×। वे सं २४१। च भण्डार।
विशेष—प्रतिष्ठासार का दशम अध्याय है।

६२४ प्रति सं० ३। ले काल सं १७६१। वे सं ११। छ भण्डार।

६२५ प्रायश्चित शास्त्र—इन्द्रनन्दि। पत्र सं १४। आ १ ×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–किये हुए दोषों का पश्चात्ताप। र काल–×। ले काल–×। पूर्ण। वे सं १२१। ख भण्डार।

६२६ प्रायश्चित शास्त्र ···। पत्र सं ६। आ १×४½ इञ्च। भाषा–गुजराती (लिपि

देवनागरी) विपय–किये हुए दोषा की आलोचना र० काल–X। ले० काल–X। अपूर्ण। वे० स० १६६८। ट भण्डार।

९२७ **प्रायश्चित्त समुच्चय टीका—नदिगुरु**। पत्र स० ८। आ० १२X६। भाषा-सस्कृत। विपय–किये हुए दोषो की आलोचना। र० काल–X। ले० काल–स० १६३४ चैत्र बुदी ११। पूर्ण। वे० स० ११८। ख भण्डार।

९२८ **प्रोषध दोष वर्णन** । पत्र स० १। आ० १०X५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विपय–आचार शास्त्र। र० काल–X। ले० काल–X। वे० स० १४७। पूर्ण। छ भण्डार।

९२९. **बाईस अभक्ष्य वर्णन—बाबा दुलीचन्द**। पत्र स० ३२। आ० १०½X६¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–श्रावको के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन। र० काल–स० १६४१ वैशाख सुदी ५। ले० काल–X। पूर्ण। वे० स० ५३२। क भण्डार।

९३० **बाईस अभक्ष्य वर्णन** X। पत्र स० ६। आ० १०X७। भाषा–हिन्दी। विषय–श्रावको के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन। र० काल X। ले० काल। पूर्ण। वे० स० ५३३। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सशोधित है।

९३१ **बाईस परीपह वर्णन—भूधरदास**। पत्र स० ६। आ० ९X४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विपय–मुनियो द्वारा सहन किये जाने योग्य परीपहो का वर्णन। र० काल १८ वी शताब्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ९९७। अ भण्डार।

९३२ **बाईस परीषह** X। पत्र स० ६। आ० ९X४। भापा–हिन्दी। विपय–मुनियो के सहने योग्य परीषहो का वर्णन। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ९९७। ङ भण्डार।

९३३ **बालाविबेध (णमोकार पाठ का अर्थ)** X। पत्र स० २। आ० १०X४½। भापा प्राकृत, हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २८६। छ भण्डार।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

९३४ **बुद्धि विलास—बखतराम साह**। पत्र स० ७५। आ० ७X६। भापा–हिन्दी। विपय–आधार शास्त्र। र० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २। ले० काल स० १८३२। पूर्ण। वे० स० १८८१। ट भण्डार।

९३५ **प्रति स० २**। पत्र स० ७४। ले० काल स० १८६३। वे० स० १९५५। ट भण्डार।

विशेप—बखतराम साह के पुत्र जीवणराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

९३६. **ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन** X। पत्र स० ४। आ० ८X५। भापा–हिन्दी। विपय–धर्म। र० काल X। ले० काल X। वे० पूर्ण। वे० स० २३१। झ भण्डार।

९३७ **बोधसार** X। पत्र स० ३७। आ० १२X५½ भापा–हिन्दी विपय–धर्म। र० काल X। ले० काल स० १९२८। काती सुदी ५। पूर्ण। वे० स० १२५। ख भण्डार।

विशेप—ग्रन्थ बीसपंथ की आम्नाय की मान्यतानुसार है।

६३८ भगवद्गीता (कृष्णार्जुन सवाद) " × । पत्र सं २२ से ४६ । आ ९३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–वैदिक साहित्य । र काल × । ले काल × । अपूर्ण वे सं १५६७ । ट भण्डार ।

६३९ भगवती आराधना—शिवाचार्य । पत्र सं ३२१ । आ ११½×५३ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–मुनि धर्म वर्णन । र काल × । ले काल × । पूर्ण वे सं ५४१ । क भण्डार ।

६४० प्रति स० २ । पत्र सं ११२ । ले काल × । वे सं ५५ । क भण्डार ।

विशेष—पत्र ६६ तक संस्कृत में गाथाओं के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

६४१ प्रति स० ३ । पत्र सं १ १ । ले काल × । वे सं २६६ च भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ एवं अन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये हैं ।

६४२. प्रति स० ४ । २६५ । ले काल × । वे सं २६ च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६४३ प्रति स० ५ । पत्र सं ३१ से काल × । अपूर्ण । वे सं ६३ । ज भण्डार ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में टीका भी दी है ।

६४४ भगवती आराधना टीका—अपराजितसूरि श्रीनंदिगण । पत्र स० ४३४ । आ १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–मुनि धर्म वर्णन । र काल × । ले काल सं १७६३ माघ सुदी ७ पूर्ण । वे स २७६ । अ भण्डार ।

६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं ३१५ । ले काल सं १६६७ वैशाख सुदी ६ । वे स ३११ । च भण्डार ।

६४६ भगवती आराधना भाषा—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं ६ ७ । आ १२'×८३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल स १९ ८ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५४८ । क भण्डार ।

६४७ प्रति स० २ । पत्र सं ६६ । ले काल सं १९५५ माह सुदी ११ । वे सं ५६ । ङ भण्डार ।

६४८ प्रति स० ३ । पत्र सं ७२२ । ले काल सं १९११ जैष्ठ सुदी ६ । वे सं ६६८ । च भण्डार ।

६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं ५७ से ५११ । ले काल सं १९२८ वैशाख सुदी १ । अपूर्ण । वे स २५१ । ज भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हीरालालजी बगडा का है । मिती १९४२ माघ सुदी १ को आचार्य जी के कर्मदहन व्रत के उद्यापन में चढाई ।

६५० प्रति स० ५ । पत्र सं ६६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १ ५ । ञ भण्डार ।

६५१ प्रति स० ६ । पत्र सं ३२५ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६६७ । ट भण्डार ।

६५१ **भावदीपक—जोधराज गोदीका** । पत्र सं० १ से २७७ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५२ **प्रति सं० २** । पत्र सं० ५६ । ले० काल–सं० १८५७ पौष सुदी १५ । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५३. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० १७३ । र० काल × । ले० काल–सं० १९०४ कार्त्तिक सुदी १० । वे० सं० २५४ । ज भण्डार ।

६५४. **भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय** । पत्र सं० ४१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–सं० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी अष्टमी सोमवासरे लिखितं बाई धानी कर्मक्षयनिमित्त ।

६५५. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १५३१ फागुण बुदी ऽऽ । वे० सं० २११६ । ट भण्डार ।

६५६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० ७४ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—७४ से आगे के पत्र नही है ।

६५७ **भावसंग्रह—देवसेन** । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–सं० १६०७ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ कर्त्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे । प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विशाखानक्षत्रे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराउ श्री रामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ॰ ।

६५८ **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४५ । ले० काल–सं० १६०४ भादवा सुदी १५ । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे धृतनाम्नियोगे सुरित्राण सलेमसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने सिकदराबादशुभस्थाने श्रीमत्काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीभानुकीर्त्ति तस्य शिक्षणी बा० मोमा योग्य भावसंग्रहाख्य शास्त्र प्रदत्त ।

६५६. **प्रति सं० ३** । पत्र सं० २८ । ले० काल–× । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

६६० **प्रति सं० ४** । पत्र सं० ४६ । ले० काल–सं० १८६४ पौष सुदी १ । वे० सं० ५५८ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६६१ प्रति स० ५ । पत्र सं ७ से ४१ । ले० काल-सं १६६४ फागुण सुदी १ । अपूर्ण । वे सं २११३ । ट भण्डार।

६६२. प्रति स० ६ । पत्र सं ४ । ले काल-स १५७१ असाढ बुदी ११ । वे सं २११६ । ट भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १५७१ वर्षे आसाढ वदि ११ आदित्यवारे पेरोजा साहे । श्री मूलसंघे पंडितजिणदासेन लिखापितं ।

६६३ प्रति स० ७ । पत्र सं ६ । ले काल-× । अपूर्ण । वे सं २१७६ । ट भण्डार।

विशेष—६ से आगे पत्र नहीं है।

६६४ भावसंग्रह—श्रुतमुनि । पत्र सं ५६ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र काल-× । ले काल-सं १७१२ । अपूर्ण । वे सं ११६ । ख भण्डार।

विशेष—बीसवां पत्र नही है।

६६५ प्रति स० । पत्र सं १ । ले काल-× । अपूर्ण । वे सं १११ । ख भण्डार।

६६६ प्रति स० ३ । पत्र सं ५६ । ले काल-सं १७८३ । वे सं ५६६ । ङ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६६७ प्रति स० ४ । पत्र सं १ । ले काल-× । वे सं १८४१ । ट भण्डार।

विशेष—कही २ संस्कृत में अर्थ भी दिये है।

६६८ भावसंग्रह—पं० वामदेव । पत्र सं २७ । आ १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र काल-× । ले काल सं १८२८ । पूर्ण । वे सं ११७ । ख भण्डार।

६६९ प्रति सं० २ । पत्र सं १४ । ले काल-× । अपूर्ण । वे सं ११४ । ख भण्डार।

विशेष—पं वामदेव की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है। २ प्रतियों का मिश्रण है। अन्त के पृष्ठ पानी म भीगे हुए है। प्रति प्राचीन है।

६७० भावसंग्रह······। पत्र सं १४ । आ ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र काल-× । ले काल-× । वे० स ११५ । ख भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। १४ से आगे पत्र नहीं है।

६७१ मनोरथमाला······। पत्र सं १ । आ ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र काल-× । ले काल-× । पूर्ण । वे सं ५७ । ख भण्डार।

६७२ मरकतविलास—पन्नालाल । पत्र सं ६१ । आ १२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र काल-× । ले काल-× । अपूर्ण । वे सं ६६२ । च भण्डार।

६७३ मिथ्यात्वखण्डन—बखतराम । पत्र सं ५८ । आ १४×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । र काल-सं १८२१ पौष सुदी ५ । ले काल-सं १८८२ । पूर्ण । वे सं ५७७ । क भण्डार।

६७४. **प्रति स० २** । पत्र स० १७० । ले० काल–× । वे० स० ६७ । ग भण्डार ।

६७५ **प्रति स० ३** । पत्र स० ६१ । ले० काल–स० १८२४ । वे० स० ६६४ । च भण्डार ।

६७६. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ३७ से १०५ । ले० काल -× । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नही है । पत्र फटे हुये हैं ।

६७७ **मिथ्यात्वखंडन** । पत्र स० १७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नही है ।

६७८. **प्रति सं० २** । पत्र सं० ११० । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० स० ५६४ । ङ भण्डार ।

६७६ **मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि** । पत्र स० ३६८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–× । ले० काल–स० १८२६ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८०. **प्रति सं० २** । पत्र स० ३७३ । ले० काल–× । वे० सं० ५८० । क भण्डार ।

६८१ **प्रति स० ३** । पत्र स० १५१ । ले० काल–× । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—५१ से आगे पत्र नहीहै ।

६८२. **मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति** । पत्र स० १२६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचारशास्त्र । र० काल–× । ले० काल–स० १८२८ । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर मे हुई थी ।

६८३. **प्रति स० २** । पत्र स० ८५ । ले० काल–× । वे० स० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४. **प्रति स० ३** । पत्र स० ८१ । ले० काल–× । वे० स० २७७ । च भण्डार ।

६८५ **प्रति स० ४** । पत्र स० १५५ । ले० काल–× । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

६८६ **प्रति स० ५** । पत्र स० ६३ । ले० काल–स० १८३० पौष सुदी २ । वे० स० ६३ । ञ भण्डार ।

विशेष—प० चोखचद के शिष्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. **प्रति स० ६** । पत्र स० १८० । ले० काल–स० १८५६ कातिक बुदी ३ । वे० स० १०१ । ञ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वसुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की था ।

६८८ **प्रति स० ७** । पत्र स० १३७ । ले० काल–स० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० स० ४५५ । ञ भण्डार ।

६८६ **मुलाचारभाषा—ऋषभदास** । पत्र स० ३० से ६३ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–स० १८८८ । ले० काल–स० १८६१ । पूर्ण । वे० स० ६६१ । च भण्डार ।

९९० मूलाचार भाषा ......। पत्र सं ३० स ९९। आ १ ½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। र काल–×। ले काल–×। अपूर्ण। वे सं २९७।

९९१ प्रति स० २। पत्र सं १ से १ १४९ से १९०। आ १ ३½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। र० काल–×। ले काल–×। अपूर्ण। वे सं ५९९। क भण्डार।

९९२. प्रति स० ३। पत्र सं १ से ८१ १ १ से ९ । ले काल–×। अपूर्ण। वे सं ९ ।

९९३ मोक्षपैडी—बनारसीदास। पत्र सं १। आ ११½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र काल–×। ले काल–×। पूर्ण। वे सं ७९५। क भण्डार।

९९४ प्रति स० २। पत्र सं ४। ले काल–×। वे सं० ६ २। क भण्डार।

९९५ मोक्षमार्गप्रकाशक—प० टोडरमल। पत्र सं ३२१। आ १२½×८ इञ्च। भाषा–ढूंढारी (राजस्थानी) गद्य। विषय–धर्म। र काल–×। ले काल–सं १९२४ श्रावण सुदी १४। पूर्ण। वे सं ५८३। क भण्डार।

विशेष—ढूंढारी शब्दों के स्थान पर कुछ हिन्दी के शब्द भी लिखे हुये हैं।

९९६ प्रति स० २। पत्र सं २८२। ले काल–सं १९२४। वे सं ५८४। क भण्डार।

९९७ प्रति स० ३। पत्र सं ३१२। ले काल–सं १९४ । वे सं ५९५। क भण्डार।

९९८ प्रति स० ४। पत्र सं २१२। ले काल–सं १८८८ वैसाख सुदी ९। वे सं ९८। ग भण्डार।

विशेष—बाबूलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

९९९. प्रति स० ५। पत्र सं २२८। ले काल–×। वे सं ६ ३। क भण्डार।

१००० प्रति स० ६। पत्र सं २७९। ले काल–×। वे सं ५५८। च भण्डार।

१००१ प्रति स० ७। पत्र सं १ १ से ३२१। ले काल–×। अपूर्ण। वे सं ६९९। च भण्डार।

१००२. प्रति स० ८। पत्र सं १२१ से २२५। ले काल–×। अपूर्ण। वे सं ९९ । च भण्डार।

१००३ प्रति सं० ९। पत्र सं ३९१। ले काल–×। वे स ११९। झ भण्डार।

१००४ यतिदिनचर्या—देवसूरि। पत्र सं २१। आ १ ३½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–आचार शास्त्र। र काल–×। ले काल–सं १९९८ चैत सुदी ९। पूर्ण। वे सं १२२९। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री सुविहितशिरोमणिश्रीदेवसूरिविरचिता यतिदिनचर्या संपूर्णा।

प्रशस्ति—संवत् १९९८ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे नवमीभौमवासरे श्रीमत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री ५ विजयसेन सूरीश्वरराज लिखितं ज्योतिषी उदय श्री सुजाउलपुरे।

१० ५ यत्याचार—आ० वसुनंदि। पत्र सं ९। आ १२½×५½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–

मुनि धर्म वर्णन । र० काल-X । ले० काल-X । पूर्ण । वे० स० १२० । अ भण्डार ।

१००६ रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र स० ७ । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल-X । ले० काल-X । वे० स० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । ग्रथ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है ।

१००७. प्रति सं० २ । पत्र स० १५ । ले० काल-X । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कही कही सस्कृत मे टिप्पणिया दी हुई है । १६३ श्लोक हैं ।

१००८. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल-X । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

१००६ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल-स० १६३८ माह सुदी १० । वे० स० १५६ । ख भण्डार ।

विशेष—कही २ सस्कृत मे टिप्पण दिया है ।

१०१०. प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल-X । वे० स० ६३० । ङ भण्डार ।

१०११. प्रति सं० ६ । पत्र स० १४ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० सं० ६३१ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । ङ भण्डार ।

१०१३. प्रति स० ८ । पत्र सं० ३८-५६ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० स० ६३२ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति स० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल-X । वे० सं० ६३४ । ङ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५ प्रति सं० १० । पत्र स० ४० । ले० काल-X । वे० सं० ६३५ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे पन्नालाल सघी कृत टीका भी है । टीका सं० १६३१ मे की गयी थी ।

१०१६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २६ । ले० काल-X । वे० सं० ६३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१०१७ प्रति स० १२ । पत्र स० ४२ । ले० काल-स० १६५० । वे० सं० ६३८ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८ प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल-X । वे० स० ६३६ । ङ भण्डार ।

१०१६ प्रति सं० १४ । पत्र स० ३८ । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । च भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२० प्रति स० १५ । पत्र स० २० । ले० काल-X । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । च भण्डार ।

१०२१. प्रति सं० १६ । पत्र स० ११ । ले० काल-X । वे० स० २६३ । च भण्डार ।

१०२२. प्रति सं० १७ । पत्र स० ६ । ले० काल-X । वे० सं० २६४ । च भण्डार ।

१०२३ प्रति स० १८ । पत्र सं १३ । ले काल–× । वे सं २६५ । च भण्डार ।

१०२४ प्रति स० १६ । पत्र सं ११ । ले० काल–× । वे सं ७४ । घ भण्डार ।

१० ५ प्रति स० २० । पत्र सं १३ । ले काल × । वे सं ७४२ । च भण्डार ।

१०२६ प्रति स० २१ । पत्र सं १३ । ले काल–× । वे सं ७४३ । च भण्डार ।

१०२७ प्रति स० २२ । पत्र सं १ । ले काल–× । वे सं ११ । छ भण्डार ।

१० ८ प्रति सं० ३ । पत्र सं १० । ले काल–× । वे सं १४४ । ज भण्डार ।

१० ६ प्रति स० २४ । पत्र सं १६ । ले काल–× । अपूर्ण । वे सं ८३ । म भण्डार ।

१०३० प्रति स० २५ । पत्र सं० १२ । ले काल–सं १७२१ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे सं १२८ । म भण्डार ।

१०३१ रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं ८१ । आ १ ३×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र काल–× । ले काल–सं १८६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे सं १११ । अ भण्डार ।

१०३२ प्रति सं० २ । पत्र सं २२ । ले काल–× । वे० सं १ ६५ । अ भण्डार ।

१० ३ प्रति स० ३ । पत्र सं ११–५१ । ल काल–× । अपूर्ण । वे सं ३८ । अ भण्डार ।

१०३४ प्रति स० ४ । पत्र सं ३६–६२ । ल काल–× । अपूर्ण । वे सं १२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम उपासकाध्ययन टीका भी है ।

१०३५ प्रति स० ५ । पत्र सं १६ । ल काल–× । वे सं ६६६ । क भण्डार ।

१ ३६ प्रति स० ६ । पत्र सं ४८ । ल काल–सं १७७६ फागुण सुदी ५ । वे सं १७४ । म भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति की आम्नाय में खंडेलवाल ज्ञातीय भौंसा गोत्रोत्पन्न साह सुजनमल्ल ने वंगाज साह चन्द्रभाण की भार्या स्यौडी ने प्र थ की प्रतिलिपि कराकर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति के लिये कर्मक्षय निमित्त भेंट की ।

१०३७ रत्नकरण्डश्रावकाचार—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं १ ८२ । आ १२ ×८३ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–आचार शास्त्र । र काल सं १९२ चैत्र सुदी १४ । ले काल सं १९४१ । पूर्ण । वे सं ६१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्र थ २ वेष्टनों में है । १ स ४५७ तथा ४५६ से १ ८२ तक है । प्रति सुन्दर है ।

१०३८ प्रति सं० २ । पत्र सं ५६६ । ले काल–× । अपूर्ण । वे सं ६२ । क भण्डार ।

१०३९ प्रति स० ३ । पत्र सं ८१ से १७१ । ले काल–× । अपूर्ण । वे सं ६४२ । क भण्डार ।

१ ४० प्रति स० ४ । पत्र सं ४१६ । ले काल–आसोज बुदि ८ सं १९२१ । वे सं ६६६ । च भण्डार ।

१०४१ प्रति स० ५ । पत्र सं ११ । ल काल–× । अपूर्ण । वे सं ६७ । च भण्डार ।

विशेष—नेमीचंद बाकल्या वाऊ ने लिखा और सदासुखजी देदाजी ने लिखाया—यह ग्रन्थ में लिखा हुआ है ।

१०४२ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३४६ । ले० काल–X । वे० सं० १८२ । छ भण्डार ।

विशेष—"इस प्रकार मूलग्र थ के प्रसाद तै सदासुखदास डेडाका का अपने हस्त तै लिखि ग्र थ समाप्त किया ।" अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३ प्रति सं० ७ । पत्र स० २२१ । ले० काल–स० १९६३ कार्तिक बुदी ऽऽ । वे० स० १९८ । छ भण्डार ।

१०४४ प्रति स० ८ । पत्र स० ५३६ । ले० काल–स० १९५० वैशाख सुदी ६ । वे० स० । झ भण्डार ।

विशेष—इस ग्र थ की प्रतिलिपि स्वय सदासुखजी के हाथ मे लिखे हुये स० १९१९ के ग्र थ से सामोद मे प्रतिलिपि की गई है । महासुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०४५ रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र स० २९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–स० १९२० माघ सुदी ९ । ले० काल–X । वे० स० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०४६ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल–X । वे० स० ६२३ । क भण्डार ।

१०४७ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल–X । वे० स० ६२१ । क भण्डार ।

१०४८ रत्नकरण्डश्रावकाचार—सघी पन्नालाल । पत्र स० ४४ । आ० १०३/४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–स० १९३१ पौष बुदी ७ । ले० काल–स० १९५३ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ६१४ । क भण्डार ।

१०४९. प्रति स० २ । पत्र स० ४० । ले० काल–X । वे० स ६१४ । क भण्डार ।

१०५० प्रति स० ३ । पत्र स० २९ । ले० काल–X । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

१०५१ प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल–X । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

१०५२ रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा । पत्र स० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–स० १९५७ । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० ६१७ । क भण्डार ।

१०५३ प्रति स० २ । पत्र स० ७० । ले० काल–स० १९५३ । वे० स० ६१६ । क भण्डार ।

१०५४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल–X । वे० स० ६१३ । क भण्डार ।

१०५५. प्रति स० ४ । पत्र स० २८ से १५९ । ले० काल–X । अपूर्ण । वे० स० ६४० । ड भण्डार ।

१०५६ रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि । पत्र स० ४ । आ० ११½×४¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल–X । ले० काल–X । पूर्ण । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ —

सर्वज्ञ सर्ववागीश वीर मारमदायह ।
प्रणमामि महामोहशातये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

सारं मत्सर्वमारेषु वंद्य यद्विहितेष्वपि ।

अनेकांतमयं वंदे तदर्हद् वचनं सदा ।।२।।

अन्तिम—यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिमांपरा ।

सशुद्धचरणो मूर्त शिवकोटित्वमाप्नुयात् ।।

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरचिता रत्नमाला समाप्ता ।

१०५७ प्रति स० २ । पत्र सं ५ । ले काल–× । अपूर्ण । वे सं २११५ । ट भण्डार ।

१०५८. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स १० । मा १ ½×५, इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आचार शास्त्र । र काल–× । ले काल–स १८८१ । पूर्ण । वे सं ६४६ । क भण्डार ।

१०५९ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल–× । वे सं १८१ । ट भण्डार ।

१०६० रात्रि भोजन त्याग वर्णन······ । पत्र सं १६ । मा १२×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र काल–× ले काल–× । पूर्ण । वे सं ४८ । क भण्डार ।

१०६१ राधा जन्मोत्सव······ । पत्र सं १ । मा १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र काल–× । ले काल–× । पूर्ण । वे सं० ११११ । क भण्डार ।

१०६२. लिंगविभाग प्रकरण······ । पत्र सं २१ । मा १३×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र काल–× । ले काल–× । पूर्ण । वे सं ५७ । ख भण्डार ।

१०६३ लघुसामायिक पाठ······ । पत्र स २ । मा १२×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र काल–× । ले काल–सं १८१४ । पूर्ण । वे सं २ २१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

१८१४ मगसुर सुदी १५ सनै बुधी मर्ये नेमनाथ चैत्याले लिखितं श्री देवेन्द्रकीर्ति आचारज सीरोज के पट्ट स्वयं हस्ते ।

१०६४ प्रति स० २ । पत्र स १ । ले काल–× । वे सं १२४१ । क भण्डार ।

१०६५ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । ले काल–× । वे सं १२२ । क भण्डार ।

१०६६ लघुसामायिक······ । पत्र सं ६ । मा ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल–× । ले काल–× । पूर्ण । वे सं ६४ । क भण्डार ।

१०६७ लाटीसंहिता—राजमल्ल । पत्र सं ७ । मा ११×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र काल–सं १६४१ । ले काल–× । पूर्ण । वे सं ८८ ।

१०६८. प्रति स० २ । पत्र सं ७३ । ले काल–सं १८८७ वैशाख बुदी······ रविवार वे सं ६१२ । क भण्डार ।

१०६९ प्रति स० ३ । पत्र सं ६६ । ले काल–स १८६० मंगसिर बुदी ३ । वे सं ६६६ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा शभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१०७०. वज्रनाभि चक्रवर्त्ति की भावना—भूधरदास। पत्र स० २। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल—× पूर्ण। वे० स० ६६७। अ भण्डार।

विशेष—पार्श्वपुराण में से है।

१०७१. प्रति सं० २। पत्र स० ४। ले० काल—स० १८८८ पौष सुदी २। वे० सं० ६७२। च भण्डार।

१०७२ वनस्पतिसत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि। पत्र स० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वे० स० ८४१। अ भण्डार।

१०७३ वसुनंदिश्रावकाचार—आ० वसुनदि। पत्र स० ५६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय-श्रावक धर्म। र० काल—×। ले० काल—सं० १८६२ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० स० २०६। अ भण्डार।

विशेष—ग्रथ का नाम उपासकाध्ययन भी है। जयपुर मे श्री विरागदास वाकलीवाल ने प्रतिलिपि करायी। सस्कृत मे भाषान्तर दिया हुआ है।

१०७४. प्रति स० २। पत्र सं० ५ मे २३। ले० काल—स० १६११ पौष सुदी ६। अपूर्ण। वे० स० ८४८। अ भण्डार।

विशेष—सारगपुर नगर मे पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी।

१०७५ प्रति स० ३। पत्र स० ६३। ले० काल—स० १८७७ भादवा बुदी ११। वे० स० ६५२। क भण्डार।

विशेष—महात्मा शभूनाथ ने सवाई जयपुरमे प्रतिलिपि की थी। गाथाओ के नीचे सस्कृत टीका भी दी है।

१०७६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४४। ले० काल—×। वे० सं० ८७। ङ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं।

१०७७. प्रति स० ५। पत्र सं० ५१। ले० काल—×। वे० सं० ४५। च भण्डार।

१०७८. प्रति सं० ६। पत्र सं० २२। ले० काल—सं० १५६८ भादवा बुदी १२। वे० स० २६६। ञ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति— सवत् १५६८ वर्षे भादवा बुदी १२ गुरु दिने पुष्यनक्षत्रेअमृतसिद्धिनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मडलाचार्य धर्मकीर्त्ति द्वितीय मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषा मध्ये मडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्ति तत् शिष्य मुनि वीरनदिने इद शास्त्र लिखापित। प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ मे पार्श्वनाथ (सोनियो) के मदिर मे चढाया।

१०७९ वसुनदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल। पत्र स० २१८। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—आचार शास्त्र। र० काल—स० १६३० कार्तिक बुदी ७। ले० काल—स० १६३८ माह बुदी ७। पूर्ण। वे० स० ६५०। क भण्डार।

१०८० प्रति स० ७ । ले काल सं १६१ । वे सं ६५१ । क भण्डार ।

१०८१ वार्तासमूह ...... । पत्र सं० २५ से ६७ । आ ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स १२७ । छ भण्डार ।

१०८२ विद्वज्जनबोधक ...... । पत्र स २७ । आ १२½×८½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६७६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ४ अध्याय तक है ।

१०८३ प्रति स० ९ । पत्र सं १५२ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २ ४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । पत्र क्रम से नहीं है और कितने ही बीच के पत्र नहीं है । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

१०८४ विद्वज्जनबोधक भाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ८६ । आ १४×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–धर्म । र काल सं १६३६ माघ सुदी ५ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६७० । क भण्डार ।

१०८५ प्रति स० २ । पत्र सं ४४१ । ले काल सं १६४२ आसोज सुदी ४ । वे सं ६७७ । घ भण्डार ।

विशेष—आबूलाल साह के पुत्र तख्तमल ने अपनी माताजी के व्रतोद्यापन के उपलक्ष में ग्रन्थ मन्दिर दीवान अमरचन्दजी के में चढ़ाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयखण्ड के अन्त में लिखा है

१०८६ विद्वज्जनबोधकटीका ...... । पत्र सं० ४४ । आ ११½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड के पाचवें उल्लास तक है ।

१०८७ विवेकविलास ...... । पत्र सं १८ । आ १ ३½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र काल सं० १७७ फागुण सुदी । ले काल सं १८८८ चैत सुदी १ । वे स ८२ । म भण्डार ।

१०८८ वृहत्प्रतिक्रमण ...... । पत्र सं १६ । आ १ ×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २१४८ । ट भण्डार ।

१०८९ प्रति स० २ । ले काल × । वे सं २१५१ । ट भण्डार ।

१०९० प्रति स० ३ । ले काल × । वे सं २१७१ । ट भण्डार ।

१ ९१ वृहत्प्रतिक्रमण ...... । पत्र सं १६ । आ ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत प्राकृत । विषय–धर्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २ ३ । म भण्डार ।

१०९२ प्रति सं० २ । पत्र सं १४ । ले काल × । वे सं १२६ । म भण्डार ।

१०६३ वृहत्प्रतिक्रमण । पत्र स० ३१ । आ० १०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० २१२२ । ट भण्डार ।

१०६४ व्रतों के नाम ··· । पत्र स० ११ । आ० ६१/२×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० सं० ११६ । ञ भण्डार ।

१०६५ व्रतनामावली ··· । पत्र स० १२ । आ० ८३/४×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल स० १६०४ । पूर्ण । वे० स० २६५ । ख भण्डार ।

१०६६. व्रतसंख्या ··· । पत्र स० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ व्रतो एव ४१ मडल विधानो के नाम दिये हुये हैं ।

१०६७. व्रतसार । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल ×। ले०-काल ×। पूर्ण । वे० स० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल २२ पद्य हैं ।

१०६८. व्रतोद्यापनश्रावकाचार । पत्र स० ११३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ६३ । घ भण्डार ।

१०६६ व्रतोपवासवर्णन । पत्र स० ५७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० स० ३३८ । ञ भण्डार ।

विशेष—५७ से आगे के पत्र नही है ।

११०० व्रतोपवासवर्णन । पत्र स० ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–आचार शास्त्र । र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० स० ४७८ । ञ भण्डार ।

११०१ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४७६ । ञ भण्डार ।

११०२ षट्आवश्यक (लघुसामायिक)—महाचन्द्र । पत्र स० ३ । विषय–आचार शास्त्र । र० काल ×। ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वे० स० ३०३ । ख भण्डार ।

११०३ षट्आवश्यकविधान—पन्नालाल । पत्र स० १४ । आ० १४×७३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र० काल स० १६३२ । ले० काल स० १६३४ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ७४८ । ङ भण्डार ।

११०४ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १६३२ । वे० स० ७४५ । ङ भण्डार ।

११०५ प्रति स० ३ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ४७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जन बोधक के तृतीय व पञ्चम उल्लास का हिन्दी अनुवाद है ।

११०६ षट्कर्मोपदेशरत्नमाला (छक्कम्मोवएस)—महाकवि अमरकीर्त्ति । पत्र सं० १ से ७१ । आ० १ ¼×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-आचार शास्त्र । र० काल सं० १२४७ । ले० काल सं० १६२२ चैत्र सुदी ११ । वे० सं० ११६ । घ भण्डार ।

विशेष—नागपुर नगरमें खण्डेलवालान्वय पाटणीगोत्रवाल श्रीमतीहरषमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी थी।

११०७ षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा — पांडे लालचन्द । पत्र संख्या १२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १८४६ शाके १७ ५ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ४२१ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी देवकरण ने महात्मा सूरा से जयपुर में प्रतिलिपि करवायी ।

११०८ प्रति स० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी ६ । वे० सं० ६७ । घ भण्डार।

विशेष—पुस्तक पं० सदासुख दिल्लीवालों की है।

११०९ षट्सहननवर्णन—मकरन्द पद्मावति पुरवाल । पत्र सं० ८ । आ० १ ¾×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १७८६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । क भण्डार ।

१११० षट्मतिवर्णन........। पत्र सं० २२ से २६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

११११ षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति—प० शिवजित्कृत । पत्र स० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा प्राकृत संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ ४ । ख भण्डार ।

१११२. षोडषकारणभावना—प० सदासुख । पत्र सं० ८ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा में से है।

१११३ षोडशकारणभावना जयमाल— नथमल । पत्र सं० २८ । आ० ११¼×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल सं० १६२५ सावन सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७११ । क भण्डार ।

१११४ प्रति स० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१११५ प्रति स० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । ङ भण्डार ।

१११६ प्रति स० ४ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५ । ङ भण्डार ।

१११७ षोडशकारणभावना........। पत्र सं० ६८ । आ० ११¾×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल । ले० काल सं० १६६२ कार्त्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । ङ भण्डार ।

विशेष—रामप्रताप व्यास ने प्रतिलिपि की थी।

१११८ प्रति स० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ७५४ । ङ भण्डार ।

११११६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ७५५ । ङ भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

विशेष—३० मे आगे पत्र नही है ।

११२१ षोडपकारणभावना··· । पत्र स० १७ । आ० १२$\frac{3}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—सस्कृत में सकेत भी दिये हैं ।

११२२ शीलनववाड़ । पत्र स० १ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । रचना-काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२६ । अ भण्डार ।

११२३ श्राद्धपडिकम्मणसूत्र··· ··· । पत्र सं० ६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—प० जसवन्त के पौत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टव्वा टीका सहित है ।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ५० । आ० ११$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १६३० माघ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५ प्रति सं० २ । पत्र स० ७५ । ले० काल × । वे० स० ६६७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन ' । पत्र स० १० । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–श्रावक धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च भण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण······ । पत्र स० २५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १८२३ आसोज बुदी ११ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है । हुक्मीजीवण ने अहिपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११२६ श्रावकप्रतिक्रमण । पत्र स० १५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६ । ख भण्डार ।

११३० श्रावकप्रायश्चित—वीरसेन । पत्र स० ७ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १६३४ । पूर्ण । वे० स० १६० ।

विशेष—प० पन्नालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

११३१ श्रावकाचार—अमितिगति। पत्र सं १७। आ १०×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६४। क भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टीका भी है। ग्रन्थ का नाम उपासकाचार भी है।

११३२. प्रति स० २। पत्र सं ३६। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ४४। घ भण्डार।

११३३ प्रति स० ३। पत्र सं ८३। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १ ८। छ भण्डार।

११३४ श्रावकाचार—उमास्वामी। पत्र सं २१। आ ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २८१। अ भण्डार।

११३५ प्रति स० २। पत्र सं १७। ले काल सं १८२९ माघ सुदी २। वे सं ८६। अ भण्डार।

११३६ श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य। पत्र सं २१। आ १ ३/४×४ १/२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १५६२ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे सं ११८। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति

संवत् १५६२ वर्षे वैशाख सुदी ४ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भ श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सा मोने सं परवत तस्य भार्या रोहातत्पुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे। तत्पुत्र मतिदास तस्य भार्या अमरी तृतीय पुत्र अर्जा तस्य भार्या बोरकी तत्पुत्र मवमस तृतीय सीवा सा नरसिंह महादास एतवांमध्ये इदंशास्त्रं लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं श्रावकाचार। अर्जिका पदमसिरियोग्य बाई मर्गिम घटापितं।

११३७ प्रति स० २। पत्र सं ११। ले काल सं० १५२६ भादवा सुदी १। वे सं ५ १। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १५२९ वर्षे भाद्रपद १ पक्षे श्री मूलसंघे भ श्री जिनचन्द्र भ नरसिंह खंडेलवालान्वये सं भासन भार्या जैमी पुत्र हाम्य लिखापितं।

११३८ श्रावकाचार—पद्मनन्दि। पत्र सं २ से २६। आ ११ १/२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २१ ७।

विशेष—२६ से आगे भी पत्र नहीं है।

११३९ श्रावकाचार—पूज्यपाद। पत्र सं ६। आ ६१/२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १८५४ वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे सं १ २। घ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम उपासकाचार तथा उपासकाध्ययन भी है।

११४० प्रति सं० २। पत्र सं ११। ले काल सं १९८ पौष सुदी १५। वे सं ८६। ड भण्डार।

११४१. प्रति स० ३। पत्र स० ५। ले० काल सं० १८८४ आषाढ बुदी २। वे० सं० ४३। च भण्डार

११४२. प्रति स० ४। पत्र स० ७। ले० काल सं० १८०४। भादवा सुदी ६। वे० स० १०२। छ भण्डार।

११४३. प्रति सं० ५। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० २१५१। ट भण्डार।

११४४. प्रति सं० ६। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० २१५८। ट भण्डार।

११४५ श्रावकाचार—सकलकीर्त्ति। पत्र स० ६६। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०८८। अ भण्डार।

११४६. प्रति सं० २। पत्र स० १२३। ले० काल स० १८५५। वे० स० ६६३। क भण्डार।

११४७ श्रावकाचारभाषा—प० भागचन्द। पत्र स० १८६। आ० १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–आचार शास्त्र। र० काल सं० १९२२ आषाढ सुदी ८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २८।

विशेष—अमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है। अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है।

११४८. श्रावकाचार ·····। पत्र संख्या १ से २१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय-आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१८२। ट भण्डार।

विशेष—इससे आगे के पत्र नही है।

११४९. श्रावकाचार····। पत्र स० ७। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–आचारशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०८। छ भण्डार।

विशेष—६० गाथाये है।

११५०. श्रावकाचारभाषा ····। पत्र स० ५२ से १३१। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आचार शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०६४। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

११५१ प्रति सं० २। पत्र स० ३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६६६। क भण्डार।

११५२ प्रति सं० ३। पत्र स० १११ से १७४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७०६। ङ भण्डार।

११५३. प्रति स० ४। पत्र स० ११६। ले० काल स० १९९४ भादवा बुदी १। पूर्ण। वे० स० ७१०। ङ भण्डार।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है। सवत् १५२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह ग्रन्थ जिहानाबाद जैसिंहपुरा मे लिखा गया था। उस प्रति से यह प्रतिलिपि की गयी थी।

११५४. प्रति सं० ५। पत्र स० १०८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६८७। च भण्डार।

११५५ भुवज्ञानदर्शन ...। पत्र सं० ८। आ० ११३×७३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७ १। क भण्डार।

११५६ प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ७ २। क भण्डार।

११५७ समरस्रोकीगीता ......। पत्र सं० २। आ० ६×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७४। ट भण्डार।

११५८. समकितढाल—भासकरण। पत्र सं० १। आ० ६३×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १८१६। पूर्ण। वे० सं० २१२१। अ भण्डार।

११५६. समुद्घातभेद ......। पत्र सं० ४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७८८। क भण्डार।

११६० सम्मेदशिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त। पत्र सं० ८१। आ० ११×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। र० काल सं० १६४५। ले० काल सं० १८८ । पूर्ण। वे० सं० २८२। ख भण्डार।

११६१ प्रति सं० २। पत्र सं० १४७। ले० काल ×। वे० सं० ७६५। क भण्डार।

११६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१। च भण्डार।

११६३ सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द। पत्र सं० ६५। आ० १३×५। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–धर्म। र० काल सं० १८४२ फागुण सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६। क भण्डार।

विशेष—भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाड़ी में यह ग्रन्थ रचना की थी।

११६४ सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखलाल। पत्र सं० १ ६। आ० ११×६३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६४१ मासोज सुदी १ । पूर्ण। वे० सं० १ ११। ख भण्डार।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी दोहा—

काल वेद ऋषिगये विक्रमार्क शुभ काल।

अश्वनि सित दशमी सुगुरु ग्रन्थ समापत ठाल॥

लोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है।

११६५ प्रति सं० २। पत्र सं० १ २। ले० काल सं० १८८४ चैत सुदी २। वे० सं० ७८। ग भण्डार।

११६६ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८८७ चैत सुदी १५। वे० सं० ७६६। ङ भण्डार।

विशेष—स्योजीरामजी भांवसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की।

११६७ प्रति सं० ४। पत्र सं० १४२। ले० काल सं० १६११ पौष सुदी १५। वे० सं० २२। झ भण्डार।

११६८ सम्मेदशिखरविलास—केशरीसिंह। पत्र सं० १। आ० ११३×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल २ वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२७। क भण्डार।

११६६ **सम्मेदशिखर विलास—देवाब्रह्म** । पत्र स० ४ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१ । ज भण्डार ।

११७०. **संसारस्वरूप वर्णन** । पत्र स० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । व्य भण्डार ।

११७१ **सागारधर्मामृत—प० आशाधर** । पत्र स० १४३ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–श्रावको के आचार धर्म का वर्णन । र० काल स० १२९६ । ले० काल स० १७९८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा सवाई जयसिहजी के शासनकाल मे आमेर मे महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. **प्रति सं० २** । पत्र स० २०६ । ले० काल स० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० स० ७७५ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ वाले ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

११७३ **प्रति सं० ३** । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. **प्रति स० ४** । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५ **प्रति स० ५** । पत्र स० ५७ । ले० काल × । वे० स० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—४ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६. **प्रति स० ६** । पत्र स० १५९ । ले० काल स० १८९१ भादवा बुदी ५ । वे० स० ७८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर से नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७ **प्रति स० ७** । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १९२८ फागुण सुदी १० । वे० स० १४९ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । रचियता एव लेखक दोनो की प्रशस्ति है ।

११७८ **प्रति स० ८** । पत्र स० १४० । ले० काल × । वे० स० १ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव शुद्ध है ।

११७९ **प्रति सं० ९** । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १५९५ फागुण सुदी २ । वे० सं० १८ । स्व भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे पाडे डीडा तेन इदं धर्मामृतनामोपाध्ययन आचार्य नेमिचन्द्राय दत्तं । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तत् शिष्य म० धर्मचन्द्राम्नाये ।

११५५ श्रुतज्ञानवर्णन " " । पत्र सं ८ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे सं ७ १ । क भण्डार ।

११५६ प्रति स० २ । पत्र सं ८ । ले काल × । वे० सं ७ २ । क भण्डार ।

११५७ समरसोकीगीता""""। पत्र सं० २ । आ ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे सं १७४० । ट भण्डार ।

११५८. समकितरास—आसकरण । पत्र सं० १ । आ ६१/२×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल × । ले काल सं १८१५ । पूर्ण । वे सं० २१२६ । अ भण्डार ।

११५९. समुद्घातभेद" "" । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स ७८८ । क भण्डार ।

११६० सम्मेदशिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र सं ८१ । आ ११×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । र काल स १६४५ । ले काल सं १८८ । पूर्ण । वे सं० २८२ । अ भण्डार ।

११६१ प्रति सं० २ । पत्र सं १४७ । ले काल × । वे० सं ७६५ । ड भण्डार ।

११६२. प्रति स० ३ । पत्र सं ४ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १७५ । च भण्डार ।

११६३ सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं ६५ । आ ११×५ । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । र काल सं १८४२ फागुण सुदी ५ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६६ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाड़ी में यह ग्रन्थ रचना की थी ।

११६४ सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनसुखलाल । पत्र सं० १ ६ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले काल सं १६४१ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे सं १ ५६ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी दोहा—

बाण वेद खगिगये विक्रमार्क तुम जान ।
अश्वनि सित दशमी सुद्युम ग्रन्थ समापत ठान ॥

लोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है ।

११६५. प्रति स० २ । पत्र सं १०२ । ले काल सं १८८४ चैत सुदी २ । वे सं ७८ । ग भण्डार ।

११६६ प्रति स० ३ । पत्र स ६२ । ले काल सं १८८७ चैत सुदी १५ । वे सं ७६९ । क भण्डार ।

विशेष—स्योजीरामजी भांवसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११६७ प्रति स० ४ । पत्र सं १४२ । ले काल सं १६११ पौष सुदी १५ । वे सं २२ । झ भण्डार ।

११६८. सम्मेदशिखरविलास—केशरीसिंह । पत्र सं १ । आ १११/२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र काल २ वी शताब्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७६७ । क भण्डार ।

११६६ **सम्मेदशिखर विलास—देवाब्रह्म** । पत्र स० ४ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१ । ज भण्डार ।

११७०. **संसारस्वरूप वर्णन** । पत्र स० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । ञ भण्डार ।

११७१ **सागारधर्मामृत—प० आशाधर** । पत्र स० १४३ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–श्रावको के आचार धर्म का वर्णन । र० काल सं० १२९६ । ले० काल स० १७९८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ सस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा सवाई जयसिहजी के शासनकाल मे आमेर मे महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. **प्रति सं० २** । पत्र स० २०६ । ले० काल स० १८८१ फागुरा सुदी १ । वे० स० ७७५ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ वाले ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

११७३. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ५९ । ले० काल × । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. **प्रति स० ४** । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

११७५ **प्रति स० ५** । पत्र स० ५७ । ले० काल × । वे० स० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—४ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६. **प्रति स० ६** । पत्र स० १५९ । ले० काल स० १८९१ भादवा बुदी ५ । वे० स० ७८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सागानेर से नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७ **प्रति स० ७** । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १६२८ फागुरा सुदी १० । वे० स० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । रचियता एव लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८ **प्रति स० ८** । पत्र स० १४० । ले० काल × । वे० स० १ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव शुद्ध है ।

११७९ **प्रति स० ९** । पत्र स० ६९ । ले० काल स० १५९५ फागुरा सुदी २ । वे० स० १८ । ञ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे पाडे डीडा तेन इद धर्मामृतनामोपाध्ययन आचार्य नेमिचन्द्राय दत्त । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तत् शिष्य म० धर्मचन्द्राम्नाये ।

११८० प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८ क । ख भण्डार ।

११८१ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४१ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । ख भण्डार ।

विशेष—श्लोपज्ञ टीका सहित है ।

११८२ प्रति स० १२ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४६० । ख भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र प्रति प्राचीन है ।

११८३ प्रति स० १३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १६६४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ३०० । ग भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति— संवत् १६६४ वर्षे फाल्गुन सुदी १२ रविवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनंदि तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मण्डलाचार्य श्री नेमिचन्द्रदेवास्तैरिदं धर्मामृतनामाशास्त्रोपासकाध्ययनं कर्मक्षयनिमित्तं लिखापितं ज्ञानावरणादिकर्मक्षयार्थं च ।

११८४ प्रति सं० १४ । पत्र स० ८० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ १ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

११८५ प्रति सं० १५ । पत्र सं ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६१ । ट भण्डार ।

११८६ प्रति स० १६ । पत्र सं० १ से ७१ । ले० काल सं० १६६४ भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वे० संख्या २११० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । मिलक प्रशस्ति पूर्ण है ।

११८७ सातव्यसनसमुच्चय ...। पत्र सं० १ । आ० १ ×१ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७८० । पूर्ण । वे० सं० १८७१ ।

विशेष—रूपचन्द्र की दी हुई है जिसके साठ पद्य है ।

११८८ साधुदिनचर्या...। पत्र सं० ६ । आ० ११×४१ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ ।

विशेष—श्रीतपागच्छे श्री विजयदानसूरि शिष्यराजेन ऋषि रूपा लिखितं ।

११८९ सामायिकपाठ—ब्रह्ममुनि । पत्र सं० १२ । आ० ८×२ इंच । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११ १ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीब्रह्ममुनिविरचितं सामायिकपाठ संपूर्णं ।

११९० सामायिकपाठ । पत्र सं० २४ । आ० ८१×६ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ ६६ । ख भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टीका भी दी हुई है ।

११६२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७७६ । क भण्डार ।

११६३ सामायिकपाठ । पत्र सं० ५० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ७७७ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

११६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १०११ । अ भण्डार ।

११६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७७८ । क भण्डार ।

११६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२० कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य विजयकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६६. सामायिक पाठ । पत्र सं० २५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे सं० ८१४ । ङ भण्डार ।

१२०० प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० ८१५ । ङ भण्डार ।

१२०१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—पत्रो को चूहो ने खालिया है ।

१२०२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ । च भण्डार ।

१२०३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१३ । ङ भण्डार ।

१२०४ सामायिकपाठ (लघु) । पत्र सं० १ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । च भण्डार ।

१२०५ प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । च भण्डार ।

१२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ क । च भण्डार ।

१२०७ सामायिकपाठभाषा—बुध महाचन्द । पत्र सं० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०८ । च भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल कृत आलोचना पाठ भी है ।

१२०८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६५४ सावन बुदी ३ । वे० सं० १६४१ । ट भण्डार ।

१२०६. सामायिकपाठभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ८२। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६१७। पूर्ण। वे० सं० ७८। अ भण्डार।

१२१० प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६२६। वे० सं० ७८१। क भण्डार।

१२११ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ७८२। ख भण्डार।

१२१२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ७८३। क भण्डार।

१२१३ प्रति सं० ५। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६७१। वे० सं० ८१७। ङ भण्डार।

विशेष—श्री केशरलाल गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१२१४ प्रति सं० ६। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८७४ फागुण सुदी ६। वे० सं० १८१। ज भण्डार।

१२१५ प्रति सं० ७। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १६११ आसोज सुदी ८। वे० सं० २६। म भण्डार।

१२१६ सामायिकपाठभाषा—म० श्री तिलोकचन्द। पत्र सं० १४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १८६२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१। घ भण्डार।

१२१७ प्रति सं० २। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ सावन सुदी १३। वे० सं० ७१३। ङ भण्डार।

१२१८ सामायिकपाठ भाषा……। पत्र सं० ४५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १२८। ग्रु भण्डार।

विशेष—जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में यती नैनसागर तरामचन्द्र बांच ने प्रतिलिपि की थी।

१२१६. प्रति सं० २। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १७४ वैशाख सुदी ७। वे० सं० ७६। घ भण्डार।

विशेष—महात्मा सांवलदास वगरु वासी ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत अथवा प्राकृत शब्दों का अर्थ दिया हुआ है।

१२२० सामायिकपाठ भाषा……। पत्र सं० २ से ९। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१२। क भण्डार।

१२२१ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ८१६। ख भण्डार।

१२२२ प्रति सं० ३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४८६। ङ भण्डार।

१२२३. सामायिकपाठभाषा……। पत्र सं० १७। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (ढूढारी) र० काल ×। ले० काल ×। ले० काल सं० १७६१ मंगसिर सुदी ८। वे० सं० ७११। घ भण्डार।

१२२४ **सारसमुच्चय—कुलभद्र** । पत्र स० १५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल स० १६०७ पौष बुदी ४ । वे० स० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द के शिष्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२२५ **सावयधम्म दोहा—मुनि रामसिंह** । पत्र स० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १४१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

१२२६. **सिद्धों का स्वरूप** ·· । पत्र स० ३८ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५८ । ड भण्डार ।

१२२७. **सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—टेकचन्द** । पत्र स० ४०५ । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १८३८ सावण सुदी ११ । ले० काल स० १८६१ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ७४७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

१२२८. **प्रति स० २** । पत्र स० ८० । ले० काल × । वे० स० ६६४ । अ भण्डार ।

१२२९ **प्रति स० ३** । पत्र सं० ६११ । ले० काल स० १९४४ । वे० स० ८११ । क भण्डार ।

१२३०. **प्रति स० ४** । पत्र स० ३६१ । ले० काल स० १८९३ । वे० स० ९२ । ग भण्डार ।

विशेष—श्योलाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१ **प्रति स० ५** । पत्र स० १०५ से १२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२७ । घ भण्डार ।

१२३२ **प्रति सं० ६** । पत्र स० १९९ । ले० काल × । वे० स० १२८ । घ भण्डार ।

१२३३ **प्रति स० ७** । पत्र स० ५४५ । ले० काल स० १८९८ आसोज सुदी ६ । वे० स० ८६८ । ड भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है ।

१२३४ **प्रति स० ८** । पत्र स० ५०० । ले० काल स० १९६० कार्त्तिक बुदी ५ । वे० स० ८६९ । ड भण्डार ।

१२३५. **प्रति स० ९** । पत्र स० २०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७२२ । च भण्डार ।

१२३६ **प्रति स० १०** । पत्र स० ४३० । ले० काल स० १९४९ चैत बुदी ८ । वे० स० ११ । ज भण्डार ।

१२३७ **प्रति स० ११** । पत्र स० ५३५ । ले० काल स० १८३९ फागुण बुदी ८ । वे० स० ८९ । भ्ह भण्डार ।

१२३८ **सुदृष्टितरंगिणीभाषा** । पत्र स० ५१ से ५७ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८६७ । ड भण्डार ।

१२०९. सामायिकपाठभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ८२। आ० १२¾×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १९३७। पूर्ण। वे० सं० ७८०। क भण्डार।

१२१० प्रति सं० २। पत्र सं० ८८। ले० काल सं० १९५५। वे० सं० ७८१। क भण्डार।

१२११ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ७८२। क भण्डार।

१२१२ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ७८३। क भण्डार।

१२१३ प्रति सं० । पत्र सं० २६। ले० काल सं० १९७१। वे० सं० ८१७। क भण्डार।

विशेष—श्री केसरलाल गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

१२१४ प्रति सं० ६। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८७४ फागुण सुदी ६। वे० सं० १८३। ज भण्डार।

१२१५ प्रति सं० ७। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १९११ असोज सुदी ८। वे० सं० ३६। म भण्डार।

१२१६ सामायिकपाठभाषा—म० श्री तिलोकचन्द। पत्र सं० ९८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल सं० १८९२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१ । ख भण्डार।

१२१७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८८१ सावन सुदी १२। वे० सं० ७११। ख भण्डार।

१२१८ सामायिकपाठ भाषा ....। पत्र सं० ४५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० १२८। क भण्डार।

विशेष—जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में यती नैणसागर ... ने प्रतिलिपि की थी।

१२१९ प्रति सं० २। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १७४ वैशाख सुदी ७। वे० सं० ७ १। ख भण्डार।

विशेष—महात्मा सांवलदास बगरू वाले ने प्रतिलिपि की थी। संस्कृत अथवा प्राकृत शब्दों का अर्थ दिया हुआ है।

१२२० सामायिकपाठ भाषा ....। पत्र सं० २ से ३। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१२। क भण्डार।

१२२१ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ८१६। क भण्डार।

१२२२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४८६। क भण्डार।

१२२३. सामायिकपाठभाषा ....। पत्र सं० १७। आ० ६×३½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (ढूंढारी)। र० काल ×। ले० काल ×। ले० काल सं० १७८१ मंगसिर सुदी ८। वे० सं० ७११। ख भण्डार।

विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२५० अध्यात्मतरगिणी—सोमदेव। पत्र स० १० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २० । क भण्डार ।

१२५१. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३७ भादवा बुदी ६ । वे० स० ४ । क भण्डार ।

विशेष— ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनो ओर सस्कृत मे टीका लिखी हुई है ।

१२५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३८ आषाढ बुदी १० । वे० स० ८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । विबुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द छाबड़ा । पत्र स० ७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । र० काल १४वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७ । क भण्डार ।

१२५४ अध्यात्मबत्तीसी—बनारसीदास । पत्र स० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल १७वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६६ । अ भण्डार ।

१२५५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सूरत । पत्र स० १५ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल १७वी शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६ । ङ भण्डार ।

१२५६. अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० १० से २७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । १ से ६ तथा २४–२५वा पत्र नही है ।

१२५७. प्रति स० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ७ । क भण्डार ।

१२५८ अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र स० ४३० । आ० १२×७¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १८६७ भादवा सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३ । क भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुद है ।

१२५९. प्रति स० २ । पत्र स० १७ से २४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४ । क भण्डार ।

१२६०. प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल × । । वे० स० १५ । क भण्डार ।

१२६१ प्रति स० ४ । पत्र स० १६७ । ले० काल × । वे० स० १६ । क भण्डार ।

१२६२ प्रति स० ५ । पत्र सं० ३३४ । ले० काल स० १६२६ । वे० स० १ । क भण्डार ।

१२६३ प्रति स० ६ । पत्र सं० ४७१ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० २ । क भण्डार ।

१२३६. सोनगिरपच्चीसी—भागीरथ। पत्र सं० ८। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४। ले० काल ×। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

१२४०. सोलहकारणभावनावर्णन—पं० सदासुख। पत्र सं० ४६। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२६। च भण्डार।

१२४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५१। ले० काल ×। वे० सं० १८८। छ भण्डार।

१२४२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १६२७ सावण सुदी ११। वे० सं० १८८। छ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में मनोहीलाल पांड्या ने कामी के मन्दिर म प्रतिलिपि की थी।

१२४३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११ से ६१। ले० काल सं० १६२८ माह सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ११। छ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र नहीं हैं। सुन्दरलाल पांड्या ने चाटसू में प्रतिलिपि की थी।

१२४४. सोलहकारणभावना एवं दशलक्षण धर्म वर्णन—पं० सदासुख। पत्र सं० ११४। साइज ११½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६४१ मंगसिर सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ६४। ग भण्डार।

१२४५. स्थापनानिर्णय……। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। ङ भण्डार।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथम काण्ड का अष्टम उल्लास है। हिन्दी टीका सहित है।

१२४६. स्वाध्यायपाठ……। पत्र सं० २। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३। ज भण्डार।

१२४७. स्वाध्यायपाठभाषा……। पत्र सं० ७। आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४२। क भण्डार।

१२४८. सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला……। पत्र सं० १२। आ० ११×१½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१। ख भण्डार।

१२४६. हुण्डावसर्पिणीकालदोष—माणकचन्द। पत्र सं० ६। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल ×। ले० काल सं० १६१७। पूर्ण। वे० सं० ८५६। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२५० अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव। पत्र सं० १०। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०। क भण्डार।

१२५१ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९३७ भादवा बुदी ६। वे० सं० ४। क भण्डार।

विशेष—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनो ओर संस्कृत मे टीका लिखी हुई है।

१२५२ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९३८ आषाढ बुदी १०। वे० सं० ८२। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। विबुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ७। आ० ९×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। र० काल १४वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७। क भण्डार।

१२५४. अध्यात्मबत्तीसी—बनारसीदास। पत्र सं० २। आ० ९×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३९६। अ भण्डार।

१२५५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सूरत। पत्र सं० १५। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। ङ भण्डार।

१२५६. अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र सं० १० से २७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय—अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १०२३। अ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। १ से ९ तथा २४–२५वा पत्र नही है।

१२५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १९४३। वे० सं० ७। क भण्डार।

१२५८. अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं० ४३०। आ० १२×७¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १८६७ भादवा सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३। क भण्डार।

विशेष—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुद है।

१२५९ प्रति सं० २। पत्र सं० १७ से २४६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४। क भण्डार।

१२६० प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल ×।। वे० सं० १५। क भण्डार।

१२६१ प्रति सं० ४। पत्र सं० १६७। ले० काल ×। वे० सं० १६। क भण्डार।

१२६२ प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३४। ले० काल सं० १९२९। वे० सं० १। क भण्डार।

१२६३ प्रति सं० ६। पत्र सं० ४५१। ले० काल सं० १९४३। वे० सं० २। क भण्डार।

१२६४ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६२ । ले० काल × । वे० सं० ९ । घ भण्डार ।

१२६५ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८१६ आसोज सुदी १५ । वे० सं० १८ । ड भण्डार ।

विशेष—८१ पत्र प्राचीन प्रति है । ८८ से १२३ पत्र फिर लिखाये गये हैं तथा १२४ से १६३ तक के पत्र किसी अन्य प्रति के हैं ।

१२६६ प्रति सं० ९ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १८२१ आषाढ सुदी १४ । वे० सं० ३१ । ड भण्डार ।

१२६७ प्रति सं० १० । पत्र सं० १६७ । ले० काल × । वे० सं० ५८ । घ भण्डार ।

१२६८ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १८८ सावन सुदी १ । वे० सं० १८ । छ भण्डार ।

१२६९. आत्मध्यान—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–आत्मचिंतन । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२७१ । क भण्डार ।

१२७० आत्मप्रबोध—कुमारकवि । पत्र सं० ११ । आ० १ ¾×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । क भण्डार ।

१२७१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १८ (क) क भण्डार ।

१२७२. आत्मसंबोधनकाव्य— । पत्र सं० ७७ । आ० १ ×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५४ । क भण्डार ।

१२७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२ । ङ भण्डार ।

१२७४ आत्मसंबोधनकाव्य—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २ से २६ । आ० १ ×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९८७ । क भण्डार ।

१२७५ आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ८८ । आ० ११¾×५¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १७७४ फागुन सुदी । वे० सं० १६ । घ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में दयाराम लक्ष्मीराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१२७६ आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२ । आ० १ ×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२१२ । पूर्ण । जीर्ण । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— .... वर्षे .... मासे........

श्रीनमिनाथचैत्यालये । श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्राम्नाये । लिखितं ग्याणि (पी) श्री गैया तत्पुत्र मदन लिखितं ।

१२७७ प्रति सं० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १५९४ आषाढ बुदी ८ । वे० सं० २९६ । अ भण्डार ।

१२७८ प्रति सं० ३ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८९० सावण सुदी ४ । वे० स० ३१५ । अ भण्डार ।

१२७९ प्रति स० ४ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव प्राचीन है ।

१२८० प्रति स० ५ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २७० । अ भण्डार ।

१२८१ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० ७९२ । अ भण्डार ।

१२८२ प्रति सं० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० ७९३ । अ भण्डार ।

१२८३ प्रति स० ८ । पत्र स० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८६ । अ भण्डार ।

१२८४ प्रति स० ९ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १९४० । वे० स० ४७ । क भण्डार ।

१२८५. प्रति सं० १० । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८८८ । वे० स० ४९ । क भण्डार ।

१२८६ प्रति स० ११ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० १५ । क भण्डार ।

१२८७ प्रति स० १२ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १८७२ चैत सुदी ८ । वे० स० ५३ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले सस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है ।

१२८८ प्रति स० १३ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १७३० भादवा सुदी १२ । वे० स० ५४ । ङ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२८९ प्रति स० १४ । पत्र स० ५९ । ले० काल स० १६७० फागुन सुदी २ । वे० स० २६ । च भण्डार ।

विशेष—रुहितगपुर निवासी चौधरी सोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९० प्रति स० १५ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १९९५ मगसिर सुदी ५ । वे० स० २२० । ञ भण्डार ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१ आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र स० ५७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८८२ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २७ । च भण्डार ।

१२९२ प्रति स० २ । पत्र स० १०३ । ले० काल स० १९०१ । वे० स० ४८ । क भण्डार ।

१२९३. प्रति स० ३ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १६८५ मगसिर सुदी १४ । वे० स० ९३ । छ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगर में प्रतिलिपि हुई।

१२६४ प्रति स० ४। पत्र सं ४२। ले काल सं १८१२ बसाख बुदी ६। वे सं ५ । अ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई।

१२६५ प्रति स० ८। पत्र सं ११ । ले काल सं १६११ आषाढ बुदी १। वे सं ७१।

विशेष—साह तिहुरण मग्रवाल गर्ग गोत्रीय ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी।

१२६६ आत्मानुशासनभाषा—प० टोडरमल। पत्र सं ८७। आ १४×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य) विषय–अध्यात्म। र काल ×। ले काल सं १८६ । पूर्ण। वे सं ३७१। अ भण्डार।

१२६७ प्रति स० ४। पत्र स १८६। ले काल सं १६ ८। वे सं ३६६। अ भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

१२६८ प्रति स ३। पत्र सं १४८। ले० काल ×। वे सं ३६८। अ भण्डार।

१२६९ प्रति स० ४। पत्र सं १२६। ले काल सं १६६१। वे सं ४१४। अ भण्डार।

१३०० प्रति स० ५। पत्र सं २१६। ले काल स १६३ । वे सं ५ । क भण्डार।

विशेष—प्रभाचन्द्राचार्य कृत संस्कृत टीका भी है।

१३०१ प्रति स० ६। पत्र सं १ ९। ले काल सं १६४ । वे सं ६१। क भण्डार।

१३०२ प्रति स० ७। पत्र सं ११८। ले काल सं १८६६ कार्तिक सुदी ५। वे सं ५। घ भण्डार।

१३०३ प्रति स० ८। पत्र सं ७। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६६। ङ भण्डार।

१३०४ प्रति सं० ९। पत्र सं ८६ से १ ९। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६६। ङ भण्डार।

१३०५ प्रति स० १०। पत्र स १८। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६७। ङ भण्डार।

१३०६ प्रति स० ११। पत्र सं १६१। ले काल सं १६३१ ज्येष्ठ बुदी ८। वे सं ६८। ङ भण्डार।

विशेष—प्रति संशोधित है।

१३०७ प्रति स० १२। पत्र सं ६७। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६६। ङ भण्डार।

१३०८ प्रति स० १३। पत्र सं ६१ से २६५। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ९ । ङ भण्डार।

१३०९ प्रति स० १४। पत्र सं ७१ से १८६। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ५१३। च भण्डार।

१३१० प्रति सं० १५। पत्र सं ६६ से २४१। ले काल सं १६२४ कार्तिक सुदी ३। अपूर्ण। वे सं ५१४। च भण्डार।

१३११ प्रति स० १६। पत्र सं ८। ले काल ×। अपूर्ण। वे स ५१५। च भण्डार।

१३१२ प्रति स० १७। पत्र सं ६७। ले काल सं १८५४ आषाढ सुदी ४। वे सं २२२। ज भण्डार।

विशेष—रायचन्द साहवाढ ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१३१३ प्रति स० १८। पत्र सं० १४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१२४। ट भण्डार।

विशेष—१४ से आगे पत्र नही हैं।

१३१४. आध्यात्मिकगाथा—भ० लक्ष्मीचन्द। पत्र स० ६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२८। अ भण्डार।

१३१५. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्त्तिकेय। पत्र सं० ७४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १६०४। पूर्ण। वे० स० २६१। अ भण्डार।

१३१६ प्रति सं० २। पत्र स० ३६। ले० काल ×। वे० स० ६२८। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं। १८६ गाथायें हैं।

१३१७ प्रति स० ३। पत्र स० ३३। ले० काल ×। वे० स० ६१४। अ भण्डार।

विशेष—२८३ गाथाये हैं।

१३१८ प्रति सं० ४। पत्र स० ६०। ले० काल ×। वे० स० ८४४। क भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये है।

१३१९ प्रति स० ५। पत्र स० ४८। ले० काल स० १८८८। वे० स० ८४५। क भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द है।

१३२० प्रति स० ६। पत्र स० २०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३१। ख भण्डार।

१३२१ प्रति सं० ७। पत्र स० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ११४। ङ भण्डार।

१३२२. प्रति स० ८। पत्र स० ३७। ले० काल स० १६४३ सावण सुदी ४। वे० स० ११६। ङ भण्डार।

१३२३ प्रति स० ९। पत्र स० २८ से ७५। ले० काल स० १८८६। अपूर्ण। वे० स० ११७। ङ भण्डार।

१३२४. प्रति स० १०। पत्र स० ५०। ले० काल स० १८२५ पौष बुदी १०। वे० स० ११९। ङ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी है। मुनि रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१३२५ प्रति स० ११। पत्र स० २८। ले० काल स० १८३६। वे० सं० ४३७। च भण्डार।

१३२६ प्रति स० १२। पत्र स० २३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४३८। च भण्डार।

१३२७ प्रति स० १२। पत्र स० ३६। ले० काल स० १८६६ सावण सुदी ९। वे० स० ४३९। च भण्डार।

१३२८ प्रति स० १३। पत्र स० १६। ले० काल स० १८२० सावण सुदी ८। वे० स० ४४०। च भण्डार।

१३२९ प्रति सं० १४ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १५५९ । वे० सं० ४४२ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१३३० प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८८१ भादवा बुदी १ । वे० सं० ८ । छ भण्डार ।

१३३१ प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० १ ७ । ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है ।

१३३२ प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । झ भण्डार ।

१३३३ प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २९५ । झ भण्डार ।

१३३४ प्रति सं० १९ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११ । ट भण्डार ।

विशेष—११ से ७४ तथा १ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

१३३५ प्रति सं० २० । पत्र सं० १८ से ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ ८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१३३६ कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका— । पत्र सं० ५४ । आ० १ ३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१ । क भण्डार ।

१३३७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ से ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

१३३८ कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाटीका—शुभचन्द्र । पत्र सं० २१ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १६ माघ सुदी १ । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । क भण्डार ।

१३३९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । अपूर्ण । छ भण्डार ।

१३४० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४१ । च भण्डार ।

१३४१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ से १७२ । ले० काल सं० १८१२ । अपूर्ण । वे० सं० ४४१ । च भण्डार ।

१३४२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१७ । ले० काल सं० १८२२ आसोज बुदी १२ । वे० सं० ७२ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में माधोसिंह के शासनकाल में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में पं० चोखचन्द के शिष्य रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१३४३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३४८ । ले० काल सं० १ ६६ आसाढ सुदी ८ । वे० सं० ५ ५ । छ भण्डार ।

१३४४ कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० २१७ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १८६३ सावण बुदी ३ । ले० काल सं० १ २९ । पूर्ण । वे० सं० ८४६ । क भण्डार ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्र स० २८१ । ले० काल × । वे० स० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १८८३ । वे० स० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७ प्रति सं० ४ । पत्र स० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८ प्रति स० ५ । पत्र स० १२६ । ले० काल सं० १८८४ । वे० स० १२१ । ङ भण्डार ।

१३४६ कुशलाणुबधिअज्झुयरण ··· । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १६८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्बा टीका सहित है ।

इति कुशलाणुबधिअज्झुयरण समत्त । इति श्री चतुशरण टवार्थ ।

इसके अतिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतियां और हैं ।

१३५०. चक्रवर्त्तिकीबारहभावना ·· । पत्र स० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ५४१ । च भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान ·· । पत्र स० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१ । झ भण्डार ।

१३५३. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र स० ४३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० २१ । घ भण्डार ।

१३५४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र स० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । च भण्डार ।

१३५५ ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द । पत्र सं० ४० । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वे० स० २२६ । क भण्डार ।

१३५६. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८६४ सावण सुदी ११ । वे० स० ३० । घ भण्डार ।

विशेष—महात्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर मे विराजमान की गई ।

१३५७. ज्ञानबावनी—बनारसीदास । पत्र स० १० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८ ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह । पत्र सं० १२ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १०८६ सावण सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८ । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल वाली गाथा निम्न प्रकार है—

सिरि विक्कमसयकाले ववसयपणसी सु यमि बहुमरणेह
सावणसिय एणमीए प्रेवयणपरीम्मकम्मं मेयं ॥

१३५६ ज्ञानार्णव—शुभचन्द्राचार्य। पत्र सं १ ५ । आ १२३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-योग। र काल ×। ले काल सं १६७६ चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे सं २७४। क भण्डार।

विशेष—बैराठ नगर में श्री चतुरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

१३६० प्रति स० २। पत्र सं १ १। ले काल सं १९२१ भादवा सुदी ११। वे सं ४२। घ भण्डार।

१३६१ प्रति स० ३। पत्र सं २ ७। ले काल सं १६४२ पौष सुदी ६। वे सं २२ । ङ भण्डार।

१३६२. प्रति स० ४। पत्र सं २६ । ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २२१। क भण्डार।

१३६३ प्रति स० ५। पत्र स १ ८। ले काल ×। वे सं २२२। क भण्डार।

१३६४ प्रति स० ६। पत्र सं २६४। ले काल स १८३१ आषाढ सुदी ३। वे सं २१४। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम अधिकार की टीका नही है।

१३६५ प्रति स० ७। पत्र सं १ से ८२। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६२। ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ५ पत्र नहीं है।

१३६६ प्रति सं० ८। पत्र सं १११। ले० काल ×। वे सं १२। घ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१३६७. प्रति स० ६। पत्र सं १०५ से २ १। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २२१। ङ भण्डार।

१३६८ प्रति स० १०। पत्र सं २६८। ले काल ×। वे सं २२४। अपूर्ण। ङ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है। हिन्दी टीका सहित है।

१३६६ प्रति स० ११। पत्र सं १ ६। ले काल ×। वे सं २२५। ङ भण्डार।

१३७० प्रति स० १२। पत्र सं ४४। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २२५। ङ भण्डार।

१३७१ प्रतिसं० १३। पत्र सं १३। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २२६। ङ भण्डार।

विशेष—प्राणायाम अधिकार तक है।

१३७२ प्रति स० १४। पत्र स १४२। ले काल सं १८८६। वे सं २२७। ङ भण्डार।

१३७३ प्रति सं० १५। पत्र सं १४ । ले काल सं १६४८ मंगसिर सुदी ८। वे सं १२४। ङ भण्डार।

विशेष—लक्ष्मीचन्द्र वैद्य ने प्रतिलिपि की थी।

१३७४ प्रति स० १६ । पत्र स० १३५ । ले० काल × । वे० स० ६५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा सस्कृत मे सकेत भी दिये है ।

१३७५ प्रति सं० १७ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० स० २८२ । छ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है ।

१३७६ प्रति सं० १८ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १५८१ फागुण सुदी १ । वे० स० २५ । ज भण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८१ वर्षे फागुण सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनिजनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवा । आवेर गण स्थानत् । कूरमवशे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पंचायत शास्त्र ज्ञानार्णव लिखापित त्रैपनक्रियावर्तनिवतवाइ धनाइयोग्रु घटापित कर्म्मक्षयनिमित ।

१३७७ प्रति सं० १६ । पत्र स० ११५ । ले० काल × । । वे० स० ६० । झ भण्डार ।

१३७८. प्रति स० २० । पत्र स० १०४ । ले० काल × । वे० स० १०० । ञ भण्डार ।

१३७६ प्रति सं० २१ । पत्र स० ३ से ७३ । ले० काल स० १५०१ माघ बुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० १५३ । ञ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्त्ति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८० प्रति स० २२ । पत्र स० १३४ । ले० काल स० १७८८ । वे० स० ३७० । ञ भण्डार ।

१३८१ प्रति स० २३ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६४१ । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२ प्रति स० २४ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६०१ । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत गद्य टीका सहित है ।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१६ । अ भण्डार ।

१३८४ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० २२५ । क भण्डार ।

१३८५ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८२३ माघ सुदी १० । वे० स० २२६ । क भण्डार ।

१३८६ प्रति स० ४ । पत्र स० २ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३१ । घ भण्डार ।

१३८७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १ । ले काल सं १७४९ । जीर्ण । वे सं २२८ । क भण्डार ।

विशेष—मौजमाबाद में आचार्य कनककीर्ति के शिष्य पं सदाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१३८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ से १२ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २२९ । क भण्डार ।

१३८९. प्रति सं० ७ । पत्र सं १२ । ले काल सं १७८५ भादवा । वे सं २१ । क भण्डार ।

विशेष—पं रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३९० प्रति सं० ८ । पत्र सं ९ । ले काल × । वे सं २२१ । ख भण्डार ।

१३९१ ज्ञानार्णवटीका—पं० नय विलास । पत्र सं २७९ । आ १३×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २२७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति शुभचन्द्राचार्यविरचितयोगप्रदीपाधिकारे पं नयविलासेन साह पासा तत्पुत्र साह टोडर तत्कुलकमल-दिवाकरसाहऋषिदासस्य श्रवणार्थं पं जिनदासोद्यमेनकारापिता मोक्षप्रकरण समाप्तं ।

१३९२ प्रति सं० २ । पत्र सं ११६ । ले काल × । वे सं २२८ । क भण्डार ।

१३९३ ज्ञानार्णवटीकाभाषा—लब्धिविमलगणि । पत्र सं १५८ । आ ११×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–योग । र काल सं १७२८ आसोज सुदी १ । ले काल सं १७९ वैशाख सुदी ९ । पूर्ण । वे सं १९४ । छ भण्डार ।

१३९४ ज्ञानार्णवभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं ९६९ । आ १९×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) विषय–योग । र काल सं १८६९ माघ सुदी ५ । ले काल × । पूर्ण । वे सं २२१ । क भण्डार ।

१३९५. प्रति सं० २ । पत्र सं ४२ । ले काल × । वे सं २२४ । क भण्डार ।

१३९६ प्रति सं० ३ । पत्र सं ४२१ । ले काल सं १८८१ सावण सुदी ७ । वे सं १४ । ग भण्डार ।

विशेष—साह जिहानाबाद में सेतूमल की प्रेरणा से भाषा रचना की गई । कालूरामजी साह ने मोजपाल भौंसा से प्रतिलिपि कराके चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

१३९७ प्रति सं० ४ । पत्र सं ४८ । ले काल × । वे सं ५१५ । च भण्डार ।

१३९८. प्रति सं० ५ । पत्र सं १ से २१९ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ५१६ । च भण्डार ।

१३९९. प्रति सं० ६ । पत्र सं ३११ । ले काल सं १९११ आसोज सुदी ८ । अपूर्ण । वे सं ५११ । म्ह भण्डार ।

विशेष—आरम्भ के २९ पत्र नहीं हैं ।

१४०० तत्त्वयोग ⋯ । पत्र सं ३ । आ १ ×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल सं १८८१ । पूर्ण । वे सं ३१ । अ भण्डार ।

१४०१ त्रयोविंशतिका । पत्र स० १३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४० । च भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुडभाषा । पत्र स० २६ । आ० १०½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८३ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टपाहुड का एक भाग है ।

१४०३ द्वादशभावना दृष्टान्त ...... । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–गुजराती । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १७०७ बैशाख बुदी १ । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जालोर मे श्री हसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४. द्वादशभावनाटीका । पत्र स० ६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी है ।

१४०५ द्वादशानुप्रेक्षा ...... । पत्र स० २० । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति । पत्र स० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४ । अ भण्डार ।

१४०८. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १६१ । भ भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेक्षा—कविछत्त । पत्र सं० ८३ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १६०७ भादवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । क भण्डार ।

१४१० द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र सं० ४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र स० १३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२८ । ङ भण्डार ।

१४१२. प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ६३ । भ भण्डार ।

१४१३ पञ्चतत्त्वधारणा ...... । पत्र स० ७ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२३२ । अ भण्डार ।

१४१४-पन्द्रहतिथी ^ ^। पत्र सं ४। आ १ ३×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-अध्यात्म। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं० ४११। क भण्डार।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभावस्तोत्र भाषा भी है।

१४१५ परमात्मपुराण—दीपचन्द। पत्र सं २४। आ १२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-अध्यात्म। र काल ×। ले काल सं १८६४ सावन सुदी ११। पूर्ण। घ भण्डार।

विशेष—महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी।

१४१६ प्रति स० ^। पत्र सं २ से २२। ले काल सं १८४१ आसोज बुदी २। अपूर्ण। वे सं ६२१। घ भण्डार।

१४१७ परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव। पत्र सं ११ से १४४। आ १ ×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-अध्यात्म। र काल १ वीं शताब्दी। ले० काल सं १७११ आसोज सुदी २। अपूर्ण। वे सं २ ८१। क भण्डार।

विशेष—खुशालचन्द बिमलराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४१८ प्रति स० २। पत्र सं० ६७। ले काल सं ११११। वे सं ४४४। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१४१६. प्रति स० ३। पत्र सं ७६। ले काल सं १६ ४ भादवा सुदी ११। वे सं १७। घ भण्डार। संस्कृत टीका सहित है।

विशेष—ग्रन्थ सं ४ श्लोक। अन्तिम ६ पृष्ठों में बहुत बारीक लिपि है।

१४२० प्रति स० ४। पत्र सं १६। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ४१४। क भण्डार।

१४२१ प्रति स० ५। पत्र सं २ से १६। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ४१६। क भण्डार।

१४२२. प्रति स० ६। पत्र सं २५। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ ६। घ भण्डार

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये है।

१४२३ प्रति स० ७। पत्र सं ११। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २१। घ भण्डार।

१४२४ प्रति स० ८। पत्र सं २४। ले काल सं १८१ बैसाख सुदी ३। वे स ८२। ख भण्डार।

विशेष—जयपुर में सुखचन्दजी के शिष्य चोखचन्द तथा उनके शिष्य पं रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की। संस्कृत म पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं।

१४२५ परमात्मप्रकाशटीका—अमृतचन्द्राचार्य। पत्र सं ६६ से २४५। आ १ ३×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ४११। क भण्डार।

१४२६ प्रति स० २। पत्र सं ११६। ले काल ×। वे सं ४२१। क भण्डार।

१४२७ प्रति सं० ३ । पत्र स० १४१ । ले० काल स० १७९७ पौष सुदी ५ । वे स० ४५४ । ञ भण्डार ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८ **परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव** । पत्र स० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७९ । अ भण्डार ।

१४२९ प्रति स० २ । पत्र स० ८ से १४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र हैं ।

१४३०. **परमात्मप्रकाशटीका** । पत्र स० १९३ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १९५८ द्वि० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१ **परमात्मप्रकाशटीका** । पत्र स० ६७ । आ० ११×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८९० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० २०७ । च भण्डार ।

१४३२. प्रति स० २ । पत्र स० २६ से १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८ । च भण्डार ।

१४३३ **परमात्मप्रकाशटीका** । पत्र सं० १७० । आ० ११½×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १९९६ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४ **परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम** । पत्र स० ४४४ । आ० ११×९ । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल १८वी शताब्दी । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वे० स० ४४९ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५. प्रति स० २ । पत्र स० २३० से २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३६ । ङ भण्डार ।

१४३६ प्रति स० ३ । पत्र स० २४७ । ले० काल स० १९५० । वे० स० ४३७ । ङ भण्डार ।

१४३७. प्रति स० ४ । पत्र स० ६० से १९६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८. प्रति स० ५ । पत्र स० ३२४ । ले० काल × । वे० स० १९२ । छ भण्डार ।

१४३९ **परमात्मप्रकाशबालावबोधिनीटीका—खानचन्द** । पत्र सं० २४१ । आ० १२¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १९३६ । पूर्ण । वे० स० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुल्तान मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वय टीकाकार ने किया है ।

१४४० **परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल** । पत्र स० २१ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १९१९ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४० । क भण्डार ।

१४४१. प्रति स० २ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १९४८ । वे० स० ४४१ । क भण्डार ।

१४४२ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० ४४२ । क भण्डार ।

१४४३ प्रति स० ८ । पत्र सं २ से १५ । ले काल सं १६६७ । वे सं ४४३ । क भण्डार ।

१४४४ परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजभान ओसवाल । पत्र सं १५४ । आ १२¾×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र काल सं १८४३ आषाढ़ बुदी ७ । ले काल सं १६५२ मंगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे सं ,४४४ । क भण्डार ।

१४४५ परमात्मप्रकाशभाषा·······। पत्र सं ६५ । आ ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । वे सं ६६६ । च भण्डार ।

१४४६ परमात्मप्रकाशभाषा·········। पत्र सं ५६ । आ ११×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६२७ । च भण्डार ।

१४४७ परमात्मप्रकाशभाषा·········। पत्र सं ६१ से १ ८ । आ १ ×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स ४१२ । क भण्डार ।

१४४८ प्रवचनसार—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं ४७ । आ १२×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र काल प्रथम शताब्दी । ले काल सं १६४ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे सं ५ ८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१४४९ प्रति स० २ । पत्र सं १८ । ले काल × । वे सं २१ ।

१४५० प्रति स० ३ । पत्र सं २ । ले काल सं १८६६ भादवा बुदी ५ । वे सं २१८ । च भण्डार ।

१४५१ प्रति स० ४ । पत्र सं ९८ । ले काल × । अपूर्ण । । वे सं २१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४५२ प्रति स० ५ । पत्र सं २२ । ले काल सं १८६७ वैशाख सुदी ६ । वे सं २४ । च भण्डार ।

विशेष—परामदास मोहा भाने मे प्रतिलिपि की थी ।

१४५३ प्रति स० ६ । पत्र सं १६ । ले काल × । वे सं १४८ । ख भण्डार ।

१४५४ प्रवचनसारटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं ६७ । आ ६×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र काल १ वी शताब्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ ६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

१४५५ प्रति स २ । पत्र सं ११८ । ले काल × । वे सं ८५२ । क भण्डार ।

१४ ६ प्रति स० ३ । पत्र सं २ से ६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ७८५ । क भण्डार ।

१४५७ प्रति सं० ४ । पत्र सं १ १ । ले काल × । वे सं ८१ । क भण्डार ।

१४५८ प्रति स० ५ । पत्र सं १ ८ । ले काल सं १६६८ । वे सं ५ ७ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने कामनगर में प्रतिलिपि की थी ।

१४५६ प्रति स० ६ । पत्र स० २३६ । ले० काल स० १६३८ । वे० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६० प्रति सं० ७ । पत्र स० ८७ । ले० काल X । वे० स० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४६१ प्रति सं० ८ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १७४७ फागुण बुदी ११ । वे० स० ५११ । ङ भण्डार ।

१४६२ प्रति स० ६ । पत्र स० १६२ । ले० काल स० १६४० भादवा बुदी ३ । वे० स० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३ प्रवचनसारटीका । पत्र स० ४१ । आ० ११X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५१० । ङ भण्डार ।

विशेष—प्राकृत मे मूल सस्कृत मे छाया तथा हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४ प्रवचनसारटीका । पत्र स० १२१ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल स० १८५७ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६५ प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति । पत्र स० ५१ मे १३१ । आ० १२X५¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल स० १७६५ । अपूर्ण । वे० स० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नही हैं । महाराजा जयसिंह के शासनकाल मे नेवटा मे महात्मा हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६६ प्रवचनसारभाषा—पाडे हेमराज । पत्र स० ८३ मे ३०५ । आ० १२X५¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १७०६ माघ सुदी ५ । ले० काल स० १७२५ । अपूर्ण । वे० स० ४३२ । अ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे ओसवाल गूजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७ प्रति स० २ । पत्र स० २६७ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८ प्रति स० ३ । पत्र स० १७३ । ले० काल X । वे० स० ५१२ । क भण्डार ।

१४६९. प्रति स० ४ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १६२७ फागुण बुदी ११ । वे० स० ६३ । घ भण्डार ।

विशेष—प० परमानन्द ने दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी ।

१४७० प्रति स० ५ । पत्र स० १७६ । ले० काल स० १७४३ पौष सुदी २ । वे० सं० ५१३ । ङ भण्डार ।

१४७१. प्रति स० ६ । पत्र स० २४१ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० ६४१ । च भण्डार ।

१४७२ प्रति सं० ७ | पत्र सं १८४ | ले काल सं १८८३ कार्तिक बुदी २ | वे सं ११३ | छ भण्डार |

विशेष—सवाई जयपुर निवासी अमरचन्द के पुत्र महात्मा मनोहर ने प्रतिलिपि की थी |

१४७२ प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोदीका | पत्र सं १८ | आ ११×५ इञ्च | भाषा–हिन्दी (पद्य) | विषय–अध्यात्म | र काल सं १७२६ | ले काल सं १७३ आषाढ सुदी १५ | पूर्ण | वे सं ६४४ | च भण्डार |

१४७४ प्रवचनसारभाषा—वृन्दावनदास | पत्र सं २१७ | आ १२½×५ इञ्च | भाषा–हिन्दी | विषय–अध्यात्म | र काल × | ले काल सं १९११ ज्येष्ठ बुदी २ | पूर्ण | वे सं ५११ | क भण्डार |

विशेष—ग्रन्थ के अन्त में वृन्दावनदास का परिचय दिया है |

१४७५ प्रवचनसारभाषा ···· | पत्र सं ८६ | आ ११×६½ इञ्च | भाषा–हिन्दी | विषय–अध्यात्म | र काल × | ले काल × | अपूर्ण | वे सं ५१२ | क भण्डार |

१४७६ प्रति सं० २ | पत्र सं ३ | ले काल × | अपूर्ण | वे सं ६४२ | च भण्डार |

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है |

१४७७ प्रवचनसारभाषा ···· | पत्र सं १२ | आ ११×४½ इञ्च | भाषा–हिन्दी (गद्य) | विषय–अध्यात्म | र काल × | ले काल × | अपूर्ण | वे सं १९२२ | ट भण्डार |

१४७८ प्रवचनसारभाषा········ | पत्र सं १४५ से १८५ | आ ११¾×७½ इञ्च | भाषा–हिन्दी (गद्य) | विषय–अध्यात्म | र काल × | ले काल सं १८१७ | अपूर्ण | वे सं ६४५ | च भण्डार |

१४७९ प्रवचनसारभाषा···· | पत्र सं २१२ | आ ११×५ इञ्च | भाषा–हिन्दी (गद्य) | विषय–अध्यात्म | र काल × | ले काल सं १९२१ | वे सं ६४३ | च भण्डार |

१४८० प्राणायामशास्त्र···· | पत्र सं ९ | आ ८½×४ इञ्च | भाषा–संस्कृत | विषय–योगशास्त्र | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे सं ६५६ | च भण्डार |

१४८१ बारह भावना—रइधू | पत्र सं ५ | आ ८×६ इञ्च | भाषा–हिन्दी | विषय–अध्यात्म | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे सं २४१ | छ भण्डार |

विशेष—लिपिकार ने रइधू कृत बारह भावना होना लिखा है |

प्रारम्भ—*द्रुवबस्त निश्चल सदा अध्रुवमाव परजाय |*

स्वंधरूप जो देखिये पुद्गल तणो विभाव ||

अन्तिम—*भव्य महागुणी ज्ञान की महत सुगम की नाहि |*

भागनी मैं पाइये जब देखे घटमांहि ||

इति श्री रइधू कृत बारह भावना संपूर्ण |

१४८२ बारहभावना `` । पत्र स० १५ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चिन्तन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५२६ । ङ भण्डार ।

१४८३ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ६८ । झ भण्डार ।

१४८४ बारहभावना—भूधरदास । पत्र स० १ । आ० ६३/४×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चिंतन । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १२४७ । ञ भण्डार ।

विशेष—पार्श्वपुराण से उद्धृत है ।

१४८५ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २५२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसका नाम चक्रवर्त्ति की बारह भावना है ।

१४८६ बारहभावना—नवलकवि । पत्र स० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चिंतन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० । ङ भण्डार ।

१४८७. बोधप्राभृत—आचार्य कुदकुद । पत्र स० ७ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३५ ।

विशेष—सस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४८८ भववैराग्यशतक । पत्र स० १५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८२४ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१४८९. भावनाद्वात्रिंशिका । पत्र स० २९ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह और है । यतिभावनाष्टक, पद्मनन्दिपचविंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र । प्रति स्वर्णाक्षरो मे है ।

१४९० भावनाद्वात्रिंशिकाटीका । पत्र स० ४६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × ० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

१४९१ भावपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० ९ । आ० १४×५१/२ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३० । ज भण्डार ।

विशेष—प्राकृत गाथाओ पर सस्कृत श्लोक भी हैं ।

१४९२. मृत्युमहोत्सव । पत्र स० १ । आ० १११/२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४१ । अ भण्डार ।

१४९३ मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र स० २२ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १९१८ आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८० । घ भण्डार ।

१४९४ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ६०४ । ङ भण्डार ।

१४६५ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । ले काल × । वे सं १८४ । छ भण्डार ।

१४६६ प्रति स० ४ । पत्र स ११ । ले काल × । वे० स० १८४ । छ भण्डार ।

१४६७ प्रति स० ५ । पत्र सं १ । ले काल × । वे सं १६५ । भ्र भण्डार ।

१४६८ योगबिंदुप्रकरण—आ० हरिभद्रसूरि । पत्र सं १८ । आ १ ×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २६२ । ञ भण्डार ।

१४६९ योगभक्ति ...... । पत्र सं ५ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–योग । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६१५ । क भण्डार ।

१५०० योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं २५ । आ १ ×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ८६६ । अ भण्डार ।

१५०१ योगशास्त्र...... । पत्र सं १४ । आ १ ×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय योग । र काल × । ले काल सं १७ ९ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे सं ८२६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१५०२. योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं १२ । आ ६×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल सं १८ ४ । अपूर्ण । वे सं ८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सुखराम श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०३ प्रति स० २ । पत्र सं १७ । ले काल सं १९१४ । वे सं ६ ६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत छाया सहित है ।

१५ ४ प्रति सं० ३ । पत्र स १५ । ले काल × । वे सं ६ ७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१५०५ प्रति स० ४ । पत्र सं १२ । ले काल सं १८९१ । वे सं ६१६ । क भण्डार ।

१५०६ प्रति स० ५ । पत्र सं २६ । ले काल × । वे सं ११ । क भण्डार ।

१५०७ प्रति स० ६ । पत्र सं ११ । ले काल सं १८८२ चैत बुदी ४ । वे सं २८२ । घ भण्डार ।

१५०८ प्रति स० ७ । पत्र सं १ । ले काल सं १८ ४ आसोज बुदी ३ । वे सं ३११ । ञ भण्डार ।

१५०९ प्रति स० ८ । पत्र सं २ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ५१६ । अ भण्डार ।

१५१० योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र सं ५७ । आ १२½×४¹ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र काल सं १९ ४ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६११ । क भण्डार ।

विशेष—आगरे में ताजगंज में भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११ योगसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं ३३ । आ १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र काल सं १९३२ सावन बुदी ११ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६ ६ । क भण्डार ।

१५१२ प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६१० । क भण्डार ।

१५१३ प्रति स० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० स० ६१७ । ङ भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा—प० बुधजन । पत्र स० १० । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल स० १८९५ सावरण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० स० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा ⋯ । पत्र स० ६ । आ० २१×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६१८ । ङ भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह ⋯ । पत्र स० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल स० १७५० कार्त्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन ⋯ । पत्र स० २ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५९ । ङ भण्डार ।

'धर्म्मनाथस्तुवे धर्ममय सद्धर्मसिद्धये ।
धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तक ॥

१५१९ लिंगपाहुड़—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स० ११ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वे० स० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति स० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९६ । झ भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र स० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२. प्रति सं० २ । पत्र स० ३९ । ले० काल स० १८८५ सावरण बुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—बीच मे कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र स० २१ । ले० काल × । वे० स० १४३ । व्य भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७ । अ भण्डार ।

१२२५ प्रति सं० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी १५ । वे० स० १८८ । अ भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) मे प० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१४९५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

१४९६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

१४९७ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १९५ । म भण्डार ।

१४९८. योगबिंदुप्रकरण—आ० हरिभद्रसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १ ×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । छ भण्डार ।

१४९९ योगभक्ति ········ । पत्र सं० ६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । क भण्डार ।

१५०० योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० २१ । आ० १ ×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । म भण्डार ।

१५०१ योगशास्त्र······ । पत्र सं० १४ । आ० १ ×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय योग । र० काल × । ले० काल सं० १७ ९ आषाढ़ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । भ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१५०२ योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ । आ० १×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८ ४ । अपूर्ण । वे० सं० ८२ । भ भण्डार ।

विशेष—सुखराम छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १९१४ । वे० सं० ६ १ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत छाया सहित है ।

१५ ४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६ ७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१५०५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

१५०६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ११ । छ भण्डार ।

१५०७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८२ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० २८२ । भ भण्डार ।

१५०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८ ४ आसोज बुदी ३ । वे० सं० ११६ । म भण्डार ।

१५०९ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१६ । भ भण्डार ।

१५१० योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र सं० ५७ । आ० १२½×४³ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९ ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६११ । क भण्डार ।

विशेष—आगरे में ताजगञ्ज में भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११ योगसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३१ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल सं० १९३२ सावन बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ ९ । क भण्डार ।

१५१२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६१० । क भण्डार ।

१५१३ प्रति स० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० स० ६१७ । ङ भण्डार ।

१५१४. योगसारभापा—पं० बुधजन । पत्र सं० १० । आ० ११×७½ इञ्च । भापा–हिन्दी (पद्य) । विपय–अध्यात्म । र० काल सं० १८९५ सावरण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० स० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा ·····। पत्र स० ६ । आ० २१×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । ङ भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह · । पत्र स० १८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले० काल स० १७५० कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन · । पत्र स० २ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय–योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५९ । ङ भण्डार ।

'धर्म्मनाथस्तुवे धर्ममय सद्धर्मसिद्धये ।
धीमता धर्मदातार धर्मचक्रप्रवर्त्तक ॥

१५१९ लिंगपाहुड़—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स० ११ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वे० स० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२०. प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९६ । भ्र भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र स० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२ प्रति सं० २ । पत्र स० ३९ । ले० काल स० १८८५ सावरण बुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—वीच मे कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र स० २१ । ले० काल × । वे० स० १४३ । व्य भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स० २ से २४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७ । अ भण्डार ।

१२२५ प्रति सं० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी १५ । वे० स० १८८ । अ भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० स० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) मे प० रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२७ प्रति स० ४ । पत्र सं ४२ । ले काल सं १८१७ कार्तिक सुदी ७ । वे सं ११५ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यों में भी अर्थ दिया है ।

१५२८ प्रति सं० ५ । पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं २८ ख भण्डार ।

१५२६. प्रति स० ६ । पत्र सं १५ । ले० काल × । वे सं १२७ । ख भण्डार ।

१५३० प्रति स० ७ । पत्र सं ११ से ५५ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ७१७ । क भण्डार ।

१५३१ प्रति स० ८ । पत्र सं २६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ७१८ । क भण्डार ।

१५३२ प्रति स० ६ । पत्र सं २७ से ६५ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ७१६ । क भण्डार ।

१५३३ प्रति स० १० । पत्र सं ५४ । ले काल × । वे सं ७४ । क भण्डार ।

१५३४ प्रति स० ११ । पत्र सं ६१ । ले काल × । वे सं १२७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५३५ प्रति स १२ । पत्र सं २ । ले काल सं १५११ चैत्र सुदी ११ । वे सं १८ । म भण्डार ।

१५३६ प्रति स० १३ । पत्र सं २६ । ले काल × । वे सं १८४६ । ट भण्डार ।

१५३७ प्रति सं० १४ । पत्र सं ५२ । ले काल सं १७१५ । वे सं १८४७ । ट भण्डार ।

विशेष—नक्षपुर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में ब्र सुखदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५३८. प्रति स० १५ । पत्र सं १ से ८१ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २ ८५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न प्राभृत है– दर्शन सूत्र चारित्र । चारित्र प्राभृत की ४५ गाथा से आगे नहीं है । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१५३६ षट्पाहुडटीका······ । पत्र सं ५१ । आ १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५६ । ख भण्डार ।

१५४० प्रति स० २ । पत्र सं ४२ । ले काल × । वे सं ७१३ । क भण्डार ।

१५४१ प्रति स० ३ । पत्र सं ५१ । ले काल सं १८८ फागुण सुदी ८ । वे सं ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—पं स्वरूपचन्द के पठनार्थ मालमपुर में प्रतिलिपि हुई ।

१५४२ प्रति स ४ । पत्र सं १४ । ले काल सं १८२५ ज्येष्ठ सुदी १ । वे स २५८ । म भण्डार ।

१५४३. षटपाहुडटीका—श्रुतसागर। पत्र सं० २६५। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७१२। क भण्डार।

१५४४ प्रति सं० २। पत्र स० २६६। ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६। वे० स० ७४१। ङ भण्डार।

१५४५ प्रति सं० ३। पत्र सं० १५२। ले० काल स० १७६५ माह बुदी १०। वे० स० ६२। छ भण्डार।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी।

१५४६ प्रति स० ४। पत्र स० १११। ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५। वे० स० ६। ञ

विशेष—श्रीलालचन्द के पठनार्थ आमेर नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१५४७. प्रति सं० ५। पत्र स० १७१। ले० काल स० १७६७ श्रावण सुदी ७। वे० स० ६८। ञ भण्डार।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने प० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी।

१५४८ संबोधअक्षरबावनी—द्यानतराय। पत्र स० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६६०। च भण्डार।

१५४९ सबोधपचासिका—गौतमस्वामी। पत्र स ४। आ० ८×४२ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १८४० बैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० स० ३६४। च भण्डार।

विशेष—बाणपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५५० समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र स० २३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १५६४ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वृत स० २६३ सर्व भवति। वे० सं० १८१। अ भण्डार।

विशेष–प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री मूलसघे नदिसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्ततत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्यमडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्ततमुख्यशिष्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृतानि लिखापितानि स्वपठनार्थं।

१५५१ प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० स० १८६। अ भण्डार।

१५५२. प्रति स० ३। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० स० २७३। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायान्तर दिया हुआ है। दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी।

१५५३ प्रति स० ४। पत्र स० १६। ले० काल स० १६४२। वे० स० ७३४। क भण्डार।

१४४४ प्रति स० ५ । पत्र सं ५६ । ले काल × । वे० सं ७६५ । ङ भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर ही संस्कृत में अर्थ है ।

१४४५. प्रति स० ६ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे सं १ ८ । घ भण्डार ।

१४४६ प्रति स० ७ । पत्र सं ४६ । ले काल सं १८७७ वैशाख सुदी ५ । वे० सं १६६ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१४४७ प्रति स० ८ । पत्र सं० २६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६७ । ङ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४४८ प्रति स० ६ । पत्र सं० ५२ । ले काल × । वे सं १६७ क । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१४४६ प्रति स० १० । पत्र सं १ से १११ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१४५० प्रति स० ११ । पत्र स ८५ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६८ क । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१४५१ प्रति सं० १२ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे० सं १७ । ङ भण्डार ।

१४५२ प्रति स० १३ । पत्र सं ४७ । ले काल × । वे सं १७१ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१४५३ प्रति स० १४ । पत्र सं ३३ । ले काल सं १५६३ पौष सुदी ६ । वे सं २१४ । ट भण्डार ।

१४५४ समयसारकलशा—अमृतचन्द्र आचार्य । पत्र सं १९२ । आ ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल स १७४१ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे सं १७१ । ङ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७४१ वर्षे आसोज मासे शुक्लपक्षे द्वितिया २ तिथौ बुधवासरे श्रीमत्कामानगरे श्रीसीता-म्बरघाचार्या श्रीमद्विजयगच्छे भट्टारक श्री १ ८ श्री कल्याणसागरसूरिजी तद् शिष्य ऋषिराज श्री जयवंतजी तद् शिष्य ऋषि लखमणेन पठनार्थ लिपिकृतं शुभं भवतु ।

१४५५. प्रति स० २ । पत्र स १८४ । ले काल सं १६६७ आषाढ सुदी ७ । वे सं १३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति निम्न प्रकार है–संवत् १६६७ वर्षे अषाढ वदि सप्तम्यां शुक्रवासरे महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी प्रतापे अंबावतीमध्ये लिखायतं संघी श्री मोहनदासजी पठनार्थ । लिखितं जोशी मयाराम ।

१५६६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४१ । ले० काल × । वे० स० २१५ । अ भण्डार ।

१५६८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल सस्कृत मे टीका दी है तथा नीचे श्लोको की टीका है ।

१५६९. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२४ । ले० काल × । वे० स० ७३७ । क भण्डार ।

१५७० प्रति सं० ७ । पत्र म० ६४ । ले० काल सं० १८६७ भादवा सुदी ११ । वे० सं० ७३८ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१ प्रति स० ८ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ७३९ । अ भण्डार ।

विशेप—सस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२ प्रति सं० ९ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेप—कलशो पर भी संस्कृत मे टिप्पण दिया है ।

१५७३. प्रति स० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ११० । घ भण्डार ।

१५७४ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७१ । च भण्डार ।

विशेप—प्रति सस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५९ से सस्कृत टीका नही है केवल श्लोक ही हैं ।

१५७५ प्रति सं० १२ । पत्र स० २ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६. प्रति स० १३ । पत्र स० २९ । ले० काल स० १७१९ कार्त्तिक सुदी २ । वे० स० ९१ । छ भण्डार ।

विशेष—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७ प्रति स० १४ । पत्र स० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८ प्रति स० १५ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १६१४ पौष बुदो ८ । वे० सं० २०५ । ज भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९ प्रति सं० १६ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८०. प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८२२ । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—ब्र० नेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१. समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३५ । आ० १०½×४½ इञ्च भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल सं० १८३३ माह बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० २ । अ भण्डार ।

१५८२ प्रति सं० २। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १७ १। वे सं० १ ४। ख भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति-संवत् १७ १ मार्गसिर कृष्णपक्ष्यां तिथौ बुधवारे लिखितेयम्।

१५८३ प्रति सं० ३। पत्र सं० १ १। ले० काल ×। वे सं० १। ख भण्डार।

१५८४ प्रति सं० ४। पत्र सं० १० से ४६। ले० काल ×। वे सं० २ १। ख भण्डार।

१५८५ प्रति सं० ५। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १७ १ वैशाख सुदी १ । वे सं० २२६। ख भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति —सं० १७ १ वर्षे वैसाख कृष्णाष्टम्यां तिथौ लिखितम्।

१५८६ प्रति सं० ६। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १८३८। वे सं० ७४ । क भण्डार।

१५८७ प्रति सं० ७। पत्र सं० १३८। ले० काल सं० १६५७। वे सं० ७४१। क भण्डार।

१५८८ प्रति सं० ८। पत्र सं० १ २। ले० काल सं० १७ १। वे सं० ७४२। क भण्डार।

विशेष—मथवत पुर मे सिरोज ग्राम मैं प्रतिलिपि का थी।

१५८९ प्रति सं० ९। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। वे सं० ७४३। क भण्डार।

१५९० प्रति सं० १०। पत्र सं० ११५। ले० काल ×। वे सं० ७४५। क भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१५९१ प्रति सं० ११। पत्र सं० १७६। ले० काल सं० १६४४ वैसाख सुदी ९। वे सं० १ ६। घ भण्डार।

विशेष—अकबर बादशाह के शासनकाल में मालपुरा में मेवाड़ सूरि श्वेताम्बर मुनि वैसा ने प्रतिलिपि की थी। नीचे निम्नलिखित पंक्तियां और लिखी है—

'पांडे कैतु सेठ तत्र पुत्र पांडे पारसु पोथी वेहुरे।

वासी सं० १६७३ तत्र पुत्र बीसासलालन कमहर।

बीच में कुछ पत्र लिखवाये हुये हैं।

१५९२ प्रति सं० १२। पत्र सं० १६८। ले० काल सं० १६१८ माघ सुदी १। वे सं० ७५। ख भण्डार।

विशेष—संघाही पद्मालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। ११२ से १७ तक नीले पत्र हैं।

१५९३ प्रति सं० १३। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १७३ मंगसिर सुदी १५। वे सं० १ १। ख भण्डार।

१५९४ समयसार वृत्ति ''' । पत्र सं० ४। आ० ८१×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे सं० १ ७। घ भण्डार।

१५९५ समयसारटीका'''' '''। पत्र सं० ८१। आ० १ ३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे सं० ७६६। ङ भण्डार।

१५९६ **समयसारनाटक—बनारसीदास** । पत्र स० ६७ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र० काल सं० १६९३ आसोज सुदी १३ । ले० काल स० १८३८ । पूर्ण । वे० स० ४०६ । अ भण्डार ।

१५९७ **प्रति स० २** । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८९७ फागुण सुदी ६ । वे० स० ४०६ । अ भण्डार ।

विशेष—आगरे मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५९८. **प्रति सं० ३** । पत्र स० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०६९ । अ भण्डार ।

१५९९ **प्रति सं० ४** । पत्र स० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९८४ । अ भण्डार ।

१६००. **प्रति सं० ५** । पत्र स० ४ से ११५ । ले० काल स० १७८९ फागुण सुदी ४ । वे० सं० ११२८ अ भण्डार ।

१६०१ **प्रति सं० ६** । पत्र सं० १८४ । ले० काल स० १९३० ज्येष्ठ बुदी १५ । वे० स० ७४६ । क भण्डार ।

विशेष—पद्यो के बीच मे सदासुख कासलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है । टीका रचना स० १९१४ कार्त्तिक सुदी ७ है ।

१६०२ **प्रति सं० ७** । पत्र स० १११ । ले० काल स० १९५६ । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

१६०३. **प्रति स० ८** । पत्र स० ४ से ५९ । ले० काल × । वे० स० २०८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नही हैं ।

१६०४ **प्रति सं० ९** । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १८८७ माघ सुदी ८ । वे० स० ८४ । ग भण्डार ।

१६०५ **प्रति स० १०** । पत्र स० ३९९ । ले० काल स० १९२० वैशाख सुदी १ । वे० स० ८५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटके के रूप मे है । लिपि बहुत सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं तथा एक पत्र मे ५ लाइन और प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं । पद्यो के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रो मे है । यह ग्रन्थ तनसुख सोनी का है ।

१६०६. **प्रति स० ११** । पत्र स० २८ से १११ । ले० काल स १७१४ । अपूर्ण । वे० स० ७६७ । ङ भण्डार ।

विशेष— रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७. **प्रति सं० १२** । पत्र स० १२२ । ले० काल स० १९५१ चैत्र सुदी २ । वे० स० ७६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१६०८ **प्रति स० १३** । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १९४३ मंगसिर बुदी १३ । वे० स० ७६९ । ङ भण्डार ।

विशेष—सवाईरामम्य ब्राह्मण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी।

१६०६. प्रति सं० १४। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८७७ प्रथम सावण सुदी ११। वे० सं० ७७०। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी टीका है।

१६१०. प्रति सं० १५। पत्र सं० १। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७७१। क भण्डार।

१६११. प्रति सं० १६। पत्र सं० २ से २२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२७। क भण्डार।

१६१२. प्रति सं० १७। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १७६१ आषाढ सुदी १५। वे० सं० ७७२। क भण्डार।

१६१३. प्रति सं० १८। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८१४ मंगसिर सुदी ६। वे० सं० ६६२। ख भण्डार।

विशेष—पांडे मानसराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई।

१६१४. प्रति सं० १९। पत्र सं० ९। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६६५। ख भण्डार।

१६१५. प्रति सं० २०। पत्र सं० ४१ से ११२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६६५ (क)। ख भण्डार।

१६१६. प्रति सं० २१। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० ६६५ (ख)। ख भण्डार।

१६१७. प्रति सं० २२। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० ६६५ (ग)। ख भण्डार।

१६१८. प्रति सं० २३। पत्र सं० ४ से ५। ले० काल सं० १७ ४ ज्येष्ठ सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ९२ (ग)। ङ भण्डार।

१६१९. प्रति सं० २४। पत्र सं० १८१। ले० काल सं० १७८८ आषाढ सुदी २। वे० सं० १। छ भण्डार।

विशेष—मिश्र गिरधारी किशोरी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६२०. प्रति सं० २५। पत्र सं० ४ से ८१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२२१। ट भण्डार।

१६२१. प्रति सं० २६। पत्र सं० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७ ८। ट भण्डार।

१६२२. प्रति सं० २७। पत्र सं० २३७। ले० काल सं० १७४६। वे० सं० १६ ६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति राजमल्लकृत गद्य टीका सहित है।

१६२३. प्रति सं० २८। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १८६। ट भण्डार।

१६२४. समयसारभाषा—जयचन्द छाबडा। पत्र सं० ५११। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र० काल सं० १८६४ कार्तिक सुदी १०। ले० काल सं० १६४९। पूर्ण। वे० सं० ७४८। क भण्डार।

१६२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ५२६। ले० काल ×। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

१६२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१६। ले० काल ×। वे० सं० ७५०। क भण्डार।

१६२७. प्रति स० ४ । पत्र स० ३२५ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदासुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३१७ । ले० काल स० १८७७ आषाढ बुदी १५ । वे० सं० १११ । घ भण्डार ।

विशेष—नैनीराम ने लखनऊ मे नवाव गजुद्दीह वहादुर के राज्य मे प्रतिलिपि की ।

१६२९ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३७५ । ले० काल स० १९५२ । वे० स० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति स० ७ । पत्र स० १०१ से ३१२ । ले० काल × । वे० स० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३०५ । ले० काल × । वे० स० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका · । पत्र स० २०० से ३३२ । आ० ११¼×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० स० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—बध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नही हैं । पहिले कलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी मे अर्थ है । समयसार टीका श्लोक स० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा · । पत्र स० ६२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४ समयसारवचनिका । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५ प्रति स० २ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । वे० स० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७ समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र स० ५१ । आ० १२¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८. प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति स० ३ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १६३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४० समाधितन्त्र · · । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१ समाधितन्त्रभाषा · · । पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । वीच के पत्र भी नही हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

विशेष—लक्ष्मीनारायण ब्राह्मण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी।

१६०६. प्रति सं० १४। पत्र सं १६ । ले काल सं १६७७ प्रथम सावण सुदी १३। वे० सं ७७०। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी टीका है।

१६१० प्रति स० १५। पत्र सं १ । ले काल ×। अपूर्ण। वे सं० ७७१। क भण्डार।

१६११ प्रति स० १६। पत्र सं २ से २२। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १२७। क भण्डार।

१६१२ प्रति स० १७। पत्र सं ६७। ले काल सं १७६१ आषाढ सुदी १५। वे सं ७७२। क भण्डार।

१६१३ प्रति स० १८। पत्र सं ६ । ले काल सं १८३४ मंगसिर सुदी ६। वे सं ११२। ग भण्डार।

विशेष—पांडे मानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई।

१६१४ प्रति स० १६। पत्र सं ९ । ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११५। ग भण्डार।

१६१५ प्रति स० २०। पत्र सं ४१ से ११२। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११५ (क)। ग भण्डार।

१६१६ प्रति स० २१। पत्र स ११। ले काल ×। वे सं ११५ (ख)। ग भण्डार।

१६१७ प्रति स० २२। पत्र सं २६। ले काल ×। वे सं ११५ (ग)। ग भण्डार।

१६१८ प्रति स० २३। पत्र सं ४ से ५ । ले काल सं १७ ४ ज्येष्ठ सुदी २। अपूर्ण। वे सं १२ (घ)। छ भण्डार।

१६१९ प्रति स० २४। पत्र सं १८१। ले काल सं १७८८ आषाढ सुदी २। वे सं १। झ भण्डार।

विशेष—मिश्र निवासी किसी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

१६२० प्रति स० २५। पत्र सं ४ से ८१। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १२२१। ट भण्डार।

१६२१ प्रति स० २६। पत्र सं १६। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १७ ८। ट भण्डार।

१६२२ प्रति स० २७। पत्र सं २१७। ले काल सं १७४१। वे सं १६ १। ट भण्डार।

विशेष—प्रति राजमल्लकृत गद्य टीका सहित है।

१६२३ प्रति स० २८। पत्र सं ६ । ले काल ×। वे सं १८६ । ट भण्डार।

१६२४ समयसारभाषा—जयचन्द छाबडा। पत्र सं ५११। आ ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–अध्यात्म। र काल सं १८६४ कार्तिक सुदी १ । ले काल सं १६४६। पूर्ण। वे सं० ७४८। क भण्डार।

१६२५. प्रति स० २। पत्र सं ४६६। ले काल ×। वे स ७४६। क भण्डार।

१६२६ प्रति स० ३। पत्र सं ९११। ले काल ×। वे सं० ७५ । क भण्डार।

१६२७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३२५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० स० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदासुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३१७ । ले० काल स० १८७७ आषाढ बुदी १५ । वे० स० १११ । घ भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ मे नवाव गजुद्दीह बहादुर के राज्य मे प्रतिलिपि की ।

१६२९ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३७५ । ले० काल स० १९५२ । वे० स० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति सं० ७ । पत्र स० १०१ से ३१२ । ले० काल X । वे० स० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३०५ । ले० काल X । वे० स० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२ समयसारकलशाटीका । पत्र स० २०० से ३३२ । आ० ११$\frac{1}{4}$X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल स० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० स० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—बध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नही हैं । पहिले कलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी मे अर्थ है । समयसार टीका श्लोक स० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा । पत्र स० ६२ । आ० १२X६ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४ समयसारवचनिका । पत्र स० २६ । ले० काल X । वे० स० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५ प्रति सं० २ । पत्र स० ३५ । ले० काल X । वे० स० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल X । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७ समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र स० ५१ । आ० १२$\frac{3}{4}$X५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८ प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । ले० काल X । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ३ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १९३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ । क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र । पत्र स० १६ । आ० १०X४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योगशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६४ । ञ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१ समाधितन्त्रभाषा । पत्र स० १३८ से १९२ । आ० १०X४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–योगशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नही हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–योगशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३ प्रति स० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल स० १९४२ । वे० सं० ७४५ । क भण्डार ।

१६४४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सदासुखदास निगोत्या द्वारा शुद्ध किया गया है ।

१६४५ प्रति स० ४ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० स० ७६ । क भण्डार ।

१६४६ समाधितन्त्रभाषा—नाथूराम शास्त्री । पत्र सं० ४१५ । आ० १२¼×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-योग । र० काल सं० १९२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वे० सं० ७६१ । क भण्डार ।

१६४७ प्रति स० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ७६२ । क भण्डार ।

१६४८ प्रति स० ३ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १९३३ द्वि० ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० ७८ । ड भण्डार ।

१६४९ प्रति स० ४ । पत्र सं० १७५ । ले० काल × । वे० सं० ९१७ । च भण्डार ।

१६५० समाधितन्त्रभाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० १८७ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा-गुजराती लिपि हिन्दी । विषय-योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा लिखे गये हैं । सारंगपुर निवासी पं० उधरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१ प्रति स० २ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १७४१ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ११४ । घ भण्डार ।

१६५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ५१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । क भण्डार ।

१६५३ प्रति स० ४ । पत्र सं० २ १ । ले० काल × । वे० सं० ७८२ । क भण्डार ।

१६५४ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १७०१ । वे० सं० १९८ । च भण्डार ।

विशेष—समीरपुर में पं० मानिकराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५५ प्रति स० ६ । पत्र सं० २१२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४२ । छ भण्डार ।

१६५६ प्रति स० ७ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७१८ पौष सुदी ११ । वे० सं० ४४ । ज भण्डार ।

विशेष—पाण्डे ऊधोलाल काला ने केसरलाल जोशी से बहिन बाली के पठनार्थ सीकोर में प्रतिलिपि कर वायी थी । प्रति गुटका साइज है ।

१६५७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० २१८ । ले० काल स० १७८६ माघ सुदी ११ । वे० सं० ३६ । झ भण्डार ।

१६५८ समाधिमरण—— । पत्र सं० ४ । आ० ७½×६½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११२१ ।

१६५९ समाधिमरणभाषा—द्यानतराय । पत्र सं० १ । आ० ८¼×४¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । क भण्डार ।

१६६० प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ७७१ । क भण्डार ।

१६६१ प्रति स० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७८१ । क भण्डार ।

१६६२. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० १०१ । आ० १२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल म० १९३३। पूर्ण। वे० स० ७६६। क भण्डार।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है। टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचद। पत्र स० ७। आ० ७३⁄४×५१⁄२ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० १४७। छ भण्डार।

१६६४ समाधिमरणभाषा । पत्र स० १३ । आ० १३१⁄२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७८४। ङ भण्डार।

१६६५. प्रति स० २। पत्र स० १५। ले० काल स० १८८३। वे० स० १७३७। ट भण्डार।

१६६६ समाधिमरणस्वरूपभाषा । पत्र स० २५। आ० १०१⁄२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १८७८ मगसिर बुदी ४। पूर्ण। वे० स० ४३१। अ भण्डार।

१६६७ प्रति स० २। पत्र स० २५। ले० काल स० १८८३ मगसिर बुदी ११ । वे० स० ८६। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया।

१६६८ प्रति सं० ३। पत्र स० २४। ले० काल स० १८२७। वे० स० ६९९। च भण्डार।

१६६९. प्रति स० ४। पत्र स० १९। ले० काल स० १९३४ भादवा सुदी १। वे० स० ७०० । च भण्डार।

१६७० प्रति स० ५। पत्र स० १७। ले० काल स० १८८४ भादवा बुदी ८। वे० स० २३९। छ भण्डार।

१६७१ प्रति स० ६। पत्र स० २०। ले० काल स० १८५३ पौष बुदी ९। वे० स० १७५। ज भण्डार।

विशेष—हरवश लुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

१६७२ समाधिशतक—पूज्यपाद। पत्र स० १९। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७६४। अ भण्डार।

१६७३ प्रति स० २। पत्र स० १२। ले० काल ×। वे० स० ७६। ज भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१६७४ प्रति स० ३। पत्र स० ७। ले० काल स० १९२४ बैशाख बुदी ६ । वे० स० ७७। ज भण्डार।

विशेष—सगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१६७५ समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र स० ५२। आ० १२१⁄४×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल स० १९३५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वे० स० ७६३। क भण्डार।

१६७६ प्रति सं० २। पत्र स० २०। ले० काल ×। वे० स० ७६५। क भण्डार।

१६७७ प्रति स० ३ । पत्र सं २४ । ले काल सं १८२८ फागुण सुदी १३ । वे सं १७१ । च

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६७८ प्रति स० ४ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे सं १७४ । च भण्डार ।

१६७९. प्रति स० ५ । पत्र सं २४ । ले काल × । वे सं ७८१ । क भण्डार ।

१६८० समाधिशतकटीका" ""। पत्र सं १५ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११२ । ञ भण्डार ।

१६८१ सबोधपचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं ११ । आ ६½×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७८६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१६८२. सबोधपचासिका—रइधू । पत्र सं ५ । आ ११×६ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । र काल × । ले काल स १७११ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे सं २२६ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति—

संवत् १७११ वर्षे मिती पौस वदि ७ शुभ दिने महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी विजयराज्ये साह श्री हंसराज तत्पुत्र साह श्री गेगराज तत्पुत्र त्रय प्रथम पुत्र साह पदमसजी । द्वितीय पुत्र साह श्री कल्याण तृतीय पुत्र साह देवसी । जाति छावड़ा साह श्री रायमलजी का पुत्र पवित्र साह श्री बिहारीदासजी लिखाप्यते ।

दोहड़ा—पूरब श्रावक को कहे, गुण इकवीस निवास ।
सो परतखि पेखिये धंमि बिहारीदास ॥

लिखतं महात्मा ठू भरथी पंडित पदमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मौजे मौहाणाद् मुकाम दिल्ली मध्ये ।

१६८३ सबोधशतक—द्यानतराय । पत्र सं १४ । आ ११×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७८९ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों में चरचा शतक भी है । प्रति दोनों ओर से जली हुई है ।

१६८४ सबोधसत्तरी""। पत्र सं २ से ७ । आ ११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ८८ । ञ भण्डार ।

१६८५. स्वरोदय""। पत्र सं १६ । आ० १ ×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र काल × । ले काल सं १८११ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य जयराम ने टीका लिखी थी ।

१६८६ स्वानुभवदर्पण—नाथूराम । पत्र सं २१ । आ ११×८½ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । विषय–अध्यात्म । र काल सं १९५६ चैत्र सुदी ११ । ले काल × । पूर्ण । वे सं १८७ । छ भण्डार ।

१६८७ हठयोगदीपिका ""। पत्र सं २१ । आ ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ४४४ । च भण्डार ।

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८. अध्यात्मकमलमार्त्तण्ड—कवि राजमल्ल। पत्र स० २ से १२। आ० १०×४३ इञ्च। भापा–सस्कृत। विपय–जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९७५। अ भण्डार।

१६८९. अष्टशती—अकलंकदेव। पत्र स० १७। आ० १२×५३ इञ्च। भापा–सस्कृत। विपय–जैन दर्शन। र० काल ×। ले० काल स० १७९४ मगसिर बुदी ८। पूर्ण। वे० स० २२२। अ भण्डार।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है। प० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६९०. प्रति स० २। पत्र स० २२। ले० काल स० १८७५ फागुन सुदी ३। वे० स० १५९। ज भण्डार।

१६९१. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि। पत्र सं० १९७। आ० १०×४३ इञ्च। भापा-संस्कृत। विषय–जैनदर्शन। र० काल ×। ले० काल स० १७९१ मगसिर सुदी ५। पूर्ण। वे० स० २४४। अ भण्डार।

विशेप—देवागम स्तोत्र टीका है। लिपि सुन्दर है। अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है। पं० चोखचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई। प्रशस्ति—

श्री भूरामल संघ मडनमणि, श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगणगच्छपुस्तकत्रिधा, श्री देवसघाग्रणी सवत्सरे चद्र रध्र मुनीदुमिते (१७९१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्या तिथौ चोखचंदेण विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहस्त्र्यासतप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृतं।

पुस्तकमष्टसहस्त्र्या वं चोखचद्रेण धीमता।
ग्रहीत शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२ प्रति स० २। पत्र स० ३६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४०। ङ भण्डार।

१६९३ आप्तपरीक्षा—विद्यानन्दि। पत्र स० २५७। आ० १२×४३ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–जैन न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १९३६ कार्त्तिक सुदी ६। पूर्ण। वे० स० ५८। क भण्डार।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी। भीगने से पत्र चिपक गये हैं।

१६९४. प्रति स० २। पत्र स० १४। ले० काल ×। वे० सं० ५९। क भण्डार।

विशेष—कारिका मात्र है।

१६९५ प्रति स० ३। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३३। अपूर्ण। च भण्डार।

१६७७ प्रति स० ३ । पत्र सं २४ । ले काल सं १६५८ फागुण सुदी १३ । वे सं १७१ । च
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६७८ प्रति स० ४ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे सं १७४ । च भण्डार ।

१६७६. प्रति स० ५ । पत्र सं २४ । ले काल × । वे सं ७८५ । क भण्डार ।

१६८० समाधिशतकटीका ······ । पत्र सं १५ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ३३५ । ज भण्डार ।

१६८१ सबोधपचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं १६ । आ ६½×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७८६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१६८२. सबोधपचासिका—रइधू । पत्र सं ५ । आ ११×६ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । र काल × । ले काल स १७११ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे सं २२६ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं विहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति—

संवत् १७११ वर्षे मिती पौस वदि ७ शुभ दिने महाराजाधिराज श्री जैसिहजी विजयराज्ये साह श्री हंसराज तत्पुत्र साह श्री गेमराज तत्पुत्र त्रय· प्रथम पुत्र साह पदमसजी । द्वितीय पुत्र साह श्री बमिकर्ण तृतीय पुत्र साह देवसी । जाति सावडा साह श्री रामसजी का पुत्र पंडित साह श्री विहारीदासजी लिखापतं ।

दोहडा—पूरब श्रावक जो कहे, गुण इकवीस निवास ।
सो परतखि पेखिये पंडित बिहारीदास ॥

लिखत महात्मा दू गरसी पंडित परमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मौजे मौहणपुर मुकाम दिल्ली मध्ये ।

१६८३ सबोधशतक—द्यानतराय । पत्र सं १४ । आ ११×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७८९ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्रों में चरचा शतक भी है । प्रति दोनों ओर से जली हुई है ।

१६८४ सबोधसत्तरी ········ । पत्र सं २ से ७ । आ ११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–अध्यात्म । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ८८ । ञ भण्डार ।

१६८५. स्वरोदय ········ । पत्र सं १६ । आ० १ ×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र काल × । ले काल सं १८३३ मंगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं २४१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य उदयराम ने टीका लिखी थी ।

१६८६ स्वानुभवदर्पण—नाथूराम । पत्र सं २१ । आ १३×८½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय–अध्यात्म । र काल सं १६५६ चैत्र सुदी ११ । ले काल × । पूर्ण । वे सं १८७ । छ भण्डार ।

१६८७ हठयोगदीपिका······ । पत्र सं २१ । आ ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–योग । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ४४४ । च भण्डार ।

१७१०. प्रति स० ७ । पत्र स० ७ से १५ । ले० काल सं० १७८६ । अपूर्ण । वे० सं० ५१५ । त्र भण्डार ।

१७११ प्रति सं० ८ । पत्र स० १० ले० काल × । वे० स० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२. ईश्वरवाद । पत्र सं० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय- दर्शन । र० काल × । पूर्ण । वे० स० २ । व्य भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३ गर्भषडारचक्र—देवनदि । पत्र स० ३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२७ । म्ह भण्डार ।

१७१४ ज्ञानदीपक । पत्र स० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष-स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ हैं ।

१७१५ प्रति सं० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २३ । म्ह भण्डार ।

१७१६. प्रति स० ३ । पत्र स० २७ से ६४ । ले० काल सं० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० स० १५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुणो चितधार ।
सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ।।

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत सपूर्णं ।

१७१७ ज्ञानदीपकवृत्ति पत्र स० ८ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ-

नमामि पूर्णचिद्रूपं नित्योदितमनावृत ।
सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिंगितमीश्वर ।।१।।
ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरै ।
स्वरस्नेहन सयोज्य ज्वालयेदुत्तराधरे ।।२।।

१७१८ तर्कप्रकरण । पत्र स० ४० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१६. तर्कदीपिका । पत्र स० १५ । आ० १४×४¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल स० १८३२ माह सुदी १३ । वे० स० २२४ । ज भण्डार ।

१६६६ आप्तमीमांसा—समन्तभद्राचार्य। पत्र सं ८४। आ १२$_{१}$×१ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–जैन न्याय। र काल ×। ले काल सं १६१५ माघमास सुदी ७। पूर्ण। वे सं ६ । क भण्डार।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम देवागमस्तोत्र सटीक अष्टशती दिया हुआ है।

१६६७. प्रति स० २। पत्र सं १ १। ले काल ×। वे सं ११। क भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६६८ प्रति स० ३। पत्र स ३२। ले काल ×। वे सं ६१। क भण्डार।

१६६९. प्रति स० ४। पत्र स १८। ले काल ×। वे सं ६२। क भण्डार।

१७०० आप्तमीमांसालंकृति—विद्यानन्दि। पत्र सं २२६। आ ११×७ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र काल ×। ले काल सं १७६६ भादवा सुदी १५। वे सं १४।

विशेष—इसी का नाम अष्टशती भाष्य तथा अष्टसहस्री भी है। मालपुरा ग्राम में महाराजाधिराज रत्नसिंह जी के शासनकाल में चतुर्भुज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी। प्रति काफी बड़ी साइज की है।

१७०१ प्रति सं २। पत्र सं २२५। ले काल ×। वे सं ८६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति बड़ी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है। प्रति प्रदर्शन योग्य है।

१७०२. प्रति स० ३। पत्र सं १७२। आ १२×५$_{१}$ इञ्च। ले काल सं १७८४ श्रावण सुदी १ । पूर्ण। वे सं ७१। क भण्डार।

१७०३ आप्तमीमांसाभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र सं ६२। आ १२×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय–न्याय। र काल सं १८६६। ले काल १८६ । पूर्ण। वे सं ११५। ख भण्डार।

१७०४ आलापपद्धति—देवसेन। पत्र सं १ । आ १ ३/४×१ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १ । ख भण्डार।

विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राभृतसार ४ से ६ तक सप्तभंग ग्रन्थ और हैं।

प्राभृतसार—मोह तिमिर मार्तंड नियमम्मिर्यच चारित्रदेवेनेदं रचितं।

१७०५ प्रति स० २। पत्र सं ७। ले काल सं २ १ फागुण सुदी ४। वे सं २२० । ख भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में प्राभृतसार तथा सप्तभंगी है। जयपुर में नाथूलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

१७०६ प्रति सं० ३। पत्र स ११। ले काल ×। वे स ७६। ङ भण्डार।

१७०७ प्रति स० ४। पत्र सं ११। ले काल ×। अपूर्ण। वे स ३६। च भण्डार।

१७०८ प्रति स० ५। पत्र स १२। ले काल ×। वे स ३। च भण्डार।

१७०९ प्रति स ६। पत्र सं १२। ले काल ×। वे सं ४। छ भण्डार।

विशेष—मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

१७१०. प्रति स० ७। पत्र स० ७ से १५। ले० काल सं० १७८६। अपूर्ण। वे० सं० ५१५। ञ भण्डार।

१७११ प्रति सं० ८। पत्र स० १० ले० काल ×। वे० स० १८२१। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१७१२. ईश्वरवाद । पत्र सं० ३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। पूर्ण। वे० स० २। ञ भण्डार।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है।

१७१३ गर्भषडारचक्र—देवनदि। पत्र स० ३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२७। भ्क भण्डार।

१७१४ ज्ञानदीपक । पत्र स० २४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६१। ख भण्डार।

विशेष-स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ हैं।

१७१५. प्रति स० २। पत्र स० ३२। ले० काल ×। वे० स० २३। भ्क भण्डार।

१७१६ प्रति सं० ३। पत्र स० २७ से ६४। ले० काल स० १८५६ चैत बुदी ७। अपूर्ण। वे० सं० १५६२। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुणो चितधार।
सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत सपूर्ण।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति पत्र स० ८। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७६। छ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ–

नमामि पूर्णचिद्रूपं नित्योदितमनावृत।
सर्वाकाराभापिभा शक्त्या लिंगितमीश्वर॥१॥
ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरै.।
स्वरस्नेहन सयोज्य ज्वालयेदुत्तराधरै.॥२॥

१७१८ तर्कप्रकरण । पत्र स० ४०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १३५८। अ भण्डार।

१७१९ तर्कदीपिका । पत्र स० १५। आ० १४×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १८३२ माह सुदी १३। वे० स० २२४। ज भण्डार।

१७२० तर्कप्रमाण ....। पत्र सं० ८ से ५०। आ० ११×४- इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण एवं जीर्ण। वे० सं० १९४१। ञ भण्डार।

१७२१ तर्कभाषा—केशव मिश्र। पत्र सं० ४४। आ० १ ×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ७१। ञ भण्डार।

१७२२ प्रति सं० २। पत्र सं० २ से २६। ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी १। वे० सं० २७१। ङ भण्डार।

१७२३ प्रति सं० २। पत्र सं० १। आ० १ ×४½ इञ्च। ले० काल सं० १९१९ ज्येष्ठ बुदी २। वे० सं० २२५। ञ भण्डार।

१७२४ तर्कभाषाप्रकाशिका—बालचन्द्र। पत्र सं० ११। आ० १ ×१ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५११। ञ भण्डार।

१७२५ तर्करहस्यदीपिका—गुणरत्नसूरि। पत्र सं० ११५। आ० १२×१ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२६४। ञ भण्डार।

विशेष—यह हरिभद्र के षड्दर्शन समुच्चय की टीका है।

१७२६ तर्कसंग्रह—अन्नंभट्ट। पत्र सं० ७। आ० ११½×५¾ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८२। ञ भण्डार।

१७२७ प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८९४ भादवा बुदी ५। वे० सं० ४७। ञ भण्डार।

विशेष—रावल मूलराज के शासन में लक्ष्मीराम ने जैसलपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१७२८ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १९१२ माह बुदी ११। वे० सं० ४८। ञ भण्डार।

विशेष—पोथी माणकचन्द लुहाड्या की है। लेखक विजराम पौष बुदी ११ संवत् १९११ यह भी लिखा हुआ है।

१७२९ प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १७११ चैत्र बुदी १२। वे० सं० १७११। ट भण्डार।

विशेष—आमेर के नेमिनाथ चैत्यालय में भट्टारक जगतकीति के शिष्य (छात्र) दोदराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१७३० प्रति सं० ५। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८४१ मंगसिर बुदी ४। वे० सं० १७१८। ट भण्डार।

विशेष—चेला प्रतापसागर पठनार्थ।

१७३१ प्रति सं० ६। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८१२। वे० सं० १७२१। ट भण्डार।

विशेष—सवाई माधोपुर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की।

नोट—उक्त ६ प्रतियो के अतिरिक्त तर्कसग्रह की अ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ६१३, १८३६, २०४६) ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७४) च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १३६) ज भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १७६६, १८३२) और हैं।

१७३२ तर्कसंग्रहटीका ·। पत्र स० ८ । आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४२। व्य भण्डार।

१७३३ तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ। पत्र सं० ८। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५८०। अ भण्डार।

१७३४. दर्शनसार—देवसेन। पत्र स० ५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–दर्शन। र० काल स० ६६० माघ सुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८४८। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे हुई थी।

१७३५ प्रति स० २। पत्र स० २। ले० काल स० १८७१ माघ सुदी ५। वे० स० ११६। छ भण्डार।

विशेष—प० बख्तराम के शिष्य हरवश ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधो के मन्दिर) जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

१७३६ प्रति स० ३। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० २८२। ज भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टव्वा टीका सहित है।

१७३७. प्रति सं० ४। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० ३। व्य भण्डार।

१७३८ प्रति स० ५। पत्र स० ३। ले० काल स० १८५० भादवा बुदी ८। वे० स० ५। व्य भण्डार।

विशेष—जयपुर मे प० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

१७३९ दर्शनसारभाषा—नथमल। पत्र सं० ८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–दर्शन। र० काल स० १९२० प्र० श्रावण बुदी ४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २९५। क भण्डार।

१७४० दर्शनसारभाषा—प० शिवजीलाल। पत्र सं० २८१। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–दर्शन। र० काल स० १९२३ माघ सुदी १०। ले० काल स० १९३९। पूर्ण। वे० सं० २९४। क भण्डार।

१७४१ प्रति सं० २। पत्र स० १२०। ले० काल ×। वे० स० २८९। ङ भण्डार।

१७४२. दर्शनसारभाषा　। पत्र स० ७२। आ० ११¾×५¾ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८०। ख भण्डार।

१७४३. द्विजवचनचपेटा। पत्र स० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ३८२। ज भण्डार।

१७४४ प्रति स० २। पत्र सं० ४। ले काल ×। वे सं १७६८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१७४५ नयचक्र—देवसेन। पत्र सं ४५। आ १ ३×७ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय-सात नयों का वर्णन। र काल ×। ले काल सं १६४१ पौष सुदी १५। पूर्ण। वे सं ३१५। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम सुखबोधार्थ माला पद्धति भी है। उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार में तीन प्रतियां (वे सं ३५१ ३५४ ३५६) व छ भण्डार में एक एक प्रति (वे सं १७७ व १ १) और हैं।

१७४६ नयचक्रभाषा—हेमराज। पत्र सं ५१। आ १२३×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-सात नयों का वर्णन। र काल सं १७२६ फागुण सुदी १। ले काल सं १६१८। पूर्ण। वे सं ३५७। क भण्डार।

१७४७ प्रति स० २। पत्र सं ६। ले काल सं १७२६। वे स ३५८। क भण्डार।

विशेष—७७ पत्र से तत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन है।

नोट—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त क, छ, ख, झ भण्डारों में एक एक प्रति (वे सं ३४५, १८७ ६२१ ८१) क्रमश और हैं।

१७४८ नयचक्रभाषा — । पत्र सं १ १। आ १ ३×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र काल ×। ले काल सं १६४८ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वे सं ३६६। क भण्डार।

१७४६ नयचक्रभाषप्रकाशिनीटीका—निहालचन्द अग्रवाल। पत्र स ११७। आ १२×७३ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-न्याय। र काल सं १८६७। ले काल सं १६४४। पूर्ण। वे सं ३६। क भण्डार।

विशेष—यह टीका कानपुर कैंट में की गई थी।

१७५० प्रति स० २। पत्र सं १ ४। ले काल ×। वे सं ३६१। क भण्डार।

१७५१ प्रति स० ३। पत्र स २२४। ले काल सं १६१८ फागुण सुदी ६। वे सं ३६२। क भण्डार।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी।

१७५२ न्यायकुमुदचन्द्रोदय—भट्ट अकलंकदेव पत्र सं १६। आ १ ३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५७। क भण्डार।

विशेष—पृष्ठ १ से ६ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय ५ परिच्छेद तथा शेष पृष्ठों में भट्टारकसंकलसोमकुमुति प्रव चन प्रवेश है।

१७५३ प्रति स० २। पत्र सं १८। ले काल सं १८१४ पौष सुदी ७। वे सं २७। ख भण्डार।

विशेष—सवाई राम ने प्रतिलिपि की थी।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव। पत्र स० ५८८। आ० १४½×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १९३७। पूर्ण। वे० स० ३९६। क भण्डार।

विशेष—भट्टाकलक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है।

१७५५. न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति। पत्र स० ३ से ८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२०७। अ भण्डार।

नोट—उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३९७, ३९८) घ एव च भण्डार मे एक २ प्रति (वे० स० ३४७, १८० , च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १८०, १८१) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५२) और है।

१७५६ न्यायदीपिकाभाषा—सदासुख कासलीवाल। पत्र स० ७१। आ० १४×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–दर्शन। र० काल स० १९३०। ले० काल स० १९३८ वैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० स० ३४६। ङ भण्डार।

१७५७ न्यायदीपिकाभाषा—सघी पन्नालाल। पत्र स० १९०। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–न्याय। र० काल स० १९३५। ले० काल स० १९४१। पूर्ण। वे० स० ३९९। क भण्डार।

१७५८ न्यायमाला—परमहस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि। पत्र स० ८६ से १२७। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १९०० सावरण बुदी ५। अपूर्ण। वे० स० २०९३। अ भण्डार।

१७५९ न्यायशास्त्र । पत्र स० २ से ५२। आ० १०½×४ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९७६। अ भण्डार।

१७६० प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९४६। अ भण्डार।

विशेष—किसी न्याय ग्रन्थ मे उद्धृत है।

१७६१. प्रति स० ३। पत्र स० ३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५५। ज भण्डार।

१७६२ प्रति सं० ४। पत्र स० ३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८६८। ट भण्डार।

१७६३ न्यायसार—माधवदेव (लक्ष्मणदेव का पुत्र) पत्र स० २८ से ८७। आ० १०½×४½ इच। भाषा सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल स० १७४९। अपूर्ण। वे० स० १३४३ अ भण्डार।

१७६४ न्यायसार । पत्र स० २४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१९। अ भण्डार।

विशेष—आगम परिच्छेद तर्कपूर्ण है।

१७६५ न्यायसिद्धातमञ्जरी—जानकीनाथ। पत्र सं० १४ से ४६। आ० ९½×३½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १७७८। अपूर्ण। वे० स० १५७८। अ भण्डार।

१७६६ न्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्य चूडामणि। पत्र सं २८। आ० ११×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५१। ज भण्डार।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है।

१७६७ न्यायसूत्र......। पत्र सं ४। आ० १ ×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं० १ २१। ञ भण्डार।

विशेष—हेम व्याकरण में से न्याय सम्बन्धी सूत्रों का संग्रह किया गया है। मायानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७६८ पट्टरीति—विष्णुभट्ट। पत्र सं २ से ६। आ १ ५×१½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १२६७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका— इति साधर्म्य वैधर्म्य संग्रहोऽयं क्रियानपि विष्णुभट्टे पट्टरीत्या बालव्युत्पत्तये कृत। प्रति प्राचीन है।

१७६९. पत्रपरीक्षा—विद्यानंदि। पत्र सं १५। आ १२½×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ७८१। अ भण्डार।

१७७० प्रति स० २। पत्र सं १६। ले काल सं १६०७ आसोज बुदी १। वे सं १६४६। ट भण्डार।

विशेष—शेरपुरा में श्री जिन चैत्यालय में सिवामीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१७७१ पत्रपरीक्षा—पात्र केशरी। पत्र सं १७। आ १२½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र काल ×। ले काल सं १६१४ आसोज सुदी ११। पूर्ण। वे सं ४२७। क भण्डार।

१७७२. प्रति स० २। पत्र सं ९। ले काल ×। वे सं ४२८। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

१७७३ परीक्षामुख—माणिक्यनदि। पत्र सं ५। आ १ ×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—न्याय। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ४११। क भण्डार।

१७७४ प्रति स० २। पत्र ६ १। ले काल स १८६६ भादवा सुदी १। वे सं २११। घ भण्डार।

१७७५ प्रति स० ३। पत्र सं १७ से १२१। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २१४। च भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

१७७६ प्रति स० ४। पत्र स ६। ले काल ×। वे सं २८१। छ भण्डार।

१७७७ प्रति स० ५। पत्र सं १४। ले काल सं १६ ८। वे सं १४५। ञ भण्डार।

मैत्र काल संष्टे व्योम क्षिति निधि भूमि ते माद्रमासये)

१७७८. प्रति स० ६। पत्र स ६। ले काल ×। वे सं १७१८। ट भण्डार।

१७७६. परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छाबड़ा। पत्र स० ३०६। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-न्याय। र० काल स० १८६३ आषाढ सुदी ४। ले० काल स० १९४०। पूर्ण। वे० सं० ४५१। क भण्डार।

१७८० प्रति स० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० स० ४५०। क भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर अक्षरो में है। एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं। अन्य पत्रो पर हाशिया में केवल रेखायें ही दी हुई हैं। लिपिकार ने ग्रन्थ अधूरा छोड दिया प्रतीत होता है।

१७८१ प्रति स० ३। पत्र सं० १२४। ले० काल स० १९३० मगसिर सुदी २। वे० स० ५९। घ भण्डार।

१७८२ प्रति सं० ४। पत्र स० १२०। आ० १०½×५¼ इञ्च। ले० काल स० १८७८ श्रावण बुदी ५। पूर्ण। वे० स० ५०५। क भण्डार।

१७८३ प्रति सं० ५। पत्र स० २१८। ले० काल ×। वे० स० ६३९। च भण्डार।

१७८४. प्रति स० ६। पत्र स० १९५। ले० काल सं० १९१६ कार्त्तिक बुदी १४। वे० स० ६४०। च भण्डार।

१७८५ पूर्वमीमासार्थप्रकरण-संग्रह—लोगाक्षिभास्कर। पत्र सं० ९। आ० १२½×६½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। ज भण्डार।

१७८६. प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि। पत्र स० २८८। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४९६। क भण्डार।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है। मूलकर्त्ता वादिदेव सूरि हैं।

१७८७ प्रमाणनिर्णय · । पत्र स० ९४। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४९७। क भण्डार।

१७८८ प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानदि। पत्र स० ९६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १९३४ आसोज सुदी ५। पूर्ण। वे० स० ४९८। क भण्डार।

१७८९ प्रति स० २। पत्र स० ४८। ले० काल ×। वे० स० १७९। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता। मितिराषाढमासस्यपक्षेश्यामलके तिथौ तृतीयायां प्रमाणाग्न्य परीक्षा लिखिता खलु ॥१॥

१७९० प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द। पत्र स० २०२। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-न्याय। र० काल स० १९१३। ले० काल सं० १९३८। पूर्ण। वे० स० ४९९। क भण्डार।

१७९१ प्रति स० २। पत्र स० २१९। ले० काल ×। वे० सं० ५००। क भण्डार।

१७९२. प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन। पत्र स० ६७। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। र० काल ×। ले० काल स० १९३८। पूर्ण। वे० सं० ५०१। क भण्डार।

१७९३ प्रमाणमीमांसा—विद्यानन्दि। पत्र सं० ४ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७९४ प्रमाणमीमांसा…… । पत्र सं० ६२ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९५७ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५२ । क भण्डार ।

१७९५ प्रमेयकमलमार्त्तण्ड—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७९ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७८ । ख भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १३४ तथा २७९ से आगे नहीं है ।

१७९६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १९४२ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० ५१ । क भण्डार ।

१७९७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५४ । ङ भण्डार ।

१७९८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० १९१७ । ट भण्डार ।

विशेष—५ पत्रों तक संस्कृत टीका भी है । सर्वज्ञ सिद्धि मे सर्वज्ञवादियों के खण्डन तक है ।

१७९९ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से १४ । आ० १ ×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४७ । ट भण्डार ।

१८०० प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ भादवा सुदी ७ । वे० सं० ४५२ । क भण्डार ।

विशेष—परीक्षामुख की टीका है ।

१८०१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १८९८ । वे० सं० २३७ । ख भण्डार ।

१८०२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७९७ माघ सुदी १ । वे० सं० १ १ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाईजयपुर में रत्नऋषि ने प्रतिलिपि की थी ।

१८०३ बालबोधिनी—शङ्कर भगवति । पत्र सं० १२ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३९२ । अ भण्डार ।

१८०४ भावदीपिका—कृष्ण शर्मा । पत्र सं० ११ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

विशेष—सिद्धान्तमञ्जरी की व्याख्या दी हुई है ।

१८०५ महाविद्याविडम्बन…… । पत्र सं० १२ से १६ । आ० १ ½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल सं० १५५१ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १९८१ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५५१ वर्षे फागुण सुदी ११ सोमे अद्येह श्रीपत्तनमध्ये एतत् पत्राणि लिखितानि सम्पूर्णानि ।

१८०६. युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ६ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । क भण्डार ।

१८०७. प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । ६०५ । क भण्डार ।

१८०८ युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानन्दि । पत्र स० १८८ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–न्याय । र० काल × । ले० काल स० १६३४ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८०६ प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० ६०२ । क भण्डार ।

१८१० प्रति सं० ३ । पत्र स० १४२ । ले० काल स० १६४७ । वे० स० ६०३ । क भण्डार ।

१८११ वीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र । पत्र स० ७ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल स० १५१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० २५२ । अ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग मे प्रतिलिपि की गई थी । सवत् १५१२ वर्षे आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट दुर्गेऽलिखत ।

१८१२. वीरद्वात्रिंशतिका—हेमचन्द्रसूरि । पत्र स० ३३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७७ । अ भण्डार ।

विशेष—३३ से आगे पत्र नही हैं ।

१८१३ षड्दर्शनवार्त्ता । पत्र स० २८ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५१ । ट भण्डार ।

१८१४. षड्दर्शनविचार । पत्र स० १० । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल स० १७२४ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७४२ । ङ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । श्लोको का हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१८१५ षड्दर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र स० ७ । आ० १२½×५ इञ्च । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । क भण्डार ।

१८१६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ६८ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एव सस्कृत टीका सहित है ।

१८१७. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ७४३ । ङ भण्डार ।

१८१८. प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १५७० भादवा सुदी २ । वे० स० ३६६ । व्य भण्डार ।

१८१६. प्रति स० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८६४ । ट भण्डार ।

१८२० षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति—गुणरत्नसूरि । पत्र सं० १८५ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–दर्शन । र० काल × । ले० काल स० १६४७ द्वि० भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७११ । क भण्डार ।

१८२१ षड्दर्शनसमुच्चयटीका⋯ । पत्र सं ६ । आ १२३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७१ । क भण्डार ।

१८२२ सन्निप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया⋯ ⋯ । पत्र सं ४६ । आ १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र काल × । ले काल सं १७२७ । वे सं ३६७ । क भण्डार ।

१८२३ सप्तनयावबोध—मुनि नेत्रसिंह । पत्र सं ९ । आ १ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन (सात नयों का वर्णन है) । र काल × । ले काल सं १७४५ । पूर्ण । वे सं १४६ । क भण्डार ।

प्रारम्भ— विनय-मुनि-नयस्था सर्वभावा सुविस्था ।
जिनमतइतिगम्या भैतरेया सुरम्या ॥
उपकृतपुरुषारासंसेव्यमाना सदा मे ।
विदधतु सुकृतांते ग्रन्थ मरम्यमाणो ॥१॥
मानवैर्न प्रणम्यायौ सप्तनयावबोधकं
यं मुक्ता येन मार्गेण यच्छन्ति सुधियो जना ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है । गीयते प्रस्यते पर्वोऽनेनेति नय. एतेन प्रापते इति वचनात्⋯ ।

अन्तिम— तत्पुण्यं मुनि-धर्मकर्मनिकरं मोक्ष फलं निर्मलं ।
लब्धं येन जनेन निश्चयनयात् श्री नेत्रसिंहोदितं ॥
स्याद्वादमार्गाभिमिष्णो यतः ये श्रोष्यति शास्त्रं सुनयावबोधं ।
मोक्ष्यंति चैकांतमतं सुबोधं मोक्षं गमिष्यंति सुखेन सम्यक् ॥

इति श्री सप्तनयावबोधं शास्त्रं मुनिनेत्रसिंहेन विरचितं शुभं भवेत् ॥

१८२४ सप्तपदार्थी⋯⋯। पत्र सं ३६ । आ ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन मतानुसार सात पदार्थों का वर्णन है । ले काल × । र काल × । अपूर्ण । वे सं १८८ । क भण्डार ।

१८२५. सप्तपदार्थी—शिवादित्य । पत्र स × । आ १ ३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वैशेषिक न्याय के अनुसार सात पदार्थों का वर्णन । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १६६१ । ट भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८२६ सम्मतितर्क—मूलकर्ता सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं ४८ । आ १ ×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६ १ । क भण्डार ।

१८२७ सारसंग्रह—वरदराज । पत्र सं २ से ७१ । आ १ ३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ८२१ । क भण्डार ।

१८२८. सिद्धान्तमुक्तावलिटीका—महादेवभट्ट । पत्र सं १८ । आ ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र काल × । ले काल सं १७११ । वे सं ११०२ । क भण्डार ।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थ है ।

१८२६. स्याद्वादचूलिका । पत्र सं० १५ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल सं० १६३० कार्तिक बुदी ५ । वे० सं० २१६ । ञ भण्डार ।

विशेष—सागवाड़ा नगर मे ब्रह्म तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था । समयसार के कुछ पाठो का अंश है ।

१८३०. स्याद्वादमञ्जरी—मल्लिषेणसूरि । पत्र सं० ४ । आ० १२३/४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

१८३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १०६ । ले० काल सं० १५२१ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३६६ । ञ भण्डार ।

१८३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । आ० १२×५१/२ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल कारिकामात्र है ।

१८३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६० । ञ भण्डार ।

विषय– पुराण साहित्य

१८३४ अजितपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि। पत्र सं २७१। आ १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं १७११। ले काल सं १७८१ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वे सं २१८। अ भण्डार।

प्रशस्ति—संवत् १७८१ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी १। जहानाबादमध्ये लिखापितं आचार्य हर्षकीर्तिजी ममाराम स्वपठनार्थं।

१८३५. प्रति सं० २। पत्र सं ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे सं १७। ख भण्डार।

विशेष—११वें पर्व के १५वें श्लोक तक है।

१८३६ अजितनाथपुराण—विजयसिंह। पत्र सं १२६। आ ११×४ इंच। भाषा–अपभ्रंश। विषय–पुराण। र काल सं १५ ५ कार्तिक सुदी १५। ले काल सं १५८० पौष सुदी ५। पूर्ण। वे सं २२८। अ भण्डार।

विशेष—सं १५८ में इब्राहीम लोदी के शासनकाल में सिकन्दराबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

१८३७ अनन्तनाथपुराण—गुणभद्राचार्य। पत्र सं ८। आ १ ३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र काल ×। ले काल सं १८८५ भादवा सुदी १। पूर्ण। वे सं ७४। अ भण्डार।

विशेष—उत्तरपुराण से लिया गया है।

१८३८. आगामीत्रेसठशलाकापुरुषवर्णन‥‥‥। पत्र सं ८ से २१। आ १२३×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पुराण। र० काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १८। अ भण्डार।

विशेष–इसमें उत्कृष्टतर पुण्य पुरुषों का भी वर्णन है।

१८३९. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य। पत्र सं ५२७। आ १ ३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र काल ×। ले काल सं १८६४। पूर्ण। वे सं ६२। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर में पं सुखलालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

१८४० प्रति सं० २। पत्र सं ५ ६। ले काल सं १६६४। वे सं १५४। अ भण्डार।

१८४१ प्रति सं० ३। पत्र सं ४। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ ४१। अ भण्डार।

१८४२. प्रति सं० ३। पत्र सं ४८१। ले काल सं १६५। वे सं ५६। क भण्डार।

१८४३ प्रति सं० ४। पत्र सं ४१७। ले काल × वे सं ५७। क भण्डार।

विशेष—देहली में समसाद्दी की कोठी पर प्रतिलिपि हुई थी।

१८४४. प्रति सं० ५ । पत्र स० ४७१ । ले० काल स० १६१४ वैशाख सुदी १० । वे० स० ६ । घ भण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर मे टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५. प्रति स० ६ । पत्र स० ४६१ । ले० काल स० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० स० २५० । ज भण्डार ।

विशेष—सेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड से अपने पुत्र पौत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी । प्रशस्ति काफी बडी है । भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर स० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । कही कही कठिन शब्दो का सस्कृत मे अर्थ भी दिया है ।

१८४६. प्रति स० ७ । पत्र स० ४१६ । ले० काल X । जीर्ण । वे० सं० १४६ । ञ भण्डार ।

१८४७ प्रति स० ८ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १६०४ मगसिर बुदी ६ । वे० स० २५२ । ञ भण्डार ।

१८४८ प्रति स० ६ । पत्र स० ४१० । ले० काल स० १८०४ पौष बुदी ४ । वे० स० ४५१ । ञ भण्डार ।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४६ प्रति स० १० । पत्र स० २०६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८८८ । ट भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २०४२) क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५५) ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६) च भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३०, ३१, ३२) ज भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६८६) और है ।

१८५० आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० २७ । आ० ११$\frac{3}{4}$X५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८०१ । अ भण्डार ।

१८५१ प्रति स० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ८७० । अ भण्डार ।

१८५२. आदिपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ५२ से ६२ । आ० १०$\frac{1}{2}$X४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २६ । च भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३ आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र स० ३२५ । आ० १०$\frac{1}{2}$X५ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल X । ले० काल स० १६३० भादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५३ । क भण्डार ।

१८५४ प्रति स० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच मे कई पत्र नही हैं । प्रति प्राचीन है । साह व्यहराज ने पचमी व्रतोद्यापनार्थ कर्मक्षय निमित यह ग्रन्थ लिखाकर महात्मा खेमचन्द को भेट किया ।

१८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५४ । क भण्डार ।

१८४६ प्रति स० ४ । पत्र सं २१५ । ले० काल सं १७११ । वे सं० २११ । ञ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८४७ आदिपुराण—प० दौलतराम । पत्र सं ४ । आ १५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र काल सं १८२४ । ले काल सं १८८१ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे सं० ५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८४८. प्रति स २ । पत्र सं ७४६ । ले काल × । वे सं १४१ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के तीन पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

१८४९. प्रति स० ३ । पत्र सं ५ ६ । ले काल सं १८२४ आसोज सुदी ११ । वे स १५२ । ङ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ग भण्डार में एक प्रति (वे सं ६) ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे सं १७ १८, ११ ७) च भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ५१८ ५११) छ भण्डार में एक प्रति (वे सं १५५) तथा झ भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ८६ १४६) और हैं । ये सभी प्रतियां अपूर्ण हैं ।

१८५० उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं ४२६ । आ १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११ । क भण्डार ।

१८५१ प्रति स० २ । पत्र सं १८१ । ले काल स १६ ६ आसोज सुदी ११ । वे० सं ८ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच में २ पृष्ठ नये लिखाकर रखे गये हैं । काष्ठासंघी माथुरान्वयी भट्टारक श्री उद्धरसेन की बड़ी प्रशस्ति दी हुई है । जहांगीर बादशाह के शासनकाल में श्रीकुरुजांगलदेशान्तर्गत मसाऊपुर (अलवर) के तिजारा नामक ग्राम में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में श्री मोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१८५२ प्रति स० ३ । पत्र सं ५४ । ले काल सं १६१५ माह सुदी ५ । वे सं ५६ । ञ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिया है ।

१८५३ प्रति स० ४ । पत्र सं १ ६ । ले काल सं १८२७ । वे सं १ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुरमें महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई । सा हेमराज ने संतोषराम के शिष्य बखतराम को भेंट किया । कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं ।

१८५४ प्रति स० ५ । पत्र सं० ४२१ । ले काल सं १८८८ सावन सुदी ११ । वे सं ९ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में भोलाराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१८५५ प्रति सं० ६ । पत्र स ४८४ । ले काल सं १६१७ चैत्र सुदी ६ । वे सं ८१ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जयकीर्ति के शिष्य ब्रह्मकल्याणसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६६. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३६६ । ले० काल स० १७०६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ३२४ । ञ भण्डार ।

विशेष—पाडे गोर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी । कही कही कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुये है ।

१८६७ प्रति सं० ८ । पत्र स० ३७२ । ले० काल स० १७१८ भादवा सुदी १२ । वे० स० २७२ । व्य भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियो के अतिरिक्त अ, क और ङ भण्डार मे एक-एक प्रति (वे० स० ६२४, ६७३, ७७) और हैं । सभी प्रतिया अपूर्ण है ।

१८६८ उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ५७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० १०८० । ले० काल स० १५७५ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ५४ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत उत्तरपुराण का टिप्पण है । लेखक प्रशस्ति—

श्री विक्रमादित्य सवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिक सहस्रे महापुराणविषमपदविवरणसागरसेनसैद्धातान् परिज्ञाय मूलटिप्पणकाचावलोक्य कृतमिद समुच्चयटिप्पणं । अज्ञपातभीतेन श्रीमद् बलात्कारगणश्रीसघाचार्य सत्कवि शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निज दोर्दंडाभिभूतरिपुराज्यविजयिन श्रीभोजदेवस्य ।। १०२ ।।

इति उत्तरपुराणटिप्पणक प्रभाचन्द्राचार्यविरचितसमाप्तं ।। अथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १५७५ वर्षे भादवा सुदी ५ बुधदिने कुरुजांगलदेशे सुलितान सिकंदर पुत्र सुलितानइब्राहिमुराज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीगुणभद्रसूरिदेवा तदाम्नांये जैसवालु चौ० जगसी पुत्र चौ० टोडरमल्लु इद उत्तरपुराण टीका लिखापित । शुभ भवतु । मागल्य दधति लेखक पाठकयो ।

१८६९ प्रति सं० २ । पत्र स० ६१ । ले० काल × । वे० स० १४५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरमेष्ठिप्रणामोपार्जितामलपुण्यनिराकृताखिलमल कलकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पडितेन महापुराण टिप्पणक सतत्र्यधिक सहस्रत्रय प्रमाण कृतमिति ।

१८७०. प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० १८७६ । ट भण्डार ।

१८७१ उत्तरपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० ३१० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा- हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १७८९ मगसिर सुदी १० । ले० काल स० १९२८ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ७४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में खुशालचन्द का ५३ पद्यो मे विस्तृत परिचय दिया हुआ है । बख्तावरलाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२. प्रति स० २ । पत्र सं० २२० ले० काल स० १८८३ वैशाख सुदी ३ । वे० स० ७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४१५। लि० काल सं० १८६६ मंगसिर सुदी ११। वे० सं० ६। च भण्डार।

१८७४ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३७४। लि० काल सं० १८५८ कार्तिक सुदी ११। वे० सं० १८। ख भण्डार।

१८७५ प्रति सं० ५। पत्र सं० ४०४। ले० काल सं० १८६७। वे० सं० १३७। म्ह भण्डार।

विशेष—च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ५२२ ५२३ ५२४) और हैं।

१८७६ उत्तरपुराणभाषा—खुशी पन्नालाल। पत्र सं० ७६३। आ० १२×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १९१ आषाढ सुदी १। लि० काल सं० १९४५ मंगसिर सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ७५। क भण्डार।

१८७७ प्रति सं० २। पत्र सं० ५१५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८। क भण्डार।

विशेष—५१४वां पत्र नहीं है। कितने ही पत्र नवीन लिखे हुये हैं।

१८७८ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४२६। ले० काल ×। वे० सं० ८१। ड़ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ११७ पत्र भीगे हुये से हैं। यह संशोधित प्रति है। क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७६) च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५२१ ५२५) तथा छ भण्डार में एक प्रति और है।

१८७९ चन्द्रप्रभपुराण—हीरालाल। पत्र सं० ११२ आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १९१३ भादवा सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६। क भण्डार।

१८८० जिनेन्द्रपुराण—भट्टारक जिनेन्द्रभूषण। पत्र सं० ६६। आ० ११×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १८४२ फागुण सुदी ७। वे० सं० ६४। च भण्डार।

विशेष—*जिनेन्द्रपुराण के अन्तिम भाग में* ... *हैं।* १६५ अधिकार हैं। पुराण के विभिन्न विषय हैं।

१८८१ त्रिषष्टिस्मृति—महापंडित आशाधर। पत्र सं० २४। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं० १२९२। लि० काल सं० १८१३ शक सं० ११६८। पूर्ण। वे० सं० २३१। च भण्डार।

विशेष—नलकच्छपुर में श्री नेमिजिनचैत्यालय में ग्रन्थ की रचना की गई थी। लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

१८८२ त्रिषष्टिशलाकापुरुषवर्णन...। पत्र सं० १७। आ० १ ×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९६५। ड़ भण्डार।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं हैं।

१८८३ नेमिनाथपुराण—भागचन्द। पत्र सं० १६६। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १९ ७ सावन सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६। छ भण्डार।

१८८४ नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदास। पत्र स० २६२। आ० १४×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६। छ भण्डार।

१८८५. नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—ब्रह्म नेमिदत्त। पत्र स० १६०। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण। जीर्ण। वे स० १४६। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवातत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा द्वितीय शिष्य मडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवा द्वितीयशिष्य मडलाचार्य श्रीविशालकीर्त्तिदेवा तत्शिष्य मडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीसहसकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द तदाम्नाये अगरवालान्वये मुगिलगोत्रे साह जीणा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्रा. पच। प्रथम पुत्र सा खेता तस्य भार्या छानाही। सा जीणा द्वितीय पुत्र सा जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्रा त्रय प्रथम पुत्र सा देइदास तस्य भार्या साताही तयो पुत्रात्रय प्रथमपुत्र चि० सिरवत द्वितीयपुत्र चि० मागा तृतीयपुत्र चि० चतुरा। द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरहो तृतायपुत्र सा चीमा तस्य भार्या मानु। सा जीणा तस्य तृतीयपुत्र सा सातु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा गोविंदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र चि० मोहनदास। सा जीणातस्य चतुर्थपुत्र सा मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्रा त्रय प्रथमपुत्र सा उत्मा तस्य भार्या वनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा टेमा तस्य भार्या मोरवणही। सा जीणा तस्य पचमपुत्र सा सावू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सावलदास तस्यभार्या पूराही एतेषा मध्ये सा मलूतेनेद शास्त्र हरिवशपुराणाख्य ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त मडलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्दतस्यशिष्या अर्जिका शाति श्री योग्य घटापित ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त।

१८८६ प्रति स० २। पत्र स० १२७। ले० काल स० १६६३ आसोज सुदी ३। वे० स० ३८७। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र बिलकुल फटा हुआ है।

१८८७ प्रति स० ३। पत्र सं० १५७। ले० काल स० १६४६ माघ बुदी १। वे० स० १८६। च भण्डार।

विशेष—यह प्रति अम्बावती (आमेर) मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी। प्रशस्ति अपूर्ण है।

१८८८ प्रति स० ४। पत्र स० १८८। ले० काल स० १८३४ पौष बुदी १२। वे० स० ३१। छ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३८) छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५२) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३१३) और हैं।

१८८६. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य। पत्र सं० ८७१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल सं० १७०८ चैत्र सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ६१। अ भण्डार।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साह खोवसी ने प्रतिलिपि कराकर पं० श्री हर्ष कल्याण को भेंट किया।

१८९०. प्रति सं० २। पत्र सं० ५१५। ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १। वे० सं० ५२। ग भण्डार।

विशेष—चैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी।

१८९१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४४५। ले० काल सं० १८८५ भादवा सुदी १२। वे० सं० ८२९। ङ भण्डार।

१८९२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७१८। ले० काल सं० १८१२ सावण सुदी १। वे० सं० १८२। म भण्डार।

विशेष—चौधरियों के चैत्यालय में पं० गोरधनदास ने प्रतिलिपि की थी।

१८९३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४८१। ले० काल सं० १७१२ आसोज सुदी ४। वे० सं० १८१। म भण्डार।

विशेष—अग्रवाल जातीय किसी श्रावक ने प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) तथा ङ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४२१ ४२१) और हैं।

१८९४. पद्मपुराण (रामपुराण)—भट्टारक सोमसेन। पत्र सं० ५२। आ० १३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल संक सं० १६५६ श्रावण सुदी १३। ले० काल सं० १८१८ आसाढ सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० २४। अ भण्डार।

१८९५. प्रति सं० २। पत्र सं० १२१। ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ≡। वे० सं० ४२५। क भण्डार।

विशेष—स्वामी महेन्द्रकीर्ति के प्रसाद से यह रचना की गई ऐसा स्वयं लेखक ने लिखा है। लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

१८९६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८६१ वैसाख सुदी ११। वे० सं० ८। छ भण्डार।

विशेष—आचार्य रत्नकीर्ति के शिष्य नेमिनाथ ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी।

१८९७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ९४७। ले० काल सं० १७९४ आसोज सुदी ११। वे० सं० ११२। ञ भण्डार।

विशेष—सांगानेर में गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई।

१८६८ प्रति सं० ५ । पत्र स० २५७ । ले० काल स० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ । ञ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे गोधो के मन्दिर मे मद्दूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २०४) तथा छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५६) और हैं ।

१८६६ पद्मपुराण—भ० धर्मकीर्त्ति । पत्र स० २०७ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय–पुराण । र० काल स० १८३५ कार्त्तिक सुदी १३ । वे० स० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६०० पद्मपुराण (उत्तरखण्ड) · । पत्र स० १७६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्मपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१६०१. पद्मपुराणभाषा—पं० दौलतराम । पत्र स० ४६६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । र० काल स० १८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल स० १६१८ । पूर्ण । वे० स० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल मे प० शिवदीनजी के समय मे मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर मे चढाया ।

१६०२. प्रति सं० २ । पत्र स० ५४१ । ले० काल स० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६०३ प्रति स० ३ । पत्र स० ४५१ । ले० काल स० १८६७ । वे० सं० ४२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतियो के अतिरिक्त अ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ४१०, २२०३) क और ग भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ४२४, ५३) घ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५५, ५६) च और ज भण्डार मे दो तथा एक प्रति (वे० स० ६२३, ६२४, व २५२) तथा झ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १६, ८८) और हैं ।

१६०४ पद्मपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० २०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल स० १७८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१६०५ प्रति स० २ । पत्र सं० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ऽऽ । वे० स० ७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल मे हुई थी ।

इसी भण्डार मे (वे० सं० ३४१) पर एक अपूर्ण प्रति और है ।

१६०६ पाण्डवपुराण—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं १७१ । आ ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र काल सं १६ ८ । ले काल सं १७२१ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वे सं ६२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री शाकवाटपुर में हुई थी । पत्र ११५ तथा ११७ बाद में सं १८७६ में पुनः लिखे गये हैं ।

१६०७. प्रति स० २ । पत्र सं १ । ले काल सं १८२१ । वे स ४१५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ ब्रह्मश्रीपाल की प्ररणा से लिखा गया था । महाचन्द्र ने इसका संशोधन किया ।

१६०८. प्रति स० ३ । पत्र सं० २ २ । ले काल सं १६११ चैत्र बुदी १ । वे सं ४४५ । क भण्डार ।

विशेष—एक प्रति ट भण्डार में (वे सं २ ६८) और है ।

१६०९. पाण्डवपुराण—भ० श्रीभूषण । पत्र सं २४६ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र काल सं १६५ । ले काल सं १८ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे सं २३७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र जलगये हैं ।

१६१० पाण्डवपुराण—यशःकीर्ति । पत्र सं १४ । आ १ ×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६६ । अ भण्डार ।

१६११ पाण्डवपुराणभाषा—बुलाकीदास । पत्र स १४६ । आ ११×६½ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र काल सं १७५४ । ले काल सं १८१२ । पूर्ण । वे सं ४६२ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ५ पत्रों में बाईस परीषह वर्णन भाषा में है ।

अ भण्डार में इसकी एक अपूर्ण प्रति (वे सं १११८) और है ।

१६१२. प्रति स० २ । पत्र सं १५२ । ले काल सं १८८६ । वे सं ५५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६१३ प्रति सं० ३ । पत्र सं २ । ले काल × । वे सं ४४६ । क भण्डार ।

१६१४ प्रति स० ४ । पत्र सं १४१ । ले काल × । वे सं ४४७ । क भण्डार ।

१६१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं १२७ । ले काल सं १८६ मंगसिर बुदी १ । वे सं ६२१ । च भण्डार ।

१६१६ पाण्डवपुराण—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं २२२ । आ ११×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र काल सं १६२१ वैशाख सुदी २ । ले काल सं १६३७ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वे सं ४६१ । क भण्डार ।

१६१७ प्रति स० २ । पत्र सं १२ । ले काल सं १६४५ कार्तिक सुदी १५ । वे सं ८६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—रामरत्न पाराशर ने प्रतिलिपि की थी ।

ङ भण्डार में इसकी एक प्रति (वे सं ४४८) और है ।

१६१८ पुराणसार—श्रीचन्द्रमुनि। पत्र सं० १००। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। र० काल स० १०७७। ले० काल स० १६०६ आषाढ सुदी १३। पूर्ण। वे० स० २३६। अ भण्डार।

विशेष—आमेर (आम्रगढ) के राजा भारामल के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

१६१६ प्रति स० २। पत्र स० ६६। ले० काल स० १५४३ फाल्गुण बुदी १०। वे० स० ४७१। ङ भण्डार।

१६२०. पुराणसारसग्रह—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र स० १५६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १८५६ मगसिर बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ४६६। क भण्डार।

१६२१ बालपद्मपुराण—प० पन्नालाल बाकुलीवाल। पत्र स० २०३। आ० ८×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १६०६ चैत्र सुदी १५। पूर्ण। वे० स० ११३८। अ भण्डार।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है। कलकत्ते मे रामअधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी।

१६२२ भागवत द्वादशम् स्कंध टीका · । पत्र स० ३१। आ० १४×७½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१७८। ट भण्डार।

विशेष—पत्रो के बीच मे मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है।

१६२३ भागवतमहापुराण (सप्तमस्कध) · · । पत्र सं० ६७। आ० १४½×७ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०८८। ट भण्डार।

१६२४ प्रति स० २ (षष्ठम स्कध) । पत्र स० ६२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०८६। ट भण्डार।

विशेष—बीच के कई पत्र नही हैं।

१६२५ प्रति सं० ३। (पञ्चम स्कंध) । पत्र स० ८३। ले० काल स० १८३० चैत्र सुदी १२। वे० स० २०६०। ट भण्डार।

विशेष—चौबे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६२६ प्रति स० ४ (अष्टम स्कध). । पत्र स० ११ से ४७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६१। ट भण्डार।

१६२७ प्रति सं० ५ (तृतीय स्कध) । पत्र स० ६७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०६२। ट भण्डार।

विशेष—६७ मे आगे पत्र नही हैं।

वे० स० २८८ मे २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत सस्कृत टीका सहित हैं।

१६२८ भागवतपुराण । पत्र स० १४ से ६३। आ० १०½×६ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१०६। ट भण्डार।

विशेष—६०वां पत्र नही है।

१५२९ प्रति स० २। पत्र सं १६। ले काल ×। वे सं २१११। ट भण्डार।

विशेष—द्वितीय सर्ग के तृतीय अध्याय तक की टीका पूर्ण है।

१५३० प्रति स० ३। पत्र सं ४ से १५। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २१७२। ट भण्डार।

विशेष—तृतीय सर्ग है।

१५३१ प्रति सं० ४। पत्र सं ६। लि काल ×। अपूर्ण। वे सं २१७१। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम सर्ग के द्वितीय अध्याय तक है।

१५३२. मल्लिनाथपुराण—सकलकीर्ति। पत्र सं ४२। आ १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल १८८८। वे सं २०८। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स ८३१) और है।

१५३३ प्रति स० २। पत्र सं ३७। ले काल सं १७२ माह सुदी १४। वे सं ५०१। क भण्डार।

१५३४ प्रति स० ३। पत्र सं ४०। ले काल सं १५६१ मंगसिर सुदी ६। वे सं ५७२।

विशेष—उदयचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि करके दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर में रखी।

१५३५ प्रति स० ४। पत्र सं ४२। लि काल सं १८१ फागुण सुदी ३ वे सं १५६। ख भण्डार।

१५३६ प्रति सं० ५। पत्र सं ४५। ले काल स १८८१ सावण सुदी ८। वे स १५६। ग भण्डार।

१५३७ प्रति सं० ६। पत्र सं ४५। ले काल सं १८९१ सावण सुदी ८। वे सं ५८७। ङ भण्डार।

विशेष—जयपुर में शिवलाल गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी।

१५३८. प्रति स० ७। पत्र सं ३१। ले काल सं १८४६। वे सं १२। छ भण्डार।

१५३९. प्रति स० ८। पत्र सं ३२। ले काल सं १७८६ चैत्र सुदी ३। वे सं २१। भ भण्डार।

१५४० प्रति स० ९। पत्र सं ४। ले काल सं १८९१ मादवा सुदी ४। वे सं १५२। म भण्डार।

विशेष—शिवलाल साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

१५४१ मल्लिनाथपुराणभाषा—सेवाराम पाटनी। पत्र सं ६६। आ १२×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६८८। च भण्डार।

१५४२. महापुराण (संक्षिप्त)⋯ । पत्र सं १७। आ ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय-पुराण। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १८६। ङ भण्डार।

१६४३. महापुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ७०४ । आ० १४×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ ।

विशेष—ललितकीर्त्ति कृत टीका सहित है ।

घ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७८) और है ।

१६४४. महापुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ५१४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष–बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये हैं ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण × । पत्र सं० ३२ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ कार्त्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार मे इसकी दो प्रतियां (वे० सं० २३३, २४६,) और हैं ।

१६४६ मुनिसुव्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र सं० १०४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल सं० १६८१ कार्त्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ५७८ । क भण्डार ।

१६४७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल × । वे० सं० ७ । छ भण्डार ।

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८ मुनिसुव्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल सं० १८४५ पौष बुदी २ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ४७५ । व भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने वटेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६४९ लिंगपुराण × । पत्र सं० १३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–जैनेतर पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४७ । ज भण्डार ।

१६५० वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० १५१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ९० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा शम्भुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल १८७१ । वे० सं० ६४६ । क भण्डार ।

१६५२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८६८ सावन सुदी ३ । वे० सं० ३२८ । च भण्डार ।

१६५३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल सं० १८९२ । वे० सं० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे पं० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५ । छ भण्डार ।

१६५५. प्रति सं० ६। पत्र सं० १४१। ले० काल सं० १७८५ कार्तिक सुदी ४। वे० सं० ११। म भण्डार।

१६५६ प्रति स० ७। पत्र सं० १११। ले० काल ×। वे० सं० ४६३। व्य भण्डार।

विशेष—सा० घूमचन्दजी चोखचन्दजी रायचन्दजी की पुस्तक है। ऐसा लिखा है।

१६५७ प्रति स० ८। पत्र सं० १०७। ले० काल सं० १८१२। वे० सं० १८११। ट भण्डार।

विशेष—सवाई माधोपुर में भ० सुरेन्द्रकीर्ति ने आदिनाथ चैत्यालय में लिखवायी थी।

१६५८ प्रति स० ९। पत्र सं० १२१। ले० काल सं० १६६८ भादवा सुदी १२। वे० सं० १८११। ट भण्डार।

विशेष—बागड महादेश के सागपत्तन नगर में भ० सकलचन्द्र के उपदेश से हुंबडज्ञातीय बखियाला गोत्र वाले साह भाका भार्या बाई नायके ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इस ग्रन्थ की घ और च भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६ १२१) व्य भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० १२ ४१) और हैं।

१६५९. वर्द्धमानपुराण—प० केशरीसिंह। पत्र सं० ११८। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। र० काल सं० १८७१ फागुण सुदी १२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६४०।

विशेष—बालचन्दजी छाबड़ा दीवान जयपुर के पौत्र ज्ञानचन्द के आग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना की गई।

च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ६७४ ६७५, ६७६) छ भण्डार में एक प्रति (वे० स० १२१) और हैं।

१६६० प्रति स० २। पत्र स० ७८। ले० काल सं० १७७१। वे० सं० ६७ । छ भण्डार।

१६६१ वासुपूज्यपुराण·······। पत्र सं० ३। आ० १२½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२८। छ भण्डार।

१६६२. विमलनाथपुराण—ब्रह्मकृष्णदास। पत्र सं० ७५। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल सं० १६७४। ले० काल सं० १८१२ वैसाख सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३११। घ भण्डार।

१६६३ प्रति स० २। पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८७ चैत्र सुदी ८। वे० सं० ३१। घ भण्डार।

१६६४ प्रति स० ३। पत्र सं० १०७। ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ सुदी ६। वे० सं० १८। छ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थकार का नाम ब्र० कृष्णजिष्णु भी दिया है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे श्री वैषलासा महानगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत् काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्री रत्नभूषण तत्पट्टे भ० श्री जयकीर्ति ब्र० श्री

मगलाग्रज स्थविराचार्य श्री केशवसेन तत् शिष्योपाध्याय श्री विश्वकीर्त्ति तत्गुरु भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर युक्ते लिखित स्वज्ञानावर्ण कर्मक्षयार्थं । भ० श्री ५ विश्वसेन तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ५ जयकीर्त्ति प० दीपचन्द प० मयाचद युक्तं आत्म पठनार्थं ।

१६६५. शान्तिनाथपुराण—महाकवि अशग। पत्र स० १४३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पुराण। र० काल शक सवत् ६१०। ले० काल सं० १५५३ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ६६। अ भण्डार।

विशेष–प्रशस्ति—सवत् १५५३ वर्ष भादवा वदि बारीस रवौ अद्येह श्री गधारमध्ये लिखित पुस्तक लेखक पाठकयो चिरंजीयात्। श्री मूलसघे श्री कुंदकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाच्छिष्य मडलाचार्य्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थं हुवड न्यातीय श्रे० हापा भार्य्या सपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना स० थावर स० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे तयो पुत्र विद्याधर द्वितीय पुत्र धर्मधर एते सर्वे. शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्त।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानत. ।
अन्नदानात् सुखी नित्य निर्व्याधी भेषजाद्भवेत ॥१॥

१६६६ प्रति सं० २। पत्र स० १४४। ले० काल स० १८६१। वे० स० ६८७। क भण्डार।

विशेष—इस ग्रन्थ की ङ, ञ और ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ७०४, १६, १९३५) और हैं।

१६६७ शान्तिनाथपुराण—खुशालचन्द। पत्र स० ५१। आ० १२½×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५७। छ भण्डार।

विशेष—उत्तरपुराण मे से है।

ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और है।

१६६८. हरिवशपुराण—जिनसेनाचार्य। पत्र स० ३१४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पुराण। र० काल शक स० ७०५। ले० काल स० १८३० माघ सुदी १। पूर्ण। वे० स० २१६। अ भण्डार।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है। जयपुर नगर में प० डूंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ८६८) और है।

१६६९. प्रति स० २। पत्र स० ३२४। ले० काल स० १८३६। वे० स० ८५२। क भण्डार।

१६७० प्रति स० ३। पत्र स० २८७। ले० काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५। वे० स० १३२। घ भण्डार।

विशेष—गोपाचल नगर मे ब्रह्मगंभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी।

१६७१ प्रति स० ४ । पत्र सं २४२ से ५१७ । ले काल सं० १६२५ कार्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे सं ४४० । च भण्डार ।

विशेष—श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ४४१) और है ।

१६७२ प्रति स० ५ । पत्र स २७४ से ३११ ३४१ से ३४१ । ले० काल स १६६१ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे सं ७६ । छ भण्डार ।

१६७३ प्रति स० ६ । पत्र सं २४३ । ले काल सं १६२१ चैत्र सुदी २ । वे स २६ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल में सांगानेर म आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे सं ४४२) छ भण्डार म दो प्रतियां (वे सं ७६ में) और हैं ।

१६७४ हरिवंशपुराण—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १२८ । आ ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र काल × । ले काल स १८८ । पूर्ण । वे सं २११ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर में प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५. प्रति स० २ । पत्र सं २५७ । ले काल सं १६६१ आसोज सुदी ६ । वे सं १११ । घ भण्डार ।

विशेष—देवपल्ली शुभस्थाने पार्श्वनाथ चैत्यालये काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे रामसेनान्वये······ आचार्य कल्याणकीर्तिना प्रतिलिपि कृतं ।

१६७६ प्रति स० ३ । पत्र सं १४६ । ले काल सं १८ ४ । वे सं १११ । घ भण्डार ।

विशेष—देहली में प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदसाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७. प्रति स० ४ । पत्र सं २६० । ले काल सं १७१ । वे सं ४४८ । च भण्डार ।

१६७८. प्रति स० ५ । पत्र सं २५२ । ले काल सं १७८१ कार्तिक सुदी ५ । वे स ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—साह मल्लूकचन्दजी के पठनार्थ मौली ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी । ब जिनदास भ सकलकीर्ति के शिष्य थे ।

१६७९.प्रति सं० ६ । पत्र सं २६८ । ले काल स १५१० पौष सुदी १ । वे सं १११ । अ भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति—सं १५१० वर्षे पौष सुदी २ सोमे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्त्तिदेवा भ० भुवनकीर्त्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषरोन शिष्यमुनि जयनदि पठनार्थं । हूवड़ ज्ञातीय • ।

१६८० प्रति सं० ७ । पत्र स० ४१३ । ले० काल स० १६३७ माह बुदी १३ । वे० सं० ४६१ । व्य भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियो के अतिरिक्त क, ङ एव व्य भण्डारो मे एक एक प्रति (वे० स० ८५१, ६०६, ६७) और हैं ।

१६८१ हरिवशपुराण—श्री भूषण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४६१ । व्य भण्डार ।

१६८२ हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० २७१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल स० १६५७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ८५० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३ हरिवशपुराण—धवल । पत्र स० ५०२ से ५२३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्र श । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६६ । अ भण्डार ।

१६८४. हरिवशपुराण—यश कीर्त्ति । पत्र स० १६६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–अपभ्र श । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल स० १५७३ । फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी ।

अथ सवत्सरेऽतस्मिन् राज्ये सवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ९ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । अलावलखा राज्ये श्री काष्ट । अपूर्ण ।

१६८५ हरिवशपुराण—महाकवि स्वयभू । पत्र स० २० । आ० ६×४½ । भाषा–अपभ्र श । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४५० । च भण्डार ।

१६८६ हरिवशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र स० १०० से २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पुराण । र० काल स० १८२९ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८ । ग भण्डार ।

१६८७ प्रति सं० २ । पत्र स० ५६६ । ले० काल स० १६२६ भादवा सुदी ७ । वे० स० ६०६ (क) ङ भण्डार ।

१६८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ४२५ । ले० काल स० १६०८ । वे० स० ७२८ । च भण्डार ।

१६८९. प्रति स० ४ । पत्र स० ७०६ । ले० काल स० १६०३ आसोज सुदी ७ । वे० स० २३७ । छ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार में तीन प्रतिया (वे० सं० १३४, १५१) ङ, तथा भ भण्डार ने एक एक प्रति (वे० स० ६०६, १४४) और हैं ।

१५५५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८२ कार्तिक सुदी ४ । वे० सं० १५ । घ भण्डार ।

१५५६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४६३ । ङ भण्डार ।

विशेष—ला० धुन्नचन्दजी मोतीचन्दजी रामचन्दजी की पुस्तक है । ऐसा लिखा है ।

१५५७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० १८६१ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भ० सुरेन्द्रकीर्ति ने पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखवायी थी ।

१५५८ प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२१ । ले० काल सं० १६६८ भादवा सुदी १२ । वे० सं० १८६१ । ट भण्डार ।

विशेष—बागड महादेश के सागपत्तन नगर में भ० सकलचन्द्र के उपदेश से हुंबडजातीय वजियाणा गोत्र वाले साह भारा भार्या बाई नायके ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इस ग्रन्थ की घ और ङ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६, १२६) ख भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १२, ४६) और हैं ।

१५५९ वर्द्धमानपुराण—पं० केशरीसिंह । पत्र सं० ११८ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल सं० १८७३ फागुण सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ ।

विशेष—बालचन्दजी छाबड़ा दीवान जयपुर के पौत्र ज्ञानचन्द के आग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना की गई ।

घ भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १७४, १७५, १७६) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) और है ।

१५६० प्रति सं० २ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १७७३ । वे० सं० ६७ । छ भण्डार ।

१५६१ वासुपूज्यपुराण........ । पत्र सं० ६ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । छ भण्डार ।

१५६२ विमलनाथपुराण—ब्रह्म कृष्णदास । पत्र सं० ७५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल सं० १६७४ । ले० काल सं० १८३१ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १३१ । ख भण्डार ।

१५६३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र सुदी ८ । वे० सं० ६५ । घ भण्डार ।

१५६४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० १८ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार का नाम ब्र० कृष्णजिष्णु भी दिया है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे [illegible] श्री [illegible] [illegible] श्री [illegible] [illegible]

[illegible] लिखितं [illegible] श्री [illegible] श्री [illegible] श्री [illegible] श्री

मगलाव्रज स्थविराचार्य श्री केशवसेन तत् शिष्योपाध्याय श्री विश्वकीर्त्ति तद्गुरु भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर युक्ते लिखित स्वज्ञानावर्ण कर्मक्षयार्थं । भ० श्री ५ विश्वसेन तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ५ जयकीर्त्ति प० दीपचन्द प० मयाचद युक्तं आत्म पठनार्थं ।

१६६५ शान्तिननाथपुराण—महाकवि अशग । पत्र स० १४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय–पुराण । र० काल शक सवत् ६१० । ले० काल सं० १५५३ भादवा वुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—सवत् १५५३ वर्प भादवा वदि वारीस रवौ अद्येह श्री गधारमध्ये लिखित पुस्तकं लेखक पाठकयो चिरंजीयात् । श्री मूलसघे श्री कुदकुन्दाचार्य्यान्वये सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाच्छिष्य मडलाचार्य्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थं हुवड न्यातीय श्रे० हापा भार्य्या सपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना स० थावर स० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे तयो पुत्र विद्याधर द्वितीय पुत्र धर्मधर एतै सर्वं शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्त ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानत· ।
अन्नदानात् सुखी नित्य निर्व्याधी भेषजाद्भवेत ॥१॥

१६६६ प्रति स० २ । पत्र स० १४४ । ले० काल स० १८६१ । वे० स० ६८७ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की ङ, ञ और ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, १६, १६३५) और हैं ।

१६६७ शान्तिनाथपुराण—खुशालचन्द । पत्र स० ५१ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण मे से है ।

ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और हैं ।

१६६८. हरिवशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ३१४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल शक स० ७०५ । ले० काल स० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० स० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर मे प० डूंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ८६८) और है ।

१६६९. प्रति स० २ । पत्र स० ३२४ । ले० काल स० १८३६ । वे० सं० ८५२ । क भण्डार ।

१६७० प्रति स० ३ । पत्र स० २८७ । ले० काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० स० १३२ । घ भण्डार ।

विशेष—गोपाचल नगर मे ब्रह्मगभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४२ से २१७ । ले० काल सं० १६२५ कार्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४४७ । च भण्डार ।

विशेष—श्री पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४९) और है ।

१६७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २०४ से १११ १४१ से १४१ । ले० काल सं० १६६१ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

१६७३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४१ । ले० काल सं० १६६१ चैत्र सुदी २ । वे० सं० २६ । म भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल में सांगानेर से आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४९) छ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७६ में) और हैं ।

१६७४ हरिवंशपुराण—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १२८ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पुराण । र० काल × । ले० काल सं० १८८ । पूर्ण । वे० सं० २११ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर में प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४७ । ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २११ । च भण्डार ।

विशेष—देवपल्ली सुभस्थाने पार्श्वनाथ चैत्यालये काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे रामसेनान्वये·····आचार्य कल्याणकीर्तिना प्रतिलिपि हुई ।

१६७६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल सं० १८ ४ । वे० सं० २११ । घ भण्डार ।

विशेष—देहली में प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१७ । ले० काल सं० १७३ । वे० सं० ४४८ । च भण्डार ।

१६७८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६२ । ले० काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ६१ । म भण्डार ।

विशेष—साह मस्तूकचन्दजी के पठनार्थ बाँसी ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी । ब्र० जिनदास भ० सकलकीर्ति के शिष्य थे ।

१६७६.प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६८ । ले० काल सं० १५१७ पौष सुदी ३ । वे० सं० ३११ । म भण्डार ।

विशेष–प्रशस्ति—सं० १५१७ वर्षे पौष सुदी २ सोमे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्त्तिदेवा भ० भुवनकीर्त्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषणेन शिष्यमुनि जयनदि पठनार्थं। हूबड़ ज्ञातीय ।

१६८० प्रति सं० ७। पत्र स० ४१३। ले० काल स० १६३७ माह बुदी १३। वे० स० ४६१। ञ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है।

उक्त प्रतियो के अतिरिक्त क, ङ एव ञ भण्डारो मे एक एक प्रति (वे० स० ८५१, ६०६, ६७) और हैं।

१६८१ हरिवशपुराण—श्री भूषण। पत्र सं० ३४५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४६१। ञ भण्डार।

१६८२ हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र स० २७१। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १६५७ चैत्र सुदी १०। पूर्ण। वे० स० ८५०। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है।

१६८३ हरिवशपुराण—धवल। पत्र स० ५०२ से ५२३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—अपभ्र श। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६६। अ भण्डार।

१६८४. हरिवशपुराण—यश कीर्त्ति। पत्र स० १६६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—अपभ्र श। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १५७३। फागुण सुदी ६। पूर्ण। वे० स० ६८।

विशेष—तिजारा ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी।

अथ सवत्सरेऽस्मिन् राज्ये सवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने। अलावलखा राज्ये श्री काष्ट । अपूर्ण।

१६८५ हरिवशपुराण—महाकवि स्वयभू। पत्र स० २०। आ० ६×४½। भाषा—अपभ्र श। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४५०। च भण्डार।

१६८६ हरिवशपुराणभाषा—दौलतराम। पत्र स० १०० से २००। आ० १०×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पुराण। र० काल स० १८२९ चैत्र सुदी १५। ले० काल × । अपूर्ण। वे० स० ६८। ग भण्डार।

१६८७ प्रति स० २। पत्र स० ५६६। ले० काल स० १६२६ भादवा सुदी ७। वे० स० ६०६ (क) ङ भण्डार।

१६८८ प्रति स० ३। पत्र स० ४२५। ले० काल स० १६०८। वे० स० ७२८। च भण्डार।

१६८६. प्रति स० ४। पत्र स० ७०६। ले० काल स० १६०३ आसोज सुदी ७। वे० स० २३७। छ भण्डार।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० १३४, १५१) ङ, तथा झ भण्डार ने एक एक प्रति (वे० स० ६०६, १४४) और हैं।

११६० हरिवंशपुराणभाषा—खुशालचन्द्र। पत्र सं २ ७। आ १४×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पुराण। र० काल सं १७८ वैशाख सुदी १। ले काल सं १८६ पूर्ण। वे सं १७२। ध भण्डार।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है।

११६१ प्रति सं० २। पत्र सं २ २। ले काल सं १८ ५ पौष बुदी ८। अपूर्ण। वे सं० १२४। ङ भण्डार।

विशेष—१ से १७२ तक पत्र नहीं हैं। जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

११६२ प्रति सं० ३। पत्र सं २१४। ले काल ×। वे सं ४११। ञ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के ४ पत्रों में मनोहरदास कृत नरक दुख वर्णन है पर अपूर्ण है।

११६३ हरिवंशपुराणभाषा…… "। पत्र सं १५। आ १२×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पुराण। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६ ७। ङ भण्डार।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति। (वे सं ६ ८) और है।

११६४ हरिवंशपुराणभाषा…… ……। पत्र सं १८१। आ ८३×४२ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य (राजस्थानी)। विषय–पुराण। र काल ×। ले० काल सं १६७१ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे सं १ २२। ध भण्डार।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र फटा हुआ है।

आदिभाग—अथ कथा सम्बन्ध लीखीयइ छई। तेणं कालेणं तणं समएणं समणी भगवत महावीरे रायगेहे समासरीये तहीज काल तेही ज समउ ते श्रमणंत श्री वार वर्द्धमानं राजग्रही नगरी आवी समोसर्या। ते किसा छइ वीतराग चउत्रीस अतिसइ करी सहित पइंतीस वचन वाणी करी सोभित चउदइसह साध छत्रीस सहस परवर्या। अनेक भविक जीव प्रतिबोधता श्रीराजग्रही नगरी आवी समोसरया। तिवारइं वनमाली आवी राजा श्री सेणिक कनइ। वधामणी दिधी। सामी आज श्री वर्द्धमान आवी समोसरथा छइ। सेणीक ते वात सांभली नई वधामणी आपी। राजा आरण महाहर्षवंत थकउ। वांदवानी सामग्री करावण लागउ। ते कि सामां मलीसा ……कीमउ। पहिड आनंद भेरि उछली जय जयकार थइ थउ। भवीक लोक सघलाइ आनंद पामिया। धन धन कहुता लोक सघलाई वांदिवा चाल्या। पछइ राजा आगुक सिणगारक हस्ती सिणगारी उपरि चडठउ। माथइं सेत छत्र धराउ। उभइ पास चामर ढालइ छइ। बंदी जण जइ जार करइ छई। मंगिण जण बंदिर बोलइ छइ। पांच शब्द वाजिंत्र वाजते। चतुरंगिनी सेना सजकरी। राम राणा मंडलीक मुक्तव्यनी सामंत चउरंगिया…… ।

एक अन्य उदाहरण– पत्र १६८

तिणी अवाध्या नउ हेमरथ राजा राज पाले छई। तेह राजा नइ धारणी राणी छइ। तेह नउ साथ धर्म्म उ१'र बगउ छई। तेहनी कुखि तें कुंमर पराइ उगो। तेह नउ नाम कुबुकीत आणिवउ। ते पुत्र कुमर बाले सिस समान छई। इम करता ते कुंमर जोवन भरिया। तिवारइं पिताई तेह नई राज भार आल्यउ। तिवारइं तेम आला मन भोगवता काल अतिक्रमइं छइ। वली जिण नउ धर्म घणु करइ छइ।

पत्र सख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा साभलउ । तिणी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउ । पछइ मरी रोइ सर्प्प थयउ । सयम्भू रमणि द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ । पछई वली तिहा थको मरण पाम्यो । बीजै नरक गई तिहा तिन सागर आयु भोगवी । छेदन भेदन तापन दुख भोगवी । वली तिहा थकी ते निकलियउ । ते जीव पछइ चपा नगरी माहि चाडाल उइ घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल अवतार पाम्यउ । पछइ ते एक वार वन माहि तिहा उबर वीणीवा लागी ।

अन्तिम पाठ—पत्र सख्या ३८०–८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभवण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउं । पछइ देस विदेस नगर पाटणना भवीक लोक प्रवोधीया । वलीत्रिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप सपनीयउ दान दीयउ । पछइ गिरनार आव्या । तिहा समोसर्या । पछइ घणा लोक सवोध्या । पछइ सहस वरस आउषउ भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाणवी । ईणी परइ घणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग धरी नइ । समो सरण त्याग कीयउ । तिवारइ ते घातिया कर्म षय करी चउदमइ गुणठाणइ रह्या । तिहा थका मोष सिद्धि थया । तिहा आठ गुण सहित जाणवा । वली पाच सइ छत्रीस साव साथइ मूकति गया । तिणी सामी अचल ठाम लाधउ । तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा सूखनासवी भागी थया । हिवइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते सोघ तिरती कीज्यो । वली सामनी साखि । जे काई मइ आपणी बुध थकी । हरवस कथा माहि अघ कोउ छइ लीखीयउ होइ । ते मिछामि दुकड था ज्यो ।

सबत् १६७१ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथौ । लिखित मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये । विज शिष्यणी आर्या सहजा पठनार्थं ।

काव्य एव चरित्र

१९९५ अकलङ्कचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० १२ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—जैनाचार्य अकलङ्क की जीवन कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । ख भण्डार ।

१९९६ अकलङ्कचरित्र…… । पत्र सं० १२ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । क भण्डार ।

१९९७ अमरुशतक…… । पत्र सं० ६ । आ० १ ३×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ख भण्डार ।

१९९८. ऋषभसंधेराख्यमबन्ध…… । पत्र सं० ८ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । ख भण्डार ।

१९९९ ऋषभनाथचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १११ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १५११ पौष बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० सं० २४ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम आदिपुराण तथा वृषभनाथ पुराण भी है ।

प्रशस्ति— १५११ वर्षे पौष बुदी ऽऽ रवौ । श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवा भ० श्री ६ पद्मनंदिदेवा भ० श्री ६ सकलकीर्तिदेवा भ० श्री ६ भुवनकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवा भ० श्री ६ विजयकीर्तिदेवाः भ० श्री ६ शुभचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ सुमतिकीर्तिदेवा स्थविराचार्य श्री ६ चंद्रकीर्तिदेवास्तत्शिष्य श्री ५ श्रीवंत ते शिष्य ब्रह्म श्री भास्करस्येदं पुस्तकं पठनार्थं ।

२००० प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८८ । वे० सं० १५ । ख भण्डार ।

इस भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५) और है ।

२००१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सन सं० १६६७ । वे० सं० ५२ । छ भण्डार ।

एक प्रति वे० सं० १६६ की और है ।

२००२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १७१७ फागुण बुदी १ । वे० सं० ६४ । ड भण्डार ।

२००३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८२ । ले० काल सं० १७८३ ज्येष्ठ बदी ६ । वे० सं० ६१ । ड भण्डार ।

२००४ प्रति सं० ६ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १८५५ प्र० श्रावण सुदी ८ । वे० सं० ३० । छ भण्डार ।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२००५ प्रति सं० ७ । पत्र स० १८१ । ले० काल स० १७७४ । वे० स० २८७ । ञ भण्डार ।

इसके अतिरिक्त ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १७६) तथा ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१८३) और हैं ।

२००६. ऋतुसंहार—कालिदास । पत्र स० १३ । आ० १०×३½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल स० १६२४ आसोज सुदी १० । वे० स० ४७१ । ञ भण्डार ।

विशेष– प्रशस्ति—सवत् १६२४ वर्षे अश्वनि सुदि १० दिने श्री मलधारगच्छे भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव सूरि तत्शिष्यभावदेवेन लिखिता स्वहेतवे ।

२००७ करकण्डुचरित्र—मुनि कनकामर । पत्र स० ६१ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १०२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है ।

२००८ करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८४ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १६११ । ले० काल स० १६५६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २७७ । अ भण्डार ।

विशेष– प्रशस्ति—सवत् १६५६ वर्षे मागसिर सुदि ६ भौमे सोझत्रा (सोजत) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासघे भ० श्री विश्वसेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषण तत्शिष्य भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तत्शिष्य ब्र० नेमसागर स्वहस्तेन लिखित ।

आचार्यावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्त्तिजी तत्शिष्य आचार्य श्री हर्षकीर्त्तिजी की पुस्तक ।

२००९. प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० २८४ । ञ भण्डार ।

२०१० कविप्रिया—केशवदेव । पत्र स० २१ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–काव्य (शृङ्गार) । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११३ । ढ भण्डार ।

२०११ कादम्बरीटीका । पत्र सं० १५१ से १८३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९७७ । अ भण्डार ।

२०१२. काव्यप्रकाशसटीक ·· । पत्र स० ८३ । आ० १०½×४½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९७८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नही दिया है ।

२०१३ किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि । पत्र स० ४६ । आ० १०½×४½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९०२ । अ भण्डार ।

२०१४ प्रति स० २ । पत्र सं ३१ से ६३ । ले काल × । अपूर्ण । वे स ६५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१५ प्रति स० ३ । पत्र सं ८७ । ले काल सं १५१ मादवा बुदी ८ । वे सं १२२ । ङ भण्डार ।

२०१६ प्रति स० ४ । पत्र सं ६६ । ले काल सं १५४२ भादवा बुदी । वे सं १२३ । ङ भण्डार ।

विशेष—सांकेतिक टीका भी है ।

२०१७ प्रति स० ५ । पत्र सं १७ । ले काल सं १८१७ । वे सं १२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में माधोसिंहजी के राज्य में पं घुमानीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२०१८ प्रति स० ६ । पत्र सं ८१ । ले काल × । वे सं ६६ । च भण्डार ।

२०१९ प्रति सं० ७ । पत्र सं १२० । ले काल × । वे सं ६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति मल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे सं ६१८) ख भण्डार मे एक प्रति (वे सं १५) च भण्डार में एक प्रति (वे सं ७) तथा छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे सं ६४ २६१ २६२) और हैं ।

२०२० कुमारसंभव—महाकवि कालिदास । पत्र सं ४१ । आ १२×५, इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र काल × । ले० काल सं० १७६८१ मंगसिर सुदी २ । पूर्ण । वे० सं ६१८ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ चिपक जाने से अक्षर खराब होगये हैं ।

२०२१ प्रति सं० २ । पत्र सं २१ । ले काल सं १७२७ । वे सं १८४६ । जीर्ण । अ भण्डार ।

२०२२ प्रति स० ३ । पत्र सं २७ । ले काल × । वे सं १२५ । ङ भण्डार । अष्टम सर्ग पर्यंत ।

इनके अतिरिक्त अ एवं क भण्डार में एक एक प्रति (वे सं ११८ १६१) च भण्डार में दो प्रतियां (वे सं ७१, ७२) ञ भण्डार में दो प्रतियां (वे सं ११८ ६१) तथा ट भण्डार में तीन प्रतियां (वे सं २ ४२ १२१ २१ ४) और हैं ।

२ २३ कुमारसम्भवटीका—कनकसागर । पत्र स २२ । आ १ ×४, इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २ १८ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२०२४ क्षत्र-चूडामणि—वादीभसिंह । पत्र स ४२ । आ ११×४२ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र काल सं ११८७ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वे सं १६१ । क भण्डार ।

विशेष—इसका नाम जीवंधर चरित्र भी है ।

२ २५ प्रति स० २ । पत्र सं ४१ । ले काल सं १८६१ भादवा सुदी ६ । वे सं ७१ । च भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्दजी ने मान्नालाल वैद्य के पास प्रतिलिपि की थी ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है।

२०२६ प्रति सं० ३। पत्र स० ४३। ले० काल स० १६०५ माघ सुदी ५। वे० स० ३३२। व्य भण्डार।

२०२७ खण्डप्रशस्तिकाव्य । पत्र स० ३। आ० ८३×५३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल स० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ५। पूर्ण। वे० स० १३१४। अ भण्डार।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर मे अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी) मे प्रतिलिपि की थी।

ग्रन्थ मे कुल २१२ श्लोक है जिनमे रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है। वैसे प्रारम्भ मे रघुकुल की प्रशसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने मे राम के पराक्रम का वर्णन है।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खडप्रशस्ति काव्यानि सपूर्णा।

२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि। पत्र स० २३। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १३५। ङ भण्डार।

विशेष—२१ व २२वा पत्र नही है।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव। पत्र सं० २। आ० ११३×७३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२२। क भण्डार।

विशेष—झालरापाटन मे गौड ब्राह्मण पडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२०३० प्रति स० २। पत्र सं० ३१। ले० काल स० १८४४। वे० स० १८२६। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० १७४६) और है।

२०३१. गोतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र। पत्र स० ५३। आ० ६३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत विषय-चरित्र। र० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१। अ भण्डार।

२०३२ प्रति स० २। पत्र स० ६०। ले० काल स० १८३६ कार्तिक सुदी १२। वे० स० १३२। क भण्डार।

२०३३ प्रति सं० ३। पत्र स० ६०। ले० काल स० १८९४। वे० स० ५२। छ भण्डार।

२०३४ प्रति स० ४। पत्र सं० ५३। ले० काल सं० १९०९ कार्तिक सुदी १२। वे० स० २१। झ भण्डार।

२०३५ प्रति स० ५। पत्र स० ३०। ले० काल ×। वे० स० २५४। व्य भण्डार।

२०३६ गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० १०८। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल स० १९४० मगसिर बुदी ५। पूर्ण। वे० स० १३३। क भण्डार।

विशेष—मूलग्रन्थकर्त्ता आचार्य धर्मचन्द्र है। रचना सवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नही होता।

२०१४ प्रति सं० २। पत्र सं० ३१ से ६१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५। छ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२०१५ प्रति सं० ३। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १५३ भादवा बुदी ८। वे० सं० १२२। क भण्डार।

२०१६ प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८४२ भादवा बुदी। वे० सं० १२१। क भण्डार।

विशेष—सांकेतिक टीका भी है।

२०१७ प्रति सं० ५। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १८१७। वे० सं० १२४। क भण्डार।

विशेष—जयपुर नगर में माधोसिंहजी के राज्य में पं० गुमानीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२०१८ प्रति सं० ६। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० ६६। ख भण्डार।

२०१९ प्रति सं० ७। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ६४। छ भण्डार।

विशेष—प्रति मल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३८) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७) तथा छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६४ २६१ २६२) और हैं।

२०२० कुमारसंभव—महाकवि कालिदास। पत्र सं० ४१। आ० १२×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १७८३ मंगसिर सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६६६। क भण्डार।

विशेष—पुढे चिपक जाने से अक्षर खराब होगये हैं।

२०२१ प्रति सं० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १०४०। वे० सं० १८४६। जीर्ण। ख भण्डार।

२०२२ प्रति सं० ३। पत्र सं० २७। ले० काल ×। वे० सं० १२५। क भण्डार। पहम सर्ग पर्यंत।

इसके अतिरिक्त क एवं ख भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ११८ ११३) च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७१, ७२) छ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १३८ ३१) तथा ट भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० २ ५२ १२१ २१४) और हैं।

२०२३ कुमारसंभवटीका—कनकसागर। पत्र सं० ९२। आ० १×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३८। क भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

२०२४ क्षत्र-चूडामणि—वादीभसिंह। पत्र सं० ४२। आ० ११×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल सं० १६८७ सावण सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १३१। क भण्डार।

विशेष—इसका नाम जीवंधर चरित्र भी है।

२०२५ प्रति सं० ... पत्र सं० ४१। ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ६। वे० सं० ७१। च भण्डार।

विशेष—दीवान अमरचन्दजी ने मानुमल वैद के पास प्रतिलिपि की थी।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है।

२०२६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४३ । ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५ । वे० स० ३३२ । भण्डार ।

२०२७ खण्डप्रशस्तिकाव्य । पत्र स० ३ । आ० ८३×५३ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–का। र० काल × । ले० काल स० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर मे अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ मे कुल २१२ श्लोक है जिनमे रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है। वैसे ।र रघुकुल की प्रशसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने मे राम के पराक्रम का वर्णन

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खडप्रशस्ति काव्यानि सपूर्णा ।

२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र स० २३ । आ० १०३×४३ इञ्च । सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५ । ङ भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वा पत्र नही है ।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र सं० २ । आ० ११३×७३ इ च । भाषा–संस्कृत । काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—झालरापाटन मे गौड ब्राह्मण पडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३० प्रति स० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल स० १८४४ । वे० स० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० १७४६) और है ।

२०३१. गौतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र स० ५३ । आ० ६३×५ इञ्च । सस्कृत विषय–चरित्र । र० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१ । अ भण्डार ।

२०३२. प्रति स० २ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८३९ कार्तिक सुदी १२ । वे० स० १३२ । भण्डार ।

२०३३ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८६४ । वे० स० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४ प्रति स० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक सुदी १२ । वे० स० २१ । भण्डार ।

२०३५ प्रति स० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० २५४ । व्य भण्डार ।

२०३६ गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १०८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १९४० मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्त्ता आचार्य धर्मचन्द्र है । रचना सवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नही होता ।

२०३७ घटकर्परकाव्य—घटकर्पर। पत्र सं ४। आ १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र काल ×। ले० काल सं १८१४। पूर्ण। वे सं० २१। श्र भण्डार।

विशेष—चम्पापुर में शान्तिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ लिखा गया था।

श्र और क भण्डार में इसकी एक एक प्रति (वे सं १४८ ७५) और है।

२०३८ चन्द्रनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं ११। आ १ ×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल सं १६२५। ले काल स १८११ भादवा सुदी ११। पूर्ण। वे सं १८१। श्र भण्डार।

२०३९ प्रति स० २। पत्र सं १४। ले काल सं १८२५ माह सुदी १। वे सं १७२। क भण्डार।

१०४० प्रति स० ३। पत्र सं ३३। ले काल सं १८६१ द्वि० श्रावण। वे सं० १६७। ङ भण्डार।

२०४१ प्रति स० ४। पत्र सं ४। ले काल सं १८३७ माह सुदी ७। वे सं ४५। छ भण्डार।

विशेष—सांगानेर मे पं सवाईराम गोधा के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

२०४२ प्रति स० ५। पत्र सं २७। ले काल सं १८६१ भादवा सुदी ८। वे सं ५८। छ भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ५७) और है।

२०४३ प्रति स० ६। पत्र सं १८। ले काल सं १८३२ मंगसिर सुदी २। वे सं ५। ञ भण्डार।

२०४४ चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनन्दि। पत्र सं ११। आ १२×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल सं १५८६ पौष सुदी १२। पूर्ण। वे सं ६१। श्र भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है।

२०४५ प्रति स० २। पत्र सं १८६। ले काल सं १५४२ मंगसिर सुदी १। वे सं १७४। क भण्डार।

२०४६ प्रति सं० ३। पत्र स ८७। ले काल सं० १५२४ भादवा सुदी १। वे सं ११। घ भण्डार।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री खण्डेलवाल वंशे विबुध मुनि कलाकंदपदे प्रसिद्धे क्ष्मापालामीति साधु सकलगुणनिधानलालनैक प्रवीणः पत्र-स्यात्तस्यपुत्रे जिनवर वचनाराधको दानशालीनेन्दं चन्द्रनाम्ना लिखित्वा चन्द्रप्रभस्य चारु सं १५२४ वर्षे भादवा वदी ७ ग्रन्थ लिखितं धर्महेतवे लिखितं।

२०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ मे ७४ । ले० काल सं० १७८५ । अपूर्ण । वे० सं० २१७ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रविवासरे श्रीमूलसघे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्र देवातत्शिष्य ब्र० सजेयति इद शास्त्रं ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्त लिखायित्वा ठीकुरदारस्थानो साधु लि.

इन प्रतियो के अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६४६) च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० ६०, ८८) ज भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० १०३, १०४, १०५) ञ एव ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० १६४, २१६०) और हैं ।

२०४८. चन्द्रप्रभकाव्यपंजिका—टीकाकार गुणनन्दि । पत्र सं० ८६ । आ० १०×४ इ च । सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ११ । ञ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता आचार्य वीरनदि । सस्कृत मे सक्षिप्त टीका दी हुई है । १८ सर्गो मे है ।

२०४९ चद्रप्रभचरित्रपञ्जिका । पत्र स० २१ । आ० १०३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६४ आसोज सुदी १३ । वे० स० ३२५ । ज भण्डार ।

२०५० चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० १०६ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश विषय-आठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ सवत् १६४१ वर्षे पोह श्रुदि एकादशी बुधवासरे काष्ठासंघे मा (अपूर्ण)

२०५१ चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र स० ६५ । आ० ११×४१/२ इञ्च । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८०४ कार्त्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—वसवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे आचार्यवर श्री मेरूकीर्त्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के नदराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२. प्रति सं० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल सं० १८३० कार्त्तिक सुदी १० । वे० स० ७३ । भण्डार ।

२०५३. प्रति स० ३ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० स० १६६ । भण्डार ।

इस प्रति के अतिरिक्त ख एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४८, २१६६) और हैं ।

२०५४. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर (शिष्य धर्मचन्द्र) । पत्र सं० १४६ । आ० १०१/२×४३/४ इ भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल स० १७२७ भादवा सुदी ६ । ले० काल सं० १८८१ सावण बुदी ६ । पूर्ण वे० स० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

ॐ नमः । श्री परमात्मने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।

श्रियं चंद्रप्रभो नित्यां चंद्र चक्षन्द्र लांछनः ।
मम कुमुदचंद्रौघरचंद्रप्रभो जिनः क्रियात् ॥१॥
कुमार्गमवतो पूजकमतारणहेतवे ।
येन स्वपाराव्सुरोसमैर्द्ध मपीतः प्रकाशितः ॥२॥
युगादौ येन तीर्थेशापर्मतीर्थः प्रवर्तितः ।
तमहं वृषभ वंदे वृषदं वृषनामकं ॥३॥
पञ्च तीर्थंकरः कामो मुक्तिप्रियो महायशी ।
शांतिनाथः सदा शान्ति करोतु मः प्रशांति कृत् ॥४॥

अन्तिम भाग—

मुहुर्लेपाभम (१७२१) यायपरांक प्रमे वर्षेप्रीते
नवमिदिवसेमासि माद्र सुयोगे ।
रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि
नाभेयस्वप्रदरमवने भूरि शोभानिवासे ॥८५॥
रम्यं चतुः सहस्राणि पंचदशयुतानि वै
मनुष्टुपैः समाख्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणतः ॥८६॥

इति श्री मंडलसूरिश्रीभूषण तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचंद्रशिष्य कवि दामोदरविरचिते श्रीचन्द्रप्रभ चरिते निर्वाण गमन वर्णनं नाम सप्तविंशति नामः सर्ग ॥२७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्तं । संवत् १८४१ श्रावण द्वितीय कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे सवाई जयनगरे छोवराज पाटोदी कृत मंदिरे लिखतं पं चोखचंदस्य शिष्य सुखरामजी तस्य शिष्य वस्तारामदासस्य तत् शिष्य स्युयालचंद्र एन स्वहस्तेनपूर्णीकृतं ॥

२०५५ प्रति सं० २ । पत्र सं १८२ । ले काल सं १८९२ पौष बुदी १४ । वे सं १७५ । क भण्डार ।

२०५६ प्रति स० ३ । पत्र सं २ १ । ले काल सं १८१४ मगाव सुदी २ । वे सं २५५ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्दजी शिष्य पं रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२०५७ चन्द्रप्रभचरित्रभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं ११ । सा १२$_x$×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र काल १६वी शताब्दी । ले काल सं १६४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे स १६६ । क भण्डार ।

विशेष —केवल दूसरे सर्ग में आये हुये न्याय प्रकरण के श्लोकों की भाषा है ।

इसी भण्डार में तीन प्रतियां (वे० स १६६, १६७ १६८) और हैं ।

२०५८. चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्त्ति । पत्र स० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हि
विषय-सेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । र० काल स० १६६२ । ले० काल स० १७३३ कार्त्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । स० ८७४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६ से आगे के पत्र नही हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । वहादुरपुर ग्राम मे प० अमीचन्द ने लिपि की थी ।

आदिभाग— ॐ नमः सिद्धेभ्य श्री सारदाई नमः ।।

आदि जिनआदिस्तवु अति श्री महावीर ।
श्री गौतम गणधर नमु वलि भारति गुणगभीर ।।१।।

श्री मूलसघमहिमा घणो सरस्वतिगछ शृ गार ।
श्री सकलकीर्त्ति गुरु अनुक्रमि नमुश्रीपद्मनदि भवतार ।।२।।
तस गुरु भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।
चारुदत्त श्रेष्ठीतणो प्रबंध रचु नमी पाय ।।३।।

अन्तिम— ... .. भट्टारक सुखकार ।।

सुखकर सोभागि अति विचक्षण वदि वारण केशरी ।
भट्टारक श्री पद्मनदिचरणकज सेवि हरि ।।१०।।
एसहु रे गछ नायक प्रणमि करि
देवकीरति रे मुनि निज गुरु मन्य धरी ।
धरिचित्त चरणे नमि कल्याणकीरति इम भणीं ।
चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रचिमि आदर घणि ।।११।।

रायदेश मध्यि रे भिलोड वसि
निज रचनायि रे हरिपुर निहसि
हसि अमर कुमारनितिहा धनपति वित्त विलसए ।
प्राशाद प्रतिमा जिन प्रति करि सुकृत्त सचए ।।१२।।

सुकृत सचि रे व्रत बहु आचरि
दान महोद्दवरे जिन पूजा करि
करि उद्दव गान गध्रव चन्द्र जिन प्रासादए ।
बावन सिखर सोहामण ध्वज कनक कलश विलासए ।।१३।।
मंडप मध्यि समवसरण सोहि
श्री जिन बिंबरे मनोहर मन मोहि ।

मोहि जिनमत प्रति वसत मालसंपविधासए ।
तिहां विजयमा विद्यात सुन्दर जिनसासन रमयासए ॥१४॥
तहां चोमासि रै रचना करि
सोलबांणु पिरे प्रासो प्रमुसरि ।
प्रमुसरि प्रासो शुक्ल पंचमी श्रीगुरु चरणद्वय बरि ।
कल्याणकीरति कहि सज्जन भणो मादर करि ॥१५॥

दोहा—मादर बहु संघ बीतरागि विनय सहित सुखकार ।
ते देखि चारुदत्त नो प्रबंध रच्यो मनोहार ॥१॥
भरिए सुरिण मादर करि याचक निविय दान ।
इ श्री तरणो पद ते लहि ममर दीपि बहुमान ॥२॥
इति श्री चारुदत्त प्रबंध समाप्त ॥

विशेष—संवत् १७११ वर्षे कार्तिक वदि ९ गुरुवारे लिखितं बहादुरपुरग्रामे श्री चितामणी चैत्यालये भट्टारक श्री ५ धर्मभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देवेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य पंडित प्रमीचंद स्वहस्तेन लिखितं ।

॥ श्री रस्तु ॥

२०५९ चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र सं ५ । मा १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र काल सं १८११ सावन सुदी ५ । लै० काल × । पूर्ण । वै सं ६७८ । अ भण्डार ।

२०६० चारुदत्तचरित्र—उदयलाल । पत्र स ११ । मा १२½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र काल सं १९२९ माघ सुदी १ । लै काल × । वै सं १७१ । छ भण्डार ।

२०६१ जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास । पत्र सं १०७ । मा १२×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र काल × । ले काल सं १६११ । पूर्ण । वै सं १७१ । अ भण्डार ।

२०६२ प्रति स० २ । पत्र सं १११ । लै काल सं १७६१ फागुण सुदी २ । वै सं २५५ । अ भण्डार ।

२०६३ प्रति स० ३ । पत्र सं ११४ । लै काल सं १८२९ भादवा सुदी १२ । वै सं १८४ । क भण्डार ।

अ भण्डार मे एक प्रति (वै सं ५५) और है ।

२०६४ प्रति सं० ४ । पत्र सं ११२ । लि काल × । वै सं २६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम २ तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६५ प्रति स० ५ । पत्र सं १२५ । लै० काल × । वै सं १६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६६ प्रति स० ६ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८६४ पौष बुदी १४ । वे० स० २०० । ङ भण्डार ।

२०६७ प्रति स० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल स० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १०१ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२०६८. प्रति स० ८ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १८२५ । वे० स० ३५ । छ भण्डार ।

२०६९ प्रति स० ९ । पत्र स० १२३ । ले० काल X । वे० स० ११२ । व्र भण्डार ।

२०७० जम्बूस्वामीचरित्र—प० राजमल्ल । पत्र स० १२९ । आ० १२३/४X५३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल स० १६३२ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—१३ सर्गो मे विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१ जम्बूस्वामीचरित्र—विजयकीर्त्ति । पत्र स० २० । आ० १३X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२. जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १८३ । आ० १४३/४X५१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १९३४ फागुण सुदी १४ । ले० काल स० १९३६ । वे० स० ४२७ । अ भण्डार ।

२०७३ प्रति सं० २ । पत्र स० १६६ । ले० काल X । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

२०७४ जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र स० २८ । आ० १२३/४X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । वे० स० १६९ । छ भण्डार ।

२०७५. जिनचरित्र । पत्र स० ६ से २० । आ० १०X४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ११०५ । अ भण्डार ।

२०७६ जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र स० ६५ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल स० १५९५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । अ भण्डार ।

२०७७ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल स० १८१६ माघ सुदी ५ । वे० स० १८९ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८ प्रति स० ३ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८९३ फागुण बुदी १ । वे० स० २०३ । ङ भण्डार ।

२०७९. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५१ । ले० काल स० १९०४ आसोज सुदी २ । वे० स० १०३ । च भण्डार ।

२०८० प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८०७ मंगसिर सुदी १३। वे० सं० १४। च भण्डार।

विशेष—यह प्रति पं० चोखचन्द एवं रामचंद की थी ऐसा उल्लेख है।

इस भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७१) और है।

२०८१ प्रति सं० ६। पत्र सं० ५७। ले० काल सं० १९४ कार्तिक सुदी १२। वे० सं० ३१। ज भण्डार।

विशेष—गोपीराम बसवा वाले ने कामां में प्रतिलिपि की थी।

२०८२ प्रति सं० ७। पत्र सं० ३८। ले० काल सं० १७८१ मंगसिर सुदी ८। वे० सं० २४१। ञ भण्डार।

विशेष—किसाय में पं० मौर्जराम ने प्रतिलिपि की थी।

२०८३ जिनदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ७६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १९३९ माघ सुदी ११। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९। क भण्डार।

२०८४ प्रति सं० २। पत्र सं० ९। ले० काल ×। वे० सं० १११। क भण्डार।

२०८५ जीवंधरचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र। पत्र सं० १२१। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल सं० १५९६। ले० काल सं० १८४ फागुण सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ९२१। अ भण्डार।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८७१ ८९९) और हैं।

२०८६ प्रति सं० २। पत्र सं० ७२। ले० काल सं० १८११ भादवा सुदी १३। वे० सं० २ ६। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है।

२०८७ प्रति सं० ३। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १८९८ फागुण सुदी ८। वे० सं० ४१। छ भण्डार।

विशेष—सवाई जयनगर में महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ जिन चैत्यालय (गोधों का मन्दिर) में बखतराम कृष्णराम ने प्रतिलिपि की थी।

२०८८ प्रति सं० ४। पत्र सं० १ ४। ले० काल सं० १८८ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० ४२। छ भण्डार।

२०८९ प्रति सं० ५। पत्र सं० ९९। ले० काल सं० १८३१ वैशाख सुदी २। वे० सं० २७। ज भण्डार।

२०९० जीवंधरचरित्र—नथमल बिलाला। पत्र सं० ११४। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८४ । ले० काल सं० १८२९। पूर्ण। वे० सं० ८१७। च भण्डार।

२०६१. प्रति स० २। पत्र सं० १२३। ले० काल स० १९३७ चैत्र बुदी ९। वे० स० ५५९। च भण्डार।

२०६२. प्रति सं० ३। पत्र स० १०१ मे १५१। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७४३। ट भण्डार।

२०६३. जीवंधरचरित्र—पन्नलाल चौधरी। पत्र म० १७०। आ० १३X५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल म० १९३५। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० २०७। क भण्डार।

२०६४ प्रति स० २। पत्र म० १३५। ले० काल X। वे० स० २१४। ङ भण्डार।

विशेष—अन्तिम ३५ पत्र चूहो द्वारा खाये हुये हैं।

२०६५ प्रति स० ३। पत्र स० १३२। ले० काल X। वे० स० १६२। छ भण्डार।

२०९६ जीवधरचरित्र । पत्र स० ४१। आ० ११$\frac{3}{4}$X८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० म० २०२९। अ भण्डार।

२०९७. णेमिणाहचरिउ—कविरत्न अबुध के पुत्र लक्ष्मणदेव। पत्र सं० ४४। आ० ११X४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–चरित्र। र० काल X। ले० काल स० १५३६ शक १४०१। पूर्ण। वे० सं० ६६। अ भण्डार।

२०९८ णेमिणाहचरिय—दामोदर। पत्र स० ४३। आ० १२X५ इञ्च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–काव्य। र० काल स० १२८७। ले० काल स० १५८२ भादवा सुदी ११। वे० म० १२५। व्य भण्डार।

विशेष—चदेरी मे आचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया।

२०९९ त्रेसठशलाकापुरुषचरित्र । पत्र स० ३६ से ६१। आ० १०$\frac{1}{2}$X४$\frac{1}{2}$ इच। भाषा–प्राकृत। विषय–चरित्र। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २०९०। अ भण्डार।

३००० दुर्घटकाव्य ....। पत्र स० ४। आ० १२X५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–काव्य। र० काल X। ले० काल X। वे० स० १८५१। ट भण्डार।

३००१ द्वाश्रयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य। पत्र स० ६। आ० १०X४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–काव्य। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० १८३२। ट भण्डार। (दो सर्ग हैं)

३००२. द्विसधानकाव्य—धनञ्जय। पत्र स० ६२। आ० १०$\frac{1}{2}$X५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० ८५३। अ भण्डार।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये हैं। ६२ से आगे के पत्र नही है। इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य भी है।

३००३ प्रति स० २। पत्र म० ३२। ले० काल X। अपूर्ण। वे० म० ३३१। क भण्डार।

३००४ प्रति सं० ३। पत्र स० ५६। ले० काल स० १५७७ भादवा बुदी ११। वे० स० १५८। क भण्डार।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री खेऊ के पुत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की थी।

३००५ द्विसंधानकाव्यटीका—विनयचन्द्र। पत्र सं० २२। आ० १२३×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। (पंचम सर्ग तक) वे० सं० ११। क भण्डार।

३००६ द्विसंधानकाव्यटीका—नेमिचन्द्र। पत्र सं० १६१। विषय–काव्य। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल सं० १६६२ कार्तिक सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३२१। क भण्डार।

विशेष—इसका नाम पद कौमुदी भी है।

३००७ प्रति सं० २। पत्र सं० ३१८। ले० काल सं० १८७५ माघ सुदी ८। वे० सं० ३२७। क भण्डार।

३००८ प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १५ ९ कार्तिक सुदी २। वे० सं० १११। घ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। गोपाचल (ग्वालियर) में महाराजा डूगरेन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

३००९ द्विसंधानकाव्यटीका...। पत्र सं० २६४। आ० १ ३×८ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२८। क भण्डार।

३०१० धन्यकुमारचरित्र—आ० गुणभद्र। पत्र सं० ५१। आ० १ ×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३३। क भण्डार।

३०११ प्रति सं० २। पत्र सं० २ से ४५। ले० काल सं० १५६७ आसोज सुदी १। अपूर्ण। वे० सं० ३२५। क भण्डार।

विशेष—टूडू गांव के निवासी खण्डेलवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी। उस समय टूडू (जयपुर) पर चक्रसीराय का राज्य लिखा है।

३०१२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३६। ले० काल सं० १६६२ द्वि ज्येष्ठ सुदी ११। वे० सं० ४६। छ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति दी हुई है। आमेर में आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई। लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

३०१३ प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६ ४। वे० सं० १२८। ख भण्डार।

३०१४ प्रति सं० ५। पत्र सं० ३३। ले० काल ×। वे० सं० ३६३। ख भण्डार।

३०१५. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६ ३ भादवा सुदी ३। वे० सं० ४३८। व भण्डार।

विशेष—श्राविका चौधरी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके मुनि श्री धर्मकीर्ति को भेंट दिया था।

३०१६ धन्यकुमारचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र सं० १ ७। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३। ख भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है

३०१७ प्रति स० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल स० १८५० आषाढ सुदी १३ । वे० सं० २५७ । अ भण्डार ।

विशेष—२६ से ३६ तक के पत्र बाद मे लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति स० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल स० १८२५ माघ सुदी १ । वे० स० ३१४ । अ भण्डार ।

३०१९. प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल सं० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वे० स० १०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वा पत्र नही है । ब्र० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२०. प्रति स० ५ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८१३ भादवा बुदी ८ । वे० स० ४८ । छ भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दौसा) मे प० वख्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दो के हिन्दी मे अर्थ दिये हैं । कुल ७ अधिकार हैं ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १७ । व्य भण्डार ।

३०२२. प्रति स० ७ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १६६१ बैशाख सुदी ७ । वे० स० २१८७ । ट भण्डार ।

विशेष—सवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिनाम जोगे गुरुवासरे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे ।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र स० २४ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल स० १६०१ पौष बुदी ३ । वे० स० ३२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—फोजुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १७६० श्रावण सुदी ५ । वे० स० ८६ । व्य भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६. प्रति सं० ४ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १८१६ फागुण बुदी ७ । वे० स० ८७ । व्य भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—खुशालचद । पत्र सं० ३० । आ० १४×७ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

१०२८ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ले काल × । वे सं ४१२ । श्र भण्डार ।

१०२९. प्रति स० ३ । पत्र सं १२ । ले काल × । वे सं ११४ । क भण्डार ।

१०३० प्रति सं० ४ । पत्र सं ११ । ले काल × । वे स १२१ । क भण्डार ।

१०३१ प्रति स० ५ । पत्र सं ४४ । ले काल सं १६६४ कार्तिक बुदी ९ । वे सं ५६१ । च भण्डार ।

१०३२ प्रति सं० ६ । पत्र सं १८ । ले काल सं १८५२ । वे सं २४ । म्ह भण्डार ।

१०३३ प्रति स० ७ । पत्र सं ६६ । ले काल × । वे सं ४६५ । श्र भण्डार ।

विशेष—सतोषराम छाबड़ा मौजमाबाद वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

इसके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे सं ५६४) तथा छ और म्ह भण्डार में एक एक प्रति (वे सं १६८ व १२) और हैं ।

१०३४ धन्यकुमारचरित्र······। पत्र सं १८ । आ १ ×४' इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १२१ । छ भण्डार ।

१०३५ प्रति स० २ । पत्र सं १८ । ले काल × । अपूर्ण। वे सं १२४ । छ भण्डार ।

१०३६ धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं ११९ । आ १ ½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६१ । श्र भण्डार ।

१०३७ प्रति स० २ । पत्र सं १८७ । ले काल सं १९३८ कार्तिक सुदी ८ । वे सं ३४८ । क भण्डार ।

विशेष—नीचे संस्कृत में संकेत दिये हुए हैं ।

१०३८ प्रति स० ३ । पत्र सं ८५ । ले काल × । वे सं २ १ । श्र भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त श्र तथा क भण्डार में एक एक प्रति (वे सं १४८१ ३४९) और है ।

१०३९. धर्मशर्माभ्युदयटीका—यशःकीर्ति । पत्र सं ४ से ६६ । आ १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ८२६ । श्र भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'संदेह ध्वांत दीपिका' है ।

१०४० प्रति सं० २ । पत्र सं १ ४ । ले काल सं १६२१ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे सं ३४० । क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे सं ३४६) की और है ।

१०४१ नलायनकाव्य—माणिक्यसूरि । पत्र सं ३२ से ११७ । आ १ ×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र काल । ले काल स १४४५ प्र फागुन सुदी ८ । अपूर्ण । वे सं ३४२ । श्र भण्डार ।

पत्र सं १ से ११ ६५, ६९ तथा ९२ से ९२ नहीं है । दो पत्र बीच के और हैं जिन पर पत्र सं नहीं है ।

विशेष—इसका नाम 'नलायन महाकाव्य' तथा 'कुबेर पुराण' भी है । इसकी रचना स १४५४ के पूर्व हुई थी । जिन रत्नकोष में ग्रन्थकार का नाम माणिक्यसूरि तथा माणिक्यदेव दोनों दिया हुआ है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १४४५ वर्षे प्रथम फाल्गुन वदि ८ शुक्रे लिखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२ **नलोदयकाव्य—कालिदास** । पत्र सं० ९ । आ० १२×६३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८३९ । पूर्ण । वे० स० ११४३ ।। अ भण्डार ।

३०४३ **नवरत्नकाव्य** । पत्र सं० २ । आ० ११×५३ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०९२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नो का परिचय दिया हुआ है ।

३ ४४ **प्रति सं० २** । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ११४६ । अ भण्डार ।

३०४५ **नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरि** । पत्र स० २२ । आ० १०३×६३ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५९४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

सवत् १५९४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये साह जिणदास तद्भार्या जमणादे त० साह सागा द्वि० सहसा तृत चु डा सा० सागा भार्या सूहवदे द्वि० शृ गारदे तृ० सुरताणदे त० सा० आसा, धणपाल आसा भार्या हकारदे, धणपाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल महिमादे । चु डा भार्या चादणदे तस्यपुत्र सा० दामा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषा मध्ये आसा भार्या अहकारदे इदशास्त्र लि०मडलाचार्य श्री धर्म्मचद्राय ।

३०४६ **प्रति स० २** । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८२९ पौष सुदी ५ । वे० स० ३६५ । क भण्डार ।

३०४७. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १८०६ चैत्र बुदी ५ । वे० स० ५० । घ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ९ पत्र नवीन लिखे हुये हैं । १० से १९ तथा ३२वा पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । अन्त मे निम्न प्रकार लिखा है । पाडे रामचन्द के माथै पधराई पोथो । सवत् १८०६ चैत्र वदी ५ सनिवासरे दिल्ली ।

३०४८ **प्रति स० ४** । पत्र स० १७ । ले० काल स० १५८० । वे० स० ३५३ । ङ भण्डार ।

३०४९. **प्रति स० ५** । पत्र स० २५ । ले० काल स० १६४१ माघ बुदी ७ । वे० स० ४९९ । व भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ मे कल्याणराज के समय मे आ० सोपति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०५०. **प्रति सं० ६** पत्र स० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०७ । ट भण्डार ।

२०४१ नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर। पत्र सं० ५५। आ० १ ३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल सं० १५११ श्रावण सुदी १५। ले० काल सं० १५१६ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० सं० २१०। क भण्डार।

२०४२ नागकुमारचरित्र""""। पत्र सं० २२। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८११ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ८६। ख भण्डार।

२०४३ नागकुमारचरितटीका—टीकाकार प्रभाचन्द्र। पत्र सं० २ से २। आ० १०×४¹ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्धारानिवासिना परापरमेष्टिप्रमाणोपार्जितमलपुण्यनिराकृताखिलकलंकेन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपंडितेन श्री मस्त्यमी टिप्पणकं कृतमिति।

२०४४ नागकुमारचरित्र—उदयलाल। पत्र सं० १६। आ० ११× इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५४। क भण्डार।

२०४५ प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० सं० ३५५। क भण्डार।

२०४६ नागकुमारचरित्रभाषा""""। पत्र सं० ४५। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०७। क भण्डार।

२०४७ प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

२०४८ नेमिजी का चरित्र—आणन्द। पत्र सं० २ से ५। आ० ९×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल सं० १८०४ फागुण सुदी ५। ले० काल सं० १८११। अपूर्ण। वे० सं० २२५०। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग—

> नेम तरा तात समद मग्ये रे रह्या च क्क मार्चा।
> भरत पास्ये सात सारे सहस बरसना धाव ॥
> सहस बरसना आक्षय पूरा जिरावर कवली पौसवी।
> घाठ कर्म कीया चकचूर पांच सत्र तरा सवाल पूरा की।
> संवत १८ बिडोतर फागुरा माघ संभारो।
> सुद पंचमी शनीसुर रे कीयो चरित उदारो ॥
> कीयो चरत उदार मार्तवा इम आणंद लाड़ो गहलता।
> धन २ समुद बिराजंवा धुप नेम लह नेम जिरांदा ॥१२॥
> इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त।

सं० १८११ वैसाख श्री श्री जीवराम जी लिखतं भ्रमापूजी राजगढ़ मध्ये।
म्हारे नेमिजी के नव नव टिये हुये हैं।

२१५६ नेमिनाथ के दशभव । पत्र स० ७ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६१८ । वे० स० ३५४ । म भण्डार ।

२१६० नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम । पत्र स० २२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्त्ति है ।

२१६१ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३७३ । ञ भण्डार ।

२१६२ नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २ से ७८ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल स० १५८१ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० २१३२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

२१६३ नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट । पत्र सं० १०० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–नेमिनाथ का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६० । क भण्डार ।

२१६४ प्रति स० २ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८२३ । वे० स० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार मे (वे० स० ३८६) और है ।

२१६५. प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८२ । ड भण्डार ।

२१६६. नेमिनिर्वाणपजिका । पत्र स० ६२ । आ० ११½×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स २६ । ञ भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे पत्र नही हैं ।

प्रारम्भ—धत्वा नेमिश्वर चित्ते लब्ध्वानत चतुष्टय ।
कुर्वेह नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पजिका ॥

२१६७ नैषधचरित्र—हर्षकवि । पत्र स० २ से ३० । आ० १०½×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंचम सर्ग तक है । प्रति सटीक एव प्राचीन है ।

२१६८ पद्मचरित्रसार । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पद्मपुराण का सक्षिप्त भाग है ।

२१६६ पर्यूषणाकल्प । पत्र स० १०० । आ० ११½×४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६६६ । अपूर्ण । वे० स० १०५ । ख भण्डार ।

विशेष—६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नही हैं । श्रुतस्कध का ८वा अध्याय है ।

प्रशस्ति—स० १६६६ वर्षे मूलताणमध्ये सुश्रावक सोनू तत् वधू हर्म्मी तत् सुता सुस्वर्गा मेलूपु वडागृहे वधू तेन एषा प्रति प० श्री राजकीर्त्तिगणिना विहरेऽर्पिता स्वपुन्याय ।

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्त्ति। पत्र स० १२०। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन। र० काल १५वी शताब्दी। ले० काल सं० १८८८ प्रथम बैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० स० १३। अ भण्डार।

२१८१ प्रति सं० २। पत्र स० ११०। ले० काल स० १८२३ कार्त्तिक बुदी १०। वे० स० ४६६। क भण्डार।

२१८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६१। ले० काल स० १७६१। वे० स० ७०। घ भण्डार।

२१८३. प्रति स० ४। पत्र सं० ७५ मे १३६। ले० काल स० १८०२ फागुण बुदी ११। अपूर्ण। वे० स० ४५६। ङ भण्डार।

विशेष–प्रशस्ति—

सवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखित श्रीउदयपुरनगरमध्येसुश्रावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक मा० श्री दौलतरामजी पठनार्थं।

२१८४ प्रति स० ५। पत्र स० ५२ मे २२६। ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी २। अपूर्ण। वे० स० २१६। च भण्डार।

विशेष—प्रति दीवान सगही ज्ञानचन्द की थी।

२१८५. प्रति स० ६। पत्र स० ८६। ले० काल स० १७८५ प्र० बैशाख सुदी ८। वे० स० २१७। च भण्डार।

विशेष—प्रति खेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास मे लिखवायी थी।

२१८६ प्रति स० ७। पत्र स० ६१। ले० काल सं० १८५२ श्रावण सुदी ६। वे० स० १५। छ भण्डार।

विशेष—प० श्योजीराम ने अपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई।

२१८७. प्रति स० ८। पत्र स० १२३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १९। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२१८८ प्रति सं० ९। पत्र स० ६१ से १४४। ले० काल स० १७८७। अपूर्ण। वे० स० १६४५। ट भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ४६६, ७०) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) ञ तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० २०४, २१८४) और हैं।

२१८९ पार्श्वनाथचरित्त—रइधू। पत्र स० ८ से ७६। आ० १०½×५ इ च। भाषा–अपभ्र श। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१२७। ट भण्डार।

२१९० पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास। पत्र स० ९२। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन। र० काल स० १७८९ आषाढ सुदी ५। ले० काल स० १८३३। पूर्ण। वे० स० ३५९। अ भण्डार।

२१६१ प्रति सं० २ । पत्र सं ८६ । ले काल सं १६२६ । वे सं ४४० । क भण्डार ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

२१६२ प्रति सं० ३ । पत्र सं ६२ । ले काल सं १८६ माह बुदी ६ । वे सं ५७ । ग भण्डार ।

२१६३ प्रति सं० ४ । पत्र सं ६१ । ले काल सं १८६१ । वे सं ४२ । ङ भण्डार ।

२१६४ प्रति सं० ५ । पत्र सं ११८ । ले काल सं १८६५ । वे सं ४५१ । ङ भण्डार ।

२१६५ प्रति सं० ६ । पत्र सं १२१ । ले काल सं १८८१ पौष सुदी १४ । वे सं ४५३ । ङ भण्डार ।

२१६६ प्रति सं० ७ । पत्र सं ४६ से ६६ । ले काल सं १६२१ सावन सुदी ६ । वे सं १७५ । छ भण्डार ।

२१६७ प्रति सं० ८ । पत्र सं १ । ले काल सं १८२ । वे स १ ४ । झ भण्डार ।

२१६८ प्रति सं० ६ । पत्र सं १३ । ले काल सं १८५२ फागुण बुदी १४ । वे सं १ । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । सं १८५२ में सुगणकरण गोधा ने प्रतिलिपि की ।

२१६६. प्रति सं० १० । पत्र सं ४६ से १५४ । ले काल सं १६ ७ । अपूर्ण । वे सं १८४ । ञ भण्डार ।

२२०० प्रति सं० ११ । पत्र सं ६२ । ले काल सं १८६६ मासाढ सुदी १२ । वे सं ५८ । ञ भण्डार ।

विशेष—फ्तेहलाल संघी दीवान ने सोनियों के मन्दिर में सं १६४ मासवा सुदी ४ को चढाया ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में तीन प्रतियां (वे सं ४५५ ४ ८ ४४०) ग तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे सं ५६ ७१) ङ भण्डार में तीन प्रतियां (वे सं ४४६ ४५२, ४५४) च भण्डार में ५ प्रतियां (वे सं ६६ ६६१ ६६२ ६६३ ६६४) छ भण्डार में एक तथा ञ भण्डार में २ (वे सं १६६ १ २) तथा ट भण्डार में दो प्रतियां (वे सं १६१६ २ ७४) और हैं ।

२२ १ प्रद्युम्नचरित्र—प० महासेनाचार्य । पत्र सं ५८ । आ १ }×४} इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २३६ । च भण्डार ।

२२०२ प्रति सं० २ । पत्र सं १ १ । ले काल × । वे सं १४२ । ञ भण्डार ।

२२०३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ११८ । ले काल सं १५६६ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे सं १४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५६६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी चतुर्थीदिने बुधवासरे सिद्धियोगे मूलनक्षत्र श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्ट भ श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्ट भ श्रीजिनचंद्र

देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खडेलवालान्वये काटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्भार्या हरषखू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह दामा द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तयो पुत्र सा० वोदिथ तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयोः पुत्र सा० खरहथ एतेषा मध्ये जिनपूजापुरदरेण सा० चेलाख्येन इद श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरणीकर्म्म क्षयार्थं निमित्त सत्पात्रायम श्री धर्म न्द्राय प्रदत्त ।

२२०४ प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र स० १६५ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १५३० । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना सवत् 'ङ' प्रति मे से है । सवत् १७२१ वर्षे आसौज वदि ७ शुभ दिने लिखित आवरं (आमेर) मध्ये लि आरि आचार्य श्री महोचद्रकीर्त्तिजी । लिखितं जोसि श्रीधर ॥

२२०५ प्रति स० २ । पत्र स० २५५ । ले० काल सं० १८८५ मगसिर सुदी ५ । वे० स० ११३ । ख भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भट्टारक रत्नभूषण की आम्नाय मे कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय से ऐलिचपुर आकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६. प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७ प्रति स० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल स० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हासी (झासी) वाले भैया श्री ढमल्ल अग्रवाल श्रावक ने ज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ प्रतिलिपि करवाई थी । प० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र को समर्पण की गई ।

२२०८ प्रति सं० ५ । पत्र स० ११६ से १६५ । ले० काल स० १८६६ सावन सुदी १० । वे० स० ७०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—लिख्यत पडित सगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पडित गोर्द्धनदासेन आत्मार्थं ।

२२०६. प्रति सं० ६ । पत्र स० २२१ । ले० काल स० १८३३ श्रावण सुदी ३ । वे० स० १६ । छ भण्डार ।

विशेष—पडित सवाईराम ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । ये भ्रा० रत्नकीर्त्तिजी के शिष्य थे ।

२२१० प्रति स० ७ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १८१६ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० स० २१ । छ भण्डार ।

विशेष—वखतराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२११ प्रति स० ८। पत्र सं २७४। ले काल सं० १८ ४ भादवा सुदी ६। वे० सं० १७४। ख भण्डार।

विशेष—मगरचन्दजी चांदवाड़ से प्रतिलिपि करवायी थी।

इसके अतिरिक्त ख भण्डार में तीन प्रतियां (वे सं ४११ ६४८ २ ८१ तथा क भण्डार में एक प्रति (वे सं ५०८) और है।

२२१२ प्रद्युम्नचरित्र ······। पत्र सं ५ । आ ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २१५। ख भण्डार।

१३ प्रद्युम्नचरित्र—सिंहकवि। पत्र स ४ से ८१। आ १ ½×४½ इंच। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं० २ ४। ख भण्डार।

२२१४ प्रद्युम्नचरित्रभाषा—मन्नालाल। पत्र सं ५ १। आ ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-चरित्र। र काल सं १६१६ ज्येष्ठ सुदी ५। ले काल सं १६३७ बैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे सं ४६४। क भण्डार।

२२१५ प्रति स० २। पत्र सं १२२। ले काल सं १६३१ मंगसिर सुदी २। वे सं ५ ६। क भण्डार।

२२१६ प्रति स० ३। पत्र सं १७ । ले काल ×। वे सं ६१८। च भण्डार।

विशेष—रचयिता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है।

२२१७ प्रद्युम्नचरित्रभाषा·······। पत्र स २७१। आ ११½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। र काल ×। ले काल सं १६१६। पूर्ण। वे सं ४२ । ग भण्डार।

२२१८ प्रीतिंकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र सं २१। आ १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र काल ×। ले काल सं १८२७ मंगसिर सुदी ८। पूर्ण वे सं १२६। ग भण्डार।

२२१९ प्रति सं० २। पत्र सं ९१। ले काल स १८६४। वे० सं ५१ । क भण्डार।

२२२० प्रति स० ३। पत्र सं १४। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११६। ख भण्डार।

विशेष—२२ से ३१ पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है। दो तीन तरह की लिपि है।

२२२१ प्रति स० ४। पत्र सं २ । ले काल सं १८१ बैशाख। वे सं १२१। ख भण्डार।

२२२२ प्रति सं० ५। पत्र सं २५। ले काल स १६७६ प्र भादवा सुदी १ । वे स १२२। ख भण्डार।

२२२३ प्रति स० ६। पत्र सं १४। ले० काल सं १८११ भादवा सुदी ७। वे सं ६१। च भण्डार।

विशेष—पं चोखचन्द के शिष्य पं रामचन्दजी ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इसकी दो प्रतियां छ भण्डार में (वे स १२ २४६) और हैं।

२२२४ प्रीतिंकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल स० १७२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । अ भण्डार ।

२२२५ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । छ भण्डार ।

२२२६ प्रति स० ३ पत्र स० २ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३६ । छ भण्डार ।

२२२७ भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि । पत्र स० २२ । आ० १२×५३/४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० १२८ । अ भण्डार ।

२२२८ प्रति स० २ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । वे० स० ५५१ । क भण्डार ।

२२२६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १६७४ पौष सुदी ८ । वे० सं० १३० । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३० प्रति स० ४ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १७८६ वैशाख बुदी ६ । वे० स० ५५८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) किशनगढ वालो ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२२३१. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८१६ । वे० सं० ३७ । छ भण्डार ।

विशेष—वखतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२२३२. प्रति स० ६ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १७६३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ५१७ । व्य भण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्त्ति ने वौंली ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२२३३ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१३३ । ट भण्डार ।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—नवलकवि । पत्र स० ४८ । आ० १२१/२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वे० स० ५५६ । ङ भण्डार ।

२२३५. भद्रवाहुचरित्र—चंपाराम । पत्र स० ३८ । आ० १२३/४×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० श्रावण सुदी १५ । ले० काल × । वे० स० १६५ । छ भण्डार ।

२२३६ भद्रवाहुचरित्र .... । पत्र स० २७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८५ । अ भण्डार ।

२२३७ प्रति स० २ । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५ । छ भण्डार ।

२२३८ भरतेशवैभव .... । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

२२३९. भविष्यदत्तचरित्र—पं० श्रीधर। पत्र सं० १०८। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०२। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है। संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण भी दिया हुआ है।

२२४० प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १६१४ माघ सुदी ८। वे० सं० ५५१। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि तक्षकगढ में हुई थी। लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है।

२२४१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १७२४ वैशाख सुदी १। वे० सं० १११। ख भण्डार।

विशेष—पेडला निवासी साह श्री ईसर सोगाणी के वंश में से सा० रायचन्द्र की भार्या रइणादे ने प्रतिलिपि करवाकर मंडलाचार्य श्रीभूषण के शिष्य रूपचन्द को कर्मक्षयार्थ निमित्त दिया।

२२४२ प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १६६२ जेठ सुदी ७। वे० सं० ७५। घ भण्डार।

विशेष—अजमेर गढ मध्ये लिखितं प्रभु अमृत जोसी सूरदास।

दूसरी ओर निम्न प्रशस्ति है।

हरसौर मध्ये राजा श्री सावलदास राज्ये खण्डेलवालान्वय साह देव भार्या देवलदे ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

२२४३ प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ५६५। ङ भण्डार।

विशेष—लेखक पं० गोवर्द्धनदास।

२२४४ प्रति सं० ६। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० २६३। च भण्डार।

२२४५ प्रति सं० ७। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ११। अपूर्ण। छ भण्डार।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये हैं तथा अन्त के २२ पत्र नहीं लिखे गये हैं।

२२४६ प्रति सं० ८। पत्र सं० ९१। ले० काल सं० १६७७ आषाढ सुदी २। वे० सं० ७७। झ भण्डार।

विशेष—साधु लटमरण के लिए रचना की गई थी।

२२४७. प्रति सं० ९। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६६७ आसोज सुदी ५। वे० सं० १६४४। ट भण्डार।

विशेष—आमेर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी। प्रशस्ति का अन्तिम पत्र नहीं है।

२२४८ भविष्यदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० १। आ० ११½×७½ इंच। भाषा–हिन्दी (गद्य)। विषय–चरित्र। र० काल सं० १९१७। ले० काल सं० १९५। पूर्ण। वे० सं० ५५४। क भण्डार।

२२४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल X । वे० सं० ५५५ । क भण्डार ।

२२५०. प्रति स० ३ । पत्र स० १३८ । ले० काल स० १६४० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

२२५१ भोज प्रबन्ध—पडितप्रवर बल्लाल । पत्र स० २६ । आ० १२½×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४७७ । ङ भण्डार ।

२२५२. प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १७११ आसोज बुदी ६ । वे० स० ४६ । अपूर्ण । ञ भण्डार ।

२२५३ भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ४३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल X । ले० काल स० १८४६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ५६४ । क भण्डार ।

२२५४. मगलकलशमहामुनिचतुष्पदी—रगविनयगणि । पत्र स० २ से २४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी (राजस्थानी) विषय–चरित्र । र० काल स० १७१४ श्रावण सुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण । वे० स० ८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—चीतोडा ग्राम मे श्री रगविनयगणि के शिष्य दयामेरु मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह वा मुनिवर निसदिन गाईयइ, मन सुधि ध्यान लगाई ।
पुण्य पुरूपणा गुण घुणाता छता पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥
शातिचरित्र थकी ए चउपई कीधी निज मति सारि ।
मगलकलसमुनि सतरगा कह्या गुण आतम हितकारि ॥२॥ ए० ॥
गच्छ खरतर युग वर गुण आगलउ श्री जिनराज सुरिंद ।
तसु पट्टधारी सूरि शिरोमणी श्री जिनरग मुणिद ॥४॥ ए० ॥
तासु सीस मगल मुनि रायनउ चरित कहेउ स सनेह ।
रगविनय वाचक मनरग सु जिन पूजा फल एह ॥५॥ ए० ॥
नगर अभयपुर अति रलिआमणउ जहा जिन गृहचउसाल ।
मोहन मूरति वीर जिणंदनी सेवक जन सु रसाल ॥६॥ ए० ॥
जिन अनइवलि सोवत घणी जूणा देवल ठाम ।
जिहा देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ वछित काम ॥७॥ ए० ॥
निरमल नीर भरयउ सोहइ यणु ऊभ महेश्वर नाम ।
आप विधाता जगि अवतरी कीधउ की मति काम ॥८॥ ए० ॥
जिहा किण श्रावक सगुण शिरोमणी धरम मरम नउ जाण ।
श्री नारायणदास सराहियइ मानइ जिणवर आण ॥९॥ ए० ॥

मनु तणइ आग्रह ए चउपई कीधी मन उल्लास ।
अधिकउ उछउ जे इहां भाखियउ मिच्छा दुक्कड़ तास ॥१ ॥ ए० ॥
सासण नायक वीर प्रसाद थी चउपी चढ़ीय प्रमाण ।
भणिस्यई सुणिस्यई जे नर भावसु पाम्यइ तासु कल्याण ॥११॥ ए ॥
ए संबंध सरस रस पुण्य भरयउ मान्य मति अनुसारि ।
धरमी जण पुण्य भावण मन रसी ऐंद्यविमल सुखकार ॥१२ ॥ ए ॥
एह वा मुनिवर निशि दिन गाईयइ सर्व गाथा दूहा ॥ ५१२ ॥

इति श्री मंगलकलसमहामुनिचउपही संपूर्तिमगमत् लिखिता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री विजय दसमी बासरे श्री चौतोडा महाग्रामे राजि श्री पतरसिंहजी विजयराज्ये वाचनाचार्य श्री पण्डित दयामद मुनि आत्मश्रेयसे शुभं भवतु । कल्याणमस्तु लेखक पाठकयोः ॥

२२५५ महीपालचरित्र—चारित्रभूषण। पत्र सं० ४१। आ ११¾×५½ इञ्च। विषय–चरित्र। र काल सं० १७११ श्रावण सुदी १२ (ग)। लि० काल सं० १८१८ फागुण सुदी १४ वे सं १६५। क भण्डार।

विशेष—जौहरीलाल गोधीका ने प्रतिलिपि करवाई।

२२५६ प्रति सं० २। पत्र सं ४६। लि काल ×। वे सं० ५६१। क भण्डार।

२२५७ प्रति स० ३। पत्र सं० ४२। लि काल सं० १६२८ फाल्गुण सुदी १२। वे सं भण्डार।

विशेष—रोडूराम वैद्य ने प्रतिलिपि की थी।

२२५८. प्रति स० ४। पत्र सं० ५५। लि काल ×। वे सं ४६। छ भण्डार।

२२५९ प्रति स० ५। पत्र सं ४२। लि० काल ×। वे सं १७ । छ भण्डार।

२२६० महीपालचरित्र—भ० रत्ननन्दि। पत्र सं १४। आ १२×५½ इञ्च। विषय–चरित्र। र काल ×। लि काल सं १८३६ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे सं ५७४। क भण्डार।

२२६१ महीपालचरित्रभाषा—नथमल। पत्र सं ६९। आ ११×५ इञ्च। भाषा– विषय–चरित्र। र काल सं १६१८। लि० काल सं १६६६ सावण सुदी १। वे सं ५७५। क

विशेष—मूलकर्त्ता चारित्र भूषण।

२२६२ प्रति स० २। पत्र सं २८। लि काल सं १६३५। वे सं० ५६२। क भण्डार।

विशेष—आरम्भ के १५ नये पत्र लिखे हुये हैं।

कवि परिचय—नथमल भट्टारक कामलीवाल के शिष्य थे। इनके पितामह का नाम दुलीचन्द तथा " का नाम शिवचन्द था।

२२६३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५७ । ले० काल स० १६२६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । च भण्डार ।

२२६४ मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

२२६५ प्रति सं० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं सस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति स० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है ।

२२६७. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १८५४ वैशाख सुदी २ । वे० स० २००५ । ट भण्डार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल स० १५७१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । व्य भण्डार ।

२२६९ यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र स० २५४ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत गद्य पद्य । विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल शक स० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५१ । अ भण्डार ।

विशेष—कई प्रतियो का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नही हैं ।

२२७०. प्रति सं० २ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १६१७ । वे० स० १८२ । अ भण्डार ।

२२७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२२७३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३५१ । व्य भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कही कही कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुये हैं ।

अबावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे भ० जगत्कीर्त्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट भण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १७६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता सोमदेव सूरि ।

मासु तणइ भाग्रह ए भउपई कीधी मन उल्लास ।
भविकन्द उदय थै इहां भाविपत्र मिला सुलकद तास ॥१ ॥ ए० ॥
शासण मामक वीर प्रसाद थी भजणी चडीव प्रमाण ।
भणिस्यइ सुणिस्यइ जे नर भावसु भारमइ तासु कल्याण ॥११॥ ए ॥
ए संबंध सरस रस गुण भरयउ काव्य मति अनुसारि ।
भरमी भण गुण भावण मन रमी रंगविजय सुखकार ॥१२ ॥ ए ॥
एहु वा मुनिवर निति दिन गाईयइ सर्व गाथा हूहा ॥ २१२ ॥

इति श्री मंगलकलसमहामुनिचउपही संपूर्णमगमत् लिखिता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री आसोज सुदी विजय दसमी वासरे श्री चीतोडा महाग्रामे राजि श्री परतापसिंहजी विजयराज्ये वाचनाचार्य श्री रंगविजयगणि शिष्य वखित दयासिंह मुनि भ्रात्मश्रेयसे शुभं भवतु । कल्याणमस्तु लेखक पाठकयो ॥

२२५५ महीपालचरित्र—चारित्रभूषण । पत्र स ४१ । भा ११¾×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र काल सं १७११ मावण सुदी १२ (स) । ले काल सं १८१८ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे सं ११५ । भ भण्डार ।

विशेष—भौहरीलाल चोबीका ने प्रतिलिपि करवाई ।

२२५६ प्रति स० २ । पत्र सं ४६ । ले काल × । वे सं ३११ । क भण्डार ।

२२५७ प्रति स० ३ । पत्र सं० ४२ । ले काल सं १९२८ फाल्गुण सुदी १२ । वे सं २६१ । घ भण्डार ।

विशेष—रोडूराम वैद ने प्रतिलिपि की थी ।

२२५८ प्रति स० ४ । पत्र सं ५१ । ले काल × । वे सं ४६ । छ भण्डार ।

२२५९ प्रति स० ५ । पत्र सं ४२ । ले काल × । वे सं १७ । झ भण्डार ।

२२६० महीपालचरित्र—भ० रत्ननन्दि । पत्र सं १४ । भा १२×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र काल × । ले काल सं १८३६ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वे सं ५७४ । क भण्डार ।

२२६१ महीपालचरित्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ८२ । भा ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र काल सं १९१८ । ले काल सं १९३१ भावण सुदी ३ । वे सं ५७५ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता चारित्र भूषण ।

२२६२ प्रति सं० २ । पत्र सं ५८ । ले काल सं १९१५ । वे सं ५९६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्रे नव लिखे हुये हैं ।

कवि परिचय—नथमल सवासुख कासलीवाल के शिष्य थे । इनके पितामह का नाम दुलीचन्द तथा पिता का नाम शिवचन्द था ।

२२६३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५७ । ले० काल सं० १६२६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ६६३ । च भण्डार ।

२२६४. मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

२२६५. प्रति सं० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति स० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १८५४ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट भण्डार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र स० ४८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल स० १५७१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । व्य भण्डार ।

२२६९. यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र स० २५४ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत गद्य पद्य । विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल शक स० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५१ । अ भण्डार ।

विशेष—कई प्रतियो का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नही हैं ।

२२७० प्रति सं० २ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १६१७ । वे० स० १८२ । अ भण्डार ।

२२७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० स० ३५६ । अ भण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० स० ५६१ । क भण्डार ।

२२७३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३५१ । व्य भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कही कही कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुये हैं ।

अबावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे भ० जगत्कीर्त्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४ प्रति सं० ६ । पत्र स० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट भण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता सोमदेव सूरि ।

२२७६ यशस्तिलकचम्पूटीका''' '''' । पत्र सं० १४१ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० १८८ । क भण्डार ।

२२७७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ९१ । ले० काल × । वे० सं० १८१ । क भण्डार ।

२२७८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८१ । ले० काल × वे० सं० ११ । क भण्डार ।

२२७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ से ४२१ । ले० काल सं० १६४८ । अपूर्ण । वे० सं० १८७ । क भण्डार ।

२२८० यशोधरचरित—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ८२ । आ० १ ×४ इञ्च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १४ ७ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २१ । क भण्डार ।

विशेष—संवत्सरेस्मिन १४ ७ वर्षे आश्विनमासे शुक्लपक्षे १ बुधवासरे तस्मिन चम्पापुरीदुर्गेहोम्तीपुर(?)विराज माने महाराजाधिराजसमस्तराजावलीसेव्यमाण खिलजीवंश उद्योतक सुरित्राणमहमूदसाहिराज्ये तद्विजयराज्ये श्रीकाष्ठा-संघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विमलसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीधर्मसेन देवा-स्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्ति देवास्तत्पट्टे श्रीगुणकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक मलयकीर्ति देवास्तच्छिष्य महात्मा श्री हरिषेण देवास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्रीकरमसी तद्भार्यासुलखा तयो पुत्रास्त्रयः ज्येष्ठ सा० मैणपाल द्वितीय सा० पूना तृतीयः सा० भाम्मणु । साधु मैणपाल भार्या द्वे काऊ भूराही । सा० भाम्मणु पुत्र वममल मोमा एतेषांमध्ये इदंपुस्तकं ज्ञानावरणीकर्म क्षयार्थं काऊ वर्षी इदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य महात्मा हरिषेणदेवा दत्तं पठनार्थं । लिखितं पं० विजयसिंहेन ।

२२८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ११८ । क भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

२२८२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ से ६८ । ले० काल सं० १६१ माघो ''' । अपूर्ण । वे० सं० २७८ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि आमेर में राजा भारमल के शासनकाल मे नेमीश्वर चैत्यालय में की गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२८३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९१ । ले० काल सं० १४६७ आसोज सुदी २ । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

२ ८४ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १६७२ मंगसिर सुदी १ । वे० सं० २८७ । च भण्डार ।

२२८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । वे० सं० २१२६ । ट भण्डार ।

२२८६ यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ३१ । आ० १ ३×१ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११४ । क भण्डार ।

२२८७ प्रति सं० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल × । वे० स० ५९६ । क भण्डार ।

२२८८ प्रति स० ३ । पत्र स० २ से ३७ । ले० काल स० १७९५ कार्त्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० २८४ । च भण्डार ।

२२८९. प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८६२ आसोज सुदी ६ । वे० स० २८५ । च भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२९०. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १८५५ आसोज सुदी ११ । वे० स० २२ । छ भण्डार ।

२२९१. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । च भण्डार ।

२२९२ प्रति स० ६ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । वे० स० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९२. प्रति स० ७ । पत्र स० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० स० २५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति– सवत्सर १७७५ वर्ष मिती चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तस्य आज्ञाविधायि आचार्य श्री क्षेमकीर्त्ति । प० चोखचन्द ने वसई ग्राम मे प्रतिलिपि की थी— अन्त में यह और लिखा है—

संवत् १३५२ थेलो भौंसे प्रतिष्ठा कराई लाडणा मे तदिस्यौ ल्हौडसाजण उपजो ।

२२९४ प्रति स० ८ । पत्र स० २ से ३८ । ले० काल स० १७८० आषाढ बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २९ । ज भण्डार ।

२२९५ प्रति स० ९ । पत्र स० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ११४ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य प० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२२९६. प्रति स० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल स० १७६२ जेठ सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० १९३ । ञ भण्डार ।

विशेष—आचार्य शुभचन्द्र ने टोक मे प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६०४) क भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ५९६, ५९७) और हैं ।

२२९७ यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र स० ७० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल सं० १८३२ पौष बुदी १२ । वे० स० ५९२ । क भण्डार ।

२२६८ प्रति सं० २। पत्र सं १८। ले० काल सं १६६६ सावन सुदी १३। वे सं १६२। छ भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ चौमसिरी से आचार्य भुवनकीर्ति की शिष्या आर्यिका मुक्तिश्री के लिए दयासुन्दर से लिखवाया तथा वैशाख सुदी १ सं १७८६ को मंडलाचार्य श्री अनन्तकीर्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया।

२२६६. प्रति सं० ३। पत्र सं ३४। ले काल ×। वे सं ८४। घ भण्डार।

विशेष—प्रति नवीन है।

२३०० प्रति स० ४। पत्र सं ८३। ले काल सं १६६७। वे सं ६ ६। ङ भण्डार।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई।

२३०१ प्रति स० ५। पत्र सं ५३। ले काल सं० १८३३ पौष सुदी १३। वे सं २१। छ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में पं बखतराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२३०२ प्रति स० ६। पत्र सं ७६। ले काल सं भादवा सुदी १। वे सं ६६। ञ भण्डार।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोरधनदास ने प्रतिलिपि कराई थी। महामुनि गुणकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी।

२३०३ यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि। पत्र सं २ से १२। आ ११×२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले काल सं १८६६। अपूर्ण। वे सं ८७२। अ भण्डार।

२३०४ प्रति स० २। पत्र सं १२। ले काल १८२४। वे सं ६६६। क भण्डार।

२३०५. प्रति स० ३। पत्र सं २ से ११। ले काल सं १६१८। अपूर्ण। वे सं ८१। घ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

२३०६ प्रति स० ४। पत्र सं २२। ले काल ×। वे सं २११८। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है।

२३०७ यशोधरचरित्र—पूरणदेव। पत्र सं १ से २। आ १ ×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। जीर्ण। वे सं २८१। घ

२३०८. यशोधरचरित्र—वासवसेन। पत्र सं ७१। आ १२×

चरित्र। र० काल सं १६६६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वे सं० २ ४। ञ भण्डार

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १६६६ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे द्वादशीदिवसे गुरुवासरे

नाम रावत श्री वैरागी प्रतापे नांगौरा नाम नगरे श्रीर

नद्याम्नाये श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदि देवाम्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचन्द्रदेवास्त-त्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवाम्तदाम्माये खडेलवालान्वये दोशीगोत्रे सा तिहुणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रय प्रथम सा ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा ऊल्हा ईसरभार्या ग्रजपिणी तयो पुत्रा चत्वार प्र० मा० लोहट द्वितीय सा भूणा तृतीय सा ऊधर चतुर्थ सा देवा मा लोहट भार्या ललितादे तयो पुत्रा पच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा धीरा तृतीय लूणा चतुर्थ होला पंचम राजा सा भूणा भार्या भूणमिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम लाला द्वितीय खरहथ- सा० देवा भार्या द्योसिरि तयो पुत्र धनिउ चि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजो धीरा भार्या रमायी सा टोहा भार्ये द्वे वृहद्भीला लघ्वी सुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य शीलवान सा नाल्हा तद्भार्या नयणश्री सा० ऊल्हा भार्या वाली तयो पुत्र सा डालू तद्भार्या डलसिरि एतेपामध्ये चतुर्विधदान वितरणाशक्तेनत्रिपचाशतश्रावकसत्क्रिया प्रति-पालण सावधानेन जिणपूजापुरदरेण सद्गुरुपदेश निर्वाहकेन सघपति साह श्री टोहानामधेयेन इद शास्त्र लिखाप्य उत्तम-पात्राय घटापित ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ से ५४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १६६० बैशाख बुदी १३ । वे० स० ५६३ । क भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

२३११. यशोधरचरित्र । पत्र सं० १७ से ४५ । आ० ११×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६१ । अ भण्डार ।

२३१२ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । ङ भण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र स० ४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १५८१ भादवा सुदी १२ । ले० काल स० १९३० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५९९ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४ यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचद । पत्र स० ३७ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १७८१ कार्त्तिक सुदी ६ । ले० काल स० १७९६ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १०४९ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति-

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७९६ छिनया । श्रे० कुशलोजी तत् शिष्येन लिपिकृतं प० खुस्यालचद श्री घृतघिलोलजी के देहुरे पूर्ण कर्त्तव्यं ।

दिवालो जिनराज कौ देखस दिवालो जाय ।
निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवालो थाय ॥

श्री रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२२९८ प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल सं १९९९ सावन सुदी ११। वे सं १९२। ख भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ पौमसिरी से आचार्य भुवनकीर्ति की शिष्या आर्यिका मुक्तिश्री के लिए दयासुन्दर से लिखवाया तथा वैशाख सुदी १ सं० १७८५ को मंडलाचार्य श्री अनन्तकीर्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया।

२२९९. प्रति सं० ३। पत्र सं २४। ले काल ×। वे सं ८४। घ भण्डार।

विशेष—प्रति नवीन है।

२३०० प्रति सं० ४। पत्र सं ८५। ले काल सं १९९७। वे सं ९ ९। ङ भण्डार।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई।

२३०१ प्रति सं० ५। पत्र सं ५१। ले काल सं १८११ पौष सुदी ११। वे सं २१। छ भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में पं बखतराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२३०२ प्रति सं० ६। पत्र सं ७९। ले काल सं भादवा सुदी १। वे सं ६९। ञ भण्डार।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोरधनदास ने प्रतिलिपि कराई थी। महामुनि पुण्यकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी।

२३०३ यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि। पत्र सं २ से १२। आ ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल सं १८११। अपूर्ण। वे सं ८७२। अ भण्डार।

२३०४ प्रति सं० २। पत्र सं १२। ले काल १८२४। वे सं ५९५। क भण्डार।

२३०५. प्रति सं० ३। पत्र सं २ से १९। ले काल सं १५१८। अपूर्ण। वे सं ८१। घ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

२३०६ प्रति सं० ४। पत्र सं २२। ले काल ×। वे सं २११८। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है।

२३०७ यशोधरचरित्र—पूरणदेव। पत्र सं १ से २। आ १ ×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। जीर्ण। वे सं २८१। च भण्डार।

२३०८. यशोधरचरित्र—वासवसेन। पत्र सं ७१। आ १२×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल सं १५६६ माघ सुदी १२। पूर्ण। वे सं २ ४। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १५६५ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे बृहस्पतिवासरे मूलनक्षत्रे राव श्रीकान्ह राज्यप्रवर्त्तमान रावल श्री चेतसी प्रसादे सांडीला नाम नगरे श्रीआदिनाथ जिनचैत्यालये श्रीमूलसंघेबलात्कारगणे सरस्वतीगच्छ

नद्याम्नाये श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदि देवाम्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्ततपट्टे भ० श्री जिएाचन्द्रदेवास्त-त्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्माये खडेलवालान्वये दोशीगोत्रे सा तिहुणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रय प्रथम सा ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा ऊल्हा ईसरभार्या अजपिणी तयो पुत्रा चत्वार प्र० सा० लोहट द्वितीय सा भूणा तृतीय सा ऊधर चतुर्थ सा देवा सा लोहट भार्या ललितादे तयो पुत्रा पच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा धीरा तृतीय लूणा चतुर्थ होला पचम राजा सा. भूणा भार्या भूणमिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम लाला द्वितीय खरहथ- सा० देवा भार्या द्योसिरि तयो पुत्र धनिउ चि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजी धीरा भार्या रमायी सा टोहा भार्ये द्वे वृहद्भीला लघ्वी सुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य शीलवान सा. नाल्हा तद्भार्या नयणश्री सा० ऊल्हा भार्या वाली तयो पुत्र सा डालू तद्भार्या डलसिरि एतेषामध्ये चतुर्विधदान वितरणाशक्तेनत्रिपचाशतश्रावकसत्क्रिया प्रति-पालण सावधानेन जिणपूजापुरदरेण सद्गुरुपदेश निर्वाहकेन संघपति साह श्री टोहानामधेयेन इद शास्त्र लिखाप्य उत्तम-पात्राय घटापित ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ से ५४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १६६० वैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६३ । क भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

२३११. यशोधरचरित्र । पत्र सं० १७ से ४५ । आ० ११X४३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १६६१ । अ भण्डार ।

२३१२ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० सं० ६१३ । ङ भण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र स० ४३ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १५८१ भादवा सुदी १२ । ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४ यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचद । पत्र सं० ३७ । आ० १२X५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल स० १७६६ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति-

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७६६ छिनवा । श्रे० कुशलोजी तत् शिष्येन लिपिकृतं पं० खुस्यालचंद श्री घृतघिलोलजी के देहुरे पूर्ण कर्त्तव्य ।

दिवालो जिनराज को देखस दिवालो जाय ।
निसि दिवालो वलाइये कर्म दिवालो थाय ।।

श्री रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२३१५ यशोधरचरित्र—पन्नालाल। पत्र सं ११२। आ ११×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–चरित्र। र० काल सं० १६१२ सावन सुदी ८। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं ९०। क भण्डार।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है।

२३१६ प्रति स० २। पत्र सं ७४। ले काल ×। वे स ११२। क भण्डार।

२३१७ प्रति स० ३। पत्र सं ८२। ले काल ×। वे सं १६४। छ भण्डार।

२३१८ यशोधरचरित्र……। पत्र सं २ से ११। आ ११×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १११। क भण्डार।

२३१९ यशोधरचरित्र—श्रुतसागर। पत्र सं ६१। आ १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल सं १५६४ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वे सं २६४। क भण्डार।

२३२० यशोधरचरित्र—भट्टारक ज्ञानकीर्त्ति। पत्र स ६१। आ १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल सं १६५६। ले काल सं १६६ आसोज सुदी २। पूर्ण। वे सं २६२। क भण्डार।

विशेष—संवत् १६६ वर्षे आसोजमासे कृष्णपक्षे नवम्यांतिथौ सोमवासरे पार्श्वनाथचैत्यालये मोजमाबाद वास्तव्ये राजाधिराज महाराजाश्रीमानसिंघराज्यप्रवर्तते श्रीमूलसंघेबलात्कारगणे नंद्याम्नायेसरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये तस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टार श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीचन्द्रकीर्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पाण्ड्याव्यागोत्रे साह हीरा तस्य भार्या हरषमदे। तयो पुत्राश्चत्वार। प्रथम पुत्र साह मासु तस्यभार्या लीलादे पुत्र त्रय. प्रथमपुत्र साह मासु तस्य भार्या नायकदे तयोपुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र चिरंजीव गीरधर। द्वितीयपुत्र साह बोहिथ तस्य भार्या बहुरंगदे तस्य पुत्रा त्रय प्रथमपुत्र चिरंजी सिवरपाल द्वितीय पुत्र वैसा। तृतीयपुत्र टेडू। तृतीय पूरण तस्यभार्या कपूरदे। साह हीरा। द्वितीयपुत्र बोहथ तस्यभार्या धावणदे। तस्यपुत्रा द्वौ प्रथमपुत्र साह धूधर तस्यभार्या भारवदे। द्वितीयपुत्र चिरंजी साहू। हीरा तृतीयपुत्र साह पचारण। हीरा चतुर्थपुत्र साह नराइण तस्य भार्या नैणादे तस्यपुत्र साह दुरंगा एतेषांमध्ये बोहिथ तेनेदशास्त्र यशोधरचरित्रंकर्मक्षयनिमित्तं भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्त्तितशिष्य आर्य लालचंद योग्य घटापितं।

२३२१ प्रति स० २। पत्र सं ४५। ले काल सं १६७७। वे सं ९६। ङ भण्डार।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने प्रतिलिपि की थी।

२३२२ प्रति स० ३। पत्र सं ४८। ले काल सं १६६१ मंगसिर सुदी २। वे सं ९१। छ भण्डार।

विशेष—साह छीतरमल के पठनार्थ आचार्य श्रमभाव ने मौजमाबाद में प्रतिलिपि की थी।

छ भण्डार मे २ प्रतियां (वे सं ९७, ९८) और हैं।

२३२३ यशोधरचरित्रटिप्पण—प्रभाचन्द्र। पत्र सं १२। आ १२×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र काल ×। ले काल सं १६८२ पौष सुदी ११। पूर्ण। वे स १०६। छ भण्डार।

विशेष—पुष्पदत कृत यशोधर चरित्र का सस्कृत टिप्पण है। वादशाह वावर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३२४ रघुवशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र सं० १४४। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६५४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र स० ८२ से १०५ तक नही है। पचम सर्ग तक कठिन शब्दो के अर्थ सस्कृत मे दिये हुये हैं।

२३२५ प्रति सं० २। पत्र सं० ७०। ले० काल स० १८२४ काती बुदी ३। वे० स० ६४३। अ भण्डार।

विशेष–कडी ग्राम मे पाड्या देवराम के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६. प्रति स० ३। पत्र स० १२६। ले० काल स० १८४४। वे० सं० २०६६। अ भण्डार।

२३२७. प्रति स० ४। पत्र स० १११। ले० काल स० १६८० भादवा सुदी ८। वे० स० १५४। ख भण्डार।

२३२८ प्रति सं० ५। पत्र स० १३२। ले० काल स० १७८९ मगसर सुदी ११। वे० स० १५५। ख भण्डार।

विशेष—हाशिये पर चारो ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारोठ मे प० अनन्तकीर्त्ति के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२९. प्रति स० ६। पत्र स० ९६ से १३४। ले० काल स० १६९६ कार्त्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० स० २४२। छ भण्डार।

२३३० प्रति सं० ७। पत्र स० ७५। ले० काल सं० १८२८ पौष बुदी ४। वे० सं० २४४। छ भण्डार।

२३३१ प्रति सं० ८। पत्र स० ६ से १७३। ले० काल सं० १७७३ मगसिर सुदी ५। अपूर्ण। वे० स० १९९५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्ष है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० १०२८, १२९४, १२९५, १८७४, २०६५) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५५ [क])। ङ भण्डार में ७ प्रतिया (वे० स० ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० २८९, २९०) छ और ट भण्डार मे एक एक प्रतिया (वे० स० २९३, १९९६) और हैं।

२३३२ रघुवशटीका—मल्लिनाथसूरि। पत्र स० २३२। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० २१२। ज भण्डार।

२३३३ प्रति सं० २। पत्र स० १८ से १४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६८। ञ भण्डार।

२३३४ रघुवंशटीका—प० सुमति विजयगणि। पत्र सं १ से १७१। आ १२×५१ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२७।

विशेष—टीकाकाल—

निधिमुहंरस नामि संवत्सरे फाल्गुनसितैकादश्यां तिथौ संपूर्णा श्रीरस्तु मंगल सदा कर्तुः टीकायाः। विक्रमपुर में टीका की गयी थी।

२३३५ प्रति स० २। पत्र सं २४ से १४७। ले काल सं १८४ चैत्र सुदी ७। अपूर्ण। वे सं १२८। क भण्डार।

विशेष—गुमानीराम के शिष्य पं धन्नूराम ने ज्ञानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे सं० १२६) और है।

२३३६ रघुवंशटीका—समयसुन्दर। पत्र स १। आ १ ½×१ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र काल सं १६६२। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १८७१। ख भण्डार।

विशेष—समयसुन्दर कृत रघुवंश की टीका द्वयार्थक है। एक अर्थ तो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा अर्थ जैनदृष्टिकोण से है।

२३३७ प्रति स० २। पत्र सं ५ से १७। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २०२। ट भण्डार।

२३३८. रघुवंशटीका—गुणविनयगणि। पत्र स ११७। आ १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र काल ×। ले काल ×। वे० सं ८६। ख भण्डार।

विशेष—खरतरगच्छीय वाचनाचार्य प्रमोदमाणिक्यगणि के शिष्य वंशसकुल श्रीमत् जयसोमगणि के शिष्य गुणविनयगणि ने प्रतिलिपि की थी।

२३३६. प्रति स० २। पत्र सं ६६। ले काल सं १८६२। वे सं १२६। क भण्डार।

इसके अतिरिक्त ख भण्डार में दो प्रतियां (वे सं १६५ १ ८१) और हैं। केवल ख भण्डार की प्रति ही गुणविनयगणि की टीका है।

२३४० रामकृष्णकाव्य—दैवज्ञ प० सूर्य। पत्र सं १। आ १ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-काव्य। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १ ५। ख भण्डार।

२३४१ रामचन्द्रिका—केशवदास। पत्र सं १०६। आ ६×११ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-काव्य। र काल ×। ले काल सं १७६६ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वे सं १११। क भण्डार।

२३४२. वरांगचरित्र—भ० वर्द्धमानदेव। पत्र सं ४६। आ १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-राजा वरांग का जीवन चरित्र। र काल ×। ले काल सं १५६४ कार्तिक सुदी १। पूर्ण। वे० सं १२१। ख भण्डार।

विशेष-प्रशस्ति—

सं १५६४ वर्षे शाके १४३६ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे शुक्लपक्षे दशमीदिवसे शनैश्चरवासरे धनिष्ठानक्षत्रे गंडयोगे मालवी नाम महानगरे राव श्री सूर्यसेनि राज्यप्रवर्तमाने कवर श्री पूरणमल्लप्रसादे श्री शान्तिनाथ जिनचैत्यालये श्रीमूल

सघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदि देवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावडागोत्रे संघाधिपति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम स श्री खींवा तद्भार्ये द्वे प्रथमा स० खेमलदे द्वितीयो सुहागदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वेणा तद्भार्ये द्वे प्रथमा विमलादे द्वि० नौलादे । तृतीय स डूंगरसी तद्भार्या दाड्योंदे एतेसा मध्ये स. विमलादे इद शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त ज्ञानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६३ भादवा बुदी १४ । वे० स० ६६६ । क भण्डार ।

२३४४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६४ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० ३३० । च भण्डार ।

२३४५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १८३६ फागुण सुदी १ । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय मे सतोषराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६ प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १८४७ वैशाख सुदी १ । वे० स० ४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सागावती (सागानेर) में गोधो के चैत्यालय मे प० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४७. प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल सं० १८३१ आषाढ सुदी ३ । वे० स० ४६ । ञ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चद्रप्रभ चैत्यालय मे प० रामचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० से ५६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—८वें सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९ वरागचरित्र—भर्तृहरि । पत्र स० ३ से १० । आ० १२३/४×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५० वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनदि । पत्र स० ५० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल स० १५१८ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ञ भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनदि विरचिते सुखनामा दिने श्री वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय परिच्छेद

२३४१ वर्द्धमानकथा—जयमित्रहल। पत्र सं० ७१। आ० ६३×५३ इञ्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १५५५ बैशाख सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० १५३। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति—

सं० १५५५ वर्षे बैशाख सुदी ३ शुक्रवारे मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्र तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लिभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचंद्र तत्पट्टे भट्टारक श्रीचंद्रकीर्ति विरचित श्री नेमदत्त आचार्य खंडेलवालान्वय महापुर्यां श्रीनेमिनाथ चैत्यालये कुम्भाहर्मस महाराजाधिराज महाराजा श्री मानसिंघराज्ये प्रवर्तमाने सा० बीरा तत्भार्या......तत्पुत्र चतुर्विध प्रथम पुत्र ...... । (अपूर्ण)

२३४२ प्रति सं० २। पत्र सं० ५२। ले० काल ×। वे० सं० १५५३। ट भण्डार।

२३४३ वर्द्धमानचरित्र......। पत्र सं० १६८ से २१२। आ० १ ×४३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८६। अ भण्डार।

२३४४ प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११७४। अ भण्डार।

२३४५ वर्द्धमानचरित्र—केशरीसिंह। पत्र सं० १८१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। र० काल सं० १८९१ से काल सं० १८९४ सावन सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६४८। क भण्डार।

विशेष—सदासुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

२३४६ विक्रमचरित्र—वाचनाचार्य अभयसोम। पत्र सं० ४ से ५। आ० १ ×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—विक्रमादित्य का जीवन। र० काल सं० १७२४। ले० काल सं० १७८१ भादवा सुदी ४। अपूर्ण। वे० सं० ११६। अ भण्डार।

विशेष—उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२३४७ विदग्धमुखमंडन—बौद्धाचार्य धर्मदास। पत्र सं० २। आ० १ ३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल सं० १८११। पूर्ण। वे० सं० १२७। अ भण्डार।

२३४८ प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १ ११। अ भण्डार।

२३४९ प्रति सं० ३। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० ६५७। क भण्डार।

विशेष—जयपुर में महात्मा ने प्रतिलिपि की थी।

२३५० प्रति सं० ४। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १७२४। वे० सं० ६५८। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी है।

२३५१ प्रति सं० ५। पत्र सं० २६। ले० काल ×। वे० सं० ११३। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर लिखा है 'श्री जिन सेवक साह चांदराज जाति सोगाणी वामा सुत।

२३६२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४७। ले० काल स १६१५ चैत्र सुदी ७। वे० स० ११५। छ भण्डार।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२३६३ प्रति सं० ७। पत्र सं० ३३। ले० काल स० १८८१ पौष बुदी ३। वे० सं० २७८। ज भण्डार।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है।

२३६४. प्रति सं० ८। पत्र स० ३०। ले० काल सं० १७५६ मंगसिर बुदी ८। वे० सं० ३०१। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२३६५ प्रति स० ६। पत्र स० ३८। ले० काल स० १७४३ कार्त्तिक बुदी २। वे० स० ५०७। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गणि हैं।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११३, १४६) ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५०७) और है।

२३६६. विदग्धमुखमंडनटीका—विनयरत्न। पत्र सं० ३३। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। टीकाकाल स० १५३५। ले० काल स० १६८३ आसोज सुदी १०। वे० स० ११३। छ भण्डार।

२३६७. विहारकाव्य—कालिदास। पत्र स० २। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल स० १८४६। वे० सं० १८५३। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर मे चण्द्रप्रभ चैत्यालय मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति के समय मे लिखी गई थी।

२३६८. शंबुप्रद्युम्नप्रबध—समयसुन्दरगणि। पत्र सं० २ से २१। आ० १०½×४½ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–श्रीकृष्ण, शबुकुमार एवं प्रद्युम्न का जीवन। र० काल ×। ले० काल स० १६५६। अपूर्ण। वे० स ७०१। क भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १६५६ वर्षे विजयदशम्या श्रीस्तंभतीर्थे श्रीवृहत्खरतरगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपति पातिसाह जलालद्दीन अकबरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि सूरश्वराणा (सूरीश्वराणा) साहिसमक्षस्वहस्तस्थापिता आचार्यश्रीजिनसिंहसूरिसुररिकराणा (सूरीश्वराणा) शिष्य मुख्य पंडित सकलचन्द्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगणिना श्रीजेसलमेरु वास्तव्ये नानाविध शास्त्रविचाररसिक लो० सिवरीज समभ्यर्थनया कृत श्री शंबप्रद्युम्नप्रबन्धे प्रथम खड.।

२३६६. शान्तिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि। पत्र सं० १६६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२४। अ भण्डार।

विशेष—१६६ से आगे के पत्र नहीं हैं।

२३७०. प्रति सं० २। पत्र सं० १ से १५। ले० काल सं० १७१४ पौष बुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० ११२०। ट भण्डार।

२३७१. शान्तिनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति। पत्र सं० १६२। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १७७१ चैत्र सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १२६। अ भण्डार।

२३७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २२८। ले० काल ×। वे० सं० ७२। क भण्डार।

विशेष—तीन प्रकार की लिपियां हैं।

२३७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २९१। ले० काल सं० १८६१ माह बुदी ६। वे० सं० ७१। क भण्डार।

विशेष—लिखितं डूगरीरामलाल सवाई जयनगरमध्ये वासी गैंवटा का इसन कंवरी मतलावता के मन्दिर लिखी। लिखाप्यतं चंपारामजी साबडा सवाई जयपुर मध्ये।

२३७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८७। ले० काल सं० १८६४ फागुण बुदी १२। वे० सं० १४१। घ भण्डार।

विशेष—यह प्रति स्योजीरामजी दीवान के मन्दिर की है।

२३७५. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १७११ कार्तिक सुदी ११। वे० सं० १४। ङ भण्डार।

विशेष—सं० १८०१ जेठ बुदी ६ के दिन सवाईराम ने इस प्रति का संशोधन किया था।

२३७६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १७ से १२७। ले० काल सं० १८८८ वैशाख सुदी २। अपूर्ण। वे० सं० ४६४। व भण्डार।

विशेष—महात्मा पन्नालाल ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त छ व तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३ ४८६ १६२६) और हैं।

२३७७. शालिभद्रचौपई—मतिसागर। पत्र सं० । आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१५४। अ भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र आधा फटा हुआ है।

२३७८. प्रति सं० २। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० ११२। अ भण्डार।

२३७९. शालिभद्र चौपई····। पत्र सं० ५। आ० ८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१।

विशेष—रचना में ६ पद्य हैं तथा अशुद्ध लिखी हुई है। अन्तिम पाठ नहीं है।

प्रारम्भ—

श्री सासण नायक सुमरिये वर्द्धमान जिनचंद ।
अलीइ विघन दुरोहर आपै प्रमानद ॥१॥

२३८०. शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४६ । आ० ११३/४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६३ । अ भण्डार ।

२३८१ प्रति स० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२ शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । आ० ११३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—६ सर्ग है । प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या अलग अलग है ।

२३८३. प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । ज भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । ज भण्डार ।

२३८५ प्रति सं० ४ । पत्र स० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अपूर्ण । वे० स० १४५ । व्य भण्डार ।

२३८६. श्रवणभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र स० २५ । आ० १२१/२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—श्री नमो पार्श्वनाथाय ।

हेरवक्त्व किमव किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला
कृत्य किं शरजत्मनोक्त मन पादंतारू रं स्यादिति तात ।
कुप्पति गृह्यतामिति विहायाहर्तुं मन्या कला—
माकांशे जयति प्रसारित कर स्तवेरमयामणी ॥१॥
य' साहित्यसुधैदुर्नरहरि रल्लालनदन ।
कुरुते सैंशवरण भूषणाव्या विदग्धमुखमडणव्याख्या ॥२॥
प्रकारा संतु वहवो विदग्घमुखमडने ।
तथापि मत्कृत भावि मुख्यं भुवण-भूषणं ॥३॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरभट्टविरचिते श्रवणभूषणे चतुर्थ परिच्छेद संपूर्ण ।

२३८७ श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र सं० ६८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–संस्कृत। विषय–चरित्र। र० काल सं० १५८५ । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वे० सं० २१० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। प्रशस्ति—

संवत् १६४१ वर्षे आषाढ सुदी ५ शनिवासरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य मं० भुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य मं धर्मकीर्तिदेवा द्वितीय शिष्यमंडलाचार्य विशालकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य लक्ष्मीचंद्रदेवा तदाम्नाये मं सहस्रकीर्तिदेवा तदाम्नाये मंडलाचार्य नेमचंद तदाम्नाये खंडेलवालान्वये रैनाला वास्तव्ये रपडा योत्रे सा श्रीमा त ………।

२३८८. प्रति स० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं १८४१ । वे० सं ६६६ । क भण्डार ।

२३८९. प्रति स० ३ । पत्र सं ४२ । ले काल सं १८४५ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे सं १११ । ख भण्डार ।

विशेष—मालवदेश के पूर्णाशा नगर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी। किशनराम ने तक्षकपुर (टोडारायसिंह) में अपने पुत्र चि टेकचन्द के स्वाध्यायार्थ इसकी तीन दिन में प्रतिलिपि की थी।

यह प्रति पं पुन्नालाल की है। हरिदुर्ग में यह ग्रन्थ मिला ऐसा उल्लेख है।

२३९० प्रति स० ४ । पत्र सं १२ । लि काल सं १८१५ मासोज सुदी ४ । वे सं १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—केकड़ी में प्रतिलिपि हुई थी।

२३९१ प्रति सं० ५ । पत्र सं ४२ से ७६ । ले काल सं १७११ सावन सुदी ४ । वे सं । छ भण्डार ।

विशेष—बुन्दावती में राव बुधसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

२३९२. प्रति स० ६ । पत्र सं ६ । ले काल सं १८३१ फागुण सुदी १२ । वे स १८ । ख भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में श्वेताम्बर पंडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी।

२३९३ प्रति स० ७ । पत्र सं ५१ । ले० काल सं १८२७ चैत सुदी १४ । वे० सं १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं रूपचन्द ने कर्मक्षयार्थ प्रतिलिपि की थी।

२३९४ प्रति स० ८ । पत्र सं ४४ । ले काल सं १८३६ माह सुदी ८ । वे स ६ । ग भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२३९५ प्रति स० ९ । पत्र सं ५८ । ले काल सं १६७४ भादवा सुदी ५ । वे सं २१३१ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २३३, २५६) क, छ तथा ञ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० सं० ७२१, ३६ तथा ८५) और हैं।

२३९६. श्रीपालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र स० ५६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल शक स० १६५३। पूर्ण। वे० सं० १०१४। अ भण्डार।

विशेष—ब्रह्मचारी माणकचद ने प्रतिलिपि की थी।

२३९७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२८। ले० काल स० १७६५ फागुन बुदी १२। वे० स० ४०। छ भण्डार।

विशेष—तारणपुर मे मडलाचार्य रत्नकीर्त्ति के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी।

२३९८. प्रति सं० ३। पत्र स० २८। ले० काल ×। वे० सं० १६२। ज भण्डार।

विशेष—यह ग्रन्थ चिरंजीलाल मोद्धा ने सं० १९६३ की भादवा बुदी ८ को चढाया था।

२३९९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २९ (६० से ८८) ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९७। झ भण्डार।

विशेष—पं० हरलाल ने वाम मे प्रतिलिपि की थी।

२४००. श्रीपालचरित्र । पत्र स० १२ से ३४। आ० ११¾×४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९३। अ भण्डार।

२४०१. श्रीपालचरित्र । पत्र स० १७। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९९६। अ भण्डार।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल। पत्र स० १४४। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र। र० काल स० १६५१। आषाढ बुदी ८। ले० काल स० १९३३। पूर्ण। वे० सं० ४०७। अ भण्डार।

२४०३. प्रति स० २। पत्र स० १६४। ले० काल स० १८९८। वे० स० ४२१। अ भण्डार।

२४०४. प्रति स० ३। पत्र स० ५२ से १४४। ले० काल सं० १८५९। वे० स० ४०४। अपूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। दीवान शिवचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाया था।

२४०५. प्रति स० ४। पत्र स० ९६। ले० काल सं० १८८९ पौष बुदी १०। वे० स० ७९। ग भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ आगरे मे आलमगज मे लिखा था।

२४०६. प्रति स० ५। पत्र सं० १२४। ले० काल स० १८६७ वैशाख सुदी ३। वे० स० ७१७। क भण्डार।

विशेष—महात्मा कालूराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२४०७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८३७ मासोज सुदी ७ । वे सं ७११ । क भण्डार ।

विशेष—सवाइराम गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८६२ माघ सुदी २ । वे सं ६८३ । च भण्डार ।

२४०९ प्रति स० ८ । पत्र सं ८६ । ले० काल सं० १७१ पौष सुदी २ । वे सं १०४१ छ भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज है । हिण्डौन में प्रतिलिपि हुई थी । अन्तिम ५ पत्रों में कर्मप्रकृति वर्णन है जिसका लेखनकाल सं १७११ आसोज सुदी ११ है । सांगानेर में मुन्शी मथुराम ने कान्हजीदास के पठनार्थ लिखा था ।

२४१० प्रति स० ६ । पत्र सं १११ । ले काल सं १८८२ सावन सुदी ५ । वे सं २२८ । म भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

विशेष—इसके अतिरिक्त ख भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं १ ७७ ४१८) घ भण्डार में एक प्रति (वे सं १४) क भण्डार में तीन प्रतियां (वे सं ७१५, ७१८ ७२) छ, म और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे सं २२५, २२६ और १९११) और हैं ।

२४११ श्रीपालचरित्र……। पत्र सं २५ । आ ११३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र काल × । ले काल सं १८६१ । पूर्ण । वे सं १ ३ । घ भण्डार ।

विशेष—अमीचन्दजी सोगाणी तकेला वालोंकी बहूने लिखवाकर बिजैरामजी पांड्या के मन्दिर में विराजमान किया ।

२४१२ प्रति सं० २ । पत्र सं ४२ । ले काल × । वे सं ७ । क भण्डार ।

२४१३ प्रति स० ३ । पत्र स ४२ । ले काल सं १९२९ पौष सुदी ८ । वे सं ८ । ग भण्डार ।

२४१४ प्रति स० ४ । पत्र सं ११ । ले काल सं १९१ फागुण सुदी ६ । वे सं ८२ । ग भण्डार ।

२४१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं ४२ । ले काल सं १९१४ फागुन सुदी ११ । वे सं २११ । छ भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पाटणीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४१६ प्रति स० ६ । पत्र सं २५ । ले काल × । वे सं १७४ । छ भण्डार ।

२४१७ प्रति सं० ७ । पत्र सं ३१ । ले काल सं १९३१ । वे सं ४४ । झ भण्डार ।

२४१८ श्रीपालचरित्र …। पत्र सं० २४। आ० ११३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६७५।

विशेष—२४ से आगे पत्र नही हैं। दो प्रतियो का मिश्रण हैं।

२४१९. प्रति सं० २। पत्र स० ३९। ले० काल ×। वे० सं० ८१। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

२४२०. प्रति स० ३। पत्र स० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६८४। च भण्डार।

२४२१. श्रेणिकचरित्र… । पत्र स० २७ से ४८। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७३२। ङ भण्डार।

२४२२ श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति। पत्र सं० ४६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३५६। च भण्डार।

२४२३ प्रति स० २। पत्र स० १०७। ले० काल सं० १८३७ कार्त्तिक सुदी । अपूर्ण। वे० स० २७। छ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है।

२४२४. प्रति स० ३। पत्र स० ७०। ले० काल ×। वे० सं० २८। छ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियो को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

२४२५. प्रति स० ४। पत्र स० ८१। ले० काल सं० १८१८। वे० स० २६। छ भण्डार।

२४२६. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ८४। आ० १२×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २४६। अ भण्डार।

विशेष—टोक मे प्रतिलिपि हुई थी। इसका दूसरा नाम भविष्यत् पद्मनाभपुराण भी है

२४२७. प्रति सं० २। पत्र स० ११९। ले० काल स० १७०८ चैत्र बुदी १४। वे० स० १६४। ख भण्डार।

२४२८ प्रति स० ३। पत्र स० १४८। ले० काल स० १९२९। वे० सं० १०५। घ भण्डार।

२४२९. प्रति स० ४। पत्र स० १३१। ले० काल स० १८०१। वे० सं० ७३५। ङ भण्डार।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखरणौती मे प्रतिलिपि की थी।

२४३०. प्रति स० ५। पत्र स० १४६ ले० काल स० १८६४ आषाढ सुदी १०। वे० सं० ३५२। च भण्डार।

२४३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७५। ले० काल स० १८६१ श्रावण बुदी १। वे० सं० ३५३ च भण्डार।

विशेष—जयपुर में उदयचंद लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी।

२४३२. नेमिनाथचरित्र—भट्टारक विजयकीर्त्ति। पत्र सं १२६। आ० १०×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र० काल सं० १८२० फागुण सुदी ७। ले० काल सं १६०१ पौष सुदी १। पूर्ण। वे सं ४१७। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

विजयकीर्त्ति भट्टारक नाम इह भाषा कीनी परमाण।
संवत अठारास बीस फागुण सुदी सातै सु जगीस ॥
बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र शुभ जोग सुथई।
गोत पाटणी है सुभिराम, विजयकीर्त्ति भट्टारक नाम ॥
तसु पटधारी श्री मुनिनाभि बडजात्यासु गोत पिछाणि।
त्रिलोकेन्द्रकीर्त्तिरिपिराज नित्यप्रति साधम आतम काज ॥
विजयमुनि शिषि बुधिव सुजाण श्री वैराख वेस तसु भाण।
धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोल्या गोत बरण्यो अभिराम।
गणसमेद सिखाधरण मही कारंजय पट सोभा लही ॥

२४३३ प्रति सं० २। पत्र सं ७६। ले काल सं १८८१ ज्येष्ठ सुदी २। वे सं ८१। ग भण्डार।

विशेष—महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाईराम गोधा ने आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। मोहनराम चौधरी पांड्या ने ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के चैत्यालय में चढाया।

२४३४ प्रति स० ३। पत्र सं ८६। ले काल ×। वे सं १६१। छ भण्डार।

२४३५ नेमिनाथचरित्रभाषा……। पत्र सं० ३१। आ ११×५½ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ७११। क भण्डार।

ढाल पचतालीसमो गुरुवानी—

सवत् वेद युग जाणीय मुनि शशि वर्ष उदार ।। सुगुण नर सांभलो० ।।
मेदपाढ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ।। ५ ।। सुगुण०
गढ जालोरइ युग तस्यु लिखीउए अधिकार ।
अमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ।। ६ ।। सु०
भाद्रव मास महिमा वणी पूरण करयो विचार ।
भविक नर साभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ।। ७ ।। सु०
लूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।
गुरु झांझण श्रुत केवली थिवर गुणे चोसाल ।। ८ ।। सु०
समरथथिवर महा मुनी सुदर रुप उदार ।
तत शिप भाव धरी भणइ सुगुरु तणइ आधार ।। ९ ।। सु०
उछौ अधिक्यो कह्यो कवि चातुरीय किलोल ।
मिथ्या दु कृत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ।। १० ।। सु०
सजन जन नर नारि जे सभली लहइ उल्हास ।
नरनारी धर्मातिमा पडित म करो को हास ।। ११ ।। सु०
दुरजन नइ न मुहाबई नही आवइ कहे दाय ।
माखी चदन नादरइ असुचितिहा चलि जाय ।। १२ ।। सु०
प्यारो लागइ सतनइ पामर चित संतोष ।
ढाल भली २ सभली चिते थी ढाल रोप ।। १२ ।। सु०
श्री गच्छ नायक तेजसी जव लग प्रतपो भाण ।
हीर मुनि आसीस द्यइ हो ज्यो कोडि कल्याण ।। १४ ।। सु०
सरस ढाल सरसी कथा सरसो सहु अधिकार ।
हीर मुनि गुरु नाम थी आणद हरष उदार ।। १५ ।। सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र सपूर्णं । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्त्तिक वुदी १ दिने सोमवासरे लिखत श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् शिष्य प्रवर पडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदतेवासी लिपिकृतं मुनिसावल आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभ भवतु ।

२४३९. सिरिपालचरिय—प० नरसेन। पत्र स० ४७ । आ० ६३/४×४१/२ इ च । भाषा—अपभ्र श । विषय—राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल स० १६१५ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ४१० । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

विशेष—जयपुर में उदयचंद लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी।

२४३२. श्रेणिकचरित्र—भट्टारक विजयकीर्ति। पत्र सं० १२१। आ० ११ ×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १८२० फागुण सुदी ७। ले० काल सं० १९०३ पौष सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ४१७। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय–

विजयकीर्ति भट्टारक जान इह भाषा कीनी परमाण।
संवत अठारास बीस फागुण सुदी सातै सु जगीस ॥
बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र शुभ जोग सुभई।
गोत पाटणी है मुनिराय विजयकीर्ति भट्टारक थाप ॥
तसु पटधारी श्री मुनिजानि बड़जात्यानसु गोत पिछाणि।
त्रिलोकेन्द्रकीर्तिरिषिराय नितप्रति साधय आतम काज ॥
विजयमुनि शिषि सुनिय सुजाण श्री बैराठ देश तसु थान।
धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोल्या गोत धरयो अभिराम।
सकलकीर्ति शिष्यालय मही कारंजय पट सोभा लही ॥

२४३३. प्रति सं० २। पत्र सं० ७६। ले० काल सं० १८८१ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० ८१। ग भण्डार।

विशेष—महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाईराम गोधा ने पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी। मोहनराम चौधरी गोधा ने ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के चैत्यालय में चढ़ाया।

२४३४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० १११। छ भण्डार।

२४३५. श्रेणिकचरित्रभाषा......। पत्र सं० ५५। आ० ११×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७११। क भण्डार।

२४३६. प्रति सं० २। पत्र सं० ११ से ५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७१४। क भण्डार।

२४३७. सम्भवजिणणाहचरिउ (सम्भवनाथ चरित्र) तेजपाल। पत्र सं० ९२। आ० १ ×५ इंच। भाषा–अपभ्रंश। विषय–चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ११५। भ भण्डार।

२४३८. सागरदत्तचरित्र—हीरकवि। पत्र सं० १८ से २ । आ० १ ×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–चरित्र। र० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १। ले० काल सं० १७९७ कार्तिक सुदी १। अपूर्ण। वे० सं० ८१५। भ भण्डार।

विशेष–प्रारम्भ के १७ पत्र नहीं हैं।

ढाल पचतालीसमी गुरुवानी—

सवत् वेद युग जाणीय मुनि शशि वर्ष उदार ।। सुगुण नर सांभलो० ।।
मेदपाढ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ।। ५ ।। सुगुण०
गढ जालोरइ युग तस्यु लिखीउए अधिकार ।
अमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ।। ६ ।। सु०
भाद्रव मास महिमा घणी पूरण करयो विचार ।
भविक नर साभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ।। ७ ।। सु०
लू कइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।
गुरु भाभण श्रुत केवली थिवर गुणे चोसाल ।। ८ ।। सु०
समरथथिवर महा मुनी सुदर रुप उदार ।
तत शिष भाव धरी भणइ सुगुरु तणइ आधार ।। ९ ।। सु०
उछौ अधिक्यो कह्यो कवि चातुरीय किलोल ।
मिथ्या दु कृत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ।। १० ।। सु०
सजन जन नर नारि जे सभली लहइ उल्हास ।
नरनारी धर्मातिमा पडित म करो को हास ।। ११ ।। सु०
दुरजन नइ न सुहाबई नही आवइ कहे दाय ।
माखी चदन नादरइ असुचितिहा चलि जाय ।। १२ ।। सु०
प्यारो लागइ सतनइ पामर चित सतोष ।
ढाल भली २ सभली चिते थी ढाल रोष ।। १२ ।। सु०
श्री गच्छ नायक तेजसी जव लग प्रतपो भाण ।
हीर मुनि आसीस द्यइ हो ज्यो कोडि कल्याण ।। १४ ।। सु०
सरस ढाल सरसी कथा सरसो सहु अधिकार ।
हीर मुनि गुरु नाम थी आणद हरष उदार ।। १५ ।। सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरिम सपूर्णं । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने सोम-वासरे लिखत श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् शिष्य प्रवर पडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदतेवासी लिपिकृतं मुनिसावल आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभ भवतु ।

२४३९. सिरिपालचरिय—प० नरसेन । पत्र स० ४७ । आ० ९½×४½ इ च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । र० काल × । ले० काल स० १६१५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ४१० । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४० सीताचरित्र—कवि रामचन्द (बालक)। पत्र सं १० । आ १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र काल स १७१३ मंगसिर सुदी ५। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७ ।

विशेष—रामचन्द्र कवि बालक के नाम से विख्यात थे।

२४४१ प्रति स० २। पत्र सं १८ । ले काल ×। वे सं ९१। ग भण्डार।

२४४२ प्रति स० ३। पत्र सं १९९। ले काल सं १८८४ कार्तिक सुदी ३। वे सं ७११। च भण्डार।

विशेष—प्रति सजिल्द है।

२४४३ सुकुमालचरित—श्रीधर। पत्र सं ९५। आ १ ×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय-सुकुमाल मुनि का जीवन वर्णन। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं० २८८। ख भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२४४४ सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र सं ४४। आ १ ×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। र काल ×। ले काल सं १६७ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वे सं २४। ख भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७ शाके १५२७ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदकार्तिकमासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ सोमवासरे नागपुरमध्ये श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्ट भ श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्ट भ श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्ट भ श्री प्रभाचंद्रदेवा मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्ट भ श्रीधर्मकीर्तिदेवा तत्पट्ट भ श्रीसहस्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीनेमचंद्रदेवा तत्पट्ट मंडलाचार्य श्रीयशकीर्ति तदाम्नाय खण्डेलवालान्वये मौसागोत्रे सा सोनू तस्यभार्या सोलश्री तयो पुत्र सा फलहू तस्यभार्या फूलमदे तयो पुत्रा षट्। प्रथम पुत्र सा नरसिंह तस्यभार्या नरसिंदे। द्वितीयपुत्र सा बरसिंह तस्यभार्या बहुरंगदे तयो पुत्र सा ठाकुर तस्यभार्या ठाकुरदे। तृतीयपुत्र सा खेता तस्यभार्या खेतलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सा. रणमल तस्यभार्या रयणादे तयो पुत्रौ द्वौ प्र चि कवरा द्वितीय पुत्र चि धनेऊ। द्वितीय पुत्र सा पद्मा तस्यभार्या पाटमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र चि माधू द्वि पुत्र चि उदयसिंह। चतुर्थ पुत्र सा रूपा तस्यभार्या रूपमदे। पंचमपुत्र सा तेजा तस्यभार्या तेजलदे। तयो पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि बाधू द्वितीयपुत्र सुलतान। षष्टमपुत्र सा भीवा तस्यभार्या द्व प्रथमा भावलदे द्वितीय भीवलदे। तयो पुत्रा-श्चत्वारः प्रथम पुत्र सा. नानिग तस्यभार्या द्व प्रथमा नानिमदे द्वितीया गौराादे तयोः पुत्र चि उदयसिंह। सा. भीवा। द्वितीय पुत्र सा. हेमा तस्यभार्या हेमलदे। तृतीयपुत्र चि सूठा चतुर्थ पुत्र चि पूरण। एतेषांमध्ये सा. भीवा तस्यभार्या साध्वी भीवलदे तयेदं शास्त्रं सुकुमालचरित्राख्यं ज्ञानावरणी कर्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य सत्पात्राय प्रदत्तं।

२४४५ प्रति स० । पत्र सं ४८। ले काल सं १७८३। वे सं १२३। ख भण्डार।

२४४६ प्रति स० ३। पत्र सं ४२। ले काल सं १८९४ ज्येष्ठ सुदी १४। वे सं ४१२। च भण्डार।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२४४७ प्रति सं० ४। पत्र स० २६। ले० काल स० १८१६। वे० स० ३२। छ भण्डार।

विशेष—कही कही सस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए हैं।

२४४८ प्रति स० ५। पत्र स० ३४। ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० स० ३४। छ भण्डार।

विशेष—सागानेर मे सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४४६ प्रति स० ६। पत्र स० ४४। ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ऽऽ। वे० स० ८६। ञ भण्डार।

विशेष—प० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ, ङ, छ, झ तथा ञ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ८६५, ३३, २, ३३४) और हैं।

२४५० सुकुमालचरित्रभाषा—पं० नाथूलाल दोसी। पत्र स० १४३। आ० १२$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-चरित्र। र० काल स० १९१८ सावन सुदी ७। ले० काल स० १९३७ चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे० स० ८०७। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ मे हिन्दी पद्य मे है इसके बाद वचनिका मे हैं।

२४५१ प्रति स० २। पत्र स० ८५। ले० काल स० १९९०। वे० स० ८६१। ङ भण्डार।

२४५२ प्रति सं० ३। पत्र स० ६२। ले० काल ×। वे० सं० ८६४। ङ भण्डार।

२४५३. सुकुमालचरित्र—हरचद गंगवाल। पत्र स० १५३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र० काल स० १९१८। ले० काल सं० १९२९ कार्त्तिक सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ७२०। च भण्डार।

२४५४ प्रति स० २। पत्र स० १७४। ले० काल स० १९३०। वे० स० ७२१। च भण्डार।

२४५५ सुकुमालचरित्र ·। पत्र स० ३६। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल स० १९३३। पूर्ण। वे० स० ८६२। ङ भण्डार।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। प्रथम २१ पत्रो मे तत्त्वार्थसूत्र है।

२४५६ प्रति स० २। पत्र स० ६० मे ७९। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८६०। ङ भण्डार।

२४५७ सुखनिधान—कवि जगन्नाथ। पत्र स० ५१। आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल स० १७०० आसोज सुदी १०। ले० काल स० १७१४। पूर्ण। वे० स० १९९। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १० मोजाबाद (मोजमाबाद) मध्ये श्री श्रादीश्वर चैत्यालये लिखितं पं दामोदरेण ।

२४५८ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ले काल स १८१ कार्तिक सुदी १३ । वे सं २१६ । म भण्डार ।

२४५६. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं ६ । आ ११×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—चरित्र । र काल × । ले काल सं १७१५ । अपूर्ण । वे सं ८ । अ भण्डार ।

विशेष—२६ से ५० तक पत्र नहीं हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत १७७५ वर्षे माघ शुक्लैकादश्यांशोभे पुष्करज्ञातीयेन मिश्रअमरामेणेव सुदर्शनचरित्र लेखक पाठकयोः शुभ भूयात् ।

२४६० प्रति स० २ । पत्र सं २ से १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं ४१५ । च भण्डार ।

२४६१ प्रति स० ३ । पत्र सं २ से ४१ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ४१६ । च भण्डार ।

२४६२. प्रति स० ४ । पत्र सं ५ । ले काल × । वे सं ४६ । छ भण्डार ।

२४६३ सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र स ६१ । आ ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२ । अ भण्डार ।

२४६४ प्रति स० २ । पत्र स ६६ । ले काल × । वे सं ४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । पत्र ५६ से ५८ तक नवीन लिखे हुए हैं ।

४६५. प्रति स० ३ । पत्र सं ५८ । ले काल सं १६५२ फागुण सुदी ११ । वे० सं २२१ । स भण्डार ।

विशेष—साह मनोरथ ने मुकुंददास से प्रतिलिपि कराई थी ।

नीचे- सं १६२८ में असाढ सुदी ६ को पं तुलसीदास के पठनार्थ दी गई ।

२४६६ प्रति स० ४ । पत्र सं १० । ले काल सं १०१ चैत्र सुदी ६ । वे सं ६२ । अ भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने अपने शिष्य सेवकराम के पठनार्थ लिखाई ।

२४६७ प्रति स० ५ । पत्र सं ६७ । ले काल × । वे सं ११५ । अ भण्डार ।

२४६८ प्रति स० ६ । पत्र सं० ७१ । ले काल स १६६ फागुन सुदी २ । वे स २१६८ । ट भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२४६६ सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि। पत्र स० २७ से ३६। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८६३। ङ भण्डार।

२४७०. प्रति सं० २। पत्र स० २१८। ले० काल स० १८१८। वे० स० ४१३। च भण्डार।

२४७१ प्रति सं० ३। पत्र स० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४१४। च भण्डार।

२४७२. प्रति सं० ४। पत्र स० ७७। ले० काल स० १६६५ भादवा वुदी ११। वे० स० ४८। छ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संवत्सरेति श्रीपनृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द सवत् १६६५ वर्षे भादौं वुदि ११ गुरुवासरे कृष्णपक्षे अर्गलापुरदुर्गे शुभस्थाने अश्वपतिगजपतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमत् काष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री भानुकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदाम्नाये इक्ष्वाकवंशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालव सुभस्थाने जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्त्तिना पठनार्थं लिखित।

२४७३. प्रति सं० ५। पत्र स० ७७। ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदी ४। वे० स० ३। झ भण्डार।

विशेष—चित्रकूटगढ मे राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भ० जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव आदि शिष्यो ने प्रतिलिपि की। प्रशस्ति अपूर्ण है।

२४७४ प्रति स० ६। पत्र स० ४५। ले० काल ×। वे० स० २१३६। ट भण्डार।

२४७५. सुदर्शनचरित्र ·। पत्र स० ४ से ५६। आ० ११¾×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६८। अ भण्डार।

२४७६ प्रति स० २। पत्र स० ३ से ४०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६८५। अ भण्डार।

विशेष—पत्र स० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नही हैं।

२४७७ प्रति स० ३। पत्र स० ३१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८५६। ङ भण्डार।

२४७८ सुदर्शनचरित्र ·। पत्र स० ५४। आ० १३×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६०। छ भण्डार।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द। पत्र स० ३७। आ० ८½×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभौम चक्रवर्त्ति का जीवन चरित्र। र० काल स० १६८३ भादवा सुदी ५। ले० काल स० १८५०। पूर्ण। वे० स० ५५। छ भण्डार।

विशेष—विवुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया। प० सवाईराम के शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी। हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है।

२४८० प्रति स० २ । पत्र सं २४ । ले काल स १८४ वैशाख सुदी १ । वे सं १२१ । ग भण्डार ।

विशेष—हेमराज पाटनी के लिये टोडरराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२४८१ हनुमच्चरित्र—ब्र० अजित । पत्र सं १२४ । सा १ ३/४×४२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र काल × । लि काल स १६८२ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे सं १ । ग भण्डार ।

विशेष—भृगुकच्छपुरी में श्री नेमिजिनालय में ग्रन्थ रचना हुई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८२ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे एकादश्यांतिथौ कामवारे । लिखापितं पंडित श्री मालम इदं शास्त्रं लिखितं जोषा लेखक ग्राम वैरागरमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २ ।

२४८२ प्रति स० २ । पत्र सं ८५ । लि काल सं १६४४ चैत्र सुदी ५ । वे सं १४६ । ग भण्डार ।

२४८३ प्रति स० ३ । पत्र सं ६१ । लि काल सं १८२६ । वे सं ८४८ । क भण्डार ।

२४८४ प्रति स० ४ । पत्र सं ६२ । लि काल सं १९२८ वैशाख सुदी ११ । वे सं ८४६ । क भण्डार ।

२४८५ प्रति स० ५ । पत्र सं २१ । लि काल सं १८ ७ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे सं २४१ । ग भण्डार ।

विशेष—सुनरीलाल मोतीराम ममवाल ने पंडित उदयराम के पठनार्थ कालाडेहरा (कृष्णगढ) म प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४८६ प्रति स० ६ । पत्र सं ८२ । लि काल सं १८८२ । वे सं ६६ । ग भण्डार ।

२४८७ प्रति स० ७ । पत्र स ११२ । लि काल सं १५८८ । वे सं ११ । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति नहीं है ।

२४८८ प्रति स० ८ । पत्र सं ३१ । लि काल × । अपूर्ण । वे सं ४४२ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४८९ प्रति स० ९ । पत्र सं ८६ । लि काल × । वे सं ५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४९० प्रति स० १० । पत्र सं ६७ । लि काल सं १६११ कार्तिक सुदी ११ । वे स १ ८ ८ । च भण्डार ।

विशेष—[illegible] प्रशस्ति न [illegible] है ।

[illegible]

२४६१ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर सुदी ४ । वे० स० ३४७ । ञ भण्डार ।

विशेष—ब्र० डालू लोहशल्या सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल स० १६७४ । वे० स० ५१२ । ञ भण्डार ।

२४६३ प्रति स० १३ । पत्र स० २ से १०५ । ले० काल स० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष— पत्र १, ७३, व १०३ नही हैं लेखक प्रशस्ति वडी है ।

इनके अतिरिक्त झ और ञ भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १७७ तथा ४७३) और है ।

२४६४. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल स० १६१६ बैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०१ । अ भण्डार ।

२४६५ प्रति सं० २ । पत्र स० ५१ । ले० काल स० १८२४ । वे० सं० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १८८३ सावण बुदी ६ । वे० स० ६७ । ग भण्डार ।

विशेष—साह कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी १० । वे० स० ६०२ । ङ भण्डार ।

विशेष—स० १६५६ मगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी बंकी बालो के वडो पर संघीजी के मन्दिर मे यह ग्रन्थ भेंट किया गया ।

२४६८ प्रति सं० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १७६१ कार्त्तिक सुदी ११ । वे० स० ६०३ । ङ भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम मे वासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६६ प्रति स० ६ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १६६ । छ भण्डार ।

२५०० प्रति सं० ७ । पत्र स० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४१ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

२५०१. हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५३ । क भण्डार ।

२५०२. होलीरेणुकाचरित्र—प० जिनदास । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–चरित्र । र० काल स० १६०८ । ले० काल स० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अत महत्त्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

स्वस्ति श्रीमते शांतिनाथाय । संवत् १६ ८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथौ बुधवासरे हस्तनक्षत्रे श्री रणस्तंभदुर्गस्य शासानगरे सेरपुरनाम्नि श्रीशांतिनाथजिनचैत्यालये श्री मसलमसाह साहिमालम श्रीइस्लेमसाहराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्ट श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मं श्रीधर्मचंद्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सेठीगोत्रे सा सोल्हू तद्भार्या फुला तत्पुत्रास्त्रयः प्र सा. पचायण द्वि सा डीडा तृतीय सा करमा। सा पचायण भार्या चीलहा तत्पुत्र सा दामोदर तद्भार्ये द्व प्र खेमी द्वि मौसारे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. नेमा द्वितीय सा थोभू तृतीय सा ठेका। सा नेमा भार्या चतुरा। सा थोभू भार्या सबीरा सा डीडा भार्या गौरी तत्पुत्र सा हेमा तद्भार्ये द्वे प्रथम चीरश्री द्वितीय सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा श्रीकु द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा मोहनु। सा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्रौ द्वौ प्र सा धर्मदास द्वि सा जसवंत। सा धर्मदास भार्या सिगारदे जसवंत भार्या जसमादे तत्पुत्र चिरंजीवी ईसरदास एतेषांमध्ये जिनपूजापुरंदरेण उत्तमगुणगणालंकृतगात्रेण सा कर्मसिंहमध्ये पेमेसंघस्तवलिखाप्य माचार्य श्री ललितकीर्तये घटापितं कर्मक्षयनिमित्तोद्यापनार्थं ।

२५०३. प्रति स० २ । पत्र सं २ । ले काल × । वे सं ११ । ख भण्डार ।

२५०४ प्रति स० ३ । पत्र सं ५४ । ले काल सं १७२६ माघ सुदी ७ । वे सं ४२१ । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं रायमल्ल के द्वारा वृन्दावती (बून्दी) में स्वपठनार्थ चन्द्रप्रभु चैत्यालय में लिखी गई थी । कवि जिनदास रणथंभौरगढ के समीप नवलक्षपुर का रहने वाला था । उसने शेरपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में सं १६ ८ में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी ।

२५०५ प्रति स० ४ । पत्र सं १ से १५ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २१७१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

कथा-साहित्य

२५०६. अकलंकदेवकथा……। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०५६। ट भण्डार।

२५०७. अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा……। पत्र स० ६। आ० २२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८३४। ट भण्डार।

२५०८. अठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द। पत्र स० ४२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल स० १८०५ माह सुदी ५। ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी ८। वे० स० ६६८। श्र भण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग–

सवत अठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पाचा गुरुवार।
भणय मुहुरत सुभ जोग मैं जी हो कथण कह्यो सुवीचार ॥ धन धन० ॥४६९॥
श्री चीतोड तल्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम।
श्री सीध दोलती दो घणी जी हो सीध की पूरी जे ह्याम ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७०॥
तलहटी श्री सीगराज तो, जी हो वहुलो छय परीवार।
वेटा वेटी पोतरा जी हो अनधन अधीकं अपार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥
श्री कोठारी काम का धणी, जी हो छाजड सो नगरा सेठ।
था रावत मुराणा णोखरु दीपता जी हो ओर वाण्या हेठ ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७२॥
श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराज वाखाण।
पाट वणार आतर जी हो गुण सागर गुण खाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥
मोभागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कन्याण।
परवारा पूरो सही जी हो सकल वाता सु वीयाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥
श्री वीजयेगर्छ गीडवोधणी जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट।
श्री तीलक सुरद वीर जीवज्यो जी हो सहसगुणो का थाटै ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥
साध सकल मे सोभतो जी हो ऋपि लालचन्द नुसीम।
अठारा नता चोथी कयी जी हो ढाल भणी इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

ईती श्री धर्मउपदेस आठारा नाता चरीत्र सपूर्ण समाप्त ॥

सिखतु बेसी सुवकुवर की मारज्या की श्री १ ८ श्री श्री श्री मागाजी तत् सकरणी जी श्री श्री रामस्वा श्री रामकुवर जी । श्री मेवकुवर की श्री चंदनराजी श्री तुलछी मरणता तुरणता संपूर्ण ।

संवत् १८८१ वर्षे साके वर्षे मिती मासोज (काती) वदी ८ में दिन वार सोमरे । ग्राम सवामगढमध्ये संपूर्ण चोमासो तीजो कीधो ठारणा ६॥ की बो सो पदी सलीद छ श्री । मो श्री १ ८ श्री श्री मासस्या श्री क प्रसाद सलेद छ सेवुसी ॥ श्री श्री मासस्या श्री बांचवाने मरष । मारस्या जी बाचवाल मरच ठारणा ॥ ६ ॥

२५०६. अनन्तचतुर्दशी कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर । पत्र सं० १२ । आ० १ ×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२१ । अ भण्डार ।

२५१० अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ । च भण्डार ।

२५११ अनन्तचतुर्दशीकथा……। पत्र सं० १ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ ५ । ऋ भण्डार ।

२५१२ अनन्तव्रतविधानकथा—मदनकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ ५८ । ट भण्डार ।

२५१३ अनन्तव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ७ । आ० १ ×$४_२$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यों के हिन्दी अर्थ भी दिये हुये हैं ।

इसके अतिरिक्त ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २) क भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ८ ६, १ ११) छ भण्डार म १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं ।

२५१४ अनन्तव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १७८२ सावन सुदी १ । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

२५१५ अनन्तव्रतकथा……। पत्र सं० ४ । आ० ७३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । क भण्डार ।

५१६ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८ । ट भण्डार ।

२५१७ अनन्तव्रतकथा……। पत्र सं० १ । आ० ६×१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनेतर) र० काल × । ले० काल सं० १८३८ भादवा सुदी ७ । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

२५१८ अनन्तव्रतकथा—सुशालचन्द । पत्र सं० ५ । आ० १ ×$४_२$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

२५१६. अंजनचोरकथा...... । पत्र स० ६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६१४ । ट भण्डार ।

२५२०. अषाढएकादशीमहात्म्य ... । पत्र सं० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११४६ । अ भण्डार ।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है ।

२५२१ अष्टागसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्त्ति । पत्र स० २ मे ३६ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२१ । ट भण्डार ।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नही हैं । आठो अङ्गो की अलग २ कथायें हैं ।

२५२२ अष्टागोपाख्यान—पं० मेधावी । पत्र स० २८ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१८ । अ भण्डार ।

२५२३ अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचद्र । पत्र स० ८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ४८५, १०७०, १०७२) ग भण्डार म १ प्रति (वे० सं० ३) ड भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० १५, १६, १७, १८, १६, २०) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) और हैं ।

२५२४ अष्टाह्निकाकथा—नथमल । पत्र सं० १८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र० काल स० १६२२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४२५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्रो के चारो ओर बेल बनी हुई है ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० २७, २८, २६, ७६३) ग भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ४) ड भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ५०६, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १७६) और हैं ।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है।

२५२५. अष्टाह्निकाकौमुदी । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७११ । ट भण्डार ।

२५२६ अष्टाह्निकाव्रतकथा । पत्र स० ४३ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७२ । छ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १४५) की और है ।

२४२७ अष्टाह्निकाव्रतकथासंग्रह—गुणचन्द्रसूरि। पत्र सं० १४। आ० ६३×६३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२। छ भण्डार।

२४२८. अशोकरोहिणीकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० १। आ० १ ३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६४। पूर्ण। वे० सं० ११। क भण्डार।

२४२६. अशोकरोहिणीव्रतकथा ······। पत्र सं० १८। आ० १ ३×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६। क भण्डार।

२४३०. अशोकरोहिणीव्रतकथा ······। पत्र सं० १। आ० ८३×६ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। र० काल सं० १७८४ पौष सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २८१। मा भण्डार।

२४३१ आकाशपंचमीव्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ६। आ० ११३×६३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १६ ० श्रावण सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ५१। क भण्डार।

२४३२. आकाशपंचमीकथा ······। पत्र सं० ६ से २१। आ० १ ×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६। क भण्डार।

२४३३ आराधनाकथाकोश ······। पत्र सं० ११८ से ११७। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११७१। श्र भण्डार।

विशेष—क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७) तथा ट भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २१७४) और है तथा दोनों ही अपूर्ण हैं।

२४३४ आराधनाकथाकोश ······। पत्र सं० १७४। आ० १ ३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २८६। श्र भण्डार।

विशेष—८४वीं कथा तक पूर्ण है। ग्रन्थकर्ता का निम्न परिचय दिया है।

श्री मूलसंघे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये।
श्रीकुंदकुंदाख्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥५॥
देवेन्द्रचंद्रार्कसमर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण।
अनुग्रहार्थं रचितं सुवाक्यं आराधनासारकथाप्रबन्धं ॥६॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते स।
मार्गेन किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोकः ॥७॥

प्रत्येक कथा के अन्त में परिचय दिया गया है।

२४३५ आराधनासारप्रबंध—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० १५६। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१२। ट भण्डार।

विशेष—२६ से आगे तथा बीच में भी कई पत्र नहीं हैं।

२५३६. आरामशोभाकथा … । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३६ । अ भण्डार ।

विशेष—जिन पूजाफल कथायें है ।

प्रारम्भ—

अन्यदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेपुरे
समवासरदुद्याने भूयो गुण शिलाभिधे ।।१।।

सद्धर्ममूलसम्यक्त्व नैर्मल्यकरणे सदा ।
यतध्वमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपर्षदि ।।२।।

देवपूजादिश्रीराज्यसपद सुरसपद ।
निर्वाणकमलाचापि लभते नियत जन. ।।३।।

अन्तिम पाठ—

यावद्देवी सुते राज्य नाम्ना मलयसुंदरे ।
क्षिपामि सफल तावत्करिष्यामि निर्ज जनु ।।७५।।

सूरिं नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजागजे ।
आरामशोभयायुक्ते राजाव्रतमुपाददे ।।७६।।

अधीत सर्वसिद्धात संविग्नगुणसंयुत ।
एव संस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ।।७७।।

गीतार्थायै तथारामशोभायै गुणभूमये ।
प्रवर्त्तिनीपद प्रादात् गुरुस्तद्गुणरजित ।।७८।।

सबोध्य भविकान् सूरि कृत्वा तैरनशन तथा ।
विपद्यद्वावपि स्वर्गसपद प्रापतुर्वरं ।।७९।।

ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुदता वरान् ।
भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वतीं सिद्धिमेष्यत ।।८०।।

एव भोस्तीर्थकृद्भक्ते फलमाकर्ष सुदर ।
कार्यस्तत्करणेपन्नो युष्माभि. प्रमदात्सदा ।।८१।।

।। इति जिनपूजा विषये आरामशोमाकथा संपूर्ण ।।

सस्कृत पद्य सख्या २८१ है ।

२५३७. उपागललितव्रतकथा … । पत्र स० १४ । आ० ८½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा (जैनेतर) र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२३ । अ भण्डार ।

२५३८ ऋषभसवषकथा—अभयचन्द्रगणि । पत्र सं ४ । आ १ ×४३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र काल × । ले काल सं १६६२ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे सं ८४ । ख भण्डार ।

विशेष—मार्गवरायगुरूणा सीसेण अभयचंदगणिणाम माइणपवपुवारसं महाविम्म म्यारणनरसए ॥१२॥

इति रिण सबंधे स ॥१॥

श्री श्री पं श्री श्री मार्गवविजय मुनिभिर्लेखि । श्री किशुरोरमध्ये संवत् १६६२ वर्षे जेठ वदि १ दिने ।

२५३६. औपधदानकथा—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं ६ । आ १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २ ८१ । ट भण्डार ।

विशेष—२ से ५ तक पत्र नहीं हैं ।

२५४० कठियारकानडरीचौपई—मानसागर । पत्र सं १४ । आ १ ×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र काल सं १७४७ । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ १ । ख भण्डार ।

विशेष—आदि भाग ।

> श्री गुरुभ्योनम· ढाल जंबूद्वीप मम्भार एहनी प्रथम—
> मुनिवर मार्गसुहस्तिविम्ण इक अवसरइ नयइ उजैणी आवियारे ।
> चरण करण व्रतधार गुणमणि आगर बहु परिवारे परिवस्यए ॥१॥
> वन वाड़ी विश्राम लेइ तिहां रह्या वीइ मुनि नगर पठाविया ए ।
> थानक मांगण काज मुनिवर मान्हता भद्रामइ घरि आविया ए ॥२॥
> सेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहनामध्ये काजे आव्या इहां ए ।
> मार्गसुहस्तिना सीस अम्हे छां आविका ज्याने गुरु छै तिहाए ॥३॥

अन्तिम—

> सत्तरै सैताले समै म तिहां कीधी चौमास ॥ मं ॥
> सदगुरु ना परसाद थी म पूगी मन की आस ॥ म ॥
> मानसागर सुख संपदा म जति सागरगणि सीस ॥ मं ॥
> साधुतणा गुणगावतां म पूगी मनह जगीस ॥
> जिन पट कथा कीस थी म रचीयो ए अधिकार ।
> अधिको उछो भाषीयो मं मिछा दुक्कड़ कार ॥
> नवमी ढाल सोहामणी मं गौडी राग सुरंग ।
> मानसागर कहै सांभलो दिन दिन वधतो रंग ॥ १ ॥

इति श्री सील विषय कठीयार कानडरी चौपई संपूरण ।

२५४१ कथाकोश—हरिषेणाचार्य। पत्र सं० ४६१। आ० १०×४½ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र० काल स० ६८६। ले० काल सं० १५६७ पौष सुदी १४। वे० स० ८४। व्य भण्डार।

विशेष—सघी पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी थी।

२५४२ प्रति स० २। पत्र स० ३१८। आ० १०×५½ इच। ले० काल १८३३ भादवा बुदी ऽऽ। वे० स० ६७१। क भण्डार।

२५४३ कथाकोश—धर्मचन्द्र। पत्र स० ३६ से १०६। आ० १२×५½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल स० १७६७ अषाढ बुदी ६। अपूर्ण। वे० स० १६६७। अ भण्डार।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नही हैं।

लेखक प्रशस्ति—

सवत् १७६७ का आसाढमासे कृष्णपक्षे नवम्मा शनिवारे अजमेराख्ये नगरे पातिस्याहाजी अहमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उभैसिंहजी राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसघेसरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे नद्याम्नाये कुदकुदाचार्यान्वये मडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीविद्यानदिजी तत्पट्टे मडलाचार्य्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्य्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनतकीर्त्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पडित मनसारामेण व्रतकथाकोशाख्य शास्त्रलिखापित धर्म्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्म्मक्षयार्थं मगलभूयाच्चतुर्विधसघाना।

२५४४ कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—ब्र० नेमिदत्त। पत्र स० ४६ से १६२। आ० १२½×६ च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८०२ कार्त्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० स० २२६६। अ भण्डार।

२५४५ प्रति स० २। पत्र स० २०३। ले० काल स० १६७५ सावन बुदी ११। वे० स० ६८। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

इनके अतिरिक्त ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३४) छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६४, ६५) और हैं।

२५४६ कथाकोश । पत्र स० २५। आ० १२×५½ इंच। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५६। च भण्डार।

विशेष— च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५७, ५८) ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २११७ २११८) और हैं।

२५४७ कथाकोश । पत्र स० २ से ६८। आ० १२×५½ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६६। ङ भण्डार।

२५४८ कथारत्नसागर—नारचन्द्र । पत्र सं ५ । आ १ ३/४×४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२५८ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के १७ से २१ पत्र हैं ।

२५४९ कथासंग्रह—महाज्ञानसागर । पत्र सं २५ । आ १२×६३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र काल × । ले काल सं १८५४ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वे सं ११८ । अ भण्डार ।

नाम कथा	पत्र	पद्य संख्या
[१] त्रैलोक्य तीज कथा	१ से ४	५२
[२] निर्दोषसप्तमी कथा	४ से ७	६४
[३] जिन रात्रिव्रत कथा	७ से १२	६६
[४] अष्टाह्निका व्रत कथा	१२ से १५	५२
[५] रत्नबंधन कथा	१५ से १६	७६
[६] रोहिणी व्रत कथा	१६ से २१	६५
[७] आदित्यवार कथा	२१ से २५	९७

विशेष—१८५४ का वैशाखमासे कृष्णपक्षे तिथौ २ गुरुवासरे । लिखितं महात्मा सर्वसुखराम सवाई जयपुर मध्ये । लिखापितं चिरंजीव साहजी हरचंदजी जाति भौंसा पठनार्थं ।

२५५० कथासंग्रह······ । पत्र सं ३ से ९ । आ १ ×४१/२ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । वे सं १२६१ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

२५५१ कथासंग्रह······ । पत्र सं ६४ । आ १२×७३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६६ । क भण्डार ।

विशेष—व्रत कथायें भी हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १) और है ।

२५५२ कथासंग्रह······ । पत्र सं ७८ । आ १ ३/४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १४४ । अ भण्डार ।

२५५३ प्रति सं० २ । पत्र सं ७६ । ले काल सं १५७८ । वे सं २१ । ख भण्डार ।

विशेष—१४ कथाओं का संग्रह है ।

२५५४ प्रति सं० ३ । पत्र सं ६ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २२ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न कथायें हीं हैं ।

१ षोडशकारणकथा—पद्मप्रभदेव ।

२ रत्नत्रयविधानकथा—रत्नकीर्ति ।

ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७) और है।

२५५५ कयवन्नाचौपई—जिनचंद्रसूरि। पत्र स० १५। आ० १०½×४½ इच। भाषा–हिन्दी (राजस्थानी)। विषय–कथा। र० काल स० १७२१। ले० काल स० १७६६। पूर्ण। वे० स० २४। ख भण्डार।

विशेष—चयनविजय ने कृष्णगढ मे प्रतिलिपि की थी।

२५५६ कर्मविपाक । पत्र स० १८। आ० १०×४ इच। भाषा–सस्कृत। विपय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८१६ मगसिर बुदी १४। वे० स० १०१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री सूर्यारुणसवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण।

२५५७ कवलचन्द्रायणव्रतकथा । पत्र स० ४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३०५। अ भण्डार।

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४४२) और है।

२५५८ कृष्णरुक्मिणीमंगल—पदमभगत। पत्र स० ७३। आ० ११¾×५¾ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८६०। वे० स० ११६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री गणेशाय नम । श्री गुरुभ्यो नम । अथ रुक्मणि मगल लिखते।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दीयो विवाण खिनाय।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हजुरी बुलाय॥
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहा बैठा रूकमणी जादुराय।
कृपा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय॥
आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि।
रुक्मणि मगल सुणै जी, ते अमरापुरि जाहि॥
नरनारियो मगल सुणै जी, हरिचरण चितलाय।
वै नारी इ द्र की अपछरा जी, वै नर वैंकुठ जाय॥
व्याह वेल भागीरथि जी गीता सहसर नाव।
गावतो अमरापुरी जी पाव(व)न होय सब गाव॥
बोलै राणी रुक्मणि जी, सुणज्यो भगति मुजाण।
या किया रति केशो तणी जी, येसडीर करोजी वखाण॥
यो मगल परगट करो जी, सत की सवद विचारि।
बीडा दीयो हरी भगत नै जी, कथीयो कृष्ण मुरारि॥

गुरु गोविंद में विनवां जी म अभिलाखी जी देव ।
तन मन ता मामे धरा जी कराओ गुरां की जी सेव ॥
गुरु गोविंद बताइया जी हरी पायँ ब्रह्मंड ।
गुरु गोविंद की सरनै मामे होओ कुल की लाज सब पेसी ।
कृष्ण कृपा तैं काम हमारो करणा पदम मो तेसी ॥

पत्र ४ — राम सिंधु ।

सशिपाल राजा बोलियो जी सुणि ले राज कवार ।
जो वादु कुप भामसी तो मोत बजाऊ सार ॥
यै कै सार धार कर मैरवा बाण बहु अपार ।
गोला मामि अनेक छूटै सारम्यां री मार ॥
ब्रह्मुतवांण फौजै असी पर माप सुणिज्यौं राज्य कै बार ॥
गुरु बतलाइयाइ जी.......... ।

अन्तिम— मस्ता करी मैं प्रभुजी री मारिलो मोमि बाल बत होय ।
श्रवण सत गुर सामलो दोष न सामैं कोय ॥
श्रीकृष्ण की ब्याहलो सुणै सकल चितलाय ।
हरि पुरवै सब कामना मपति मुक्ति फलदाय ॥
हारामति मामन्द हुवा मुनिजन देत असीस ।
जय पिय सामलिया, सीतासरिण जगदीस ॥

रुक्मणि जी मंगल संपूर्ण ॥

संवत १८७ का साके १७१२ का भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां चित्रानौमनक्षत्रे द्वितीयप्रहरले पुस्तकमिदं समाप्तोयं ॥ पूर्ण ॥

२५५६ कौमुदीकथा—आचार्य धर्मकीर्ति । पत्र सं ३ से ३४ । आ ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । ले काल सं १६६६ । अपूर्ण । वे सं १३२ । क भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म हू मरसी ने लिखा । बीच के १६ से १८ तक के भी पत्र नहीं है ।

२५६० कथासु गोपीचन्दका...... । पत्र सं ११ । आ ६×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २८१ । म भण्डार ।

विशेष—अंत में और भी रागिनियों के पद दिये हुये हैं ।

२५६१ चतुर्दशीविधानकथा ...... । पत्र सं ११ । आ ८×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ८७ । घ भण्डार ।

२५६२ चंद्रकुवर की वार्ता—प्रतापसिंह। पत्र स० ६। आ० ११×४¾ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८४१ भादवा। पूर्ण। वे० स० १७१। ज भण्डार।

विशेष—६६ पद्य हैं। पडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

अन्तिम—

प्रतापसिंघ घर मन वसी, कविजन सदा सुहाइ।
जुग जुग जीवो चदकुवर, बात कही कविराय॥ ६६।

२५६३ चन्दनमलयागिरीकथा—भद्रसेन। पत्र स० ६। आ० ११×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७४। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

प्रारम्भ— स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणमौं श्री जगदीस।
तन मन जीवन मुख करण, पूरत जगत जगीस॥१॥
वरदाइक श्रुत देवता, मति विस्तारण मात।
प्रणमौं मन धरि मोद सौ, हरै विघन संघात॥२॥
मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार।
वदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार॥३॥
कहा चन्दन कहा मलयगिरि, कहा सायर कहा नीर।
कहिये ताकी वारता, सुणो सवै वर वीर॥४॥

अन्तिम— कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर सग।
आसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गग॥ १८६॥
दुख जु मन मे सुख भयो, मागौ विरह विजोग।
आनन्द सौं च्यारौं मिले, भयो अपूरव जोग॥ १८७॥

गाहा— कच्छवि चदन राया, कच्छव मलयागिरिविते।
कच्छ जोहि पुण्यवल होई, दिढता सजोगो हवइ एव॥१८८॥

कुल १८८ पद्य हैं। ६ कलिका हैं।

२५६४ चन्दनमलयागिरिकथा—चत्तर। पत्र स० १० । आ० १०½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल स० १७०१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१७२। अ भण्डार।

अन्तिम ढाल—ढाल एहवी साधनुमु।

कठिन माहावरत राख ही व्रत राखीहि सोइ चतर सुजाण॥
अनुकरमइ सुख पामीयाजी, पाम्यो अमर विमाण॥ १॥ गुणवता साधनमु॥

गुण दान सील तप भावना म्या रे परम प्रधान ॥
सुणइ चित्त पै पालइ जी पासी सुख कल्याण ॥ २ ॥ गुण ॥
सतिमाता गुण गावता जी जावइ पातिग दूर ॥
भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ॥ ३ ॥ गुण ॥
संमत सत्तरइ इकोत्तरइ जी कीधो प्रथम प्रमास ॥
जे नर नारी सांभलो जी तस मन होइ उलास ॥ ४ ॥ गुण ॥
राखी नगर सो पावणो जी वसइ तहां सरावक लोग ॥
देव गुरा तारा गम्या जी लाभइ सघला लोक ॥ ५ ॥ गुण ॥
गुजराति गच्छ नागौरीयइ जी श्री पूज्य श्री जसराज ॥
आचारइ करी सोभतो जी सं ... ...धीरज क्यराज ॥ ६ ॥ गुण ॥
तस गछ माहि सोभता जी सोभा थिवर सुजाण ॥
मोहना जी मा जस भणा जी सीख्या बुधि निधान ॥ ७ ॥ गुण ॥
धीर वचन कहइ धीरज हो तस पाटे परमवास ॥
वाऊ थिवर वरवाणीयइ जी पंडित गुणहि निवास ॥ ८ ॥ गुण ॥
तस सेवक इम वीनवइ जी चतर कहइ चितलाय ॥
गुणमणवा गुरुता भावसूजी तस मन वंछित थाय ॥ ९ ॥ गुण ॥

॥ इति श्रीचंदनमलयागिरिचरित्रसमाप्तं ॥

२५६५ चन्दनषष्ठिकथा—ब्र० श्रुतसागर। पत्र सं ४। आ १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७। क भण्डार।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति वे सं १९९ की और है।

२५६६ चन्दनषष्ठिकथा .... । पत्र सं २४। आ ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स १८। ख भण्डार।

विशेष—अन्य कथायें भी हैं।

२५६७ चन्दनषष्ठिव्रतकथाभाषा—खुशालचन्द काला। पत्र सं ९। आ ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। विषय–कथा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १९१। क भण्डार।

२५६८ चंद्रहंसकी कथा—टीकम। पत्र सं ७। आ ९×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र काल सं १७०८। ले काल सं १७११। पूर्ण। वे सं १। ख भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त सिन्दूरप्रकरण एकीभाव स्तोत्र आदि और हैं।

२५६९. चारमित्रों की कथा—अजयराज। पत्र स० ५। आ० १०½×५ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल स० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३। ले० काल स० १७३३। पूर्ण। वे० स० ५५३। च भण्डार।

२५७०. चित्रसेनकथा । पत्र स० १८। आ० १२×५½ इ च। भाषा–सस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८२१ पौष बुदी २। पूर्ण। वे० स० २२। व्य भण्डार।

विशेष—श्लोक सख्या ४६५।

२५७१ चौआराधनाउद्योतककथा—जोधराज। पत्र स० ६२। आ० १२½×७½ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १९४६ मगसिर सुदी ८। पूर्ण। वे० स० २२। घ भण्डार।

विशेष—स० १८०१ की प्रति से लिखी गई है। जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

स० १८०१ चाकसू" इतना और लिखा है। मूल्य– ५) ≡) ।।) इस तरह कुल ५।।≡ लिखा है।

२५७२ जयकुमारसुलोचनाकथा । पत्र स० १६। आ० ७×८½ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७९। छ भण्डार।

२५७३. जिनगुणसंपत्तिकथा । पत्र स० ४। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १७८५ चैत्र बुदी १३। पूर्ण। वे० स० ३११। अ भण्डार।

विशेष—क भण्डार मे (वे० स० १८८) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर मे मागीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

२५७४. जीवजीतसहार—जैतराम। पत्र स० ५। आ० १२×८ इ च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७७६। अ भण्डार।

विशेष—इसमे कवि ने मोह और चेतन के सग्राम का कथा के रूप मे वर्णन किया है।

२५७५. ज्येष्ठजिनवरकथा । पत्र स० ४। आ० १३×४ इ च। भाषा–सस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४८३। व्य भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे (वे० स० ४८४) की एक प्रति और है।

२५७६ ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्त्ति। पत्र स० ११ से १४। आ० १२×५¾ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १७३७ आसोज बुदी ४। अपूर्ण। वे० स० २०८०। अ भण्डार।

विशेष—जसकीर्त्ति देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे।

२५७७. ढोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगणि। पत्र स० २८। आ० ८×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी (राजस्थानी)। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २३८। ङ भण्डार।

२८७८ ढोलामारुणीकीवात····· । पत्र सं० २ से ७७ । आ० ६×८½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६ आषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १२६१ । ट भण्डार ।

विशेष—१ ४ ५ तथा ६ठा पत्र नहीं है ।

हिन्दी पद्य तथा दोहे हैं । कुल १८८ दोहे हैं जिनमें ढोलामारु की बात तथा राजा नल की विपत्ति आदि का वर्णन है । अन्तिम भाग इस प्रकार है—

मारुणी पीहरसैं कागद लिखि प्रोहित नै सीख दीनी । ई भांति नरवर को राज करैं छै । मारुणी की कूख कंवर लिछमण स्यंघ जी हुवा । मालवण की कूंखि कंवर वीरभाण जी हुवा । दोय कंवर ढोला की क हुवा । ढोला जी की मारुणी को भी महादेव जी की किरपा सु अमर जोड़ी हुई । लिछमण स्यंघ जी कंवर सुं औलाद कुछवाहा की चाली । ढोला सु राजा रामस्यंघ जी तांई पीढी एक सोबस हुई । राजाधिराज महाराजा श्री सवाई ईसरीसिंहजी तांई पीढी एक सो चार हुई ।।

इति श्री ढोलामारुणी का राजा नल का विवा की वारता संपूरण । मिती माह सुदी ८ बुधवार सं० १६ का लिछमणराम चांदवाड की पोथी सु उतार लिखितं·····रामगंज में··· ·····।

पत्र ७७ पर कुछ शृंगार रस के कवित्त तथा दोहे हैं । बुधराम तथा रामचरण के कवित्त एवं गिरधर की कुंडलियां भी हैं ।

२५४६. ढोलामारुणी की वात······ । पत्र सं० ६ । आ० ८¾×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । ट भण्डार ।

विशेष—५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित है । बीच बीच में दोहे भी दिये गये हैं ।

५८० णमोकारमन्त्रकथा······ । पत्र सं० ४२ से ७१ । आ० १२½×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७ । क भण्डार ।

विशेष—णमोकार मन्त्र के प्रभाव की कथायें हैं ।

२५८१ त्रिकालचौबीसीकथा (रोटतीजकथा)—पं० अभ्रदेव । पत्र सं० २ । आ० ११½×५¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । भ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १ ८) और है ।

२५८२. त्रिकालचौबीसी (रोटतीज) कथा—गुणनन्दि । पत्र सं० २ । आ० १ ¾×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । भ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १३३७) ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २५४) ङ भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ६६२, ६६३, ६६४) और है।

२५८३. त्रिलोकसारकथा । पत्र स० १२ । आ० १०½×५ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल स० १६२७ । ले० काल स० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३८७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

स० १८५० शाके १७१५ मिती ज्येष्ठ शुक्ला ७ रविदिने लिखायित पं० जी श्री भागचन्दजी माल कोटै पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजो चेलान लेवा । दक्षण्याकैर उ भाई कै राडि हुई सूवादार तकूजी भाग्यो राजा जी की फते हुई । लिखित गुरुजी मेघराज नगरमध्ये ।

२५८४ दत्तात्रय । पत्र स० ३६ । आ० १३½×६½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १९१५ । पूर्ण । वे० स० ३४१ । ज भण्डार ।

२५८५ दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० २३ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४१४) क भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २९३) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३९) च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ५८६) तथा ज भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० २६५, २६६, २६७) और हैं ।

२५८६ दर्शनकथाकोश । पत्र स० २२ से ६० । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

२५८७ दशमूर्खोंकी कथा । पत्र स० ३९ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वे० स० २९० । ङ भण्डार ।

२५८८. दशलक्षणकथा—लोकसेन । पत्र स० १२ । आ० ६½×४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १८९० । पूर्ण । वे० स० ३५० । अ भण्डार ।

विशेष–घ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ३७, ३८) और हैं ।

२५८९ दशलक्षणकथा । पत्र स० ५ । आ० ११×४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार में १ प्रति (वे० स० ३०२) की और है ।

२५९०. दशलक्षणव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । अ भण्डार ।

२५६१ दानकथा—भारामल्ल। पत्र सं० १८। आ० ११३/४×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१६। क भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७६) ङ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३ ४) क भण्डार में १ प्रति (वे० स० १ ४) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६८) और है।

२५६२ दानशीलतपभावनाका चोढाल्या—समयसुन्दरगणि। पत्र सं० १। आ० १ ×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३२। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१७६) की और है। जिस पर केवल दान शील तप भावना ही दिया है।

२५६३ देवराजवच्छराज चौपई—सोमदेवसूरि। पत्र सं० २१। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १ ७। क भण्डार।

२५६४ देवलोकनकथा…… …। पत्र सं० २ से ५। आ० १२×५१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६३ कार्तिक सुदी ७। अपूर्ण। वे० सं० १६६१। क भण्डार।

२५६५. द्वादशव्रतकथा—प० अभ्रदेव। पत्र सं० ७। आ० ६×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२५। क भण्डार।

विशेष—ङ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७१ एक ही वेष्टन) और हैं।

२५६६ द्वादशव्रतकथासग्रह—अभयचन्द्रसागर। पत्र सं० १२। आ० १२×६३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३६६। क भण्डार।

विशेष—निम्न कथायें और हैं।

मौन एकादशीकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी।
मुक्तावलीव्रतकथा— „ „ „
कोकिलापंचमीकथा— ब्र० दूर्गा „ हिन्दी र० काल स० १७६६
जिनगुणसंपत्तिकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी।
रात्रिभोजनकथा— — „ „

२५६७ द्वादशव्रतकथा……। पत्र सं० ७। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २ । क भण्डार।

विशेष—पं० अभ्रदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है।

ञ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४०) और हैं।

२५६८. धनदत्त सेठ की कथा ....। पत्र सं० १४। आ० १२½×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल स० १७२५। ले० काल ×। वे० स० ६८३। अ भण्डार।

२५६६ धन्नाकथानक । पत्र स० ६। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४७। घ भण्डार।

२६००. धन्नासालिभद्रचौपई । पत्र स० २४। आ० ८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७७। ट भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र है। २४ से आगे के पत्र नही है। प्रति अधिक प्राचीन नही है।

२६०१ धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द। पत्र स० ३७। आ० ११½×४½ इञ्च। विषय–कथा। भाषा–हिन्दी पद्य। र० काल स० १७३६। ले० काल सं० १८३० भादवा सुदी १। पूर्ण। वे० स० ६०। ख भण्डार।

विशेष—खरतरगच्छपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगणि ने यह ढाल कही है। (पूर्ण परिचय दिया हुआ है।

२६०२ धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा ..। पत्र स० १२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८५५। पूर्ण। वे० स० ६१। ख भण्डार।

२६०३ धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन। पत्र स० २४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र० काल स० १८०७। ले० काल स० १६२७ सावण बुदी २। पूर्ण। वे० स० ३३६। क भण्डार।

नदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ८। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३६२।

विशेष—सागानेर मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

छ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४) स० १७८२ की लिखी हुई और है।

२६०५ नदीश्वरविधानकथा—हरिषेण। पत्र स० १३। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६५। क भण्डार।

२६०६. नदीश्वरविधानकथा । पत्र स० ३। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७७३। ट भण्डार।

२६०७ नागमता ...। पत्र स० १०। आ० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी (राजस्थानी)। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६३। अ भण्डार।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है।

श्री नामसता लिख्यते—

नगर हीरापुर पाटण भणीयइ माहि हर केसरदेव।
नमणि करइ वर नाम लेई नइ करइ तुम्हारी सेव ॥१॥
करइ तुम्हारी सेवनइ वसियराइ तेडावीया।
काम कंकोलमइ तिलमिल गर, अवर वैस बोलावीया ॥२॥
माइ वैस आपस अंबिका, करइ तुम्हारी सेव।
नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केसरदेव ॥३॥
राउ वेहूराउर बइठ्ठ आणे मिरमस नीर।
अंक मयक भागीरथी समुद्रइ पइसइ तीर ॥४॥
नीर लेई अंक मोकल्यउ सासी प्रति वणवार।
मार्ग सवारण पडीउ लोभइ, समुद्रइ पइसेपार ॥५॥
सहस अठ्यासी विहां देवता चार्ई तिलवनि पइठ्ठ।
गंगा तणउ प्रवाह जु आमउ राउ देहरा सरवइ बउ ॥६॥
राम मोकल्या ते आवीये आणे सुर ही आइ।
आणे सुरही पातरी आणे सुरही आइ ॥७॥
आणे सुरही आइ मइ, आणे सुरंगी पातरी।
आकतुस लीमइ पावची करि कम नीर सुरावडी ॥८॥
आइ वैउल करउउ केवडो राइ मन कुंद जु सारी।
पुष्प करंवक मरीगइ, आवो राइमो कल्याणइ वाडी ॥९॥

॥ छन—

एक कामिनि नगर वासी विछोही भरतार।
अंक तणइ विर बरसही तम्हण प्रमी संचारि ॥
तम्हणु प्रमीय सचारि, मुख प्रिय मरइ मथूटइ।
वाजि लहरि विष संचालिउ तन्न जबस नइ उठइ
स्यन करइ मुख भाइ हुवे सु सनेहा टली।
विछोही भरतार एक कामिनि भइ वासी ॥१॥
भानलुंडा मन वाजही, बहु कांसी अनकार।

चद्र रोहिणी जिम मिलिउं, तिम धण मिली भरतार नइ ॥

तित्य गिराणउ तूठउ वोलइ, अमीयविष गयउ छडी ।
इक तणइ शिर वूठउ, उठिउ नाह हुई मन संती ॥

मू ध मगलक छाजइ, ... ।
वहु कासी भमकार डाक छंडा कल वाजइ ॥

इति श्री नागमता संपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोथी आ० मेरुकीर्त्ति जी की ॥ कथा के रूप मे है । प्रति अशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८ नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र स० १६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल स० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३६७) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १०८) की और है ।

ज भण्डार वाली प्रति की गरूढमलजी गोधा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०६. नागश्रीकथा—किशनसिंह । पत्र स० २ ७५ । आ० ७३×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल स० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल स० १७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—जोबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी मे है किन्तु अपूर्ण है ।

२६१०. नि शल्याष्टमीकथा .. । पत्र स० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० स० २११७ । अ भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० ४० से ५५ । आ० ८३×६३ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ९८) की और है जिसकी कि स० १८०१ म महाराजा ईश्वर सिंहजी के शासनकाल मे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२. निशिभोजनकथा .. । पत्र स० २१ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३. नेमिव्याहलो । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

सरसरीपुरी राजियाजु समदविजय राय धारो।
तस नंदन श्री नेमजी हुं सांवल बरण सरीरो॥
धन धन थदे छी क्यो तेव राजसवरखरा करता।
वालवरलाचे जीतमो सो सोरजी हुं हुतो॥
समदवजयी रो नंद भतेरो ले मावरा जी।
हुतो सामली हुं श्री रो नमे कल्याण सु पावरणो जी॥

प्रति मशुद्ध एवं जीर्ण है।

२६१४ नेमिराजलव्याहलो—गोपीकृष्ण। पत्र सं० ९। आ० १×४, इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल सं० १८९१ प्र० सावण सुदी ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१। अ भण्डार।

प्रारम्भ—

श्री जिण चरण कमल नमो नमो मरणगार।
नेमनाथ र जाल तरणे ब्याहव थाई सुखदाम॥
द्वारामती नगरी बसी सोरठ देस मझार।
इन्द्रपुरी सी ऊपमा सुंदर बहु विस्तार॥
चौडा नो जोजरण लिहो सांबा बारा जरण।
साठि कोठि घर मांहि रे बाहर बहत्तर प्रमारण॥२॥

अन्तिम—

राजल नेम तरणो ब्याहलो जी पावसी जो नरनारी।
गरण पुरा सुरासी भरो जी पावसी सुख अपार॥

कलश— प्रथम सावण चौथ सुकसी वार मयलवार ए।
सवत् अठारा बरस तरेसठि सांव सुल सुम्हार ए।
श्री नेम राजल कथन गोपी तास चरत बखारगइ।
सुदार सीखा ताहि ताहि जाको कही कथा प्रमारण ए॥

इति श्री नेम राजल विवाहलो संपूर्ण।

इसके आगे नव भव की ढाल दी है वह अपूर्ण है।

२६१५ पञ्चाख्यान—विष्णु शर्मा। पत्र सं० १। आ० १२३×५१ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २ १। अ भण्डार।

विशेष—केवल १३वां पत्र है। अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ४ १) अपूर्ण और है।

२६१६ परसरामकथा । पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१७ । अ भण्डार ।

२६१७ पल्यविधानकथा—खुशालचन्द । पत्र स० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल स० १७८७ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वे० स० २० । झ भण्डार ।

२६१८ पल्यविधानव्रतोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ११७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४५४ । क भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ८३) जिसका ले० काल स० १६१७ शाके है और है ।

२६१९ पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र स० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७८ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर मे प० मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी ।

२६२० पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । पत्र स० २०० । आ० ११×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६७) तथा छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६, ७०) और हैं किन्तु तीनो ही अपूर्ण हैं ।

२६२१. पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र स० २४८ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल स० १७७७ भादवा सुदी ५ । ले० काल स० १७८८ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३७० । अ भण्डार ।

विशेष—अहमदाबाद मे श्री अभयसेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ४३३, ४०६, ८६५, ८६६, ८६७) तथा ङ भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९) तथा च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६३५) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १७७) ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १३) झ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० २६८) तथा ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६४६) और है ।

२६२२ पुण्याश्रवकथाकोश । पत्र स० ९४ । आ० १६×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ५८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियो के मदिर मे चढाई ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४६२) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २६०) [अपूर्ण] और हैं ।

२६२३ पुण्याश्रवकथाकोश—टेकचन्द् । पत्र स १४१ । आ० ११¸×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र काल सं १६२८ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ४६७ । क भण्डार ।

२६२४ पुण्याश्रवकथाकोश की सूची……। पत्र सं० ४ । आ ११¾×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १४६ । ङ भण्डार ।

२६२५ पुष्पांजलीव्रतकथा—श्रुतकीर्ति । पत्र स ५ । आ ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार मे एक प्रति (वे सं ५६) और है ।

२६२६ पुष्पांजलीव्रतकथा—जिनदास । पत्र सं ११ । आ १ ×८ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल सं १६७७ फाल्गुण सुदी ११ । पूर्ण । वे सं ४७४ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति बागड़ देश स्थित बाटसल नगर मे श्री वासुपूज्य चैत्यालय में ब्रह्म ठाकरसी के शिष्य मणदास ने लिखी थी ।

२६२७ पुष्पांजलीव्रतविधानकथा …। पत्र सं १ से १ । आ १ ×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २२१ । च भण्डार ।

२६२८ पुष्पांजलीव्रतकथा—खुशालचन्द । पत्र सं ६ । आ १२×५¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र काल × । ले काल सं १६४२ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वे सं १ । ख भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार में एक प्रति (वे सं १ ६) की और है जिसे महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६२९ बैतालपच्चीसी… । पत्र सं ३५ । आ ८¾×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २५ । च भण्डार ।

२६३० भक्तामरस्तोत्रकथा—नथमल । पत्र सं ८६ । आ १ ¾×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल सं १८२६ । ले काल सं १८४६ फाल्गुण सुदी ७ । पूर्ण । वे सं २५५ । क भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे सं ७११) और है ।

२६३१ भक्तामरस्तोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र सं १२७ । आ १२ ×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र काल सं १७४७ सावन सुदी २ । ले काल स १६४६ । अपूर्ण । वे सं ५२ १ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच का केवल एक पत्र कम है ।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ५५६ ५५४) छ भण्डार में २ प्रतियां (वे सं १८१ २२) तथा ङ भण्डार में १ प्रति (वे सं १२६) की और है

२६३२. भक्तामरस्तोत्रकथा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० १२८। आ० १३×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १९३१ फागुण सुदी ४। ले० काल स० १९३८। पूर्ण। वे० स० ५४०। क भण्डार।

२६३३ भोजप्रबन्ध । पत्र स० १२ से २५। आ० ११३/४×४३/४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १२५६। अ भण्डार।

विशेष—ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७६) की और है।

२६३४ मधुकैटभवध (महिषासुरवध) । पत्र स० २३। आ० ८३/४×४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १३५३। अ भण्डार।

२६३५. मधुमालतीकथा—चतुर्भुजदास। पत्र स० ४८। आ० ६×६१/२ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १९२८ फागुण बुदी १२। पूर्ण। वे० स० ५८०। ड भण्डार।

विशेष—पद्य स० ९२८। सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। अन्त के ५ पत्रो मे स्तुति दी हुई है। इसी भण्डार मे १ प्रति [अपूर्ण] (वे० स० ५८१) तथा १ प्रति (वे० स० ५८२) की [पूर्ण] और हैं।

२६३६ मृगापुत्रचउढाला । पत्र स० १। आ० ६३/४×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८३७। अ भण्डार।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चौढाला है।

२६३७ माधवानलकथा—आनन्द। पत्र स० २ से १०। आ० ११×४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८०९। ट भण्डार।

२६३८ मानतुगमानवतिचौपई—मोहनविजय। पत्र स० २६। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८५१ कार्त्तिक सुदी ९। पूर्ण। वे० स० ५३। छ भण्डार।

विशेष—आदि अ तभाग निम्न प्रकार है—

आदि—

ऋषभ जिणद पदावुजे, मधुकर करी लीन।
आगम गुण सोइसवर, अति आरद थी लीन ॥१॥
यान पान मम जिनकम, तारण भवनिधि तोय।
आप तर्‌या तारै अवर, तेहनै प्रणमति होइ ॥२॥
भावे प्रणमु भारती, वरदाता सुविलास।
बावन अख्यर की भरयौ, अखय खजानो जास ॥३॥

मुक करया केई धनि धका, एह बीजे हुनी शक्ति ।
किम मु काइ तेहना पद नीको विपे मति ॥४।

अन्तिम— पूर्ण काय मुनीचंद्र सुप वर्ष मुदि मास सुचि पचे है । (मागे पत्र फटा हुआ है) ४७ ढाल हैं।

२६३६ मुक्तावलिव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स ४ । मा ११×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । ले काल सं १८७१ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे सं ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—पंडित दयाचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२६४० मुक्तावलिव्रतकथा—सोमप्रभ । पत्र स ११ । मा १ ३×४३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । ले काल सं १८५५ सावन सुदी २ । वे सं ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में नेमिनाथ चैत्यालय में कानूमास के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२६४१ मुक्तावलिविधानकथा······ । पत्र सं ६ से ११ । मा १ ×४३ इच । भाषा अपभ्रंश । विषय-कथा । र काल × । ले काल स १५४१ फाल्गुन सुदी ५ । अपूर्ण । वे स १११८ । क भण्डार ।

विशेष—संवत् १५४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारिक श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारिक श्रीशुभचंद्रदेवा तत्सिष्य मुनि जिनचन्द्रदेवा खंडेलवालान्वये भावसागोत्रे संघवी लेता भार्या होली तत्पुत्रा संघवी काइड भासस कामु, आत्मज सलमण तेषां मध्ये संघवी कामू भार्या कौलसिरी तत्पुत्रा हेमराज त्यिमराम तेने दी साह हमराज भार्या हिमसिरी एवं रिवं राहिणीमुक्तावलीकथानकं लिखापतं ।

२६४२ मेघमालाव्रतोद्यापनकथा··· । पत्र सं ११ । मा १२×६३ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ८१ । घ भण्डार ।

विशेष—घ भण्डार में एक प्रति (वे सं २७१) और है ।

२६४३ मेघमालाव्रतकथा······ । पत्र सं ५ । मा ११×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ १ । क भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे सं ७४) की और है ।

२६४४ मेघमालाव्रतकथा—खुशालचंद । पत्र स ५ । मा १ ×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५८१ । क भण्डार ।

२६४५ मौनिव्रतकथा—गुणभद्र । पत्र सं ५ । मा १२×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ४४१ । क भण्डार ।

२६४६. मौनिव्रतकथा । पत्र स० १२ । श्रा० ११३×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८२ । घ भण्डार ।

२६४७. यमपालमातगकीकथा । पत्र स० २६ । श्रा० १०×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × ; ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१ । ख भण्डार ।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक पद्मरथ राजा दृष्टात कथा तथा पत्र १० से १६ तक पच नमस्कार कथा दी हुई है । कही २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । कथायें कथाकोश मे से ली गई हैं ।

२६४८ रक्षाबधनकथा—नाथूराम । पत्र सं० १२ । श्रा० १२३×८ इ च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६१ । श्र भण्डार ।

२६४९. रक्षाबन्धनकथा · । पत्र स० १ । श्रा० १०३×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स १८३५ सावन सुदी २ । वे० स० ७३ । छ भण्डार ।

२६५० रत्नत्रयगुणकथा—प० शिवजीलाल । पत्र स० १० । श्रा० ११३×५३ इ च । भाषा- सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७२ । श्र भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५७) श्रौर है ।

२६५१ रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ४ । श्रा० ११३×६ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १९०४ श्रावण बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ६५२ । ङ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७३) श्रौर है ।

२६५२ रत्नावलिव्रतकथा—जोशी रामदास । पत्र स० ४ । श्रा० ११×४३ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १६६९ । पूर्ण । वे० स० ६३४ । क भण्डार ।

२६५३. रविव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स० १८ । श्रा० ६३×६ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३९ । ज भण्डार ।

२६५४ रविव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० १८ । श्रा० ६×३ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल सं० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । छ भण्डार ।

२६५५. रविव्रतकथा—भाऊकवि । पत्र स० १० । श्रा० ६३×६३ इ च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १७९५ । पूर्ण । वे० स० ६९० । श्र भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७४), ज भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४१), झ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११३) तथा ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १७५०) श्रौर हैं ।

२६५६ राठौडरतनमहेशदासोतरी ...... । पत्र सं० ३ से ८ । आ० ६¾×४ इंच । भाषा–हिन्दी [राजस्थानी] विषय–कथा । र० काल सं० १५११ वैशाख सुक्ला ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

दोहा—

सावित्रीजमया भीया भायै साम्ही भाई ।
सुंदर सोचनै ईविर लइ वधाइ ॥१॥

हुया ववलि मंगल हरष वधीया नेह सवल ।
सूर रतन सतीयां सरीस मिलीया आइ महल ॥२॥

मो सुरतर फुरतवरे वैकुंठ कीयावास ।
राजा रयणायरतणी कुंप प्रविचल जस वास ॥३॥

पख वैसाखह तिथि नवमी पनरौतरे वरस ।
वार सुक्ल ठीयाविहद, हीदू तुरक सहस्स ॥४॥

जाकि मरौ खिवीवी जगे राखो रतन रसाल ।
सूरा पूरा संजमउ जब मोटा भूपाल ॥५॥

किसी राउ वाका ववैरणी रासा का प्यार तुमर हिसी कवि वात कैसी ॥ इति श्री राठौडरतन महेस दासोतसरी वचनिका संपूर्ण ।

२६५७. रात्रिभोजनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८ । आ० ११¼×८ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । क भण्डार ।

२६५८. प्रति स० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० स० ९ ६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम निशिभोजन कथा भी है ।

२६५९. रात्रिभोजनकथा—किशनसिंह । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल सं० १७७३ श्रावण सुदी ६ । ले० काल सं० १९२८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । क भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार में १ प्रति और है जिसका ले० काल स० १८८३ है । नानूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२६६०. रात्रिभोजनकथा ...... । पत्र सं० ४ । आ० १ ३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११ । ख भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६१) और है ।

२६६१ रात्रिभोजनचौपई" " । पत्र स० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३१ । अ भण्डार ।

२६६२ रूपसेनचरित्र · । पत्र स० १७ । आ० १०×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६० । ङ भण्डार ।

२६६३ रैदव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ६ । आ० १०×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१२ । अ भण्डार ।

२६६४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—लश्कर (जयपुर) के मन्दिर मे केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १८५७) तथा ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६६१) की और हैं ।

२६६५. रैदव्रतकथा · । पत्र स० ४ । आ० ११×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३६ । क भण्डार ।

विशेष—ञ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३६५) की है जिसका ले० काल स० १७८५ आसोज सुदी ४ है ।

२६६६ रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्त्ति । पत्र स० १ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८८८ जेष्ठ सुदी ६ । वे० स० ६०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५६७) छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) तथा ज भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १७२) और है ।

२६६७ रोहिणीव्रतकथा । पत्र स० २ । आ० ११×८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६२ । अ भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६६७) तथा भ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६५) जिसका ले० काल स० १६१७ वैशाख सुदी ३ और हैं ।

२६६८ लब्धिविधानकथा—पं० अभ्रदेव । पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६०७ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति का सक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भादवा सुदी १४ सोमवासरे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराउ

श्रीरामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये ····मंडलाचार्य धर्मचन्द्राम्नाये खण्डेलवालान्वये मजमेरागोत्रे सा पचा तद्भार्या केसमदे·········· सा काषु इदं कथा····· मंडलाचार्य धर्मचन्द्राय दत्तं ।

२६६६. रोहिणीविधानकथा········। पत्र सं० ८ । आ १ ×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ ६ । च भण्डार ।

२६७०. लोकप्रत्याख्यानघमिलकथा·····। पत्र सं ७ । आ १ ×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । ले काल × । र काल × । पूर्ण । वे सं १८५ । ख भण्डार ।

विशेष—श्लोक सं २४३ हैं । प्रति प्राचीन है ।

२६७१ वारिषेणमुनिकथा—जोधराजगोदीका । पत्र सं ५ । आ ९×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल × । ले काल सं १७११ । पूर्ण । वे सं १७४ । ख भण्डार ।

विशेष—चूहामल बिलाला ने प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६७२. विक्रमचौबोलीचौपई—अभयचन्द्रसूरि । पत्र सं ११ । आ ९×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल सं १७२४ आषाढ बुदी १ । ले काल × । पूर्ण । वे सं १९२१ । ट भण्डार ।

विशेष—मतिसुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी ।

२६७३ विष्णुकुमारमुनिकथा—श्रुतसागर । पत्र सं ५ । आ ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११ । ख भण्डार ।

२६७४ विष्णुकुमारमुनिकथा········। पत्र सं ५ । आ १ ×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १७५ । ख भण्डार ।

२६७५ वैदरमीविवाह—पेमराज । पत्र सं ९ । आ १ ×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २२५४ । च भण्डार ।

विशेष—आदि अन्तभाग निम्न प्रकार है—

दोहा—

जिस बरस मही दीपता करी बरस सुरंग ।
सो राजा राजा रसणेह काल भलु रंग ॥१॥
रस विपरस्य न मानसी किसता करो विचार ।
पढतां तणि सुख संपजै दुरस मान हाजइ नाम ॥
सुख मामणे हो रंग महल मैं बिस भार पोथी सेजवी ।
दोष ममता उफण्या जाणेमदार बिहारीराम मैहजी ॥

अन्तिम—

कवनाथ सुजाण छै वैदरभी वेस्वार ।
सुख अनंता भोगिया बेले हुवा अणगार ।।
दान देई चारित लीयौ होवा तो जय जयकार ।
पेमराज गुरु इम भणी, मुकत गया तत्काल ।।
भणै गुणै जे साभली वैदरभी तणो विवाह ।
भएण तास वे सुख सपजे पहुत्या मुकत मझार ।
इति वैदरभी विवाह सपूर्ण ।।

ग्रन्थ जीर्ण है । इसमे काफी ढालें लिखी हुई हैं ।

२६७६ **व्रतकथाकोश—श्रुतसागर** । पत्र स० ७६ । आ० १२×५३ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७८ । अ भण्डार ।

२६७७ **प्रति स० २** । पत्र सं० ६० । ले० काल स० १६४७ कार्त्तिक सुदी ३ । वे० सं० ६७ । छ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कार्त्तिक सुदि ३ बुधवारे इद पुस्तक लिखायत श्रीमद्काष्ठासघे नदीतरगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्त्ति तत्पट्टे भ० यश कीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीउदयसेन तत्पट्टोधारणधीर भ० श्रीत्रिभुवनकीर्त्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इद पुस्तिका लिखापित खडेलवालज्ञातीय कासलीवाल गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ वृहद पुत्र जीनो भार्या जमनादे । द्वि० पुत्र खेमसी तस्य भार्या खेमलदे तृ० पुत्र इसर तस्य भार्या अहकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पचम पुत्र साह वाला तस्य भार्या वालमदे, षष्ठ पुत्र लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह वालेन इद पुस्तकं कथाकोशनामधेय ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं लिखाप्य प्रदत्त । लेखक लषमन श्वेताबर ।

सवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य मडलाचार्य श्री ३ जयकीर्त्ति प० दीपचद प० मयाचद युक्तै ।

२६७८ **प्रति स० ३** । पत्र स० ७३ से १२६ । ले० काल १५८६ कार्त्तिक सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

२६७९ **प्रति स० ४** । पत्र स० ८० । ले० काल स० १७६५ फागुण बुदी ६ । वे० सं० ६३ । छ भण्डार ।

इनके अतिरिक्त क भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६७५, ६७६) ङ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६८८) तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २० ७३, २१००) और हैं ।

२६८०. **व्रतकथाकोश—प० दामोदर** । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७३ । क भण्डार ।

२६८१ व्रतकथाकोश—सकलकीर्ति । पत्र सं० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७५ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२) और है जिसका ले० काल सं० १८६६ सावन बुदी ५ है । श्वेताम्बर पृथ्वीराज ने उदयपुर में जिसकी प्रतिलिपि की थी ।

२६८२. व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ८६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७७ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं । कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं । क भण्डार में १ अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६७४) और है ।

२६ ३ व्रतकथाकोश······ । पत्र सं० १ से १　 । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत अपभ्रंश । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल सं० १६ ६ फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के २२ से २५ तथा ५५ से ६६ तक के भी पत्र नहीं है । निम्न कथाओं का संग्रह है—

१	पुष्पांजलिविधान कथा ······ ।		संस्कृत पत्र १ से ५
२	अवणद्वादशीकथा—चन्द्रभूषण के शिष्य प० अभ्रदेव		„ „ ५ से ८

अन्तिम—चंद्रभूषणशिष्येण कथेयं पापहारिणी ।
　　संस्कृता पंडिताभ्रे ण कृता प्राकृत सूत्रतः ॥

३	रत्नत्रयविधानकथा—प० रत्नकीर्ति	—	संस्कृत गद्य पत्र ८ से ११
४	षोडशकारणकथा—प० अभ्रदेव	—	„ पद्य „ ११ से १४
५	जिनरात्रिविधानकथा······ । (२१ पद्य हैं ।)	—	„ „ १४ से २१
६	मेघमालाव्रतकथा······ ।	—	„ गद्य „ २१ से ३१
७	दशलाक्षणिककथा—लोकसेन ।	—	„ „ „ ३१ से ३५
८	सुगन्धदशमीव्रतकथा······ ।	—	„ „ „ ३५ से ४
९	त्रिकालचउवीसीकथा—अभ्रदेव ।	—	„ पद्य „ ४ से ४१
१०	रत्नत्रयविधि—आशाधर	—	„ गद्य „ ४१ से ५१

प्रारम्भ—　श्रीवर्द्ध मानमानम्य गौतमादींश्च सद्गुरुन् ।
　　रत्नत्रयविधिं वक्ष्ये यथाम्नायविशुद्धये ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति—　साधो खंडिलवालवंशसुमणेः सज्जैनचूडामणे ।
　　माणारव्यस्य सुतः प्रतीतमहिमा श्रीनागदेवोऽभवत् ॥१॥

य शुक्लादिपदेपु मालवपते न्नात्रातियुक्तं शिवं ।
श्रीसल्लक्षणायास्वमाश्रितवस का प्रापयन्न श्रिय ।।२।।

श्रीमत्केशवसेनार्यवर्यवाक्यादुपेयुपा ।
पाक्षिकश्रावकीभाव तेन मालवमडले ।।

सल्लक्षणपुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुजर ।
पडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्त सम्यगेकदा ।।३।।

प्रायेण राजकार्येऽवरुद्धर्म्माश्रितस्य मे ।
भाद्र किंचिदनुष्टेय व्रतमादिश्यतामिति ।।४।।

ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तर ।
उपविष्टसतामिष्टस्तस्याय विधिसत्तम ।।५।।

तेनान्यैश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्टित ।
ग्र थो बुधाशाधारेण सद्धर्म्मार्थमथो कृत: ।।६।।

८३ १२
विक्रमार्कव्यशीत्यग्रद्वादशाब्दशतात्यये ।
दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथता कथा ।।७।।

पत्नी श्रीनागदेवस्य नद्याद्धर्म्मेण नायिका ।
यासीद्रत्नत्रयविधि चरतीना पुरस्मरी ।।८।।

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधि समाप्त ।।

११	पुरदरविधानकथा · ।	सस्कृत पद्य	५१ से ५४
१२	रत्नाविधानकथा ।	गद्य	५४ से ५६
१३	दशलक्षणजयमाल—रइधू ।	अपभ्र श	५६ से ५८
१४	पल्यविधानकथा · ·।	सस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५	अनथमीव्रतकथा—प० हरिचद्र ।	अपभ्र श	६३ से ६९

अगरवाल वरवसि उप्पण्णइ हरियदेण ।
भत्तिए जिणुयणपणवेवि पयडिउ पद्धडियाछदेण ।।१६।।

१६	चदनषष्ठीकथा—	"	"	६९ से ७१
१७.	मुखावलोकनकथा	—	सस्कृत	७१ से ७५
१८	रोहिणीचरित्र—	देवनदि	अपभ्र श	७६ से ८१
१९.	रोहिणीविधानकथा—	"	"	८१ से ८५

२०	अक्षयनिधिविधानकथा	—	संस्कृत	८१ से ८८
२१	मुकुटसप्तमीकथा—प० अभ्रदेव		"	८८ से ८६
२२	मौनव्रतविधान—रत्नकीर्ति		संस्कृत गद्य	६ से ६४
२३	रुक्मणिविधानकथा—छत्रसेन		संस्कृत पद्य	१ [अपूर्ण]

संवत् १६ ६ वर्षे फाल्गुण वदि १ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये ।

२६८४ व्रतकथाकोश...... । पत्र सं १५२ । आ १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स ६२ । छ भण्डार ।

२६८५ व्रतकथाकोश—खुशालचन्द । पत्र सं ८६ । आ १२¾×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल सं १७८७ फागुन बुदी ११ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११७ । क भण्डार ।

विशेष—१८ कथायें हैं ।

इसके अतिरिक्त घ भण्डार में एक प्रति (वे सं ६१) ङ भण्डार में १ प्रति (वे सं १८६) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे स १७८) और हैं ।

२६८६ व्रतकथाकोश.... .. । पत्र सं ५ । आ १ ×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १८१२ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	विशेष
ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा—	खुशालचन्द	र काल सं १७८२
आदित्यवारकथा—	भाऊ कवि	×
सुपुरंदिव्रतकथा—	ब्र० ज्ञानसागर	—
सप्तपरमस्थानव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
मुकुटसप्तमीकथा—	"	र काल सं १७८३
अक्षयनिधिव्रतकथा—	"	—
षोडशकारणव्रतकथा—	"	—
मेघमालाव्रतकथा—	"	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	"	—
लब्धिविधानकथा—	"	—
जिनपूजापुरंदरकथा—	"	—
दश" लक्षणकथा—	"	—

नाम	कर्त्ता	विशेष
पुष्पाजलिव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
आकाशपंचमीकथा—	,,	र० काल सं० १७८५
मुक्तावलीव्रतकथा—	,,	—

पृष्ठ ३६ से ५० तक दीमक लगी हुई है।

२६८७. व्रतकथासग्रह⋯ । पत्र स० ६ से ६० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—६० से आगे भी पत्र नही हैं।

२६८८. व्रतकथासग्रह⋯ । पत्र स० १२३ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत अपभ्रंश । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १५१६ सावरण बुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ११० । व्र भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओ का सग्रह है।

नाम	कर्त्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धदशमीव्रतकथा ।		अपभ्रंश	—
अनन्तव्रतकथा ।		,,	—
रोहिणीव्रतकथा—	×	,,	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	,,	—
दुधारसविधानकथा—	मुनिविनयचंद ।	,,	—
सुखसपत्तिविधानकथा—	विमलकीर्त्ति ।	,,	—
निर्भरपञ्चमीविधानकथा—	विनयचद्र ।	,,	—
पुष्पाजलिविधानकथा—	पं० हरिश्चन्द्र ।	,,	—
श्रवणद्वादशीकथा—	प० अभ्रदेव ।	,,	—
षोडशकारणविधानकथा—	,,	,,	—
श्रुतस्कधविधानकथा—	,,	,,	—
रुक्मिणीविधानकथा—	छत्रसेन ।	,,	—

प्रारम्भ— जिनं प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारक ।
रुक्मिणिचरितं वक्ष्ये भव्याना वोधकारणं ॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं ।

पल्यविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशलक्षणविधानकथा—	लोकसेन	—	„	—
चन्दनषष्ठीविधानकथा—	×	—	अपभ्रंश	—
जिनरात्रिविधानकथा—	×	—	„	—
जिनपूजापुरदरविधानकथा—	अमरकीर्ति	—	„	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
जिनमुखावलोकनकथा—	×	—	„	—
शीलविधानकथा—	×	—	„	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	„	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	×	—	„	—

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१५ वर्षे श्रावण सुदी १५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीजिनचन्द्रदेवा। भट्टारक श्रीपद्मनंदि शिष्य मुनि मदनकीर्ति शिष्य ब्र नरसिंह निमित्तं। खंडेलवालान्वये दोसीगोत्रे संघी राजा भार्या देउ सुपुत्र खीवा भार्या गणोपुत्र कालु पदमा कर्मा आत्म कर्मक्षयार्थं इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञान पात्राय दत्तं।

२६८८. व्रतकथासंग्रह……। पत्र सं ८८। आ १२×७½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १ १। क भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है।

द्वादशव्रतकथा—	प० अभ्रदेव।	संस्कृत	—
कवलचन्द्रायणव्रतकथा—		„	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	खुशालचन्द।	हिन्दी	—
नन्दीश्वरव्रतकथा—		संस्कृत	—
जिनगुणसंपत्तिकथा—		„	—
होली की कथा—	छीतर ठोलिया	हिन्दी	—
रैदव्रतकथा—	ब्र० जिनदास	„	—
रत्नावलिव्रतकथा—	गुणनंदि	„	

२६९०. व्रतकथासंग्रह—ब्र० महतिसागर। पत्र सं २७। आ १ ×४½। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६७७। क भण्डार।

२६६१ व्रतकथासंग्रह ·· । पत्र सं० ४ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । क भण्डार ।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणव्रतकथा इनका सग्रह है षोडशकारणव्रतकथा गुजराती में है ।

२६६२. व्रतकथासंग्रह · । पत्र सं० २२ से १०४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

पल्यविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशलक्षणविधानकथा—	लोकसेन	—	,,	—
चन्दनषष्ठीविधानकथा—	×	—	अपभ्रंश	—
जिनरात्रिविधानकथा—	×	—	,,	—
जिनपूजापुरन्दरविधानकथा—	अमरकीर्ति	—	,,	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
जिनमुखावलोकनकथा—	×	—	,,	—
शीलविधानकथा—	×	—	,,	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	,,	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	×	—	,,	—

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१९ वर्षे श्रावण सुदी १५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा। भट्टारक श्रीपद्मनंदि शिष्य मुनि मदनकीर्ति शिष्य ब्र० नरसिंह निमित्तं। खंडेलवालान्वये बोसीगोत्रे संघी राणा भार्या देउ सुपुत्र लीला भार्या गणोपुत्र कालु पदमा धर्मा ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं इद शास्त्रं लिखाप्य ज्ञान पात्राय दत्तं।

२६८९. व्रतकथासंग्रह.......। पत्र सं० ८८। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १ १। क भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है।

द्वादशव्रतकथा—	प० अभ्रदेव।	संस्कृत	—
कवलचन्द्रायणव्रतकथा—		,,	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	खुशालचन्द।	हिन्दी	—
नन्दीश्वरव्रतकथा—		संस्कृत	—
जिनगुणसंपत्तिकथा—		,,	—
होली की कथा—	छीतर ठोलिया	हिन्दी	—
रैदव्रतकथा—	ब्र० जिनदास	,,	—
रत्नावलिव्रतकथा—	गुणनंदि	,,	

२६९० व्रतकथासंग्रह—ब्र० महतिसागर। पत्र सं० २७। आ० १ ×४½। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७७। क भण्डार।

२६६१ व्रतकथासंग्रह · । पत्र स० ४ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७२ । क भण्डार ।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणव्रतकथा इनका सग्रह है षोडशकारणव्रतकथा गुजराती मे है ।

२६६२ व्रतकथासग्रह · । पत्र स० २२ से १०४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नही हैं ।

२६६३. षोडशकारणविधानकथा—प० अभ्रदेव । पत्र स० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १६६० भादवा सुदी ५ । वे० स० ७२२ । क भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पचमी, रुक्मिणीकथा एव अनतव्रतकथा के कर्त्ता का नाम प० मदनकीर्त्ति है । ट भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २०२६) और है ।

२६६४ शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा—शंकरभट्ट । पत्र स० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय–कथा (जैनेतर) । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७२ । अ भण्डार ।

विशेष—२२ से आगे पत्र नही हैं । स्कधपुराण मे से है ।

२६६५ शीलकथा—भारामल्ल । पत्र स० २० । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६६, ११११) क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६२) घ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १००), ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७०८), छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १८०), ज भण्डार मे एक प्रति (ले० स० १६६७) और हैं।

२६६६ शीलोपदेशमाला—मेरुसुन्दरगणि । पत्र स० १३१ । आ० ६×४ इ च । भाषा–गुजराती लिपि हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६७ । छ भण्डार ।

विशेष—४३वी कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है) ।

२६६७ शुकसप्तति । पत्र स० ६४ । आ० ६½×४½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६६८ श्रावणद्वादशीउपाख्यान । पत्र स० ३ । आ० १०½×५½ इ च । भाषा–सस्कृत । विपल–कथा (जैनेतर) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८८० । अ भण्डार ।

२६६६. भावणद्वादशीकथा……। पत्र सं. १८। आ. १२×१ इंच। भाषा–संस्कृत गद्य। विषय–कथा। र. काल ×। ले. काल ×। अपूर्ण। वे. सं. ७११। क भण्डार।

२७०० श्रीपालकथा……। पत्र सं. २७। आ. ११×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र. काल ×। ले. काल सं. १६२६ वैशाख बुदी ७। पूर्ण। वे. सं. ७१३। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे. सं. ७१४) और है।

२७०१ श्रेणिकचौपई—डू गा वैद। पत्र सं. १४। आ. ६½×४' इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र. काल सं. १८२६। पूर्ण। वे. सं. ७६४। क भण्डार।

विशेष—कवि मालपुरा के रहने वाले थे।

अथ श्रेणिक चौपई लीख्यते—

आदिनाथ वंदौ जगदीस। जाहि चरित थे होई जगीस॥
दूजा वंदौ गुर निरग्रंथ। दूजा भव्य दीखावण पंथ॥१॥
तीजा साधु सबै का पाइ। चौथा सरस्वती करो सहाय।
याहि सेवा थै सब बुधि होय। करौ चौपई मन बुधि जोई॥२॥
माता हमने करो सहाई। अक्षर हीण सवारो माई।
श्रेणिक चरित बात मै सही। जैसी बाणी चौपई कही॥३॥
राणी सही चेलना जाणि। धर्म जैनि सेवै मनि आणि।
राजा धर्म चलावै बोध। जैन धर्म को काटै सोध॥४॥

पत्र ७ पर–दोहा—

जो झूठी मुख थै कहै, मरणबोल्या दे दोस।
वे नर जासी नरक मैं मत कोइ घाल्यो रोस॥१२१॥

चौपई— कहै बती इक साहू पुराण। बामण एक पढ्यो मति माणि।
जाह को पुत्र नही को धाम। तबै न्यौल इक पाल्यो ताम॥१२॥
बेटो करि राख्यो निरताइ। दूधैड पाव एक दै माइ।
बांमणी सही जाइयो पूत। पसी बाधै जाणि अजूत॥१३॥
एक दिवस बोमण विचारि। पाणी नैवा चाली नारि।
पालण बालक मेल्यो तहां। न्यौल बचन ए भाखै जहां॥१४॥

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार। जे सुणिसी ते उतरै पार।
हीन पद अक्षर जो होय। जको सवारो गुणियर लोय ॥२८६॥
मैं म्हारी वुधि सारू कही। गुणियर लोग सवारो सही।
जे ता तणो कहै निरताय। सुणता सगला पातिग जाइ ॥२६०॥
लिखिवा चाल्यौ सुख नित लहौ, जे साधा का गुण यौ कहौ।
यामै भोलो कोइ नही, डूगै वैदं चौपइ कही ॥६१॥

वास भलो मालपुरो जाणि। टौंक मही सो कियो वखाण।
जठै वसै माहाजन लोग। पान फूल का कीजै भोग ॥६२॥
पौणि छतीसौं लीला करै। दुख थे पेट न कोइ भरै।
राइस्यघ जी राजा वखाणि। चौर चवाहन राखै आणि ॥६३॥
जीव दया को अधिक सुभाव। सवै भलाई साधै डाव।
पतिसाहा वदि दीन्ही छोडि। वुरी कही भवि सुणौ वहोडि ॥६४॥
धनि हिंदवाणो राज वखाणि। जह मैं सीसोद्यो सो जाणि।
जीव दया को सदा वीचार। रैति तणौं राखै आधार ॥६५॥
कीरति कहो कहा लगि जाणि। जीव दया सहु पालै आणि।
इह विधि सगला करै जगीस। राजा जीज्यौ सौ अरु बीस ॥६६॥

एता वरस मै भोलो नही। वेटा पोता फल ज्यो सही।
दुखिया का दुख टालै आय। परमेस्वर जी करै सहाय ॥६७॥
इ पुन्य तणौ कोइ नही पार। वैदि खलास करै ते सार।
वाकी वुरी कहै नर कोइ। जन्म आपणो चालै खोइ ॥६८॥
सवत् सोलह से प्रमाण। उपर सहो इतासौ जाण।
निन्याणवै कह्या निरदोष। जीव सवै पावै पोष ॥६६॥
भाद्रव सुदी तेरस सनिवार। कडा तीन सैं पट अधिकाय।
इ सुणता सुख पासी देह। आप समाही करै सनेह ॥३००॥

इति श्री श्रेणिक चौपइ संपूरण मीती कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्के स० १८२६ काडी ग्रामे लीखतं वखतसागर वाचें जहनै निम्सकार नमोस्त वाच ज्यो जी।

२७०२. सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० ११। आ० ६३×४ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६८६ आसोज वुदी १३। पूर्ण। वे० स० ३५०। ञ भण्डार।

२७०३ सप्तव्यसनकथा—आचार्य सोमकीर्त्ति। पत्र सं ४१। मा १ ३×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र काल सं १५२६ माघ सुदी १। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६। ख भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२७०४ प्रति स० २। पत्र सं ६४। ले काल सं १७७२ श्रावण सुदी १३। वे सं १ २। ख भण्डार।

प्रशस्ति— सं १७७२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ अर्कवासरे बिजैरामेण लिपिकृत मऊम्मरपुर समीपेषु केरवाग्रामे।

२७०५ प्रति स० ३। पत्र सं ६५। ले० काल सं १८६४ भादवा सुदी ६। वे सं ३१३। घ भण्डार

विशेष—नेवटा निवासी महात्मा हीरा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। दीवाण संगही अमरचंदजी बिलूका ने प्रतिलिपि दीवाण ल्योजीराम के मंदिर के लिए करवाई।

२७०६ प्रति स० ४। पत्र सं ६४। ले काल सं १७७६ माघ सुदी १। वे सं ११। ङ भण्डार।

विशेष—पं नरसिंह ने श्रावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी।

२७०७ प्रति स० ५। पत्र सं ६५। ले काल सं १६४० आसोज सुदी ८। वे सं १११। च भण्डार।

२७०८ प्रति सं० ६। पत्र सं ७७। ले काल सं १७२६ कार्तिक सुदी ८। वे सं ११६। च भण्डार।

विशेष—पं कपूरचंद के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

इसके अतिरिक्त झ भण्डार में एक प्रति (वे सं १६) छ भण्डार में एक प्रति (वे सं ७५) और है।

२७०९ सप्तव्यसनकथा—भारामल्ल। पत्र सं ८६। मा ११३⁄४×५ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–कथा। र काल सं १८१४ आश्विन सुदी १ । पूर्ण। वे सं ६८८। च भण्डार।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं। अंत में कवि का परिचय भी दिया हुआ है।

२७१० सप्तव्यसनकथाभाषा…। पत्र सं १ ८। मा १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७६१। क भण्डार।

विशेष—सोमकीर्त्ति कृत सप्तव्यसनकथा का हिन्दी अनुवाद है।

च भण्डार में एक प्रति (वे सं ६८१) और है।

२७११. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द। पत्र सं० २६। आ० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल स० १८४२। ले० काल स० १८८७ आषाढ बुदी....। वे० स० ८८। ग भण्डार।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्त्ति के शिष्य थे। रेवाडी (पञ्जाब) के रहने वाले थे और वही लेखक ने इसे पूर्ण किया।

२७१२. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि। पत्र सं० ४८। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल स० १५०४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३७६। च भण्डार।

२७१३. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता। पत्र स० ७६। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३। पूर्ण। वे० स० १३६। अ भण्डार।

विशेष—झ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६१) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०) और है।

२७१४. सम्यक्त्वकौमुदीकथा......। पत्र स० १३ से ३३। आ० १२×४½ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६२५ माघ सुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० १६१०। ट भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे षष्ठम्या शनौ .... श्रीकुभलमेरूदुर्गे रा० श्री उदयसिहराज्ये श्री खरतरगच्छे श्री गुणलाल महोपाध्याये स्ववाचनार्थं लिखापिता सौवाच्यमाना चिर नदनात्।

२७१५ सम्यक्त्वकौमुदीकथा.......। पत्र स० ८६। आ० १०½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६०० चैत सुदी १२। पूर्ण। वे० स० ४१। ञ भण्डार।

विशेष—सवत् १६०० मे खेटक स्थान मे शाह आलम के राज्य मे प्रतिलिपि हुई। ब्र० धर्मदास अग्रवाल गोयल गोत्रीय मडलाणापुर निवासी के वंश मे उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आंदि ने प्रतिलिपि कराई। लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है।

२७१६. प्रति स० २। पत्र स० १२ से ६०। ले० काल सं० १६२८ बैशाख सुदी ५। अपूर्ण। वे० स० ६४। अ भण्डार।

श्री डूगर ने इस ग्रंथ को ब्र० रायमल को भेंट किया था।

अथ सवतसरेस्मिन श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये सवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपचमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीर्त्तितदाम्नाये अगरवालान्वये मित्तलगोत्रे साह दासू तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा गोपी सा. दीपा। सा गोपी तस्य भार्या वीवो तयो पुत्र सा. भावन साह उवा सा. भावन भार्या बूरदा शही तस्य पुत्र तिपरदाश। साह उवा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र डूंगरसी साम्त्र सम्यक्त कौमदी ग्र थ ब्रह्मचार रायमल्लद्दद्यात् पठनार्थं ज्ञानावर्णी कर्मक्षयहेतु। शुभ भवतु। लिखितं जीवातमज गोपालदाश। श्रीचन्द्रप्रभु चैत्यालये अहिपुरमध्ये।

२७१७ प्रति सं० २ । पत्र सं ६८ । ले० काल सं १७११ पौप बुदी १४ । पूर्ण । वे सं ७११ । क भण्डार ।

२७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८११ माघ बुदी १ । वे० सं ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—भाकूराम साह ने जयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त ख भण्डार में २ प्रतियां (वे सं २ १९, ८९४) घ भण्डार में एक प्रति (वे सं ११२) ङ भण्डार में एक प्रति (वे सं ८) छ भण्डार में एक प्रति (वे सं ८७) झ भण्डार में एक प्रति (वे सं ९१) ञ भण्डार में एक प्रति (वे सं १), तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे सं २१२१ २११) [दोनों अपूर्ण] और हैं ।

२७१९. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—विनोदीलाल । पत्र सं ११ । आ ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र काल सं १७४९ । ले काल सं १८९ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे सं ८७ । ग भण्डार ।

२७२० सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जगतराय । पत्र सं १११ । आ ११×५½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र काल सं १७७२ माघ सुदी ११ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७११ । क भण्डार ।

२७२१ सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं ४७ । आ १ ½×७½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र काल सं १७२४ फागुण बुदी ११ । ले काल सं १८२५ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वे सं ४९५ । ख भण्डार ।

विशेष—नैनसागर ने श्री गुलाबचंदजी गोदीका के वाचनार्थ सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । सं १८६८ में पोथी की निछरावलि दिवाई पं खुस्यालजी पं ईसरदासजी गोदीका सू हस्ते महात्मा फताह मार्ग र १) दिया ।

२७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं ४१ । ले काल स १८६१ माघ बुदी २ । वे सं २११ । ख भण्डार ।

२७२३ प्रति स० ३ । पत्र सं १४ । ले काल सं १८८४ । वे सं ७१८ । क भण्डार ।

२७२४ प्रति स० ४ । पत्र स ९७ । ले काल सं १८९४ । वे सं ७ १ । च भण्डार ।

२७२५ प्रति सं० ५ । पत्र सं ५५ । ले काल सं १८३५ चैत्र बुदी ११ । वे सं १ । झ भंडार ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे सं ७ ४) ट भण्डार में एक प्रति (वे स १५४१) और हैं ।

२७२६ सम्यक्त्वकौमुदीभाषा....... । पत्र स० १७४ । आ० १०३/४×७३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०२ । च भण्डार ।

२७२७. संयोगपचमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र स० ३ । आ० ११३/४×५१/२ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल सं० १८४० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८०१) और है ।

२७२८. शालिभद्रधन्नानीचौपई—जिनसिंहसूरि । पत्र सं० ४९ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० ८४२ । ङ भण्डार ।

विशेष—किशनगढ मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२७२९. सिद्धचक्रकथा । पत्र स० २ से ११ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४३ । ङ भण्डार ।

२७३०. सिंहासनबत्तीसी । पत्र सं० ११ से ६१ । आ० ७×४३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९७ । ट भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय से १२वें अध्याय तक है ।

२७३१. सिंहासनद्वात्रिंशिका—क्षेमंकरमुनि । पत्र सं० २७ । आ० १०×४१/२ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-राजा विक्रमादित्य की कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२७ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेश्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्ध ।
पुरा महाराष्ट्रपरिष्ट्रभाषा मय महाश्चर्यकरनराणा ॥
क्षेमकरेण मुनिना वरपद्यगद्यबधेनमुक्तिकृतसस्कृतबधुरेण ।
विश्वोपकार विलसत् गुणकीर्तिनायचक्रे चिरादमरपडितहर्षहेतु ॥

२७३२ सिंहासनद्वात्रिंशिका । पत्र स० ६३ । आ० ९×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १७९८ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४११ । च भण्डार ।

विशेष—लिपि विकृत है ।

२७३३. सुकुमालमुनिकथा । पत्र स० २७ । आ० ११३/४×७१/२ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८७१ माह बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० १०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७३४ सुगन्धदशमीकथा…… । पत्र सं० ६ । आ ११½×४½ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ८६ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है ।

२७३५ सुगन्धदशमीव्रतकथा—हेमराज । पत्र सं ५ । आ ८½×७ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल × । ले काल सं १६८६ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे स ६६५ । च भण्डार ।

विशेष—भिण्ड नगर में रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—अथ सुगन्धदशमी व्रतकथा लिख्यते–

चौपई— वर्द्धमान बंदी सुखदाई, पुर गौतम बंदी चितलाय ।
सुगन्धदशमीव्रत सुनि कथा वर्द्धमान परकासी यथा ॥१॥
पूर्वदेस राजग्रह गांव श्रेनिक राज करै अभिराम ।
नाम चेलना ग्रहपटरानी चंद्ररोहिणी रूप समान ।
नृप सिंहासन बैठो जवा वनमाली फल ल्यायौ तबा ॥२॥

अन्तिम— सहर मझे लोग तिम वास जैनधर्म को करैप्रकास ॥
सब श्रावक व्रत संयम धरै दान पूजा सौ पातिक हरै ।
हेमराज कविजन यौं कही विस्वभूषण परकासी सही ।
सो नर स्वर्ग अमरपति होय मन वच काय सुनै जो कोय ॥१८॥

इति कथा संपूरणम्

दोहा— श्रावण शुक्ल पंचमी चंद्रवार शुभ जान ।
श्रीजिन भुवन सुहावनौ तिहां लिखा धरि ध्यान ॥
संवत् विक्रम नृप को इक नव आठ सुजान ।
ताके ऊपर पांच लखि लीजै चतुर सुजान ॥
देस भदावर के विषै भिंड नगर शुभ ठाम ।
तह्यौ मैं हम रहत है, रामधाम है नाम ॥

२७३६ सुदयवच्छसावलिंगाकी चौपई—मुनि केशव । पत्र सं २७ । आ ६×४½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल सं १६२७ । ले काल सं १८३७ । वे सं १६४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कटक में लिखा गया ।

२७३७ सुदर्शनसेठकीढाल (कथा)…… । पत्र सं १ । आ १०×४½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र काल × । ल काल × । पूर्ण । वे सं ८११ । च भण्डार ।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणकथा..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२३ । व्य भण्डार ।

२७३९. सौभाग्यपंचमीकथा—सुन्दरविजयगणि । पत्र स० ९ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल स० १६६६ । ले० काल स० १८११ । पूर्ण । वे० सं० २९९ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुआ है ।

२७४०. हरिवंशवर्णन .. । पत्र सं० २० । आ० १०¾×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३६ । अ भण्डार ।

२७४१ होलिकाकथा ..... । पत्र सं० २ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल स० १९२१ । पूर्ण । वे० स० २९३ । अ भण्डार ।

२७४२ होलिकाचौपई—डूंगरकवि । पत्र सं० ४ । आ० ९×४ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल स० १६२९ चैत्र बुदी २ । ले० काल स० १७१८ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक ओर से फटा हुआ है । अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार ।
नयर सिकदराबाद ....गुणकरि आगाध, वाचक मडण श्री खेमा साध ॥८४॥
तासु सीस डूगर मति रली, भण्यु चरित्र गुण साभली ।
जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह घरि वहुली हुई सपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चउपई । मुनि हरचद लिखित । सवत् १७१८ वर्षे............आगरामध्ये लिपिकृत ॥ रचना मे कुल ८५ पद्य हैं । चौथे पत्र मे केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नही हैं ।

२७४३ होलीकीकथा—छीतर ठोलिया । पत्र सं० २ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल स० १६६० फागुण सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५८ । अ भण्डार ।

२७४४. प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल सं० १७५० । वे० सं० ८५६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक मौजमाबाद [जयपुर] का निवासी था इसी गाव मे उसने ग्रंथ रचना की थी ।

२७४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८८३ । वे० स० ९९ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

२७४६ प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२ । वे० सं० १६४२ । ट भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२७४७ होलीकथा—जिनसुन्दरसूरि । पत्र सं० १४ । आ० १ ३×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा × । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसके अतिरिक्त १ प्रतियाँ वे० सं० ७४ में ही और हैं ।

२७४८. होलीपर्वकथा ……। पत्र सं० ३ । आ० १ ×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

२७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८ ४ माघ सुदी ३ । वे० सं० २८२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त ख भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६१ ६११) और हैं ।

व्याकरण-साहित्य

२७५०. अनिटकारिका ....। पत्र सं० १। आ० १०३/४×५३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०३५। अ भण्डार।

२७५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० २१४६। ट भण्डार।

२७५२. अनिटकारिकावचूरि ....। पत्र सं० ३। आ० ११३×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५०। व्य भण्डार।

२७५३. अव्ययप्रकरण ....। पत्र सं० ६। आ० ११३/४×५३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०१८। अ भण्डार।

२७५४. अव्ययार्थ ....। पत्र सं० ८। आ० ८×५१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८८८। पूर्ण। वे० सं० १२२। झ भण्डार।

२७५५. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०२१। ट भण्डार।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है।

२७५६. उणादिसूत्रसंग्रह—संग्रहकर्त्ता–उज्ज्वलदत्त। पत्र सं० ३८। आ० १०×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०२७। अ भण्डार।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२७५७. उपाधिव्याकरण ....। पत्र सं० ७। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७२। अ भण्डार।

२७५८. कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि—चारित्रसिंह। पत्र सं० १३। आ० १०१/२×४१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १६६६ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २४७। अ भण्डार।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

नत्वा जिनेंद्रं स्वगुरुं च भक्त्या तत्तत्प्रसादाप्तसुसिद्धिशक्त्या।
सत्संप्रदायादवचूर्णिमेतां लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ॥१॥

प्राय· प्रयोगाद्युर्म माः किमकर्तीव विभ्रमो ।
येषु मो मुह्यते मेढ· साब्दिकोऽपि यथा बडु ॥२॥

कार्तंत्रसूत्रविसर. कसु साप्रतं ।
प्रभाति प्रसिद्ध इह भाति करोमरीयाम् ॥

स्वस्येतरस्मै च सुबोधविवर्द्धमार्थी ।
प्रस्तिवर्त्म ममाय सफलो सिवल प्रयासः ॥

अन्तिम पाठ—

बाणाब्धिषड्विधुमिते संम्वति धवलककपुरवरे समहे ।
श्रीखरतरगणपुष्करसुविमासुप्रकाराणां ॥१॥

श्रीजिनमाणिक्याभिधसूरीणां सकलसार्वभौमानां ।
पट्टे करे विजयिषु श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिराजेषु ॥२॥

श्रीति वाचकमतिभद्रगणेः शिष्यस्तदुपास्त्यवाप्तवरमार्थः ।
चारित्रसिंहसाधुर्व्यतनदवचूर्णिमिह सुगमां ॥३॥

यच्छिखितं मतिमाद्याद्युक्तं प्रवनोत्तरेण किंचिदपि ।
तत्सम्यक प्राज्ञवरै शोध्यं स्वपरोपकाय ॥४॥

इति कार्तंत्रविभ्रमावचूरि. संपूर्णा लिखनत· ।

आचार्य श्रीरत्नभूषणस्तच्छिष्य पंडित केशव: तेनेयं लिपि कृता पठनार्थं । शुभं भवतु । संवत् १६६६ वर्षे कार्तिक सुदी ५ तिथौ ।

७०५६. कातन्त्रटीका·····। पत्र स १ । आ १ ३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ११ १ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७०६० कातन्त्ररूपमालाटीका—दौर्गसिंह । पत्र सं ३६४ । आ १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र काल × । ले काल सं १६६७ । पूर्ण । वे सं १११ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कलाप व्याकरण भी है ।

७०६१ प्रति सं० २ । पत्र सं १४ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ११२ । क भण्डार ।

७०६२ प्रति सं० ३ । पत्र सं ७७ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६७ । घ भण्डार ।

७०६३ कातन्त्ररूपमालावृत्ति··· ··। पत्र सं १४ से ५१ । आ ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र काल × । ले काल सं १५२४ कार्तिक सुदी ५ । अपूर्ण । वे सं २१४४ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोकपत्तने सुरत्राणअलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य ब्रह्मतीकम निमित्त । खंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे स० धन्ना भार्या घनश्री पुत्र स. दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतय एतेषामध्ये सा दोदा इदं पुस्तकं ज्ञानावरणीकर्म्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्त ।

२७६४ कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र सं० ३५ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२७६५ कारकप्रक्रिया । पत्र स० ३ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६ कारकविवेचन । पत्र स० ८ । आ० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९३३ । अ भण्डार ।

२७६८ कृदन्तपाठ । पत्र स० ६ । आ० ९½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६९ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नही है । सारस्वत प्रक्रिया मे से है ।

२७६९ गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र स० ३४ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८० । ट भण्डार ।

२७७० चन्द्रोन्मीलन । पत्र स० ३० । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८३५ फागुन बुदी ९ । पूर्ण । वे० स० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१ जैनेन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र स० १२९ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १७१० फागुण सुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पंचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पंचवस्तु तक । सीलपुर नगर मे श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० आसोज सुदी १० को पुन श्रीकल्याण व हर्ष को साह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७७२ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ले काल सं १६९१ फागुन सुदी १ । वे सं २१२ । क भण्डार ।

२७७३ प्रति स० ३ । पत्र सं २४ से २१४ । ले काल सं १६६४ माह सुदी २ । अपूर्ण । वे सं २११ । क भण्डार ।

२७७४ प्रति स० ४ । पत्र सं १ । ले काल सं १८६६ कार्तिक सुदी १ । वे सं २१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त संकेतार्थ दिये हुये हैं । पन्नालाल भौसा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७७५ प्रति स० ५ । पत्र सं १ । ले काल सं १६ ८ । वे सं १२८ । ख भण्डार ।

२७७६ प्रति स० ६ । पत्र सं १२५ । ले काल सं १८८ असाढ सुदी १४ । वे सं २ । ग भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त घ भण्डार में एक प्रति (वे सं १२१) ञ भण्डार में २ प्रतियां (वे सं १२१ २८८) और हैं । (वे सं १२१) वाले ग्रन्थ में सोमदेवसूरि कृत शब्दार्णव चन्द्रिका नाम की टीका भी है ।

२७७७ जैनेन्द्रमहावृत्ति—अभयनन्दि । पत्र सं १ ४ से २१२ । आ १२३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स १ ४२ । क भण्डार ।

२७७८ प्रति स० २ । पत्र सं ६६ । ले काल सं १६४६ भादवा सुदी १ । वे सं २११ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

२७७९ तद्धितप्रक्रिया ...... । पत्र सं १६ । आ १ ×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १८७ । ञ भण्डार ।

२७८० धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ११ । आ १ ×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र काल × । ले काल सं १०२७ मावण सुदी ५ । वे सं २१९ । छ भण्डार ।

२७८१ धातुपाठ...... । पत्र सं २१ । आ ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—धातुओं के पाठ हैं ।

२७८२ प्रति स० २ । पत्र सं १७ । ले काल सं १६६४ फागुण सुदी १२ । वे सं ६२ । ज भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे सं ११ १) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे सं २६) और हैं ।

२७८३ धातुरूपावलि…… ··। पत्र स० २२ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६ । ञ भण्डार ।

विशेष—शब्द एव धातुओ के रूप है ।

२७८४ धातुप्रत्यय ··· । पत्र स० ३ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२८ । ट भण्डार ।

विशेष—हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७८५ पचसधि · ··। पत्र स० २ से ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १७३२ । अपूर्ण । वे० स० १२६२ । अ भण्डार ।

२७८६. पचिकरणवार्त्तिक—सुरेश्वराचार्य । पत्र स० २ से ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट भण्डार ।

२७८७ परिभाषासूत्र । पत्र स० ५ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १५३० । पूर्ण । वे० स० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष—अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्ण ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १५३० वर्षे श्रीखरतरगच्छेश्रीजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभगणिना लिखिता वाचिता च ।

२७८८ परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट । पत्र स० ६७ । आ० ६×३३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८ । ज भण्डार ।

२७८९. प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० १०० । ज भण्डार ।

२७९० प्रति स० ३ । पत्र स० ११२ । ले० काल × । वे० स० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकर्त्ताओ ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका का नाम भैरवी टीका है ।

२७९१ प्रक्रियाकौमुदी । पत्र स० १४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६५० । अ भण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पत्र नही हैं ।

२७९२ पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पत्र स० ३६ । आ० ८३×३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक ओर ही लिखा गया है ।

२७६३ प्राकृतरूपमाला—श्रीरामभट्ट सुत वरदराज। पत्र सं ४७। आ० १३×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-व्याकरण। र काल ×। ले काल सं १७२४ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वे सं० १२२। क भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्त्ति ने द्रम्पपुर (मालपुरा) में प्रतिलिपि की थी।

२७६४ प्राकृतरूपमाला""""। पत्र स ११ से ४६। भाषा-प्राकृत। विषय-व्याकरण। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स २४६। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

२७६५ प्राकृतव्याकरण—चण्डकवि। पत्र सं ६। आ ११३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स १६४। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है। संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश, पैशाचिकी मागधी तथा शौरसेनी आदि भाषाओं पर प्रकाश डाला गया है।

२७६६ प्रति स० २। पत्र सं ७। ले काल स १८६६। वे सं ५२१। क भण्डार।

२७६७ प्रति स० ३। पत्र सं १६। ले काल सं १८२१। वे सं ५२४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ५२२) और है।

२७६८ प्रति स० ४। पत्र सं ४। ले काल सं १८४४ मंगसिर सुदी १५। वे सं १८। झ भण्डार।

विशेष—जयपुर के चौधरी के मन्दिर नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

२७६९ प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका—सौभाग्यगणि। पत्र सं २२४। आ १२३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र काल ×। ले काल सं १८६६ आसोज सुदी २। पूर्ण। वे सं ५२७। क भण्डार।

२८०० भाष्यप्रदीप—कैय्यट। पत्र स ११। आ १२३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १६१। ञ भण्डार।

२८०१ रूपमाला""""। पत्र सं ४ से ५। आ ८३×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १६। ख भण्डार।

विशेष—धातुओं के रूप दिये हैं।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं १७ १८) और हैं।

२८०२ लघुन्यासवृत्ति""""। पत्र सं १२७। आ १ ×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १७७२ ट भण्डार।

२८०३ लघुरूपसर्गवृत्ति "। पत्र सं० ४। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६४८। ट भण्डार।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर । पत्र स० २१५। आ० ११३/४×५३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। ज भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं।

२८०५ लघुसारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य। पत्र सं० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ३११. ३१२, ३१३, ३१४) और हैं।

२८०६. प्रति स० २। ""। पत्र स० २०। आ० ११३/४×५३/४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३११। च भण्डार।

२८०७ प्रति स० ३। पत्र स० १४। ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८। वे० स० ३१३। च भण्डार।

विशेप—इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ३१३, ३१४) और हैं।

२८०८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज। पत्र स० १०४। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६७। ख भण्डार।

२८०९ प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल स० १७८९ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० स० १७३। ज भण्डार।

विशेष—आठ अध्याय तक है।

च भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ३१५, ३१६) और हैं।

२८१० लघुसिद्धान्तकौस्तुभ "'"। पत्र स० ५१। आ० १२×५१/२ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०१२। ट भण्डार।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है।

२८११ वैय्याकरणभूषण—कौण्डभट्ट। पत्र स० ३३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स० १७७४ कार्त्तिक सुदी २। पूर्ण। वे० स० ६८३। ङ भण्डार।

२८१२ प्रति स० २। पत्र स० १०४। ले० काल सं० १९०५ कार्त्तिक बुदी २। वे० स० २८१। ढ भण्डार।

२८१३ वैय्याकरणभूषण"' "'। पत्र स० ७। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स० १८६६ पौष सुदी ८। पूर्ण। वे० स० ६८२। ङ भण्डार।

२८१४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० ३३५ । च भण्डार ।

विशेष—सारिस्वतयन्त्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१५ व्याकरण········। पत्र सं० ४१ । आ० १ ½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ १ । छ भण्डार ।

२८१६ व्याकरणटीका·········। पत्र सं० ७ । आ० १ ×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

२८१७ व्याकरणभाषाटीका········ । पत्र सं० १८ । आ० १ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८ शब्दशोभा—कवि नीलकंठ । पत्र सं० ४३ । आ० १ ½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ७ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१९ शब्दरूपावली········। पत्र सं० ८६ । आ० १×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । ख भण्डार ।

२८२० शब्दरूपिणी—आचार्य वररुचि । पत्र सं० २७ । आ० १०½×१½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । ङ भण्डार ।

२८२१ शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ११ । आ० १ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८८ । ङ भण्डार ।

२८२२ प्रति सं० २ । । पत्र सं० १ । आ० १ ३×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८६ । ञ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० १८१ १८२, १८३ १८३ (क) १८४ ५२६) तथा ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११८६) और है ।

२८२३ शब्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ७१ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० । २२६१ । ञ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत व्याकरण भी है ।

२८२४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ५२५ । क भण्डार ।

विशेष—आमेर निवासी पिरागदास महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२८२५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १ । वे० सं० २४३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३३६) और है ।

२८२६ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी ८ । वे० स० १६५० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भौमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्त्तिसिंहदेवराज-प्रवर्त्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्म · ·· ·।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ से २० । आ० १५×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४० । च भण्डार ।

२८२८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १७३६ माघ सुदी २ । वे० स० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपाल, नत्वागोपालमीश्वरं ।
क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषत ॥

२८२९. संज्ञाप्रक्रिया । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८५ । छ भण्डार ।

२८३० सम्बन्धविवक्षा · · । पत्र स० २४ । आ० ६¾×४¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । वे० स० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१. सस्कृतमञ्जरी··· · । पत्र स० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वे० स० ११६७ । अ भण्डार ।

२८३२ सारस्वतीधातुपाठ · ·· । पत्र स० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३. सारस्वतपचसधि · । पत्र स० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४ सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र स० १२१ से १४५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८४६ । अपूर्ण । वे० स० १३६५ । अ भण्डार ।

२८३५ प्रति स० २ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १७८१ । वे० स० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ६२१ । क भण्डार ।

२८३७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

विशेष—मौजचंद के शिष्य कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८३८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९ से १२४ । ले० काल सं० १८३८ । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । क भण्डार ।

वगई (बस्सी) नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८३९ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १२४६ । क भण्डार ।

विशेष—चन्द्रसागरगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२८४० प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७ १ । वे० सं० ६७ । क भण्डार ।

२८४१ प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२ से ७२ । ले० काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

२८४२ प्रति सं० ९ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ ५५ । क भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

२८४३ प्रति सं० १० । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

विशेष—विमलराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४४ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ७११ । क भण्डार ।

२८४५ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १४ । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० अमरूपराम ने दुलीचन्द के पठनार्थ नगर हरिदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । केवल विसर्ग संधि तक है ।

२८४६ प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

२८४७ प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७... । वे० सं० १३७ । ग भण्डार ।

विशेष—दुर्गाराम शर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४८ प्रति सं० १५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० ४८ । ङ भण्डार ।

विशेष—सर्वेगाभाना पांड्या के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

२८४९ प्रति सं० १६ । पत्र सं० १ १ । ले० काल सं० १८७६ । वे० सं० १२५ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त ङ भण्डार में १७ प्रतियां (वे० सं० ६ ७ १२२ ८ ६, ६ १ १ ६

०३४, १३१३, ६५३, १२८६, १२७२, १२३२, १६५०, १३५०, १८८०, १२६१, १३६८, १२८४, १३०१, ३०२) ख भण्डार मे ७ प्रतिया (वे सं० २१५, २१५ [अ], २१६, २१७, २१८, २१६, २६८) घ भण्डार मे प्रतिया (वे० स० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार मे १५ प्रतिया (वे० सं० ८२१, ८२२, ८२३, ८२५, ८२६, २७, ८२८, ८२६, ८३१, से ८३८, ८३६) च भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) ६ भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) झ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे स० १२१, १४०, २२२) ञ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० २०) तथा ट भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० १६८८, १६६०, २१००, २०७२, २१०५) और हैं।

उक्त प्रतियो मे बहुत सी अपूर्ण प्रतिया भी हैं।

२८५० सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी। पत्र सं० ६७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स० १८७६। पूर्ण। वे० सं० ८२४। ङ भण्डार।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२८५१ सज्ञाप्रक्रिया ...। पत्र स० ६। आ० १०½×५ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। ञ भण्डार।

२८५२ सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि। पत्र सं० ३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल। ले० काल स० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १०। पूर्ण। वे० स० । ज भण्डार।

विशेष—सवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

२८५३ सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित। पत्र सं० ८। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६४। ज भण्डार।

२८५४ प्रति स० २। पत्र स० २४०। ले० काल ×। वे० स० ६६। ज भण्डार।

विशेष—पूर्वार्द्ध है।

२८५५. प्रति स० ३। पत्र सं० १७६। ले० काल ×। वे० सं० १०१। ज भण्डार।

विशेष—उत्तरार्द्ध पूर्ण है।

इसके अतिरिक्त ज भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ६५, ६६) तथा ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६३४, १६६६) और हैं।

२८५६. सिद्धान्तकौमुदी.......। पत्र सं० ४३। आ० १२½×६ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४७। ङ भण्डार।

विशेष—प्रतिरिक्त क च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे सं ८४८ ४ ७ २७२) और हैं।

२८५७ सिद्धान्तकौमुदीटीका ……। पत्र स ९१। आ० ११¾×५ इंच। भाषा सस्कृत। विषय–व्याकरण। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ९९। ज भण्डार।

विशेष-पत्रों के कुछ अंश पानी से गल गये हैं।

२८५८ सिद्धान्तचन्द्रिका—रामचन्द्राश्रम। पत्र सं ४४। आ ६¾×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११११। अ भण्डार।

२८५९. प्रति स० २। पत्र सं २६। ले काल स १८४७। वे सं ११५२। अ भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२८६० प्रति स० ३। पत्र सं १ १। ले काल सं १८४७। वे सं ११११। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रतियां (वे सं ११११ ११५४ ११५५ ११५६ ११५७ ११५८ ९ ८ ६१७ ६१८ २ २१) और हैं।

२८६१ प्रति स० ४। पत्र सं ९४। आ ११½×५½ इंच। ले काल स १७८४ अषाढ बुदी १४। वे सं ७८२। क भण्डार।

२८६२. प्रति स० ५। पत्र सं ५७। ले काल सं १९ २। वे सं २२१। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं २२२ तथा ४ ष) और हैं।

२८६३. प्रति स० ६। पत्र सं २९। ले काल सं १७१२ चैत्र बुदी १ वे सं १ । छ भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

२८६४ प्रति स० ७। पत्र सं१ ११। ले काल सं १८१४ भादवा बुदी ६। वे सं ३१२। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है। संस्कृत में कहीं शब्दार्थ भी हैं। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं ३१३) और है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में १ प्रतियां (वे सं १२८५, ११५४ ११९५, ११५६, ११५७ ९ ८ ६१७ ६१८) ग भण्डार में २ प्रतियां (वे सं २२२, ४ ८) छ तथा ज भण्डार में एक एक प्रति (वे सं १ ३१३ और है। भ भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं ११७७ १२६९ १२६७) अपूर्ण। च भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ४ १ ४१) छ भण्डार में एक प्रति (वे सं ११९) तथा ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं १४५, १४८ १४१) और हैं।

य सभी प्रतियां अपूर्ण हैं।

२८६५. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर। पत्र स० ६७। आ० ११३/४×४३/४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८०१। क भण्डार।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है।

२८६६ प्रति स० २। पत्र स० ८ से ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४७। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि। पत्र सं० १७३। आ० ११×४३/४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र काल ×। ले०'काल ×। वे० स० ८६। छ भण्डार।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है।

२८६८ प्रति स० २। पत्र स० १७८। ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७। वे० सं० ३५१। ज भण्डार।

विशेष—प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

२८६९ सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि। पत्र सं० १६०। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल स० १६५६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७९५। अ भण्डार।

२८७० प्रति स० २। पत्र स० ६ से ११६। ले० काल स० १६५७। वे० स० २६४। छ भण्डार।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२८७१. प्रति स० ३। पत्र सं० ७२। ले० काल स० १८२८। वे० स० २८३। छ भण्डार।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी। पत्र जीर्ण हैं।

२८७२ प्रति स० ४ पत्र स० ३। ले० काल सं० १६६१। वे० स० १९४३। ट भण्डार।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ च और ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १०५५, ३९८ तथा २०६४) और है।

२८७३ सारस्वतदशाध्यायी ··। पत्र स० १०। आ० १०१/२×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स० १७९८ वैशाख बुदी ११। वे० स० १३७। छ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी।

२८७४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८४९। ङ भण्डार।

२८७५. सिद्धान्तबिन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती। पत्र सं० २८। आ० १ ३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७४२ आसोज बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ८१७। अ भण्डार।

विशेष—इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती भगवत्पाद शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तबिंदुस्समाप्तः ॥ संवत् १७४२ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां बुधवासरे बागनाम्निनगरे मिश्र श्री रामजस्य पुत्रेण भगवानम्ना सिद्धान्तबिंदुरलेखि। शुभमस्तु॥

२८७६ सिद्धान्तमञ्जूषिका—नागेशभट्ट। पत्र सं० ११। आ० १२'×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४। ज भण्डार।

२८७७ सिद्धान्तमुक्तावली—पंचानन भट्टाचार्य। पत्र सं० ७। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८११ भादवा बुदी १। वे० सं० १ ८। ज भण्डार।

२८७८ सिद्धान्तमुक्तावली ……। पत्र सं० ७। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १७ ५ चैत सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २८६। ज भण्डार।

२८७९. हेमनीबृहद्वृत्ति……। पत्र सं० ५४। आ० १ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१। ज भण्डार।

२८८० हेमव्याकरणवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० २४। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८४४। ट भण्डार।

२८८१ हेमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० ८३। आ० १ ×४२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५८।

विशेष—बीच में अधिकांश पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

कोश

२८८२. अनेकार्थध्वनिमंजरी—महीक्षपणक कवि। पत्र स० ११। आ० १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १४। ङ भण्डार।

२८८३ अनेकार्थध्वनिमञ्जरी ···। पत्र स० १४। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९१५। ट भण्डार।

विशेष— तृतीय अधिकार तक पूर्ण है।

२८८४ अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास। पत्र स० २१। आ० ८½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१८। झ भण्डार।

२८८५ अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्त्ति। पत्र स० २३। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १६६७ वैशाख बुदी ५। पूर्ण। वे० स० १५। ङ भण्डार।

२८८६. अनेकार्थसंग्रह—हेमचन्द्राचार्य। पत्र स० ४। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल स० १६६९ असाढ बुदी ४। पूर्ण। वे० स० ३८। क भण्डार।

२८८७. अनेकार्थसंग्रह ···। पत्र सं० ४१। आ० १०×४⅝ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ४। च भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है।

२८८८. अभिधानकोष—पुरुषोत्तमदेव। पत्र स० ३४। आ० ११½×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११७१। अ भण्डार।

२८८९. अभिधानचिंतामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६०५। अ भण्डार।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है।

२८९० प्रति स० २। पत्र सं० २३५। ले० काल स० १७३० आषाढ सुदी १०। वे० सं० ३६। क भण्डार।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है। महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

२८६१ प्रति स० ३ । पत्र सं ११ । ले काल स० १८ २ ज्येष्ठ सुदी १० । वे सं १७ । क भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञवृत्ति है ।

२८६२ प्रति स० ४ । पत्र सं ७ से ११४ । ले काल सं १७८ आसोज सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं ३ । च भण्डार ।

२८६३ प्रति स० ५ । पत्र सं ११२ । ले काल सं १६२९ माघास सुदी २ । वे स ८१ । ञ भण्डार ।

२८६४ प्रति सं० ६ । पत्र सं ५८ । ले काल सं १८११ बैशाख सुदी ११ । वे सं १११ । ञ भण्डार ।

विशेष—पं भीमराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२८६५ अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि । पत्र सं २९ । आ १ ×४३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ८२७ । अ भण्डार ।

२८६६ अभिधानसार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं २१ । आ १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—कोश । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ८ । ख भण्डार ।

विशेष—देवकाण्ड तक है ।

२८६७ अमरकोश—अमरसिंह । पत्र सं २१ । आ १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । र काल × । ले काल सं १८ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे सं २ ७५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है ।

२८६८ प्रति सं० २ । पत्र सं १८ । ले काल सं १८६५ । वे सं ११११ । अ भण्डार ।

२८६९ प्रति स० ३ । पत्र सं ५४ । ले काल सं १८११ । वे० सं ६२२ । अ भण्डार ।

२९०० प्रति स० ४ । पत्र सं १८ से ९१ । ले काल सं १८८२ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वे सं ६२१ । अ भण्डार ।

२९ १ प्रति स० ५ । पत्र सं ६९ । ले काल सं १८६४ । वे सं २४ । क भण्डार ।

२९०२ प्रति स० ६ । पत्र सं ११ से ६१ । ले काल सं १८२४ । वे सं १२ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १८६८ आसोज सुदी ६ । वे० स० २४ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४ प्रति स० ८ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८८३ आसोज सुदी ३ । वे० स० २७ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर मे मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५ प्रति स० ६ । पत्र स० ८४ । ले० काल सं० १८१८ कात्तिक बुदी ८ । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी । स० १८२२ आषाढ सुदी २ मे ३) रु० देकर प० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली ।

२६०६ प्रति स० १० । पत्र स० ६१ से १३१ । ले० काल सं० १८३० आपाढ बुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोतीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति स० ११ । पत्र स० ८८ । ले० काल स० १८८१ वैशाख सुदी १५ । वे० सं० ३४४ । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ टीका भी दी हुई है ।

२६०८ प्रति स० १२ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १७६६ मगसिर सुदी ५ । वे० स० ७ । ञ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २१ प्रतिया (वे० स० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७ १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६० १८५१, २१०५) क भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स ६, १०, ११, २६६ २६६) ङ भण्डार मे ११ प्रतिया (वे० स० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६) च भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० स० ८, ६, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १३६ १३६, १४१, २४ [क]) ज भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ५६, ३५०, ३५२, ६२) झ भण्डार १ प्रति (वे० स० ६५), तथा ट भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६) और हैं ।

२६०९ अमरकोषटीका—भानुजीदीक्षित। पत्र सं ११४ । आ १ ×१ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश। र काल ×। लि काल ×। पूर्ण। वे सं ६। च भण्डार।

विशेष—बघेल वंशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्त्तिसिंहदेव की आज्ञा से टीका लिखी गई।

२६१० प्रति स० २। पत्र सं २४१। ले काल ×। अपूर्ण। वे स ७। च भण्डार।

२६११ प्रति सं० ३। पत्र सं १२। ले काल ×। वे सं १८८६। ट भण्डार।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है।

२६१२. एकाक्षरकोश—क्षपणक। पत्र सं ४। आ ११×५३ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय कोश। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६२। क भण्डार।

२६१३ प्रति सं० २। पत्र सं २। ले काल सं १८८६ कार्तिक सुदी ५। वे स ११। घ भण्डार।

२६१४ प्रति स० ३। पत्र सं २। ले काल सं १६ १ चैत सुदी ६। वे सं १२५। ज भण्डार।

विशेष—प सदासुखजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिलिपि की थी।

२६१५. एकाक्षरीकोश—वररुचि। पत्र सं २। आ ११$_{8}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २ ७१। ख भण्डार।

२६१६ एकाक्षरीकोश…… । पत्र सं १ । आ ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १३ । ख भण्डार।

२६१७ एकाक्षरनाममाला ……। पत्र सं ४। आ १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—कोश। र काल ×। ले काल सं १६ १ चैत सुदी ६। पूर्ण। वे सं ११५। ज भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा रामसिंह के शासनकाल में भ देवेन्द्रकीर्त्ति के समय में पं सदासुखजी के शिष्य फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२६१८. त्रिकाण्डशेषसूची (अमरकोश)—अमरसिंह। पत्र स १४। आ ११ ×५$_{4}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १४१। च भण्डार।

विशेष—अमरकोश के काण्डों में आने वाले शब्दों की श्लोक संख्या दी हुई है। प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भिक पद भी दिया हुआ है।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं १४२ १४३ १४४) और हैं।

२६१६. त्रिकाण्डशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ४३ । आ० ११×५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८० । ङ भण्डार ।

२६२० प्रति स० २ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० स० १४४ । च भण्डार ।

२६२१. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १६०३ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिह के शासनकाल मे प० सदासुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थ। ।

२६२२ नाममाला—धनजय । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय–कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६४७ । अ भण्डार ।

२६२३ प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० स० २८२ । अ भण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर मे खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १४, १०७३, १०८६) और हैं ।

२६२४ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १३०६ कार्त्तिक बुदी ८ । वे० स० ६३ । ख भण्डार ।

विशेष—ङ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३२२) और है ।

२६२५ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० २४६ । छ भण्डार ।

विशेष—प० भारामल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६६) तथा ज भण्डार में (वे० सं० २७६) की एक प्रति और है ।

२६२६ प्रति स० ५ । पत्र स० २७ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १८५ । व्य भण्डार ।

२६२७ प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ५२२ । व्य भण्डार ।

२६२८ प्रति स० ७ । पत्र सं० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० १०७३, १४, १०८६) ङ, छ तथा ज भण्डार मे १-१ प्रति (वे० स० ३२२, २६६, २७६) और हैं ।

२६२६ नाममाला ……। पत्र सं १२। आ० १ ×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११२८। ट भण्डार।

२६३० नाममाला—बनारसीदास। पत्र सं १४। आ ८×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय कोश। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६४। ख भण्डार।

२६३१ बीजक(कोश) ……। पत्र सं २१। आ ६३×४१ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–कोष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स १०४। भ भण्डार।

विशेष—विमलहंसगणि ने प्रतिलिपि की थी।

२६३२ मानमञ्जरी—नन्ददास। पत्र सं २२। आ ८×६ इंच। भाषा–हिन्दी विषय–कोश। र० काल ×। ले काल सं १८५१ फागुण सुदी ११। पूर्ण। वे सं ५६१। क भण्डार।

विशेष—सवाईराम बज ने प्रतिलिपि की थी।

२६३३ मेदिनीकोश। पत्र सं ६४। आ १ ३×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५८२। क भण्डार।

२६३४ प्रति स० २। पत्र सं ११६। ले काल ×। वे सं २७८। ञ भण्डार।

२६३५ रूपमञ्जरीनाममाला—गोपालदास सुत रूपचन्द। पत्र स ८। आ १ ×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोस। र काल सं १६४४। ले काल सं १७० चैत्र सुदी १। पूर्ण। वे सं १८७६। ञ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में नाममाला की तरह श्लोक हैं।

२६३६ लघुनाममाला—हर्षकीर्त्तिसूरि। पत्र स० २१। आ ६×६३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोश। र काल ×। ले काल सं १८२८ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वे सं ११२। ञ भण्डार।

विशेष—सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६३७ प्रति सं २। पत्र सं २। ले काल × वे सं ४६८। ञ भण्डार।

२६३८ प्रति स० ३। पत्र सं ५ से ११ १७ से ४५। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १५८४। ट भण्डार।

२६३६ लिंगानुशासन……। पत्र सं ५। आ १ ×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–कोष। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १६६। ञ भण्डार।

विशेष—५ से आगे पत्र नहीं हैं।

२६४०. लिंगानुशासन—हेमचन्द्र। पत्र सं० १०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०। ज भण्डार।

विशेष—कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत मे दी हुई है।

२६४१ विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर। पत्र सं० १०१। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ६६३। क भण्डार।

२६४२ प्रति सं० २। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० सं० ३३२। क भण्डार।

२६४३. विश्वलोचन—धरसेन। पत्र सं० १८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल स० १५६६। पूर्ण। वे० स० २७५। च भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका……। पत्र सं० २६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८८७। अ भण्डार।

२६४५ शतक　　। पत्र स० ६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल × ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६६८। ङ भण्डार।

२६४६ शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर। पत्र सं० १६। आ० १०×५½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७७। ख भण्डार।

२६४७ शब्दरत्न ‥। पत्र सं० १६६। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३४६। ज भण्डार।

२६४८ शारदीनाममाला……। पत्र स० २४ से ४७। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८३। अ भण्डार।

२६४६ शिलोञ्छकोश—कवि सारस्वत। पत्र सं० १७। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कोश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। (तृतीयखड तक) वे० स० ३४३। च भण्डार।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यो से प्रकट है।

कवेरमर्हसिहस्य कृतिरेषाति निर्मला।
श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामलिंगानुशासनम्।

पद्मानिवोधयत्यर्क्कं शास्त्राणि कुरुते कवि.
तत्सौरभनभस्वत संतस्तन्वन्तितद्गुणा. ॥

भूतेष्वमर्त्यसंहेन नामलिंगेषु नामिषु।
एष वाङ्मयपथ्यं तितीर्षु क्रियते मया॥

२६५० सभायसाधनी—भट्टवररुचि। पत्र सं० २ से २४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कोष। र० काल ×। ले० काल सं० १५१७ मंगसिर सुदी ७। अपूर्ण। वे० सं० २१२। ज भण्डार।

विशेष—हिसार पिरोज्यकोट में रुद्रपल्लीयगच्छ के देवसुन्दर के पट्ट में श्रीजिनदेवसूरि ने प्रतिलिपि की थी।

ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहंत केवली पाशा'' ......। पत्र स० १४ । आ० १२×५ इच। भाषा-संस्कृत। वषय-ज्योतिष । र० काल स० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर मे हुई थी।

२६५२. अरिष्ट कर्ता '' '' । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष ० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं।

२६५३. अरिष्टाध्याय ' '' । पत्र सं० ११ । आ० ८×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की। ६ पत्र से आगे भारतीस्तोत्र दिया हुआ है।

२६५४ अबजद केवली ' ' । पत्र स० १० । आ० ८×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । व्य भण्डार ।

२६५५. उच्चग्रह फल ''' । पत्र स० १ । आ० १०१/२×७१/२ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६. करण कौतूहल .... । पत्र स० ११ । आ० १०१/४×४३/४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५ । ज भण्डार ।

२६५७. करलक्खण ' '' । पत्र सं० ११ । आ० १०३/४×५ इंच । भापा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं। माणिक्यचन्द्र ने वृन्दावन मे प्रतिलिपि की।

२६५८ कर्पूरचक्र— । पत्र सं० १ । आ० १४१/२×११ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २११४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र अवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारो ओर देश चक्र है तथा उनका फल है। प० खुशाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२६५६. प्रति सं० २ । पत्र सं १ । ले काल सं० १८४ । वे सं २११६ क भण्डार ।

विशेष—मिश्र बरणीधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६६० कर्मराशि फल (कर्म विपाक)........। पत्र सं ११ । आ ८½×४ इंच । भाषा–संस्कृत विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । पूर्ण × । वे सं १६२१ । क भण्डार ।

२६६१ कर्म विपाक फल........। पत्र सं १ । आ १ ×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–ज्योतिष र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १३ । ख भण्डार ।

विशेष—राशियों के अनुसार कर्मों का फल दिया हुआ है ।

२६६२ कालज्ञान—। पत्र सं १ । आ १×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १८१८ । क भण्डार ।

२६६३ कालज्ञान........। पत्र सं० २ । आ १ ×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स ११८६ । क भण्डार ।

२६६४ कौतुक लीलावती........। पत्र सं० ५ । आ १ ½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल सं १८६२ । वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे सं २११ । ख भण्डार ।

२६६५. क्षेत्र व्यवहार........। पत्र सं २ । आ ८½×१ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६६७ । ट भण्डार ।

२६६६ गर्गमनोरमा........। पत्र सं ७ । आ ७½×२½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल सं १८८८ । पूर्ण । वे सं २१२ । ख भण्डार ।

२६६७ गर्गसंहिता—गर्गऋषि । पत्र स १ । आ ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र काल × । ले काल सं १८८६ । अपूर्ण । वे सं ११६७ । क भण्डार ।

२६६८ ग्रह दशा वर्णन........। पत्र सं १८ । आ ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल सं १८८६ । पूर्ण । वे सं १७२७ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रहों की दशा तथा उपदशाओं के अन्तर एवं फल दिये हुए हैं ।

२६६६. ग्रह फल........। पत्र सं १ । आ १ ½×१ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं० २ २२ । ट भण्डार ।

२६७० ग्रहलाघव—गणेश दैवज्ञ । पत्र सं ४ । आ १ ½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ८४ । ख भण्डार ।

२६७८ चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच……। पत्र सं० ५–२३। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८। ङ भण्डार।

विशेष—इसके आगे पचव्रत प्रमाण लक्षण भी हैं।

२६७९. चमत्कारचिंतामणि……। पत्र स० २–९। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० ×। १८१८ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वे० स० ६३२। अ भण्डार।

२६८०. चमत्कारचिन्तामणि……। पत्र स० २६। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७३०। ट भण्डार।

२६८१. छायापुरुषलक्षण……। पत्र स० २। आ० ११×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सामुद्रिक शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४४। छ भण्डार।

विशेष—नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६८२. जन्मपत्रीग्रहविचार……। पत्र स० १। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२१३। अ भण्डार।

२६८३. जन्मपत्रीविचार……। पत्र स० ३। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६१०। अ भण्डार।

२६८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य। पत्र स० २–२०। आ० १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८३१। अपूर्ण। वे० सं० १०४८। अ भण्डार।

विशेष—शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२६८५. जन्मफल……। पत्र स० १। आ० ११½×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०२४। अ भण्डार।

२६८६ जातककर्मपद्धति—श्रीपति। पत्र स० १४। आ० ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १६३८ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६००। अ भण्डार।

२६८७. जातकपद्धति—केशव। पत्र सं० १०। आ० ११×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१७। ज भण्डार।

२६८८ जातकपद्धति……। पत्र सं० २६। आ० ८×६½। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४९। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२६८६ जातकाभरण—दैवज्ञ ढुंढिराज। पत्र सं० ४१। आ० १ २३×४२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र काल ×। ले काल सं १७३६ भादवा सुदी ११। पूर्ण। वे सं ८६७। क भण्डार।

विशेष—नागपुर में पं सुखकुशलगणि ने प्रतिलिपि की थी।

२६६० प्रति स० २। पत्र सं १०। ले काल स १८४० कार्तिक सुदी ६। वे० सं ११७। क भण्डार।

विशेष—भट्ट गंगाधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी।

२६६१ जातकालंकार……। पत्र सं १ से ११। आ १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १७४१। ट भण्डार।

२६६२. ज्योतिषरत्नमाला……। पत्र सं १ से २४। आ १ २×४, इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १६८१। क भण्डार।

२६६३ प्रति स० २। पत्र सं ११। ले काल ×। वे सं १२४। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

२६६४ ज्योतिषमणिमाला……केशव। पत्र सं ५ से २७। आ १२३×४२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २२ ५। क भण्डार।

२६६५. ज्योतिषलक्षणग्रंथ……। पत्र सं १। आ १ ३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय ज्योतिष र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं २१४। ज भण्डार।

२६६६ ज्योतिषसारभाषा—कृपाराम। पत्र स ३ से ११। आ १२×६ इंच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-ज्योतिष। र काल ×। ले काल सं १८४१ कार्तिक सुदी १२। अपूर्ण। वे सं १५११। भण्डार।

विशेष—पन्नेराम वैद्य ने श्रीनिधराम बज की पुस्तक से लिखा।

आदि भाग—(पत्र ३ पर)

अथ केंदरिया त्रिकोण घर को भेद—

केंदरियो चोथो भवन सप्तम दसमो जान।
पंचम घर नोमों भवन येह त्रिकोण बखान॥६॥
तीजो षसटम ग्यारमो घर दसमो घर लेखि।
इन को उपचै कहत है सबै ग्रंथ में देखि॥७॥

अन्तिम—

वरष लग्यो जा अंस मे सोई दिन चित धारि।
वा दिन उतनी घडी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥

लगन लिखे तैं गिरह जो जा घर बैठो आय।
ता घर के फल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार सपूर्ण।

२९९७ **ज्योतिषसारलग्नचन्द्रिका—काशीनाथ।** पत्र स० ९३। आ० ९३/४×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८९३ पौष सुदी २। पूर्ण। वे० स० ६३। ख भण्डार।

२९९८ **ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र।** पत्र स० १६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २८२। व्य भण्डार।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता सागरचन्द्र हैं।

२९९९. **ज्योतिषशास्त्र** ···। पत्र स० ११। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०१। ङ भण्डार।

३००० **प्रति स० २।** पत्र स० ३३। ले० काल ×। वे० सं० ५२१। व्य भण्डार।

३००१. **ज्योतिषशास्त्र** । पत्र स० ५। आ० १०×५३/४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिप। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १९८४। ट भण्डार।

३००२ **ज्योतिषशास्त्र**· ·। पत्र स० ५८। आ० ९×६१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १७९८ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० १११५। अ भण्डार।

विशेष—ज्योतिष विषय का सग्रह ग्रन्थ है।

प्रारम्भ मे कुछ व्यक्तियो के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी सख्या २२ है। इनमे मुख्यरूप से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा विशनसिह के पुत्र महाराजा जयसिंह	जन्म स० १७४५ मगसिर
महाराजा विशनसिह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह	जन्म स० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गौडि के पुत्र	स० १७६६
रामचन्द्र (जन्म नाम झाभूराम)	सं० १७१५ फागुण सुदी २
दौलतरामजी (जन्म नाम बेगराज)	सं० १७४९ आपाढ बुदी १४

३००३ तात्त्विकसमुच्चय……। पत्र सं० १२। आ० ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८२१। पूर्ण। वे० सं० २३१। क भण्डार

विशेष—बड़ा मरायने में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में चोखराम ने प्रतिलिपि की थी।

३००४ तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभफल……। पत्र सं० १। आ० १०½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

३००५ त्रिपुरदहमुहूर्त……। पत्र सं० १। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११८८। अ भण्डार।

३००६ त्रैलोक्यप्रकाश……। पत्र सं० १६। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११२। क भण्डार।

विशेष—१ से ६ तक दूसरी प्रति के पत्र हैं। २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है। दो प्रतियों का सम्मिश्रण है।

३००७ दशोठनमुहूर्त……। पत्र सं० १। आ० ७½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७२१। अ भण्डार।

३००८. नक्षत्रविचार……। पत्र सं० ११। आ० ८×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० ९७६। ख भण्डार।

विशेष—छींक आदि विचार भी दिये हुये हैं।

निम्नलिखित रचनायें और हैं—

सज्जनप्रकाश दोहा—	कवि ठाकुर	हिन्दी [१ कवित्त]
मित्रविषय के दोहे—		हिन्दी [४४ दोहे हैं]
रसटुकाकल्प—		हिन्दी [ले० काल सं० १८६७]

विशेष—आम विरमी का सेवन बताया गया है जिसके खाने लेने से क्या असर होता है इसका वर्णन १६ दोहों में किया गया है।

३००९. नक्षत्रवेधपीडाज्ञान……। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६४। अ भण्डार।

३०१० नक्षत्रसत्र……। पत्र सं० १ से २४। आ० ६×३½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल सं० १८ १ मगसिर सुदी ८। अपूर्ण। वे० सं० १०३६। अ भण्डार

३०११ नरपतिजयचर्या—नरपति। पत्र स० १४८। आ० १२३/४×६ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल स० १५२३ चैत्र सुदी १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६४६। अ भण्डार।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नही हैं।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र। पत्र स० २६। आ० १०×४१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८१० मगसिर बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० १७२। अ भण्डार।

३०१३ प्रति स० २। पत्र स० १७। ले० काल ×। वे० स० ३४५। अ भण्डार।

३०१४. प्रति स० ३। पत्र स० ३७। ले० काल स० १८६५ फागुण सुदी ३। वे० सं० ६५। ख भण्डार।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है।

३०१५ निमित्तज्ञान (भद्रवाहु सहिता)—भद्रवाहु। पत्र स० ७७। आ० १०१/२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७७। अ भण्डार।

३०१६ निषेकाध्यायवृत्ति ⋯ । पत्र स० १८। आ० ८×६१/२ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७४८। ट भण्डार।

विशेष—१८ से आगे पत्र नही हैं।

३०१७. नीलकठताजिक—नीलकठ। पत्र स० १४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १०५८। अ भण्डार।

३०१८ पञ्चागप्रबोध ⋯ । पत्र स० १०। आ० ८×४ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७३५। ट भण्डार।

३०१९. पचाग—चराडू। छ भण्डार।

विशेष—निम्न वर्षों के पचाग हैं।

सवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ९०, ९१, ९३, ९७, ९८।

३०२० पचांग ⋯ । पत्र स० १३। आ० ७१/२×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १९२७। पूर्ण। वे० स० २४७। ख भण्डार।

३०२१ पंचांगसाधन—गरोश (केशवपुत्र)। पत्र स० ५२। आ० ९×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८८२। वे० स० १७३१। ट भण्डार।

३०२२ पल्यविचार……। पत्र सं १। मा ६½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–शकुन शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं० ६१। ज भण्डार।

३०२३ पल्यविचार……। पत्र स २। मा ६½×४½ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–शकुनशास्त्र। र० काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११६२। अ भण्डार।

३०२४ पाराशरी……। पत्र सं १। मा ११×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११२। ख भण्डार।

३०२५. पाराशरीसभ्रनरबनीटीका……। पत्र सं २१। मा १२×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल सं १८३१ भासोज सुदी २। पूर्ण वे सं ६११। क भण्डार।

३०२६ पाशाकेवली—गर्गमुनि। पत्र स० ७। मा १ ½×१ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १८७१। पूर्ण। वे सं ६२१। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शकुनावली भी है।

३०२७ प्रति स० २। पत्र सं ४। ले काल सं १७३८। जीर्ण। वे स ८७६। अ भण्डार।

विशेष—अति मनोहर मै प्रतिलिपि की थी। श्रीचन्द्रसूरि रचित नेमिनाथ स्तवन भी दिया हुआ है।

३०२८. प्रति स० ३। पत्र सं ११। ले काल ×। वे सं ६२३। क भण्डार।

३०२९. प्रति स० ४। पत्र सं ६। ले काल सं १८१७ पौष सुदी १। वे सं ११८। छ भण्डार।

विशेष—विद्यापुरी (सांगानेर) में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में सवाईराम के शिष्य नौनयराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०३० प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले काल ×। वे सं ११८। छ भण्डार।

३०३१ प्रति स० ६। पत्र सं ११। ले काल सं १८६६ बैसाख बुद १२। वे सं ११४। छ भण्डार।

विशेष—दयाचन्द मर्म ने प्रतिलिपि की थी।

३०३२ पाशाकेवली—ज्ञानभास्कर। पत्र सं ५। मा ६×११ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २२। च भण्डार।

३०३३ पाशाकेवली……। पत्र सं ११। मा ६×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्तशास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६४६। अ भण्डार।

३०३४ प्रति स० २। पत्र सं ६। ले काल सं १७७२ फागुण बुदी १। वे सं २११। ज भण्डार।

विशेष—पांडे दयाराम सोनी ने आमेर मे बद्रिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १०८) छ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८२४) और हैं।

२०३५ पाशाकेवली । पत्र स० ५ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३६ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ज भण्डार ।

३०३७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० स० ११६ । ञ भण्डार ।

३०३८ पाशाकेवली ··· । पत्र सं० १ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५६ । अ भण्डार ।

३०३६ पाशाकेवली ··· । पत्र स० १३ । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५० । अपूर्ण । वे० स० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—विशनलाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । प्रथम पत्र नही हैं ।

३०४० पुरश्चरणविधि ··· । पत्र स० ४ । आ० १०×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय–ज्योतिप । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पत्र भीग गये हैं जिससे कई जगह पढा नही जा सकता ।

३०४१ प्रश्नचूडामणि · । पत्र स० १३ । आ० ६×४३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६६ । अ भण्डार ।

३०४२ प्रति स० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १८०८ आसोज सुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरा पत्र नही है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३०४३ प्रश्नविद्या ··· । पत्र स० २ से ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३३ । छ भण्डार ।

३०४४. प्रश्नविनोद । पत्र स० १६ । आ० १०×४३ इंच । भापा–सस्कृत । विषय–ज्योतिप । र० काल × । पूर्ण । वे० स० २८४ । छ भण्डार ।

३०४५. प्रश्नमनोरमा—गर्ग । पत्र स० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिप । र० काल × । ले० काल सं० १६२८ भादवा सुदी ७ । वे० स० १७४१ । ट भण्डार ।

२०४६ प्रश्नमाला……। पत्र सं १ । आ ९×५१ इंच। भाषा हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ १४। अ भण्डार।

२ ४७ प्रश्नसुगनावलिरमल……। पत्र सं ४। आ ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ४६। झ भण्डार।

२०४८ प्रश्नावलि ……। पत्र सं ७। आ ९×१२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १८१७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है।

२०४९ प्रश्नसार……। पत्र स ११। आ १२½×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–शकुन शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १९२९ फागुण सुदी १४। वे सं १११। अ भण्डार।

२०५० प्रश्नसार—हयग्रीव। पत्र सं १२। आ ११×१½ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय शकुन शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १९२१। वे स १११। अ भण्डार।

विशेष—पत्रों पर कोष्ठक बने है जिन पर अक्षर लिखे हुये है उनके अनुसार शुभाशुभ फल निकलता है

२०५१ प्रश्नोत्तरमाणिक्यमाला—संग्रहकर्ता ब्र० ज्ञानसागर। पत्र सं २७। आ १२×५१ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल सं १८६ । पूर्ण। वे सं २११। अ भण्डार।

२०५२ प्रति स० २। पत्र सं १७। ले काल सं १८६१ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण। वे सं ११ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला महाग्रन्थे भट्टारक श्री चरणारविंद मधुकरोपमा ब्र ज्ञानसागर संग्रहीते श्री जिनभाषित प्रश्नोत्तरोपकार ॥ प्रथम पत्र नहीं है।

२०५३ प्रश्नोत्तरमाला……। पत्र सं २ से २२। आ ७½×४१ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल सं १८१४। अपूर्ण। वे सं २ १८। अ भण्डार।

विशेष—श्री बलदेव बासखेडी वाले ने बाबा बालमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२०५४ प्रति स० २। पत्र सं ११। ले काल सं १८१७ आसोज सुदी ५। वे सं ११४। अ भण्डार।

२ ५५ भवानीवाक्य……। पत्र सं ५। आ ९×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १२८२। अ भण्डार।

विशेष—सं १९ ५ से १९९९ तक के प्रतिवर्ष का भविष्य फल दिया हुआ है।

३०५६ भड्डली ···। पत्र स० ११। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४०। छ भण्डार।

विशेष—मेघ गर्जना, बरसना तथा बिजली आदि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं।

३०५७ भास्वती—पद्मनाभ। पत्र सं० ६। आ० ११×३½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २६४। च भण्डार।

३०५८ प्रति स० २। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० २६५। च भण्डार।

३०५९ भुवनदीपिका ·। पत्र स० २२। आ० ७½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १६१५। पूर्ण। वे० स० २४१। ज भण्डार।

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि। पत्र स० ५८। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८६५। अ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३०६१ प्रति स० २। पत्र स० ७। ले० काल स० १८५६ फागुण सुदी १०। वे० सं० ६१२। अ भण्डार।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२ प्रति स० ३। पत्र स० २०। ले० काल ×। वे० सं० २६६। च भण्डार।

विशेष—पत्र १७ से आगे कोई अन्य ग्रन्थ है जो अपूर्ण है।

३०६३. भृगुसंहिता। पत्र स० २०। आ० ११×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६४। ङ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

३०६४ मुहूर्त्तचिन्तामणि। पत्र स० १६। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८८६। अपूर्ण। वे० स० १४७। ख भण्डार।

३०६५ मुहूर्त्तमुक्तावली। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८१६ कार्त्तिक बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १३६४। अ भण्डार।

३०६६ मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य। पत्र स० ६। आ० ६½×६½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०१२। अ भण्डार।

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है।

३०६७ प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल सं० १८७१ वैशाख बुदी १। वे० सं० १४८। ख भण्डार।

३०६८. प्रति स० ३ । पत्र स ७ । ले काल सं १७८२ मार्गशीर्ष बुदी ३ । ख भण्डार ।

विशेष—सवाराम नगर में मुनि चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. मुहूर्त्तमुक्तावलि ...... । पत्र सं १६ से २१ । आ ६३/४×४ इ च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १४६ । ख भण्डार ।

३०७० मुहूर्त्तमुक्तावली ...... । पत्र सं ६ । आ १ ×४३/४ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल सं १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे सं ११६४ । अ भण्डार ।

३०७१ मुहूर्त्तदीपक—महादेव । पत्र सं ८ । आ १ ×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल सं १७६७ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे सं ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं डूगरसी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

३०७२. मुहूर्त्तसग्रह ...... । पत्र सं २२ । आ १ ३/४×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६ । ख भण्डार ।

३०७३ मेघमाला ...... । पत्र सं २ से १५ । आ १ ×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं ८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—वर्षा आने के लक्षणों एवं कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है । श्लोक सं १४६ हैं ।

३०७४ प्रति स० २ । पत्र सं १५ । ले काल स १८६२ । वे सं ६१५ । अ भण्डार ।

३०७५ प्रति स० ३ । पत्र सं २८ । ले काल × । अपूर्ण । वे स १७४० । ट भण्डार ।

३०७६ यागफल ...... । पत्र सं १६ । आ ६३/४×६१/२ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २८३ । च भण्डार ।

३०७७ रत्नदीपक—गणपति । पत्र सं २१ । आ १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय ज्योतिष । र काल × । ले काल स १८२८ । पूर्ण । वे सं १६ । ख भण्डार ।

३०७८. रत्नदीपक ...... । पत्र सं ५ । आ १२×५१/२ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल सं १८१ । पूर्ण । वे सं ६११ । अ भण्डार ।

विशेष—जन्मपत्री विचार भी है ।

३०७९. रमलशास्त्र—पं० चिंतामणि । पत्र सं १२ । आ ८×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६२४ । क भण्डार ।

३०८० रमलशास्त्र ...... । पत्र सं १६ । आ ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्त शास्त्र र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २३२ । अ भण्डार ।

३०८१ रसलज्ञान ···। पत्र स० ५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा- हिन्दी गद्य। विषय-निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६६। वे० स० ११८। छ भण्डार।

विशेष—आदिनाथ चैत्यालय मे आचार्य रतनकीर्त्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नौनदराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०८२ प्रति स० २। पत्र स० २ से ४४। ले० काल स० १८७८ आषाढ बुदी ३। अपूर्ण। वे० स० १५६४। ट भण्डार।

३०८३ राजादिफल । पत्र स० ४। आ० ६३/४×४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८२१। पूर्ण। वे० स० १६२। ख भण्डार।

३०८४. राहुफल । पत्र स० ८। आ० ६३/४×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वे० स० ६६६। च भण्डार।

३०८५ रुद्रज्ञान । पत्र स० १। आ० ६३/४×४ इ च। भाषा–सस्कृत। विषय-शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १७५७ चैत्र। पूर्ण। वे० स० २११६। अ भण्डार।

विशेष—देधरणाग्राम मे लालसागर ने प्रतिलिपि की थी।

३०८६. लग्नचन्द्रिकाभाषा । पत्र स० ८। आ० ८×५ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३४८। भ्र भण्डार।

३०८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि। पत्र स० ३। आ० १०×४३/४ इ च। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१६। ज भण्डार।

३०८८ लघुजातक—भट्टोत्पल। पत्र स० १७। आ० ११×५ इ च। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० १६३। ञ भण्डार।

३०८६ वर्षबोध । पत्र स० ५०। आ० १०१/२×५ इ च। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८६३। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। वर्षफल निकालने की विधि दी हुई है।

३०६० विवाहशोधन । पत्र स० २। आ० ११×१ इच। भाषा–सस्कृत। विषय-ज्योतिप र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१६२। अ भण्डार।

३०६१ वृहज्जातक—भट्टोत्पल। पत्र स० ४। आ० १०१/२×४१/२ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८०२। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य भारमल्ल ने प्रतिलिपि की थी।

३०६२. षट्पंचासिका—वराहमिहर। पत्र सं ६। आ ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल स १७६६। पूर्ण। वे सं ७३६। क भण्डार।

३०६३ षट्पंचासिकावृत्ति—भट्टोत्पल। पत्र सं २२। आ १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल स १७८८। अपूर्ण। वे सं ६४४। क भण्डार

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साह पूरणमल ने प्रतिलिपि की थी। इसमें १ २, ८ ११ पत्र नहीं हैं।

३०६४ शकुनविचार ....। पत्र सं ५। आ १३×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–शकुन शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स १४८। छ भण्डार।

३ ६५ शकुनावली.......। पत्र सं २। आ ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६५८। क भण्डार।

विशेष—५२ अक्षरों का यंत्र दिया हुआ है।

३०६६ प्रति सं० २। पत्र सं ४। ले काल सं १८६६। वे० सं ६ २ । क भण्डार।

विशेष—पं सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६७ शकुनावली—गर्ग। पत्र सं २ से ५। आ १२×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ ५४। ख भण्डार।

विशेष—इसका नाम पाशाकेवली भी है।

३०६८ प्रति स० २। पत्र सं ६। ले काल ×। वे सं ११६। क भण्डार

विशेष—अमरचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३०६६. प्रति स० ३। पत्र स १। ले काल सं १८१३ मगसिर सुदी ११। अपूर्ण। वे सं २७६। ख भण्डार

३१०० प्रति स ४। पत्र सं ३ से ७। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ ६८। ट भण्डार।

३१०१ शकुनावली—अमरदत्त। पत्र सं ७। आ ११×५४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय–शकुन शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १८६२ सावन सुदी ७। पूर्ण। वे सं २२८। ज भण्डार

३१०२ शकुनावली ....। पत्र सं ११। आ० ८३×४ इंच। भाषा–पुरानी हिन्दी। विषय–शकुन शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११४। छ भण्डार

३१०३ प्रति स० २। पत्र स ११। ले काल स १७८१ सावन सुदी १४। वे सं ११४। छ भण्डार।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर मे राणा सग्रामसिह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी। २० कमलाकार चक्र हैं जिनमे २० नाम दिये हुये हैं। पत्र ५ मे आगे प्रश्नो का फल दिया हुआ है।

३१०४. प्रति स० ३। पत्र स० १४। ले० काल ×। वे० स० ३४०। क भण्डार

३१०५ शकुनावली । पत्र स० ५ से ८। आ० ११×५ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८६०। अपूर्ण। वे० स० १२५८। अ भण्डार।

३१०६. शकुनावली · · । पत्र स० २। आ० १२×५ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-शकुनशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८०८ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० स० १६६६। अ भण्डार।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है।

३१०७ शनश्चिरदृष्टिविचार · । पत्र स० १। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८४६। अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र मे से शनिश्चर दृष्टि विचार है।

३१०८ शीघ्रबोध—काशीनाथ। पत्र स० ११ से ३७। आ० ८३/४×४१/२ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६४३। अ भण्डार।

३१०९ प्रति स० २। पत्र स० ३१। ले० काल स० १८३०। वे० स० १८६। ख भण्डार।

विशेष—प० माणिकचन्द्र ने चोढीग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

३११० प्रति स० ३। पत्र स० ३८। ले० काल स० १८४८ आसोज सुदी ६। वे० स० १३८। छ भण्डार।

विशेष—सपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३१११. प्रति स० ४। पत्र स० ७१। ले० काल स० १८६८ आषाढ बुदी १४। वे० स० २५५। छ भण्डार।

विशेष—आ० रत्नकीर्त्ति के शिष्य प० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८७) छ, झ तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १३८, १६२ तथा २११६) और है।

३११२ शुभाशुभयोग । पत्र स० ७। आ० ६३/४×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८७५ पौष सुदी १०। पूर्ण। वे० स० १८८। ख भण्डार।

विशेष—प० हीरालाल ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी।

३११३ सक्रातिफल । पत्र स० १। आ० १०×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०१। ख भण्डार।

२११४ सक्रांतिफल । पत्र सं० ११ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० ११ १ भादवा सुदी ११ । वे० सं० २११ । अ भण्डार

३११५ सक्रांतिवर्णन ''''' । पत्र सं० २ । आ० १×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११४१ । अ भण्डार

३११६ समरसार—रामवाजपेय । पत्र सं० १८ । आ० ११×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७११ । पूर्ण । वे० सं० १७१२ । ट भण्डार

विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) में प्रतिलिपि हुई । स्वर शास्त्र से लिया हुआ है ।

३११७ सवत्सरी विचार'''''' । पत्र सं० ८ । आ० ६×६½ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । म भण्डार

विशेष—सं० ११५ से सं० २ तक का वर्षफल है ।

३११८ सामुद्रिकलक्षण'''''' । पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । स्त्री पुरुषों के अंगों के शुभाशुभ लक्षण आदि दिये हैं । र० काल × । ले० काल सं० १२६४ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २८१ । अ भण्डार

३११९ सामुद्रिकविचार'''''' । पत्र सं० १४ । आ० ८½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७११ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

३१२० सामुद्रिकशास्त्र—श्रीनिधिसमुद्र । पत्र सं० ११ । आ० १२×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—अंत में हिन्दी में ११ शृङ्गार रस के दोहे हैं तथा स्त्री पुरुषों के अंगों के लक्षण दिये हैं ।

३१२१ सामुद्रिकशास्त्र ''''' । पत्र सं० ६ । आ० १××४ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय निमित्त । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७ ४ । म भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ ८ तक संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

३१२२ सामुद्रिकशास्त्र'''''' । पत्र सं० ४१ । आ० ८½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल सं० १८२७ ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ११ १ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वामी चेतनदास ने पुमानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । २ ३ ४ पत्र नहीं हैं ।

३१ ३ प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७१ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र ‥ । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

३१२५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४७ । अ भण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र । पत्र सं० १४ । आ० ८×६ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–निमित्त । र० काल × । ले० काल सं० १६०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । झ भण्डार ।

३१२७ सारणी । पत्र सं० ४ से १३४ । आ० १२×४३ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १७१६ भादवा बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) और हैं ।

३१२८ सारावली ‥ । पत्र सं० १ । आ० ११×३३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२५ । अ भण्डार ।

३१२९ सूर्यगमनविधि । पत्र सं० ५ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । केवल गणित भाग दिया है ।

३१३० सोमउत्पत्ति । पत्र सं० २ । आ० ८३×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । ले० काल सं० १८०३ । पूर्ण । वे० सं० १३८६ । अ भण्डार ।

३१३१ स्वप्नविचार । पत्र सं० १ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

३१३२ स्वप्नाध्याय । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४७ । अ भण्डार ।

३१३३ स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×७३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६५८ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८३६ । क भण्डार ।

३१३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८३७ । क भण्डार ।

३१३५ स्वप्नावलि । पत्र सं० २ । आ० १०×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–निमित्तशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३५ । क भण्डार ।

३१३६ होराज्ञान । पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इंच । भाषा–संस्कृत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ । अ भण्डार ।

३११४ सक्रांतिफल……। पत्र सं ११। आ १६½×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल स ११ १ भादवा सुदी ११। वे सं २११। ख भण्डार

३११५ सक्रांतिवर्णन……। पत्र सं २। आ ६×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६४१। ख भण्डार

३११६ समरसार—रामवाजपेय। पत्र सं १८। आ ११×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल सं १७११। पूर्ण। वे स १७१२। ट भण्डार

विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) में प्रतिलिपि हुई। स्वर शास्त्र से लिया हुआ है।

३११७ संवत्सरी विचार ……। पत्र सं ८। आ ६×६½ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २८६। ख भण्डार

विशेष—सं ११५ से सं २ तक का वर्षफल है।

३११८ सामुद्रिकलक्षण……। पत्र सं १८। आ ६×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त शास्त्र। स्त्री पुरुषों के अंगों के शुभाशुभ लक्षण आदि दिये हैं। र काल ×। ले काल सं १२६४ पौष सुदी १२। पूर्ण। वे स २८१। ख भण्डार

३११९ सामुद्रिकविचार……। पत्र सं १४। आ ८३×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–निमित्त शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १७२१ पौष सुदी ४। पूर्ण। वे सं ६८। ख भण्डार।

३१२० सामुद्रिकशास्त्र—श्रीनिधिसमुद्र। पत्र सं ११। आ १२×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११६। छ भण्डार।

विशेष—अंत में हिन्दी में ११ शृङ्गार रस के दोहे हैं तथा स्त्री पुरुषों के अंगो के लक्षण दिये हैं।

३१२१ सामुद्रिकशास्त्र ……। पत्र सं ६। आ १४×४ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय निमित्त। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७८४। ख भण्डार।

विशेष—पृष्ठ ८ तक संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

३१२२ सामुद्रिकशास्त्र……। पत्र सं ४१। आ ८½×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय निमित्त। र काल ×। ले काल सं १८२७ ज्येष्ठ सुदी १। अपूर्ण। वे सं ११ ६। ख भण्डार।

विशेष—स्वामी चेतनदास ने शुभानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। २ ३ ४ पत्र नहीं है।

३१ ३ प्रति स० २। पत्र सं २१। ले काल सं १७६ फागुण सुदी ११। अपूर्ण। वे सं १४२। ख भण्डार।

विशेष—बीच में कई पत्र नहीं है।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र ''। पत्र सं० ८। आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त। र० काल ×। ले० काल स० १८८०। पूर्ण। वे० स० ८९२। अ भण्डार।

३१२५. प्रति स० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४७। अ भण्डार।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र। पत्र स० १४। आ० ८×६ इ च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–निमित्त। र० काल ×। ले० काल स० १९०८ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० स० २७७। भ्र भण्डार।

३१२७ सारणी '। पत्र स० ४ से १३४। आ० १२×४३ इ च। भाषा–अपभ्रंश। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १७१९ भादवा बुदी ८। अपूर्ण। वे० स० ३९३। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३९४, ३९५, ३९६, ३९७) और है।

३१२८ सारावली ''। पत्र स० १। आ० ११×३३ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०२५। अ भण्डार।

३१२९ सूर्यगमनविधि। पत्र स० ५। आ० ११३×४३ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०५९। अ भण्डार।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्मचन्द्रगमन विधि दी हुई है। केवल गणित भाग दिया है।

३१३० सोमउत्पत्ति। पत्र स० २। आ० ८३×४ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १८०३। पूर्ण। वे० स० १३८६। अ भण्डार।

३१३१ स्वप्नविचार। पत्र स० १। आ० १२×५३ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८१०। पूर्ण। वे० स० ६०६। अ भण्डार।

३१३२ स्वप्नाध्याय। पत्र स० ४। आ० १०×४३ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१४७। अ भण्डार।

३१३३ स्वप्नावली—देवनन्दि। पत्र स० ३। आ० १२×७३ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्त शास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १९५८ भादवा सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ८३६। क भण्डार।

३१३४ प्रति स० २। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० ८३७। क भण्डार।

३१३५. स्वप्नावलि। पत्र स० २। आ० १०×७ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–निमित्तशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३५। क भण्डार।

३१३६ होराज्ञान। पत्र स० १३। आ० १०×५ इ च। भाषा–संस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०४५। अ भण्डार।

विषय—आयुर्वेद

२१३७ अजीर्णरसमञ्जरी ......। पत्र सं ५। आ ११३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। ले काल सं १७८८। पूर्ण। वे सं १ ५१। अ भण्डार।

२१३८. प्रति स० २। पत्र सं ७। ले काल ×। वे सं ११६। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२१३९. अजीर्णमञ्जरी—काशीराज। पत्र सं ५। आ १ ३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २८१। ख भण्डार।

२१४० अमृतसागर...... । पत्र सं ४ । आ ११३×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स० ११४ । अ भण्डार।

२१४१ अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं ११७ से १६४। आ १२३×६३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स २१। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।

२१४२ प्रति स० २। पत्र सं ५३। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १२। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है।

क भण्डार में २ प्रतियां (वे सं १ ११) अपूर्ण और हैं।

२१४३ प्रति स० ३। पत्र सं १४ से १५ । ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ ३१। ट भण्डार।

२१४४ अर्थप्रकाश—लंकानाथ। पत्र सं ४७। आ १ ३×८ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। ले काल सं १८८४ सावण सुदी ४। पूर्ण। वे सं ८८। अ भण्डार।

विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को शतक में विभक्त किया गया है।

२१४५. आत्रेयवैद्यक—आत्रेयऋषि। पत्र सं ४२। आ १ ×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। ले काल सं १८ ७ सावण सुदी १४। वे सं २१ । छ भण्डार।

२१४६ आयुर्वेदिक नुस्खों का संग्रह ......। पत्र सं १६। आ १ ×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २१ । छ भण्डार।

२१४७ प्रति स० २। पत्र सं ४। ले काल ×। वे सं ६१। ज भण्डार।

३१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१८१ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नही हैं ।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे ' । पत्र स० ४ से २० । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्वन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५०. प्रति सं० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल × । वे० स० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र मे एक ही नुस्खा है ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० २६०, २६६, २६६) और हैं ।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रंथ '....। पत्र स० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२ प्रति स० २ । पत्र स० १८ से ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३. अयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र स० २४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५५ । ञ भण्डार ।

३१५४ कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र स० ४२ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद एव मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या) । पत्र स० २१ । आ० ११½×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १७०२ । पूर्ण । वे० स० १८६७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयाया सहिताया कल्पस्थान समाप्तं ।।

३१५६. कालज्ञान । पत्र स० ३ से १६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७. प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है ।

३१५८. प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८४१ मगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख भण्डार ।

विशेष—भिण्ड ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रो की टीका भी दी हुई है ।

विषय—आयुर्वेद

३१३७ अजीर्णरसमञ्जरी……। पत्र सं १। आ ११३×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। लि काल सं १७८८। पूर्ण। वै स १ ५१। ख भण्डार।

३१३८. प्रति स० २। पत्र सं ७। ले काल ×। वे सं १३१। छ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३१३९. अजीर्णमञ्जरी—काशीराज। पत्र सं ५। आ १०३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २८९। ख भण्डार।

३१४० अमृतसागर……। पत्र सं ४। आ ११३×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे० स १३४। ख भण्डार।

३१४१ अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं ११७ से १६४। आ १२३×६३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स २१। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।

३१४२ प्रति स० २। पत्र सं ५१। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ३२। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है।

क भण्डार में २ प्रतियाँ (वे सं ३ ३१) अपूर्ण और हैं।

३१४३ प्रति स० ३। पत्र सं १४ से १५। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ ११। ट भण्डार।

३१४४ अयप्रकाश—शंकरनाथ। पत्र सं ४७। आ १ ३×८ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल सं ११८४ सावण बुदी ४। पूर्ण। वे सं ८८। ख भण्डार।

विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को शतक में विभक्त किया गया है।

३१४५. आत्रेयवैद्यक—आत्रेयऋषि। पत्र सं ४२। आ १ ×४३ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल सं १८ ७ सावण बुदी १४। वे सं २१। छ भण्डार।

३१४६ आयुर्वेदिक नुसखों का समह……। पत्र सं ११। आ १ ×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २१। छ भण्डार।

३१४७ प्रति स० २। पत्र सं ४। लि काल ×। वे सं ६१। ख भण्डार।

३१४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २१८१ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नही हैं।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे । पत्र स० ४ से २० । आ० ८X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-ायुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५०. प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल X । वे० सं० २५९ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र मे एक ही नुस्खा है ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० २६०, २६६, २९६) और हैं ।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रथ ....। पत्र स० १६ । आ० १०३/४X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२ प्रति सं० २ । पत्र स० १८ से ३० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३. अयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र स० २४ । आ० ९३/४X४३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३५५ । ञ भण्डार ।

३१५४ कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र स० ४२ । आ० १४X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या) .... । पत्र स० २१ । आ० ११३/४X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल स० १७०२ । पूर्ण । वे० स० १८९७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयाया सहिताया कल्पस्थान समाप्तं ।।

३१५६. कालज्ञान । पत्र स० ३ से १९ । आ० १०X४३/४ इच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७. प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल X । वे० सं० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है ।

३१५८. प्रति स० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १८४१ मगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख भण्डार ।

विशेष—भिरुद् ग्राम मे खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रो की टीका भी दी हुई है ।

३१५९. प्रति स० ४ | पत्र सं ७ | ले० काल × | वे० सं ११८ | छ भण्डार।

३१६० प्रति स० ५ | पत्र सं १ | ले काल × | वे सं १६७४ | ट भण्डार।

३१६१ चिकित्सांजनम्—उपाध्यायविद्यापति | पत्र सं ९ | आ० ६×८ इंच | भाषा—संस्कृत | विषय आयुर्वेद | र काल × | ले काल सं १६१५ | पूर्ण | वे० सं १६२ | क भण्डार।

३१६२. चिकित्सासार........ | पत्र स ११ | आ० ११×६½ इंच | भाषा—हिन्दी | विषय—आयुर्वेद | र काल × | ले काल × | अपूर्ण | वे० सं० १८ | क भण्डार।

३१६३ प्रति स० २ | पत्र सं ५–११ | ले काल × | अपूर्ण | वे० सं २ ७६ | ट भण्डार।

३१६४ चूर्णाधिकार........ | पत्र सं १२ | आ ११×६½ इंच | भाषा—संस्कृत | विषय—आयुर्वेद | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे सं १८१६ | ट भण्डार।

३१६५ ज्वरलक्षण........ | पत्र सं ४ | आ ११×४½ इंच | भाषा हिन्दी | विषय—आयुर्वेद | र काल × | ले० काल × | अपूर्ण | वे सं १८१२ | ट भण्डार।

३१६६ ज्वरचिकित्सा........ | पत्र सं ५ | आ १ ½×४½ इंच | भाषा—संस्कृत | विषय—आयुर्वेद | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे सं १२१७ | अ भण्डार।

३१६७ प्रति स० २ | पत्र सं ११ से ११ | ले काल × | अपूर्ण | वे सं २ १४ | ट भण्डार।

३१६८. ज्वरतिमिरभास्कर—चामुण्डराय | पत्र सं १४ | आ १ ×६½ इंच | भाषा—संस्कृत | विषय—आयुर्वेद | र काल × | ले काल सं १८ ९ माह सुदी ११ | वे सं ११ ७ | अ भण्डार।

विशेष—माधोपुर में किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३१६९ त्रिशती—शाङ्गधर | पत्र सं १२ | आ १ ३×५ इंच | भाषा—संस्कृत | विषय—आयुर्वेद | र काल × | ले काल × | वे सं ६११ | अ भण्डार।

३१७० प्रति स० २ | पत्र सं ६२ | ले काल सं १६११ | वे स २२३ | अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं ३११ है।

३१७१ नृहनसीपाराविधि........ | पत्र सं ३ | आ ११×५ इंच | भाषा हिन्दी | विषय—आयुर्वेद | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे सं ११ १ | अ भण्डार।

३१७२. नाडीपरीक्षा........ | पत्र सं ६ | आ ११×५ इंच | भाषा—संस्कृत | विषय—आयुर्वेद | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे सं २१ | छ भण्डार।

३१७३ निघंटु ·····। पत्र स० २ से ८८। पत्र सं० ११×५। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०७७। अ भण्डार।

३१७४ प्रति सं० २। पत्र सं० २१ से ८६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०८४। अ भण्डार।

३१७५ पचप्ररूपणा··· । पत्र स० ११। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स० १५५७। अपूर्ण। वे० स० २०८० ट भण्डार।

विशेष—केवल ११वा पत्र ही है। ग्रन्थ मे कुल १५८ श्लोक हैं।

प्रशस्ति—स० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८। देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्त्तमाने ब्र० आढू लिखित कर्मक्षयनिमित्तं। ब्र० जालप जोगु पठनार्थं दत्त।

३१७६. पथ्यापथ्यविचार ······। पत्र स० ३ से ४४। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६७६। ट भण्डार।

विशेष—श्लोको के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है। विषरोग पथ्यापथ्य अधिकार तक है। १६ से आगे के पत्रो मे दीमक लग गई है।

३१७७ पाराविधि·· ··। पत्र स० १। आ० ६½×४½ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २६६। ख भण्डार।

३१७८ भावप्रकाश—मानमिश्र। पत्र सं० २७५। आ० १०½×४¾ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७३। ज भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्रीमानमिश्रलटकनतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भावप्रकाश· सपूर्ण।

प्रशस्ति—सवत् १८८१ मिती बैशाख शुक्ला ६ शुक्रे लिखितमृषिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये।

३१७६. भावप्रकाश· ··। पत्र स० १६। आ० १०¾×४¾ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २०२२। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है–

इति श्री जगु पडित तनयदास पडितकृते त्रिसतिकाया रसायन या जारण समाप्त।

३१८० भावसग्रह··· । पत्र सं० १०। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विपय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०५६। ट भण्डार।

३१८१ मदनविनोद—मदनपाल। पत्र सं० १५ से १२। आ ८३×३३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल सं १७६१ ज्येष्ठ सुदी १२। अपूर्ण। वे सं १७१८। जीर्ण। अ भण्डार।

विशेष—पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है–

इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे प्रपादिवर्ग।

पत्र १८ पर— यो राज्ञां मुकुटमणि कटारमल्लस्तेन श्रीमदनृपेण निर्मितेन ग्रन्थेऽस्मिन् मदनविनोदे बटादि पंचमवर्ग।

लेखक प्रशस्ति—

ज्येष्ठ शुक्ला १२ पुरी तद्दिने सि.........धामजी विश्वमेन परोपकारार्थं। संवत् १७६१ विसेश्वर समिधौ... मदनपालविरचिते मदनविनोदे निर्घंटे प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दश॥

३१८२. मत्र व औषधि का नुस्खा.........। पत्र सं १। आ १×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २६८। अ भण्डार।

विशेष—बिच्छु काटने का मन्त्र भी है।

३१८३ माधवनिदान—माधव। पत्र स १२४। आ ६×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स २२६१। अ भण्डार।

३१८४ प्रति स० २। पत्र सं १२४। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ १। ड भण्डार।

विशेष—पं ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री पं ज्ञानमेरु विनिर्मितो बालबोधसमाप्तोऽयरार्थो मधुकोष परमार्थः।

पं पन्नालाल स्वरूपचन्द रामचन्द की पुस्तक है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतियां (वे सं० ८ ८ ११४५ ११४०) ड भण्डार में दो प्रतियां (वे सं १४१ १६५) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे सं ७४) और है।

३१८५. मानविनोद—मानसिंह। पत्र सं ६७। आ ११३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १८४। ज भण्डार।

प्रति हिन्दी टीका सहित है। ६७ से आगे पत्र नहीं है

३१८६ मुष्टिज्ञान—ज्योतिषाचार्य हरचन्द्। पत्र सं २। आ १०×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–आयुर्वेद ज्योतिष। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८११। अ भण्डार।

३१८७ योगचिन्तामणि—मनूसिंह। पत्र स० १२ से ४८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०२। ट भण्डार।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ से आगे नही हैं।

द्वितीय अधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा. रत्नराजगणि अतेवासि मनूसिंहकृते योगचिंतामणि बालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीय।

३१८८. योगचिन्तामणि ……। पत्र स० ४। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १८०३। ट भण्डार।

३१८९. योगचिन्तामणि……। पत्र स० १२ से १०५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७। अपूर्ण। वे० स० २०८३। ट भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। जयनगर मे फतेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३१९० योगचिन्तामणि ……। पत्र स० २००। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४६। अ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है।

३१९१ योगचिन्तामणिबीजक……। पत्र सं० ५। आ० ६½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३५६। व भण्डार।

३१९२ योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्त्ति। पत्र सं० १५८। आ० १०½×५½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०४। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी मे सक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है।

३१९३. प्रति सं० २। पत्र स० १२८। ले० काल ×। वे० स० २२०६। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३१९४ प्रति स० ३। पत्र स० १८१। ले० काल सं० १७८१। वे० स० १६७८। अ भण्डार।

३१९५. प्रति सं० ४। पत्र स० १५६। ले० काल सं० १८३४ आपाढ बुदी २। वे० सं० ८८। छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। सागानेर मे गोधो के चैत्यालय मे प० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी।

३१९६ प्रति स० ५। पत्र स० १२४। ले० काल सं० १७७६ वैशाख सुदी २। वे० सं० ६६। ज भण्डार।

विशेष—मालपुरा मे जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३१६७ प्रति स० ६ । पत्र सं १ १ । ले० काल सं १७६६ ज्येष्ठ बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सटीक है । प्रथम दो पत्र नहीं हैं ।

३१६८. योगशत—वररुचि । पत्र सं २१ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र काल × । ले काल सं १६१ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वे सं २ २ । ट भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद का संग्रह ग्रन्थ है तथा उसकी टीका है । चंपावती (चाटसू) में पं शिवचन्द्र ने व्यास कुमीलाल से लिखवाया था ।

३१६६. योगशतटीका········ । पत्र सं २१ । आ ११½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे सं २ ७६ । अ भण्डार ।

३२०० योगशतक········ । पत्र सं ७ । आ १ ४×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र काल × । ले काल सं १६ ६ । पूर्ण । वे सं ७२ । अ भण्डार ।

विशेष—पं विनय समुद्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१ योगशतक········ । पत्र सं ७८ । आ ११½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स १२१ । अ भण्डार ।

३२०२ रसमञ्जरी—शालिनाथ । पत्र सं २२ । आ १ ×१½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १८२१ । ट भण्डार ।

३२०३. रसमञ्जरी—शाङ्गधर । पत्र सं २६ । आ १ ×१ ईंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र काल × । ले काल सं १८४१ सावन बुदी ८ । पूर्ण । वे सं १६१ । ल भण्डार ।

विशेष—पं पन्नालाल बीकानेर निवासी ने जयपुर में चिन्तामणिजी के मन्दिर में शिष्य जयचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३ ०४ रसप्रकरण········ । पत्र सं ४ । आ १ ¾×१½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २ १६ । जीर्ण । ट भण्डार ।

३२०५ रसप्रकरण········ । पत्र सं १२ । आ ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र काल । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं १६६६ । अ भण्डार ।

३२०६ रामविनोद—रामचन्द्र । पत्र सं ११६ । आ १ ३×४½ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-आयुर्वेद । र काल सं १६२ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ११८४ । अ भण्डार ।

विशेष—शाङ्गधर कृत वैद्यसार ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद है ।

३२०७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८५१ वैशाख सुदी ११ । वे० स० १६३ । ख भण्डार ।

विशेष—जीवणलालजी के पठनार्थ भैंसलाना ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३२०८ प्रति सं० ३ । पत्र स० ८३ । ले० काल × । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

३२०९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियाँ अपूर्ण (वे० सं० १६६६, २०१८, २०६२) और हैं ।

३२१० रासायिनिकशास्त्र ` । पत्र सं० ५२ । आ० ५½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

३२११. लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र सं० २ से ८६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८४ । अ भण्डार ।

३२१२ लङ्घनपथ्यनिर्णय `` । पत्र सं० १२ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवनलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२१३ विषहरनविधि—संतोष कवि । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल स० १७४१ । ले० काल स० १८६६ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

सिस रिष वेद अर खंडले जेष्ठ सुकल रुदाम ।
चंद्रापुरी सवत् गिनो चद्रापुरी मुकाम ॥२७॥
सवत यह संतोष कृत तादिन कविता कीन ।
सशि मनि गिर विव विजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

३२१४. वैद्यकसार ` । पत्र स० ५ से ५४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । च भण्डार ।

३२१५. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र सं० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वां विलास तक है ।

३२१६. प्रति स० २ । पत्र स० २१ से ३१ । ले० काल सं० १८३८ । वे० स० १५७१ । अ भण्डार ।

३२१७ प्रति स० ३। पत्र सं ११। ले काल सं १८७२ फागुण। वे सं १७६। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे सं १८, १८१) और हैं।

३२१८ प्रति सं० ४। पत्र सं ११। लि काल ×। अपूर्ण। वे सं ६८१। क भण्डार।

३२१९ प्रति स० ५। पत्र स ३१। ले काल ×। वे सं २३। छ भण्डार।

३२२० वैद्यजीवनग्रन्थ……। पत्र सं ३ से १८। आ १ ५×४ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। लि काल ×। अपूर्ण। वे स ३३३। च भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र भी नहीं है।

३२२१ वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट। पत्र स २१। आ १ ×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११६६। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे सं २ १६, २ १७) और हैं।

३२२२ वैद्यमनोत्सव—नयनसुख। पत्र सं १२। आ ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र काल सं १६४९ आषाढ सुदी २। ले काल सं १८३३ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वे स १८७६। अ भण्डार।

३२२३ प्रति स० २। पत्र सं १६। ले काल सं १८ ६। वे सं २ ७६। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स ११६५) और है।

३२२४ प्रति स० ३। पत्र सं २ से ११। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६८। क भण्डार।

३२२५ प्रति सं० ४। पत्र सं १८। ले काल सं १८६३। वे सं १६७। छ भण्डार।

३२२६ प्रति सं० ५। पत्र सं १६। ले काल स १८६६ सावण सुदी १४। वे सं २ ४। ट भण्डार।

विशेष—पाटण में मुनिसुव्रत चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीति के शिष्य पं चम्पाराम ने स्वयं प्रतिलिपि की थी।

३२२७ वैद्यवल्लभ……। पत्र सं १६। आ १ ३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र काल ×। ले काल सं १६ १। पूर्ण। वे सं १८७६।

विशेष—सेवाराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

३२ ८ प्रति सं० २। पत्र सं ६। लि काल ×। वे सं २६७। ख भण्डार।

३२२९ वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकर्त्ता श्री हर्षकीर्त्तिसूरि। पत्र सं० १६७। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल सं० १७४६ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० स० १८२। ख भण्डार।

विशेष—भानुमती नगर मे श्रीगजकुशलगणि के शिष्य गणिसुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी। प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है।

३२३० प्रति सं० २। पत्र स० ४६। ले० काल स० १७७३ माघ। वे० सं० १४६। ज भण्डार।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है।

३२३१. वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट। पत्र सं० २०। आ० ६×८ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स० १६१६। पूर्ण। वे० सं० ३५४। ञ भण्डार।

विशेष—माणिक्यभट्ट अहमदाबाद के रहने वाले थे।

३२३२ वैद्यविनोद ....। पत्र स० १८३। आ० १०½×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०६। अ भण्डार।

३२३३. वैद्यविनोद—भट्टशकर। पत्र स० २०७। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २७२। ख भण्डार।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी सकेत भी दिये हुये हैं।

३२३४. प्रति स० २। पत्र स० ३५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३१। छ भण्डार।

३२३५. प्रति स० ३। पत्र सं० ११२। ले० काल सं० १८७७। वे० स० १७३३। ट भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति–

सवत् १७५६ वैशाख सुदी ५। वार चद्रवासरे वर्षे शाके १६२३ पातिसाहजी नौरगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फौजदार खानअब्दुल्लाखाजी के नायवरूप्लमखा स्याहीजी श्री म्याहआलमजी की तरफ मिया साहवजी अब्दुलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु कल्याणक। सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिक १२ गुरुवारलिखितं मिश्रलालजी कस्य पुत्र रामनारायणे पठनार्थं।

३२३६ प्रति सं० ४। पत्र स० २२ से ४८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०७०। ट भण्डार।

३२३७. शार्ङ्गधरसहिता—शार्ङ्गधर। पत्र सं० ५८। आ० ११×५ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १०८५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० ८०३, ११४२, १५७७) और हैं।

३२४७ सन्निपातकलिका···· । पत्र सं० ५ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । ख भण्डार ।

विशेष—यौवनपुर मे पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४८. सप्तविधि··· ·· । पत्र सं० ७ । आ० ८¾×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१७ । अ भण्डार ।

३२४९ सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण·· । पत्र सं० ४२ । आ० ९×३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ञ भण्डार ।

३२५० सारसग्रह । पत्र सं० २७ से २५७ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १७४७ कार्तिक । अपूर्ण । वे० सं० ११५९ । अ भण्डार ।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५१ सालोत्तररास · । पत्र सं० ७३ । आ० ९×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । अ भण्डार ।

३२५२ सिद्धियोग । पत्र सं० ७ से ४३ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५७ । अ भण्डार ।

३२५३. हरडैकल्प · । पत्र सं० ४ । आ० ५½×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१९ । अ भण्डार ।

विशेष—मालकागडी प्रयोग भी है । (अपूर्ण)

विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२५४ अमरचन्द्रिका……। पत्र सं ७५। आ ११×४½ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—छंद अलङ्कार। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११। ञ भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है।

३२५५. अलङ्काररत्नाकर—दलपतराय वंशीधर। पत्र सं ५१। आ ८½×५½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—अलङ्कार। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५४। क भण्डार।

३२५६ अलङ्कारवृत्ति—जिनवर्द्धन सूरि। पत्र सं २७। आ १२×८ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-रस अलङ्कार। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५४। क भण्डार।

३२५७ अलङ्कारटीका……। पत्र सं १४। आ ११×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—अलङ्कार। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६८१। ट भण्डार।

३२५८. अलङ्कारशास्त्र ……। पत्र सं ७ से ११२। आ ११½×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—अलङ्कार। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ १। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है। बीच के पत्र भी नहीं है।

३२५९ कविकर्पटी……। पत्र सं ६। आ १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—रस अलङ्कार। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १८५ । ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३२६० कुवलयानन्द……। पत्र सं २ । आ ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—अलङ्कार। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७८१। ट भण्डार।

३२६१ प्रति स० २। पत्र स ५। ले काल ×। वे सं १७८२। ट भण्डार।

३२६२ प्रति स० ३। पत्र स १ । ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २ २५। ट भण्डार।

३२६३ कुवलयानन्द—अप्पय दीक्षित। पत्र सं ९ । आ १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—अलङ्कार। र काल ×। ले काल सं १७४३। पूर्ण। वे सं १२१। ञ भण्डार।

विशेष—सं १८ ३ माह बुदी ५ को नैणसागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

३२६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८९२ । वे० स० १२६ । ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५. प्रति स० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६०४ वैशाख सुदी १० । वे० स० ३१४ । ज भण्डार ।

विशेष—प० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६ प्रति स० ४ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १८०६ । वे० स० ३०६ । ज भण्डार ।

३२६७ कुवलयानन्दकारिका । पत्र स० ६ । आ० १०×४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल स० १८१६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८८ । छ भण्डार ।

विशेष—प० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकायें हैं ।

३२६८ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ३०६ । ज भण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताव है रामनारायन मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६. चन्द्रावलोक । पत्र स० ११ । आ० ११×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६२४ । अ भण्डार ।

३२७० प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कारशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६०६ कार्त्तिक बुदी ६ । वे० स० ६१ । च भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२७१ प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६२ । च भण्डार ।

३२७२ छदानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ८ । आ० १२×४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६० । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्यावर्णनोनाम अष्टमोऽध्याय समाप्त । समाप्तोयग्रन्थ । श्री भुवनकीर्त्ति शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थ लिख्यत । मु० विनयमेरुणा ।

३२७३ छदोशतक—हर्षकीर्त्ति (चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य) । पत्र स० ७ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८१ । अ भण्डार ।

३२७४ छदकोश—रत्नशेखर सूरि । पत्र स० ३१ । आ० १०×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६५ । ङ भण्डार ।

३२७५ छन्दकोश……। पत्र सं २ से २१। आ १ ×४१ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-छंद शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १७। च भण्डार।

३२७६ नरिताढ्यछन्द…… । पत्र सं ७। आ ६×४ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-छंद शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। वे सं ४२७। अ भण्डार।

३२७७ पिंगलछन्दशास्त्र—माखनकवि। पत्र सं ४६। आ ११×४$_{२}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-छंदशास्त्र। र काल सं १८६३। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं० ६४४। अ भण्डार।

विशेष—४६ से आगे पत्र नहीं हैं।

आदिभाग— श्री गणेशायनमः अथ पिंगल। सवैया।

मंगल श्री गुरुदेव गणेश क्रिपाल गुपाल गिरा सरसानी।
अंबत कै पद पंकज पावन माखन छंद विलास बखानी॥
कोविद वृंद मृ वनि की मकरन्दन का मधु का काम निमानी।
सारद इंदु मयूष निसोतल सुन्दर सस सुधारस बानी॥१॥

दोहा— पिंगल सागर छंदमणि वरण वरण बहुरङ्ग।
रस उपमा उपमेय तैं सुंदर भरन तरंग॥२॥
तातैं रच्या विचारि कै नर बानी सहेत।
उदाहरण बहु रसन कै वरण सुमति समेत।३॥
विमल वरण भूपण कलित बानी ललित रसाल।
सदा सुकवि गोपाल कौं श्री गोपाल कृपाल॥४॥
तिन सुत माखन नाम है, उक्ति युक्ति त हीन।
एक समै गोपाल कवि सासन हरिष्यू कीन॥५॥
पिंगल नाम विचारि मन नारी बानीहि प्रकास।
यथा सुमति सौं कीजिये माखन छंद विलास॥६॥

हरिगीत— जब सुकवि श्री गोपाल को शुभ जबैं सासन है जबै।
पद युगल वंदन मुनिवे उर सुमति बानी है तबै।
मति मिन्न पिंगल सिंधु मैं मनमीन ह्वै करि संचिरयौ।
मनि काढि छंद विलास माखन कविन सौ विनती करयौ॥

दोहा— हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोषन कछु देह ।
भूल्यौ भ्रम तै हौ वहा जहा सोधि किन लेहु ।।८।।
सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।
सित वाण श्रुति दिन रच्यौ माखन छद विलास ।।६।।

पिंगल छद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छदो का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र भी नही है ।

३२७८ **पिंगलशास्त्र—नागराज** । पत्र स० १० । आ० १०×४½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२७ । व्य भण्डार ।

३२७६ **पिंगलशास्त्र**···· । पत्र स० ३ से २० । आ० १२×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–छद शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६ । अ भण्डार ।

३२८० **पिंगलशास्त्र** · । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६२ । अ भण्डार ।

३२८१ **पिंगलछदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास** । पत्र स० ७ । आ० १३×६ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–छन्द शास्त्र । र० काल स० १७६५ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० स० १८६६ । ट भण्डार ।

विशेष— सवतशर नव मुनि शशीनभ नवमी गुरु मानि ।
डिडवाना दृढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ।।

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छद रत्नावली सपूर्ण ।

३२८२ **पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ** । पत्र स० ६८ । आ० ६×४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–रस अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वें० स० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३ **प्राकृतछदकोष—रत्नशेखर** । पत्र स० ५ । आ० १३×५½ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । अ भण्डार ।

३२८४ **प्राकृतछदकोष—अल्हू** । पत्र स० १३ । आ० ८×५ इ च । भाषा–प्राकृत । विपय–छद शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६३ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५२१ । क भण्डार ।

३२८५ **प्राकृतछदकोश** · । पत्र स० ३ । आ० १०×५ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १७६२ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।

३८८६ प्राकृतपिंगलशास्त्र...... । पत्र सं० २ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । अ भण्डार ।

३८८७ भाषाभूषण—जसवंतसिंह राठौड़ । पत्र सं० ११ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

३८८८ रघुनाथ विलास—रघुनाथ । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–रसालङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम रसतरंगिणी भी है ।

३८८९ रसमंजूषा...... । पत्र सं० ६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६११ । अ भण्डार ।

३८९० रत्नमञ्जूषिका...... । पत्र सं० २७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छंदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति रत्नमञ्जूषिकायां छंदो विचितयामाष्टमोऽध्याय. ।

मङ्गलाचरण—ॐ पंचपरमेष्ठिभ्यो नमो नमः ।

३८९१ वाग्भट्टालङ्कार—वाग्भट्ट । पत्र सं० १६ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अलङ्कार । र० काल × । ले० काल सं० १५४६ कार्त्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- सं० १५४६ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे तृतीया तिथौ गुरुवासरे लिखितं श्री मूला मालपुरोठमध्ये स्वात्मार्थी पठनार्थं ।

३८९२ प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६६४ फागुण सुदी ७ । वे० सं० ६६१ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है । कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

३८९३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० १७२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है जो कि चारों ओर हासिये पर लिखी हुई है ।

इसके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६६) ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७२) में १३८) ञ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ६ २४६), ट भण्डार में एक प्रति में एक प्रति (वे० सं० १४६) और है ।

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल स० १७०० कार्त्तिक बुदी ३ । वे० स० ४५ । ञ भण्डार ।

विशेष—ऋषि हसा ने सादडी मे प्रतिलिपि कराई थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १४६) और है ।

३२६५. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र स० ४० । आ० ६३⁄४×५१⁄२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल स० १७२६ कार्त्तिक बुदी ऽऽ (दीपावली) । ले० काल स० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण वे० स० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत्सरे निधिदृगश्वशशाकयुक्ते (१७२६) दीपोत्सवाख्यदिवगे सगुरौ सचित्रे ।
लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिर प्रसादात् सद्वादिराजरचिताकविचन्द्रकेयं ॥
श्रीराजसिंहनृपतिजयसिंह एव श्रीटोडाक्षकाख्यनगरी अणहिल्य तुल्या ।
श्रीवादिराजविबुधोऽपर वाग्भटोय श्रीसूत्रवृत्तिरिह नंदतु चार्क्कचन्द्र' ॥

श्रीमद्भीमनृपात्मजस्य बलिन श्रीराजसिंहस्य मे सेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शिशूना हिला ।
हीनाधिकवचोयदत्र लिखित तद्वै बुधै क्षम्यता गार्हस्थ्यवनिनाथ सेवनाधियासक स्वष्ठतामाभूयात् ॥

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकाया पोमराजश्रेष्ठिसुतवादिराजविरचितायां कविचद्रिकाया पचम परिच्छेद: समाप्त । स० १८११ श्रावण सुदी ६ गुरवासरे लिखत महात्मौरूपनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभ भूयात् ॥

३२६६. प्रति स० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० स० २५६ । अ भण्डार ।

३२६७ प्रति स० ३ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १९६० । वे० स० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८. प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १७३१ । वे० स० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे खण्डेलवालान्वये सौगाणी गौत्र वाले सम्राट गयासुद्दीन मे सम्मानित साह महिणा साह पोमा सुत वादिराज की भार्या लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

३२६९. प्रति स० ५ । पत्र स० २० । ले० काल स० १८६२ । वे० स० ६५६ । क भण्डार ।

३३०० प्रति स० ६ । पत्र स० ५३ । ले० काल × । वे० स० ६७३ । ड भण्डार ।

३३०१ वाग्भट्टालङ्कार टीका । पत्र स० १३ । आ० १०×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलङ्कार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण (पचम परिच्छेद तक) वे० स० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३३०२ वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार। पत्र सं० ११। आ० १ x४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल x। ले० काल x। पूर्ण। वे० सं० १८५२। अ भण्डार।

३३०३ प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १९८४। वे० सं० ९८४। क भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ९२) ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७५) व भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १७७ १९) और हैं।

३३०४ वृत्तरत्नाकर—कालिदास। पत्र सं० ९। आ० १ x५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल x। ले० काल x। पूर्ण। वे० सं० २७९। ख भण्डार।

३३०५ वृत्तरत्नाकर......। पत्र सं० ७। आ० १२x५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल x। ले० काल x। पूर्ण। वे० सं० २८५। ख भण्डार।

३३०६ वृत्तरत्नाकरटीका—सुल्हण कवि। पत्र सं० ४। आ० ११x६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल x। ले० काल x। पूर्ण। वे० सं० ९९८। क भण्डार।

विशेष—सुकवि हृदय नामक टीका है।

३३०७ वृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयसुन्दरगणि। पत्र सं० १। आ० १०x५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल x। ले० काल x। पूर्ण। वे० सं० २२१९। अ भण्डार।

३३०८ श्रुतबोध—कालिदास। पत्र सं० ६। आ० ८x४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल x। ले० काल x। पूर्ण। वे० सं० ११९१। अ भण्डार।

विशेष—अष्टगण विचार तक है।

३३०९ प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८४६ फागुण सुदी ६। वे० सं० ९२। ख भण्डार।

विशेष—पं० शम्भुराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३३१० प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल x। वे० सं० १२६। ख भण्डार।

विशेष—जीवराज कृत टिप्पण सहित है।

३३११ प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८२१ श्रावण सुदी ६। वे० सं० ७२१। ङ भण्डार।

३३१२ प्रति सं० ५। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८ ४ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० ७२०। भण्डार।

विशेष—पं० रामचंद ने किसनी नगर में प्रतिलिपि की थी।

३३१३ प्रति सं० ६ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १७८१ चैत्र सुदी १ । वे० स० १७८ । व्य भण्डार ।

विशेष—प० सुखानन्द के शिष्य नैनसुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३१४ प्रति स० ७ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स १८११ । ट भण्डार ।

विशेष—आचार्य विमलकीर्त्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ६४८, ९०७, ११६१) क, ड, च और ज भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) व्य भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १५६, १८७) और हैं ।

३३१५ श्रुतबोध—वररुचि । पत्र स० ४ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८५९ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६ श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८९१ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ६४७ । क भण्डार ।

३३१७ श्रुतबोधटीका ··· । पत्र स० ३ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६४५ । अ भण्डार ।

३३१८ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०३ । क भण्डार ।

३३१९ श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १७१६ कार्त्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १९१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिसुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२० प्रति स० २ । पत्र सं० २ से १९ । ले० काल सं० १९०१ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० २३३ । छ भण्डार ।

३३०२. वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार। पत्र सं० ११। आ० १०×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल ×। लि० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८९२। अ भण्डार।

३३०३. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १६८४। वे० सं० १८४। ङ भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६५) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७१) ज भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १७७, १९) और हैं।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—कालिदास। पत्र सं० ९। आ० ६×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंद शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७९। ज भण्डार।

३३०५. वृत्तरत्नाकर……। पत्र सं० ७। आ० १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८१। ञ भण्डार।

३३०६. वृत्तरत्नाकरटीका—सुल्हण कवि। पत्र सं० ४०। आ० ११×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९६८। ङ भण्डार।

विशेष—सुकवि हृदय नामक टीका है।

३३०७. वृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयसुन्दरगणि। पत्र सं० १। आ० १०×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१९। अ भण्डार।

३३०८. श्रुतबोध—कालिदास। पत्र सं० ६। आ० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–छंदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२६१। अ भण्डार।

विशेष—अष्टगण विचार तक है।

३३०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८४६ फागुण सुदी ८। वे० सं० ९२। ख भण्डार।

विशेष—पं० रामूराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

३३१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—श्रीवराज कृत टिप्पण सहित है।

३३११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८१५ श्रावण सुदी ८। वे० सं० ७२५। अ भण्डार।

३३१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८ ४ ज्येष्ठ सुदी ५। वे० सं० ७२०। भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने किशनगढ़ नगर में प्रतिलिपि की थी।

३३३० ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या। पत्र सं० ४१। आ० १२×८ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल स० १९१७ वैशाख बुदी ६। ले० काल स० १९१७ पौष ११। पूर्ण। वे० स० २१९। ङ भण्डार।

३३३१. प्रति सं० २। पत्र स० ७३। ले० काल स० १९३९। वे० सं० ५६३। च भण्डार।

३३३२ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४८ से ११५। ले० काल सं० १९३९। अपूर्ण। वे० स० ३४४। झ भण्डार।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द। पत्र स० ४१। आ० १३×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १९३४। पूर्ण। वे० सं० ५६२। च भण्डार।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास। पत्र सं० ४०। आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १८७७ भादवा बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २२०। ङ भण्डार।

३३३५ ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—बख्तावरलाल। पत्र सं० ८७। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल स० १८५४ ज्येष्ठ सुदी २। ले० काल सं० १९२८ वैशाख बुदी ८। वे० स० ५६४। पूर्ण। च भण्डार।

विशेष—जौंहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी।

३३३६ धर्मदशावतारनाटक······। पत्र सं० ६६। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–नाटक। र० काल स० १९३३। ले० काल ×। वे० स० ११०। ज भण्डार।

विशेष—प० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है।

३३३७. नलदमयती नाटक । पत्र सं० ३ से २४। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय-नाटक। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९८। ट भण्डार।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—वैजल भूपति। पत्र स० २९। आ० ६×४¾ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल स० १९०७ भादवा बुदी ४। पूर्ण। वे० स० ८१४। अ भण्डार।

३३३९. प्रति सं० २। पत्र स० १३। ले० काल ×। वे० सं० २१९। झ भण्डार।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह। पत्र स० ४४। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। छ भण्डार।

३३४१ मदनपराजय—जिनदेवसूरि। पत्र सं० ३६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८८५। अ भण्डार।

विषय—संगीत एवं नाटक

३३२१. मक्खनदूतनाटक—श्री मक्खनलाल। पत्र सं० २१। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १। क भण्डार।

३३२२. प्रति सं० २। पत्र सं० २४। लि० काल सं० १९९१ कार्तिक सुदी ६। वे० सं० १०२। ङ भण्डार।

३३२३. अभिज्ञान शाकुन्तल—कालिदास। पत्र सं० ७। आ० १ ३/४×४ १/२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११७। ञ भण्डार।

३३२४. कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर। पत्र सं० १२। आ० १२ १/२×४ १/२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८११। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। मुनि ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ के दोनों ओर ८ पत्र तक संस्कृत में व्याख्या दी हुई है।

३३२५. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि। पत्र सं० ६१। आ० १ २×४ १/२ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—नाटक। र० काल सं० १६४८ माघ सुदी ८। ले० काल सं० १६६८। पूर्ण। वे० सं० १८। अ भण्डार।

विशेष—आमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

३३२६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६१। ले० काल सं० १८८७ माह सुदी ५। वे० सं० २११। क भण्डार।

३३२७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३७। ले० काल सं० १८६४ आसोज सुदी ६। वे० सं० २१२। क भण्डार।

विशेष—कृष्णगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी तथा इसे सभी अमरचन्द दीवान के मन्दिर में विराजमान की।

३३२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी ५। वे० सं० २१। क भण्डार।

३३२९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४१। ले० काल सं० १७६ । वे० सं० ११४। घ भण्डार।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य श्री ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि करके पं० दासराम को भेंट स्वरूप दी थी। इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १२७, ११७) और हैं।

३३३०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या। पत्र सं० ४१। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल सं० १६१७ वैशाख बुदी ६। ले० काल सं० १६१७ पौष ११। पूर्ण। वे० सं० २१६। ङ भण्डार।

३३३१. प्रति सं० २। पत्र सं० ७३। ले० काल सं० १६३६। वे० सं० ५६३। च भण्डार।

३३३२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४८ से ११५। ले० काल सं० १६३६। अपूर्ण। वे० सं० ३४४। झ भण्डार।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द। पत्र सं० ४१। आ० १३×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १६३४। पूर्ण। वे० सं० ५६२। च भण्डार।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास। पत्र सं० ४०। आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १८७७ भादवा बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २२०। ङ भण्डार।

३३३५. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—बख्तावरलाल। पत्र सं० ८७। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी २। ले० काल सं० १६२८ वैशाख बुदी ८। वे० सं० ५६४। पूर्ण। च भण्डार।

विशेष—जौहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी।

३३३६. धर्मदशावतारनाटक……। पत्र सं० ६६। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-नाटक। र० काल सं० १६३३। ले० काल ×। वे० सं० ११०। ज भण्डार।

विशेष—पं० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है।

३३३७. नलदमयती नाटक……। पत्र सं० ३ से २४। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-नाटक। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६८। ट भण्डार।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—वैजल भूपति। पत्र सं० २६। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल सं० १६०७ भादवा बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८१४। अ भण्डार।

३३३९. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० २१६। झ भण्डार।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह। पत्र सं० ४४। आ० १३×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। छ भण्डार।

३३४१. मदनपराजय—जिनदेवसूरि। पत्र सं० ३६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८५। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० २ से ७ २७ २८ नहीं हैं तथा ३१ से आगे के पत्र भी नहीं हैं।

३३४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८२१। वे० सं० ५९७। क भण्डार।

३३४३ प्रति सं० ३। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। वे० सं० ५७८। क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र नवीन लिखे गये हैं।

३३४४ प्रति सं० ४। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। वे० सं० १ । छ भण्डार।

३३४५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १९१९। वे० सं० ५४। म भण्डार।

३३४६ प्रति सं० ६। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८१६ माह सुदी ९। वे० सं० ४८। ञ भण्डार।

विशेष—सवाई जयनगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० चोखचन्द के सेवक पं० रामचन्द ने सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३३४७ प्रति सं० ७। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० २ १।

विशेष—अग्रवाल ज्ञातीय मित्तल गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई थी।

३३४८ मदनपराजय......। पत्र सं० १ से २५। आ० १ ×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय नाटक। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। ख भण्डार।

३३४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९९५। ख भण्डार।

३३५० मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द। पत्र सं० १२। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नाटक। र० काल सं० १९१८ मंगसिर सुदी ७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७१। क भण्डार।

३३५१ रागमाला......। पत्र सं० ६। आ० ८½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सङ्गीत। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३७१। ख भण्डार।

३३५२. राग रागनियों के नाम......। पत्र सं० ८। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सङ्गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १ ७। म भण्डार।

विषय-लोक-विज्ञान

३३५३ अढाईद्वीप वर्णन ······। पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–लोक विज्ञान–जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्करार्द्ध द्वीप का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल स० १८१५ । पूर्ण । वे० स० ३ । ख भण्डार ।

३३५४ ग्रहोंकी ऊचाई एवं आयुवर्णन'' ·····। पत्र स० १ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–नक्षत्रो का वर्णन है । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११० । अ भण्डार ।

३३५५ चद्रप्रज्ञप्ति ·· ·। पत्र स० ६२ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है । र० काल × । ले० काल स० १६६४ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १६७३ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका–

इति श्री चन्द्रपण्णत्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) सपूर्णा । लिखत परिष करमचद ।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ६० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन । र० काल × । ले० काल सं० १८६६ फाल्गुन सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १०० । च भण्डार ।

विशेष—मधुपुरी नगरी मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

३३५७ तीनलोककथन ·। पत्र स० ९६ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–लोक विज्ञान–तीनलोक वर्णन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५० । झ भण्डार ।

३३५८ तीनलोकवर्णन'' ·। पत्र स० १५४ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–लोक विज्ञान–तीन लोक का वर्णन है । र० काल × । ले० काल स० १८६१ सावण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १० । ज भण्डार ।

विशेष—गोपाल व्यास उग्नियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ मे नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है । प्रारम्भ मे लिखा है— ढूढार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य प० सदासुख के शिष्य श्री प० फतेहलाल की यह पुस्तक है । भादवा सुदी १० स० १९११ ।

३३५९. तीनलोकचार्ट ····। पत्र सं० १ । आ० ५×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय- लोकविज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २ से ७ २७ २८ नहीं हैं तथा ३६ से आगे के पत्र भी नहीं हैं।

३३४२. प्रति सं० २ । पत्र सं ४१ । ले काल सं० १८२६ । वे सं० २६७ । क भण्डार।

३३४३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ४१ । ले काल × । वे सं २७८ । क भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नवीन लिखे गये हैं।

३३४४ प्रति सं० ४ । पत्र सं ४६ । ले काल × । वे सं १ । छ भण्डार।

३३४५. प्रति सं० ५ । पत्र सं ४८ । ले काल सं १९१६ । वे सं ६४ । म भण्डार।

३३४६ प्रति सं० ६ । पत्र सं ३१ । ले० काल सं १८३६ माह सुदी ६ । वे सं ४८ । म भण्डार।

विशेष—सवाई जयनगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं चोखचन्द के सेवक प रामचन्द्र न सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३३४७ प्रति सं० ७ । पत्र सं ४ । ले काल × । वे सं २ १ ।

विशेष—पापड़ीवाल ज्ञातीय मित्तल गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई थी।

३३४८ मदनपराजय……। पत्र सं १ से २१ । आ १ ×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय नाटक । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स १६६२ । ज भण्डार।

३३४९ प्रति सं० २ । पत्र सं ७ । ले काल × । अपूर्ण । वे स १६६२ । ज भण्डार।

३३५० मदनपराजय—प० स्वरूपचन्द । पत्र सं ६२ । आ ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय–नाटक । र काल सं १६१८ मंगसिर सुदी ७ । ले काल × । पूर्ण । वे स ५७६ । क भण्डार।

३३५१ रागमाला……। पत्र सं ६ । आ ८½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–संगीत । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६७६ । अ भण्डार।

३३५२ राग रागनियों के नाम……। पत्र सं ८ । आ ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संगीत । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ ७ । म भण्डार।

विषय-लोक-विज्ञान

३३५३ अढाईद्वीप वर्णन ····। पत्र सं० १०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्करार्द्ध द्वीप का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल स० १८१५। पूर्ण। वे० स० ३। ख भण्डार।

३३५४ ग्रहोंकी ऊंचाई एवं आयुवर्णन ·····। पत्र स० १। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-नक्षत्रों का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २११०। अ भण्डार।

३३५५ चन्द्रप्रज्ञप्ति ···। पत्र स० ६२। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है। र० काल ×। ले० काल स० १६६४ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० स० १६७३।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चन्द्रपण्णत्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) सपूर्णा। लिखत परिव करमचद।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स० ९०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन। र० काल ×। ले० काल सं० १८९६ फाल्गुन सुदी २। पूर्ण। वे० स० १००। च भण्डार।

विशेष—मधुपुरी नगरी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

३३५७ तीनलोककथन ।पत्र स० ९६। आ० १०½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३५०। म्ह भण्डार।

३३५८ तीनलोकवर्णन ·····। पत्र स० १५४। आ० ९½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है। र० काल ×। ले० काल स० १८६१ सावण सुदी २। पूर्ण। वे० स० १०। ज भण्डार।

विशेष—गोपाल व्यास उग्रियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ मे नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है। प्रारम्भ मे लिखा है— ढूंढार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य प० सदासुख के शिष्य श्री प० फतेहलाल की यह पुस्तक है। भादवा सुदी १० स० १९११।

३३५९. तीनलोकचार्ट ·····। पत्र सं० १। आ० ५×९½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३५। छ भण्डार।

विशेष—त्रिलोकसार के आधार पर बनाया गया है। तीनलोक की जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है।

३३६० त्रिलोकचित्र........। आ २×१ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–लोकविज्ञान। र० काल ×। ले काल सं १५७५। पूर्ण। वे सं ३३६। ख भण्डार।

विशेष—कपड़े पर तीनलोक का चित्र है।

३३६१ त्रिलोकदीपक—वामदेव। पत्र सं ७२। आ ११×७½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–लोकविज्ञान। र काल ×। ले० काल सं १८५२ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वे स ५। ख भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सचित्र है। जम्बूद्वीप तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर बेल बूटे भी हैं।

३३६२. त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं ८१। आ ११×५ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–लोकविज्ञान। र काल ×। ले काल सं १८११ मंगसिर बुदी ११। पूर्ण। वे सं ४६। ख भण्डार।

विशेष—पहिले पत्र पर ६ चित्र हैं। पहिले नेमिनाथ की मूर्त्ति का चित्र है जिसके बांई ओर बलभद्र तथा दांई ओर श्रीकृष्ण हाथ जोड़े खड़े हैं। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे लकड़ी के सिंहासन पर बैठे हैं सामने लकड़ी के स्टैंड पर ग्रन्थ है आगे पिच्छी और कमण्डलु है। उनके आगे दो चित्र और हैं जिसमें एक चामुण्डराय का तथा दूसरा और किसी श्रोता का चित्र है। दोनों हाथ जोड़े गादी माले बैठे हैं। चित्र बहुत सुन्दर हैं। इसके अतिरिक्त और भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र हैं।

३६३ प्रति स० २। पत्र सं ४५। ले काल सं १८६१ प्र वैशाख सुदी ११। वे सं २८८। क भण्डार।

३३६४ प्रति सं० ३। पत्र सं ६२। ले काल सं १८२६ श्रावण सुदी ५। वे सं २८१। क भण्डार।

३३६५. प्रति स० ४। पत्र स ७२। ले काल ×। वे स २८६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६ प्रति स० ५। पत्र सं ६८। ले काल ×। वे सं २६ । क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। कई पृष्ठों पर हाशिया में सुन्दर चित्राम हैं।

३३६७ प्रति स० ६। पत्र सं ९६। ले काल सं १७११ माह सुदी ५। वे सं २९१। क भण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में बसवा में रामचन्द कासा ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३६८. प्रति सं० ७। पत्र सं ९९। ले काल सं १५५१। वे सं १६४४। ट भण्डार।

विशेष—चालचाल एवं ऋषिमंडल पूजा भी है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २६२, २६३,) च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १४७, १४८) तथा ज भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ४) और है।

३३६९ **त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन** । पत्र सं० ३२ से २२८ । आ० ११×४३ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल सं० १७१३ चैत सुदी ५ । ले० काल स० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नही हैं ।

३३७०. **प्रति सं० २** । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४ । वे० स० १८२ । झ भण्डार ।

विशेष—साह लोहट ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१. **त्रिलोकसारभाषा—प० टोडरमल** । पत्र सं० २८६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल सं० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७६ । अ भण्डार ।

३३७२ **प्रति सं० २** । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७३ । अ भण्डार ।

३३७३ **प्रति सं० ३** । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८८४ । वे० सं० ४३ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौंसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

३३७४ **प्रति सं० ४** । पत्र सं० १२५ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । घ भण्डार ।

३३७५. **प्रति स० ५** । पत्र स० ३६४ । ले० काल स० १९६६ । वे० सं० २८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी अजमेर वालो ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७६. **त्रिलोकसारभाषा** । पत्र स० ४५२ । आ० १२३×८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १९४७ । पूर्ण । वे० सं० २९२ । क भण्डार ।

३३७७. **त्रिलोकसारभाषा**…… । पत्र स० १०८ । आ० ११३×७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९१ । क भण्डार ।

विशेष—भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है ।

३३७८ **त्रिलोकसारभाषा**…… । पत्र सं० १५० । आ० १२×६ इंच । भापा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८३ । च भण्डार ।

३३७९ **त्रिलोकसारभाषा (वचनिका)**…… । पत्र सं० ३१० । आ० १०३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १८९५ । वे० स० ८५ । झ भण्डार ।

३३८० त्रिलोकसारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र सं २४ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र काल × । लि काल सं १६४२ । पूर्ण । वे सं २८२ । क भण्डार ।

३३८१ प्रति सं० २ । पत्र स १४२ । ले काल × । वे सं ९९ । छ भण्डार ।

३३८२ त्रिलोकसारवृत्ति······। पत्र सं० १ । आ १ ×११½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ८ । ज भण्डार ।

३३८३ त्रिलोकसारवृत्ति······। पत्र स १७ । आ १२¾×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ७ । ख भण्डार ।

३३८४ त्रिलोकसारवृत्ति······। पत्र स २५ । आ १ ×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं २ ११ । ट भण्डार ।

३३८५. त्रिलोकसारवृत्ति······। पत्र स ११ । आ ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३३८६ त्रिलोकसारसदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं ९१ । आ ११¾×८ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २८४ । क भण्डार ।

३३८७ त्रिलोकस्वरूपव्याख्या—सदासुख गंगवाल । पत्र सं ५ । आ ११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र काल सं १६४४ । ले काल सं १६ ४ । पूर्ण । वे सं ९ । ख भण्डार ।

विशेष—मु पन्नालाल मोतीलाल एवं विमललालजी की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना हुई थी ।

३३८८. त्रिलोकवर्णन······। पत्र सं ३६ । आ १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोकविज्ञान र० काल × । ले काल सं १८१ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वे सं ७७ । ख भण्डार ।

विशेष—पाठमें नहीं है केवल वर्णनमात्र है । लोक के चित्र भी है । जम्बूद्वीप वर्णन तक पूर्ण है भगवानदास के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३३८९ त्रिलोकवर्णन······। पत्र सं १५ से ३७ । आ १ ३⁄४×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र काल × । लि काल × अपूर्ण । वे सं ७९ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । १ से १४ १८ २१ २३ से २६ २८ से ३४ तक पत्र नहीं है । पत्र सं १५ १६ तथा ३७ पर चित्र नहीं है । इसके अतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और है जिनमें से एक मे नरक का दूसरे में मधु, मृगचक्र कुम्भकार और तीसरे मे भौंरा, मक्खी मनुष्याकार के चित्र हैं । चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

३३६०. त्रिलोकवर्णन · । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल X । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला से स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलो का सचित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४३ इंच चौडे पत्र पर दिये है । कही कही पीछे कपडा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १X१ फुट है । चित्र सभी बिन्दुओ से बने हैं । नरक वर्णन नही है ।

३३६१ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ५२७ । व्य भण्डार ।

३३६२ त्रिलोकवर्णन ·· । पत्र स० ५ । आ० १७X११२ इंच । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १२X५२ इंच । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २८६ । ङ भण्डार ।

३३६४ प्रति स० २ । पत्र स० ५४ । ले० काल X । वे० स० २८७ । ङ भण्डार ।

३३६५ भूगोलनिर्माण ····। पत्र स० ३ । आ० १०X४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल सं० १५७१ । पूर्ण । वे० स० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प० हर्षागम गणि वाचनार्थं लिखितं फोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमे सतयुग, द्वापर एव त्रेता मे होने वाले अवतारो का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६ सघपणटपत्र··· ····। पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६३X४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे टब्बा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ से आगे पत्र नही हैं ।

३३६७ सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र स० ६४ । आ० १३X५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३११ । व्य भण्डार ।

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहे,
भरम मैं भूलि रहै कुल रूढ कीजीयै ।
कुल रूढ छोरि कै भरम फंद तोरि कै,
सुमति गति फोरि कै सुज्ञान दृष्टि दीजीयै ।।
दया रूप सोइ धर्म धर्म तैं कटै है मर्म,
भेद जिन धरम पीयूप रस पीजीयै ।
करि कै परीक्ष्या जिनहरप धरम कीजीयैं,
कसि कैं कसोटी जैसे कचरण क लीजीयैं ।।३५।।

अथ ग्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

भई उपदेस की छतोसी परिपूर्ण चतुर नर
है जे याको मध्य रस पीजीयैं ।
मेरी है अलपमति तो भी मैं कीए कवित,
कविताह सौ हो जिन ग्रन्थ मान लीजीयै ।।
सरस है है वखाण जौऊ अवसर जाण,
दोइ तीन याकै भैया सवैया कहीजीयौ ।
कहै जिनहरष सवत्त गुण सिसि भक्ष कीनी,
जु सुण कै सावास मोकु दीजीयौ ।।३६।।

इति श्री उपदेश छतीसी सपूर्ण ।

सवत् १८३९

गवडि पुछेरे गवडि आ, कवण भले रौ देश ।
सपत हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ।।
सूरवलि तो सूहामणी, कर मोहि गंग प्रवाह ।
माडल तणे प्रगणे पाणी अथग अथाह ।।२।।

३४०१ उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र सं० १४ । आ० १२३/४×७३/४ इच । भाषा–हिन्दी । विपय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । च भण्डार ।

३४०२. कपूरप्रकरण........। पत्र स० २४ । आ० १०×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८९३ ।

विशेष—१७६ पद्य हैं। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री वज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि
सार प्रबन्धस्फुट सद्गुणस्य।
शिष्येण चक्रे हरिणेय मिष्टा
सूक्तावली नेमिचरित्र कर्त्ता ॥१७६॥

इति श्री रामित सुभाषित कोश समाप्ता ॥

३४०२ प्रति स० २। पत्र सं २। ले काल सं १६४७ ज्येष्ठ सुदी ५। वे सं ११। क भण्डार।

३४०४ प्रति स० ३। पत्र सं १२। ले० काल स १७७१ श्रावण ४। वे सं २७१। ज भण्डार।

विशेष—मूधरदास ने प्रतिलिपि की थी।

३४०५. कामन्दकीय नीतिसार भाषा……। पत्र सं २ से १७। आ १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-नीति। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २८। ख भण्डार।

३४०६ प्रति स० २। पत्र सं १ से ८। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ८८। ख भण्डार।

३४०७ प्रति स० ३। पत्र स १ से १८। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६८। ख भण्डार।

३४०८ चाणक्यनीति—चाणक्य। पत्र सं ११। आ १×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-नीतिशास्त्र। र काल ×। ले काल सं १८६६ मंगसिर सुदी १४। पूर्ण। वे सं ८११। क भण्डार।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे सं ६१ ६६१ ११ १६५४ १६५५) और हैं।

३४०६. प्रति स० २। पत्र स १। ले काल स १८४६ पौष सुदी ६। वे सं ७। ग भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे सं ७१) और है।

३४१० प्रति स० ३। पत्र सं १४। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १७५। ङ भण्डार।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे सं १७ १५७) और हैं।

३४११ प्रति सं० ४। पत्र सं ६ से ११। ले काल सं १८८५ मंगसिर सुदी ५। अपूर्ण। वे सं ६१। च भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे सं ६४) और है।

३४१२. प्रति सं० ५। पत्र सं ११। ले काल सं १८७४ ज्येष्ठ सुदी ११। वे स २४६। छ भण्डार।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १३८, २४८, २५०) और हैं।

३४१३. चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता-चाणक्य। सग्रहकर्त्ता-मथुरेश भट्टाचार्य। पत्र स० ७। आ० १०×४३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-नीतिशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८१०। अ भण्डार।

३४१४ चाणक्यनीतिभाषा ''। पत्र सं० २०। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नीति शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१६। ट भण्डार।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है। ७वें अध्याय के २ पद्य हैं। दोहा और कुण्डलियो का अधिक प्रयोग हुआ है।

३४१५ छदशतक—वृन्दावनदास। पत्र स० २६। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल स० १८९८ माघ सुदी २। ले० काल सं० १९४० मगसिर सुदी ६। पूर्ण। वे० स० १७८। क भण्डार।

३४१६ प्रति स० २। पत्र स० १२। ले० काल सं० १९३७ फागुण सुदी ९। वे० स० १८१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० १७९, १८०) और हैं।

३४१७ जैनशतक—भूधरदास। पत्र स० १७। आ० ९×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल स० १७८१ पौष सुदी १२। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १००५। अ भण्डार।

३४१८ प्रति स० २। पत्र स० ११। ले० काल स० १९७७ फागुन सुदी ५। वे० स० २१८। क भण्डार।

३४१९. प्रति स० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० स० २१७। ङ भण्डार।

विशेष—प्रति नीले कागजो पर है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१६) और है।

३४२०. प्रति स० ४। पत्र स० २२। ले० काल ×। वे० स० ५६०। च भण्डार।

३४२१. प्रति स० ५। पत्र स० २२। ले० काल स० १८८९। वे० सं० १५८। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २८४) और है जिसमे कर्म छत्तीसी पाठ भी है।

३४२२ प्रति स० ६। पत्र स० २३। ले० काल स० १८८१। वे० सं० १९४०। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६५१) और है।

३४२३ ढालगण ....। पत्र स० ८। आ० १२×७३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३५। क भण्डार।

३४२४ सत्त्वधर्मामृत……। पत्र स० ३१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १६१६ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ४६। ख भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति–

संवत् १६१६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशम्यांतिथौ बुधवासरे चित्रानक्षत्रे परिघयोगे मध्या दिवसे। श्रादीश्वर चैत्यालये। चंपावतिनामनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टा० पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्म्म (चं) द्र देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवास्तत्पट्ट मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भसावड्या गोत्र साह हरराज भार्या पुत्र द्विय प्रथम समतु द्वितिक पुत्र मेघराज। साह समतु भार्या समतादे तत्र पुत्र लखिमी दास। साह मेघराज तस्य भार्या द्विय प्रथम भार्या लाडमदे द्वितीक…… ……। अपूर्ण।

३४२५ प्रति स० २। पत्र सं० १। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१४२। ट भण्डार।

विशेष—१ से आगे पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ—   सुद्धारमकल्पमापन्नं प्रणिपत्यं पुरो गुरुं।
                   तत्त्वधर्म्मामृतं नाम वक्ष्ये संक्षेपतः ॥
                   धर्मे श्रुते पापमुपैति नाशं धर्मे श्रुते पुण्य मुपैति वृद्धि ।
                   स्वर्गापवर्ग प्रवरोरु सौख्यं धर्मे श्रुते रैव न चास्यतास्ति ॥२॥

३४२६ दशबोल ……। पत्र सं० २। आ० १ ×६३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६४०। ट भण्डार।

३४२७ दृष्टांतशतक……। पत्र सं० १७। आ० ८३×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३१। ब भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ दिया है। पत्र १२ से आगे ६१ फुटकर श्लोकों का संग्रह और है।

३४२८ द्यानतविलास—द्यानतराय। पत्र सं० २ से ११। आ० ९×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४४। क भण्डार।

३४२९. धर्मविलास—द्यानतराय। पत्र सं० २३४। आ० ११३×७३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १६२८ फागुण सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १४२। क भण्डार।

३४३० प्रति स० २/पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १८८१ आसोज सुदी २। वे० सं० ४५। ग भण्डार।

विशेष—चैतरामजी साह के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैत्यालय (चौधरियों का मन्दिर) के लिए चिम्मनलाल तेरापंथी से बौंसा में प्रतिलिपि करवायी थी।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र स० २६१ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३४०) और है ।

३४३२ प्रति सं० ४ । पत्र स० १६४ । ले० काल × । वे० सं० ५१ । झ भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८८४ । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त)...... । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५. प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० १७८ । च भण्डार ।

३४३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १६३४ । वे० स० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—पचरत्न और है । श्री विरधीचद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७. नीतिसार ... ...। पत्र स० ६ । आ० १०½×५ इच । भाषा–सम्कृत । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८ नीतिसार—इन्द्रनन्दि । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–नीति शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १६३७ भादवा बुदी ४ । वे० स० ३८६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ३८६, ४००) और हैं ।

३४४०. प्रति स० ३ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल स० १८२२ भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० ३८१ । ङ भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० स० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १७६ । व्य भण्डार ।

विशेष—झलायनगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे गोर्द्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३. नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । ङ भण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । व्य भण्डार ।

३४४५ नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि। पत्र सं १५। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–नीतिशास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८४। क भण्डार।

३४४६ नीतिविनोद·······। पत्र सं ४। आ ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–नीतिशास्त्र। र काल ×। ल काल स १६१८। वे सं ३१५। ग भण्डार।

विशेष—मन्नालाल पांड्या ने संग्रह करवाया था।

३४४७ नीतिसूक्त। पत्र सं ११। आ ६¾×४¾ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २२८। ख भण्डार।

३४४८ नौशेरवां बादशाह की दस ताज। पत्र सं ५। आ० ४½×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–उपदेश। र काल ×। ले काल सं १६४६ बैशाख सुदी १४। पूर्ण। वे सं ४। म्ह भण्डार।

विशेष—गणेशलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

३४४९ पञ्चतन्त्र—पं० विष्णु शर्मा। पत्र सं १६४। आ १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ८१८। क भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ६३७) और है।

३४५० प्रति सं० २। पत्र सं ८६। ले काल ×। वे स १ १। ग भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३४५१ प्रति स० ३। पत्र सं १४ से ११८। ले काल सं १८३२ चैत्र सुदी २। अपूर्ण। वे सं १६४। च भण्डार।

विशेष—पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा संशोधित पुरोहित भागीरथ पल्लीवाल ब्राह्मण ने सवाई जयनगर (जयपुर) में पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी। इस प्रति का जीर्णोद्धार सं १८५५ फागुण सुदी १ में हुआ था।

३४५२ प्रति स० ४। पत्र सं २८७। ले काल सं १८८७ पौष सुदी ४। वे स० ६११। च भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है। प्रारम्भ में संघही दीवाण अमरचंदजी के आग्रह से नयनसुख व्यास के शिष्य माणिक्यचन्द्र ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी।

३४५३ पञ्चतन्त्रभाषा·······। पत्र सं २२ से १४१। आ ६×७½ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–नीति। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १२७८। ट भण्डार।

विशेष—विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है।

३४५४ पांचबोल·······। पत्र सं ६। आ १ ×४ इंच। भाषा–गुजराती। विषय–उपदेश। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६६१। ट भण्डार।

३४५५ पैंसठबोल । पत्र स० १ आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–उपदेश। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७६। अ भण्डार।

विशेष—अथ बोल ६५

[१] अरथ लोभी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मन्त्री [४] पुत्र सुत्रा अरना लोभा [५] नीचा पेपा भाई वधव [६] असतोष प्रजा [७] विद्यावत दलद्री [८] पाखण्डी शास्त्र बाच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगअही [११] वेद रोगी होसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घणु करसी दुष्ट वलवंत सुत्र सो [१६] जोबनवंतजरा [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्रा जीव घणा [१९] अगहीण मनुख होसी [२०] अलप मेघ [२१] उस्ल सात वीली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] सथा ··[२५] · [२६] · [२७]··· ······ [२८] [२९] अणकीधा न कीधो कहसी [३०] आपको कीधो दोष पैला का लगावसी [३१] असुद्ध साप भणसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेप धारावैरागी होसी [३४] अहकार द्वेष मुरख घणा [३५] मुरजादा लोप गऊ ब्राह्मण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नही [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निंद्या घणी करेसी [४०] कुलवता नार लहोसी [४१] वेसा भंगतण लज्या करसी [४२] अफल वर्षा होसी [४३] वाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवत होसी [४७] मुहमाग्या मेघ नही होसी [४८] धरतो मे मेह थोडो होसी [४९] मनख्या में नेह थोडो होसी [५०] बिना देख्या चुगली करसी [५१] जाको सरणो लेसी तासू ही द्वेष करी खोटी करसी [५२] गज हीणा बाजा होसासी [५३] न्याइ कहा हान क लेसी [५४] अववंसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतवा प्रास होसी [५७] नीच जात श्रद्धान होसी [५८] राडजोग घणा होसी [५९] अस्त्री कलेस गराघण [६०] अस्त्री सील हीण घणी होमी [६१] सीलवती विरली होसी [६२] विष विकार घनो रगत होसी [६३] ससार चलावाता ते दुखी जाण जोसी।

।। इति श्री पचावण बोल सपूरण ।।

३४५६ प्रबोधसार—यशःकीर्त्ति। पत्र सं० २३। आ० ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७५। अ भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे मूल अपभ्रंश का उल्था है।

३४५७. प्रति स० २। पत्र सं० १९। ले० काल सं० १९५७। वे० सं० ४९५। क भण्डार।

३४४८ प्रश्नोत्तर रत्नमाला—तुलसीदास। पत्र सं २। आ ९½×१½ इंच। भाषा–गुजराती। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स १९७०। ट भण्डार।

३४४९ प्रश्नोत्तररत्नमालिका—अमोघवर्ष। पत्र सं २। आ ११×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २ ७। ख भण्डार।

३४५० प्रति स० २। पत्र सं २। ले काल सं १९७१ मगसिर सुदी ५। वे सं २११। क भण्डार।

३४५१ प्रति स० ३। पत्र सं २। ले काल ×। वे सं १ १। छ भण्डार।

३४५२ प्रति सं० ४। पत्र सं १। ले काल ×। वे सं १७१२। ट भण्डार।

३४५३ प्रस्तावित श्लोक……। पत्र सं १६। आ ११×६½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५१४। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है। विभिन्न ग्रन्थों में से उत्तम पद्यों का संग्रह है।

३४५४ बारहखड़ी……सूरत। पत्र सं ७। आ ९×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१६। म भण्डार।

३४५५ बारहखड़ी ……। पत्र सं २। आ ५×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१६। म भण्डार।

३४५६ बारहखड़ी—पार्श्वदास। पत्र सं ५। आ ९×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र काल सं १८११ पौष सुदी ९। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २४।

३४५७ बुधजनविलास—बुधजन। पत्र सं ६८। आ ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–संग्रह। र काल सं १८९१ कार्तिक सुदी २। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ८७। म भण्डार।

३४५८ बुधजन सतसई—बुधजन। पत्र सं ४४। आ ८×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र काल सं १८७९ ज्येष्ठ सुदी ८। ले काल सं १९८ माघ सुदी २। पूर्ण। वे सं ५४४। अ भण्डार।

विशेष—७ दोहों का संग्रह है।

३४५९ प्रति सं० २। पत्र सं २५। ले काल ×। वे सं ७६४। अ भण्डार।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ६१४ ९८४) और हैं।

३४७० प्रति स० ३। पत्र सं ८। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ५१४। क भण्डार।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र स० १० । ले० काल X । वे० सं० ७२६ । च भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७४६) और है ।

३४७२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल स० १६५४ आषाढ सुदी १० । वे० स० १६४० । ट भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १६३२) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र स० ३०३ । ले० काल X । वे० सं० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ५३६) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४ ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र स० २१३ । आ० १३X५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल स० १७५५ वैशाख सुदी ३ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओ का सग्रह है ।

३४७५ प्रति स० २ । पत्र स० २३२ । ले० काल X । वे० स० ५३६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइनें सुनहरी रग की हैं । प्रति गुटके के रूप मे है तथा प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५३८) और है ।

३४७६ प्रति स० ३ । पत्र स० १२० । ले० काल X । वे० स० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३७ । ले० काल स० १८५७ । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोराजपुरा मे महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मिती माह सुदी ६ सं० १८८६ मे गोविन्दराम साहबडा (छाबडा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८. प्रति स० ५ । पत्र सं० १११ । ले० काल स० १८८३ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ६५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी बज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर मे चढाया था ।

३४७९ प्रति स० ६ । पत्र सं० २०३ । ले० काल X । वे० स० ७३ । व्य भण्डार ।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्टक · । पत्र स० ५६ । आ० ६$\frac{1}{2}$X४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल सं० १७४८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१ भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । आ० ८$\frac{3}{4}$X५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

इसी भण्डार में ८ प्रतियां (वे सं १५५ १८१ १२८ १४६ ७११ १ ७४, ११११ ११०१) और हैं।

३४८२ प्रति स० २ । पत्र सं १२ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं० ५११ । क भण्डार।

इसी भण्डार म २ प्रतियां (वे सं ५१२ ५११) अपूर्ण और हैं।

३४८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं ११ । ले काल × । वे सं० २९३ । च भण्डार।

३४८४ प्रति स० ४ । पत्र सं २८ । ले काल सं १८७५ चैत सुदी ७ । वे सं १३८ । छ भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं २८८) और है।

३४८५ प्रति सं० ५ । पत्र सं ५२ । ले काल सं १९२८ । वे सं २८४ । ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। सुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

३४८६ प्रति स० ६ । पत्र सं ४५ । ले काल × । वे सं ११२ । झ भण्डार।

३४८७ प्रति स० ७ । पत्र सं ८ से २१ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ११७५ । ट भण्डार।

३४८८. मानशतक—श्री नागराज । पत्र सं १४ । आ ६×४, इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र काल × । ले काल सं १८१८ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वे सं ५७ । क भण्डार।

३४८९. मनमोदनपचशतीभाषा—छत्रपति जैसवाल । पत्र सं ८६ । आ ११×६३ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र काल सं १९१६ । ले काल सं १९१६ । पूर्ण । वे सं ५६६ । क भण्डार।

विशेष—सभी सामान्य विषयों पर छंदों का संग्रह है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ५६६) और है।

३४९० मान बावनी—मानकवि । पत्र सं २ । आ ६३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५१९ । क भण्डार।

३४९१ मित्रविलास—घासी । पत्र सं १४ । आ ११×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र काल सं १७११ फागुण सुदी ४ । ले काल सं १९५२ चैत सुदी १ । पूर्ण । वे सं ५७६ । क भण्डार।

विशेष—लेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता महासिंह की सहायता से लिखा था।

३४९२. रत्नकोष——। पत्र सं ८ । आ १ ×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र काल × । ले काल सं १७२२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे सं १ ३८ । अ भण्डार।

विशेष—विश्वसेन के शिष्य वलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०२१) तथा ञ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) और है।

३४६३ रत्नकोष ··। पत्र सं० १४। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६२४। क भण्डार।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातो का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ अंगराज्य, राजाओं के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम। पत्र स० १८। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-राजनीति। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८। झ भण्डार।

विशेष—श्री गणेशायनम अथ राजनीत जसुराम कृत लीखत।

दोहा— अछर अगम अपार गति कितहु पार न पाय।
सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय ॥।

छप्पय— वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग असरन सरनी।
कर करुनो करन तरन सब तारन तरनी ॥
शिर पर धरनी छत्र झरन सुख संपत भरनी।
झरनी अमृत झरन हरन दुख दारिद हरनी ॥
धरनी त्रिसुल खपर धरन भव भय हरनी।
सकल भय जग वध आदि वरनी जसु जे जग धरनी ॥ मात जै०

दोहा— जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार।
करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार ॥३॥

अन्तिम— लोक सीरकार राजी और सब राजी रहे।
चाकरी के कीये विन लालच न चाइये ॥
किन हु की भली बुरी कहिये न काहु आगे।
सटका दे लछन कछु न आप साई है ॥
राय के उजीर नमु राख राख लेत रंग।
येक टेक हु की बात उमरनीवाहिये ॥
रीझ खीझ सिरकुं चढाय लीजे जसुराम।
येक परापत कु येते गुन चाहीये ॥४॥

३४९५. राजनीति शास्त्र—देवीदास । पत्र सं० १७ । आ० ८३/४×६ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–राजनीति । र० काल × । ले० काल सं० १९७३ । पूर्ण । वे० सं० १४१ । ग्न भण्डार ।

३४९६ लघुचाणिक्य राजनीति—चाणिक्य । पत्र सं० ६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–राजनीति । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३९ । ञ भण्डार ।

३४९७ वृन्दसतसई—कवि वृन्द । पत्र सं० ४ । आ० ११३/४×५ इंच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १७६१ । ले० काल सं० १८३४ । पूर्ण । वे० सं० ७७१ । ञ भण्डार ।

३४९८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० १८१ । ङ भण्डार ।

३४९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १११ । ङ भण्डार ।

३५०० वृहद् चाणिक्यनीतिशास्त्र भाषा—मिश्ररामराय । पत्र सं० ३८ । आ० ८३/४×६ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–नीतिशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । च भण्डार ।

विशेष—मणिक्यचंद से प्रतिलिपि की थी ।

३५०१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३२ । च भण्डार ।

३५०२. षष्ठिशतक टिप्पण—भक्तिलाभ । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १५७२ । पूर्ण । वे० सं० १६८ । ञ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका–

इति षष्ठिशतकं समाप्तं । श्री भक्तिलाभोपाध्याय शिष्य प० चारु चन्द्र गणिलिखि ।

इसमें कुल १६१ गाथायें हैं । अंत की गाथा में ग्रन्थकर्ता का नाम दिया है । १६ वी गाथा की संस्कृत टीका निम्न प्रकार है—

एवं सुगमा । श्री नेमिचन्द्र भांडारिक पूर्व कृत विरहे धर्मस्य ज्ञातामृत । श्री जिनवल्लभसूरि गुणानमुरवा तद्गुने रिद्ध विशुद्धयादि परिच्छेदेन भगवतस्तो ततस्तैन सर्वधर्म मूल सम्यक्त्व शुद्धि हेतुहेतुभूता ॥ १६ ॥ तस्या गाथा विस्तर्षा चक्रे इति सम्बन्ध ।

व्याख्यान्वय पूर्वास्वपूर्णि रैवागुभक्तिलाभता ।
सुधार्थ ज्ञान पता त्रिलोक्या पठि यतवरम ॥१॥

प्रशस्ति— सं० १५७२ वर्ष श्री विक्रमनगरे श्री जय सागरोपाध्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रोपाध्याय शिष्य श्री भक्तिलाभ वाचनाय कृता टीकायां वा चारित्रसार पं० चारु चंद्रादिविनीतानामां चिरं नंदतात् । श्री कल्याणं भवतु श्री श्रमण संघस्य ।

३५०३ शुभसीख……। पत्र सं० ८ । आ० ८३/४×८ इंच । भाषा हिन्दी गद्य । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८० । ङ भण्डार ।

३५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—१३६ सीखो का वर्णन है ।

३५०५ सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिषेण । पत्र सं० ३ । आ० ११३⁄४×५३⁄४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० १०५७ । अ भण्डार ।

३५०६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ७३१ । क भण्डार ।

३५०७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १९५४ पौष बुदी ३ । वे० सं० ७२८ । क भण्डार ।

३५०८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २९३ । छ भण्डार ।

३५०९ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७४९ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ३०४ । ञ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० ११×८ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९९ । ञ भण्डार ।

३५११ सज्जनचित्तवल्लभ ... । पत्र सं० ४ । आ० १०१⁄२×४१⁄२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७५९ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ख भण्डार ।

३५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १५३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३ सज्जनचित्तवल्लभ—हर्गूलाल । पत्र सं० ९६ । आ० १२३⁄४×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १९०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । क भण्डार ।

विशेष—हर्गूलाल खतौली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद मे सहारनपुर चले गये थे वहा मित्रो की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० सं० ७२९, ७३०) और हैं ।

३५१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचन्द्र । पत्र सं० ३१ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १९२१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । क भण्डार ।

३५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ७२५ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य मे भी अनुवाद दिया है ।

३५१६ सद्भाषितावलि—सकलकीर्त्ति। पत्र सं० १४। आ० १ ३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८५७। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०१८) और है।

३५१७ प्रति स० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १८१ मंगसिर सुदी ७। वे० सं० ४७२। अ भण्डार।

विशेष—घासीराम मति ने मन्दिर में यह ग्रन्थ चढाया था।

३५१८. प्रति स० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० ११४१। ट भण्डार।

३५१९ सद्भाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ११६। आ० ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १९४१ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ७१२। क भण्डार।

विशेष—पुट्ठों पर पत्रों की सूची लिखी हुई है।

३५२० प्रति स० २। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १९४। वे० सं० ७११। क भण्डार।

३५२१ सद्भाषितावलीभाषा········। पत्र सं० २५। आ० १२×५१ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सुभाषित। र० काल सं० १९११ सावन सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५१। भ भण्डार।

३५२२ सन्देहसमुच्चय—धर्मकल्शसूरि। पत्र सं० १८। आ० १ ×४१ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७१। छ भण्डार।

३५२३ सभासार नाटक—रघुराम। पत्र सं० १५ से ४१। आ० ५२×८१ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८८१। अपूर्ण। वे० सं० २ ७। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में पंचमेरु एवं नन्दीश्वरद्वीप पूजा है।

३५२४ समावरण ·········। पत्र सं० १८। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १ । छ भण्डार।

विशेष—चौधरी के नेमिनाथ चैत्यालय सांगानेर में हरिवंशदास के शिष्य कृष्णचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३५२५ समाशृङ्गार·········। पत्र सं० ४६। आ० ११×७ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-सुभाषित। र० काल ×। ले० काल सं० १७११ कार्तिक सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १८७७।

विशेष—प्रारम्भ—

सकलमणि सर्वोत्तम श्री श्री श्री साधु विजयमणिगुरुभ्योनमः। अथा सभाशृङ्गार ग्रन्थ लिख्यते। श्री ऋषभ देवाय नमः। श्री रस्तु॥

नाभि नदनु सकलमहीमडनु पचशत धनुष मानु तो''' तोर्ण सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुतलावली विभूषित स्कधु केवलज्ञान लक्ष्मी सनाथु भव्य लोकाह्निमुत्ति[क्ति]मार्गनी देखाडइं । साध ससार शधकूप (ग्रधकूप) प्राणिवर्ग पडता दइ हाथ । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवत श्री ग्रादिनाथ श्री संघतणो मनोरथ पुरो ॥१॥ वीतराग वाणी ससार समुत्तारिणी । महामोह विध्वसनी । दिनकरानुकारिणी । क्रोधाग्नि दावानलोपशामिनीमुक्तिमार्ग प्रकाशिनी । सर्व जन चित्त सम्मोहकारिणी । ग्रागमोदगारिणी वीतराग वाणी ॥२॥

विशेष ग्रतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहाधकारविछेदन भानु त्रिभुवन सकलसंदेह छेदक । ग्रछेद्य ग्रभेद्य प्राणिगण हृदय भेदक ग्रनतानत विज्ञान इसिउं ग्रपनु केवलज्ञान ॥३॥

ग्रन्तिम पाठ—

ग्रथस्त्री गुणा— १ कुलीना २ शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ५. कीर्त्तवती ६. विज्ञानवती ७ गुणग्राहणी ८. उपकारिणी ९ कृतज्ञा १० धर्मवत्ती ११ सोत्साहा १२ सभवमंत्रा १३. क्लेससही १४. ग्रनुपतापीनी १५ सूपात्र सधीर १६. जितेन्द्रिया १७ समूप्हा १८. ग्रल्पाहारा १९ ग्रल्डोला २० ग्रल्पनिद्रा २१ मितभाषिणी २२ चितज्ञा २३ जीतरोषा २४ ग्रलोभा २५ विनयवती २६ सरूपा २७. सौभाग्यवती २८ सूचिवेषा २९. शुषाश्रूया ३० प्रसन्नमुखी ३१ सुप्रमाणशरीर ३२. सूलषणवती ३३ स्नेहवती । इतियोद्गुणा ।

इति सभाश्रृङ्गार सपूर्ण ॥

ग्रन्थाग्रन्थ सख्या १००० सवत् १७३१ वर्षेमास कार्तिक सुदी १४ वार सोमवारे लिखत रूपविजयेन ॥

स्त्री पुरुषो के विभिन्न लक्षण, कलाग्रो के लक्षण एव सुभाषित के रूप मे विविध बाते दी हुई हैं ।

३५२६ सभाश्रृङ्गार ······ । पत्र सं० २८ । ग्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १७३२ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । क्र भण्डार ।

३५२७ सबोधसत्ताणु—वीरचद । पत्र स० ११ । ग्रा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७५९ । ग्र भण्डार ।

प्रारम्भ—

परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार ।
परमारथ पणि पखणम्यु , सबोधसताणु बीसार ॥१॥
ग्रादि ग्रनादि ते ग्रातमा, ग्रडवड्यु ऐहग्रमिवार ।
धर्म्म विहुणो जीवणो, वापडु पड्यो ये ससार ॥२॥

ग्रन्तिम—

सूरी श्री विद्यानदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचद ।
तसपरि माहि मानिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ॥ ९६ ॥

तह कुले कमल दीवसराही अयस्ती अती वीरचंद।
सुगुणा मणुवा ए भावना पीमीये परमानन्द ॥१७॥

इति श्री वीरचंद विरचिते संबोधसत्ताणुवमा सपूर्ण।

३५२८ सिन्दूरप्रकरण—सोमप्रभाचार्य। पत्र सं १। आ ६×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे सं २१७। ट भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। क्षेमसागर के शिष्य कीर्त्तिसागर ने कला में प्रतिलिपि की थी।

३५२६. प्रति स० २। पत्र सं ५ से २७। ले काल सं १६ ३। अपूर्ण। वे सं २ १। ट भण्डार।

विशेष—हर्षकीत्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है।

अन्तिम— इति सिन्दूर प्रकरणस्यस्य व्याख्यायां हर्षकीत्तिभिः सूरिभिर्विहितायांत।

३५३० प्रति स० ३। पत्र सं ३ से ३४। ले काल स १८७ श्रावण सुदी १२। अपूर्ण। वे सं २ १६। ट भण्डार।

विशेष—हर्षकीर्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है।

३५३१ सिन्दूरप्रकरणभाषा—बनारसीदास। पत्र सं २६। आ १ ½×४½। भाषा हिन्दी। विषय—सुभाषित। र काल सं १६६१। ले काल स १८५२। पूर्ण। वे स ८५६।

विशेष—सदासुख भावसा ने प्रतिलिपि की थी।

३५३२. प्रति स० २। पत्र सं १३। ले काल ×। वे सं ७१८। च भण्डार।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे सं ७१७) और है।

३५३३ सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास। पत्र स २ ७। आ १२×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। र काल सं १६२१। ले काल सं १६३६। पूर्ण। वे सं ७६७। क भण्डार।

३५३४ प्रति स० २। पत्र सं २ से ६। ले काल सं १६१७ सावन सुदी ६। वे सं ८२३। क भण्डार।

विशेष—भाषाकार बघावर के रहने वाले थे। बाद में वे मालवदेश के इ बावतिपुर में रहने लगे थे।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं ७६८ ८२४ ८४७) और है।

३५३५. सुगुरुशतक—जिनदास गोधा। पत्र सं ४। आ १ ३×५ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र काल सं १८५२ चैत्र सुदी ८। ले काल सं १६१७ कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वे सं ८१ । क भण्डार।

३५३६. सुभाषितमुक्तावली ⋯ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६७ । अ भण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नसन्दोह—आ० अमितिगति । पत्र सं० ५४ । आ० १०×३½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १०५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६) और है ।

३५३८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२६ भादवा सुदी १ । वे० सं० ८२१ । क भण्डार ।

विशेष—संग्रामपुर मे महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से ४६ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । ड भण्डार ।

३५४० प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६१० कार्त्तिक बुदी १३ । वे० सं० ४२० । च भण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पाड्या नाथूलाल से पार्श्वनाथ मंदिर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१. सुभाषितरत्नसन्दोहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८८ । आ० १२¾×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–सुभाषित । र० काल सं० १६३३ । ले० काल × । वे० सं० ८१८ । क भण्डार ।

विशेष—पहले मोलीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ८१६, ८२०, ८१६, ८१६) और हैं ।

३५४२ सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र सं० ३८ । आ० १२×५¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २१ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्त्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १६७६) और है ।

३५४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० २३१ । ख भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० २३०, २६८) और हैं ।

३५४४ सुभाषितसग्रह । पत्र सं० ३१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८४३ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१०२ । अ भण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर मे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में १ प्रति पूर्ण (वे० स० २२११) तथा २ प्रतियां अपूर्ण (वे० सं० १६११ ११८) और हैं।

३५४५. प्रति स० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८८२ । क भण्डार ।

३५४६ प्रति स० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

३५४७ प्रति स० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११३ । ञ भण्डार ।

३५४८ सुभाषितसग्रह""" । पत्र सं० ४ । आ० १ × ४, इंच । भाषा–संस्कृत प्राकृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टब्बा टीका दी हुई है । यति कर्मचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४९. सुभाषितसग्रह""" । पत्र स० ११ । आ० ७×५ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११५ । अ भण्डार ।

३५५० सुभाषितावली—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ५२ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १७४८ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

विशेष—लिखितमिदं चौबे रूपसी जीवसी ब्राह्मण,ज्ञाति सनाढ्य मालपुरा मध्ये । लिखापितं पहाड्या मयाचंद । सं० १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ल ६ रविवासरे ।

३५५१, प्रति स० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८ २ पौष सुदी १ । वे० स० २२४ । अ भण्डार ।

विशेष—मालपुरा ग्राम में पं० गोविन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५२. प्रति स० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६ २ समये पौष सुदी २ शुक्रवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तदाम्नाये मंडलाचार्य श्री सिंहनंदिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवाः तत्शिष्यणी पंचाणुव्रतधारिणी बाईस्योसिरि तत्शिष्यणि बाई ऊदा सिरि पठनार्थं अग्रोतकान्वये मित्तलगोत्रे साधु भीखाने भार्या रयणा तयो पुत्राः अथाः प्रथमपुत्र साधु श्री रतमल भार्या पदारथ । द्वितीय पुत्र चाहमल भार्या मनीसिरि तथा पुत्र परात । तृतीयपुत्र {तपयपु क्रियाप्रतिपालकान् ऐकादश प्रतिमा धारकान जिनशासन समुद्धरणधीरान् साधु श्री जोडना भार्या साध्वी प रेमल तवो इदं ग्रन्थं लिखापितं कर्मक्षय निमित्तं । लिखितंकाय्स्थ डाम्वमचीकेषव तत्पुत्र भनेल ॥

३५५३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे० स० २३५ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति–

भट्टारक श्रीसकलकीर्त्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्त । श्रीमच्छ्रीपद्मसागरसूरिविजयराज्ये सवत् १६४७ वर्ष माघमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे लीपीकृतं श्रीमुनि शुभमस्तु । लेखक पाठकयो ।

सवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघाशितदशम्या मालपुरेमध्ये श्रीआदिनाथचैत्यालये शुद्धीकृतोऽय सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पाडेश्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचद्रे ण ।

अ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) और है ।

३५५४. प्रति स० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल स० १६३६ । वे० स० ८१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ८१४) और है ।

३५५५. प्रति स० ६ । पत्र ० २६ । ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० २३३ । ख भण्डार

विशेष—प० माणकचन्द की प्रेरणा से पं० स्वरूपचन्द ने प० कपूरचन्द से जवनपुर (जोवनेर) मे प्रतिलिपि कराई ।

३५५६ प्रति स० ७ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० स० ८७४ । ङ भण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८) और हैं ।

३५५७. प्रति स० ८ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १७६५ मासोज सुदी ८ । वे० स० २६५ । छ भण्डार ।

३५५८. प्रति स० ९ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६०४ माघ बुदी ४ । वे० सं० ११४ । ज भण्डार ।

३५५६ प्रति स० १० । पत्र स० ३ से ३० । ले० काल स० १६३५ बैशाख सुदी १५ । अपूर्ण । वे० स० २१३४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नही हैं । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६० सुभाषितावली……। पत्र स० २१ । आ० ११३/४×५१/२ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–सुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वे० स० ४१७ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान सगही ज्ञानचन्दजी का है ।

च भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ४१८ ४११) ख भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे सं ११५ १२०१) तथा ट भण्डार १ (वे सं १ ८१) अपूर्ण प्रति और है।

३५६१ सुभाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स १ १। आ १२½×१ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं ८१२। क भण्डार।

३५६२ सुभाषितावलीभाषा—दुलीचन्द। पत्र सं १११। आ १२½×१ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–सुभाषित। र काल सं १६११ ज्येष्ठ सुदी १। ले काल ×। पूर्ण। वे सं० ८८ । क भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं० ८८१) और है।

३५६३ सुभाषितावलीभाषा——। पत्र सं ४१ । आ ११×४½ इ च । भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल सं १८६१ प्र० आषाढ सुदी २। पूर्ण। वे सं ११ । म भण्डार।

विशेष—५ ५ दोहे हैं।

३५६४ सूक्तिमुक्तावली—सोमप्रभाचार्य। पत्र सं १७। आ १२×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–सुभाषित। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६६। ख भण्डार।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है।

३५६५ प्रति सं० २। पत्र सं १७। ले काल स १६८४। वे सं ११७। ख भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है–

संवत् १६८४ वर्षे मोकाहार्सने नंदीतटगच्छे विद्यागच्छे म श्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे म श्री विश्वभूषण तत्पट्टे भ श्री यशःकीर्ति ब्रह्म श्रीमेघराज तद्शिष्यब्रह्म श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिखितं पठनार्थं।

ख भण्डार में ११ प्रतियां (वे सं १६५, ११४ १४८ ६१ ७६१ १७१ २ १ २ ४७ १३४८ २ ११ ११६६) और हैं।

३५६६ प्रति स ३। पत्र सं २१। ले काल स १६१४ सावन सुदी ८। वे स ८२२। क भण्डार।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ८२४) और है।

३५६७ प्रति स० ४। पत्र सं १ । ले काल सं १७७१ मासोज सुदी २। वे सं २१४। ख

विशेष—ब्रह्मचारी खेतसी पठनार्थ मालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी।

३५६८. प्रति स० ५। पत्र सं २४। ले काल ×। वे सं २२६। ख भण्डार।

विशेष—दीवान मानसाराम सिवूका के पुत्र कुवर बखतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। अक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे सं २१२, २६८) और हैं।

३५६९ प्रति सं० ६ । पत्र स० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२९ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

ङ भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ८८३, ८८४, ८८५) और हैं ।

३५७०. प्रति सं० ७ । पत्र स० १५ । ले० काल सं० १९०१ प्र० श्रावण बुदी ५ । वे० सं० ४२१ । च भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४२२, ४२३) और है ।

३५७१. प्रति स० ८ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १७४६ भादवा बुदी ९ । वे० स० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—रैनवाल मे ऋषभनाथ चैत्यालय मे आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे (वे० स० १०३) मे ही ४ प्रतिया और हैं ।

३५७२. प्रति सं० ९ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६२ पौष सुदी २ । वे० स० १८३ । ज भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३६) और है ।

३५७३ प्रति स० १० । पत्र स० १० । ले० काल स० १७९७ आसोज सुदी ८ । वे० स० ८० । ञ भण्डार ।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १६५. २८६. ३७७) तथा ट भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० १६९४, १९३१) और है ।

३५७४ सूक्तावली · । पत्र स० ९ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १८९४ । पूर्ण । वे० स० ३४७ । अ भण्डार ।

३५७५ स्फुटश्लोकसग्रह । पत्र स० १० से २० । आ० ६×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १८८३ । अपूर्ण । वे० स० २५७ । ख भण्डार ।

३५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास) । पत्र स० २ । आ० १३½×६½ इच । भाषा-हिन्दी । सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१५ । अ भण्डार ।

३५७७. हितोपदेश—विष्णुशर्मा । पत्र स० ३६ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । र० काल × । ले० काल स० १८७३ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ८५४ । क भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचद्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५७८. प्रति सं० ८। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २४९। ञ भण्डार।

३५७९. हितोपदेशभाषा ....। पत्र सं० २६। आ० ८×१ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१११। ञ भण्डार।

३५८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० १८१२। ट भण्डार।

विषय- मन्त्र-शास्त्र

३५८१ इन्द्रजाल । पत्र सं० २ से ४२ । आ० ८३/४×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-तन्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १७७८ वैशाख सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०१० । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोख साव वश केसरीसिंह समाहितेन मनि मडन मिश्र विरचिते पुरदरमाया नाम ग्रन्थ वह्नित स्वामिका का माया ।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्तं ।

कई नुसखे तथा वशीकरण आदि भी हैं । कई कौतूहल की सी बातें हैं । मत्र सस्कृत मे है अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५८२ कर्मदहनव्रतमन्त्र । पत्र सं० १० । आ० १०३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १९३४ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १०४ । ङ भण्डार ।

३५८३ क्षेत्रपालस्तोत्र । पत्र सं० ४ । आ० ८३/४×६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६०६ मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ११३७ । अ भण्डार ।

विशेष—सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है ।

३५८४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ख भण्डार ।

३५८५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९६६ । वे० सं० २८२ । झ भण्डार ।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है ।

३५८६ घंटाकर्णकल्प । पत्र सं० ५ । आ० १२३/४×६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२२ । अपूर्ण । वे० सं० ४५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है । ५ यत्र तथा एक घटा चित्र भी है । जिसमे तीन घण्टे दिये हुये हैं ।

३५८७ घंटाकर्णमन्त्र । पत्र सं० ५ । आ० १२३/४×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्र । र० काल × । ले० काल सं० १६२५ । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

३४८८ घटाकर्णवृद्धिकल्प······। पत्र सं १। आ १ ३×५ इ च। भाषा हिन्दी। विषय–मन्त्र शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १९११ बैशाख सुदी ६। पूर्ण। वे सं० १५। घ भण्डार।

३४८९ चतुर्विंशतियन्त्रविधान······। पत्र सं १। आ ११½×५½ इ च। भाषा संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १ ९९। ख भण्डार।

३४९० चिन्तामणिस्तोत्र······। पत्र सं २। आ ८½×६ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय मन्त्र शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २८७। म भण्डार।

विशेष—चक्र श्वरी स्तोत्र भी दिया हुआ है।

३४९१ प्रति स० २। पत्र स २। ले काल ×। वे सं २४५। ख भण्डार।

३४९२ चिन्तामणियन्त्र······। पत्र सं १। आ १ ×५ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २९७। ख भण्डार।

३४९३ चौसठयोगिनीस्तोत्र······। पत्र सं १। आ ११×५½ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६२२। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे सं ११८७ ११९९ २ ९४) और हैं।

३४९४ प्रति स० २। पत्र सं १। ले काल सं १८८३। वे सं ३९७। ख भण्डार।

३४९५. जैनगायत्रीमन्त्रविधान······। पत्र स २। आ ११×५½ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ६ । ख भण्डार।

३४९६ णमोकारकल्प······। पत्र सं ४। आ ८½×६ इच। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र काल ×। ले काल सं १९४१। पूर्ण। वे स २८८। म भण्डार।

३४९७ णमोकारकल्प······। पत्र सं ६। आ० ११½×५ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्र शास्त्र। र काल ×। ले काल सं १९ व। पूर्ण। वे सं ३९५। ख भण्डार।

३४९८. प्रति स० २। पत्र सं २ । ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २७४। ख भण्डार।

३४९९. प्रति सं० ३। पत्र सं ६। ले काल सं १९९५। वे सं २१२। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी में मन्त्रसाधन की विधि एवं फल दिया हुआ है।

३६०० णमोकारपैंतीसी······। पत्र सं ४। आ १२×५½ इ च। भाषा–प्राकृत व पुरानी हिन्दी। विषय–मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१५। क भण्डार।

३६०१ प्रति स० २। पत्र सं १। ले काल ×। वे सं १२५। च भण्डार।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि । पत्र स० ४५ । ग्रा० ११३/४×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वे० स० १६० । श्र भण्डार ।

३६०३ नवकारकल्प । पत्र स० ६ । ग्रा० ६×४३/४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—अक्षरो की स्याही मिट जाने मे पढने मे नही आता है ।

३६०४ पचदश (१५) यन्त्र की विधि । पत्र स० २ । ग्रा० ११×५३/४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६७६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० स० २४ । ज भण्डार ।

३६०५ पद्मावतीकल्प । पत्र स० २ मे १० । ग्रा० ८×४३/४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६८२ । अपूर्ण । वे० स० १३३६ । श्र भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- सवत् १६८२ ग्रासाढेर्गलपुरे श्री मूलसघसूरि देवेन्द्रकीर्त्तिस्तदंतेवासिभिराचार्य श्री हर्षकीर्त्तिभिरिदमलेखि । चिर नदतु पुस्तकम् ।

३६०६ बाजकोश । पत्र स० ६ । ग्रा० १२×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३५ । श्र भण्डार ।

विशेष—सग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है ।

३६०७ भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य । पत्र स० ६ । ग्रा० ६३/४×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६७ । च भण्डार ।

३६०८. भूवल । पत्र स० ८ । ग्रा० ११३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६८ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य मे 'अयात. सप्रवक्ष्यामि भूवलानि समासत.' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है ।

३६०६ भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिषेण सूरि । पत्र स० २४ । ग्रा० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । श्र भण्डार ।

विशेष—३७ यंत्र एवं विधि सहित है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ३२२, १२७६) और है ।

३६१०. प्रति स० २ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७६३ बैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है।

इसी भण्डार में १ अपूर्ण सचित्र प्रति (वे सं २६३) और है।

४६११ प्रति स० ३। पत्र सं ३५। ले काल ×। वे सं ३७५। क भण्डार।

३६१२. प्रति स० ४। पत्र सं २८। ले काल सं १८६८ चैत्र बुदी ……। वे सं २६१। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति संस्कृत टीका सहित (वे स २७) और है।

३६१३ प्रति स० ५। पत्र सं ११। ले काल ×। वे सं १६३६। ट भण्डार।

विशेष—बीजाक्षरो में ११ यन्त्रों के चित्र हैं। यन्त्रविधि तथा मंत्रों सहित है। संस्कृत टीका भी है। पत्र ७ पर बीजाक्षरों में दोनों ओर दो त्रिकोण यन्त्र तथा विधि दी हुई है। एक त्रिकोण में आभूषण पहिने खड़े हुये नग्न स्त्री का चित्र है जिसमें जगह २ अक्षर लिखे हैं। दूसरी ओर भी ऐसा ही नग्न चित्र है। मन्त्रविधि है। १ से ६ व ८ से ४६ तक पत्र नहीं है। १–२ पत्र पर मंत्र मंत्र सूची दी है।

३६१४ प्रति स० ६। पत्र सं ४० से ५७। ले काल सं १८१७ ज्येष्ठ सुदी ५। अपूर्ण। वे स १६१७। ट भण्डार।

विशेष—सवाई जयपुर में पं चोखचन्द के शिष्य सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति अपूर्ण (वे सं १६१८) और है।

३६१५ भैरवपद्मावतीकल्प ……। पत्र सं ४। आ ९×४ इ च। भाषा संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५७४। क भण्डार।

३६१६ मन्त्रशास्त्र …। पत्र सं ८। आ ८×५ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५११। क भण्डार।

विशेष—निम्न मन्त्रों का संग्रह है।

१ चौकी नाहरसिंह की २ कामण विधि ३ यंत्र ४ हनुमान मंत्र ५. टिड्डी का मन्त्र ६ पलीता भूत व चुडेल का ७ मंत्र देवदत्त का ८ हनुमान का मन्त्र ९ सर्पाकार मन्त्र तथा मन्त्र १ सर्वकाम सिद्धि मन्त्र (चारा कोना पर औरङ्गजेब का नाम लिया हुआ है) ११ भूत डाकिनी का मन्त्र।

३६१७ मन्त्रशास्त्र …। पत्र सं १७ से २७। आ ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ५८४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे सं ५८५ ५८६) और हैं।

३६१८. मन्त्रमहोदधि—प० महीधर। पत्र स० १२०। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इच। भाषा-सस्कृत। षय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १८३८ माघ सुदी २। पूर्ण। वे० स० ६१६। अ भण्डार।

३६१९ प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० स० ५८३। ङ भण्डार।

विशेष—अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है।

३६२० मन्त्रसंग्रह ˙ । पत्र स० फुटकर। आ० । भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६८। क भण्डार।

विशेष—करीव ११५ यन्त्रो के चित्र हैं। प्रतिष्ठा आदि विधानो मे काम आने वाले चित्र हैं।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का संग्रह) ˙ ˙˙˙। पत्र स० २०। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ७९। घ भण्डार।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है।

३६२२. यक्षिणीकल्प ˙ । पत्र सं० १। आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इच। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६०५। ङ भण्डार।

३६२३ यत्र मंत्रविधिफल ˙ ˙˙। पत्र स० १५। आ० ६$\frac{3}{4}$×८ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-मन्त्र शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६६। ट भण्डार।

विशेष—६२ यत्र मन्त्र सहित दिये हुये हैं। कुछ यन्त्रो के खाली चित्र दिये हुये हैं। मन्त्र वीजाक्षरो मे हैं।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक। पत्र स० ६ से २६। आ० १०$\frac{3}{4}$×४ इच। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-मन्त्रशास्त्र। र० काल ×। ले० काल स० १४९५। अपूर्ण। वे० सं० १९९७। ट भण्डार।

विशेष—१ से ५, ७, १०, १५, १६, १९ से २१ पत्र नही हैं। प्रति प्राचीन एव जीर्ण है।

८वें पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणभृच्छिष्य श्रीसिंहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोन्वलविशदमना लिखत वानूकल्प ॥९६॥ इति श्रीसिंहतिलक सूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्प ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र ८ पक्ति ५—

जाइ पुष्प सहस्र १२ जाप । गूगल गउ वीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाभ हुई।

पत्र ८ पक्ति ९— ओ कुरु कुरु कामाख्यादेवी कामइ आवीज २। जग मन मोहनी सूती वइठी उठी जणमण हाथ जोडिकरि साम्ही आवइ। माहरी भक्ति गुरु की शक्ति बाथदेवी कामाख्या म्हारी शक्ति आकर्षि।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुष्पिका- इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकार ॥ ग्रन्थाग्रन्थ १७५ अक्षर १६ स० १४९५ वर्षे सगरकूपशालाया अणिहल्लपाटकपरपर्याये श्रीपत्तनमहानगरेऽलेखि।

पत्र २५— गुटिकाओं के चमत्कार हैं। धी स्तोत्र हैं। पत्र २६ पर नारिकेर कल्प दिया है।

३६२५ विजययन्त्रविधान……। पत्र सं ७। आ १०३×५ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्र शास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ८०। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ५९८ ५९९) तथा ख भण्डार म १ प्रति (वे सं १३१) और हैं।

३६२६ विद्यानुशासन……। पत्र सं १७ । आ ११×५३ इ च। भाषा–संस्कृत। र काल ×। स काल सं १९ ९ प्र भादवा बुदी २। पूर्ण। वे० सं ६५१। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित मन्त्र भी है। यह ग्रन्थ छोटीलालजी ठोलिया के पठनार्थ पं मोतीलालजी के द्वारा हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई। पारिश्रमिक २४।–) लगा।

३६२७ प्रति सं० २। पत्र सं० २०५। ले काल स १९११ मंगसिर बुदी ५। वे सं ९५। घ भण्डार।

विशेष—मङ्गलचन्द ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

३६२८. यन्त्रसंग्रह……। पत्र सं ७। आ ११३×६३ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५४५। क भण्डार।

विशेष—लगभग १५ मन्त्रों का संग्रह है।

३६२९. षटकर्मकथन……। पत्र सं १। आ १ ३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय मन्त्रशास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१ १ । ट भण्डार।

विशेष—मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है।

३६३० सरस्वतीकल्प……। पत्र सं २। आ ११३×६ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७७। क भण्डार।

विषय-कामशास्त्र

३६३१ कोकशास्त्र ।पत्र सं० ६ । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोक । र० काल × । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वे० स० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न विषयो का वर्णन है ।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, वाजीकरण, स्थूलीकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिमस्कारविधि आदि ।

३६३२ कोकसार "। पत्र स० ७ । आ० ६×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

३६३३. कोकसार—आनन्द । पत्र सं० ५ । आ० १३¾×६¾ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८१६ । अ भण्डार ।

३६३४ प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । ख भण्डार ।

३६३५ प्रति स० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० सं० २६४ । म भण्डार ।

३६३६ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १७३६ प्र० चैत्र सुदी ५ । वे० स० १५५२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जट्टू व्यास ने नरायणा मे प्रतिलिपि की थी ।

२६३७. कामसूत्र—कविहाल । पत्र सं० ३२ । आ० १०¾×४¾ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-कामशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसमे कामसूत्र की गाथायें दी हुई हैं । इसका दूसरा नाम सत्तसम्रसमत्त भी है ।

विषय— शिल्प-शास्त्र

३६३८. बिम्बनिर्माणविधि……। पत्र सं० ६। आ० ११½×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–शिल्प शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५११। क भण्डार।

३६३९. बिम्बनिर्माणविधि……। पत्र सं० ६। आ० ११×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–शिल्प शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१४। क भण्डार।

३६४०. बिम्बनिर्माणविधि……। पत्र सं० ३६। आ० ८½×६½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–शिल्पकला [प्रतिष्ठा] र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७। ख भण्डार।

विशेष—कापी साइज है। पं० कस्तूरचन्दजी साह द्वारा लिखित हिन्दी अर्थ सहित है। प्रारम्भ में ३ पेज की भूमिका है। पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के श्लोकों का हिन्दी अनुवाद किया गया है। श्लोक ६१ है। पत्र २६ से ३६ तक बिम्ब निर्माणविधि भाषा दी गई है। इसी के साथ ३ प्रतिमाओं के चित्र भी दिये गये हैं। (वे० सं० २४६) ख भण्डार। नमस्कारोपण विधि भी है। (वे० सं० २४८) ख भण्डार।

३६४१. वास्तुविन्यास……। पत्र सं० ३। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–शिल्पकला। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

विषय- लक्षण एवं समीक्षा

३६४२. आगमपरीक्षा । पत्र स० ३ । आ० ७×३½ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–समीक्षा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

३६४३ छंदशिरोमणि—शोभनाथ । पत्र स० ३१ । आ० ६×६ इ च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–लक्षण । र० काल स० १८२५ ज्येष्ठ सुदी ... । ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

३६४४ छन्दकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० ६ । आ० १२×६½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–लक्षण ग्रन्थ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । ट भण्डार ।

अन्तिम पुष्पिका— इति श्री छंदकीयकवित्ते कामधेन्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्त्तिविरचिते समवृत्तप्रकरण समाप्त । प्रारम्भ में कमलवध कवित्त मे चित्र दिये हैं ।

३६४५. धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । आ० १२×५½ इ च । भाषा–सस्कृत हिन्दी गद्य । विषय–समीक्षा । र० काल स० १७१८ । ले० काल स० १७५७ । पूर्ण । वे० स० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है । टीकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज सुत मात हमीरदे जाणि ।
कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ तज्ञ वखाणि ।।
संवत सतरासै सही अष्टादश अधिकाय ।
फागुण तम एकादशी पूरण भई सुभाय ।।
धर्म परीक्षा वचनिका सुदरदास सहाय ।
साधर्मी जन समझि नै दशरथ कृति चितलाय ।।

टीका— विषया कै वसि पड्या क्रिपण जीव पाप ।
करै छै सह्यौ न जाई ती थे दुखी होइ मरै ।।

लिखक प्रशस्ति— सवत् १७५७ वर्षे पौष शुक्ला १२ भृगौवारे दिवसा नगर्या (दौसा) जिन चैत्यालये लि० भट्टारक-श्रीनरेन्द्रकीर्त्ति तत्शिष्य प० (गिरधर) कटा हुआ ।

३६४६ प्रति स० ७ । पत्र सं ४ ५ । ले काल सं १७१६ मगसिर सुदी ६ । वे सं ३३ । क भण्डार ।

विशेष—इति श्री अमितिगतिकृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी बालबोधनामटीका तत्र धर्म्मार्थी दसरथेन कृताः समाप्ता ।

३६४७ प्रति स ३ । पत्र ५ १३२ । ले काल सं १८१६ भादवा सुदी ११ । वे सं ३३१ । क भण्डार ।

३६४८ धर्मपरीक्षा—अमितिगति । पत्र सं -५ । आ १२×४, इंच । भाषा संस्कृत । विषय-समीक्षा । र काल सं १ ७ । ले काल सं १८८४ । पूर्ण । वे सं २१२ । ख भण्डार ।

३६४९ प्रति स० २ । पत्र सं ७५ । ले काल सं १८८१ चैत्र सुदी १५ । वे सं ३३२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ७८४ ६४५) और हैं ।

३६५० प्रति स० ३ । पत्र सं० १३१ । ले काल सं १६३६ भादवा सुदी ७ । वे सं ३३५ । क भण्डार ।

३६५१ प्रति स० ४ । पत्र सं ६४ । ले काल सं १७८७ माघ सुदी १ । वे स ३२६ । क भण्डार ।

३६५२ प्रति स० ५ । पत्र सं ९६ । ले काल × । वे सं १०१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६५३ प्रति सं० ६ । पत्र सं १३३ । ले काल सं १५९१ वैशाख सुदी २ । वे सं ६६ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्यासउद्दीन के शासनकाल में लिखा गया है । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ९ ६६) और हैं ।

३६५४ प्रति स० ७ । पत्र सं ६६ । ले काल × । वे सं ११५ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं १४४ ४७४) और हैं ।

३६५५. प्रति स० ८ । पत्र सं ७८ । ले काल सं १५६३ भादवा सुदी १३ । वे सं २१५७ । ट भण्डार ।

विशेष—रामपुर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पद्म से लिखवाकर ब श्री धर्मदास को दिया । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

३६५६ धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी। पत्र सं० १०३। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-समीक्षा। र० काल १७००। ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ७७३। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति अपूर्ण (वे० सं० ११६६) और है।

३६५७ प्रति सं० २। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १९५४। वे० सं० ३३६। क भण्डार।

३६५८ प्रति सं० ३। पत्र सं० ११४। ले० काल सं० १८२६ आषाढ बुदी ६। वे० सं० ५६५। च भण्डार।

विशेष—हसराज ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। पत्र चिपके हुये हैं।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ५६६) और है।

३६५९ प्रति सं० ४। पत्र सं० १६३। ले० काल सं० १८३०। वे० सं० ३४५। झ भण्डार।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० १३६) और है।

३६६० प्रति सं० ५। पत्र सं० १०३। ले० काल सं० १८२५। वे० सं० ५२। ञ भण्डार।

विशेष—वखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३१४) और है।

३६६१. धर्मपरीक्षाभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ३८६। आ० ११×५३ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-समीक्षा। र० काल सं० १९३२। ले० काल सं० १९४२। पूर्ण। वे० सं० ३३८। क भण्डार।

३६६२ प्रति सं० २। पत्र सं० ३२२। ले० काल सं० १९३८। वे० सं० ३३७। क भण्डार।

३६६३ प्रति सं० ३। पत्र सं० २५०। ले० काल सं० १९३९। वे० सं० ३३४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३३३, ३३५) और हैं।

३६६४ प्रति सं० ४। पत्र सं० १६२। ले० काल ×। वे० सं० १७०७। ट भण्डार।

३६६५ धर्मपरीक्षारास—ब्र० जिनदास। पत्र सं० १८। आ० ११×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-समीक्षा। र० काल ×। ले० काल सं० १६०२ फागुण सुदी ११। अपूर्ण। वे० सं० ९७३। अ भण्डार।

विशेष— १६ व १७वां पत्र नहीं है। अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जीरावलि स्तोत्र हैं।

आदिभाग—

धर्म जिरोसर २ नमूं ते सार,
तीर्थंकर जे पनरमु वांछित फल बहु दान दातार,
सारदा स्वामिरिण वली तवु बुधिसार,

मुरु देउमाता श्रीगणधर स्वामी ममसरस्वती सकलकीर्ति भवतार,
मुनि भवनकीर्ति पाय प्रणमवि कहिसूं रासहु सार ॥१॥

दूहा—
धरम परीक्षा करूं निरमली भवीयण सुणु तह्म सार ।
ब्रह्म जिणदास कहि निरमलु जिम जाणु विचार ॥२॥
कनक रतन माणिक आदि परीक्षा करी लीजिसार ।
तिम धरम परीचीइ सत्य लीजि भवतार ॥३॥

अन्तिम प्रशस्ति—

दूहा—
श्री सकलकीरतिगुरुप्रणमीनि मुनिभवनकीरतिभवतार ।
ब्रह्म जिणदास भणिक भवु रासकीउ सविचार ॥६ ॥
धरमपरीक्षारासनिरमलु धरमतणु निधान ।
पढि गुणि जे सांभलि तेहनि उपजि मति ज्ञान ॥६१॥

इति धर्मपरीक्षा रास समाप्तः

संवत् १६०२ वर्षे फागुण सुदी ११ दिने सूरतस्थाने श्री शीतलनाथ चैत्यालये आचार्य श्री विनयकीर्ति हित मेघराजकेन लिखितं स्वयमिदं ।

३६६६ धर्मपरीक्षाभाषा........। पत्र सं. १ से ५ । आ. ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–समीक्षा । र. काल × । ले. काल × । अपूर्ण । वे. सं. ११२ । क भण्डार ।

३६६७ मूलके लक्षण.........। पत्र सं. २ । आ. ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–लक्षणग्रन्थ । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. ६७१ । क भण्डार ।

३६६८ रत्नपरीक्षा—रामकवि । पत्र सं. १७ । आ. ११×५½ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–लक्षण ग्रन्थ । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—इन्द्रपुरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

प्रारम्भ—
गुरु गणपति सरस्वति समरि मातै बध है बुधि ।
सरलबुद्धि संदह रचा रतन परीक्षा सुधि ॥१॥
रतन दीपिका ग्रन्थ मे रतन परिछ्या जान ।
सकुर देव परतार ते भाषा करनो मान ॥२॥

अन्तिम—
रत्न परीक्ष्या रंगमु कीन्ही राम कविंद ।
इन्द्रपुरी मैं आदि दै प्रिती सु भाषागरि ॥६१॥

३६६६. रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट। पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५३। ट भण्डार।

विशेष—१२ से आगे पत्र नहीं है।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र। पत्र स० १७। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रंथ। र० काल ×। ले० काल स० १८२७ पौष सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ६४१। अ भण्डार।

३६७१. प्रति सं० २। पत्र स० ३७। ले० काल सं० १६३५ आसोज सुदी १३। वे० स० २२६। ज भण्डार।

३६७२. वक्ताश्रोतालक्षण " । पत्र स० ६। आ० १२३×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६४२। क भण्डार।

३६७३ प्रति सं० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० स० ६४३। क भण्डार।

३६७४. वक्ताश्रोतालक्षण ' । पत्र स० ४। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६४४। क भण्डार।

३६७५ प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० ६४५। क भण्डार।

३६७६. शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट। पत्र स० २४। आ० १२३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षण ग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६३६। अ भण्डार।

३६७७ शृङ्गारतिलक—कालिदास। पत्र सं० २। आ० १३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल स० १८३७। पूर्ण। वे० सं० ११४१। अ भण्डार।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक सपूर्णम्

प्रशस्ति— संवत्सरे सप्तत्रिकवस्वेंदु मिते असाढसुदी १३ त्रयोदश्या पडितजी श्री हीरानन्दजी तच्छिष्य पडितजी श्री चोखचन्दजी तच्छिष्य पडित विनयवताजिनदासेन लिपीकृतं। भूरामलजी या आका ॥

३६७८ स्त्रीलक्षण । पत्र स० ४। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षणग्रन्थ। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११८१। अ भण्डार।

३६८३ चन्दनबालारास । पत्र सं० २ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सती न्दनबाला की कथा है । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६५ । अ भण्डार ।

३६८४ चन्द्रलेहारास—मतिकुशल । पत्र स० २६ । आ० १०×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–सा (चन्द्रलेखा की कथा है) र० काल स० १७२८ आसोज बुदी १० । ले० काल स० १८२६ आसोज सुदी । पूर्ण । ० स० २१७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अकबराबाद मे प्रतिलिपि की गयी थी । दशा जीर्ण शीर्ण तथा लिपि विकृत एव अशुद्ध है । ारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुआ होने के कारण नही लिखे गये हैं ।

सामाइक सुधा करो, त्रिकरण सुद्ध तिकाल ।
सत्रु मित्र समतागणि, तिमतुटै जग जाल ।।३।।

मरूदेवि भरथादि मुनि, करी समाइक सार ।
केवल कमला तिण वरी, पाम्यो भवनो पार ।।४।।

सामाइक मन सुद्ध करी, पामी द्वाम पकत्त ।
तिण ऊपरिन्दु साभलो, चद्रलेहा चरित्र ।।५।।

वचन कला तेह वनिछै, सरसध रसाल ।
तीणे जाणु सक्त पडसौ, सोभलता खुस्याल ।।६।।

अन्तिम—

सवत् सिद्धि कर मुनिससी जी वद आसू दसम विचार ।
श्री पमीयाख मैं प्रेम सु, एह रच्यौ अधिकार ।।१२।।

खरतर गणपति सुखकरूजी, श्री जिन सूरिंद ।
वडवती जिम साखा खमनीजी, जो धू रजनीस दिणद ।।१३।।

सुगुण श्री सुगुणकीरति गणीजो, वाचक पदवी धरत ।
अतयवासी चिर गयो जी, मतिवल्लभ महत ।।१४।।

प्रथमत सुसी अति प्रेम स्यु जी, मतिकुसल कहै एम ।
सामाइक मन सुद्ध करो जी, जीव वए भ्रइ लेहा जेम ।।१५।।

रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम अभ्यास ।
छसय चौवीस गाहा अछै जी, उगुणतीस ढाल उल्हास ।।१६।।

भणे गुणै सुणै भावस्यु जी, गरुआतण गुण जेह ।
मन सुध जिनधर्म तैं करैं जी, श्री भुवन पति हुवै तेह ।।१७।।

सर्व गाथा ६२४ । इति चन्द्रलेहारास संपूर्णं ।।

३६८५ जलगालणरास—ज्ञानभूषण। पत्र सं० २। आ० १ ¼×४½ इंच। भाषा–हिन्दी गुजराती। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११७। ट भण्डार।

विशेष—जल छानने की विधि का वर्णन रास के रूप में किया गया है।

३६८६ धमाराशिभद्ररास—जिनराजसूरि। पत्र सं० २१। आ० ७½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल सं० १६७२ आसोज सुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११४८। व भण्डार।

विशेष—मुनि हमविजयगणि ने गिरपोर नगर में प्रतिलिपि की थी।

३६८७ धर्मरासा……। पत्र सं० २ से २। आ० ११×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४८। ट भण्डार।

विशेष—पहिला छठा तथा २ से आगे के पत्र नहीं हैं।

३६८८ नवकाररास……। पत्र सं० २। आ० १ ×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–णमोकार मंत्र महात्म्य वर्णन है। र० काल ×। ले० काल सं० १८११ फागुण सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ११ २। व भण्डार।

३६८९ नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि। पत्र सं० ४। आ० १ ×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (भगवान नेमिनाथ का वर्णन है)। र० काल ×। ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १ २६। व भण्डार।

विशेष—जयपुर में साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी।

३६९० नेमिनाथरास—ऋषि रामचन्द्र। पत्र सं० १। आ० ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४। व भण्डार।

विशेष—आदिभाग–

दूहा— अरिहंत सिध ने आयरीया उवझाया अणगार।
पांचेपद तेहुंनमु अठोत्तर सो वार ॥१॥
मोखगामी दोनु हुवा राजमती रहनेम।
विवेकतर लीया भणी सामल पै धर प्रेम ॥२॥

ढाल जिणेपुर मुनिरामा……।
सुखकारी सोरठ देसे राज कीसन रैम मन मोहीलास।
दीपती नगरी दुवारकाए ॥१॥
समुद विजै तिहांपुर सेवा देवी राणी करैर।
महाराणी मानी जहोए ॥२॥

जाए जन(म)मीया अरिहन्त देव इह चोसट सारे ।
ज्यारी गेव मे बाल ब्रह्मचारी वावा समोए ॥३॥

अन्तिम— सिल ऊपर पच ढालियो दीठो दोय सुत्रा मे निचोडरे ।
तिए अनुमार माफक है, रिषि रामचं.जी कीनी जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजीरी तत् सीपणी छोटाजीरी चेलीह सतु लीखतु पाली मदे । पाली मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६६१. नेमीश्वरफाग—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र स० ८ से ७० । आ० ९×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-फागु । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८३ । ङ भण्डार ।

३६६२ पचेन्द्रियरास । पत्र स० ३ । आ० ९×४½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (पाचो इन्द्रियो के विषय का वर्णन है) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५९ । अ भण्डार ।

३६६३ पल्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ५ । आ० ८½×४½ इच । भाषा- हन्दी । विषय-रासा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४३ । ङ भण्डार ।

विशेष—पल्यविधानव्रत का वर्णन है ।

३३६४ बंकचूलरास—जयकीर्त्ति । पत्र स० ४ से १७ । आ० ९×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (कथा) । र० काल स० १६८५ । ले० काल स० १६९३ फागुण बुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० २०९२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्म के ३ पत्र नही हैं । ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुणी बकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास ।
वीरनि वादी भावसु पुहुत राजग्रह वास ॥१॥
सवत सोल पच्यासीइ गूर्ज्जर देस मझार ।
कल्पवल्लीपुर सोभती इन्द्रपुरी अवतार ॥२॥
नरसिंघपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुखकद ।
चैत्यालि श्री वृषभवि आवि भवीयण वृ द ॥३॥
काष्ठासघ विद्यागणे श्री सोमकीर्त्ति मही सोम ।
विजयसेन विजयाकर यशकीर्त्ति यशस्तोम ॥४॥
उदयसेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्त्ति विख्यात ।
रत्नभूषण गच्छपती हवा भुवनरयण जेहजात ॥५॥

तस पट्टि सूरीश्वरप्रभु जयकीर्ति जयकार ।
जे भविअण भवि सांभली ते पामी भवपार ॥६॥
रूपकुमर रमीया मागु बंकचूल श्रीखु नाम ।
तेह रास रच्यु रवडु जयकीर्ति सुखधाम ॥७॥
नीम भाव निर्मल हुई गुरुवचने निर्धार ।
सांभलतां मंगल मलि वे मगिण नरविगार ॥८॥
साढूसागर नम महीचंद सूर जिनमास ।
जयकीर्ति कहिता एह बंकचूलनु रास ॥९॥
इति बंकचूलरास समाप्त ।

संवत् १६६१ वर्षे फागुण सुदी ११ पिपलाद ग्रामे भट्टारक श्री जयकीर्ति उपाध्याय श्री वीरचंद ब्रह्म श्री वसवंत गाद कपूरा वा श्रीष रास ब्रह्म श्री वसवंत सवतं ।

३६६५ भविष्यदत्तरास—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र सं. ३१ । आ. १२×८ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-रासा भविष्यदत्त की कथा है । र. काल सं. १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. ६८१ । अ भण्डार ।

३६६६ प्रति सं० २ । पत्र सं. ६९ । ले. काल सं. १७८४ । वे. सं. ११९ । ट भण्डार ।

विशेष—आमेर में श्री मल्लिनाथ चैत्यालय में श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य दयाराम सोनी ने प्रतिलिपि की थी ।

३६६७ प्रति सं० ३ । पत्र सं. ९ । ले. काल सं. १८१८ । वे. सं. ५६६ । क भण्डार ।

विशेष—पं. खुशालचन्द्र ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार में १ प्रति (वे. सं. ११२) छ भण्डार में १ प्रति (वे. सं. १९१) तथा झ भण्डार में १ प्रति (वे. सं. १९२) और हैं ।

३६६८ रुक्मिणीविवाहवेलि (कृष्णरुक्मिणीवेलि)—पृथ्वीराज राठौड़ । पत्र सं. ६१ के १२१ । आ. ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-वेलि । र. काल सं. १६३८ । ले. काल सं. १७१६ पौष सुदी ५ । अपूर्ण । वे. सं. १६४ । ड भण्डार ।

विशेष—देवगिरी में महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी । ६१ पद्य हैं । हिन्दी गद्य में टीका भी दी हुई है । ११२ पृष्ठ से आगे अन्य पाठ है ।

३६९९ शीलरासा—विजयदेव सूरि। पत्र स० ४ से ७। आ० १०½×४ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा। र० काल ×। ले० काल स० १६३७ फागुण सुदी १३। वे० सं० १९९९। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी १३ गुरुवारे श्रीखरतरगच्छे आचार्य श्री राजरत्नसूरि शिष्य प० नदिरग लिखित। उसवसेसघ वालेचा गोत्रे सा हीरा पुत्री रतन सु श्राविका नाली पठनार्थं लिखित दारुमध्ये।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्यपासचद तरगइ सुपसाय,
सीस धरी निज निरमल भाइ।

नयर जालउरहि जागतु,
नेमि नमउ नित बेकर जोडि ॥

बीनती एह जि वीनवउ,
इक खिरण अम्ह मन वीन विछोडि।

सील सघातइ जी प्रीतडी,
उत्तराध्ययन बाबीसमु जोइ ॥

वली अने राय थकी अरथ आज्ञा विना जे कहसु होइ।
विफल हो यो मुझ पातक सोइ, जिम जिन भाष्यउ ते सही॥

दुरित नइ दुक्ख सहूरइ दूरि, वेगि मनोरथ माहरा पूरि।
आणसुसयम आपियो, इम वीनवइ श्री विजयदेव सूरि॥

॥ इति शील रासउ समाप्त ॥

३७०० प्रति स० २। पत्र स० २ से ७। ले० काल स० १७०५ आसोज सुदी १४। वे० सं० २०९१। अ भण्डार।

विशेष—आमेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३७०१. प्रति स० ३। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० स० २५७। व्य भण्डार।

३७०२ श्रीपालरास—जिनहर्षगणि। पत्र स० १०। आ० १०×४½ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–रासा (श्रीपाल रासा की कथा है)। र० काल स० १७४२ चैत्र बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८३०। अ भण्डार।

विशेष—आदि एव अन्त भाग निम्न प्रकार है—

श्रीजिनाय नम ॥ बाल सिघली ॥

चउवीसे प्रणमु जिणराय जास पसायइ नवनिधि पाय ।
सुयदेवा धरि रिदय मझारि, कहिस्यु नवपदमउ अधिकार ॥
मन्त्र जन्त्र छइ अवर अनेक पिणि नवकार समउ नही एक ।
सिद्धचक्र नवपद सुपसायइ सुख पाम्या श्रीपाल नररायइ ॥
आंबिल तप नव पद संजोग गलित सरीर थयो नीरोग ।
तास चरित्र कहुं हित आणी सुणिज्यो नरनारी सुभ वाणी ॥

अन्तिम—

श्रीपाल चरित्र निहालनइ, सिद्धचक्र नवपद धारि ।
ध्याईयइ तउ सुख पाईयइ जगमा जस विस्तार ॥८५॥
श्री खरतर पति प्रगट श्री जिनचन्द्र सरीस ।
गणि शांति हरष वाचक तणी कहइ जिनहरष मुनीस ॥८ ॥
सतरै चमालीसे समै वदि चैत तरसि चाण ।
ए रास पाटण मां रच्यो सुणता सदा कल्याण ॥८७॥
इति श्रीपाल रास संपूर्ण । पद्य सं २८७ है ।

३७०३ प्रति सं० २ । पत्र सं १७ । लि काल सं १७७२ भादवा बुदी ११ । वे सं ७२२ । अ भण्डार ।

३७०४ षट्लेश्यावेलि—साह लोहट । पत्र सं २२ । आ ८½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र काल सं १७१ आसोज सुदी ६ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ८ । ञ भण्डार ।

३७०५ सुकुमालस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास । पत्र स १४ । आ १ ½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय—रासा (सुकुमाल मुनि का वर्णन) । ले काल स १६३५ । पूर्ण । वे सं ११६ । अ भण्डार ।

३७०६ सुदर्शनरास—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं ११ । आ १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (सेठ सुदर्शन का वर्णन है) । र काल सं १६२६ । ले काल सं १७६६ । पूर्ण । वे स २ ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—साह लालचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७०७ प्रति सं० २ । पत्र सं ११ । ले काल सं १७६२ सावण सुदी · · · · · · । पूर्ण । ञ भण्डार ।

३७०८ सुभौमचक्रवर्त्तिरास—ब्रह्मजिनदास। पत्र सं० १३। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२। ञ भण्डार।

३७०६ हमीररासो—महेश कवि। पत्र सं० ८८। आ० ६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–रास। (ऐतिहासिक)। र० काल ×। ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० ६०४। ङ भण्डार।

विषय- गणित-शास्त्र

—

३७१० गणितनाममाला—हरदत्त। पत्र सं. १४। आ. ६½×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–गणितशास्त्र। र. काल ×। ले. काल ×। पूर्ण। वे. सं. ८। ख भण्डार।

३७११ गणितशास्त्र……। पत्र सं. ११। आ. ६×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–गणित। र. काल ×। ले. काल ×। पूर्ण। वे. सं. ७६। घ भण्डार।

३७१२. गणितसार—हेमराज। पत्र सं. ५। आ. १२×८ इंच। भाषा हिन्दी। विषय–गणित। र. काल ×। ले. काल ×। अपूर्ण। वे. सं. ११२१। अ भण्डार।

विशेष–हाशिये पर सुन्दर बेलबूटे हैं। पत्र जीर्ण हैं तथा बीच में एक पत्र नहीं है।

३७१३ पट्टी पहाड़ों की पुस्तक……। पत्र सं. ८७। आ. ६×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–गणित। र. काल ×। ले. काल ×। अपूर्ण। वे. सं. १६२८। ट भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के पत्रों में मैनों की डोरी आदि डालकर मारने की विधि दी है। पुन पत्र १ से ३ तक सीधा वर्ण समाम्नायः। आदि की पांचों पाटियों (पाटियों) का वर्णन है। पत्र ४ से १ तक चाणिक्य नीति के श्लोक हैं। पत्र १ से ११ तक पहाड़े हैं। किसी २ जगह पहाड़ों पर सुभाषित पद्य हैं। १२ से १६ तक ताम भार के गुर दिये हुये हैं। निम्न पाठ और हैं।

१ हरिनाममाला—शङ्कराचार्य। संस्कृत पत्र १७ तक।

२. गोकुलगांवकी लीला— हिन्दी पत्र ४५ तक।

विशेष—कृष्ण उत्सव का वर्णन

३ स्मरणाकीगीता— पत्र ४६ तक।

४ स्नेहलीला— पत्र ४० (अपूर्ण)

३७१४ रामप्रमाण……। पत्र सं. २। आ. ८½×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय गणितशास्त्र। र. काल ×। ले. काल ×। पूर्ण। वे. सं. १४२७। अ भण्डार।

३७१५ लीलावतीभाषा—मोहनमिश्र। पत्र सं. ८। आ. ११×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–गणितशास्त्र। र. काल सं. १७१४। ले. काल सं. १८३८ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वे. सं. ६४। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास । पत्र स० ३ । आ० ६×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-गणितशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६४१ । **क** भण्डार ।

३७१७. प्रति स० २ । पत्र स० ५५ । ले० काल × । वे० स० १४४ । **ञ** भण्डार ।

३७१८ लीलावतीभाषा । पत्र स० १३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गणित । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । **च** भण्डार ।

३७१९. प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४२ । **ट** भण्डार ।

३७२० लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र स० १७६ । आ० ११½×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-गणित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६७ । **अ** भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित सुन्दर एव नवीन है ।

३७२१. प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० स० १७० । **ख** भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल मे माणकचन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डौन मे प्रतिलिपि की थी ।

३७२२ प्रति स० ३ । पत्र स० १५४ । ले० काल × । वे० स० ३२१ । **च** भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ३२४ से ३२७ तक) और हैं ।

३७२३. प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १७६५ । वे० सं० २१६ । **झ** भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० २२०, २२१) और हैं ।

३७२४. प्रति स० ५ । पत्र स० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । **ट** भण्डार ।

विषय- इतिहास

३७२५. आचार्यों का ब्यौरा ...। पत्र सं १। आ० १२३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७११। पूर्ण। वे० सं० २६७। ख भण्डार।

विशेष—मुखानन्द सोगाणी ने प्रतिलिपि की थी। इसी वेष्टन में १ प्रति और है।

३७२६. खण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन......। पत्र सं० ८। आ० ७×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५। ग भण्डार।

विशेष—८४ गोत्रों के नाम भी दिये हुये हैं।

३७२७. गुर्वावलीवर्णन......। पत्र सं० ५। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१। ख भण्डार।

३७२८. चौरासीज्ञातिछंद......। पत्र सं० १। आ० १ ×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६ १। ट भण्डार।

३७२९. चौरासीजाति की जयमाल—विनोदीलाल। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १८७१ पौष बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

३७३०. छठा आरा का विस्तार......। पत्र सं० २। आ० १ १×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८६। अ भण्डार।

३७३१. जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वर्णन... ...। पत्र सं० १२७। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८१। ट भण्डार।

विशेष—रामगढ सवाईमाधोपुर आदि बसाने का पूर्ण विवरण है।

३७३२. जैनबद्री मूडबद्री की यात्रा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ४। आ० १ ५×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १। ख भण्डार।

३७३३. तीर्थङ्करपरिचय......। पत्र सं० ४। आ० १२×५३ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४। अ भण्डार।

३७३४. तीर्थङ्करों का अन्तराल......। पत्र सं० १। आ० ११×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० २१४२। अ भण्डार।

३७३५ दादूपद्यावली • । पत्र सं० १ । आ० १०×३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । ० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयाल पाट गरीब मसकीन ठाट ।
जुगलवाई निराट निराणे बिराज ही ।।
चखनीस कर पाक जसौ चावौ प्राग ढाक ।
बडो हू गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही ।।
सागानेर रजबसु देवल दयाल दास ।
घडमी कडाला बसै धरम कीया जही ।।
ईड वैहू जनदास तेजानन्द जोधपुर ।
मोहन सु भजनीक आसोपमि वाज ही ।।
गूलर मे माधोदास विदाध मे हरिसिह ।
चतरदास सिंध्यावट कीयो तनकाज ही ।।
विहाणी पिरागदास डोडवाने है प्रसिद्ध ।
सुन्दरदास जू सरसू फतेहपुर छाजही ।।
बावो बनवारी हरदास दोऊ रतीय मैं ।
साधु एक माडोडी मैं नीकै नित्य छाजही ।।
सुदर प्रहलाद दास घाटडैसु छीड माहि ।
पूरब चतरभुज रामपुर छाजही ।। १ ।।
निराणदास माडाल्यो सडाग माहि ।
इकलौद रणतभवर डाढ चरणदास जानियौ ।।
हाडौती गेगाड़ जामैं माखूजी मगन भये ।
जगोजी भडौच मध्य प्रचाधारी मानियौ ।।
लालदास नायक सो पीरान पटणदास ।
फोफली मेवाड माहि टीलोजी प्रमानियो ।।
साधु परमानद इदोखली मे रहे जाय ।
जैमल चुहाण भलो खालड हरगानियौ ।।
जैमल जोगो कुछाहो वनमाली चोकन्यौस ।
साभर भजन सो वितान तानियी ।।

राग रामगरी—

अैसे पीव क्यू' पाइये, मन चंचल भाई ।
आख मीच मूनी भया मछी गढ काई ।।टेक।।
छापा तिलक वनाय करि नाचै अरु गावै ।
आपण तो समझै नही, औरा समझावै ।।१।।
भगति करै पाखड की, करणी का काचा ।
कहै कबीर हरि क्यू' मिलै, हिरदै नही साचा ।।२।।

।। इति ।।

३७३६ देहली के वादशाहो का व्यौरा ... । पत्र स० १६ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । झ भण्डार ।

३७३७ पञ्चाधिकार । पत्र स० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४७ । ट भण्डार ।

विशेष—जिनसेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ से आचार्यो का ऐतिहासिक वर्णन है ।

३७३८. पट्टावली ..... । पत्र स० १२ । आ० ८×६३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३० । झ भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुआ है । १८७६ के संवत् की पट्टावलि है । अन्त मे खडेलवाल वशोत्पत्ति भी दी हुई है ।

३७३६. पट्टावलि .. । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—स० ८४० तक होने वाले भट्टारको का नामोल्लेख है ।

३७४० पट्टावलि ..... । पत्र सं० २ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम चौरासी जातियो के नाम हैं । पीछे सवत् १७६६ मे नागौर के गच्छ से अजमेर का गच्छ निकला उसके भट्टारको के नाम दिये हुये हैं । स० १५७२ मे नागौर से अजमेर का गच्छ निकला । उसके सं० १८५२ तक होने वाले भट्टारको के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१. प्रतिष्ठाकुकुंमपत्रिका । पत्र स० १ । आ० २५×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—सं १६२७ फागुन मास का कुंकुमपत्र गिरसोल की प्रतिष्ठा का है। पत्र कार्तिक बुदी ११ का लिखा है। इसके साथ सं १६१६ की कुंकुमपत्रिका छपी हुई शिखर सम्मेद की और है।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि……। पत्र सं २। आ ६×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १४३। छ भण्डार।

३७४३ प्रति स० २। पत्र सं १८। ले काल ×। वे सं १४३। छ भण्डार।

३७४४ बलात्कारगणगुर्वावलि……। पत्र सं १। आ ११३×४२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २ १। ख भण्डार।

३७४८. भट्टारक पट्टावलि। पत्र सं १। आ ११×१२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र काल ×। लि काल ×। पूर्ण। वे सं १८३७। क भण्डार।

विशेष—सं १७७ तक की भट्टारक पट्टावलि दी हुई है।

३७४६. प्रति स० २। पत्र सं ६। ले काल ×। वे सं ११८। ज भण्डार।

विशेष—संवत् १८८ तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हैं।

३७५० यात्रावर्णन……। पत्र सं २ स २६ आ ६×१२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११४। क भण्डार।

३७५१ रथयात्राप्रभाव—अमोलकचन्द्। पत्र सं १ । आ १ ३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११ ८। ख भण्डार।

विशेष—जयपुर की रथयात्रा का वर्णन है।

११३ पद्य हैं– अन्तिम—

एकोनविंशतिशततम सहाब्दे मासस्यपक्षमी विनेमित फाल्गुनस्य श्रीमज्जिनेश वर सूर्यरथस्ययात्रा। सैमायदं जयपुर प्रवरे बभूव ॥११२॥

रथयात्राप्रभावोऽयं कथिता दृष्टपूर्वक।

नाम्ना मौक्तिकचन्द्रेण श्राद्धायोवै मा संमुदा ॥११३॥

॥ इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ॥ शुभं भूयात् ॥

३७५२ राजप्रशस्ति……। पत्र सं ५। आ ६×४, इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–इतिहास। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १८६५। क भण्डार।

विशेष—दो प्रशस्ति (अपूर्ण) हैं जिनका भावक वनिता के विवाहर्थ दिये हुए हैं।

३७५३ विज्ञप्तिपत्र—हसराज । पत्र सं० १ । आ० ८×६ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास। र० काल ×। ले० काल स० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ५३ । भ भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हसराज ने जयपुर के जैन पचो के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पच साधर्मी वडी पंचायत तथा छोटी पचायत का तथा दीवानजी साहिब का मन्दिर सम्बन्धी पचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हसराज की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमे जयपुर के जैनो का अच्छा वर्णन है । अमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमे प्रतिज्ञा पत्र (आखडी पत्र) भी है जिसमे हसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पडता है। यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । स० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४. शिलालेखसग्रह ' । पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न लेखो का सग्रह है ।

१ चालुक्य वंशोत्पन्न पुलकेशी का शिलालेख ।
२ भद्रबाहु प्रशस्ति
३ मल्लिषेण प्रशस्ति

३७५५. श्रावक उत्पत्तिवर्णन ··· । पत्र स० १ । आ० ११×२८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—चौरासी गोत्र, वश तथा कुलदेवियो का वर्णन है ।

३७५६. श्रावकों की चौरासी जातिया । पत्र स० १ । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३१ । अ भण्डार ।

३७५७ श्रावकों की ७२ जातिया ' । पत्र स० २ । आ० १२×५½ इ च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जातियो के नाम निम्न प्रकार है ।

१ गोलाराडे २ गोलसिघाडे ३ गोलापूर्व ४. लवेचु ५ जैसवाल ६ खंडेलवाल ७ वघेरवाल ८. अगरवाल, ६ सहलवाल, १० अमरवापोरवाड, ११ चोसखापोरवाड, १२ दुसरवापोरवाड, १३. जागडापोरवाड, १४ परवार, १५ वरहीया, १६. भैमरपोरवाड, १७ मोरठीपोरवाड, १८. पद्मावतीपोरमा, १६ खयड, २०. पुसर

२७६७. स्थूलभद्र का चौमासा वर्णन ···। पत्र स० २ । ग्रा० १०×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११८ । ग्र भण्डार ।

ईडर आबा आबली रे ए देसी

सावरण मास सुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास ।
अरज करूं घरे आवजो रे लाल हू छूं ताहरी दास ।
चतुर नर आवो हम चर छा रे सुगरण नर तू छ प्राण आधार ।।१।।
भादवडे पीउ वेगलौ रे लाल हू कीम करू सरणगारे ।
अरज करूं घर आवजो रे लाल मोरा छंछत सार ।।२।।
आसोजा मासनी चादणी रे लाल फुलतणी वीछाइ सेज ।
रंग रा मत कीजिय रे लाल आणी हीयडे तेज ।।३।।
कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास ।
संदेसा सयरण भरण रे लाल अलगायो केम ।।४।।
नजर निहालो वाल हो रे लाल आवो मीगसर मास ।
लोक कहावत कह्या करो जी पीउडा परम निवास ।।५।।
पोस वालम वेगलो रे लाल अवडो मुज दोस ।
परीत पनोतर पालीये रे लाल आणी मन मे रोस ।।६।।
सीयाले अती घरणो दोहलो रे लाल ते माहे वल माह ।
पोताने घर आवज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह । ७।।
लाल गुलाल अबीरसु रे लाल खेलरण लागा लोग ।
तुज विरण मुज नेइहा एकली रे लाल फागुरण जाये फोक ।।८।।
सुदर पाक्ष सुहामणो रे लाल कुल तणो मही मास ।
चीतारया घरे आवज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ।।९।।
बीसारयो न वीसरे रे लाला जे तुम वोल्या वोल ।
वेसाखे तुम नेम लु रे लाल तो वजउ ढोल ।।१०।।
केहवा दीसे कामो रे लाल काड करावो वेठ ।
ढीठ वणो हवे काहा करो लाल आव्यी लागो जेठ ।।११।।

मसाड़ो घरमुमघोरे साल बीच बीच अजुके बीमसी रे साल ।
तुम बीना मुझ मैहारे साल धरम मावै बीज ॥१२॥
रे रे सखी उदासली रे सास सखी सोभा सणगार ।
मेर बसी पंथी मुररदरे सास पे घोडी मार ॥१३॥
भार घडी मी मम छकी रे सास मामो मास भरसाड ।
कामण माता कंत की रे मास सखी म माण्यो प्राज ॥१४॥
है उठी उमट भरी रे मास बासम बोरे मास ।
घुमभव्र पुष्प मारेस पी रे माम ऐह बठ्यो चौमास ॥१५॥

३७६८ हमीर चौपई……। पत्र स १३ से १७ । मा ८×९ इञ्च। भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १५१९। ट भण्डार।

विशेष—रचना में नामोल्लेख नहीं नहीं है। हमीर व प्रलाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्णन किया हुआ है।

विषय— स्तोत्र साहित्य

३७६९ अकलकाष्टक ' '। पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५० । ज भण्डार ।

३७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० स० २५ । व्य भण्डार ।

३७७१ अकलकाष्टकभापा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २२ । आ० ११३×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल स० १९१५ श्रावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ६) और हैं ।

३७७२. प्रति स० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ३ । ङ भण्डार ।

३७७३. प्रति स० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १९१५ श्रावण सुदी २ । वे० स० १८७ । छ भण्डार ।

३७७४ अजितशातिस्तवन । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६६१ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३५७ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है ।

३७७५ अजितशातिस्तवन—नन्दिषेण । पत्र सं० १५ । आ० ८३×४ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । अ भण्डार ।

३७७६ अनाथीऋषिस्वाध्याय ' " । पत्र सं० १ । आ० ९३×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी गुजराती । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९०८ । ट भण्डार ।

३७७७ अनादिनिधनस्तोत्र । पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९१ । व्य भण्डार ।

३७७८. अरहन्तस्तवन । पत्र सं० ९ से २४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल सं० १६५२ कार्त्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १९८४ । अ भण्डार ।

३७७९ अवतिपार्श्वजिनस्तवन—हर्षसूरि । पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५९ । व्य भण्डार ।

विशेष—७८ पद्य हैं ।

३७८० आत्मनिंदास्तवन—रत्नाकर। पत्र सं० २। आ० ६३×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७। छ भण्डार।

विशेष—२५ श्लोक हैं। ग्रन्थ प्रारम्भ करने से पूर्व पं० विजयहंस गणि को नमस्कार किया गया है। पं० जय विजयगणि ने प्रतिलिपि की थी।

३७८१ आराधना……। पत्र सं० २। आ० ८×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९९। क भण्डार।

३७८२. इष्टोपदेश—पूज्यपाद। पत्र सं० ५। आ० ११३×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टीका भी हुई है।

३७८३ प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ७१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२) और है।

३७८४ प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ७। घ भण्डार।

विशेष—देवीदास की हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३७८५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १६४। वे० सं० ६। क भण्डार।

विशेष—संघी पन्नालाल दूणीवाले कृत हिन्दी अर्थ सहित है। सं० १६३५ में भाषा की थी।

३७८६ प्रति सं० ५। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १९७१ पौष बुदी ७। वे० सं० ४८। म भण्डार।

विशेष—वेणीदास ने आगरा में प्रतिलिपि की थी।

३७८७ इष्टोपदेशटीका—आशाधर। पत्र सं० १६। आ० १२३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७। क भण्डार।

३७८८. प्रति सं० २। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे० सं० ६१। क भण्डार।

३७८९. इष्टोपदेशभाषा……। पत्र सं० २१। आ० १२×७३ इंच। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ की लिखाई व कागज में ४॥=)॥ व्यय हुये हैं।

३७९० उपदेशसज्झाय—ऋषि रामचन्द। पत्र सं० १। आ० १×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६। ख भण्डार।

३७६१ उपदेशसज्झाय—रंगविजय। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८३। अ भण्डार।

विशेष—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे।

३७६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६१। अ भण्डार।

विशेष—३रा पत्र नही है।

३७६३ उपदेशसज्झाय—देवाद्दिल। पत्र सं० १। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६२। अ भण्डार।

३७६४ उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्य। पत्र सं० १४। आ० ३¾×४¼ इञ्च। भाषा–संस्कृत प्राकृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १५५३ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० ४१। च भण्डार।

विशेष—श्री वृहद्गच्छीय भट्टारक गुणदेवसूरि के शिष्य गुणनिधान ने इसकी प्रतिलिपि की थी। प्रति हत है। निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

	नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	पत्र	विशेष
१	अजितशातिस्तवन—	×	प्राकृत संस्कृत	१ से ६	३६ गाथा

विशेष—आचार्य गोविन्दकृत संस्कृत वृत्ति सहित है।

	नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	पत्र	विशेष
२.	भयहरस्तोत्र—	×	संस्कृत	६ से १०	

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गर्भित सहित है। इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १५५३ आसोज सुदी १२ को मेदपाट देश मे राणा रायमल्ल के शासनकाल मे कोठारिया नगर मे श्री गुणदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने की थी।

	नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	पत्र	विशेष
३	भयहरस्तोत्र—	×	"	११ से १४	

विशेष—इसमे पार्श्वयक्ष मन्त्र गर्भित अष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानतुगाचार्य कृत दी हुई है।

३७६५. ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन। पत्र सं० ७। आ० १०¾×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४६। छ भण्डार।

३७६६ ऋषभदेवस्तुति—पद्मनन्दि। पत्र सं० ११। आ० १२×६¾ इंच। भाषा–प्राकृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४६। अ भण्डार।

विशेष—८वें पृष्ठ मे दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है। दोनो ही स्तोत्रो के संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

३७६७ ऋषभस्तुति……। पत्र सं १। आ १ ३/४×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं० १२१। ख भण्डार।

३७६८. ऋषिमण्डलस्तोत्र—गौतमस्वामी। पत्र स १। आ ११३/४×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १४। क भण्डार।

३७६९. प्रति स० २। पत्र सं ११। ले काल सं १८३६। वे सं ११२०। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं ३३८ १४२६ १९) और हैं।

३८०० प्रति स० ३। पत्र सं ८। ले काल ×। वे स ६१। ङ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है।

३८०१ प्रति सं० ४। पत्र सं० ५। ले काल ×। वे सं २१।

विशेष—कृष्णलाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी। छ भण्डार में एक प्रति (वे सं २६१) और है।

३८०२. प्रति स० ५। पत्र सं ४। ले काल ×। वे सं ११९। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं २९) और है।

३८०३ प्रति स० ६। पत्र सं २। ले काल सं १७८८। वे सं १४। ज भण्डार।

३८०४ प्रति स० ७। पत्र सं ७९ से ११। ले काल ×। वे स १८११। ट भण्डार।

३८०५ ऋषिमण्डलस्तोत्र……। पत्र स ५। आ १२×४१/२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं १४। ख भण्डार।

३८०६ एकाक्षरीस्तोत्र—(वकाराक्षर)……। पत्र सं १। आ ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १८६१ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण। वे सं ३३६। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। प्रदर्शन योग्य है।

३८०७ एकीभावस्तोत्र—वादिराज। पत्र सं ११। आ १ ×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र काल ×। ले काल स १८८३ माघ कृष्णा ६। पूर्ण। वे सं २६४। क भण्डार।

विशेष—अमोलकचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं २३८) और है।

३८०८ प्रति स० २। पत्र सं २ से ११। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २६६। ख भण्डार।

३८०९ प्रति सं० ३। पत्र सं ९। ले काल ×। वे सं ६३। ङ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६४) और है।

३८१०. प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति सस्कृत टीका तहित है।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ५२) और है।

३८११. प्रति स० ५ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० १२ । व्य भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शातिनाथ स्तोत्र और हैं।

३८१३ एकीभावस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २२ । आ० १२३×५ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४) और है।

३८१४ एकीभावस्तोत्रभाषा । पत्र स० १० । आ० ७×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६१८ । पूर्ण । वे० स० ३५३ । झ भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका । पत्र स० ३ । आ० १२३×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६३६ आसोज बुदी ५ । वे० स० ६६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७) और है।

३८१७ कल्पसूत्रमहिमा ··। पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-महात्म्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८ कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र स० ५ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६ । ड भण्डार ।

विशेष—

पणविवि चउवीसवि तित्थयर,
सुरणर विसहर थुव चलणा ।
पुणु भणमि पच कल्याण दिणा,
भवियहु णिसुणह इक्कमणा ॥

अन्तिम— करि कल्लाणपुञ्ज जियणाहहो
मणु विणु चित्त प्रविचलं ।
कहिम समुच्च एण त कविणा
णिम्मइ इमणुव भव फलं ॥
इति श्री समन्तभद्र कृत कल्याणक समाप्ता ॥

३८१६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र सं १ । भ्रा १ X४ इ च । भाषा संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ स्तवन । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे सं ३५१ । ग्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं १८४ १२३६, १२६२) और हैं ।

३८८० प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ले काल X । वे सं २१ । त भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां और है (वे सं १ २६४ २८१) ।

३८२१ प्रति स० ३ । पत्र सं १६ । ले काल सं १८१७ माघ सुदी १ । वे सं १२ । प भण्डार

३८२२. प्रति स० ४ । पत्र सं ६ । ले काल सं १६४२ माह सुदी १५ । अपूर्ण । वे सं २६६ । छ भण्डार ।

विशेष—६वां पत्र नहीं है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १६४) और है ।

३८२३ प्रति स० ५ । पत्र सं ५ । ले काल सं १७१४ माह सुदी ३ । वे सं ७ । ञ भण्डार ।

विशेष—साह जोधराज गोदीकाने मार्तंडराम से सांगानेर में प्रतिलिपि करवायी थी । यह पुस्तक जोधराज गोदीका की है ।

३८२४ प्रति स० ६ । पत्र सं १८ । ले काल सं १७६६ । वे सं ७ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्त्ति कृत संस्कृत टीका सहित है । हर्षकीर्त्ति नागपुरीय तपागच्छ प्रधान चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे ।

३८२५ प्रति सं ७ । पत्र सं ६ । ले काल सं १७४१ । वे सं १६६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति कल्याणमञ्जरी नाम विनयसागर कृत संस्कृत टीका सहित है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलकुमतकुमतखंडखंडनदिनमणिश्रीकुमुदचन्द्रसूरिविरचित श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याणमञ्जरी टीका संपूर्ण । रामाराम ऋषि ने स्वात्मज्ञान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

३८२६ प्रति स ८ । पत्र सं ४ । ले काल सं १८६६ । वे सं २ १५ । ट भण्डार ।

विशेष—छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३८२७. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—पं० आशाधर। पत्र सं० ४। आ० १०×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५३१। अ भण्डार।

३८२८. कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक। पत्र स० १५। आ० ६¾×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०। अ भण्डार।

विशेष—टीकाकार परिचय—

श्रीउकेशगणाब्धिचन्द्रसदृशा विद्वज्जनाह्लादयन्,
प्रवीण्याधनसारपाठकवरा राजन्ति भास्वातर।
तच्छिष्य कुमुदापिदेवतिलक. सद्बुद्धिवृद्धिप्रदा,
श्रेयोमन्दिरसस्तवस्य मुदितो वृत्तिं व्यधाददद्भुतं ॥१॥
कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति सौभाग्यमञ्जरी।
वाच्यमानाज्जनैनदाच्चंद्रार्क्कं मुदा ॥२॥
इति श्रेयोमंदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता॥

३८२९ कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका ·। पत्र स० ४ से ११। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११०। ङ भण्डार।

३८३० प्रति स० २। पत्र स० २ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३३। ञ भण्डार।

विशेष—रूपचन्द चौधरी कनेसु सुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी। ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है।

३८३१. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—पन्नालाल। पत्र स० ४७। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल सं० १९३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०७। क भण्डार।

३८३२ प्रति स० २। पत्र स० ३२। ले० काल ×। वे० स० १०८। क भण्डार।

३८३३ कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र। पत्र स० ५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८७१। ट भण्डार।

३८३४ कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—बनारसीदास। पत्र स० ८। आ० ६×३½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२४०। अ भण्डार।

३८३५ प्रति स० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० १११। ङ भण्डार।

३८३६. केवलज्ञानीसज्झाय—विनयचन्द्र। पत्र स० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१८८। अ भण्डार।

३८३७ क्षेत्रपालनामावली……। पत्र सं १। आ १ ×४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २४४। ख भण्डार।

३८३८ गीतप्रबन्ध……। पत्र सं २। आ १ ×४½ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १२४। छ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में बसन्तराग में एक भजन है।

३८३९ गीत वीतराग—पंडिताचार्य अभिनवचारुकीर्ति। पत्र स २६। आ १ ×१ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १८८९ ज्येष्ठ बुदी ॥। पूर्ण। वे सं २ २। ख भण्डार।

विशेष—जयपुर नगर में श्री चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

गीत वीतराग संस्कृत भाषा की रचना है जिसमे २४ प्रबंधों में भिन्न भिन्न राग रागनियों म भगवान आदिनाथ का पौराणिक आख्यान वर्णित है। ग्रन्थकार की पंडिताचार्य उपाधि से ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय के विशिष्ट विद्वान् थे। ग्रन्थ का निर्माण कब हुआ यह रचना से ज्ञात नहीं होता किन्तु वह समय निश्चय ही संवत् १८८९ से पूर्व है क्योंकि ज्येष्ठ बुदी अमावस्या सं ८८९ को जयपुरस्थ लश्कर के मन्दिर के पास रहने वाले श्री चुन्नीलालजी साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है प्रति सुंदर अक्षरों में लिखी हुई है तथा शुद्ध है। ग्रन्थकार ने ग्रन्थ को निम्न रागों तथा तालों में संस्कृत गीता में गूंथा है—

राग रागनी— मालव गुर्जरी बसंत रामकली कामोदा कर्णाट देशाखिराग देशवैराडी गुणकरी मालवगौड गुर्जराग भैरवी विराडी विभास कामरो।

ताल— रूपक एकताल प्रतिमठ्य परिमठ्य तिताली मठताल।

गीतों में स्थायी अन्तरा संचारी तथा आभोग ये चारों ही चरण हैं इस सबसे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार संस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ ही साथ अच्छे संगीतज्ञ भी थे।

३८४० प्रति सं० २। पत्र सं १२। ले काल सं १९१४ ज्येष्ठ सुदी ८। वे सं १२५। क भण्डार।

विशेष—संघपति अमरचन्द्र के सेवक माणिक्यचन्द्र ने गुर्जरपत्तन की यात्रा के अवसर पर आनन्दराम के कथनानुसार सं १८८४ वाली प्रति से प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १२६) और है।

३८४१ प्रति सं० ३। पत्र सं १४। ले काल ×। वे सं ४२। ख भण्डार।

३८४२ गुणस्तवन । पत्र स० १५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५८ । ट भण्डार ।

३८४३ गुरुसहस्रनाम । पत्र स० ११ । आ० १०×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १७४६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

३८४४ गोम्मटसारस्तोत्र । पत्र स० १ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७३ । ञ भण्डार ।

३८४५ घघरनिसाणी—जिनहर्ष । पत्र स० २ । आ० १०×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—पार्श्वनाथ की स्तुति है ।

आदि— मुख सपति सुर नायक परतपि पास जिणदा है ।

जाकी छवि काति अनोपम उपमा दीपत जात दिणदा है ।

अन्तिम— सिद्धा दावा सातहार हासा दे सेवक विलवदा है ।

घग्घर नीसाणी पास वखाणी गुणी जिनहरष वद्दा है ।

इति श्री घगघर निसाणी सपूर्ण ॥

३८४६ चक्रेश्वरीस्तोत्र । पत्र स० १ । आ० १०½×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २९१ । ख भण्डार ।

३८४७ चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि । पत्र स० ६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८५ । ख भण्डार ।

३८४८ चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल । पत्र स० १ । आ० १०½×५ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । अ भण्डार ।

३८४९ चतुर्विंशतिस्तवन । पत्र स० ५ । आ० १०×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२९ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रो मे वसुधारा स्तोत्र है । प० विजयगणि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५० चतुर्विंशतिस्तवन । पत्र स० ४ । आ० ९½×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है । प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन मे ४ पद्य हैं ।

प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

भर्म्यांभोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्म्मावली
रम्भासामजनिर्नवनमहामष्टा पदामासुरै ।
भक्त्या वंदितपादपद्मविदुषां संपादयामोज्झितां ।
रंभासाम जनमिर्मवमहामष्टा पदामासुरै ॥१॥

३८२१ चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तोत्र—कमलविजयगणि । पत्र सं १५ । मा १२½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । लै काल × । पूर्ण । वे सं १४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८२२ चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति—माघनन्दि । पत्र सं ३ । मा १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५१८ । क भण्डार ।

३८२३ चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तुति······। पत्र सं । मा १ ३×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १२६१ । अ भण्डार ।

३८२४ चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति······। पत्र सं ३ । मा १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । लै काल × । वे सं २१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८२५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र······। पत्र स ६ । मा ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १६८२ । ट भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र कट्टर बीसपन्थी माम्नाय का है । सभी देवी देवताओं का वर्णन स्तोत्र में है ।

३८२६ चतुष्पदीस्तोत्र······। पत्र सं ११ । मा ८½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स १२७५ । अ भण्डार ।

३८२७ चामुण्डस्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । पत्र स २ । मा ८×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११८१ । अ भण्डार ।

३८२८. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमालास्तवन······। पत्र सं० ४ । मा ८× इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र काल × । पूर्ण । वे सं ११३४ । अ भण्डार ।

३८२९ चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्रमन्त्रसहित······। पत्र सं १ । मा ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ ६ । अ भण्डार ।

३८६० प्रति स० २ । पत्र स० ६ ' ले० काल स० १८३० आसोज सुदी २ । वे० स० १८१ । ङ भण्डार ।

३८६१. चित्रबंधस्तोत्र' । पत्र म० ३ । आ० १२×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४८ । ञ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

३८६२. चैत्यवदना । पत्र स० ३ । आ० १२×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३ चौवीसस्तवन । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल स० १९७७ फागुन वुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—वख्शीराम ने भरतपुर मे रणधीरसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

३८६४. छदसग्रह' । पत्र स० ६ । आ० ११½×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छद हैं—

नाम छद	नाम कर्त्ता	पत्र	विशेष
महावीर छद	शुभचन्द	१ पर	×
विजयकीर्त्ति छद	”	२ ”	×
गुरु छद	”	३ ”	×
पार्श्व छद	ब्र० लेखराज	३ ”	×
गुरु नामावलि छद	×	४ ”	×
आरती सग्रह	ब्र० जिनदास	४ ”	×
चन्द्रकीर्त्ति छद	—	४ ”	×
कृपण छद	चन्द्रकीर्त्ति	५ ”	×
नेमिनाथ छद	शुभचन्द्र	६ ”	×

३८६५ जगन्नाथाष्टक—शङ्कराचार्य । पत्र स० २ । आ० ७×३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । (जैनेतर साहित्य) । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३३ । छ भण्डार ।

३८६६ जिनवरस्तोत्र ......। पत्र सं १। आ ११½×२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं० १८८१। पूर्ण। वे सं० १ २। च भण्डार।

विशेष—मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७ जिनगुणमाला ......। पत्र सं ११। आ ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स २४१। म्ह भण्डार।

३७६८ जिनचैत्यवन्दना ......। पत्र सं २। आ १ ×१ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० स १ ३१। ञ भण्डार।

३८६९ जिनदर्शनाष्टक ......। पत्र सं १। आ १ ×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २ २१। ट भण्डार।

३८७० जिनपञ्जरस्तोत्र ......। पत्र स २। आ ६१×१३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २११४। ट भण्डार।

३८७१ जिनपञ्जरस्तोत्र—कमलप्रभाचार्य। पत्र सं १। आ ८¾×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ३९। ट भण्डार।

विशेष—पं मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२. प्रति स० २। पत्र सं २। ले काल ×। वे सं १ । ग भण्डार।

३८७३ प्रति स० ३। पत्र स १। ले काल ×। वे सं २ ५। क भण्डार।

३८७४ प्रति स० ४। पत्र सं ८। ले काल ×। वे सं २६१। म्ह भण्डार।

३८७५. जिनवरदर्शन—पद्मनंदि। पत्र सं २। आ १ ½×१ इ५। भाषा प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १८६४। पूर्ण। वे सं २ ८। क भण्डार।

३८७६ जिनवाणीस्तवन—जगतराम। पत्र सं २। आ ११×१ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७११। च भण्डार।

३८७७ जिनशतकटीका—शंभुसाधु। पत्र सं २९। आ १ ¾×४, इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १११। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम— इति शंभु साधुविरचित जिनशतक पञ्जिकायां वाग्वर्णन नाम चतुर्थपरिच्छेद समाप्त।

३८७८ प्रति स० २। पत्र सं १४। ले काल ×। वे सं ४६८। च भण्डार।

३८७६. जिनशतकटीका—नरसिंहभट्ट। पत्र सं० ३३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १५६४ चैत्र सुदी १४। वे० स० २६। ञ भण्डार।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी।

३८८०. प्रति स० २। पत्र स० ५६। ले० काल स० १६५६ पौष बुदी १०। वे० स० २००। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २०१, २०२, २०३, २०४) और हैं।

३८८१ प्रति स० ३। पत्र स० ५३। ले० काल स० १६१५ भादवा बुदी १३। वे० सं० १००। छ भण्डार।

३८८२. जिनशतकालङ्कार—समतभद्र। पत्र स० १४। आ० १३×७½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३०। ज भण्डार।

३८८३ जिनस्तवनद्वात्रिंशिका । पत्र स० ६। आ० ६¾×४½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८६६। ट भण्डार।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है।

३८८४ जिनस्तुति—शोभनमुनि। पत्र स० ६। आ० १०¾×४½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० १८७। ज भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है।

३८८५ जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर। पत्र स० १७। आ० ६×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०७६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५२१, ११२६, १०७६) और है।

३८८६ प्रति स० २। पत्र स० ८। ले० काल ×। वे० स० ५७। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७) और है।

३८८७ प्रति स० ३। पत्र स० १६। ले० काल स० १८३३ कात्तिक बुदी ४। वे० स० ११४। च भण्डार।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी मे तीर्थङ्करो की स्तुति और है।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११६, ११७) और हैं।

३८८८. प्रति स० ४। पत्र स० २०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३३) और है।

३८८९ प्रति स० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी ४ । वे० स० २८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त लघु सामायिक लघु स्वयंभूस्तोत्र लघुसहस्रनाम एवं चैत्यवंदना भी है । अंकुरारोपण मंडल का चित्र भी है ।

३८९० प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६५३ । वे० सं० ४७ । ञ भण्डार ।

विशेष—संवत् सोम १६५३ मेरुनावर्षे श्रीमूलसंघे भ० श्री विद्यानन्दि तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषणतत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचंद तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचंद्र तेषांमध्ये श्री प्रभाचन्द्र चेली बाई तेजमती उपदेशनार्थ बाई भजीतमती नारायणग्रामे इदं सहस्रनाम स्तोत्र निजकर्म क्षयार्थं लिखितं ।

इसी भण्डार से एक प्रति (वे० सं० १८६) और है ।

३८९१ जिनसहस्रनामस्तोत्र—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० २८ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५१२ ५४१ १ ६४ १ ६८) और हैं ।

३८९२ प्रति स० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ३१ । ग भण्डार ।

३८९३ प्रति स० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ११७ क । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११६ ११८) और हैं ।

३८९४ प्रति स० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६०३ आसोज सुदी १३ । वे० सं० १६२ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२५) और है ।

३८९५ प्रति स० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) और है ।

३८९६ प्रति स० ६ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १८८४ । वे० सं० ३२ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३३६) और है ।

३८९७ जिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र स० ४ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । घ भण्डार ।

३८९८ प्रति स० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७२६ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ८ । झ भण्डार ।

विशेष—पहले गद्य है तथा अन्त में ५२ श्लोक दिये हैं ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकवीश्वरविरचित श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्ण । दुवे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका ने आत्मपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

३८६६ जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० २६ । आ० ११३/४×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे०० स० ८११ । ङ भण्डार ।

३६०० जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० ४ । आ० १२×५१/२ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६ । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं- घटाकरण मत्र, जिनपजरस्तोत्र पत्रो के दोनो किनारो पर सुन्दर वेलवूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

३६०१ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० १२१ । आ० १२×५३/४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६३ । क भण्डार ।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी ।

३६०२. जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १८० । आ० १२×७ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६५८ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १६२ । क भण्डार ।

३६०३. प्रति स० २ । पत्र स० ४ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८१० । ङ भण्डार ।

३६०४ जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्त्ति । पत्र स० ८१ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८८४ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १६१ । अ भण्डार ।

३६०५. प्रति स० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १७२५ । वे० स० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—वध गोपालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०६ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० २०६ । ङ भण्डार ।

३६०७ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० ७ । आ० १२×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र र० काल × । ले० काल स० १८२२ श्रावण । पूर्ण । वे० स० ३०६ । व्र भण्डार ।

३६०८ जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम । पत्र स० १६ । आ० ७×६ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल स० १६५६ । ले० काल स० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २१० । ङ भण्डार ।

३६०६ जिनोपकारस्मरण । पत्र स० १३ । आ० १२३/४×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८७ । क भण्डार ।

३६१० प्रति स० २ । पत्र सं १७ । ले काल × । वे सं २१२ । क भण्डार ।

३६११ प्रति सं० ३ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे सं १ ६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतियां (वे सं १ ७ से ११२ तक) और हैं।

३६१२ णमोकारादिपाठ........ । पत्र सं १ ४ । आ १२×७½ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल सं० १८८२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे सं २३३ । क भण्डार ।

विशेष—११८८ बार णमोकार मन्त्र लिखा हुआ है । अन्त में धानतराय कृत समाधि मरण पाठ तथा २१८ बार ओमर्हद्वृषभादि वर्द्धमानांतेभ्योनम । यह पाठ लिखा हुआ है ।

३६१३ प्रति स० २ । पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं २३४ । क भण्डार ।

३६१४ णमोकारस्तवन........ । पत्र सं १ । आ ६¾×४¾ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-स्तवन । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २१६१ । अ भण्डार ।

३६१५ तकाराक्षरीस्तोत्र........ । पत्र सं २ । आ १२,×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ १ । ख भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र की संस्कृत में व्याख्या भी दी हुई है । ताता ताती ततेतां ततति ततता तति ताती तता इत्यादि ।

३६१६ तीसचौबीसीस्तवन........ । पत्र सं ११ । आ १२×५ इ च । । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल स १७६८ । पूर्ण । जीर्ण । वे सं २०६ । क भण्डार ।

३६१७ दशालीनी सज्झाय........ । पत्र सं १ । आ ६×४ इ च । भाषा हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे सं २११७ । अ भण्डार ।

३६१८ देवतास्तुति—पद्मनदि । पत्र सं ३ । आ ९ ×४½ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २१६७ । ट भण्डार ।

३६१९. देवागमस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं ४ । आ १२×५, इ च । भाषा संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १७६५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे सं १० । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १ ८) और है ।

३६२० प्रति स० २ । पत्र सं २० । ले काल सं १८६६ बैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वे सं ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रभयचंद साह ने सवाई जयपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ११४ ११५) और हैं ।

३६२१ प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

३६२२. प्रति सं० ४। पत्र स० ८। ले० काल स० १६२३ वैशाख बुदी ३। वे० स० ७६। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७७) और है।

३६२३. प्रति स० ५। पत्र स० ६। ले० काल स० १७२५ फागुन बुदी १०। वे० सं० ६। झ भण्डार।

विशेष—पाडे दीनाजी ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी। साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पोत दी गई हैं।

३६२४. प्रति स० ६। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० १८१। ञ भण्डार।

३६२५ देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनंदि। पत्र स० २५। आ० १३×५ इ च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र (दर्शन)। र० काल ×। ले० काल स० १५५६ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वे० स० १२३। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्रीरत्नकीर्त्ति-देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचद्र देवास्तदाम्नाये श्रीपथावास्तव्ये खण्डेलवालान्वये बीजुवागोत्रे सा मदन भार्या हरिसिणी पुत्र सा परिसराम भार्या भषी एतैसास्त्रमिद लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं।

३६२६. प्रति स० ७। पत्र स० २५। ले० काल स० १६४४ भादवा बुदी १२। वे० स० १६०। ज भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र पानी मे थोडे गल गये है। यह पुस्तक प० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है।

३६२७. देवागमस्तोत्रभाषा—जयचद छाबडा। पत्र स० १३४। आ० १२×७ इ च। भाषा—हिन्दी। विषय—न्याय। र० काल स० १८६६ चैत्र बुदी १४। ले० काल स० १६३८ माह सुदी १०। पूर्ण। वे० स० ३०६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३१०) और है।

३६२८ प्रति स० २। पत्र स० ५ से ८। ले० काल स० १८६८। वे० स० ३०६। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०८) और है।

जत्ताचदेजाण भव्वाज्जणेभाण भत्ताजईश्राण कत्तासुहभ्रण ॥६॥

धम्मदुकदेण सद्धम्मचदेण,णम्मोत्थुकारेण भत्तिव्वभारेण ॥

त्थुउ अरिट्ठेण णेमीवि तित्थेण दासेण वूहेण सकुज्जभत्तेण ॥८॥

द्वात्रिंशत्यत्र कमलवंध ॥

आर्याछद—

कोहो लोहोचत्तो भत्तो अजईण सासणे लीणो ।

मा अमोहवि खीणो मारत्थी ककणो छेसी ॥९॥

भुजगप्रयातछद—

सुचित्तो वितित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो ।

सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विरामो विमाओ विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

आर्याछद—

सम्मद् सणणाण सचारित्त तहे वसु णोणो ।

चरइ चरावइ धम्मो चंदो अविपुण्ण विक्खाओ ॥११॥

मौत्तिकदामछद—

तिलग हिमाचल मालव अग वरव्वर केरल कण्णड वग ।

तिलात्त कलिग कुरगडहाल कराडअ गुज्जर डड्ड तमाल ॥१२॥

सुपोट अवति किरात अकीर सुतुक्क तुरुक्क बराड सुवीर ।

मरुत्थल दक्खण पूरवदेस सुणागवचाल सुकुभ लसेस ॥१३॥

वऊड गऊड सुककणलाट, सुबेट सुभोट सुदव्विड राट ।

सुदेस विदेसह आचइ राअ, विवेक विचक्खण पूजइ पाअ ॥१४॥

सुचक्कल पीणपओहरि णारि, रणज्झण णेउर पाइ विधारि ।

सुविब्भम अंति अहाउ विभाउ, सुगावइ गीउ मणोहरसाउ ॥१५॥

सुउज्जल मुत्ति अहीर पवाल, सुपूरउ णिम्मल रगिहि वाल ।

चउक्क विउप्परि धम्मविचद बधाअउ अक्खहि वारु सुभद ॥१६॥

आर्याछद—

जइ जणदिसिवर सहिओ, सम्मदिट्ठि साव आइ परि आरिउ ।

जिणधम्मभवणखभो विस अख अकरो जओ जअइ ॥१०॥

स्मिणीछंद—

जत परिट्ठ विवाइ उद्धारकं सिरस सत्वाण वाणासरो माणकं ।

धम्मणी रायणधारा ए मम्माएकं चारसस एउ ठायपिन्नावर्ष ॥१८॥

छड्डा मम्मती भावणामावए, वस्सवम्मा वरा हम्मरा पासए ।

चाह चारित्तहिं मुसिमो विग्गहो धम्मचंदो जयो जित इंदिग्गहो ॥१६॥

पयसख्य—

सुरणर कायरसवर चाह वन्दि मकम जिणवर ।

चरण कमलहिं मचरण सरण मोयम कइ अइवर ।

पौसि भवित्तर धम्म सोधि मवक्मपवलतर ।

उद्धारी क्मसमि वम्ममम्म चातक ववधर ।

वम्मह सप्प वम्प हरसुवर समरव तारण तरण ।

जय धम्मधुरंधर धम्मचंद समसर्वव मंगलकरण ॥२ ॥

इति धर्मचन्द्रप्रबंध समाप्त ॥

३६३२ नित्यपाठसंग्रह……। पत्र सं ७। मा ८३×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय स्तोत्र । र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण । वे सं ८२ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

बड़ा दर्शन—	संस्कृत	—	
छोटा दर्शन—	हिन्दी	बुधजन	
भूतकाल चौबीसी—	”	×	
पंचमंगलपाठ—	”	रूपचंद	(२ मंगल है)
अभिषेक विधि—	संस्कृत	×	

३६३३ निर्वाणकाण्डगाथा……। पत्र सं ३। मा ११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र काल ×। ले काल ×। पूर्ण । वे सं ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—महावीर निर्वाण कल्याणक पूजा भी है ।

३६३४ प्रति सं० २ । पत्र सं ३ । ले काल ×। वे सं १०२ । छ भण्डार ।

३६३५ प्रति सं० ३ । पत्र सं २ । ले० काल सं १८८४ । वे सं १८७ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १८८) और है।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २ । ले० काल X । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार ३ प्रतिया (वे० स० १३६, २५६ २५६/२) और हैं ।

३६३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ४०३ । ञ भण्डार ।

३६३८ प्रति स० ६ । पत्र स० ३ । ले० काल X । वे० स० १८६३ । ट भण्डार ।

३६३६. निर्वाणकाण्डटीका · · । पत्र स० २४ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा–प्राकृत सस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६६ । ख भण्डार ।

३६४० निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । आ० ६X६ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल स० १७४१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३७५ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० सं० ३७३, ३७४) और हैं ।

३६४१. निर्वाणभक्ति···· । पत्र स० २४ । आ० ११X७½ इ ंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । क भण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति ··· । पत्र स० ६ । आ० ६½X५½ इ च । भाषा- सस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २०७५ । ट भण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र··· ·· । पत्र स० ६ । आ० ८X४½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल X । ले० काल स० १६२३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० । ज भण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र · । पत्र स० ३ से ५ । आ० १०X४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २१७५ । ट भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दी हुई है ।

३६४५ नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र स० ८ । आ० ६½X५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १७०४ भादवा बुद. २ । पूर्ण । वे० स० २३२ । ञ भण्डार ।

विशेष—प० दामोदर ने शेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र स० १ । आ० ११X५½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वे० स० ३४० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्तोत्र है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ले० काल X । वे० स० १८३० । ट भण्डार ।

३६४८ नमिस्तवन—ऋषि शिव । पत्र सं २ । आ १ ३×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र काल × । लि काल । पूर्ण । वै सं १२ ८ । झ भण्डार ।

विशेष— बीस तीर्थङ्कर स्तवन भी है ।

३६४६ नेमिस्तवन—जितसागरगणी । पत्र सं १ । आ १ ×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र काल × । लि काल × । पूर्ण । वै सं० १२१५ । झ भण्डार ।

विशेष—दूसरा नेमिस्तवन और है ।

३६५० पञ्चकल्याणकपाठ—हरचंद । पत्र सं १ । भाषा हिन्दी । विषय–स्तवन । र काल १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७ । ले काल × । पूर्ण । वै सं २३८ । छ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ— कल्याण नायक नमों कल्प कुरह कुमकंद ।
कल्मष दुर कल्यान कर, बुधि कुल कमल दिनंद ॥१॥
मंगल नायक वंदिकै मंगल पंच प्रकार ।
वर मंगल मुझ दीजिये मगल वरनन सार ॥२॥

अन्तिम-पाठ छंद— यह मंगल माला सब जनविधि है
तिन सासा गल मैं धरनी ।
वासा सब सम्ब सब जग की,
सुख समूह की है भरनी ॥
मन वच तन ध्यान करै पुन
तिनके चहुंगति दुख हरनी ॥
तास भविजन पढि कहि जानते
पंचम गति वासा करनी ॥११६॥

दोहा— व्योम दंगुन न नायिये गनिये मनवा भार ।
उड्डगन मित भू पैदस्यो त्यो पुन बरने सार ॥११७॥
तीनि तीनि वसु चंद संवतसर के अंक ।
जेठ सुकल सातम दिवस, पूरन पढी निसंक ॥११८॥

॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥

३६५१ पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानंदि । पत्र स० ४ । आ० १०¾×४¾ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १७६६ फागुण । पूर्ण । वे० स० ३५ । अ भण्डार ।

३६५२ पञ्चमगलपाठ—रूपचद । पत्र सं० ६ । आ० १२½×५½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८४४ कार्त्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ५०२ ।

विशेष—अन्त मे तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं । प० खुस्यालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ६५७, ७७१, ६६०) और हैं ।

३६५३ प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६३७ । वे० स० ४१४ । क भण्डार ।

३६५४. प्रति सं० ३ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ३६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति और है ।

३६५५ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८८६ आसोज सुदी १५ । वे० स० ६१८ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र ४ चौथा नही है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २३६) और है ।

३६५६. प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २३६) और है ।

३६५७ पचस्तोत्रसंग्रह ˙˙ । पत्र स० ५३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१८ । अ भण्डार ।

विशेष—पाचो ही स्तोत्र टीका सहित हैं ।

	स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१	एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	संस्कृत
२.	कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	”
३.	विषापहार	नागचन्द्रसूरि	”
४	भूपालचतुर्विशति	आशाधर	”
५.	सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	”

३६५८ पचस्तोत्रसग्रह । पत्र स० २४ । आ० ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८०० । अ भण्डार ।

३६५६. पचस्तोत्रटीका ˙ ˙ । पत्र स० ५० । आ० १२×८ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २००३ । ट भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, विषापहार एकीभाव कल्याणमंदिर, भूपालचतुर्विंशति इन पांच स्तोत्रों की टीका है।

३१६० पद्मावत्यष्टकवृत्ति—पार्श्वदेव। पत्र सं १५। आ ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १८६७। पूर्ण। वे सं १४४। ख भण्डार।

विशेष—अन्तिम—अस्यायां पार्श्वदेवविरचितायां पद्मावत्यष्टकवृत्ती यद् किमप्यबंधयति तत्सब सर्वाभिः क्षंतव्यं देवताभिरपि। वर्णानां द्वासप्तति षत्रीर्गतिसुत्तरैरिर्म वृत्ति वैशाखे सूर्यदिने समाप्ता शुक्लसंबन्धी प्रस्यासरगणनातः पंचशतानि सातामिश्राविंशत्यक्षराणि वासवपुष्यर्क्षका ग्रामः।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता।

३१६१ पद्मावतीस्तोत्र······। पत्र सं १३। आ ११½×५_८ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११२। ज भण्डार।

विशेष—पद्मावती पूजा तथा शान्तिनाथस्तोत्र एकीभावस्तोत्र और विषापहारस्तोत्र भी है।

३१६२ पद्मावती की ढाल······। पत्र सं २। आ ६½×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१८। भ भण्डार।

३१६३ पद्मावतीदण्डक······। पत्र सं १। आ ११½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २५१। भ भण्डार।

३१६४ पद्मावतीसहस्रनाम······। पत्र स १२। आ १ ×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १८ २। पूर्ण। वे सं ११५। भ भण्डार।

विशेष—शान्तिनाथाष्टक एवं पद्मावती कवच (मंत्र) भी दिये हुये हैं।

३१६५ पद्मावतीस्तोत्र ······। पत्र सं ६। आ ९½×६ इंच। भाषा संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१२१। भ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं १ १२ १८६८) और हैं।

३१६६ प्रति स० २। पत्र सं ८। ले काल सं १८३३। वे सं २६४। ख भण्डार।

३१६७ प्रति स ३। पत्र स २। ले काल ×। वे सं २ ६। च भण्डार।

३१६८ प्रति स० ४। पत्र सं १६। ले काल ×। वे सं ४२६। ड भण्डार।

३१६९ परमज्योतिस्तोत्र—बनारसीदास। पत्र सं १। आ १२½×६½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २२११। भ भण्डार।

३१७० परमात्मराजस्तवन—पद्मनंदि। पत्र सं २। आ ६×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १२३। ख भण्डार।

३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६५ । अ भण्डार ।

अथ परमात्मराज स्तोत्र लिख्यते

यन्नामसंस्तवफलात् महता महत्यप्यष्टौ, विशुद्धय इहाशु भवंति पूर्णा ।
सर्वार्थसिद्धजनका स्वचिदेकमूर्त्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१॥
यद्धयानवज्रहननान्महता प्रयाति, कर्म्माद्रयोति विषमा शतचूर्णता च ।
अंतातिगावरगुणा प्रकटाभवेयुर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराज ॥२॥
यस्यावबोधकलनात्त्रिजगत्प्रदीपं, श्रीकेवलोदयमनतसुखाब्धिमाशु ।
सत श्रयन्ति परम भुवनार्च्य वद्य , भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥३॥
यद्दर्शनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान् ।
पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥४॥
यद्भावनादिकरणाद्भुवनाशनाच्च, प्रणश्यति कर्म्मरिपवोभवकोटि जाता ।
अभ्यन्तरेऽत्रविविधा सकलार्द्धय स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥५॥
सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दु कर्म्मदुर्मलचयाद्विमला भवति
दक्षा जिनेन्द्रगणभृत्सुपदं लभंते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥६॥
यं स्वान्तरेतु विमल विमलाविबुद्धय, शुक्लेन तत्त्वमसम परमार्थरूप ।
अर्हत्पद त्रिजगता शरण श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥७॥
यद्धयानशुक्लपविनाखिलकर्म्मशैलान्, हत्वा समाप्यशिवदा स्तववदनार्चा ।
सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजना स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराजं ॥८॥
यस्याप्तये सुगणिनो विधिनाचरति, ह्याचारयन्ति यमिनो धरपञ्चभेदान् ।
आचारसारजनितान् परमार्थबुद्धया, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥९॥
य ज्ञातुमात्मसुविदो यतिपाठकाश्च, सर्वांगपूर्वजलधेर्लघु याति पार ।
अन्यान्नयतिशिवद परसत्वबीज, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१०॥
ये साधयति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरतावनपर्वतादौ ।
श्रीसाधव शिवगते. करम तिरस्थ, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराजं ॥११॥
रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वर्ज्जितः ।
कर्म्मवानपि कुकर्म्मदूरगो, निश्चयेन भुवि य स नन्दतु ॥१२॥

च ममुरखुक्रमिदो मर्वांतक एक वप इह माप्यनेकधा ।
व्यक्त एव ममिर्मा न रामिरणां य अव्रातमक इहास्तुमिम्मस ॥१३॥

यस्तत्वं ध्यानगम्यं परपदकर तीर्थमाचाविसेव्य ।
कर्मार्थ्य ज्ञानदेहं मवभयमथनं ज्येष्ठमानदमूलं ॥
मेदातीतं कुणात्तं रहितविविमगग सिद्धसाहस्यरूपं ।
तद्वंदे स्वात्मतत्वं सिवमुखगतये स्तौमि पुरुषायमेहं ॥१४॥

पठति मित्यं परमात्मराजमहास्तवं ये विबुधाः क्रिमं न ।
तेषां मिवात्मावरतोगदरो ध्यानी पुरुो स्यात्परमात्मरूप ॥१५॥
इत्थं यो बारबारं पुरुषमपरवनैर्वर्णित संम्सुतोऽस्मिन्
सारे धर्मे विदारमा समगुणबलभि मास्तुमे व्यक्तरूप ।
ज्येष्ठ स्वध्यानदाताविमविधिपुषा ह्यानं चित्तमुद्धयै
सम्मरमेदो बकर्ता प्रकटनिजगुणो मैम्यमानी च शुद्धः ॥१६॥

इति श्री सकलकीर्तिभट्टारकविरचितं परमात्मराजस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

३६७२ परमानन्दपंचविंशति····। पत्र सं १ । आ ८×४ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११३ । ख भण्डार ।

३६७३ परमानन्दस्तोत्र··· । पत्र सं १ । आ ७½×५ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११३ । ख भण्डार ।

३६७४ प्रति स० २ । पत्र सं १ । ले काल × । वे सं २६८ । ख भण्डार ।

३६७५ प्रति स० ३ । पत्र सं २ । ले काल × । वे स २१२ । च भण्डार ।

विशेष—फूलचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे सं २११) और है ।

३६७६ परमानन्दस्तोत्र·······। पत्र सं १ । आ ११×७½ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १६६७ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वे सं ४१८ । झ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३६७७ परमार्थस्तोत्र ···। पत्र सं ४ । आ ११¾×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ ८ । ख भण्डार ।

विशेष—सूर्य की स्तुति की गयी है । प्रथम पत्र म कुछ लिखने से रह गया है ।

३९७८ पाठसंग्रह । पत्र सं० ३६ । आ० ४½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९२८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ हैं— जैन गायत्री उर्फ वज्रपञ्जर, शान्तिस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र, णमोकारकल्प, न्हावणकल्प

३९७९ पाठसंग्रह । पत्र सं० १० । आ० १२×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । अ भण्डार ।

३९८० पाठसंग्रह—संग्रहकर्त्ता-जैतराम बाफना । पत्र सं० ७० । आ० ११¾×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

३९८१ पात्रकेशरीस्तोत्र । पत्र सं० १७ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक हैं । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३९८२ पार्थिवेश्वरचिन्तामणि । पत्र सं० ७ । आ० ८½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८६० भादवा सुदी ८ । वे० सं० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि की थी ।

३९८३ पार्थिवेश्वर । पत्र सं० ३ । आ० ७½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० १५४४ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३९८४ पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

३९८५ पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० १ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९४ । ख भण्डार ।

३९८६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । झ भण्डार ।

३९८७ पार्श्वनाथ एवं वर्द्धमानस्तवन । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

३९८८ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र सं० ३ । आ० १०¾×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक भी है ।

३९८८. पार्श्वनाथस्तोत्र——। पत्र सं १२। आ १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २२३। क भण्डार।

विशेष—मन्त्र सहित स्तोत्र हैं। अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं।

३९९. पार्श्वनाथस्तोत्र——। पत्र सं १। आ १२¾×७ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७९९। क भण्डार।

३९९१ पार्श्वनाथस्तोत्र——। पत्र सं १। आ १ ¾×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ९९१। क भण्डार।

३९९. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका——। पत्र सं० २ आ ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १४२। अ भण्डार।

३९९३ पार्श्वनाथस्तोत्रटीका——। पत्र सं २। आ १ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ९८७। क भण्डार।

३९९४ पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा—द्यानतराय। पत्र सं १। आ १ ×५½ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २ ५५। क भण्डार।

३९९५ पार्श्वनाथाष्टक——। पत्र सं ४। आ १०×५ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५७। क भण्डार।

विशेष—प्रति मन्त्र सहित है।

३९९६ पार्श्वमहिम्नस्तोत्र—महामुनि राजसिंह। पत्र सं ४। आ ११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं० १९८७। पूर्ण। वे सं ७७। क भण्डार।

३९९७ प्रश्नोत्तररत्नमाला——। पत्र सं ७। आ ८×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८९। क भण्डार।

३९९८ प्रातःस्मरणमन्त्र——। पत्र सं १। आ ८¾×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १४८६। क भण्डार।

३९९९ भक्तामरपञ्जिका——। पत्र सं ८। आ ११×४ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १७८१। पूर्ण। वे सं ११८। क भण्डार।

विशेष—श्री हीरानन्द ने इम्पुर में प्रतिलिपि की थी।

४००० भक्तामरस्तोत्र—मानतुगाचार्य । पत्र स० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२०३ । अ भण्डार ।

४००१ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १७२० । वे० स० २६ । अ भण्डार ।

४००२ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७५५ । वे० स० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४००३ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है । आ० ५×२ इंच है । इसके अतिरिक्त २ पत्र पुट्ठो की जगह हैं । २×१½ इंच चौडे पत्र पर णामोकार मन्त्र भी है । प्रति पदर्शन योग्य है ।

४००४ प्रति सं० ५ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७५५ । वे० स० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ६२०, ६५६, ११३५, ११८६, १३६६) और हैं

४००५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८६७ पौष सुदी ८ । वे० स० २५१ । ख भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं । मूल प्रति मथुरादास ने निमखपुर मे लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया । इसी भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० १२८, २८८, १८५६) और हैं ।

४००६ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० ७४ । घ भण्डार ।

४००७ प्रति स० ८ । पत्र स० ६ से ११ । ले० काल स० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ५४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १२ प्रतिया (वे० स० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और हैं ।

४००८ प्रति स० ६ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० ७३८ । च भण्डार ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० स० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३६) और है ।

४००९ प्रति स० १० । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८२२ चैत्र बुदी ६ । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतिया (वे० स० १३४ (४) १३६, २२६) और हैं ।

४०१०. प्रति स० ११ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १७० । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० स० २१५) और है ।

४०११ प्रति सं० १२ । पत्र सं ५ । ले काल × । वे सं १७५ । ख भण्डार ।

४०१२. प्रति स० १३ । पत्र सं ११ । ले काल स १ ७७ पौष सुदी १ । वे सं २६१ । म

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे स २६१ ३३१ ५२५) और हैं ।

४०१३ प्रति स० १४ । पत्र सं ३ से ११ । ले काल सं १६३२ । अपूर्ण । वे सं २ १३ । ट भण्डार ।

विशेष—इस प्रति में ५२ श्लोक हैं । पत्र १ २ ४ ६ ७ ६ ११ यह पत्र नहीं हैं । प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है । इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे सं १६१४ १७ ४ १६६६ २ १४) और हैं ।

४०१४ भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्र० रायमल्ल । पत्र सं १ । आ ११३×६ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र काल सं १६६६ । ले काल सं १७६६ । पूर्ण । वे सं १ ७६ । म भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की टीका ग्रीवापुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे की गयी । प्रति कथा सहित है ।

४ १५ प्रति स० २ । पत्र सं ४८ । ले काल सं १७२४ आसोज सुदी ६ । वे० सं २८७ । म भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स १४३) और है ।

४०१६ प्रति स० ३ । पत्र सं ४ । ले काल सं १६११ । वे सं ६४४ । क भण्डार ।

४०१७ प्रति स० ४ । पत्र सं १४६ । ले काल × । वे सं ६६ । ग भण्डार ।

विशेष—फतेचन्द गंगवाल ने मन्नालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई ।

४०१८ प्रति स० ५ । पत्र सं ५५ । ले काल स १०५४ पौष सुदी ८ । वे सं ५५७ । क भण्डार ।

४०१९. प्रति स० ६ । पत्र सं ४७ । ले काल सं १८३२ पौष सुदी २ । वे सं ६६ । छ भण्डार ।

विशेष—मालानेर में पं सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय मे ईसरदास की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

४०२० प्रति स० ७ । पत्र सं ४१ । ले काल स १८७३ चैत्र सुदी ११ । वे सं १५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरिनारायण ब्राह्मण ने पं कालूराम के पठनार्थ आदिनाथ चैत्यालय में प्रति लिपि की थी ।

४ ०२१ प्रति स० ८ । पत्र सं ४८ । ले काल सं १६८८ फागुन सुदी ८ । वे स २८ । म भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति- संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्रवार नक्षित्र अनुराध व्यतिपात नाम जोगे महाराजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रसालजी बूंदीराज्ये इदपुस्तक लिखाइत। साह श्री स्योपा ततपुत्र सहलाल तत् पुत्र साह श्री धणराज भाई मनराज गोत्रे पटवोड जाती बघेरवाल इद पुस्तकं पुनिरुष दीयते। लिखत जोसी नराइण।

४०२२. प्रति स० ६। पत्र स० ३६। ले० काल स० १७६१ फागुण। वे० स० ३०३। ञ भण्डार।

४०२३. भक्तामरस्तोत्रटीका—हर्षकीर्त्तिसूरि। पत्र स० १०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७६। अ भण्डार।

४०२४ प्रति स० २। पत्र स० २६। ले० काल स० १६४०। वे० स० १६२५। ट भण्डार।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका ···। पत्र सं० १२। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६१। ट भण्डार।

४०२६ प्रति स० २। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० स० १८४४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र चिपके हुये है।

४०२७ प्रति स० ३। पत्र सं० १६। ले० काल स० १८७२ पौष बुदी १। वे० स० २१०६। अ भण्डार।

विशेष—मन्नालाल ने शीतलनाथ के चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ११६८) और है।

४०२८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४८। ले० काल ×। वे० स० ५६६। क भण्डार।

४०२९ प्रति स० ५। पत्र स० ७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १४६।

विशेष—३६वे काव्य तक है।

४०३० भक्तामरस्तोत्रटीका । पत्र स० ११। आ० १२½×८ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १६१८ चैत सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १६१२। ट भण्डार।

विशेष—अक्षर मोटे है। सस्कृत तथा हिन्दी मे टीका दी हुई है। सगही पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी। अ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २०८२) और है।

४०३१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्र सहित । पत्र स० २७। आ० १०×४½ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० २८५। अ भण्डार।

विशेष—श्री नयनसागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। अन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र दिया हुआ है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे स १५१) और है।

४०३२ प्रति स० २। पत्र सं १२। ले काल सं १८२१ वैशाख सुदी ७। वे सं १२६। ख भण्डार।

विशेष—गोविन्दगढ में पुरुषोत्तमसागर न प्रतिलिपि की थी।

४०३३ प्रति स० ३। पत्र सं २१। ले काल ×। वे सं ९७। ग भण्डार।

विशेष—मन्त्रों के चित्र भी हैं।

४०३४ प्रति स० ४। पत्र सं ११। ले काल स १८२१ वैशाख सुदी ११। वे सं १। घ भण्डार।

विशेष—पं सवाराम के शिष्य गुमान ने प्रतिलिपि की थी।

४०३५ भक्तामरस्तोत्रभाषा—जयचन्द छाबडा। पत्र सं ९४। आ १२३×५ इ च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-स्तोत्र। र काल स १८७ कार्तिक सुदी १२। पूर्ण। वे सं ५४१।

विशेष—क भण्डार मे २ प्रतियां (वे सं ५४२ ५४३) और हैं।

४०३६ प्रति सं० २। पत्र सं २१। ले काल सं १९६ । वे सं ५६६। क भण्डार।

४०३७ प्रति सं० ३। पत्र स ५५। ले काल स १९६ । वे सं ५५४। च भण्डार।

४०३८ प्रति स० ४। पत्र सं २२। ले काल सं १९ ४ वैसाख सुदी ११। वे सं १०९। छ भण्डार।

४०३९ प्रति स० ५। पत्र सं १२। ले काल ×। वे सं २७१। झ भण्डार।

४०४० भक्तामरस्तोत्रभाषा—हेमराज। पत्र सं ८। आ ८$_3$×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११२५। अ भण्डार।

४०४१ प्रति स० २। पत्र सं ४। ले काल सं १८८४ माघ सुदी २। वे सं ५४। ग भण्डार।

विशेष—दीवान अमरचन्द के मन्दिर में प्रतिलिपि की गयी थी।

४०४२ प्रति स० ३। पत्र सं ९ से १ । ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ५५१। ङ भण्डार।

४०४३ भक्तामरस्तोत्रभाषा—गंगाराम। पत्र सं २ स २०। आ १२$_3$×५$_3$ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १८९७। अपूर्ण। वे सं २ ७। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नही है। पहिले मूल फिर गगाराम कृत सवैया, हेमचन्द्र कृत पद्य, कही २ भाषा तथा इसमे आगे ऋद्धि मन्त्र सहित है।

अन्त मे लिखा है— साहजी ज्ञानजी रामजी उनके २ पुत्र शोलालजी, लघु भ्राता चैनसुखजी ने ऋषि भागचन्दजी जती को यह पुस्तक पुण्यार्थ दिया स० १८७२ का साल मे ककोड़ मे रहे छै।

४०४४ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ६ से १०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७८७। अपूर्ण। वे० स० १२६४। अ भण्डार।

४०४५ प्रति स० २। पत्र स० ३३। ले० काल स० १८२८ मगसिर बुदी ६। वे० स० २३६। छ भण्डार।

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये सभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

४०४६ प्रति सं० ३। पत्र स० २०। ले० काल ×। वे० स० ६५३। च भण्डार।

४०४७ प्रति स० ४। पत्र स० २१। ले० काल स० १८९२। वे० स० १५७। झ भण्डार।

विशेष—जयपुर मे पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०४८ प्रति स० ५। पत्र स० ३३। ले० काल स० १८०१ चैत्र बुदी १३। वे० स० २६०। ञ भण्डार।

४०४९ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ३। आ० १०३/४×७३/४ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६५२। च भण्डार।

४०५० भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कवि। पत्र स० ८। आ० ६३/४×४१/२ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८४३। पूर्ण। वे० स० ४१। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। अ भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३२३) और है।

४०५१ प्रति स० २। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० २६८। ख भण्डार।

४०५२ प्रति स० ३। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० ५७२। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७३) है।

४०५३ भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर। पत्र सं० १४। आ० ६३/४×४१/२ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७७८ भादवा बुदी १२। पूर्ण। वे० स० ६। अ भण्डार।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ प० आशाधर ने टीका लिखी थी। प० हीराचन्द के शिष्य चोखचन्द्र के पठनार्थ मौजमावाद मे प्रतिलिपि कराई गई।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिसप्तैन्दु (१७७८) मिते भाद्रपद कृष्णा द्वादशी तिथौ मौजमाबादनगरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकोत्तम श्री श्री १ ८ देवेन्द्रकीर्त्ति तस्य आम्नायकारी बुधजी श्रीहीरानन्दजीकस्य शिष्येन विनयवता चोखचन्द्र गुरुवशयेन स्वपठनार्थ लिखितं भूपाल चतुविंशतिका टीका विनयचन्द्रस्यार्थमित्याशाधरविरचितामूपालचतुर्विंशते जिनेन्द्रस्तुतेष्टीका परिसमाप्ता ।

इस भण्डार में एक प्रति (वे सं ४०) और है ।

४०५४ प्रति स० २ । पत्र सं १६ । ले काल सं १५१२ मंगसिर सुदी १ । वे सं० २११ । अ भण्डार ।

विशेष– प्रशस्ति—स० १५१२ वर्षे मार्ग सुदी १ गुरुवासरे श्रीचम्पपुरमुस्थाने श्रीचन्द्रप्रभुचैत्यालय सिद्धये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुंदाचार्यान्वये ..... ।

४०५५ भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्रटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२ ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र नरेन्द्र द्वारा भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र रचा गया था ऐसा टीका की पुष्पिका में लिखा हुआ है । इसका उल्लेख २७वें पद्य में निम्न प्रकार है ।

य· विनयचन्द्रनामाख्यौवरी जनि समभूत । कलितचंद्रान् । उपशमवृत्तोपक्षेपतैयमुपशम· साक्षान्मूर्तिमाद् स· कर्मभूत· सम्यकारचन्द्र· संतः पंडिताः एव चकोराः तेषां प्रमोदये हितीमधन्य· यस्यगुचि चरितं चरितनो। शुचि च तच्चरितं च तचरणं शीलं शुचि चरित चरिष्णुः तस्य वाचो वाच्य· जगत्साकाधिकस्ति कर्मभूतावाच· अमृतयर्मो अमृतधर्मे यासां तास्तवचौक्ताः धामत्रसंवर्मधर्मा ज्ञानसरणी संवर्ताः विस्ताराः ज्ञानसवर्मास्तेषमें यासां तास्तस्ता ।।२७।। इति विनयचन्द्रनरेन्द्र विरचितं भूपाल स्तोत्र समाप्तं ।

प्रारम्भ में टीकाकार का मंगलाचरण नहीं है । मूल स्तोत्र की टीका प्रारम्भ करदी गई है ।

४०५६ भूपालचौबीसीभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं २४ । आ १२३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र काल सं १९३१ चैत्र सुदी ४ । ले काल सं १९३ । पूर्ण । वे सं २९१ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ५९२) और है ।

४०५७ मृत्युमहोत्सव— । पत्र सं १ । आ ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ९९१ । ञ भण्डार ।

४०५८. महर्षिस्तवन······। पत्र सं ३१ से ७४ । आ ५×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय स्तोत्र । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ५८८ । ञ भण्डार ।

४०५९. महर्षिस्तवन ...। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त मे पूजा भी दी हुई है ।

४०६० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४ । वे० स० ९११ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

४०६१ महामहिम्नस्तोत्र ....। पत्र स० ४ । आ० ८×४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १९०६ फागुन बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । ज भण्डार ।

४०६२ प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३१५ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४०६३ महामहर्षिस्तवनटीका । पत्र सं० २ । आ० ११३⁄४×४३⁄४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

४०६४ महालक्ष्मीस्तोत्र । पत्र स० १० । आ० ८३⁄४×६३⁄४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २९५ । ख भण्डार ।

४०६५. महालक्ष्मीस्तोत्र । पत्र स० ६ मे ९ । आ० ९×३३⁄४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–वैदिक साहित्य स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७८२ ।

४०६६ महावीराष्टक—भागचन्द । पत्र सं० ४ । आ० ११३⁄४×६ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी प्रति मे जिनोपदेशोपकारस्मर स्तोत्र एवं आदिनाथ स्तोत्र भी हैं ।

४०६७. महिम्नस्तोत्र .. । पत्र स० ७ । आ० ९×६ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६ । झ भण्डार ।

४०६८. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्त्ति । पत्र सं० १ । आ० १२×६ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८२२ पौष बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । क भण्डार ।

४०६९ युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र । पत्र सं० २ से १४ । आ० ११×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०९४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम तीन पत्रो मे पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं । इसमे आगे महिम्नस्तोत्र हैं ।

४०७० राधिकानाममाला""""। पत्र सं १। आ १ ३×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स १७६६। ट भण्डार।

४०७१ रामचन्द्रस्तवन"" ""। पत्र सं ११। आ १ ×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं० ३१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम— श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूर्णम् ॥ १ पत्र है।

४०७२. रामबत्तीसी—जगनकवि। पत्र सं १। आ १¾×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले० काल सं १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७। पूर्ण। वे सं १५१। ट भण्डार।

विशेष—कवि पौहकरणा (पुष्करणा) जाति के थे। नरायणा में बद्रु व्यास ने प्रतिलिपि की थी।

४००३ रामस्तवन""""। पत्र सं ११। आ १ ३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २११२। ट भण्डार।

विशेष—११ से आगे पत्र नहीं हैं। पत्र नीचे की ओर से फटे हुए हैं।

४०७४ रामस्तोत्र""""। पत्र सं १। आ १ ×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १७२५ फागुण सुदी ११। पूर्ण। वे सं ५५८। छ भण्डार।

विशेष—जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४०७५ लघुशान्तिस्तोत्र। पत्र सं १। आ १ ×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१४६। अ भण्डार।

४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव। पत्र सं २। आ ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ११३। अ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १ ३६) और है।

४०७७. प्रति स० २। पत्र सं १। ले काल ×। वे सं १४८। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १४४) और है।

४०७८ प्रति स० ३। पत्र सं १। ले काल ×। वे सं १८२८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

४०७९ लक्ष्मीस्तोत्र ......। पत्र सं ४। आ ८×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं १४२१। अ भण्डार।

विशेष—ट भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं २ ६७) और है।

४०८०. लघुस्तोत्र ·· । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९६ । ञ भण्डार ।

४०८१. वज्रपंजरस्तोत्र · । पत्र सं० १ । आ० ८३/४×६ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । ङ भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र में होम का मन्त्र है ।

४०८३ वर्द्धमानद्वात्रिंशिका—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० १२ । आ० १२×५१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६७ । ट भण्डार ।

४०८४. वर्द्धमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं० १२ । आ० ४३/४×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १९३३ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १४ । ज भण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उत्तरपुराण की राजा श्रेणिक की स्तुति है तथा ३३ श्लोक हैं । संग्रहकर्ता श्री फतेहलाल शर्मा है ।

४०८५. वर्द्धमानस्तोत्र··· ····। पत्र सं० ५ । आ० ७१/२×६१/२ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३ से आगे निर्वाणकाण्ड गाथा भी हैं ।

४०८६. वसुधारापाठ······। पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९० । छ भण्डार ।

४०८७. वसुधारास्तोत्र · ··· । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७९ । ख भण्डार ।

४०८८ प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७१ । ङ भण्डार ।

४०८९ विद्यमानबीसतीर्थंकरस्तवन—मुनि दीप । पत्र सं० १ । आ० ११×४३/४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९३३ ।

४०९० विषापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र सं० ४ । आ० १२१/२×६ । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८१२ फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिलिपि पं० मोहनदासजी ने अपने शिष्य गुमानीरामजी के पठनार्थ क्षेमकरणजी की पुस्तक से वसई (बस्सी) नगर मे शान्तिनाथ चैत्यालय में की थी ।

४०६१ प्रति स० २ । पत्र सं ४ । ले काल X । वे सं ६७१ । क भण्डार ।

४०६२. प्रति स० ३ । पत्र सं १२ । ले काल X । वे सं १२२ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धिप्रियस्तोत्र भी है ।

४०६३ प्रति स० ४ । पत्र सं १२ । ले काल X । वे सं १२११ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६४ विषापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूरि । पत्र स १४ । आ १ X४½ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे सं ५ । ख भण्डार ।

४०६५. प्रति स० २ । पत्र सं ८ से १६ । ले काल सं १७७८ भादवा सुदी ६ । वे स ८८१ । क भण्डार ।

विशेष—मौजमाबाद नगर में पं घोखचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

४०६६ विषापहारस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं ११ । आ १२½x५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र काल सं १६१ फागुण सुदी ११ । ले काल X । पूर्ण । वे सं ६६४ । क भण्डार ।

विशेष— इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ६६५) और है ।

४०६७ विषापहारस्तोत्रभाषा—अचलकीर्त्ति । पत्र सं ६ । आ ६½X५½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे सं १५८५ । ट भण्डार ।

४०६८ वीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स १ । आ ८½X४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल X । ले काल X । अपूर्ण । वे सं २५७ । ख भण्डार ।

४०६६. वीरछत्तीसी⋯⋯ । पत्र सं २ । आ १ X४½ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे सं २१५ । ख भण्डार ।

४१०० वीरस्तवन⋯⋯ । पत्र स १ । आ ६½X४½ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र काल X । ले काल सं १८७६ । पूर्ण । वे सं १२४८ । क भण्डार ।

४१०१ वैराग्यगीत—महमद । पत्र सं १ । आ ८X१½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे स २१२६ । ख भण्डार ।

विशेष—'भूल्यो भमरा रे कांई भमै ११ अंतरे हैं ।

४१०२ षट्पाठ—बुधजन । पत्र सं १ । आ १X६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र काल X । ले काल सं १५५ । पूर्ण । वे सं ३१५ । ख भण्डार ।

४१०३. षट्पाठ । पत्र स० ६ । आ० ४×६ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७ । क भण्डार ।

४१०४ शान्तिघोषणास्तुति ... । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

४१०५ शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल स० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३५ । अ भण्डार ।

विशेष—शातिनाथ का एक स्तवन और है ।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन ... । पत्र स० १ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है ।

अन्तिमपद्य—

कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुण हिय मे धरै ।
रोग सोग सताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ॥

इति शान्तिनाथस्तोत्र सपूर्ण ।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०७० । अ भण्डार ।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य–

नाना विचित्र भवदु खराशि, नाना प्रकारं मोहाग्निपाशं ।
पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथ ॥१॥
संसारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिवध ।
ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥२॥
काम च क्रोध मायाविलोभ, चतु कषायं इह जोव बध ।
ते बध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥३॥
नोद्वाक्यहीने कठिनस्यचित्ते, परजीवनिंदा मनसा च वाचा ।
ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथं ॥४॥
चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्न परिपालनीयं ।
ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथ ॥५॥

पापस्य हरणं पुण्यस्य करणं हो शान्तिजीव बहुजन्मदुःखं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेव इह जन्मसरणं तव शान्तिनाथं ॥६॥
परद्रव्यचोरी परदारसेवा शकादिकक्षा भवमुत्थबंधं ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेव इह जन्मसरणं तव शान्तिनाथं ॥७॥
पुत्राणि मित्राणि कलितवर्दं इहवंदमध्ये बहुजीवबंधा ।
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेव इह जन्मसरणं तव शान्तिनाथ ॥८॥

जयति पठति नित्यं श्री शान्तिनाथाधिधाति
स्तवनमधुरवाणी पापतापोपहारी ।
कृतमुनिभद्र सर्वकार्येषु नित्यं
—— —— —— —— —— —— ॥९॥

इतिश्रीशान्तिनाथस्तोत्र संपूर्णं । शुभम् ॥

४१०८ शान्तिनाथस्तोत्र······ । पत्र सं २ । आ ६×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १७११ । अ भण्डार ।

४१०९ शान्तिपाठ······ । पत्र सं ३ । आ ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल । ले काल × । पूर्ण । वे स ११६ । छ भण्डार ।

४११० शान्तिविधान······ । पत्र सं ७ । आ ११½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे सं २११ । अ भण्डार ।

४१११ श्रीपतिस्तोत्र—जैनसुखजी । पत्र सं ९ । आ ८×६½ इंच । भाषा हिन्दी । विषय स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७१२ । अ भण्डार ।

४११२ श्रीस्तोत्र······ । पत्र स २ । आ ११×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय स्तोत्र । र काल । ले काल सं १९ × चैत बुदी १ । पूर्ण । वे सं १८ × । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४११३ सप्तनयविचारस्तवन······ । पत्र सं ८ । आ ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११६ ।

विशेष—१७ पद्य हैं ।

४११४ समवशरणस्तोत्र ... । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १७६८ फागुन सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २६६ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

प्रारम्भ— वृषभाद्यानभिवद्यान् वदित्वा वीरपश्चिमजिनेंद्रान् ।

भक्त्या नतोत्तमाग स्तोष्ये तत्समवशरणाणि ।।२।।

४११५ समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि । पत्र स० २ से ६ । आ० ११½×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७ । अ भण्डार ।

४११६ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ७७८ । अ भण्डार ।

४११७ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १७८५ माघ बुदी ५ । वे० स० ३०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—प० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य प० मनोहर ने प्रतिलिपि की थी ।

४११८. सभवजिनस्तोत्र—मुनि गुणनन्दि । पत्र स० २ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६० । ङ भण्डार ।

४११६. समुदायस्तोत्र ... । पत्र स० ५३ । आ० १३×८½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वे० स० ११५ । घ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है ।

४१२० समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन । पत्र स० ११ । आ० १०½×४¾ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत श्लोको पर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

४१२१ सर्वतोभद्रमत्र । पत्र स० २ । आ० ६×३½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८६७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० १४२२ । अ भण्डार ।

४१२२ सरस्वतीस्तवन—लघुकवि । पत्र स० ३ से ५ । आ० ११½×५½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नही हैं ।

अन्तिमपुष्पिका— इति भारत्यालघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णतामागतम् ।

४१२३ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ११५५ । अ भण्डार ।

४१२४ सरस्वतीस्तोत्र—बृहस्पति । पत्र स १ । मा ८३×४३ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र (जैनेतर) । र काल × । ले काल स १८५? । पूर्ण । वे सं १२२ । झ भण्डार ।

४१२५ सरस्वतीस्तोत्र—श्रुतसागर । पत्र सं २१ । मा १ ३×४३ इन्च । भाषा संस्कृत । विषय स्तवन । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स १७०४ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र नहीं है ।

४१२६ सरस्वतीस्तोत्र ...... । पत्र स ३ । मा ८×४३ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स ८ १ । क भण्डार ।

४१२७ प्रति स० २ । पत्र स १ । ले काल सं १८१२ । वे सं ८३१ । क भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । भारतीस्तोत्र भी नाम है ।

४१२८ सरस्वतीस्तोत्रमाला (शारदा-स्तवन)........ । पत्र सं २ । मा ६×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२६ । क भण्डार ।

४१२६ सहस्रनाम (लघु)—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं ४ । मा ११३×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १७१४ आश्विन बुदी १ । पूर्ण । वे सं ६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त भद्रबाहु विरचित क्षमांकुश पाठ भी है । ४१ श्लोक हैं । आनन्दराम ने स्वयं जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । 'पोथी जोधराज गोदीका' की पट्टिका भी है पत्र ४ मु सांगानेर ।

४१३० सारचतुर्विंशति ...... । पत्र सं ११२ । मा १२×५५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । र काल × । ले काल सं १८६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे सं ७८८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम ११ पृष्ठों में सकलकीर्ति कृत भावनाचार है ।

४१३१ सायमसन्ध्यापाठ ...... । पत्र सं ७ । मा १ ×४३ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । र काल । ले काल स १८२४ । पूर्ण । वे सं १०८ । स भण्डार ।

४१३ सिद्धवन्दना ...... । पत्र सं ८ । मा ११×५३ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र काल । ले काल सं १८८६ फाल्गुन सुदी ११ । पूर्ण । वे सं १ । ग भण्डार ।

विशेष—श्रीकालिकचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३३ सिद्धस्तवन ...... । पत्र सं ८ । मा ८३ ६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र काल × । ले काल । अपूर्ण । वे सं ११६२ । ट भण्डार ।

४१३४ सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनंदि। पत्र स० ८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल स० १८८६ भाद्रपद बुदी ६। पूर्ण। वे० स० २००८। अ भण्डार।

४१३५ प्रति स० २। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० स० ८०६। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है।

४१३६. प्रति स० ३। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० २६२। ख भण्डार।

विशेष—हासिये मे कठिन शब्दो के अर्थ दिये हैं। प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है। अक्षर काफी मोटे हैं। मुनि विशालकीर्त्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २६३, २६८) और हैं।

४१३७ प्रति स० ४। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० ८५३। ङ भण्डार।

४१३८ प्रति स० ५। पत्र स० ५। ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी २। अपूर्ण। वे० स० ४०६। च भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। जयपुर मे अभयचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी।

४१३९ प्रति स० ६। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० स० १०२। छ भण्डार।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३८, १०३) और है।

४१४० प्रति स० ७। पत्र स० ५। ले० काल स० १८९८। वे० स० १०६। ज भण्डार।

४१४१. प्रति स० ८। पत्र स० ६। ले० काल ×। वे० सं० १६८। ञ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अमरसी ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २४७) और है।

४१४२ प्रति स० ६। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० स० १८२५। ट भण्डार।

४१४३ सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका ˙ । पत्र स० ५। आ० १३×५ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७५६ आसोज बुदी २। पूर्ण। वे० स० ३६। ञ भण्डार।

विशेष—त्रिलोकदास ने अपने हाथ मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४१४४ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० ३६। आ० १२½×५ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल स० १९३०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८०५। क भण्डार।

४१४५ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—नथमल। पत्र स० ८। आ० ११×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८४७। क भण्डार।

४१४६. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ८५१। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८५२) और है।

४१४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र……। पत्र सं० ११। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८०४। ङ भण्डार।

४१४८. सुगुरुस्तोत्र……। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८। ख भण्डार।

४१४९. वसुधारास्तोत्र……। पत्र सं० १। आ० ११½×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४१। ख भण्डार।

विशेष—अन्त में लिखा है– मन घंटाकर्णकल्प लिख्यते।

४१५०. सौंदर्यलहरीस्तोत्र—भट्टारक जगद्भूषण। पत्र सं० १। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४४। पूर्ण। वे० सं० १८२७। ट भण्डार।

विशेष—कुन्दकुन्दी कर्बट में पार्श्वनाथ चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति आमेर वालों ने धर्मसुख के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४१५१. सौंदर्यलहरीस्तोत्र……। पत्र सं० ७४। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७ भादवा बुदी २। पूर्ण। वे० सं० २७४। ज भण्डार।

४१५२. स्तुति……। पत्र सं० १। आ० १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८६७। ख भण्डार।

विशेष—भगवान महावीर की स्तुति है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

प्रारम्भ—   त्राता नेता महात्राता भर्त्ता भर्त्ता जगत्प्रभु
                        वीरो वीरो महावीरोऽर्च्यो देवाधि नमोस्तुति ॥१॥

४१५३. स्तुतिसंग्रह……। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२४। ख भण्डार।

४१५४. स्तुतिसंग्रह……। पत्र सं० २ से १७। आ० ११×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २११९। ट भण्डार।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीस्तवन चौबीसतीर्थङ्करस्तवन आदि हैं।

४१५५ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० ६ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इ च । भाषा–प्राकृत, संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०५३ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र है ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
१. शान्तिकरस्तोत्र	मुन्दरसूर्य	प्राकृत
२ भयहरस्तोत्र	×	"
३. लघुशान्तिस्तोत्र	×	सस्कृत
४ वृहद्शान्तिस्तोत्र	×	"
५ अजितशान्तिस्तोत्र	×	"

२रा पत्र नही है । सभी श्वेताम्बर स्तोत्र हैं ।

४१५६ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० १० । आ० १२×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३०४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

१ पद्मावतीस्तोत्र — ×।

२ कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र — ×।

३. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा एव स्तोत्र — लक्ष्मीसेन

४ पार्श्वनाथपूजा — ×।

५ लक्ष्मीस्तोत्र — पद्मप्रभदेव

४१५७ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० २३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३८५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न सग्रह है– १ एकीभाव, २ विपापहार, ३. स्वयंभूस्तोत्र ।

४१५८ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० ४६ । आ० ८$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत, सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १७७६ कार्त्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १३१२ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है । निम्न सग्रह हैं—

१ निर्वाणकाण्डभाषा—	×	हिन्दी
२ श्रीपालस्तुति	×	सस्कृत
३ पद्मावतीस्तवन मत्र सहित	×	"

भगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, घण्टाकर्णमन्त्र आदि स्तोत्रो का सग्रह है।

४१६६ स्तोत्रसग्रह ·। पत्र स० ८२। आ० ११३×६ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८३२। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम स्तोत्र अपूर्ण है। कुछ स्तोत्रो की सस्कृत टीका भी साथ मे दी गई है।

४१६७ प्रति स० २। पत्र स० २५७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८३३। क भण्डार।

४१६८ स्तोत्रपाठसंग्रह ··। पत्र सं० ५७। आ० १३×६ इञ्च। भाषा–सस्कृत, हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ८३१। क भण्डार।

विशेष—पाठो का सग्रह है।

४१६९ स्तोत्रसग्रह ·। पत्र स० ८१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत, प्राकृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८२६। क भण्डार।

विशेष—निम्न सग्रह है।

नामस्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	प्राकृत, सस्कृत
सामायिक पाठ	×	सस्कृत
श्रुतभक्ति	×	प्राकृत
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	सस्कृत
सिद्धभक्ति तथा अन्य भक्ति सग्रह	—	प्राकृत
स्वयभूस्तोत्र	समन्तभद्र	सस्कृत
देवागमस्तोत्र	"	सस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	"
भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	"
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"
भूपालचतुर्विशतिका	भूपालकवि	"
महिम्नस्तवन	जयकीर्त्ति	"
समवशरण स्तोत्र	विष्णुसेन	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
महर्षि स्तवन	×	संस्कृत
शान्तांकुशस्तोत्र	×	"
चित्रबंधस्तोत्र	×	"
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभ देव	"
नेमिनाथ एकाक्षरीस्तोत्र	पं. शालि	"
लघु सामायिक	×	"
चतुर्विंशतिस्तवन	×	"
यमकाष्टक	भ. अमरकीर्ति	"
यमकस्तव	×	"
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"
वर्द्धमानस्तोत्र	×	"
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	×	"
मह श्रीग्रष्टक	भावचन्द	"
लघुसामायिक	×	"

४१७० प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले. काल × । वे. सं. ८२४ । क भण्डार ।

विशेष—अधिकांश उक्त पाठों का ही संग्रह है ।

४१७१ प्रति सं० ३ । पत्र सं. १९८ । ले. काल × । वे. सं. ८२१ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त पाठों के अतिरिक्त निम्न पाठ और हैं ।

वीतरागस्तवन	×	संस्कृत
श्रीपार्श्वजिनेश्वरस्तोत्र	×	"

४१७२ स्तोत्रसंग्रह———। पत्र सं. ११७ । आ. १२½×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. ८२७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	संस्कृत
सामायिक	×	"
शान्तिपाठबृह	×	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेरहकाठिया	बनारसीदास	"
चैत्यवदना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पचकल्याणपूजा	×	"

४१८७. स्तोत्रसंग्रह" । पत्र स० ५१ । आ० ११×७३ इ च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६५ । ङ भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है ।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्ण
सामायिकपाठ	प० महाचन्द्र	"	पूर्ण
सामायिकपाठ	×	"	अपूर्ण
पंचपरमेष्ठीगुण	×	"	पूर्ण
लघुसामायिक	×	सस्कृत	"
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसग्रहभाषा	×	"	अपूर्ण
निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदडक	दौलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	×	"	अपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	पूर्ण
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	अपूर्ण
आलोचनापाठ	×	"	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	सस्कृत	"

४१७६ स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १४। आ० ७×४½ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल सं० १८४४ माह सुदी १। पूर्ण। वे० सं० २१७। ख भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

ज्वालामालिनी मुनीश्वरों की जयमाल ऋषिमंडलस्तोत्र एवं नमस्कारस्तोत्र।

४१७७ स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २४। आ० ९×४ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१९। ख भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

पद्मावतीस्तोत्र	×	संस्कृत	१ से १ पत्र
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	११ से २ पत्र
स्वर्णाकर्षणविधान	महीधर	"	२४

४१७८ स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० ८१। आ० ७½×४ इन्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८११। क भण्डार।

४१७९ स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २७। आ० १½×४½ इन्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१८। क भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

भक्तामर, एकीभाव विषापहार, एवं भूपालचतुर्विंशतिका।

४१८० स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० १ से ५१। आ० ६×६ इन्च। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१७। क भण्डार।

४१८१ स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं० २१ से १४१। आ० ८×५ इन्च। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१६। क भण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी	अपूर्ण
लघुशांतिक	×	संस्कृत	
देवसिद्धपूजा	×	"	
शान्तिपाठ	×	"	
जिनेन्द्रदर्शनस्तोत्र	×	हिन्दी	

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	”
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	”
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	”
तेरहकाठिया	बनारसीदास	”
चैत्यवदना	×	”
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	”
पचकल्याणपूजा	×	”

४१८७. स्तोत्रसंग्रह····। पत्र स० ५१। आ० ११×७३ इच। भाषा–सस्कृत-हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८६५। ङ भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्ण
सामायिकपाठ	प० महाचन्द्र	”	पूर्ण
सामायिकपाठ	×	”	अपूर्ण
पंचपरमेष्ठीगुण	×	”	पूर्ण
लघुसामायिक	×	सस्कृत	”
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	”
द्रव्यसग्रहभाषा	×	”	अपूर्ण
निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विंशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	”
चौबीसदडक	दौलतराम	”	”
परमानन्दस्तोत्र	×	”	”
भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	अपूर्ण
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	पूर्ण
स्वयभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	”	[illegible]
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	”	”
आलोचनापाठ	×	”	पूर्ण
सिद्धि[illegible]	[illegible]	संस्कृत	”

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी	पूर्ण
संबोधपंचासिका	×	"	"

४१८३. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं. ११। आ. १२×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र. काल ×। ले. काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे. सं. ८१४। क भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

नवग्रहस्तोत्र यो गणीस्तोत्र पद्मावतीस्तोत्र तीर्थंकुरस्तोत्र सामायिकपाठ आदि है।

४१८४. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं. २१। आ. १२३×४२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र. काल ×। ले. काल ×। पूर्ण। वे. सं. ८१३। क भण्डार।

विशेष—भक्तामर आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१८५. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं. २६। आ. ८३×६ इंच। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–स्तवन। र. काल ×। ले. काल ×। अपूर्ण। वे. सं. ८१२। क भण्डार।

४१८६. स्तोत्र—आचार्य बसवंत। पत्र सं. १। आ. ६२×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र. काल ×। ले. काल ×। पूर्ण। वे. सं. ८११। क भण्डार।

४१८७. स्तोत्रपूजासंग्रह……। पत्र सं. ६। आ. ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय स्तोत्र पूजा। र. काल ×। ले. काल ×। अपूर्ण। वे. सं. ८६ । क भण्डार।

४१८८. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं. ११। आ. १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र. काल ×। ले. काल ×। अपूर्ण। वे. सं. ८८६। क भण्डार।

४१८९. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं. ७ से ४०। आ. ६×४२ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र. काल ×। ले. काल ×। अपूर्ण। वे. सं. ८८८। क भण्डार।

४१९०. स्तोत्रसंग्रह……। पत्र सं. ६ से ११। आ. ११२×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र. काल ×। ले. काल ×। अपूर्ण। वे. सं. ४२६। च भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र है।

एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"

प्रति प्राचीन है। संस्कृत टीका सहित है।

४१९१ स्तोत्रसग्रह······ । पत्र सं० २ से ४८ । आ० ८×४½ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३० । च भण्डार ।

४१९२. स्तोत्रसंग्रह······ । पत्र सं० १४ । आ० ८½×५½ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१.	सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत
२	कल्याणमन्दिर	कुमुदचन्द्राचार्य	"
३.	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"

४१९३ स्तोत्रसग्रह······ । पत्र सं० ७ से १७ । आ० ११×८½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । च भण्डार ।

४१९४. स्तोत्रसंग्रह······ । पत्र सं० २४ । आ० १२×७½ इ च । भाषा-हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१९३ । ट भण्डार ।

४१९५ स्तोत्रसग्रह ······ । पत्र सं० ५ से ३५ । आ० ६×५½ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल सं० १८७५ । अपूर्ण । वे० सं० १८७२ । ट भण्डार ।

४१९६ स्तोत्रसग्रह ······ । पत्र सं० १५ से ३४ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३३ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

सामायिक बडा	×	संस्कृत	अपूर्ण
सामायिक लघु	×	"	पूर्ण
सहस्रनाम लघु	×	"	"
सहस्रनाम बडा	×	"	"
ऋषिमडलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
वृहद्नवकार	×	अपभ्रंश	"
वीतरागस्तोत्र	पद्मनंदि	संस्कृत	"
जिनपंजरस्तोत्र	×	"	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	"
वज्रपंजरस्तोत्र	×	"	"
हनुमानस्तोत्र	×	हिन्दी	"
वज्रदर्शन	×	संस्कृत	"
मारामला	×	प्राकृत	"

४१६७. स्तोत्रसग्रह........। पत्र सं ४। आ ११×४½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं० १४८। छ भण्डार।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

एकीभाव भूपालचौबीसी विषापहार, नेमिगीत भूधरकृत हिन्दी मे है।

४१६८. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं ७। आ ४½×१½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १३४। छ भण्डार।

निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत	
तीर्थावलीस्तोत्र	×	"	

विशेष—ज्योतिषी देवों में स्थित जिनचैत्यो की स्तुति है।

चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	संस्कृत	
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभ	"	अपूर्ण

श्री रुद्रपल्लीयवरेण्य गच्छः देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसा।
वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो जियाद्गुरुः कमलप्रभाख्यः॥

४१६९. स्तोत्रसंग्रह........। पत्र सं १४। आ ४½×१½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। वे सं १३४। छ भण्डार।

लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत
नेमिस्तोत्र	×	"
पद्मावतीस्तोत्र	×	"

४२०० स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र सं० १३ । आ० १३×७½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । ज भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमंदिर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तोत्र ।

४२०१. स्तोत्रपूजासंग्रह ... ...। पत्र सं० १५२ । आ० ६½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । ज भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है । प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है ।

४२०२ स्तोत्रसंग्रह ... । पत्र स० ३२ । आ० ४½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६०२ । पूर्ण । वे० स० २६४ । झ भण्डार ।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४२०३ स्तोत्रसंग्रह ... ...। पत्र सं० ११ से २२७ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत, प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७१ । झ भण्डार ।

विशेष—गुटका के रूप मे है तथा प्राचीन है ।

४२०४. स्तोत्रसंग्रह ... ...। पत्र सं० १४ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७७ । ञ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं ।

४२०५ स्तोत्रत्रय ... ...। पत्र सं० २१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । ञ भण्डार ।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्तामर एव एकीभाव स्तोत्र हैं ।

४२०६. स्वयभूस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० १२½×५¾ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विंशति स्तोत्र भी है ।

४२०७ प्रति स० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ बुदी १३ । वे० सं० ४३५ । च भण्डार ।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ४३४, ४३६) और हैं ।

४२०८. प्रति स० ३। पत्र सं० २४। ले० काल ×। वे सं २९। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है।

४२०६. प्रति स० ४। पत्र सं० २४। ले काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२४। घ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिये गये हैं।

४२१० स्वयम्भूस्तोत्रटीका—प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र सं० ४१। आ ११×६ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र काल ×। ले काल सं १८६१ मंगसिर सुदी १२। पूर्ण। वे सं० ८४१। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ८३९, ८३६) और हैं।

४२११ प्रति स० २। पत्र सं ११६। लि काल सं १८१५ पौष सुदी ११। वे सं ८४। ख भण्डार।

विशेष—रामसुखलाल पांड्या चौधरी भरतपु के मार्फत भोलाराम पाटनी से प्रतिलिपि कराई।

४२१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका·····। पत्र सं १२। आ १ ×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–स्तोत्र। र काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं ८८४। क भण्डार।

पद भजन गीत आदि

४२१३. अनाथानोचोढाल्या—खेम। पत्र सं २। आ० १०×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१२१। अ भण्डार।

विशेष—राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको अनाथ कहा था उसी पर चार ढालो मे प्रार्थना की गयी है।

४२१४. अनाथोमुनि सज्झाय· । पत्र स० ५। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१७३। अ भण्डार।

४२१५. अर्हनकचौढालियागीत—विमल विनय (विनयरंग)· ···। पत्र सं० ३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल १६८१ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ८४५। अ भण्डार।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

आरम्भ—

वर्द्धमान चउवीसमउ जिनवदी जगदीस।
अरहनक मुनिवर चरीय भणि सुधरीय जगीस ॥१॥

चौपई—

सु जगीसधरी मनमाहे, कहिसि सबष उछाहे।
अरहनकि जिमव्रत लीधउ, जिम ते तारी वसि कीधउ ॥२॥

निज मात · णइ उपदेसइ, वलिव्रत आदरीय विसेसइ।
पहुतउ ते देव विमानि, सुणिज्यो भवियण तिम कानि ॥३॥

दोहा—

नगरा नगरी जाणीयइ, अलकापुरि अवतार।
वसइ तिहां विवहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥

चौपई—

सुविचार सुभद्रा घरणी ·· · · ··· · ··· ·· ···।
तसु नंदन रूप निधान, अरहनक नामे प्रधान ॥५॥

अन्तिम—

च्यार सरण चित चीतवइ जी, परिहरि च्यारि कषाय।
दोष तजइ व्रत उचरइ जी, सल्य रहित निरमाय ॥५५॥

मसमपास बारम बसी जी छादिम सेवै विहार ।
ईसा भाव ए छवि परिहुरी जी मन समरइ नवकार ॥२६॥

सिला सवारउ मझरमा जी सूर किरण ऊमि ताप ।
सहइ परीसह पाइली जी छेदइ भवना पाप ॥२७॥

समतारस माहि मीलवउ जी मनेधरतउ सुभ ध्यान ।
काल करी तिहाँ पामीयउ जी सुंदर देव विमान ॥२८॥

सुरग तणा सुख भोगवी जी परमारथ प्रमाण ।
तिहाँ थी चवि वसि पामेसइ जी अनुक्रमि सिवपुर वास ॥२९॥

अरहंनक ऋषि भवे भरइ जी अंत समय सुभध्याण ।
जनम सफल करि तै सही जी पामइ परम कल्याण ॥३० ॥

श्री खरतर गच्छ दीपता जी, श्री जिनचंद मुर्णिद ।
जयवंता जग जाणीयइ जी वरसण परमाणंद ॥३१॥

श्री गुण सेखर गुण निलउ जी वाचक श्री नयरंग ।
साधु शीस माणइ मणइ जी विमलविनय मतिरंग ॥३२॥

ए सबंध सुहावउ जी जे गावइ नर नारि ।
ते पामइ सुख संपदा जी दिन दिन जय जयकार ॥३३॥

इति अरहंनक चउढालियागीतम् समाप्तम् ॥

संवत् १६८१ वर्षे माघ सुदी १४ दिने बुधवारे पंडित श्री हर्षसिंहगणिशिष्यमुर्णकीर्तिगणिशिष्येण चतुरंगम् गणा लिखि । श्री पुष्करनगरे ।

४२१६. आदिजिनवरस्तुति—कमलकीर्त्ति । पत्र सं. १ । आ. १ ३/४×१ इंच । भाषा—गुजराती । विषय—गीत । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. १८०४ । ट भण्डार ।

विशेष—दो गीत हैं दोनों ही के कर्ता कमलकीर्त्ति हैं ।

४२१७. आदिनाथगीत—मुनिहेमसिद्ध । पत्र सं. १ । आ. ६½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । र. काल सं. १६११ । ले. काल × । वे. सं. २४३ । छ भण्डार ।

विशेष—भाषा पर गुजराती का प्रभाव है ।

४२१८. आदिनाथ सम्भाय........। पत्र सं. १ । आ. ६¾×४ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—गीत । र. काल × । ले. काल । पूर्ण । वे. सं. २११८ । अ भण्डार ।

४२१९ आदीश्वरविज्ञप्ति । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय- गीत । र० काल स० १५६२ । ले० काल स० १७४१ वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नही हैं। कुल ४५ पद्य रचना में हैं।

अन्तिम पद्य—

पनरवासट्ठि जिनतूर अविचल पद पायो ।

वीनतडी कुलट पूर्णीया आसुमस वद्दि दशम दिहाडे मनि वैरागे इम भणीया ।।४५।।

४२२०. कृष्णबालविलास—श्री किशनलाल । पत्र स० १५ । आ० ८×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२८ । ङ भण्डार ।

४२२१. गुरुस्तवन—भूधरदास । पत्र स० ३ । आ० ८३×६३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४५ । ङ भण्डार ।

४२२२ चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तवन– हेमविमलसूरि शिष्य आणंद । पत्र स० २ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल स० १५६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२२३ चम्पाशतक—चम्पाबाई । पत्र सं० २४ । आ० १२×८३ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२३ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है । चपावाई ने ६६ वर्ष की उम्र मे रुग्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव से रोग दूर होगया था । यह प्यारेलाल अलीगढ (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी ।

४२२४ चेलना सज्झाय—समयसुन्दर । पत्र स० १ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल स० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २१७५ । अ भण्डार ।

४२२५ चैत्यपरिपाटी । पत्र स० १ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२५५ । अ भण्डार ।

४२२६ चैत्यवंदना । पत्र स० ३ । आ० ६×८३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९५ । ऋ भण्डार ।

४२२७ चौवीसी जिनस्तुति—खेमचद । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । ले० काल स० १७६४ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० स० १८४ । छ भण्डार ।

४२२८ चौवीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२० । अ भण्डार ।

४२२६. चौबीसतीर्थंकरस्तुति—अमरदेव। पत्र सं १७। आ ११३×५३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे. सं २४१। ख भण्डार।

विशेष—रतनचन्द पांड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४२३० चौबीसीस्तुति·······। पत्र सं १५। आ ८×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तवन। र काल सं १६ । ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१६। ङ भण्डार।

४२३१ चौबीसतीर्थङ्करवर्णन·······। पत्र सं ११। आ ६३×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स १५८१। ट भण्डार।

४२३२ चौबीसतीर्थङ्करस्तवन—लूणकरण कासलीवाल। पत्र सं ८। आ ६×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५५७। च भण्डार।

४ ३३ जकड़ी—रामकृष्ण। पत्र सं ५। आ १ ३×६३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १६८। छ भण्डार।

४२३४ जम्बूकुमार सज्झाय·······। पत्र सं १। आ १०×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २११२। ञ भण्डार।

४२३५ जयपुर के मन्दिरों की वदना—स्वरूपचन्द। पत्र सं १ । आ ६×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र काल सं० १६१ । ले काल सं १६८० । पूर्ण। वे सं २०८। मु भण्डार।

४२३६ जिनभक्ति—हर्षकीर्त्ति। पत्र सं १। आ १२×५३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८४१। ञ भण्डार।

४२३७ जिनपचीसी व अन्य संग्रह·······। पत्र सं ४। आ ८३×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स २ ४। छ भण्डार।

४२३८ ज्ञानपञ्चमीस्तवन—समयसुन्दर। पत्र सं १। आ १ ×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र काल ×। ले काल सं १७८२ सावन सुदी २। पूर्ण। वे सं १८८६। ञ भण्डार।

४२३९ जकड़ी श्रीमन्दिरजीकी·······। पत्र सं ४। आ ७३×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २११। छ भण्डार।

४२४० झांझरियामुनिचोढाल्या·······। पत्र सं २। आ १ ×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-गीत। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २२६६। ञ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ— सीता ता मनि संकर ढाल—

एमती चरणे सीस नमावी, प्रणमी सतगुरु पाया रे।
झाझरिया ऋषि ना गुण गाता, उलटै आज सवाया रे ॥

भवियण वंदो मुनि झाझरिया, ससार समुद्र जे तरियो रे।
सवल साह्या परिसा मन सुधै, सील रयण करि भारियो रे ॥२॥

पइठतपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे।
तस सुत मदन भरम वालुडो, किरत जास कहाणी रे ॥

तीजी ढाल अपूर्ण है। झाझरिया मुनि का वर्णन है।

४२४१ णमोकारपच्चीसी—ऋषि ठाकुरसी। पत्र स० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल सं० १८२८ आषाढ सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१७८। अ भण्डार।

४२४२. तमाखू की जयमाल—आणंदमुनि। पत्र स० १। आ० १०½×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१७०। अ भण्डार।

४२४३ दर्शनपाठ—बुधजन। पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८८। ङ भण्डार।

४२४४. दर्शनपाठस्तुति ···। पत्र सं० ८। आ० ८×६½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र० र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२७। ट भण्डार।

४२४५ देवकी की ढाल—लूणकरण कासलीवाल। पत्र स० ४। आ० १०½×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-गीत। र० काल ×। ले० काल स० १८८५ वैशाख बुदी १४। पूर्ण। जीर्ण। वे० स० २२४६। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रढ नेमा नामे हुवा लखण सरव संजोग।
आठ सहस लखण धरो गोमकार गछ जोग ॥१॥
सहत अठारा साध जी अजाया चालीस हजार।
मोटार मुनिवर विचरज्या रा लार ॥२॥
· ·· · ··· ·· ·· ····।
वसुदेव राजा डाकरा देवाकीरण अंगजात ॥३॥
नन्दन छ देव का तणा सा राखा कै उणहार।
वाणी सुण श्री नेम का लाधउ संजसार ॥४॥

४२४८ प्रति सं० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । ट भण्डार ।

विशेष—लिख्या मगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र से आगे नेमिराजुलपच्चीसी विनोदीलाल कृत भी है ।

४२४९ **नागश्री सज्झाय—विनयचंद** । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२४८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल ३रा पत्र है ।

अन्तिम—

आपरण बाधो आप भोगवै कोरण गुरु कुरण चेला ।
सजम लेइ गई स्वर्ग पाचमे अजुही नादो न वेरारे ॥१५॥ भा०॥

महा विदेह मुकते जासी मोटी गर्भ वसेरा रे ।
विनयचद जिनधर्म अराधो सब दुख जान परेरारे ॥१६॥
इति नागश्री सज्झाय कुचामरणे लिखिते ।

४२५० **निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास** । पत्र स० ८ । आ० ८×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तुति । र० काल स० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । झ भण्डार ।

४२५१ **नेमिगीत—पासचन्द** । पत्र स० १ । आ० १२½×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४७ । अ भण्डार ।

४२५२ **नेमिराजमतीकी घोड़ी** ··· । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७७ । अ भण्डार ।

४२५३ **नेमिराजमती गीत—छीतरमल** । पत्र सं० १ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ भण्डार ।

४२५४ **नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द** । पत्र स० १ । आ० ८¾×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७४ । अ भण्डार ।

सूरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।
आलइ जन्म महारिड भोरे, काइ करथारे मन माहि विचार ॥१॥
मति राचो रे रमरणी ने रंग क सेवोरे जीरण वाणी ।
तुम रमज्यो रे सजम न सगक चेतो रे चित प्राणी ॥२॥
अरिहत देव अराधाइयोजी, रै गुर गरुधा श्री साध ।
धर्म केवलानो भाखीउ, ए समकित वे रतन जिम लाद्धक ॥३॥

पहिलो समकित सेवीय रे, जे छे धर्मनो मूल ।
संयम समकित बाहिरो जिण भाख्यो रे तुस खंडण तुलिक ॥४॥

तहत करीन सरदहो रे, जे भाख्यो जगनाथ ।
पांचेइ आस्रव परिहरो, जिम मिलीइ रे शिवपुरनो साथ ॥५॥

जीव सहूनी जीवेवा वांछिरे, मरण न वांछे कोइ ।
अपध राखा जैसना तस पामर रे हुण जो मत कोइ ॥६॥

चोरी कीजे पर तणी रे, तिण ती लागे पाप ।
धन कंचण जिम चोरीय तिण बांधइ रे भव भवना संताप न ॥७॥

अबंभ अकीरत ए भव रे, पेरे भव दुख अनेक ।
कुव कहुता पामीइ, कांइ मरणी रे मन माहि विवेक ॥८॥

महिला संग मुइ हर नव लख सम जुव ।
कुण सुख कारण ए तणा किम काजे रे हिस्या मतिमंद ॥९॥

पुत्र कलत्र घर हाट मंदिर, ममता कारे फोक ।
जु परिगह राग माहि छे ते श्रावरे गया बहुला लोक ॥१ ॥

मात पिता बंधव सुतरे, पुत्र कलत्र परवार ।
सवार्थिया सहु को सगा, कोइ पर भव रे नहीं राखणहार ॥११॥

अंजुल जल जीपरे रे, खिण रे तुटइ आउ ।
आइ ते वेला नहीं रे बाहुडि जरा भालरे जीवन ने थाउ ॥१२॥

व्याधि जरा जब लग नहीं रे, तब लग धर्म संभाल ।
मारा हर मंण मरसवे कोइ समरथि रे बालेगोपाल क ॥१३॥

अमप दीवस को पाहुणा रे, सहू कीदण संसार ।
एक दिन उठो जाइगउ जमण जाणइ रे किम हो भवतारक ॥१४॥

क्रोध मान माया तजो रे, लोभ मैथरूपो नीमारे ।
समतारस भवपुरीम बसी दोहिलो रे नर भवतारक ॥१६॥

आरंभ छाडा मन्तमा रे पीउ संजम रसपुरि ।
तिउ मधु ये सहु नी बरो इम बोले सजन देवसुरक ॥१७॥

॥ इति वीर ॥

बाल वृमचारही जिण बाइसमा ।।

समदविजइजी रा नद हो, वैरागी माहरो मन लागो हो नेम जिणद सू

जादव कुल केरा चद हो ।। बाल० ।।१।।

देव घणा छइ हो पुभ जीदोवता (देवता)

तेतो न चढइ चेत हो, कैइक रे चेत म्हामत हो ।। बाल० ।।२।।

कैइक दोम करइ नर नारनइ मामइ तेलसिंदूर हर हो ।

वाके इक बन वासै वासै वास, कक वनवासो करइ ।

(कष्ट) कसट सहइ भरपुर हो ।।३।।

तु नर मोह्यो रे नर माया तणै, तु जग दीनदयाल हो ।

नोजोवनवती ए सुंदरी तजीउ राजुल नार हो ।।४।।

राजल के नारिपणे उद्धरी पहुतीउ मुकति मझार ।

हीरानद सवेग सांहिबा, जी वी नव म्हारी वीनतेडा अवधारि हो ।।५।।

।। इति नेमि गीत ।।

४२५५ **नेमिराजुलसज्झाय**……। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल स० १८५१ चैत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८४ । अ भण्डार ।

४२५६ **पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्लभ सूरि** । पत्र स० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषप–स्तवन । र० काल × । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

४२५७ **पद—ऋषि शिवलाल** । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरा पद निम्न है—

या जग म का तेरा अंधे ।।या०।।

जैसे पछी वीरछ वसेरा, वीछरै होय सवेरा ।।१।।

कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती मे गाडा ।

मत समै चलण की वेला, ज्यौं गाडा राह्यो छाडारे ।।२।।

ऊचा २ महल वणाये, जीव कह इहा रैणा ।

चल गया हस पडी रही काया, लेय कलेवर दणा ।।३।।

मात पिता सु पतनी रे थारी, तीण धन जोवन खाया ।

उड गया हँस काया का मडण, काढो प्रेत पराया ।।४।।

करी कमाइ इण भो माया उलटी पूजी खोइ ।
मेरी २ करकै जनम गमाया चलता संक न होइ ॥५॥

पाप की पोट क्यी सिर लीनी हे मूरख मोरा ।
इसकी पोट करी तु चाहै, तो होय कुटुम्बसुं न्यारा ॥६॥

मात पिता सुत साजन मेरा मेरा सब परिवारो ।
मेरा २ पड्या पुकारे चलता, नहीं कयु लारो ॥७॥

को तेरा तेरे संग न चलता मेद न लाका पाया ।
मोह बस पदारथ हीराणी हीरा जनम गमाया ॥८॥

आंख्या देखत केते चल गए जगमें मात्तर मानुही चलणा ।
औसर बीता बहु पछतावे माखी कु हाथ मसलणा ॥९॥

आज कर धरम काल कर याही न नीयत चारे ।
काल अचांणु चाटी पकडी जब क्या कारज सारे ॥१ ॥

ए औसवाड पाइ दुहेली फेर न लाक वारो ।
हीमत होय तो ढील न कीजे कुब पडो निरधारो ॥११॥

सीह मुखे जीम मीरगलो जामी फेर मइ कूरख हारो ।
इण पीसवंते मरण मुखे जीव पाप करी निरधारो । १२॥

सुमर सुदेव धरम कु सेवो लेवो जीन का सरना ।
रीप सोवसाल कहे भी प्राणी आतम कारज करणा ॥१३॥

॥इति॥

४२५८. पदसग्रह ......। पत्र सं ५१ । आ १२×५ इश्च । भाषा–हिन्दी । विषय–भजन । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ४२७ । क भण्डार ।

४२५९. पदसंग्रह ......। पत्र सं १ । ले काल × । वे सं १२७१ । अ भण्डार ।

विशेष—त्रिभुवन साहब सांवसा ......।

इसी भण्डार मे २ पदसंग्रह (वे सं १११७ २११) और है ।

४२६० पदसग्रह ......। पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं ४ ५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ११ पदसंग्रह (वे स ४ ४ ४ ६ से ४१५) तक और है ।

४२६१ पदसग्रह ......। पत्र सं ५ । ले काल × । वे सं ६९५ । च भण्डार ।

४२६२ पदसग्रह ....। पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २७ पदसंग्रह (वे० सं० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २९९, ३००, ३०१ से ६ तक, ३११ से ३२४) और हैं ।

नोट—वे० स० ३१८वें मे जयपुर की राजवशावलि भी है ।

४२६३ पदसग्रह । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० १७५६ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ पदसग्रह (वे० स० १७५२, १७५३, १७५८) और हैं ।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, दौलतराम आदि कवियो के पद हैं ।

४२६४. पदसग्रह । पत्र स० ३ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

१ मोहि तारो सामि भव सिंधु तें ।

२ राजुल कहै तुमे वेग सिधावे ।

३ सिद्धचक्र वदो रे जयकारी ।

४ चरम जिणेसर जिहो साहिवा
चरम धरम उपगार वाल्हेसर ॥

४२६५ पदसग्रह । पत्र स० १२ से २५ । आ० १२×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २००८ । ट भण्डार ।

विशेष—भागचन्द, नयनसुख, द्यानत, जगतराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल वखतराम, झाझूराम, खेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवणदास, विश्वभूषण, मनोहर आदि कवियो के पद हैं ।

४२६६. पदसग्रह—उत्तमचन्द । पत्र स० १८ । आ० ९×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५२८ । ट भण्डार ।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोका सग्रह है । पदो के प्रारम्भ मे रागरागनियो के नाम भी दिये हैं ।

४२६७. पदसंग्रह—ब्र० कपूरचन्द । पत्र सं० १ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४३ । अ भण्डार ।

४२६८. पद—केशरगुलाव । पत्र स० १ । आ० ७×४$\frac{1}{2}$ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२४१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ-

श्रीपद मन्दन नयनानन्दन सांवावेव हमारो जी ।

विसजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीच बसत है निसदिन कबहू न हावत न्यारा वो ॥

४७६९. पदसंग्रह—चैनसुख । पत्र सं० २ । आ० १४×१२ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७२७ । ट भण्डार ।

४७७०. पदसंग्रह—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ५२ । आ० ११×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । ले० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम २ पत्रों में विषय सूची दे रखी है । लगभग २०० पदों का संग्रह है ।

४७७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८७४ । वे० सं० ४१८ । क भण्डार ।

४७७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । ट भण्डार ।

४७७३. पदसंग्रह—देवाब्रह्म । पत्र सं० ४४ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद भजन । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० १७२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । विभिन्न राग रागनियों में पद दिये हुये हैं । प्रथम पत्र पर लिखा है- श्री देवब्रह्मजी सं० १८६१ का वैशाख सुदी १२ । मुकाम बसवै नैणचंद ।

४७७४. पदसंग्रह—दौलतराम । पत्र सं० २ । आ० ११×७ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

४७७५. पदसंग्रह—बुधजन । पत्र सं० ११ से १२ । आ० ११½×८ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पद भजन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१७ । च भण्डार ।

४७७६. पदसंग्रह—भागचन्द । पत्र सं० ११ । आ० ११×७ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४११ । क भण्डार ।

४७७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४१२ । क भण्डार ।

विशेष—थोड़े पदों का संग्रह है ।

४७७८. पद—मलूकचंद । पत्र सं० १ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४२ । च भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा पावैगो तु धाम हो जीवा।

समझो स्यु त राज ॥

४२७९. पदसग्रह—मंगलचद । पत्र स० १० । आ० १०३/४×४३/४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३४ । क भण्डार ।

४२८०. पदसंग्रह—माणिकचद । पत्र सं० ५४ । आ० ११×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद व भजन । र० काल × । ले० काल स० १६५५ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४३० । क भण्डार ।

४२८१. प्रति सं० २ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३ पदसग्रह—सेवक । पत्र सं० १ । आ० ८३/४×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद है ।

४२८४ पदसग्रह—हीराचन्द । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ४३५, ४३६) और हैं ।

४२८५ प्रति स० २ । पत्र स० ६१ । ले० काल × । वे० स० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६ पद व स्तोत्रसग्रह ˙ । पत्र स० ८८ । आ० १२३/४×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३९ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है ।

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	८
सुगुरुशतक	जिनदास	"	१०
जिनयशमङ्गल	सेवगराम	"	४
जिनगुणपच्चीसी	"	"	–
गुरुओ की स्तुति	भूधरदास	"	–

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	हिन्दी	१८
अध्यात्मि चक्रवर्ति की भावना	"	"	—
पदसंग्रह	माणिकचन्द	"	४
तेरहपंथपचीसी	"	"	११
हुंडावसर्पिणीकालदोष	"	"	"
चौबीस दंडक	दौलतराम	"	१२
समाधिपचीसी	द्यानतराम	"	१७

४२८७. पार्श्वजिनगीत—साधु (समयसुन्दर के शिष्य)। पत्र सं० १। आ० १×१ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–गीत। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५८। अ भण्डार।

४२८८. पार्श्वनाथ की निशानी—जिनहर्ष। पत्र सं० १। आ० १×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४७। अ भण्डार।

विशेष—२१ पद्य से–

प्रारम्भ— सुख संपति दायक सुरनर नायक परतिक पास जिणंदा है।
जाकी छवि कांति अनोपम ओपम दिपति जाणा दिणंदा है।।

अन्तिम— तिहां सिवावास तिहा रे वासा के सेवक विलसदा है।
नवर निशाणी पास बखाणी सुरा जिनहर्ष गावंदा है।।

प्रारम्भ के पत्र पर क्रोध मान माया लोभ की सज्झाय दी है।

४२८९. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० २१३१। अ भण्डार।

४२९०. पारसनाथचौपई—प० लाखो। पत्र सं० १७। आ० १२½×१½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल सं० १७३४ कार्तिक सुदी। ले० काल सं० १७६१ ज्येष्ठ सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ११३८। ट भण्डार।

विशेष—अन्य प्रशस्ति–

संवत् सतरासै चौतीस कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस।
औरंग तप दिल्ली सुभिथान सबै नृपति बहे सिरि आन ।।२६६।।
नागर चाल देश शुभ ठाम नगर बरछूटो उत्तम नाम।
सब श्रावक पूजा जिनधर्म करै भक्ति पावैं बहु सर्म ।।२६७।।

कर्मक्षय कारण शुभहेत, पार्श्वनाथ चौपई सचेत ।

पडित लाखो लाख सभाव, सेवो धर्म लखो सुभथान ॥२६८॥

आचार्य श्री महेन्द्रकीर्त्ति पार्श्वनाथ चौपई सपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य पाडे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति के शासन मे दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर मे प्रतिलिपि की थी ।

४२६१ पार्श्वनाथ जीरोछन्दसत्तरी ...। पत्र सं० २ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल स० १७८१ बैशाख बुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० १८६५ । अ भण्डार ।

४२६२ पार्श्वनाथस्तवन ... । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक पार्श्वनाथ स्तवन और है ।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र ... । पत्र सं० २ । आ० ८½×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६६ । अ भण्डार ।

४२६४. बन्दनाजखड़ी—विहारीदास । पत्र स० ४ । आ० ८×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१३ । च भण्डार ।

४२६५. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । व भण्डार ।

४२६६ बन्दनाजखड़ी—बुधजन । पत्र स० ४ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ज भण्डार ।

४२६७. प्रति स० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२४ । ङ भण्डार ।

४२६८. बारहखड़ी एवं पद ... । पत्र सं० २२ । आ० ५¾×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५ । झ भण्डार ।

४२६६ बाहुबली सज्झाय—विमलकीर्त्ति । पत्र सं० १ । आ० ६½×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १२४५ ।

विशेष—श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सज्झाय और है ।

४३००. भक्तिपाठ—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १७६ । आ० १२×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न भक्तिया हैं ।

स्वाध्यायपाठ सिद्धभक्ति श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति आचार्यभक्ति योगभक्ति वीरभक्ति निर्वाणभक्ति और नदीश्वरभक्ति।

४३०१ प्रति सं० २। पत्र सं १ ८। लै० काल ×। वे सं १४७। क भण्डार।

४३०२ भक्तिपाठ……। पत्र सं ६। आ ११½×७½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १४६। क भण्डार।

४३०३ भजनसंग्रह—नयन कवि। पत्र सं ४१। आ ६×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे सं २४। छ भण्डार।

४३०४ मरुदेवी की सज्झाय—ऋषि लालचन्द। पत्र सं १। आ ८½×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र काल सं १८ कार्तिक सुदी ४। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१८७। अ भण्डार।

४३०५ महावीरजी का चौढाल्या—ऋषि लालचन्द। पत्र सं ४। आ ६½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१८७। अ भण्डार।

४३०६ मुनिसुव्रतविनती—देवाब्रह्म। पत्र सं १। आ १०½×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८१७। अ भण्डार।

४३०७ राजारानी सज्झाय……। पत्र सं० १। आ० ६¼×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय स्तोत्र। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २१९१। अ भण्डार।

४३०८ रोहपुरास्तवन……। पत्र सं० १। आ ६×५½ इंच। भाषा हिन्दी। विषय–स्तवन। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८६१। अ भण्डार।

विशेष—रोहपुरा ग्राम में स्थित पार्श्वनाथ की स्तुति है।

४३०९ विजयकुमार सज्झाय—ऋषि लालचन्द। पत्र सं ९। आ १ ×४½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र काल सं १८६१। लै काल सं १८७२। पूर्ण। वे सं २१९१। अ भण्डार।

विशेष—कोटा के रामपुरा में ग्रन्थ रचना हुई। पत्र ४ से आगे स्थूलभद्र सज्झाय हिन्दी में और है। जिसका र काल सं १८६४ कार्तिक सुदी ११ है।

४३१० प्रति सं० २। पत्र सं ४। ले काल ×। वे० सं २१८६। अ भण्डार।

४३११ विनतीसंग्रह……। पत्र सं २। आ १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र काल ×। ले काल सं १८२१। पूर्ण। वे सं २ ११। अ भण्डार।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३१२. विनतीसग्रह—ब्रह्मदेव । पत्र स० ३८ । आ० ७½×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । अ भण्डार ।

विशेष—सासू बहू का झगडा भी है ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६३, १०४३) और है ।

४३१३ प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० १७३ । ख भण्डार ।

४३१४ प्रति स० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७८ । ङ भण्डार ।

४३१५ प्रति सं० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० १६३२ । ट भण्डार ।

४३१६. वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६७ । क भण्डार ।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र स० १ । आ० ६×४½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१३४ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम—

पूज्य श्री श्री दोलतराय जी बहुगुण अगवाणी ।
रिषलाल जी करि जोडि वीनवै कर सिर चरणाणी ।।
सहर माधोपुर सवत् पचावन कातीग सुदी जाणी ।
श्री सीतल जिन गुण गाया अति उलास आणीं ।। सीतल० ।।१२।।
।। इति सीतलनाथ स्तवन सपूर्ण ।।

४३१८. श्रेयासस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र स० १ । आ० ११½×५½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४१ । अ भण्डार ।

४३१६. सतियोकी सज्झाय—ऋषि खजमल.ी । पत्र सं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गुजराती । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० २२४५ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न है—

इतीदक सतियारा गुण कह्या थे सुण सांभलो ।
उत्तम पराणी खजमल जी कहइ ।।३४।।

चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन भी दिया है ।

४३२० सज्झाय (चौदह बोल)—ऋषि रायचन्द । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८१ । अ भण्डार ।

४३२१ सर्वार्थसिद्धिसज्झाय……। पत्र सं० १। आ० १ ×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

विशेष—पद्म पद्य स्तुति भी है।

४३२२ सरस्वतीअष्टक……। पत्र सं० १। आ० ६×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। भ भण्डार।

४३२३ साधुवंदना—माणिकचन्द। पत्र सं० १। आ० १ ३½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४। ट भण्डार।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय की साधुवंदना है। कुल २७ पद्य हैं।

४३२४ साधुवंदना—पुण्यसागर। पत्र सं० १। आ० १ ×४ इञ्च। भाषा–पुरानी हिन्दी। विषय स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१८। क भण्डार।

४३२५ सारचौबीसीभाषा—पारसदास निगोत्या। पत्र सं० ४७। आ० १२½×७ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय–स्तुति। र० काल सं० १९१८ कार्तिक सुदी २। ले० काल सं० १९३१ चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ७८५। क भण्डार।

४३२६ प्रति सं० २। पत्र सं० ५५। ले० काल सं० १९४८ वैसाख सुदी २। वे० सं० ७८६। क भण्डार।

४३२७ प्रति सं० ३। पत्र सं० ५७१। ले० काल ×। वे० सं० ८११। क भण्डार।

४३२८ सीताढाल……। पत्र सं० १। आ० १½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६७। अ भण्डार।

विशेष—फागुपत कृत चतन ढाल भी है।

४३२९ सोलहसतीसज्झाय । पत्र सं० १। आ० १ ×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१८। अ भण्डार।

४३३० स्थूलभद्रसज्झाय……। पत्र सं० १। आ० १ ×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८२। अ भण्डार।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. अकुरोपणविधि—इन्द्रनदि । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १४–१५ पर यत्र है ।

४३३२ अकुरोपणविधि—प० आशाधर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल १३वी शताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है ।

४३३३ प्रति स० २ । पत्र म० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २रा पत्र नही है । सस्कृत मे कठिन शब्दो का अर्थ दिया हुआ है ।

४३३४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ३१६ । ज भण्डार ।

४३३५. अकुरोपणविधि । पत्र स० २ मे २७ । आ० ११३/४×५१/२ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल " । पत्र स० २६ । आ० १२×७३/४ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० स० १ । च भण्डार ।

४३३७. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास । पत्र स० २६ । आ० १२×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । ट भण्डार ।

४३३८ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत । पत्र स० २१४ । आ० १४×८ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल स० १८७० । ले० काल स० १८७२ । पूर्ण । वे० स० ५०१ । च भण्डार ।

विशेष—गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४३३९ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र स० ४८ । आ० १३×८ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९३० फाल्गुन सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । अ भण्डार ।

४३४०. प्रति सं० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६) और है ।

४३४१ प्रति सं० ३ । पत्र सं ७३ । ले काल सं० १६३३ । वे सं ३ ३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ३०२) और है ।

४३४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं ३६ । ले० काल × । वे० स २ ८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं २ ८ में ही) और हैं ।

४३४३ प्रति स० ५ । पत्र सं ४८ । ले काल × । वे सं १६६ । झ भण्डार ।

विशेष—आषाढ सुदी ५ सं १६६७ को यह ग्रन्थ रघुनाथ चांदवाड़ ने चढ़ाया ।

४३४४ अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—मनरङ्गलाल । पत्र सं १ । आ ११×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र काल सं १६१ माघ सुदी १३ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७ ४ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

नाम 'मनरंग' धर्मरुचि सौं मो प्रति रार्खे प्रीति ।
चोईसौं महाराज को पाठ रच्यौं जिन रीति ।।
प्रेरकता प्रतिलाल की रच्यौं पाठ सुप्रमीत ।
ग्राम नग एकोहुमा नाम भगवती सत ।।

रचना संवत् संबंधीपद्य—

विसति इक सत सतक पैं विपतसंमत आनि ।
माघ शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण पाठ महान ।।

४३४५ अक्षयनिधिपूजा.......। पत्र सं ३ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र काल × । ले काल × पूर्ण । वे सं ४ । क भण्डार ।

४३४६ अक्षयनिधिपूजा.......। पत्र सं १ । आ ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल ८ । पूर्ण । वे सं ३८१ । च भण्डार ।

विशेष अयमाल हिन्दी में है ।

४३४७ अक्षयनिधिपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र स ५ । आ ११½×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र काल × । ले काल सं १७८३ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वे स ४ । क भण्डार ।

विशेष—श्री देव श्वेताम्बर जैन ने प्रतिलिपि की थी ।

४३४८ अक्षयनिधिविधान.......। पत्र सं ४ । आ १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५४३ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १६७२) और है ।

४३४९. अढाई (सार्द्धद्वय) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ६१। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५५०। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०४४) और है।

४३५०. प्रति सं० २। पत्र स० १५१। ले० काल स० १८२४ ज्येष्ठ बुदी १२। वे० स० ७८७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७८८) और है।

४३५१ प्रति सं० ३। पत्र स० ८५। ले० काल सं० १८६२ माघ बुदी ३। वे० सं० ८४०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतियां (वे० स० ५, ४१) और हैं।

४३५२ प्रति सं० ४। पत्र स० ९०। ले० काल स० १८८४ भादवा सुदी १। वे० स० १३१। छ भण्डार।

४३५३ प्रति स० ५। पत्र स० १२४। ले० काल सं० १८९०। वे० स० ४२। ज भण्डार।

४३५४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८३। ले० काल ×। वे० स० १२६। झ भण्डार।

विशेष—विजयराम पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४३५५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण। पत्र स० ११३। आ० १०½×७½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९०२ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वे० स० २। च भण्डार।

४३५६ अढाईद्वीपपूजा । पत्र स० १२३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८६२ पौष सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ५०५। अ भण्डार।

विशेष—अंबावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५३४) और है।

४३५७ प्रति स० २। पत्र स० १२१। ले० काल स० १८८०। वे० स० २१४। ख भण्डार।

विशेष—महात्मा जोशी जीवण ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी।

४३५८ प्रति स० ३। पत्र स० ९७। ले० काल स० १८७० कार्त्तिक सुदी ४। वे० स० १२३। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति [वे० स० १२२] और है।

४३५९ अढाईद्वीपपूजा—डालूराम। पत्र स० १९३। आ० १२½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल सं० चैत सुदी ९। ले० काल सं० १९३६ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० स० ८। क भण्डार।

विशेष—अमरचन्द दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा मे पूजा रचना की।

४३६० प्रति स० २ । पत्र सं १८ । ले काल सं १९५७ । वे स ५ ६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां [वे सं ५ ४ ५ ५] और हैं ।

४३६१ प्रति स० ३ । पत्र सं १४४ । ले काल × । वे सं २ १ । ङ भण्डार ।

४३६२ अनन्तचतुर्दशीपूजा—शान्तिदास । पत्र सं १६ । आ ८३×७ इ च । भाषा संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ४ । ख भण्डार ।

विशेष—व्रतोद्यापन विधि सहित है । यह पुस्तक मगोलगी गगवाल ने बेगस्यों के मन्दिर में चढाई थी ।

४३६३ प्रति स० २ । पत्र सं १४ । ले काल × । वे सं १७६ । ख भण्डार ।

विशेष—पूजा विधि एवं जयमाल हिन्दी मद्य में है ।

इसी भण्डार में एक प्रति सं १८२ की [वे सं १६] और है ।

४३६४ अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजा ...... । पत्र सं ११ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं० ५८८ । क भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से अनन्तनाथ तक पूजा है ।

४३६५ अनन्तचतुर्दशीपूजा—श्री भूषण । पत्र सं १८ । आ १ ३×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २४ । ज भण्डार ।

४३६६ प्रति स २ । पत्र सं ७६ । ले काल सं १८२७ । वे सं० ४२१ । क भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६७ अनन्तचतुर्दशीपूजा ...... । पत्र सं २ । आ १ ३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स ५ । छ भण्डार ।

४३६८ अनन्तजिनपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं १ । आ १ ३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । वे सं २ ४२ । ट भण्डार ।

४३६९ अनन्तनाथपूजा—श्री भूषण । पत्र सं २ । आ ७×४½ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २१५५ । ख भण्डार ।

४३७० अनन्तनाथपूजा ... । पत्र सं १ । आ ८½×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ८२१ । ख भण्डार ।

४३७१ अनन्तनाथपूजा—सेवग । पत्र सं १ । आ ८३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ १ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से फटा हुआ है।

४३७२. अनन्तनाथपूजा ···। पत्र स० ३। आ० ११×५ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६४। भ्र भण्डार।

४३७३. अनन्तव्रतपूजा ··· । पत्र स० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६४। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५२०, ६६५) और हैं।

४३७४ प्रति स० २। पत्र स० ११। ले० काल ×। वे० स० ११७। छ भण्डार।

४३७५ प्रति स० ३। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० स० २३०। ज भण्डार।

४३७६ अनन्तव्रतपूजा । पत्र स० २। आ० १०×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १३५२। अ भण्डार।

विशेष—जैनेतर पूजा ग्रन्थ है।

४३७७. अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्त्ति। पत्र स० २। आ० १२×५½ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४१। छ भण्डार।

४३७८ अनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराम। पत्र स० ३। आ० ८×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६६। अ भण्डार।

४३७९. अनन्तव्रतपूजाविधि · । पत्र सं० १८। आ० १०½×४½ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८५८ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० स० १। ग भण्डार।

४३८०. अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य । पत्र स० ६। आ० १०×४½ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८४१। पूर्ण। वे० स० १३६३। अ भण्डार।

४३८१ अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र। पत्र स० १८। आ० १२×५½ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल स० १६३०। ले० काल स० १८४५ आसोज सुदी ४। पूर्ण। वे० स० ४६७। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्याश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

सवत् १८४५ का– अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथौ च चौथि लिखित पिरागदास मोहा का जाति बाकलीवाल प्रतापसिंहराज्ये सुरेन्द्रकीर्त्ति भट्टारक विराजमाने सति प० कल्याणदासतत्सेवक आज्ञाकारी पडित खुस्यालचन्द्रेण इदं अनन्तव्रतोद्यापनलिखापित ॥१॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं २३१) और है।

४३८२ प्रति सं० २। पत्र सं ११। ले काल सं १८२८ मासोज बुदी १५। वे सं ७। ग भण्डार।

४३८३ प्रति सं० ३। पत्र सं० ९। ले काल ×। वे सं १२। क भण्डार।

४३८४ प्रति सं० ४। पत्र सं० २५। ले काल ×। वे सं १२९। छ भण्डार।

४३८५ प्रति सं० ५। पत्र सं० २१। ले काल सं १८९४। वे सं० २७। झ भण्डार।

४३८६ प्रति सं० ६। पत्र सं० २१। ले काल ×। वे सं ४१२। ञ भण्डार।

विशेष—२ चित्र मण्डल के हैं। श्री चाकसूनगपुर खण्डेलवाल के हर्ष नामक दुर्गा वणिक ने ग्रन्थ रचना कराई थी।

४३८७ अभिषेकपाठ……। पत्र सं ४। आ १२×५३ इच। भाषा–संस्कृत। विषय–भगवान के अभिषेक के समय का पाठ। र काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं १११। ख भण्डार।

४३८८. प्रति सं० २। पत्र सं २ से २७। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ३५२। ङ भण्डार।

विशेष—विधि विधान सहित है।

४३८९ प्रति सं० ३। पत्र सं २। ले काल ×। वे सं० ७१२। च भण्डार।

४३९० प्रति सं० ४। पत्र सं ४। ले काल ×। वे सं १९२२। ट भण्डार।

४३९१ अभिषेकविधि—लक्ष्मीसेन। पत्र सं १५। आ ११×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–भगवान के अभिषेक के समय का पाठ एवं विधि। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं ३५। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ११) और है जिसे मन्नूराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र सामसेन कृत भी है।

४३९२ अभिषेकविधि……। पत्र सं ८। आ ११×४३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय भगवान के अभिषेक की विधि एवं पाठ। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७८। ग भण्डार।

४३९३ प्रति सं० २। पत्र सं ७। ले काल ×। वे सं ११९। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं २७) और है।

४३९४ प्रति सं० ३। पत्र सं ७। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं २११४। ट भण्डार।

४३९५. अभिषेकविधि । पत्र सं १। आ ८३×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–भगवान के अभिषेक की विधि। र काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं १९१२। ट भण्डार।

४३६६ अरिष्टाध्याय ......। पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–सल्लेखना विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२०३ कुल गाथायें हैं– ग्रन्थका नाम रिट्ठाइ है । जिसका सस्कृत रूपान्तर अरिष्टाध्याय है । आदि अन्त की गाथायें निम्न प्रकार हैं—

पणमंत सुरासुरमउलिरयणवरकिरणकतविछुरिय ।
वीरजिणपायजुयल णमिऊण भणेमि रिट्ठाइं ॥१॥

ससारम्मि भमतो जीवो वहुभेय भिण्ण जोणिसु ।
पुरकेण कहवि पावइ सुहमणु अत्त ण सदेहो ॥२॥

अन्त— पुणु विज्जवेज्जहणूणं वारउ एव वीस सामिय्य ।
सुगीव सुमतेण रइय भणिय मुणि ठौरे वरि देहि ॥२०१॥

सूई भूमीर्ले फलए समरे हाहि विराम परिहाणो ।
कहिजइ भूमीए समवरे हातयं वच्छा ॥२०२॥

अट्ठाट्ठारह छिणे जे लद्धीह लच्छरेहाउं ।
पढमोहिरे अंक गविजए याहि णं तच्छ ॥२०३॥

इति अरिष्टाध्यायशास्त्र समाप्तम् । ब्रह्मवस्ता लेखित्त ॥श्री॥ छ ॥

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २४१) और है ।

४३६७ अष्टाह्निकाजयमाल .. । पत्र सं० ४ । आ० ६३/४×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०३१ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत मे है ।

४३६८ अष्टाह्निकाजयमाल । पत्र स० ४ । आ० १३×४१/२ इंच । भाषा–प्राकृत । विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३१) और हैं ।

४३६६. अष्टाह्निकापूजा । पत्र स० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६६०) और है ।

४४००. अष्टाह्निकापूजा ..। पत्र स० ३१ । आ० १०१/२×४३/४ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल स० १५३३ । पूर्ण । वे० स० ३३ । क भण्डार ।

विशेष—संवत् १२११ में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई जाकर भट्टारक श्री रत्नकीर्ति को भेंट की गई थी। जयमाला प्राकृत में है।

४४०१ अष्टाह्निकापूजाकथा—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं ६। आ १ ३×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय अष्टाह्निका पर्व की पूजा तथा कथा। र काल सं १८५१। ले काल स १८६८ मासाढ सुदी १। वै सं २६६। क भण्डार।

विशेष—प सुखासचन्द ने जोधराज पाटोदी के बनवाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी।

भट्टारकोऽभूत्कमलादिकीर्त्ति श्रीमूलसंघे सरस्वतायां।
गच्छेऽहि तत्पट्टसुराजिराजि देवेन्द्रकीर्त्ति समभूत्ततश्च ॥११७॥
तत्पट्टपूर्वाचलभानुरूप श्रीकुंदकुंदान्वयसत्प्रमुख्य।
महेन्द्रकीर्त्ति प्रथमूत्तपट्ट क्षेमेन्द्रकीर्त्तिः सुतरस्तमेऽभूत ॥११८॥
सोऽभूत्क्षेमेन्द्रकीर्त्तिः भुवि सगुणमरव्यात्यचारितधारी।
श्रीमभ्ट्टारकेन्द्रो विसलवचनमी भव्यसंघे प्रवंद्य।
तस्य श्रीकारशिष्याममजलसिपट्ट श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति।
रेजां पुण्यांचकार प्रमधुमतिविदां बोधतापार्थसद्भैः ॥११९॥

मिति प्रथासमासे शुक्लपक्षेसप्तम्यां तिथौ संवत १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीऋषभदेवचैत्यालये निवास
र्व भव्यारणवासस्य चिन्म सुखासचन्द्रे ण स्वहस्तेन लिपीकृतं जोधराज पाटोदी कृत चैत्यालये ॥ शुभं भूयात् ॥

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है—

मिति माहसुदी ३ सं १८८८ मुनिराज दौय माणा। बडा सुपमसेनजी लघु बाहुबलि मालपुरासुं प्रभासौ
आया। सांगानेर मुं भट्टारकजी की नसियां में दिन चढ़ां च्यार जाज्यां जयपुर में दिन सवा पहर पाछे मन्दिरां दर्शन
संगही का पाटोदी जवहर (वगैरह) मंदिर १ कीया पाछ मोहनवाडी मदनलालजी की कीर्तिस्तंभ की नसियां सवाई
विरधाचंदजी मालकी हवेली में रात्रि १ रह्या भोजनवरि सप्तीव ह रात्रिवास कीयो समेदगिरि मानसभारया परास्त
बोले थी ज्ञानचन्दजी सहाय।

इसी भण्डार म एक प्रति सं १८८८ की (वै स ५४१) और है।

४४०२ अष्टाह्निकापूजा—द्यानतराय। पत्र सं ३। आ ८×६३ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–
पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ७ ३। घ भण्डार।

विशेष—वर्षा का कुछ भाग जल गया है।

४४०३. प्रति स० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल स० १६३१ । वे० सं० ३२ । क भण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा ..... । पत्र सं० ४४ । आ० ११×५¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अष्टाह्निका पर्व की पूजा । र० काल स० १८७६ कार्तिक बुदी ६ । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० स० १० । क भण्डार ।

४४०५. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–अष्टाह्निका व्रत विधान एव पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४२३ । व्य भण्डार ।

४४०६ अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन ..... । पत्र स० २२ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–अष्टाह्निका व्रत एवं पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६ । क भण्डार ।

४४०७ आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल स० १६८४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४४०८ आठकोडिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

४४०६. आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र सं० ८ । आ० १२×५¾ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०० । अ भण्डार ।

४४१०. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल सं० १७८३ श्रावण सुदी ६ । वे० स० ६२ । ङ भण्डार ।

४४११. प्रति स० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल स० १६०५ आसोज सुदी २ । वे० सं० १८० । म भण्डार ।

४४१२. आदित्यव्रतपूजा ..... । पत्र सं० ३५ से ४७ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–रविव्रत पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६१ । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

४४१३. आदित्यवारपूजा ..... । पत्र स० १४ । आ० १०×४½ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२० । च भण्डार ।

४४१४ आदित्यवारव्रतपूजा ..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ११७ । छ भण्डार ।

४४१५. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । अ भण्डार ।

४४१६. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ५१६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५१७) और है ।

४४१७ प्रति स० ३। पत्र सं १। ले काल ×। वे सं० २१२। ञ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में तीन चौबीसी के नाम तथा लघु दर्शन पाठ भी है।

४४१८ आदित्यवारपूजा……। पत्र सं० ४। आ १२½×५¾ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४२। ञ भण्डार।

४४१९ आदिनाथपूजाष्टक…… । पत्र सं १। आ १०½×७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र काल ×। ले० काल ×। वे सं० १२२१। ञ भण्डार।

विशेष—नेमिनाथ पूजाष्टक भी है।

४४२० आदीश्वरपूजाष्टक……। पत्र सं० २। आ० १ ३×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–आदिनाथ तीर्थङ्कर की पूजा। र० काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १२२६। ञ भण्डार।

विशेष—महावीर पूजाष्टक भी है जो संस्कृत में है।

४४२१ आराधनाविधान……। पत्र सं० १७। आ १ ×४½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–विधि-विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ४१५। ञ भण्डार।

विशेष—त्रिकाल चौबीसी षोडशकारण आदि विधान दिये हुये हैं।

४४२२ इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं ८८। आ १२×६½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल सं १८१६ वैशाख सुदी ११। पूर्ण। वे सं ४२१। ञ भण्डार।

विशेष—'विशालकीर्त्यात्मज म विश्वभूषण विरचितायां' ऐसा लिखा है।

४४२३ प्रति स० २। पत्र सं १२। ले काल सं १८१ द्वि वैशाख सुदी १। वे सं ४८७। ञ भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र चिपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी।

४४२४ प्रति स० ३। पत्र सं ६६। ले काल ×। वे सं ८८। ङ भण्डार।

४४२५ प्रति स० ४। पत्र सं १ ६। ले काल ×। वे सं ११ । छ भण्डार।

विशेष—छ भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे सं १२, ४१) और हैं।

४४२६ इन्द्रध्वजमण्डलपूजा……। पत्र सं ६७। आ ११½×५½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय–मेलों एवं उत्सवो आदि के विधान में की जाने वाली पूजा। र काल ×। ले काल सं १६१६ फागुण सुदी २। पूर्ण। वे सं १६। ख भण्डार।

विशेष—पं पन्नालाल जोबनेर वाले ने ल्योजीलालजी के मन्दिर में प्रतिलिपि की। मण्डल की सूची भी दी हुई है।

४४२७. उपवासग्रहणविधि ....। पत्र सं० १ । ग्रा० १०×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । वे० स० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२८. ऋषिमंडलपूजा—आचाय गुणनन्दि । पत्र स० ११ से ३० । ग्रा० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विभिन्न प्रकार के मुनियो की पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६१५ वैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक अन्य पूजायें है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १६१५ वर्षे वैशाख बदि ५ गुरुवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे गुणनदि-मुनीन्द्रेण रचिताभक्तिभावत. । शतमाधिकाशीतिश्लोकाना ग्रन्थ सख्यख्या ।।ग्रन्थाग्रन्थ ३८०।।

इसी भण्डार भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७२) और हैं ।

४४२९ प्रति सं० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टाह्निका जयमाल एवं निर्वाणकाण्ड और हैं । ग्रन्थ के दोनो ओर सुन्दर बेल बू टे हैं । श्री आदिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनो ओर स्वर्ण के वेल बू टे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १७७५ । वे० स० १३७ (क) घ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १३८) और है ।

४४३२. प्रति स० ५ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० ९५ । ङ भण्डार ।

४४३३ प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ७६ । झ भण्डार ।

४४३४ प्रति सं० ७ । पत्र स० १९ । ले० काल × । वे० स० २१० । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४३३) और है जो कि मूलसंघ के आचार्य नेमिचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५. ऋषिमडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र स० १७ । ग्रा० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २९२ । ख भण्डार ।

४४३६. प्रति स० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० स० १२७ । छ भण्डार ।

४४३७. प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० २५९ ।

विशेष—प्रथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है।

४४३८ ऋषिमंडलपूजा……। पत्र सं १८। आ ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल १७२८ चैत्र सुदी १२। पूर्ण। वे सं ४८। च भण्डार।

विशेष—महात्मा मानजी ने आमेर में प्रतिलिपि की थी।

४४३९. ऋषिमंडलपूजा……। पत्र सं ८। आ १३½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १८० कार्तिक सुदी १। पूर्ण। वे सं ४१। घ भण्डार।

विशेष—प्रति मंत्र एवं काव्य सहित है।

४४४० ऋषिमंडलपूजा—दौलत आसेरी। पत्र सं ६। आ १२½×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १९१७। पूर्ण। वे सं २६। ड भण्डार।

४४४१ कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं ७। आ ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एवं विधि। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६१। च भण्डार।

विशेष—कांजीबारस का व्रत भादवासुदी १२ को किया जाता है।

४४४२. कंजिकाव्रतोद्यापन……। पत्र सं १। आ ११½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ६४। च भण्डार।

विशेष—जयमाल अपभ्रंश में है।

४४४३ कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं १२। आ १ ½×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा एवं विधि। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ९७। ड भण्डार।

विशेष—पूजा संस्कृत में है तथा विधि हिन्दी में है।

४४४४ कर्मचूरव्रतोद्यापन……। पत्र सं ८। आ ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १६ ४ भादवा सुदी १। पूर्ण। वे सं ५६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ६) और है।

४४४५ प्रति स० २। पत्र सं ६। आ १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १ ४। छ भण्डार।

४४४६ कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा—लक्ष्मीसेन। पत्र सं १। आ १ ×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११७। ड भण्डार।

४४४७ प्रति स० २। पत्र सं ८। ले काल ×। वे सं ४१६। व भण्डार।

४४४८. कर्मदहनपूजा—भ० शुभचद्र । पत्र स० ३० । आ० १०½×४¾ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६४ कात्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ३०) और है ।

४४४६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६७२ आसोज । वे० स० २१३ । व्य भण्डार ।

४४५० प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६३५ मगसिर बुदी १० । वे० स० २२५ । व्य भण्डार ।

विशेष—आ० नेमिचन्द के पठनार्थ लिखा गया था ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६७) और है ।

४४५१. कर्मदहनपूजा ····· । पत्र स० ११ । आ० ११½×५ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—कर्मों के नष्ट करने की पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८३६ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ५२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० स० ५१३) और है जिसका ले० काल स० १८२४ भादवा सुदी १३ है ।

४४५२ प्रति सं० २ । पत्र स० १५ । ले० काल सं० १८८८ माघ शुक्ला ८ । वे० स० १० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

४४५३. प्रति स० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल स० १७०८ श्रावण सुदी २ । वे० स० १०१ । ङ भण्डार ।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० १००, १०१) और हैं ।

४४५४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । च भण्डार ।

४४५५. प्रति सं० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है । इसी भण्डार मे और इसी वेष्टन मे १ प्रति और है ।

४४५६ कर्मदहनपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० २२ । आ० ११×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कर्मों को नष्ट करने के लिये पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स ७०६ । अ भण्डार ।

४४५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११ । घ भण्डार ।

४४५८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १८६८ फागुण बुदी ३ । वे० स० ५३२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ५३१, ५३३) और है ।

४४५६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० १ १ । ड भण्डार ।

४४६० प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १९५८ । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१९) और है ।

४४६१ कलशविधान—मोहन । पत्र सं० ६ । आ० ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० का० सं० १९१७ । ले० काल सं० १९२२ । पूर्ण । वे० सं० २७ । ग भण्डार ।

विशेष—भैरवसिंह के शासनकाल में शिवकर (सीकर) नगर में मदन नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

लिखितं पं० पन्नालाल अजमेर नगर में भट्टारकजी महाराज श्री १ ८ श्री रत्नभूषणजी के पाट भट्टारक श्री महाराज श्री १ ८ श्री ललितकीर्तिजी महाराज पाट विराज्या वैशाख सुदी ३ दै त्यांकी विला में भाया बीकानेरसुं पं० हीरालालजी पन्नालाल जयपुर उतरया दौलतरामजी लाला ओसवाल की हवेली में पंडितराज गोधाकां का उतरया एक जायगा ११ ताई रह्या ।

४४६२. कलशविधान……। पत्र सं० ६ । आ० १ ३×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ग भण्डार ।

४४६३ कलशविधि—विश्वभूषण । पत्र सं० १ । आ० १२½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । ग भण्डार ।

४४६४ कलशारोपणविधि—आशाधर । पत्र सं० ३ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ ७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अंश है ।

४४६५ कलशारोपणविधि……। पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर। पत्र सं० ६। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल ×। ले० काल सं० १८३८ भादवा सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १०६। ङ भण्डार।

विशेष—पं० पन्नालाल ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ३८। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६२६ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ५८१। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य श्रीमण्डलाचार्यधर्मचन्द्रदेवा तच्छिष्य मंडलाचार्यश्रीललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये मण्डलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-शिष्यणि बाई लाडी इदं शास्त्रं लिखापितं मुनि हर्षचन्द्राय दत्तं।

४४६८. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा.......। पत्र सं० ७। आ० १०½×८½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१९। अ भण्डार।

४४६९. कलिकुण्डपूजा.......। पत्र सं० ३। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११८३। अ भण्डार।

४४७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

४४७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८७। ले० काल ×। वे० सं० २५६। ज भण्डार। और भी पूजायें हैं।

४४७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २२८। झ भण्डार।

४४७३. कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० ९। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०३। अ भण्डार।

विशेष—इष्वाकारगिरि, मानुषोत्तरगिरि तथा पुष्करार्द्ध की पूजायें और हैं।

४४७४. क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन। पत्र सं० २ से २५। आ० १०½×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १५७८ भादवा सुदी ७। अपूर्ण। वे० सं० १३३। (क) छ भण्डार।

४४७५. प्रति सं० २। पत्र सं० २०। ले० काल सं० १९३० ज्येष्ठ सुदी ८। वे० सं० १२८। छ भण्डार।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चौधरी चाटसू वाले के लिए पं० सदासुखजी ने पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

४४५६ प्रति स० ४ । पत्र सं १६ । ले काल सं १८११ । वे सं १ १ । क भण्डार ।

४४६० प्रति स० ५ । पत्र सं २४ । ले काल सं १६२८ । वे सं २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं २३१) और है ।

४४६१ कलशविधान—मोहन । पत्र सं ६ । आ ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र का० सं १८१७ । ले काल सं १६२२ । पूर्ण । वे सं २७ । अ भण्डार ।

विशेष—भैरवसिंह के शासनकाल में शिवकर (सीकर) नगर म भट्टक नामक जिन मन्दिर क स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

लिखितं पं पन्नालाल अजमेर नगर में भट्टारकजी महाराज श्री १ ८ श्री रत्नभूषणजी के पाट भट्टारक श्री महाराज श्री १ ८ श्री ललितकीर्तिजी महाराज पाट विराज्या बैशाख सुदी ३ नै त्यांकी दिक्षा में आया बीकानेरसुं पं हीरालालजी पन्नालाल जयचंद उतर्या दौलतरामजी सोठा ओसवाल की हवेली में पंडितराज सोमाजी का उतर्या एक आस्मा ११ ठाई रह्या ।

४४६२ कलशविधान·······। पत्र सं ६ । आ १ ३×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७१ । ख भण्डार ।

४४६३ कलशविधि—विश्वभूषण । पत्र सं १ । आ ६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ४४८ । ख भण्डार ।

४४६४ कलशारोपणविधि—आशाधर । पत्र स ३ । आ १२×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधि विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ ७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अंश है ।

४४६५ कलशारोपणविधि······। पत्र सं ६ । आ ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्दिर के शिखर पर कलश चढाने का विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार म एक प्रति (वे सं १२२) और है ।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर। पत्र स० ६। आ० १०½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अभिषेक विधि। र० काल ×। ले० काल स० १८३८ भादवा बुदी १०। पूर्ण। वे० स० १०६। ङ भण्डार।

विशेष—प० शम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र। पत्र स० ३४। आ० १०¾×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स १६२६ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वे० स० ५८१। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य श्रीमंडलाचार्यधर्म्मचद्रदेवा तच्छिष्य मडलाचार्यश्रीललितकीर्त्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये मडलाचार्यश्रीधर्म्मचन्द्र तत्-शिष्यणि बाई लाली इद शास्त्र लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्त।

४४६८ कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा……। पत्र स० ७। आ० १०½×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४१६। व्य भण्डार।

४४६९. कलिकुण्डपूजा……। पत्र सं० ३। आ० १०¾×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ११८३। अ भण्डार।

४४७०. प्रति स० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० स० १०८। ङ भण्डार।

४४७१. प्रति सं० ३। पत्र स० ४७। ले० काल ×। वे० स० २५६। ज भण्डार। और भी पूजायें हैं।

४४७२ प्रति स० ४। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० २२४। झ भण्डार।

४४७३ कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र स० ६। आ० ११×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५०२। अ भण्डार।

विशेष—रुचिकरगिरि, मानुषोत्तरगिरि तथा पुष्करार्द्ध की पूजायें और हैं।

४४७४ क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन। पत्र स० २ से २८। आ० १०½×४ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८७४ भादवा बुदी ६। अपूर्ण। वे० स० १३३। (क) ङ भण्डार।

४४७५ प्रति स० २। पत्र स० २०। ले० काल स० १९३० ज्येष्ठ सुदी ४। वे० स० १२४। छ भण्डार।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चौधरी चाटसू वाले के लिए प० मनसुखजी ने गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

४४९६. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा…… । पत्र सं० ४१ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । ज भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है ।

४४९७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १९ २ बैशाख बुदी १ । वे० सं० ११६ । ज भण्डार ।

४४९८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा…… । पत्र सं० ४१ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ । झ भण्डार ।

विशेष—रामजी बज मुंबारक ने चढाई थी ।

४४९९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १९ ६ । वे० सं० १११ । झ भण्डार ।

४५००. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा…… । पत्र सं० ७४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५९७ । ञ भण्डार ।

विशेष—बड़ी २ जयमाला हिन्दी में भी है ।

४५०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६ १ । वे० सं० १५६ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १९९) और है ।

४५०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । ञ भण्डार ।

४५०३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम साह । पत्र सं० ४१ । आ० १२×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १८२४ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १८५४ आसोज सुदी १६ । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । अ भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्रराम ने प्रतिलिपि की थी । कवि ने अपने पिता बखतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वखंडन और बुद्धिविलास का उल्लेख किया है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है ।

४५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १९ २ आषाढ सुदी ८ । वे० सं० ७१४ । अ भण्डार ।

४५०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १९४ फागुण सुदी ११ । वे० सं० ४१ । ग भण्डार ।

४५०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८८१ । वे० सं० २१ । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१ २२) और

४५०७ चतुर्विंशतिपूजा……। पत्र सं० २०। आ० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२०। छ भण्डार।

४५०८ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ६६। आ० ११×५¾ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल स० १८१६ कार्तिक बुदी ३। ले० काल स० १६१५ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वे० स० ७१६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ७२०, ६२७) और हैं।

४५०९ प्रति सं० २। पत्र स० ४६। ले० काल ×। वे० स० १४५। क भण्डार।

४५१०. प्रति स० ३। पत्र स० ६५। ले० काल ×। वे० स० ४७। ख भण्डार।

४५११ प्रति स० ४। पत्र स० ४६। ले० काल स० १६५६ कार्तिक सुदी १०। वे० स० २६। ग भण्डार।

४५१२. प्रति स० ५। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५। घ भण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नही हैं।

४५१३. प्रति स० ६। पत्र स० ७०। ले० काल स० १६२७ सावन सुदी ३। वे० स० १६०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १६१, १६२, १६३, १६४) और है।

४५१४ प्रति स० ७। पत्र स० १०५। ले० काल ×। वे० स० ५४४। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५४२, ५४३, ५४५) और हैं।

४५१५. प्रति स० ८। पत्र स० ४७। ले० काल ×। वे० स० २०२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २०४ मे ३ प्रतिया, २०५) और हैं।

४५१६ प्रति स० ६। पत्र स० ६७। ले० काल स० १६४२ चैत्र सुदी १५। वे० स० २६१। ज भण्डार।

४५१७ प्रति स० १०। पत्र स० ८१। ले० काल ×। वे० स० १८६। झ भण्डार।

विशेष—सर्वसुखजी गोधा ने स० १६०० भादवा सुदी ५ को चढाया था।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४५) और है।

४५१८ प्रति स० ११। पत्र स० ११५। ले० काल स० १६४६ सावरा सुदी २। वे० स० ४४५। ञ भण्डार।

४५१९ प्रति स० १२। पत्र स० १४७। ले० काल स० १६३७। वे० स० १७०६। ट भण्डार।

विशेष—छोटेलाल भावसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

४४७६ प्रति सं० ३ । पत्र सं २१ । लि काल सं १९१६ वैशाख सुदी ११ । वे सं० ११८ । ग भण्डार ।

४४७७. क्षेत्रपालपूजा……। पत्र सं ६ । आ ११½×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–जैन मान्यतानुसार भैरव की पूजा । र काल × । लि काल स १८६ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वे सं ७६ । ख भण्डार ।

विशेष—कंवरजी श्री चंपालालजी टोंग्या कंडेलवाल ने पं स्वामलाल ब्राह्मण से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४४७८ प्रति सं० २ । पत्र सं ४ । लि काल सं १८६१ चैत्र सुदी ६ । वे सं ४८१ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ८२२ १२२८) और हैं ।

४४७९ प्रति स० ३ । पत्र सं ११ । ले काल × । वे सं १२४ । छ भण्डार ।

विशेष —२ प्रतियां और हैं ।

४४८० कलिकाव्रतोद्यापनपूजा—मुनि ललितकीर्त्ति । पत्र स ५ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल × । लि काल × । पूर्ण । वे सं ५११ । क भण्डार ।

४४८१ प्रति स० २ । पत्र सं ६ । लि काल × । वे सं० ११० । ङ भण्डार ।

४४८२ प्रति सं० ३ । पत्र सं ४ । लि काल सं १९२८ । वे सं ३ २ । ख भण्डार ।

४४८३ कंजिकाव्रतोद्यापन……। पत्र सं १७ से २१ । आ १ ३×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १८ । ङ भण्डार ।

४४८४ गजपंथामंडलपूजा—भ० क्षेमेन्द्रकीर्त्ति (नागौर पट्ट) । पत्र सं ८ । आ १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल × । ले काल सं १९४ । पूर्ण । वे सं ११ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति–

> मूलसंघे बलात्कारे गच्छे सारस्वते भवत् ।
> कुन्दकुन्दान्वये जातः श्रुतसागरपारगः ॥१९॥
> नागौरिपट्टे पि धर्मकीर्त्ति तत्पट्टधारी शुभ हर्षकीर्त्ति ।
> तत्पट्टविद्याविभुभूषणाख्य तत्पट्टहेमाविभुकीर्त्तिमाख्यः ॥२ ।
> हेमकीर्तिमुने पट्ट क्षेमेन्द्रादियशाप्रभु ।
> तस्याज्ञया विरचितं गजपंथसुपूजनं ॥२१॥
> विदुषा शिवजिद्रक्त नामधेयेन मोहनः ।
> भिन्नाः भाषाप्रसिद्धमर्थ चैकाह्निरचितं चिरं ॥२२॥

जीयादिद पूजन च विश्वभूपणवद्ध्रुव ।

तस्यानुसारतो ज्ञेय न च वुद्धिकृत त्विद ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारकक्षेमेन्द्रकीर्त्तिविरचित गजपथमडलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८५. **गणधरचरणारविन्दपूजा** ·· । पत्र स० ३ । आ० १०३/४×४३/४ इ च । भाषा–सस्कृत । विपय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है ।

४४८६ **गणधरजयमाला** । पत्र स० १ । आ० ८×५ इ च । भापा–प्राकृत । विपय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१०० । अ भण्डार ।

४४८७ **गणधरवलयपूजा** । पत्र स० ७ । आ० १०३/४×४३/४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४२ । क भण्डार ।

४४८८ **प्रति स० २** । पत्र स० २ से ७ । ले० काल × । वे० स० १३४ । ङ भण्डार ।

४४८९ **प्रति सं० ३** । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११९, १२२) और हैं ।

४४९० **गणधरवलयपूजा**·· । पत्र स० २२ । आ० ११×४ इ च । भाषा–विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४२१ । व्य भण्डार ।

४४९१ **गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण** । पत्र स० ११ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल सं० १७५६ । ले० काल स० १९०४ माघ वुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ९१२ । अ भण्डार ।

४४९२. **प्रति स० २** । पत्र स० ९ । ले० काल × । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९३ **गिरनारक्षेत्रपूजा** · । पत्र स० ४ । आ० ८×६३/४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९६० । पूर्ण । वे० सं० १४० । ङ भण्डार ।

४४९४ **चतुर्दशीव्रतपूजा**······ । पत्र स० १३ । आ० ११३/४×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । ङ भण्डार ।

४४९५. **चतुर्विंशतिजयमाल—यति माघनदि** । पत्र स० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९८ । ख भण्डार ।

४४६६ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा ....। पत्र सं ५१ । आ ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ११८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है ।

४४६७ प्रति स० २ । पत्र सं ४६ । ले काल सं १६ २ वैशाख सुदी १ । वे० सं १९६ । छ भण्डार ।

४४६८ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा ....। पत्र स ४६ । आ ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ । म भण्डार ।

विशेष—बखजी बज मुघारक ने चढाई थी ।

४४६६ प्रति स० २ । पत्र सं ४१ । ले काल स १६ ६ । वे सं १११ । भ भण्डार ।

४५ ० चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा ....। पत्र सं ५४ । आ १ ३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५६७ । अ भण्डार ।

विशेष—कहीं २ जयमाला हिन्दी मे भी है ।

४५०१ प्रति स० २ । पत्र सं ४८ । ले काल सं १६ १ । वे सं १५६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे सं १५५) और है ।

४५ २. प्रति स० ३ । पत्र सं २८ । ले काल × । वे सं० ८६ । च भण्डार ।

४५०३ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम साह । पत्र सं ५१ । आ १२×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र काल स १८२४ मंगसिर सुदी ६ । ले काल सं १८५४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वे सं ७१५ । अ भण्डार ।

विशेष—भाऊराम ने प्रतिलिपि की थी । कवि ने अपने पिता बखतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वखंडन और बुद्धिविलास का उल्लेख किया है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ७१४) और है ।

४५०४ प्रति स० २ । पत्र सं ६ । ले काल स १६ २ आषाढ सुदी ८ । वे सं ७१४ । अ भण्डार ।

४५०५ प्रति स० ३ । पत्र सं ५२ । ले काल सं १६४ फागुण सुदी १३ । वे सं ४१ । ख भण्डार ।

४५०६ प्रति स० ४ । पत्र सं ४६ । ले काल सं १८८३ । वे सं २१ । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे सं २१ २२) और हैं ।

४५०७ चतुर्विंशतिपूजा·······। पत्र स० २०। ग्रा० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १२०। छ भण्डार।

४५०८ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ६६। ग्रा० ११×५¾ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल स० १८१६ कार्तिक बुदी ३। ले० काल स० १६१५ ग्रापाढ बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ७१६। ग्र भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ७२०, ६२७) ग्रौर हैं।

४५०९ प्रति सं० २। पत्र स० ४६। ले० काल ×। वे० स० १४५। क भण्डार।

४५१० प्रति स० ३। पत्र स० ६५। ले० काल ×। वे० स० ४७। ख भण्डार।

४५११ प्रति स० ४। पत्र स० ४६। ले० काल सं० १६५६ कार्तिक सुदी १०। वे० सं० २६। ग भण्डार।

४५१२. प्रति स० ५। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५। घ भण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नही हैं।

४५१३. प्रति स० ६। पत्र स० ७०। ले० काल सं० १६२७ सावन सुदी ३। वे० स० १६०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १६१, १६२, १६३, १६४) ग्रौर है।

४५१४ प्रति स० ७। पत्र स० १०५। ले० काल ×। वे० स० ५४४। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५४२, ५४३, ५४५) ग्रौर हैं।

४५१५. प्रति स० ८। पत्र स० ४७। ले० काल ×। वे० स० २०२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २०४ मे ३ प्रतिया, २०५) ग्रौर हैं।

४५१६ प्रति स० ९। पत्र स० ६७। ले० काल स० १६४२ चैत्र सुदी १५। वे० सं० २६१। ज भण्डार।

४५१७ प्रति स० १०। पत्र स० ८१। ले० काल ×। वे० स० १८६। झ भण्डार।

विशेष—सर्वसुखजी गोधा ने स० १६०० भादवा सुदी ५ को चढाया था।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४५) ग्रौर है।

४५१८ प्रति सं० ११। पत्र स० ११५। ले० काल स० १६४६ सावण सुदी २। वे० सं० ४४५। ञ भण्डार।

४५१९ प्रति स० १२। पत्र स० १४७। ले० काल स० १६३७। वे० स० १७०६। ट भण्डार।

विशेष—छोटेलाल भावसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

४४२० चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं ९। आ ११×५३ इञ्च। भाषा हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र काल सं १८५४। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २४६। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं २११८ २ ८५) और हैं।

४४२१ प्रति स० २। पत्र सं ५। ले काल सं १८७१ आसोज सुदी ६। वे सं २४। ग भण्डार।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं २५) और है।

४४२२ प्रति स० ३। पत्र सं ३१। ले काल सं १९६६। वे सं १७। घ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं १६ २४) और हैं।

४४२३ प्रति सं० ४। पत्र सं ५७। ले काल ×। वे स १२७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं १२८ १४६ ७८७) और हैं।

४४२४ प्रति स० ५। पत्र सं ३६। ले काल सं १९२६। वे सं २४६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं ५४६, ५४७ ५४८) और हैं।

४४२५ प्रति स० ६। पत्र सं ५४। ले काल सं १८९१। वे सं २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे सं २१७ २१८ २२ /१) और हैं।

४४२६ प्रति स० ७। पत्र सं ६६। ले काल ×। वे सं २ ७। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स २ ८) और है।

४४२७ प्रति स० ८। पत्र सं १ १। ले काल सं १८९१ श्रावण सुदी ४। वे सं १८। झ भण्डार।

विशेष—चैतराम रांवका ने प्रतिलिपि कराई एवं नाथूराम रांवका ने विजैराम पांड्या के मन्दिर में चढाई थी। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ५८ १८१) और हैं।

४४२८ प्रति स० ९। पत्र सं ७३। ले काल सं १८२२ आषाढ सुदी १५। वे सं ६४। ञ भण्डार।

विशेष—महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे सं ११५ १२१) और है।

४४२९ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—नेमीचन्द पाटनी। पत्र सं ९। आ ११३×५३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-पूजा। र काल सं १८८ भादवा सुदी १। ले काल सं १९१८ आसोज सुदी १२। वे सं १४४। क भण्डार।

विशेष—अन्त मे कवि का संक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान अमरचद जी के मन्दिर मे कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहा से अमरावती गये।

४५३०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरंगलाल। पत्र सं० ५१। आ० ११×८ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२१। अ भण्डार।

४५३१ प्रति स० २। पत्र सं० ६६। ले० काल ×। वे० स० १४३। क भण्डार।

विशेष—पूजा के अन्त मे कवि का परिचय भी है।

४५३२. प्रति स० ३। पत्र स० ६०। ले० काल ×। वे० सं० २०३। छ भण्डार।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—बख्तावरलाल। पत्र सं० ५४। आ० ११½×५ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८५४ मगसिर बुदी ६। ले० काल सं० १६०१ कार्त्तिक सुदी १०। पूर्ण। वे० स० ५५०। च भण्डार।

विशेष—तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी।

४५३४. प्रति सं० २। पत्र स० ५ से ६६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २०५। छ भण्डार।

४५३५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द। पत्र सं० ६७। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९२६ चैत्र बुदी १। पूर्ण। वे० स० ५५५। च भण्डार।

४५३६ प्रति स० २। पत्र स० ८४। ले० काल सं० १९२८ वैशाख सुदी ५। वे० स० ५५६। च भण्डार।

४५३७. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा …। पत्र स० ७७। आ० ११×५½ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९१६ चैत्र सुदी ३। पूर्ण। वे० स० ९२६। अ भण्डार।

४५३८ प्रति सं० २। पत्र स० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५४। छ भण्डार।

४५३९. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० १०। आ० ९×६ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६८। झ भण्डार।

४५४०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द। पत्र स० ८। आ० १०×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४१६। व्य भण्डार।

विशेष—'चतुर्थ पूजा की जयमाल' यह नाम दिया हुआ है। जयमाल हिन्दी मे है।

४५४१. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० ६। आ० ८½×४¾ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-चन्द्रप्रभ की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७१। क भण्डार।

४४४२ चन्दनषष्ठीव्रतपूजा ....। पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८ ५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं— पञ्चमी व्रतोद्यापन नवग्रहपूजाविधान ।

४४४३ चन्दनषष्ठीव्रतपूजा........। पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २११३) और है ।

४४४४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ १३ । ट भण्डार ।

४४४५ चन्दनषष्ठीव्रतपूजा........। पत्र सं० ५ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१रा पत्र नहीं है ।

४४४६ चन्द्रप्रभजिनपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० १ ३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७१ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४२७ । अ भण्डार ।

विशेष—सवासुख बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४४४७ चन्द्रप्रभजिनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७१२ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । अ भण्डार ।

४४४८ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८१३ । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेरमें सं० १८७२ में रामचन्द्र की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

४४४९. चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा........। पत्र सं० ५ । आ० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९२७ बैसाख बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६ २ । अ भण्डार ।

४४५० चारित्रशुद्धिविधान—श्री भूषण । पत्र सं० १० । आ० १२½×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम बारहसौ चौतीसाव्रत पूजा विधान भी है ।

४४५१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । वे० सं० १५२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

४५५२. चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिब्रह्म। पत्र सं० ८४। आ० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें। र० काल ×। ले० काल स० १९३७ वैशाख सुदी १५। पूर्ण। वे० स० १२३। ख भण्डार।

४५५३ चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र। पत्र स० ६६। आ० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एव पूजायें। र० काल ×। ले० काल स० १७१४ फाल्गुण सुदी ४। पूर्ण। वे० स० २०४। ज भण्डार।

विशेष-लेखक प्रशस्ति—

सवत् १७१४ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे चउथ तिथौ शुक्रवासरे। घडसोलास्थाने मुंडलदेशे श्रीधर्म्मनाथ चैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्रा तत्पट्टे भ० हर्षचन्द्रा तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तत्शिष्य ब्रह्म श्री गणदास तत्शिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ उद्यापन चारये चौत्रीसु स्वहस्तेन लिखित्त।

४५५४ चिंतामणिपूजा (बृहत्)—विद्याभूषण सूरि। पत्र सं०,११। आ० ९३×४३ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५५१। अ भण्डार।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नही हैं।

४५५५ चिंतामणिपार्श्वनाथपूजा (बृहद्)—शुभचन्द्र। पत्र स० १०। आ० ११३×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विपय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५७४। अ भण्डार।

४५५६ प्रति स- २। पत्र स० ८२। ले० काल स० १६९१ पौष बुदी ११। वे० स० ४१७। ञ भण्डार।

४५५७ चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा ··। पत्र स० ३। आ० १०३×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विपय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ११८४। अ भण्डार।

४५५८. प्रति स० २। पत्र स० ८। ले० काल ×। वे० स० २८। ग भण्डार।

विशेष—निम्न पूजायें और हैं। चिन्तामणिस्तोत्र, कलिकुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा।

४५५९ प्रति स० ३। पत्र स० १५। ले० काल ×। वे० स० ९६। च भण्डार।

४५६० चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा ··। पत्र स० ११। आ० ११×४३ इच। भाषा-सस्कृत। विपय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५८३। च भण्डार।

४५६१ चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा……। पत्र सं १। आ ११½×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २२१४। अ भण्डार।

विशेष—मन्त्रविधि एवं स्तोत्र भी दिया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १८४) और है।

४५६२ चौबीसपूजा……। पत्र सं ११। आ १ ×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २११। अ भण्डार।

विशेष—ऋषभनाथ से लेकर धर्मनाथ तक पूजायें हैं।

४५६३ चौसठऋद्धिपूजा—स्वरूपचन्द। पत्र सं ११। आ ११½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-६४ प्रकार की ऋद्धि धारण करने वाले मुनियोंकी पूजा। र काल सं १९१ सावन सुदी ७। ले काल सं १९५१। पूर्ण। वे सं ६६४। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बृहद्गुर्वावलि पूजा भी है।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे सं ७१६, ७१७ ७१८ ७२७) और हैं।

४५६४ प्रति सं० २। पत्र सं ८। ले काल सं १९१। वे सं १७। क भण्डार।

४५६५ प्रति सं० ३। पत्र सं १२। ले काल सं १९५२। वे सं २१। ग भण्डार।

४५६६ प्रति सं० ४। पत्र सं २६। ले काल सं १९२९ फागुण सुदी १२। वे सं ७१। घ भण्डार।

४५६७ प्रति सं० ५। पत्र सं २५। ले काल ×। वे स १९१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १९४) और है।

४५६८ प्रति सं० ६। पत्र सं ८। ले काल ×। वे सं ७१४। च भण्डार।

४५६९ प्रति सं० ७। पत्र सं ४८। ले० काल सं १९२२। वे सं २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे सं १४१, २१६/३) और हैं।

४५७० प्रति सं० ८। पत्र सं ४५। ले काल ×। वे सं २ ६। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं २६२/२ २६५) और हैं।

४५७१ प्रति सं० ९। पत्र सं ४९। ले काल ×। वे सं ५१४। भ भण्डार।

४५७२ प्रति सं० १०। पत्र सं ४१। ले काल ×। वे सं १९११। ट भण्डार।

४५७३ ज्ञातिनिवारणविधि……। पत्र सं १। आ ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८७८। अ भण्डार।

४५७४ जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास। पत्र स० १६। आ० १०$\frac{3}{8}$×६ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल १७वी शताब्दी। ले० काल स० १८२२ मगसिर बुदी १२। पूर्ण। वे० स० १८३। क भण्डार।

विशेष—प्रति अकृत्रिम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान जिनपूजा सहित है। प० चोखचन्द ने माहचन्द से प्रतिलिपि करवाई थी।

४५७५ प्रति स० २। पत्र स० २८। ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४। वे० स० ६८। च भण्डार।

विशेष—भवानीचन्द भावासा झिलाय वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५७६. जम्बूस्वामीपूजा । पत्र स० १०। आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-अन्तिम केवली जम्बूस्वामी की पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६४८। पूर्ण। वे० स० ६०१। अ भण्डार।

४५७७ जयमाल—रायचन्द। पत्र स० १। आ० ८$\frac{3}{4}$×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८५५ फागुण सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१३२। अ भण्डार।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी।

४५७८ जलहरतेलाविधान । पत्र स० ४। आ० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ३२३। ज भण्डार।

विशेष—जलहर तेले (व्रत) की विधि है। इसका दूसरा नाम झरतेला व्रत भी है।

४५७६ प्रति सं० २। पत्र स० ३। ले० काल स० १६२८। वे० स० ३०२। ख भण्डार।

४५८०. जलयात्रापूजाविधान । पत्र स० २। आ० ११×६ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २६३। ज भण्डार।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान।

४५८१ जलयात्राविधान—महा प० आशाधर। पत्र स० ४। आ० ११$\frac{3}{4}$×५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १०६६। अ भण्डार।

४५८२ जलयात्रा (तीर्थोदकादानविधान) । पत्र स० २। आ० ११×५$\frac{3}{4}$ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२२। छ भण्डार।

विशेष—जलयात्रा के यन्त्र भी दिये हैं।

४५८३ जिनगुणसपत्तिपूजा—भ० रत्नचन्द्र। पत्र स० ६। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इ च। भाषा सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२। ड भण्डार।

४५८४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८६ । वे० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्रीपति जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४५८५ जिनगुणसंपत्तिपूजा……। पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नहीं है ।

४५८६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

४५८७ जिनगुणसंपत्तिपूजा……। पत्र सं० ५ । आ० ७½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११५ । ख भण्डार ।

४५८८ जिनपुरन्दरव्रतपूजा……। पत्र सं० १४ । आ० १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९ । छ भण्डार ।

४५८९ जिनपूजाफलप्राप्तिकथा……। पत्र सं० ५ । आ० १२½×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८१ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के साथ २ कथा भी है ।

४५९० जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठासार)—महा पं० आशाधर । पत्र सं० १०२ । आ० ११½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय मूर्ति वेदी प्रतिष्ठादि विधानों की विधि । र० काल सं० १२८५ आसौज बुदी ८ । ले० काल सं० १४९५ माघ बुदी ८ (शक सं० १३६) पूर्ण । वे० सं० २८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४९५ शाके १३६ वर्षे माघ वदि ८ गुरुवासरे……………(अपूर्ण)

४५९१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १६११ वर्षे……।

४५९२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८५ मामवा बुदी ११ । वे० सं० २७ । घ भण्डार ।

विशेष—मथुरा में औरङ्गजेब के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई ।

लेखक प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेषु सरस्वतीयो गच्छे बलात्कारगणे प्रसिद्धे ।

सिंहासनो श्रीमतमस्य वैटे सुवर्णिगणाया विपये विसीने ।

श्रीकुंदकुंदाखिलयोगनाय पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गा ।
दुर्वादिवाग्गुन्मथनैकसज्ज विद्यामुनदीश्वरसूरिमुख्य ॥
तदन्वये योऽमरकीत्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभशत्रु ।
तस्यानुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगाया ॥
पुर्या शुभाया पट्टपशत्रुवत्या सुवर्णकाणप्रत नीचकार ॥

४५६३. प्रति सं० ४ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १६५६ भादवा सुदी १२ । वे० स० २२३ । म्ह भण्डार ।

विशेष—वगाल मे अकवरा नगर मे राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल मे आचार्य कुन्दकुन्द के वलात्कारगण सरस्वतीगच्छ मे भट्टारक पद्मनदि के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय मे खडेलवाल वंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह श्री पट्टिराज वलू, फरना, कपूरा, नाथू आदि मे से कपूरा ने षोडशकारण व्रतोद्यापन मे प० श्री जयवत को यह प्रति भेंट की थी ।

४५६४. प्रति सं० ५ । पत्र स० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । ञ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नद्यात् खडिल्लवशोत्य केल्हणोन्यासवित्तर ।
लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रणमं पुस्तक ॥२०॥

४५६५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । ले० काल सं० १६६२ भादवा वुदी २ । वे० स० ४२५ । ञ भण्डार ।

विशेप—सवत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भौमे अद्येह राजपुरनगरवास्तव्यं आभ्यासरनागरज्ञाती पचोली त्यात्राभाट्टसुत नरसिंहेन लिखित ।

ङ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २०७) च भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० १२०, १०५) तथा म्ह भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २०७) और है।

४५६६ जिनयज्ञविधान ' ' । पत्र सं० १ । आ० १०×४½ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८३ । ट भण्डार ।

४५६७ जिनस्नपन (अभिषेक पाठ) ·· ····। पत्र स० १४ । आ० ६½×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८११ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ । ट भण्डार ।

४५६८. जिनसहिता ' ' । पत्र सं० ४६ । आ० १३×८½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा प्रतिष्ठादि एव आचार सम्बन्धी विधान । र० काल ×। ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७ । छ भण्डार ।

४५९९. जिनसंहिता—भद्रबाहु । पत्र सं० ११ । आ० ११×५२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । क भण्डार ।

४६०० जिनसंहिता—भ० एकसंधि । पत्र सं० ८४ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १६७ । क भण्डार ।

विशेष—५७ ५८ ८१ ८२ तथा ८३ पत्र खाली हैं ।

४६०१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १८५३ । वे० सं० १६८ । क भण्डार ।

४६०२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वे० सं० ५६ । ख भण्डार ।

४६०३ जिनसंहिता...... । पत्र सं० १०१ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । र० काल × । ले० काल सं० १८५६ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम पूजासार भी है । यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसका विषय वीरसेन जिनसेन पूज्यपाद तथा गुणभद्रादि आचार्यों के ग्रन्थों से संग्रह किया गया है । ६६ पृष्ठों के अतिरिक्त ६ पत्रों में ग्रन्थ से सम्बन्धित ४१ मन्त्र दे रखे हैं ।

४६०४ जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० १२६ । आ० १ ×४२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६ ६ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

विशेष—शिवमरणीलाल से पं० पुलालजी के पठनार्थ हीरालालजी रैणवाल तथा पन्नीवर वालों ने किया भण्डार में प्रतिलिपि करवाई थी ।

प्रशस्ति प्रशस्ति— या पुस्तक लिखाई किशन भण्डारि के कोटडिराज्ये श्रीमानसिंहजी तत् कंवर फतैसिंहजी बुलाया रैणवालसू वैश्यी निमित्त श्रीसहस्रनाम को मंडलजी मंडायो उत्सव करायो । श्री ऋषभदेवजी को मन्दिर में भास लियो दरोगा चतुर्भुजजी वासी बगरू का पोत पारणी रु० १५) साहजी मगोमलालजी साह श्यामजी सहाय सू हुंवो ।

४६०५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वे० सं० १२४ । क भण्डार ।

४६०६ जिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपचन्द बिलाला । पत्र सं० ५५ । आ० ११×५२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१६ आसोज सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७१३ । क भण्डार ।

४६ ७ जिनसहस्रनामपूजा—चैनसुख लुहाडिया । पत्र सं० २६ । आ० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६१६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७७२ । क भण्डार ।

४६०८. जिनसहस्रनामपूजा ···। पत्र स० १८। आ० १३×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७२४। अ भण्डार।

४६०९ प्रति स० २। पत्र स० २३। ले० काल ×। वे० सं० ७२४। च भण्डार।

४६१० जिनाभिषेकनिर्णय ··। पत्र स० १०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–अभिषेक विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २११। छ भण्डार।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड मे सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है।

४६११ जैनप्रतिष्ठापाठ·· ··। पत्र स० २ से ३५। आ० ११३⁄४×४३⁄४ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११६। च भण्डार।

४६१२. जैनविवाहपद्धति । पत्र सं० ३४। आ० १२×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–विवाह विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१५। क भण्डार।

विशेष—आचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार सग्रह किया गया है। प्रति हिन्दी टीका सहित है।

४६१३ प्रति सं० २। पत्र स० २७। ले० काल ×। वे० स० १७। ज भण्डार।

४६१४ ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० १६। आ० १०३⁄४×५ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ६। ले० काल सं० १८६३ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वे० स० १२२। च भण्डार।

विशेष—जयपुर मे चन्द्रप्रभु चैत्यालय में रचना की गई थी। सोनजी पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४६१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा ··। पत्र सं० ७। आ० ११×५३⁄४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५०४। अ भण्डार।

विशेष— इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७२३) और हैं।

४६१६ ज्येष्ठजिनवरपूजा ·· ···। पत्र स० १२। आ० ११३⁄४×५ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१६। क भण्डार।

४६१७. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६२१। वे० स० २६३। ख भण्डार।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा··· ···। पत्र स० १। आ० ११३⁄४×५३⁄४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८६० आषाढ सुदी ४। पूर्ण। वे० स० २२१२। अ भण्डार।

विशेष—विद्वान खुशाल ने जोधराज के वनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की। खरडो सुरेन्द्रकीर्तिजी को रच्यो।

४६१६. णमोकारपैंतीसपूजा—अक्षयराम। पत्र सं १। आ १२×५½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–णमोकार मन्त्र पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ४११। क भण्डार।

विशेष—महाराजा जयसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ रचना की गई थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ५७८) और है।

४६२० प्रति सं० २। पत्र सं १। ले काल सं० १७९६ प्र आसोज बुदी १। वे सं ३६४। ञ भण्डार।

४६२१ णमोकारपैंतीसीव्रतविधान—आ० श्री कनककीर्त्ति। पत्र स ५। आ १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा एवं विधान। र काल ×। ले काल स १८२१। पूर्ण। वे सं २११। क भण्डार।

विशेष—डू गरसी कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४६२२. प्रति स० २। पत्र सं २। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १७४। ञ भण्डार।

४६२३ तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा—दयाचन्द्र। पत्र सं १। आ ११×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ५६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति वे सं २६१। और है।

४६२४ तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा……। पत्र सं २। आ ११½×५। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २६२। क भण्डार।

विशेष—केवल १ में अध्याय की पूजा है।

४६२५ तीनचौबीसीपूजा……। पत्र सं १८। आ १२×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय भूत भविष्यत् तथा वर्तमान काल के चौबीसों तीर्थङ्करों की पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २७४। क भण्डार।

४६२६ तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा……। पत्र सं ५। आ ११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं १८६। ट भण्डार।

४६२७ तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द पाटनी। पत्र सं १७। आ ११½×५½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र काल सं १८६४ कार्तिक बुदी १४। ले काल सं १९२८ भादवा सुदी ७। पूर्ण। वे सं २७५। क भण्डार।

४६२८. तीनचौबीसीपूजा……। पत्र सं १७। आ ११×५ इञ्च भाषा–हिन्दी। विषय पूजा। र काल सं १८८२। ले काल सं १ ८२। पूर्ण। वे स २७३। क भण्डार।

४६२९. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा । पत्र सं० २० । आ० ११½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२५ । छ भण्डार ।

४६३०. तीनलोकपूजा—टेकचन्द । पत्र स० ४१० । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८२८ । ले० काल स० १९७३ । पूर्ण । वे० स० २७७ । ङ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ लिखाने मे ३७॥।-) लगे थे ।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५७६, ५७७) और है ।

४६३१. प्रति स० २ । पत्र स० ३५० । ले० काल × । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

४६३२ तीनलोकपूजा—नेमीचन्द । पत्र सं० ८५१ । आ० १३×८½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एव त्रिलोकपूजा भी है ।

४६३३. प्रति स० २ । पत्र सं० १०८८ । ले० काल × । वे० सं० २७० । क भण्डार ।

४६३४ प्रति स० ३ । पत्र सं० ९८७ । ले० काल सं० १९९३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० २२९ । छ भण्डार ।

विशेष—दो वेष्टनो मे है ।

४६३५ तीसचौबीसीनाम........ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७८ । च भण्डार ।

४६३६. तीसचौबीसीपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ११६ । आ० १०½×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८० । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि वनारस मे गङ्गातट पर हुई थी ।

४६३७. प्रति स० २ । पत्र सं० १२२ । ले० काल स० १९०१ आषाढ सुदी २ । वे० स० ५७ । झ भण्डार ।

४६३८ तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा .. । पत्र सं० ६ । आ० ८×६½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८०८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७८ । ङ भण्डार ।

विशेष—अढाईद्वीप अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५७९) और है ।

४६३९. तेरहद्वीपपूजा—शुभचन्द्र । पत्र स० १५४ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९२१ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ७३ । ख भण्डार ।

४६४० तेरहद्वीपपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० १०२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८७ भादवा सुदी २। वे० सं० १२७। ङ भण्डार।

विशेष—बिजैरामजी पांड्या ने बलदेव ब्राह्मण से लिखवाई थी।

४६४१ तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २४। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८११। पूर्ण। वे० सं० ४१। ब भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५) और है।

४६४२. तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२४। पूर्ण। वे० सं० ५१५। क भण्डार।

४६४३ तेरहद्वीपपूजा—लालजीत। पत्र सं० २१२। आ० १२$\frac{1}{2}$×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १८७७ कार्तिक सुदी १२। ले० काल सं० १९९२ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० २७७। क भण्डार।

विशेष—गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

४६४४ तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० १७१। आ० ११×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ५८१। च भण्डार।

४६४५ तेरहद्वीपपूजा……। पत्र सं० २६४। आ० ११×७$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९४९ कार्तिक सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ३४३। ञ भण्डार।

४६४६ तेरहद्वीपपूजाविधान……। पत्र सं० ८१। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १ ६१। अ भण्डार।

४६४७ त्रिकालचौबीसीपूजा—त्रिभुवनचन्द्र। पत्र सं० ११। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–तीनों काल में होने वाले तीर्थङ्करों की पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७१। ख भण्डार।

विशेष—शिवलाल ने मेवटा में प्रतिलिपि की थी।

४६४८ त्रिकालचौबीसीपूजा……। पत्र सं० ६। आ० १ ×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० का० ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७८। क भण्डार।

४६४९ प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल सं० १७ ४ पौष सुदी ६। वे० सं० २७१। क भण्डार।

विशेष—बसवा में आचार्य पूर्णचन्द्र ने अपने चार शिष्यों के साथ में प्रतिलिपि की थी।

४६५०. प्रति सं० ३ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १६६१ भादवा सुदी ३ । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती ग्रजिका की पुस्तक है ।

४६५१. प्रति स० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन बुदी १३ । वे० सं० ४११ । व्य भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १७५) और है ।

४६५२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा…… । पत्र स० १६ । आ० ११×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान के त्रेसठ शलाका पुरुषो की पूजा है ।

४६५४ त्रिलोकक्षेत्रपूजा… । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल स० १८४२ । ले० काल स० १८८६ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५. त्रिलोकस्थजिनालयपूजा । पत्र सं० ६ । आ० ११×७¾ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२८ । ज भण्डार ।

४६५६ त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० ३६ । आ० १३½×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७. त्रिलोकसारपूजा । पत्र सं० २६० । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६३० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८. त्रेपनक्रियापूजा……। पत्र स० ६ । आ० १२×५¾ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५६. त्रेपनक्रियाव्रतपूजा……। पत्र स० ५ । आ० ११½×५⅙ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल स० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने सागानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा—सुमतिसागर । पत्र स० १७२ । आ० ११¾×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८२६ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१ त्रैलोक्यसारमहापूजा—— । पत्र सं १४१ । आ १ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं १६११ । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ल भण्डार ।

४६६२. दशलक्षणजयमाल—पं० रइधू । आ १ ×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-धर्म के दस भेदों की पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं० २६८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है ।

४६६३ प्रति सं० २ । पत्र सं ६ । ले काल सं १७१९ । वे सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १ २) और है ।

४६६४ प्रति सं० ३ । पत्र सं ११ । ले काल × । वे सं २६७ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं २९६) और है ।

४६६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं ७ । ले काल सं १८ १ । वे सं ८६ । ल भण्डार ।

विशेष—जोशी खुशालीराम ने टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं० ८२ ८१/१) और है ।

४६६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं ११ । ले काल × । वे सं २९४ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं । इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे सं २९२) और है ।

४६६७ प्रति सं० ६ । पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं १२६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं १२) और है ।

४६६८ प्रति सं० ७ । पत्र सं ६ । ले काल सं १७८२ फागुण सुदी १२ । वे सं १२६ । ख भण्डार ।

४६६९ प्रति सं० ८ । पत्र सं ६ । ले काल सं १८९८ । वे सं ७१ । म भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं १९८ २ २) और हैं ।

४६७० प्रति सं० ९ । पत्र सं ४ । ले काल सं १७४६ । वे सं १७ । भ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे सं २६८ २८५) और हैं ।

४६७१ प्रति सं० १ । पत्र सं १ । ले काल × । वे सं १७८६ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं १७८७ १७८८ १७१४) और हैं ।

४६७२ दशलक्षणजयमाल—प० भाव शर्मा । पत्र सं ८ । आ १२×५३ इंच । भाषा-प्राकृत विषय-पूजा । र काल × । ले० काल सं १८११ भादवा सुदी ११ । अपूर्ण । वे सं २१८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे टीका दी हुई है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ४८१) और है ।

४६७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७३४ पौष बुदी १२ । वे० स० ३०२ । क भण्डार ।

विशेष—अमरावती जिले मे समरपुर नामक नगर मे आचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वय के पढने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०१) और है ।

४६७४ प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६१२ । वे० सं० १८१ । ख भण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोबनेर के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. प्रति स० ४ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८६२ भादवा सुदी ८ । वे० सं० १५१ । च भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६ प्रति स० ५ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७ प्रति सं० ६ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०५ । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४८१) और है ।

४६७८ प्रति सं० ७ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १७८४ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १७८६, १७६०, १७६२, १७६४) और हैं ।

४६७६ दशलक्षणजयमाल ...... । पत्र स० ८ । आ० १०×५ इच । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७८४ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २६३ । ङ भण्डार ।

४६८० प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० २०६ । झ भण्डार ।

४६८१ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० ७२६ । अ भण्डार ।

४६८२. प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २६७, २६८) और हैं ।

४६८३ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८६६ भादवा सुदी ३ । वे० स० १५३ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा चौथमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १५२, १५४) और हैं ।

४६८४. दशलक्षणजयमाल ...... । पत्र स० ५ । आ० ११¾×५¾ इच । भाषा–प्राकृत, सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११५ । अ भण्डार ।

४६८५. दशलक्षणजयमाल……। पत्र सं० ६। आ० १ ३×४३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। लि० काल सं० १७११ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ८४। क भण्डार।

विशेष—आमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

४६८६. दशलक्षणजयमाल……। पत्र सं० ७। आ० ११×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४५। च भण्डार।

४६८७. दशलक्षणपूजा—अभ्रदेव। पत्र सं० ६। आ० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १ ८२। ख भण्डार।

४६८८. दशलक्षणपूजा—अभयनन्दि। पत्र सं० १५। आ० १२×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। लि० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६६। क भण्डार।

४६८९. दशलक्षणपूजा……। पत्र सं० २। आ० ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११७। ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२ ४) और है।

४६९०. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ४। वे० सं० १ १। क भण्डार।

विशेष—सांगानेर में विद्याविनोद ने पं० गिरधर के वाचनार्थ प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६८) और है।

४६९१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १७८५। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७११) और है।

४६९२. दशलक्षणपूजा……। पत्र सं० १७। आ० ११×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८९१। पूर्ण। वे० सं० १६५। च भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४६९३. दशलक्षणपूजा—द्यानतराय। पत्र सं० १। आ० ८३×६३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। लि० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७२५। च भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ७ तक रत्नत्रयपूजा भी हुई है।

४६९४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी २। वे० सं० १ । क भण्डार।

४६९५. प्रति सं० ३। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० १ । ज भण्डार।

४६६६. दशलक्षणपूजा ''' '। पत्र स० ३५। आ० १२१/२×७१/२ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६५४। पूर्ण। वे० स० ५८८। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५८६) और है।

४६६७ प्रति स० २। पत्र स० २५। ले० काल सं० १६३७। वे० स० ३१७। च भण्डार।

४६६८ दशलक्षणपूजा '' '''। पत्र स० ३। आ० ११×५ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२०। ट भण्डार।

विशेष—स्थापना द्यानतराय कृत पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है।

४६६६ दशलक्षणमडलपूजा ''। पत्र स० ६३। आ० १११/२×५१/२ इच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल स० १८८० चैत्र सुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३०३। क भण्डार।

४७०० प्रति स० २। पत्र स० ५२। ले० काल ×। वे० सं० ३०१। ङ भण्डार।

४७०१ प्रति सं० ३। पत्र स० ३४। ले० काल स० १६३७ भादवा बुदी १०। वे० स० ३००। ङ भण्डार।

४७०२ दशलक्षणव्रतपूजा—सुमतिसागर। पत्र सं० २२। आ० १०१/२×५ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ७६६। अ भण्डार।

४७०३. प्रति सं० २। पत्र स० १४। ले० काल स० १८२६। वे० स० ४६८। अ भण्डार।

४७०४ प्रति स० ३। पत्र स० १३। ले० काल सं० १८७६ आसोज सुदी ५। वे० सं० १४६। च. भण्डार।

विशेष—सदासुख वाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४७०५ दशलक्षणव्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि। पत्र सं० १६ – २५। आ० १०१/२×५ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६१। ङ भण्डार।

४७०६ दशलक्षणव्रतोद्यापन—मल्लिभूषण। पत्र स० १४। आ० १२१/२×६ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२६। छ भण्डार।

४७०७ प्रति सं० २। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० स० ७५। झ भण्डार।

४७०८. दशलक्षणव्रतोद्यापन । पत्र सं० ४३। आ० १०×५ इंच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ७०। झ भण्डार।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है।

४००६. दशलक्षणविधानपूजा…… । पत्र सं० १ । आ० १२३×८ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ ७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां इसी वेष्टन में और है ।

४०१० देवपूजा—इन्द्रनन्दि योगीन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १ ५×४ इ च । भाषा संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । च भण्डार ।

४०११ देवपूजा…… । पत्र स० ११ । आ० ६३×४३ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० स० १०४१ । अ भण्डार ।

४०१२ प्रति स० २ । पत्र स० ४ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४६ । ख भण्डार ।

४०१३ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० १ ५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १ ६) और है ।

४०१४ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १६१ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० स० १६२ १६३) और है ।

४०१५ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । लि० काल स० १८८३ पौष बुदी ८ । वे० सं० १६६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० स० १६६ १७८) और है ।

४०१६ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल सं० १६५ माघाढ बुदी १२ । वे० स० २१४२ । ट भण्डार ।

विशेष—पीताम्बर ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४०१७ देवपूजाटीका…… । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वे० स० ११२ । छ भण्डार ।

४०१८. देवपूजाभाषा—जयचन्द छाबडा । पत्र सं० १७ । आ० १२×५३ इ च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७३ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ५११ । क भण्डार ।

४०१९. देवसिद्धपूजा…… । पत्र स० १५ । आ० १२×५३ इच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४०२० द्वादशव्रतपूजा—प० अभ्रदेव । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८४ । क भण्डार ।

४७२१. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० १६। आ० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल स० १७७२ माघ सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३३। अ भण्डार।

४७२२. प्रति स० २। पत्र स० १४। ले० काल ×। वे० स० ३२०। ङ भण्डार।

४७२३ प्रति स० ३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वे० स० ११७। छ भण्डार।

४७२४. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि। पत्र स० ६। आ० ७३×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५६३। अ भण्डार।

४७२५. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्त्ति। पत्र स० ६। आ० १०३×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५६। च भण्डार।

४७२६. द्वादशव्रतोद्यापन ··। पत्र स० ५। आ० ११३×५३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८०४। पूर्ण। वे० स० १३५। ज भण्डार।

विशेष—गोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी।

४७२७. द्वादशांगपूजा—डालूराम। पत्र स० १६। आ० ११×५३ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६। ले० काल स० १६३० आषाढ बुदी ११। पूर्ण। वे० स० ३२४। क भण्डार।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी।

४७२८. द्वादशागपूजा ।पत्र स० ८। आ० ११३×५३ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० ५६२।

विशेष—इसी वेष्टन मे २ प्रतियां और हैं।

४७२९ द्वादशागपूजा ·· ।पत्र स० ६। आ० १२×७३ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३२६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३२७) और है।

४७३० प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० स० ४४४। व्य भण्डार।

४७३१. धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि। पत्र स० १६। आ० १२×५३ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५१८। अ भण्डार।

४७३२ प्रति स० २। पत्र स० १६। ले० काल स० १६४२ फागुण सुदी १०। वे० स० ८६। ख भण्डार।

विशेष—पन्नालाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४४३३ धर्मचक्रपूजा—साधु रणमल्ल । पत्र सं ८ । आ ११×५½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल सं १८८१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे सं ५२८ । क भण्डार ।

विशेष—पं सुखासचन्द ने जोबराज पाटनी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४४३४ धर्मचक्रपूजा········। पत्र सं ६ । आ १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५ १ । क भण्डार ।

४४३५ ध्वजारोपण········। पत्र सं ११ । आ ११×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजाविधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२२ । छ भण्डार ।

४४३६ ध्वजारोपणमन्त्र··········। पत्र सं ४ । आ ११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ५२१ । क भण्डार ।

४४३७ ध्वजारोपणविधि—प० आशाधर । पत्र सं २७ । आ १ ×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । च भण्डार ।

४४३८ ध्वजारोपणविधि·····। पत्र सं १३ । आ १ ३½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ४१४ ४८८) और हैं ।

४४३९ प्रति सं० २ । पत्र सं ८ । ले काल सं १६१६ । वे सं ११८ । ज भण्डार ।

४४४० ध्वजारोहणविधि ········। पत्र स ८ । आ १ ½×७½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र काल × । ले काल सं १६२७ । पूर्ण । वे सं २७१ । ज भण्डार ।

४४४१ प्रति स० २ । पत्र सं २ – ४ । ल काल × । अपूर्ण । वे सं १८२२ । ट भण्डार ।

४४४२ नन्दीश्वरजयमाल······। पत्र सं २ । आ १½×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १७०६ । ट भण्डार ।

४४४३ नन्दीश्वरजयमाल·······। पत्र सं ३ । आ ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १८७ । ट भण्डार ।

४४४४ नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्ननन्दि । पत्र सं १ । आ ११½×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७३३ धर्मचक्रपूजा—साधु रणमल्ल। पत्र सं ८। आ ११×५½ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १८८१ पौष सुदी ५। पूर्ण। वे सं ५२८। अ भण्डार।

विशेष—पं खुशालचन्द ने जोबराज पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

४७३४ धर्मचक्रपूजा……। पत्र सं १। आ १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५ १। अ भण्डार।

४७३५ ध्वजारोपण……। पत्र सं ११। आ ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजाविधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं० १२२। छ भण्डार।

४७३६ ध्वजारोपणमन्त्र……। पत्र सं ४। आ ११½×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५२१। अ भण्डार।

४७३७ ध्वजारोपणविधि—पं० आशाधर। पत्र सं २७। आ १ ×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। च भण्डार।

४७३८. ध्वजारोपणविधि……। पत्र सं ११। आ १ ३×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विषय-मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं । अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं ४१४ ४८८) और हैं।

४७३९ प्रति सं० २। पत्र सं ८। ले काल सं १६१६। वे सं ११८। ज भण्डार।

४७४० ध्वजारोहणविधि ……। पत्र स ८। आ १ ½×७½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान। र काल ×। ले काल सं १६२७। पूर्ण। वे सं २७१। ज भण्डार।

४७४१ प्रति स० २। पत्र सं २ – ४। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १८२२। ट भण्डार।

४७४२ नन्दीश्वरजयमाल……। पत्र सं २। आ ६½×४ इंच। भाषा—अपभ्रंश। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७०६। ट भण्डार।

४७४३ नन्दीश्वरजयमाल……। पत्र सं ३। आ ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८७। ट भण्डार।

४७४४ नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्ननन्दि। पत्र सं १। आ ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४७४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १८६१ आषाढ बुदी ३ । वे० स० १६१ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने खा रखे हैं।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा...... । पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०० । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत मे है। इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७६७) और है।

४७४७. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र सं० ३१ । आ० १२×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

४७४८ नन्दीश्वरपंक्तिपूजा ..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७४६ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ५५७) और है।

४७४९. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ३६३ । क भण्डार ।

४७५०. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा ..... । पत्र स० ३ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८८३ । अ भण्डार ।

४७५१. नन्दीश्वरपूजा ..... । पत्र स० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०० । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ४०६, २१२, २७४ ले० काल स० १८२४) और हैं।

४७५२. नन्दीश्वरपूजा ..... । पत्र सं० ४ । आ० ८३×६ इंच । भाषा प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११५२ । अ भण्डार ।

४७५३. प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३४८ । ङ भण्डार ।

४७५४ नन्दीश्वरपूजा ..... । पत्र स० ४ । आ० ६×७ इंच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी। सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४७५५. नन्दीश्वरपूजा ..... । पत्र स० ३१ । आ० ६३×५३ इंच । भाषा–सस्कृत, प्राकृत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । ज भण्डार ।

४७५६. नन्दीश्वरपूजा ..... । पत्र स० ३० । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९९१ । पूर्ण । वे० स० ३४६ । ह भण्डार ।

४७४७ नन्दीश्वरभक्तिभाषा—पन्नालाल। पत्र सं. २६। आ० ११½×७ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं. १९२१। ले० काल सं. १९८६। पूर्ण। वे० सं. ३६४। क भण्डार।

४७४८ नन्दीश्वरविधान—जिनेश्वरदास। पत्र सं. १११। आ० ११×८½ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय पूजा। र० काल सं. १९६ । ले० काल सं. १९६२। पूर्ण। वे० सं. ३६ । क भण्डार।

विशेष—लिखाई एवं कागज में केवल १५) रु० खर्च हुये थे।

४७४९ नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेण। पत्र सं. २ । आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं. ११२। च भण्डार।

४७५० नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—अनन्तकीर्ति। पत्र सं. १३ । आ० ८½×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं. १८२७ आषाढ बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं. २ १७। ट भण्डार।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है। तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

४७५१ नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं. ५। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं. ११०। छ भण्डार।

४७५२. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं. ९ । आ० ८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं. १८८९ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वे० सं. ३६१। क भण्डार।

विशेष—स्योजीराम भांवसा ने प्रतिलिपि की थी।

४७५३ नन्दीश्वरपूजाविधान—टेकचन्द। पत्र सं. ४६। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल सं. १८८५ सावन सुदी १ । पूर्ण। वे० सं. १७८। झ भण्डार।

विशेष—फतेहलाल पापडीवाल ने जयपुर वाले रामलाल पहाडिया से प्रतिलिपि कराई थी।

४७५४ नन्दसप्तमीव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं. १ । आ० ८×४ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं. १६४०। पूर्ण। वे० सं. ४६२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं. २ १) और है।

४७५५ नवग्रहपूजाविधान—भद्रबाहु। पत्र सं. ८ आ० १ ½×५½ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं. २२। ज भण्डार।

४७५६ प्रति सं० २। पत्र सं. ६। ले० काल ×। वे० सं. २३। ज भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवग्रह… है तथा किस ग्रह की शांति के लिए किस तीर्थंकर की पूजा करनी चाहिए यह लिखा है।

४७६७. नवग्रहपूजा…… । पत्र सं० ७ । आ० ११½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ४७५, ४६०, ५७३, १२७१, २११२) और हैं।

४७६८ प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३ । वे० स० १२७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १२७) और हैं।

४७६६ प्रति सं० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १६८८ कार्तिक बुदी ७ । वे० स० । २०३ ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतियां (वे० स० १८५, १६३, २८०) और हैं।

४७७० प्रति सं० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २०१५ । ट भण्डार ।

४७७१ नवग्रहपूजा …… । पत्र स० २६ । आ० ६×६½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १११६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७१३) और है।

४७७२ प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० २२१ । छ भण्डार ।

४७७३ नित्यकृत्यवर्णन …… । पत्र स० १० । आ० १०½×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ हैं । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—३रा पृष्ठ नही है ।

४७७४ नित्यक्रिया …… । पत्र स० ६८ । आ० ८½×६ इ च । भाषा सस्कृत । विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है । ५४, ६७, तथा ६८ से आगे के पत्र नही हैं ।

४७७५ नित्यनियमपूजा …… । पत्र स० २६ । आ० ६×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ३७०, ३७१) और हैं ।

४७७६ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३६७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० स० ३६० से ३६३) और है ।

४७७७ प्रति स० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल स० १८६३ । वे० स० ५२६ । च भण्डार ।

४७७८. नित्यनियमपूजा……। पत्र सं १२। आ १ ×७ इंच। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। लि काल ×। पूर्ण। वे सं ७१२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ७ ८ १११४) और हैं।

४७७९. प्रति स० २। पत्र सं २१। ले काल सं १६४ कार्तिक सुदी १२। वे० सं ३६८। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स ३६६) और है।

४७८०. प्रति स० ३। पत्र सं ७। लि काल सं १६५४। वे सं २८२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे स १२१/२ २२२/२) और हैं।

४७८१ नित्यनियमपूजा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र स ४६। आ ११×६३ इंच। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय-पूजा। र काल सं १६२१ माघ सुदी २। ले काल सं १६२१। पूर्ण। वे सं ४ १। अ भण्डार।

४७८२ प्रति स० २। पत्र सं ११। ले काल सं १६२८ सावन सुदी १ । वे सं ३७०। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ३७१) और है।

४७८३ प्रति स० ३। पत्र सं २६। ले काल सं १६२१ माघ सुदी २। वे सं ३७१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ३७) और है।

४७८४ प्रति स० ४। पत्र सं १५। लि काल स १६५५ ज्येष्ठ सुदी ७। वे सं २१४। ङ भण्डार।

विशेष—पत्र फटे हुये एवं जीर्ण हैं।

४७८५ प्रति स० ५। पत्र सं ४४। लि काल ×। वे स १३ । ख भण्डार।

विशेष—इसका पुट्ठा बहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है।

४७८६ प्रति स० ६। पत्र सं ४२। लि काल स १६११। वे सं १८६६। ट भण्डार।

४७८७ नित्यनियमपूजाभाषा……। पत्र सं १६। आ ८३×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र काल ×। लि काल सं १६६६ भादवा सुदी ११। पूर्ण। वे स ७ ७। अ भण्डार।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने प्रतिलिपि की थी।

४७८८. प्रति स० २। पत्र स २८। लि काल ×। पूर्ण। वे स ४७। ग भण्डार।

विशेष—जयपुर में सुकुमार की सहेली (संगीत सहेली) सं १६५६ में स्थापित हुई थी। उसकी स्थापना के समय का बनाया हुआ भजन है।

४७८९ प्रति स० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६६६ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ४८ । ग भण्डार ।

४७६०. प्रति सं० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १६६७ । वे० सं० २६२ । झ भण्डार ।

४७६१. प्रति स० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६५६ । वे० स० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष— पं० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर मे चढाई ।

४७६२ नित्यनैमित्तिकपूजापाठसग्रह…… । पत्र स० ५८ । आ० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१ । छ भण्डार ।

४७६३. नित्यपूजासग्रह …। पत्र स० ८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा-सस्कृत, अपभ्रंश । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७७ । ट भण्डार ।

४७६४. नित्यपूजासग्रह … । पत्र सं० ५ । आ० ६३×५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५ । च भण्डार ।

४७६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ११ । वे० स० ११७ । ज भण्डार ।

४७६६. प्रति स० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० १८६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १६६५, २०६३) और हैं ।

४७६७ नित्यपूजासग्रह । पत्र सं० २-३० । आ० ७३×२३ इंच । भाषा-सस्कृत, प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६५६ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १८३, १८४) और है ।

४७६८. नित्यपूजासग्रह …। पत्र स० ३६ । आ० १०३×७ इंच । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६५७ । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० २७, २८ तथा ३५ नही है कुछ पत्र भीग गये हैं । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १३२२) और हैं ।

४७६९. प्रति स० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० स० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १७४ । ज भण्डार ।

४८०१. प्रति स० ४ । पत्र स० २-३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठो का भी संग्रह है ।

४८०२. नित्यपूजा...........। पत्र सं० १५। आ० १२×५½ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७८। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १७२ १७३ १७४ १७५) और हैं।

४८०३. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ३९९। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३९४ ३९५) और हैं।

४८०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वे० सं० ६ ३। च भण्डार।

४८०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० २ से १८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५८। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमज्जिनवचन प्रकाशक............ संग्रहीतविद्वज्जनबोधके तृतीयकाण्डे पूजनवर्णनो नाम अष्टोल्लास समाप्त।

४८०६. निर्वाणकल्याणकपूजा...........। पत्र सं० २। आ० १२×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२८। क भण्डार।

४८०७. निर्वाणकांडपूजा.......। पत्र सं० ५। आ० ८½×७ इंच। भाषा–संस्कृत प्राकृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९६८ सावण सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ५५५५। क भण्डार।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि कोमलचन्द पंसारी व ईश्वरलाल चांदवाड़ से कराई थी।

४८०८. निर्वाणक्षेत्रमण्डलपूजा—स्वरूपचन्द। पत्र सं० ११। आ० ११×७ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल सं० १९१९ कार्तिक सुदी ११। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४६। ग भण्डार।

४८०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १९२७। वे० सं० ३७६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३७७ ३७८) और हैं।

४८१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १९१९ पौष सुदी ३। वे० सं० ६ ४। च भण्डार।

विशेष—जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। हरलाल बोहरा ने पुस्तक लिखाकर मेघराज मुहाड़िया के मन्दिर मे चढ़ाई। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६ ५ ६ ७) और हैं।

४८११. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १९४३। वे० सं० २११। छ भण्डार।

विशेष—सुन्दरलाल पांड्या चौधरी चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४८१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० ३११। ज भण्डार।

४८१३. निर्वाणक्षेत्रपूजा…… । पत्र सं० ११ । आ० ११×७ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल स० १८७१ । ले० काल सं० १९९९ । पूर्ण । वे० सं० १३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०९९) और हैं ।

४८१४ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल सं० १८७१ भादवा बुदी ७ । वे० स० २९६ । ज भण्डार । [गुटका साइज]

४८१५ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० १८७ । झ भण्डार ।

४८१६. प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६०६ । च भण्डार ।

विशेष—दूसरा पत्र नही है ।

४८१७. निर्वाणपूजा……… । पत्र स० १ । आ० १२×४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७१८ । अ भण्डार ।

४८१८ निर्वाणपूजापाठ—मनरंगलाल । पत्र सं० ३३ । आ० १०¾×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल स० १८४२ भादवा बुदी २ । ले० काल सं० १८८८ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ८२ । झ भण्डार ।

४८१९ नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ६×३¾ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६५ । अ भण्डार ।

४८२० नेमिनाथपूजा · । पत्र स० १ । आ० ७×५¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । अ भण्डार ।

४८२१. नेमिनाथपूजाष्टक—शंभूराम । पत्र स० १ । आ० ११¾×५¾ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४२ । अ भण्डार ।

४८२२. नेमिनाथपूजाष्टक · । पत्र स० १ । आ० ६¾×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२४ । अ भण्डार ।

४८२३ पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० १६ । आ० ११¾×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७९ । क भण्डार ।

४८२४ प्रति सं० २ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८७९ । वे० स० १०३७ । अ भण्डार ।

४८२५. पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल । पत्र स० १२९ । आ० ८×४ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५९ । अ भण्डार ।

४८२६ पञ्चकल्याणकपूजा—भरुणमणि। पत्र सं० ११। आ० १२×८ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १६२१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४। ख भण्डार।

४८२७ पञ्चकल्याणकपूजा—गुणकीर्ति। पत्र सं० २२। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल १६११। पूर्ण। वे० सं० १४। ख भण्डार।

४८२८ पञ्चकल्याणकपूजा—वादीभसिंह। पत्र सं० १८। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४८६। ख भण्डार।

४८२९ पञ्चकल्याणकपूजा—सुयशकीर्ति। पत्र सं० ७-२१। आ० ११३/४×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५८३। ख भण्डार।

४८३० पञ्चकल्याणकपूजा—सुधासागर। पत्र सं० १९। आ० ११×४३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१। क भण्डार।

४८३१ पञ्चकल्याणकपूजा......। पत्र सं० १६। आ० १०३/४×४३/४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६ ८ माघवा सुदी १। पूर्ण। वे० ८ १ ७। ख भण्डार।

४८३२ प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० १ १। ख भण्डार।

४८३३ प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १८४। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८५) और है।

४८३४ प्रति सं० ४। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १६१६ मासोज सुदी १। अपूर्ण। वे० सं० १२५ ख भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११७ १८) और हैं।

४८३५ प्रति सं० ५। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२। वे० सं० १६१। च भण्डार।

४८३६ प्रति सं० ६। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८२१। वे० सं० २३६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५) और है।

४८३७ पञ्चकल्याणकपूजा—छोटेलाल मित्तल। पत्र सं० १६। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा र० काल सं० १६१ भादवा सुदी १३। ले० काल सं० १६५२। पूर्ण। वे० सं० ७१। ख भण्डार।

विशेष—छोटेलाल बनारस के रहने वाले थे। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७१, ६७२) और हैं।

४८३८ पञ्चकल्याणकपूजा—रूपचन्द। पत्र सं० १ ४। आ० १२×५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६२। पूर्ण। वे० सं० ६१७। च भण्डार।

४८३९. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० २२ । आ० १०३/४×५३/४ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल स० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० १०८०, ११२०) और हैं ।

४८४०. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ । ले० काल सं० १९५४ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ५० । ग भण्डार ।

४८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १९५४ माह बुदी ११ । वे० सं० ६७ । घ भण्डार ।

विशेष—किशनलाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ६७) और है ।

४८४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल स० १९६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० ६१२ । च भण्डार ।

४८४३. प्रति स० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन मे एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति स० ६ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० २९८ । ज भण्डार ।

४८४५. प्रति स० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२० । क भण्डार ।

४८४६. प्रति स० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल स० १९२८ । वे० सं० ५३९ । ञ भण्डार ।

४८४७ पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १९२२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । ङ भण्डार ।

विशेष—नीले कागजो पर है ।

४८४८. प्रति स० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × वे० सं० २१५ । छ भण्डार ।

विशेष—सघीजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र सं० ३१ । आ० ११३/४×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल स० १९१० भादवा सुदी १३ । ले० काल स० १९१९ । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । च भण्डार ।

४८५०. पञ्चकल्याणकपूजा…… । पत्र सं० २५ । आ० ९×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९९ । ख भण्डार ।

४८५१. प्रति स० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल स० १९३९ । वे० स० १०० । ख भण्डार ।

४८५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३८७) और हैं ।

४८५३ प्रति स० ४ । पत्र सं १२ । ले० काल X । वे सं ११३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ११४) और है।

४८५४ पञ्चकुमारपूजा……। पत्र सं० ७ । आ ८३X७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे सं ७२ । झ भण्डार ।

४८५५ पञ्चक्षेत्रपालपूजा—गङ्गादास । पत्र स १४ । आ १ X५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे० सं ६६४ । अ भण्डार ।

४८५६ प्रति स० २ । पत्र सं १० । ले काल सं १६२१ । वे स २९२ । ख भण्डार ।

४८५७ पञ्चगुरुकल्याणपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं २५ । आ ११X५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल X । ले काल सं १६६५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे सं ४२० । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के शिष्य पांडे डू गर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

४८५८ पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन……। पत्र सं ११ । आ १२X५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल सं १८६२ । ले काल X । पूर्ण । वे सं ४१ । क भण्डार ।

४८५९. पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा……। पत्र स ४ । आ ८३X६३ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे सं १६६३ । ट भण्डार ।

४८६० पञ्चपरमेष्ठीपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं २४ । आ ११X५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय–पूजा । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे सं ४७७ । अ भण्डार ।

४८६१ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ले काल X । वे सं २६६ । च भण्डार ।

४८६२ प्रति सं० ३ । पत्र सं २५ । ले काल X । वे सं १४ । च भण्डार ।

४८६३ पञ्चपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं १२ । आ १२X५३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल X ले काल सं १७६१ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे सं ५६८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि साहजहानाबाद में जयसिंहपुरा में पं मनोहरदास के पठनार्थ हुई थी।

४८६४ प्रति स० २ । पत्र सं २६ । ले काल सं १८५६ । वे स ४११ । क भण्डार ।

विशेष—चूरू ग्राम में आनन्दीदास ने प्रतिलिपि की थी।

४८६५. प्रति स० ३ । पत्र सं ५४ । ले काल सं १८७३ मगसिर सुदी १ । वे स ६६ । घ भण्डार ।

४८६६ प्रति स० ४ । पत्र स ४१ । ले काल सं १८११ । वे स १६७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स १६८) और है।

४८६७ प्रति सं० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १६३ । ज भण्डार ।

४८६८ पञ्चपरमेष्ठीपूजा .... । पत्र सं० १५ । आ० १२×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१२ । क भण्डार ।

४८६९ प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । ले० काल सं० १८६२ आषाढ बुदी ८ । वे० स० ३६२ । ड भण्डार ।

४८७०. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द । पत्र स० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२० । छ भण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र सं० ३५ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८६२ मगसिर बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १०८६) और है ।

४८७३. प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ५१ । ग भण्डार ।

४८७४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९८७ । वे० सं० ३८६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३६०) और है ।

४८७५. प्रति स० ४ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० सं० ६१६ । च भण्डार ।

४८७६ प्रति स० ५ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १९२६ । वे० सं० ५१ । व्य भण्डार ।

विशेष—धन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७ प्रति सं० ६ । पत्र स० ३५ । ले० काल सं० १९१३ । वे० सं० १८७६ । ट भण्डार ।

विशेष—ईसरदा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा........ । पत्र सं० ३६ । आ० १३×५½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । ङ भण्डार ।

४८७९ प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । च भण्डार ।

४८८० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ३२१ । ज भण्डार ।

४८८१. प्रति सं० ४ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । व्य भण्डार ।

४८८२. प्रति सं० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १९८१ । वे० स० १७१० । ट भण्डार ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३ पञ्चमासचतुर्दशीपूजा ...। पत्र सं० ६। आ० ११×७ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

४८८४ पञ्चमंगलपूजा ...। पत्र सं० २१। आ० ८×४ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४। छ भण्डार।

४८८५ पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ४। आ० ११×५ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल सं० १८२८ भादवा सुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

४८८६ प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १६७। छ भण्डार।

४८८७ प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८८३ श्रावण सुदी ७। वे० सं० १६८। छ भण्डार।

विशेष—महात्मा शम्भुनाथ ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६६) और है।

४८८८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४८८९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८६२ श्रावण सुदी ५। वे० सं० १७। ख भण्डार।

विशेष—जयपुर नगर में श्री विमलनाथ चैत्यालय में गुरु हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४८९० पञ्चमीव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० १२×५½ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५१। ख भण्डार।

४८९१ पञ्चमीव्रतोद्यापन—श्री हर्षकीर्त्ति। पत्र सं० ७। आ० ११×५ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८८८ आसोज सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ११८। छ भण्डार।

विशेष—सम्पूराम ने प्रतिलिपि की थी।

४८९२. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९१९ आसोज सुदी ५। वे० सं० २ । ख भण्डार।

४८९३ प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। आ० १ २×५३ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९१२ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४८९४ पञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा ...। पत्र सं० ६। आ० ८½×४ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

विशेष—गाजी नारायन शर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

४८९५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १९०५ आसोज बुदी १२ । वे० स० ६४ । झ भण्डार ।

४८९६. प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३८८ । भण्डार ।

४८९७ पञ्चमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र स० ३३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३२ । अ भण्डार ।

४८९८. प्रति सं० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० ६१९ । च भण्डार ।

४८९९ प्रति स० ३ । पत्र स० २९ । ले० काल स० १९७९ । वे० स० २१३ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालो के चौबारे जयपुर मे लिखा गया । कीमत ४ ।॥)

४९००. पञ्चमेरुपूजा—द्यानतराय । पत्र स० ६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९६१ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । अ भण्डार ।

४९०१. प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३९५ । ङ भण्डार ।

४९०२. पञ्चमेरुपूजा—भूधरदास । पत्र स० ८ । आ० ८½×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त मे सस्कृत पूजा भी है जो अपूर्ण है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५९८) और है ।

४९०३ प्रति स० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० स० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है ।

४९०४ पञ्चमेरुपूजा—डालूराम । पत्र सं० ४४ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वे० स० ४१५ । क भण्डार ।

४९०५ पञ्चमेरुपूजा—सुखानन्द । पत्र सं० २२ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३९६ । ङ भण्डार ।

४९०६. पञ्चमेरुपूजा । पत्र स० २ । आ० ११×५½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय- पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६६ । अ भण्डार ।

४९०७ प्रति स० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४८७ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ४७६) और है ।

४९०८ पञ्चमेरुउद्यापनपूजा—भ० रत्नचन्द । पत्र सं० ९ । आ० १०½×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २०१ । च भण्डार ।

४९०९. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ७४ । च भण्डार ।

४११० पद्मावतीपूजा""""""। पत्र स० ५। आ १ ½×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल स १८६६। पूर्ण। वे स० ११८५। क भण्डार।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है।

४९११ प्रति स० २। पत्र स १६। ले काल ×। वे स० १२७। च भण्डार।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र पद्मावतीकवच पद्मावतीपटल एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है। अन्त में २ मन्त्र भी दिये हुये हैं। अष्टगंध लिखने की विधि भी दी हुई है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं २ ५) और है।

४९१२. प्रति स० ३। पत्र सं १। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं० १८ । ख भण्डार।

४९१३ प्रति स० ४। पत्र स ७। ले काल ×। वे० सं १४४। छ भण्डार।

४९१४ प्रति स० ५। पत्र सं ५। ले काल ×। वे० सं २ । ज भण्डार।

४९१५. पद्मावतीमण्डलपूजा"" ""। पत्र स १। आ ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ११७१। क भण्डार।

विशेष—शांतिमंडल पूजा भी है।

४९१६ पद्मावतिशान्तिक""""""। पत्र स १७। आ १ ३×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स २९६। ज भण्डार।

विशेष—प्रति मन्त्र सहित है।

४९१७ पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा"""""। पत्र स १४। आ १०×७ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ४१ । ज भण्डार।

४९१८. पल्यविधानपूजा—ललितकीर्ति। पत्र सं ७। आ ११×५½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २११। क भण्डार।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४९१९. पल्यविधानपूजा—रत्ननन्दि। पत्र सं १४। आ ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १ ६५। क भण्डार।

विशेष—नरसिंहदास ने प्रतिलिपि की थी।

४९२० प्रति सं० २। पत्र सं ६। ले काल ×। वे स २१५। च भण्डार।

४९२१ प्रति स० ३। पत्र स ९। ले काल स १७६ आषाढ बुदी ६। वे सं १६२। ज भण्डार।

विशेष—मासी नगर (बूंदी प्रान्त) में आचार्य श्री ज्ञानकीर्ति के उपदेश से प्रतिलिपि हुई थी।

४६२२. पल्यविधानपूजा—अनन्तकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५३ । क भण्डार ।

४६२३. पल्यविधानपूजा…… । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७५ । अ भण्डार ।

४६२४. प्रति सं० २ । पत्र स० २ से ५ । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण । वे० स० १०५४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२५ पल्यव्रतोद्यापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५८२, ६०७) और हैं ।

४६२६. पल्योपमोपवासविधि ……। पत्र स० ४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा एव उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८४ । अ भण्डार ।

४६२७ पार्श्वजिनपूजा—साह लोहट । पत्र स० २ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६० । अ भण्डार ।

४६२८. पार्श्वनाथपूजा …… । पत्र सं० ४ । आ० ७×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३२ । अ भण्डार ।

४६२६. प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४६१ । ङ भण्डार ।

४६३०. पुण्याहवाचन …… । पत्र स० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शान्ति विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५५६, १३६१, १८०३) और हैं ।

४६३१ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

४६३२. प्रति स० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल स० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० २७ । ज भण्डार ।

विशेष—प० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिपि कराई थी ।

४६३३. प्रति स० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल स० १६६४ चैत्र सुदी १० । वे० स० २००६ । ट भण्डार ।

४६३४ पुरंदरव्रतोद्यापन……। पत्र सं० ६। आ० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६११ आषाढ सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ७२। घ भण्डार।

४६३५. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा—भ० रत्नचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० १ २×७३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल सं० १६८१। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१। च भण्डार।

विशेष—यह रचना सागवाड़पुर में श्रावकों की प्रेरणा से भट्टारक रत्नचन्द्र ने सं० १६८१ में लिखी थी।

४६३६ प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १८२४ आसोज सुदी १। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति इसी वेष्टन में और है।

४६३७ प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १८७। ख भण्डार।

४६३८ पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० १ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५५१। क भण्डार।

४६३९ पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा……। पत्र सं० ८। आ० १ ×४३ इंच। भाषा-संस्कृत प्राकृत। र० काल ×। ले० काल सं० १८६१ द्वि० श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० २२२। च भण्डार।

४६४० पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन—पं० गंगादास। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वे० सं० ४८। छ भण्डार।

विशेष—गंगादास भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) और है।

४६४१ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १४। वे० सं० ७८। ञ भण्डार।

४६४२ पूजाक्रिया……। पत्र सं० २। आ० ११३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा करने की विधि का विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१। छ भण्डार।

४६४३ पूजापाठसंग्रह……। पत्र सं० २ से ४। आ० ११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २ ५५। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २ ७८) और है।

४६४४ पूजापाठसंग्रह……। पत्र सं० १८। आ० ७×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३१६। अ भण्डार।

विशेष—पूजा पाठ के ग्रन्थ प्रायः एक से हैं। अधिकांश ग्रन्थों में वे ही पूजायें मिलती हैं फिर भी जिनका विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें यहां दिया जा रहा है।

४६४५. प्रति सं० २ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १६३७ । वे० सं० ५६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का सग्रह है ।

१. पुष्पदन्त जिनपूजा	—	सस्कृत
२. चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा		"
३. चन्द्रप्रभपूजा		"
४ शान्तिनाथपूजा		"
५. मुनिसुव्रतनाथपूजा		"
६. दर्शनस्तोत्र-पद्मनन्दि	प्राकृत	ले० काल सं० १६३७
७. ऋषभदेवस्तोत्र	"	"

४६४६ प्रति स० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८६६ द्वि० चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ४५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतियां (वे० सं० ७२६, ७३३, १३७०, २०६७) और हैं ।

४६४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ४८१ । क भण्डार ।

विशेष—पूजाओ एवं स्तोत्रो का सग्रह है ।

४६४८. प्रति स० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल × । वे० स० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

पल्यविधानव्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
वृहद्षोडशकारणपूजा	—	"
जेष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	"
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	विजयकीर्त्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	"
जम्बूद्वीपपूजा	पं० जिनदास	"
अक्षयनिधिपूजा	—	"
कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	—	"

४५४९. प्रति स० ६ । पत्र सं १ से ११६ । ले काल X । अपूर्ण । वे० स ४९७ । क भण्डार ।

विशेष—मुख्य पूजायें निम्न प्रकार हैं—

जिनसहस्रनाम	—	संस्कृत
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	"
जिनगुणसंपत्तिपूजा	भ रत्नचन्द्र	"
णमोकारपञ्चविंशतिकापूजा	—	"
सारस्वतयंत्रपूजा	—	"
धर्मचक्रपूजा	—	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	"

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७९ ४७६) और हैं।

४५५० प्रति स० ७ । पत्र स २७ से ३७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे सं २२६ । च भण्डार ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है।

४५५१ प्रति स० ८ । पत्र सं १ ४ । ले काल X । वे सं १ ४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ११६) और है।

४५५२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १९१ । ले काल सं १८८४ आसोज सुदी ४ । वे स ४१६ । म भण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४५५३ पूजापाठसंग्रह·······। पत्र सं २२ । आ० १२X८ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र काल X । ले काल X । पूर्ण । वे सं ७२८ । अ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है। सामान्य पूजा पाठोंकी इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० स० ८८२, ६६४ १) और हैं।

४५५४ प्रति स० २ । पत्र स ८६ । ले काल सं १६५३ आषाढ सुदी १४ । वे स ४६८ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियां (वे सं ४७४ ४७४ ४७ ४८१ ४८२, ४८१ ४८४ ४६१, ४६२) और हैं।

४५५५. प्रति स० ३ । पत्र स ४५ से ६१ । ले काल X । अपूर्ण । वे सं १६५४ । ट भण्डार ।

४६५६. पूजापाठसंग्रह……। पत्र सं० ४०। आ० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३५। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओ का संग्रह है।

आदिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्मेदशिखरपूजा	—	"
विद्यमानबीसतीर्थङ्करो की पूजा	—	र० काल सं० १६४५
अनुभव विलास		ले० " १६४६
[पदसंग्रह]		हिन्दी

४६५७ प्रति स० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० स० ७५६। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) और हैं।

४६५८ प्रति स० ३। पत्र स० १६। ले० काल ×। वे० स० २४१। छ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजा पाठ हैं—

चौवीसदण्डक	—	दौलतराम
विनती गुरुओ की	—	भूधरदास
बीस तीर्थङ्कर जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	द्यानतराय

४६५९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १८६० फागुण सुदी २। वे० सं० २२०। ज भण्डार।

४६६०. प्रति स० ५। पत्र स० ६ से २२२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २७०। झ भण्डार।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचंद। पत्र स० । आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७४६। क भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर सम्बन्धी चैत्यालयो की वदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि शतक	"	"
महावीरस्तोत्र	"	"
जिनपञ्जरस्तोत्र	"	"
त्रिलोकसार चौपई	"	"
चमत्कारजिनेश्वरपूजा	"	"
सुगधीदशमीपूजा	"	"

४६६२ पूजाप्रकरण—उमास्वामी। पत्र सं० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—पूजक आदि के लक्षण दिये हुये हैं। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरणं ॥

४६६३ पूजामहात्म्यविधि……। पत्र सं० १। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४। च भण्डार।

४६६४ पूजाफलविधि……। पत्र सं० ६। आ० ८½×४ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजाविधि। र० काल ×। ले० काल सं० १८२६। पूर्ण। वे० सं० १४८७। अ भण्डार।

४६६५ पूजापाठ……। पत्र सं० १४। आ० १ ३½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८११ वैशाख सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १ ९। ख भण्डार।

विशेष—माणकचन्द ने प्रतिलिपि की थी। अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है।

४६६६ पूजाविधि……। पत्र सं० १। आ० १ ×४½ इञ्च। भाषा–प्राकृत। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७८६। अ भण्डार।

४६६७ पूजाविधि……। पत्र सं० ४। आ० १ ×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११७। छ भण्डार।

४६६८ पूजाष्टक—आशानन्द। पत्र सं० १। आ० १ ३½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२११। अ भण्डार।

४६६९ पूजाष्टक—आइट। पत्र सं० १। आ० १ ३½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२ ९। अ भण्डार।

४६७० पूजाष्टक—अभयचन्द्र। पत्र सं० १। आ० १ ३½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१ । अ भण्डार।

४६७१ पूजाष्टक……। पत्र सं० १। आ० १ ३½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१३। अ भण्डार।

४६७२ पूजाष्टक……। पत्र सं० ११। आ० ८¾×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८७४। ट भण्डार।

४६७३. पूजाष्टक—विश्वभूषण। पत्र सं० १। आ० १०३/४×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १२१२। अ भण्डार।

४६७४. पूजासग्रह ……। पत्र स० ३३१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८६३। पूर्ण। वे० स० ४६० मे ४७४। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है—

	नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे० स०
१	काजीव्रतोद्यापनमडलपूजा	×	संस्कृत	१०	४७४
२	श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	४७३
३	रोहिणीव्रतपूजा	मडलाचार्य केशवमेन	सस्कृत	१२	४७२
४.	दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	×	”	२७	४७१
५	लब्धिविधानपूजा	×	”	१२	४७०
६.	ध्वजारोपणपूजा	×	”	११	४६९
७.	रोहिणीव्रतोद्यापन	×	”	१३	४६८
८	अनन्व्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचन्द्र	”	३०	४६७
९	रत्नत्रयव्रतोद्यापन	×	”	१६	४६६
१०	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	”	१२	४६५
११	शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	”	२०	४६४
१२	गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	”	२२	४६३
१३	त्रिलोकसारपूजा	×	”	८	४६२
१४	पार्श्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित)		”	१८	४६१
१५	त्रिलोकसारपूजा	×	”	१०	४६०

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११२६, २२१६) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें है।

४६७५ प्रति स० २। पत्र स० १४३। ले० काल स० १९५८। वे० सं० ४७५। क भण्डार।

विशेष—निम्न सग्रह हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा
त्रिपञ्चाशतव्रतोद्यापन	—	संस्कृत

नाम	कर्त्ता	भाषा
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	संस्कृत
पञ्चकल्याणकपूजा	—	"
चौसठ शिवकुमारका कांजी की पूजा	ललितकीर्ति	"
गणधरवलयपूजा	—	"
सुगंधदशमीकथा	श्रुतसागर	"
चन्दनषष्ठिकथा	"	"
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्ति	"
नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेण	"
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	"

४१७९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९२६। वे० सं० ४८१। क भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सुवर्णपंक्तिव्रतोद्यापनपूजा	×	संस्कृत
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	×	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	"
प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा	×	"

विशेष—ताराचन्द [जयसिंह के मन्त्री] ने प्रतिलिपि की थी।

लघुकल्याण	×	संस्कृत
सकलीकरणविधान	×	"

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७७, ४७८) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं।

४१८०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० १११। ख भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, कलिकुण्डमन्त्रपूजा, आनन्द स्तवन एवं गणधरवलय जयमाल। प्रति प्राचीन तथा मन्त्र विधि सहित है।

४१८१. प्रति सं० ५। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ४१४। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४१, ४१४) और हैं।

४६७६. प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । च भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एव इक्ष्वाकार पूजा का सग्रह है ।

४६८० प्रति स० ७ । पत्र स० ५५ से ७३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१. प्रति स० ८ । पत्र स० ३८ से ३१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२ प्रति स० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १८०० आषाढ सुदी १ । वे० स० ६६ । ञ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	सस्कृत	१–१६
नन्दीश्वरपूजा	—	"	१६–२४
सकलीकरणविधि	—	"	२४–२५
लघुस्वयभूपाठ	समन्तभद्र	"	२५–२६
अनन्तव्रतपूजा	श्रीभूषण	"	२६–३३
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवसेन	"	३३–३६

आचार्य विश्वकीर्त्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

पञ्चमीव्रतपूजा	केशवसेन	"	३६–४५

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४६६, ४७०) और हैं जिनमे नैमित्तिक पूजायें हैं ।

४६८३ प्रति स० १० । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४ पूजासग्रह । पत्र स० ३४ । आ० १०½×५ इञ्च । सस्कृत, प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, अकृत्रिमचैत्यालयपूजा, सिद्धपूजा, गुर्वावलीपूजा, बीसतीर्थङ्करपूजा, क्षेत्रपालपूजा, षोडशकारणपूजा, क्षीरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूषण) एव शान्तिपाठ आदि हैं ।

४६८५ पूजासग्रह । पत्र स० २ से ४५ । आ० ७½×५½ इच । भाषा–प्राकृत, सस्कृत, हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २२८) और है ।

४६८६ पूजासग्रह । पत्र स० ४६७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी । विषय–सग्रह । र० काल × । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ५४० । ञ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्ता	भाषा	र० काल	ले० काल	पत्र
१ भक्तामरपूजा	—	संस्कृत			
२. सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	”		सं १८८६ ज्येष्ठ सुदी ११	
३ बीसतीर्थंकरपूजा	—	”		×	अपूर्ण
४ नित्यनियमपूजा	—	संस्कृत हिन्दी			
५. अनन्तपूजा	—	संस्कृत			
६. पल्यविधानरासपूजा	विश्वसेन	”	×	सं १८८६	पूर्ण
७ ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	”			
८ नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अपभ्रंश			
९. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	संस्कृत [मंडल चित्र सहित]			
१ रत्नत्रयपूजा	—	”			
११ प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	अक्षयराम	”	र काल १८ ०	ले काल १८२७	
१२ रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	”		” ” १८२१	
१३ बारहव्रतों का ब्योरा	—	हिन्दी			
१४ पञ्चमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		ले काल १८२०	
१५. पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	”			
१६ पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	”		ले काल १८६२	
१७ पंचाधिकार	—	”			
१८. पुरन्दरपूजा	—				
१९ षष्ठाह्निकव्रतपूजा	—	”			
२० परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	”			
२१ पल्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	”			
२२ रोहिणीव्रतपूजा मंडल चित्र सहित	केशवसेन	”			
२३ जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	”			
\ ...स्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	”			

२५ कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६ सोलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७ द्विपंचकल्याणकपूजा	—	"	ले० काल स० १८३१
२८. गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९. कर्मदहनपूजा	—	"	ले० काल स० १८२८
३०. कर्मदहनपूजा	—	"	
३१. दशलक्षणपूजा	—	"	
३२ षोडशकारणजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	अपूर्ण
३३. दशलक्षणजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	
३४. त्रिकालचौबीसीपूजा	—	संस्कृत	ले० काल १८५०
३५ लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६ अंकुरारोपणविधि	आशाधर	"	
३७. णमोकारपैंतीसी	कनककीर्त्ति	"	
३८. मौनव्रतोद्यापन	—	"	
३९. शांतिचक्रपूजा	—	"	
४०. सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१ सुखसंपत्तिपूजा	—	"	
४२ क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३ षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	ले० काल १८३०
४४ चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	"	
४५ णमोकारपैंतीसीपूजा	अक्षयराम	"	ले० काल १८२७
४६. पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७ त्रिपञ्चाशतक्रिया	—	"	
४८. कञ्जिकाव्रतोद्यापन	—	"	
४९. मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"	
५० पञ्चमीव्रतपूजा	—	"	ले० काल १८२७

विशेष—निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	र० काल	ले० काल	पत्र
१ भक्तामरपूजा	—	संस्कृत			
२. सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	"		सं १८८६ ज्येष्ठ सुदी ११	
३ बीसतीर्थङ्करपूजा	—	"		×	अपूर्ण
४ नित्यनियमपूजा	—	संस्कृत हिन्दी			
५ अनन्तपूजा	—	संस्कृत			
६ पञ्चक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	"	×	सं १८८६	पूर्ण
७ ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	"			
८ नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अपभ्रंश			
९. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	संस्कृत [मंडल चित्र सहित]			
१ रत्नत्रयपूजा	—	"			
११ प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	अक्षयराम	"	र काल १८	ले काल १८२७	
१२ रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	"		" " १८२६	
१३ बारहव्रतों का ब्यौरा	—	हिन्दी			
१४ पञ्चमेरुपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		सं काल १८२	
१५. पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"			
१६ पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	"		ले काल १८६२	
१७ पंचाधिकार	—	"			
१८ पुरन्दरपूजा	—				
१९ अष्टाह्निकाव्रतपूजा	—	"			
२० परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	"			
२१ पल्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	"			
२२ रोहिणीव्रतपूजा मंडल चित्र सहित	केशवसेन	"			
२३ जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	"			
२४ सौख्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	"			

२५	कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	सस्कृत	
२६	सोलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७	द्विपचकल्याणकपूजा	—	"	ले० काल स० १८३१
२८	गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९	कर्मदहनपूजा	—	"	ले० काल स० १८२८
३०	कर्मदहनपूजा	—	"	
३१	दशलक्षणपूजा	—	"	
३२	षोडशकारणजयमाल	रइधू	अपभ्र श	अपूर्ण
३३.	दशलक्षणजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	
३४.	त्रिकालचौवीसीपूजा	—	सस्कृत	ले० काल १८५०
३५	लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६.	अकुरारोपणविधि	आशाधर	"	
३७	गामोकारपैंतीसी	कनककीर्त्ति	"	
३८	मौनव्रतोद्यापन	—	"	
३९.	शातिचक्रपूजा	—	"	
४०.	सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१	सुखसपत्तिपूजा	—	"	
४२	क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३	षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	ले० काल १८३०
४४	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	"	
४५	गामोकारपैंतीसीपूजा	अक्षयराम	"	ले० काल १८२७
४६	पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७	त्रिपञ्चाशतक्रिया	—	"	
४८.	कञ्जिकाव्रतोद्यापन	—	"	
४९.	मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"	
५०	पञ्चमीव्रतपूजा	—	"	ले० काल १८२७

११ नवग्रहपूजा	—	संस्कृत हिन्दी	
१२ रत्नत्रयपूजा	—	,,	ले० काल १८१७
१३ वत्तलक्षणजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	

टब्बा टीका सहित है।

४६८७. पूजासंग्रह……। पत्र सं० १११। आ० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११ । ट भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	र० काल सं० १८९८
सम्मेदशिखरपूजा	×	,,	
निर्वाणक्षेत्रपूजा	×	,,	र० काल सं० १८१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	,,	र० काल सं० १८१७
गिरनारक्षेत्रपूजा	×	,,	
वास्तुपूजाविधि	×	संस्कृत	
नांदीमंगलपूजा	×	,,	
बुद्धिविलास	देवेन्द्रकीर्ति	,,	

४६८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० १४२। छ भण्डार।

४६८९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८३। ले० काल ×। वे० सं० १६। ञ भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है—

पञ्चकल्याणकमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र १-३
पञ्चकल्याणकपूजा	×	संस्कृत	,, ४-१२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द	हिन्दी	,, १३-२६
पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि	यशोनन्दि	संस्कृत	,, २७-४६
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द	हिन्दी	,, १-११
नन्दीश्वरव्रतविधान	,,	,,	,, १२-२६

४६९०. प्रति सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६ । ट भण्डार।

४६६१ पूजा एव कथा सग्रह—खुशालचन्द । पत्र सं० ५० । श्रा० ८×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८७३ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओ तथा कथाओ का सग्रह है ।

चन्दनषष्ठीपूजा, दशलक्षणपूजा, षोडशकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप लक्षणकथा, मेरुपक्ति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा ।

४६६२. पूजासग्रह—हीराचन्द । पत्र स० ५१ । आ० ६¾×५¾ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । क भण्डार ।

४६६३. पूजासंग्रह....... । पत्र सं० ६ । आ० ८½×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पचमेरु पूजा एव रत्नत्रय पूजा का संग्रह है ।

इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० सं० ७३४, ६७१, १३१६, १३७७) और हैं जिनमे सामान्य पूजायें हैं ।

४६६४. प्रति स० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

४६६५. प्रति स० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । क भण्डार ।

४६६६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल स० १६५५ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ७३ । घ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओ का संग्रह है—

देवपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजा द्यानतराय कृत । अनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा ।

४६६७. प्रति सं० ५ । पत्र स० ७५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४८६ ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ४८७, ४८८, ४८६, ४८५, ४६३) और हैं जो सभी अपूर्ण हैं ।

४६६८ प्रति सं० ६ । पत्र स० ८५ । ले० काल × । वे० स० ६३७ । च भण्डार ।

४६६६ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

५००० प्रति स० ८ । पत्र स० १३८ ले० काल × । वे० स० १२२ । ज भण्डार ।

विशेष—पचकल्याणकपूजा, पचपरमेष्ठीपूजा एव नित्य पूजायें है ।

५००१ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६३५ । ट भण्डार ।

५००२ पूजासंग्रह—रामचन्द्र। पत्र सं० २०। आ० ११३×५३ इंच। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५५। क भण्डार।

विशेष—आदिनाथ से चन्द्रप्रभ तक की पूजायें हैं।

५००३ पूजासार……। पत्र सं० ८१। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा एवं विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५४। घ भण्डार।

५००४ प्रति सं० २। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २२१। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१) और है।

५००५ प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम। पत्र सं० १४। आ० १ ×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० ११० माघवा सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ५८७। क भण्डार।

विशेष—दीवान ताराचन्द ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

५००६ प्रति सं० २। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८ माघवा सुदी १। वे० सं० ४८४। क भण्डार।

५००७ प्रति सं० ३। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८ चैत्र सुदी ५। वे० सं० ५८६। घ भण्डार।

५००८ प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० १२। आ० १२३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८ चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ५८६। घ भण्डार।

विशेष—श्री जयसिंह महाराज के दीवान ताराचन्द श्रावक ने रचना कराई थी।

५००९ प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा……। पत्र सं० ११। आ० १ ×७३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८ । पूर्ण। वे० सं० ५ । ङ भण्डार।

५०१० प्रति सं० २। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८७१ आसोज सुदी ६। वे० सं० २११। च भण्डार।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल मौहा का ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी। दीवान अमरचन्दजी संगही ने प्रतिलिपि करवाई थी।

५०११ प्रतिष्ठापाठ—भ० श्री राजकीर्त्ति। पत्र सं० ३१। आ० १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा (विधान)। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५०१ क भण्डार।

५०१२. प्रतिष्ठादीपक—पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन। पत्र स० १४। ग्रा० १२×५½ इच। भाषा–संस्कृत। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल स० १८६१ चैत्र बुदी १५। पूर्ण। वे० स० ५०२। क भण्डार।

विशेष—भट्टारक राजकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी।

५०१३. प्रतिष्ठापाठ—ग्रा० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन)। पत्र स० १३६। ग्रा० ११½×८½ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय विधान। र० काल ×। ले० काल स० १९४६ कार्त्तिक सुदी ११। पूर्ण। वे० स० ४८५। क भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी हैं।

५०१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ११७। ले० काल स० १९४६। वे० स० ४८७। क भण्डार।

विशेष—३६ पत्रो पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं।

५०१५ प्रति सं० ३। पत्र सं० १५५। ले० काल स० १९४६। वे० सं० ४८६। क भण्डार।

विशेष—वालावख्श व्यास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। अन्त मे एक अतिरिक्त पत्र पर अङ्कस्थापनार्थ मूर्त्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है। उसमें अङ्क लिखे हुये हैं।

५०१६ प्रति सं० ४। पत्र सं० १०३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २७१। ज भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुदकुदाचार्य पट्टोदयभूधरदिवामरिण श्रीवसुविन्द्वाचार्येरा जयसेनापरनामकेन विरचित। प्रतिष्ठासार पूर्णमगमत।

५०१७. प्रतिष्ठापाठ—ग्राशाधर। पत्र स० ११६। ग्रा० ११×५½ इच। भाषा–संस्कृत। विषय–विधान। र० काल सं० १२८५ ग्रासोज सुदी १५। ले० काल स० १८८४ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वे० स० १२। ज भण्डार।

५०१८. प्रतिष्ठापाठ"' ···। पत्र सं० १। ग्रा० ३½ गज लबा १० इच चौडा। भाषा–संस्कृत। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। वे० स० ४०। व्य भण्डार।

विशेष—यह पाठ कपडे पर लिखा हुआ है। कपडे पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं। यह कपडे की १० इ च चौडी पट्टी पर सिमटता हुआ है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धि ॥ ओं नमो वीतरागाय॥ सवतु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १३ तेरसि सोमवासरे अश्विनि नक्षत्रे श्रीदृष्टकापथे श्रीसर्वज्ञचैत्यालये श्रीमूलसघे श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीरत्नकीर्त्ति देवा तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवा॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा'॥

५०१६. प्रति स० २ । पत्र सं० १६ । ले काल स० १८११ चैत्र बुदी ४ । अपूर्ण । वे स० ५ ४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में प्रथम ६ पत्र में प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का विवरण दिया हुआ है।

५०२० प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा दुलीचन्द । पत्र सं २६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र काल × । स काल × । पूर्ण । वे स० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता आचार्य वसुबिन्दु हैं । इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है । दक्षिण में कुकुरा नामके देश सह्यपाचल के समीप रत्नगिरि पर लालाट्ट नामक राजाका बनवाया हुआ विशाल चैत्यालय है । उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त ग्रन्थ रचा गया ऐसा लिखा है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे ६ ४६) और है ।

५०२१ प्रतिष्ठाविधि.......... । पत्र स० १०६ से १११ । आ ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स ५ ३ । क भण्डार ।

५०२२. प्रतिष्ठासार—प० शिवजीलाल । पत्र स ६१ । आ १२×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । र काल × । ले काल स १६११ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे स ४६१ । क भण्डार ।

५०२३ प्रतिष्ठासार.......... । पत्र स ८५ । आ १२३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र काल × । ले काल स १६१७ आषाढ सुदी १ । वे सं २८६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी । पत्रों के नीचे के भाग पानी से गले हुये हैं ।

५०२४ प्रतिष्ठासारसग्रह—आ० वसुनन्दि । पत्र सं २१ । आ ११×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२१ । ख भण्डार ।

५०२५. प्रति स० २ । पत्र सं १४ । ले काल सं १६६ । वे सं ४६६ । ख भण्डार ।

५०२६ प्रति स० ३ । पत्र सं २७ । ले० काल सं १६७७ । वे सं ४६२ । क भण्डार ।

५०२७ प्रति स० ४ । पत्र सं ३६ । ले काल स १७१६ वैशाख सुदी ११ । अपूर्ण । वे सं ६८ । ख भण्डार ।

विशेष—तीसरे परिच्छेद से है ।

५०२८. प्रतिष्ठासारोद्धार— — — । पत्र सं ७६ । आ १ ३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं० २३४ । ख भण्डार ।

५०६६ प्रतिष्ठासूक्तिसग्रह.......... । पत्र सं २१ । आ ११×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र काल × । ले काल सं १६५१ । पूर्ण । वे स ४६३ । क भण्डार ।

५०३०. प्राणप्रतिष्ठा ... ...। पत्र सं० ३। आ० ९३/४×६१/२ इंच। भाषा संस्कृत। विषय–विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७। ज भण्डार।

५०३१. बाल्यकालवर्णन ·। पत्र स० ४ से २३। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–विधि विधान। र० काल ×। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० २६७। ख भण्डार।

विशेष—बालक के गर्भमे आने के प्रथम मास से लेकर दशवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है।

५०३२ बीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा। पत्र स० ५८। आ० १२१/२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करो की पूजा। र० काल स० १९३४ आसोज सुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण वे० स० २०६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन मे एक प्रति और है।

५०३३ बीसतीर्थङ्करपूजा ...। पत्र स० ५३। आ० १३×७१/२ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९४५ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ३२२। ज भण्डार।

५०३४ प्रति स० २। पत्र स० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७१। झ भण्डार।

५०३५ भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण। पत्र स० १०। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल × ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५३६। ङ भण्डार।

५०३६ भक्तामरपूजाउद्यापन—श्री भूषण। पत्र सं० १३। आ० ११×५ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २५२। च भण्डार।

विशेष— १०, ११, १२वां पत्र नही है।

५०३७. प्रति सं० २। पत्र स० ८। ले० काल स० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी ३। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय में हरवंशलाल ने प्रतिलिपि की थी।

५०३८ प्रति स० ३। पत्र स० १३। ले० काल स० १८९३ श्रावण सुदी ५। वे० सं० १२०। ज भण्डार।

५०३९. प्रति सं० ४। पत्र स० ८। ले० काल स० १९११ आसोज बुदी १२। वे० स० ५० । झ भण्डार।

विशेष—जयमाला हिन्दी मे है।

५०४० भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्त्ति। पत्र स० ७। आ० १०१/२×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल स० १६९९। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५३७। ङ भण्डार।

विशेष— निधि निधि रस चंद्रोसंख्य समस्तरेहि
विसवलमसिमासे सप्तमी मदवारे ।
मलवरवरधुर्मे चन्द्रनाथस्य चैत्ये
विरचितमिति भक्त्या वैद्यनामंतसेन ॥

५०४१ प्रति सं० २ । पत्र सं ८ । ले काल × । वे स ११८ । क भण्डार ।

५०४२ भक्तामरस्तोत्रपूजा……। पत्र स ८ । आ ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१७ । क भण्डार ।

५०४३ प्रति स० २ । पत्र सं १२ । ले० काल × । वे० सं० २११ । च भण्डार ।

५०४४ प्रति स० ३ । पत्र सं १६ । ले काल × । वे सं ४४४ । अ भण्डार ।

५०४५ भाद्रपदपूजासग्रह— द्यानतराय । पत्र सं० २६ से ३६ । आ $12\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स २२२ । छ भण्डार ।

५०४६ भाद्रपदपूजासग्रह…… ……। पत्र सं २४ से ३५ । आ० $12\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स २२२ । छ भण्डार ।

५०४७ भावजिनपूजा……। पत्र सं १ । आ $11\frac{3}{4} \times 5\frac{1}{2}$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल × । लि काल × । पूर्ण । वे स० २ ७ । ट भण्डार ।

५०४८. भावनापचीसीव्रतोद्यापन…… …… । पत्र सं १ । आ $12\frac{1}{2} \times 6$ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे सं १ २ । ख भण्डार ।

५०४९. मण्डलों के चित्र……। पत्र स १४ । आ ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा सम्बन्धी मण्डलों का चित्र । ले काल × । वे सं ११८ । ख भण्डार ।

विशेष—चित्र स ५२ हैं । निम्नलिखित मण्डलों के चित्र हैं—

१ भुतस्कन्ध (कोष्ठ २)	७ ऋषिमंडल („ ५६)
२ नैलमहिमा (कोष्ठ ५६)	८ सप्तऋषिमंडल („ ७)
३ बृहद्सिद्धचक्र („ ८६)	९ सोमहकारण („ २५६)
४ जिनगुणसंपत्ति („ ६ ६)	१ चौबीसीमहाराज („ १२)
५ त्रिकूट („ ६ ६)	११ शांतिचक्र („ २४)
६ चिन्तामणिपार्श्वनाथ („ ५६)	१२ भक्तामरस्तोत्र („ ४८)

१३ बारहमास की चौदस (कोष्ठ १६६)
१४. पाचमाह की चौदस („ २५)
१५. अनन्तका मंडल („ १६६)
१६. मेघमालाव्रत („ १५०)
१७. रोहिणीव्रत (कोष्ठ ६१)
१८ लब्धिविधान („ ८१)
१९. रत्नत्रय („ २९)
२०. पञ्चकल्याणक („ १२०)
२१. पञ्चपरमेष्ठी („ १९३)
२२. रविवारव्रत („ ८१)
२३ मुक्तावली („ ८१)
२४. कर्मदहन („ १४८)
२५. काजीबारस („ ६४)
२६. कर्मचूर („ ६४)
२७ ज्येष्ठजिनवर („ ४६)
२८. बारहमाह की पञ्चमी („ ६५)
२९. चारमाह की पञ्चमी („ २५)
३० फलफादल [पञ्चमेरु] („ २५)
३१ पाचवासो का मडल („ २५)
३२. अकुरारोपण (कोष्ठ)
३३. गणधरवलय („ ४८)
३४. नवग्रह („ ६)
३५. सुगन्धदशमी („ ६०)
३६. सारस्वतयंत्रमडल („ २८)
३७. शास्त्रजी का मडल („ १२)
३८. अक्षयनिधिमंडल („ १५०)
३९. अठाई का मडल („ ५२)
४०, अंकुरारोपण („ —)
४१. कलिकुडपार्श्वनाथ („ ८)
४२. विमानशुद्धिशातिक („ १०८)
४३ वासठकुमार („ ५२)
४४. धर्मचक्र („ १५७)
४५. लघुशान्तिक („ —)
४६ विमानशुद्धिशांतिक („ ८१)
४७. छिनवे क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थङ्कर („ २४)
४८. श्रुतज्ञान („ १५८)
४९. दशलक्षण („ १००)

५०५०. प्रति सं० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० १३८ क । ख भण्डार ।

५०५१. मडपविधि ...... । पत्र स० ४ । आ० ६×४ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वे० स० १२४० । अ भण्डार ।

५०५२ मडपविधि .... । पत्र सं० १ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८ । झ भण्डार ।

५०५३. मध्यलोकपूजा ..... । पत्र स० ५६ । आ० ११½×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

५०५४ महावीरनिर्वाणपूजा'''''''। पत्र सं १। आ ११×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १८२१। पूर्ण। वे स ११ । ञ भण्डार।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा प्राकृत में और है।

५०५५ महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा'''''''। पत्र सं १। आ ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं १२ । ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स १२११) और है।

५०५६ महावीरपूजा—वृन्दावन। पत्र सं १। आ ८×५½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २२२। छ भण्डार।

५०५७ मांगीतुङ्गीगिरिमण्डलपूजा—विश्वभूषण। पत्र सं ११। आ १२×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल सं १७५६। ले काल सं १८४ वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वे सं १४२। ञ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १८ पद्यों में विश्वभूषण कृत सहस्रनाम स्तोत्र है।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमूलसंघे तिलकायमानि श्रीकुन्दकुन्दाख्यमुनींद्रवन्द्र।
महद्बलात्कारगणादिगच्छे सम्यप्रतिष्ठा विमलं वनाम॥१॥
जातोऽप्यो विमलकर्मकीर्तिरमल वादीभ साद्रू सवत
साहित्यागमतर्कपाठनपटुश्चारित्रभारोवह।
तत्पट्टे मुनिश्रीमभूषणगणि श्रीसोवरवैष्टितः
तत्पट्टे मुनि ज्ञानभूषणमहान सौख्यस्वसा केवली
श्रीमज्जगद्भूषणवैद्भूषणैयायिकावाधिपारवरा।
कर्मारिष्ठगृहोरिव कामिकासाउपट्ट तदीये रमचत्प्रतापी॥३॥
तत्पट्टे प्रकटो जात विश्वभूषण योगिनः।
तैनेदं रचितो यत्र भण्डारमानुल हेतवे॥४॥
कम्बद्वि रिषिअम्बरवासरे माघमासकै
एकारवपममहपूर्णमिवाममिलपुरे॥५॥

५०५८ प्रति सं० २। पत्र स १। ले काल सं १८११। वे सं १५७१। ट भण्डार।

विशेष—माता तु दी की समलाकार मण्डल रचना भी है। पत्रों का कुछ हिस्सा चूहोंने काट रखा है।

५०५६. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन । पत्र स० २ । आ० १२½×६ इ च । भाषा सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६२८ । पूर्ण । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

५०६० मुक्तावलीव्रतपूजा । पत्र स० २ । आ० १२×५½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७४ । च भण्डार ।

५०६१. मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा । पत्र सं० १६ । आ० ११½×६ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० स० २७६ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

५०६२ मुक्तावलीव्रतविधान । पत्र स० २४ । आ० ८½×६ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा एव विधान । र० काल × । ले० काल स० १६२५ । पूर्ण । वे० स० २४८ । ख भण्डार ।

५०६३. मुक्तावलीपूजा—वर्णी सुखसागर । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६५ । ङ भण्डार ।

५०६४ प्रति सं० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ५६६ । ङ भण्डार ।

५०६५. मेघमालाविधि । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इ च । भाषा सस्कृत । विषय–व्रत विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६६ । अ भण्डार ।

५०६६. मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा । पत्र स० ३ । आ० १०½×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्रत पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६२ । पूर्ण । वे० स० ५८० । अ भण्डार ।

५०६७ रत्नत्रयउद्यापनपूजा । पत्र स० २६ । आ० ११¼×५½ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—१ अपूर्ण प्रति और है ।

५०६८ प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० ६६ । झ भण्डार ।

५०६९ रत्नत्रयजयमाल । पत्र स० ४ । आ० १०½×५ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६७ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७१) और है ।

५०७० प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६१२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १५८ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १५६) और है ।

५०७१ प्रति स० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० ६४३ । ङ भण्डार ।

५०७२. प्रति स० ४ । पत्र सं ५ । ले० काल सं १८६२ मादवा सुदी १२ । वे सं २६० । च भण्डार ।

५०७३ प्रति स० ५ । पत्र सं ५ । ले काल X । वे स २ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स २ १) और है ।

५०७४ रत्नत्रयजयमाल·······। पत्र स ६ । मा १ X० इच । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पूजा । र काल X । ले काल सं० १८११ । वे सं १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । पत्र ५ से अनन्तव्रतकथा श्रुतसागर कृत तथा अनन्त नाथ पूजा दी हुई है ।

५०७५ प्रति सं० २ । पत्र स ५ । ले काल स० १८११ सावन सुदी ११ । वे सं १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां इसी वेष्टन में और हैं ।

५०७६ रत्नत्रयजयमाल·······। पत्र सं० ६ । मा १ ३X४३ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल X । ले काल स १८२७ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे सं० १८२ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं ७४१) और है ।

५०७७. प्रति स० २ । पत्र सं ३ । ले काल X । वे० सं ७४४ । च भण्डार ।

५०७८. प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले काल X । वे सं २ १ । छ भण्डार ।

५०७९. रत्नत्रयजयमालाभाषा—नथमल । पत्र सं० ५ । मा १२X७३ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र काल सं १६२२ फागुण सुदी ८ । ले काल X । पूर्ण । वे० स १६३ । क भण्डार ।

५०८० प्रति स० २ । पत्र सं ७ । ले काल सं १६३७ । वे स ६६१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे सं ६२६, ६६ ६२७ ६२८ ६२६) और हैं ।

५०८१ प्रति स० ३ । पत्र सं ६ । ले काल X । वे सं ८५ । घ भण्डार ।

५०८२. प्रति स० ४ । पत्र सं ४ । ले काल स १६२८ कार्तिक सुदी १ । वे सं ६४४ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं० ६४४ ६४६) और हैं ।

५०८३ प्रति स० ५ । पत्र सं ७ । ले काल X । वे सं ६६ । छ भण्डार ।

५०८४. रत्नत्रयजयमाल ……। पत्र सं० ३ । आ० १३३×४ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ६३६ । क भण्डार ।

५०८५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० स० ६६७ । च भण्डार ।

५०८६. प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १६०७ द्वि० आसोज बुदी १ । वे० स० १८५ । झ भण्डार ।

४०८७. रत्नत्रयपूजा—पं० आशाधर । पत्र स० ४ । आ० ८३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १११० । अ भण्डार ।

५०८८ रत्नत्रयपूजा—केशवसेन । पत्र स० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६६ । च भण्डार ।

५०८६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । ञ भण्डार ।

५०६०. रत्नत्रयपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १३ । आ० १०३×५३ इ च । भाषा–सम्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । च भण्डार ।

५०६१. प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० स० ३०५ । च भण्डार ।

५०६२. रत्नत्रयपूजा …… । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० स० ४७८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) और हैं ।

५०६३. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६८१ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५०६४. प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ८६ । घ भण्डार ।

५०६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल स० १६१६ । सं० वे० ६४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—छोटूलाल अजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५०६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५८ पौष सुदी ३ । वे० सं० ३०१ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं ।

५०६७ प्रति स० ६ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० सं० ४८२, ५२६) और हैं ।

५०६८ प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७५ । ट भण्डार ।

५०६६ रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ से ५ । आ० १०३×५३ इ च । भाषा- हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० ६३३ । क भण्डार ।

५१०० प्रति स० २। पत्र स ६। ले० काल ×। वे० सं० ३०१। ज भण्डार।

५१०१ रत्नत्रयपूजा—ऋषभदास। पत्र सं १७। मा० १२×५½ इ च। भाषा-हिन्दी (पुरानी) विषय पूजा। र काल ×। ले काल सं० १८४६ पौष बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ४६६। म भण्डार।

५१०२ प्रति सं० २। पत्र सं १६। मा० ११½×५½ इ च। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं ३८५। म भण्डार।

विशेष—संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनों ही भाषा के शब्द हैं।

अन्तिम— सिहि रिसिकित्ति मुहुसीसे
रिसह दास बुहदास मणीसे।
इय तेरह पयार चारित्तउ,
संखेवे भासिय रयणित्तउ॥

५१०३. रत्नत्रयपूजा""""। पत्र सं ५। मा १२×८ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७४२। म भण्डार।

५१०४ प्रति सं० ७। पत्र सं ४३। ले काल ×। वे सं १२२। क भण्डार।

५१०५ प्रति स० ३। पत्र सं ११। ले काल सं १९६४ पौष बुदी २। वे० सं ६४६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ६४८) और है।

५१०६ प्रति स० ४। पत्र सं ६। ले काल ×। वे सं १ ६। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स १ ६) और है।

५१०७ प्रति स० ५। पत्र स १५। ले काल स १९७८। वे स २१०। ञ भण्डार।

५१ ०८. प्रति स० ६। पत्र स २१। ले काल ×। वे सं ११८। म भण्डार।

५१०९. रत्नत्रयमण्डलविधान""""। पत्र सं १५। मा १ ×६ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। वे सं ५७। म भण्डार।

५११० रत्नत्रयविधानपूजा—प० रत्नकीर्ति। पत्र सं ८। मा० १ ×४½ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एवं विधि विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६५१। क भण्डार।

५१११ रत्नत्रयविधान""""। पत्र सं १२। मा १ ३×४½ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एवं विधि विधान। र० काल ×। ले काल सं १८८२ फागुन सुदी १। वे सं १६६। ख भण्डार।

५११२ रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द। पत्र स० ३६। आ० १३×७½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६७७। पूर्ण। वे० स० ६६। ग भण्डार।

५११३ प्रति स० २। पत्र सं० ३३। ले० काल ×। वे० सं० १६७। ङ भण्डार।

५११४ रत्नत्रयव्रतोद्यापन ······। पत्र सं० ६। आ० ७×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६५०। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६५३) और है।

५११५ रत्नावलीव्रतविधान—ब्र० कृष्णदास। पत्र सं० ७। आ० १०×४½ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-विधि विधान एव पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६८५ चैत्र बुदी २। पूर्ण। वे० स० ३८३। अ भण्डार।

विशेष-प्रारम्भ— श्री वृषभदेवसत्य श्रीसरस्वत्यै नम ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रसुत सुरगण सेवित पाद।
तत्व सिंधु सागर ललित योजन एक निनाद ॥

सारद गुरु चरणे नमी नमु निरञ्जन हस।
रत्नावलि तप विधि कहु तिम वाधि सुख वश ॥२॥

चुपई— जंबूद्वीप भरत उदार, वहू बड़ी धरणीधर सार।
तेह मध्य एक आर्य सुखड, पञ्चम्लेक्षधर्माति अखड ॥

भद्रपुरी नयरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम दीसिधाम।
उच्चैस्तर जिनवर प्रासाद, झल्लर ढोल पटहशत नाद ॥

अन्तिम— अनुक्रमि सुतनि देईराज, दिक्षा लेई करि आतम काज।
मुक्ति काम नृप हुउ प्रमाण, ए ब्रह्म पूरमल्लह वाण ॥१८॥

दूहा— रत्नावलि विधि आदरु, भावि सूं नरनारि।
तिम मन वञ्छित फल लहु, आयु भव विस्तारि ॥१६॥

मनह मनोरथ सपजि होई, नारी वेद विछेद।
पाप पङ्क सवि कुभाञ्झि, रत्नावलि बहु भेद।

जे कसिसुणसि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास।
हर्ष सुत नकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उल्लास ॥

इति श्री रत्नावली व्रत विधान निरुपण श्री पास भवातर सम्बन्ध समास ॥

सं० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे ब्र० कृष्णदास सूरतमल्लजी तत्शिष्य ब्र० वर्द्धमान लिखितं ॥

५११६ रविव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं १ । आ १२×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले० काल × । वे० सं० ५०१ । ख भण्डार ।

५११७ प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल स १८ ८ । वे सं १०१० । अ भण्डार ।

५११८ रेवानदीपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं १ । आ० १२½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल सं १७१६ । लि काल सं १६४ । पूर्ण । वे० सं १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम- सप्तसमेपेटविराजवर्षे माघुस्यमासे सित कृष्णपक्षे ।
नवरंगग्रामे परिपूर्णतास्तुः भव्या जनानां प्रददातु सिद्धिः ॥

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता ।

इसका दूसरा नाम साढ़ेत्र कोटि पूजा भी है ।

५११६ रैदव्रत—गंगाराम । पत्र सं ४ । आ ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । वे सं ४६६ । अ भण्डार ।

५१२० रोहिणीव्रतमण्डलविधान—केशवसेन । पत्र सं १४ । आ ६¾×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधान । र काल × । ले काल सं १८७८ । पूर्ण । वे स ७१८ । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है । इसी भण्डार में २ प्रतियां वे सं ७१६ १ १४) और हैं ।

५१२१ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ले० काल सं १८६२ पौष सुदी १३ । वे स १३४ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं २ २ २६२) और हैं ।

५१२२ प्रति स० ३ । पत्र सं २ । ले काल सं १६७१ । वे सं ६१ । घ भण्डार ।

५१ ३ रोहिणीव्रतोद्यापन— — । पत्र सं ५ । आ ११×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ५५८ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स ७४) और है ।

५१२४ प्रति स० २ । पत्र सं १ । ले काल स १६२२ । वे सं २६२ । ख भण्डार ।

५१२५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले काल × । वे स ६६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ६६५) और है ।

५१२६ प्रति सं० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं १२४ । ञ भण्डार ।

५१२७ लघुअभिषेकविधान ...... । पत्र सं० ३ । आ० १२½×५¾ इच । भाषा सस्कृत । विषय–भगवान के अभिषेक की पूजा व विधान । र० काल × । ले० काल स० १९६६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १७७ । ज भण्डार ।

५१२८. लघुकल्याण ...... । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–अभिषेक विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३७ । क भण्डार ।

५१२९. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १८२९ । ट भण्डार ।

५१३०. लघुअनन्तव्रतपूजा ... । पत्र स० ३ । आ० १२×५½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८३९ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८५७ । ट भण्डार ।

५१३१ लघुशांतिकपूजाविधान ... । पत्र सं० १५ । आ० १०½×५¾ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९०६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ७३ । अ भण्डार ।

५१३२. प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८९० । अपूर्ण । वे० स० ८८३ । अ भण्डार ।

५१३३. प्रति स० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल स० १९७१ । वे० स० ६९० । ङ भण्डार ।

विशेष—राजूलाल भौंसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

५१३४. प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल सं० १८८६ । वे० स० ११९ । छ भण्डार ।

५१३५. प्रति स० ५ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० १४२ । ज भण्डार ।

५१३६ लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि । पत्र स० ९ । आ० १०¾×७ इच । भाषा सस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल स० १९०६ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १५८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है ।

५१३७ लघुस्नपनटीका—पं० भावशर्मा । पत्र स० २२ । आ० १२×१५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय–अभिषेक विधि । र० काल स० १५६० । ले० काल स० १८१५ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । अ भण्डार ।

५१३८ लघुस्नपन ... । पत्र सं० ५ । आ० ८×४ इच । भाषा–सस्कृत । विषय-अभिषेक विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३ । ग भण्डार ।

५१३९ लब्धिविधानपूजा—हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० २ । आ० ११½×५½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२०९ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १९४९) और है ।

५१४० प्रति स० ? । पत्र सं १ । ले काल × । वे० स १५४ । ऊ भण्डार ।

५१४१ प्रति स० ३ । पत्र स १ । ले० काल । वे० सं० ७७ । झ भण्डार ।

५१४२. लब्धिविधानपूजा ..... । पत्र स ६ । आ ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय- पूजा । र० काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ४७१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे सं ४६४ २ २) और हैं ।

५१४३ प्रति स० २ । पत्र सं ११ । ले० काल × । वे स १६८ । ख भण्डार ।

५१४४ प्रति स० ३ । पत्र सं १ । ले काल × । वे स ८७ । घ भण्डार ।

५१४५ प्रति स० ४ । पत्र सं १ । ले काल सं १६२ । वे सं १६१ । ङ भण्डार ।

५१४६ प्रति स० ५ । पत्र स ६ । ले काल × । वे सं ११८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे स ११६ ११) और हैं ।

५१४७ प्रति स० ६ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे सं ११७ । छ भण्डार ।

५१४८ प्रति स० ७ । पत्र सं २ से ८ । ले काल सं १६ भादवा सुदी १ । अपूर्ण । वे सं ११७ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ११७) और है ।

५१४६. प्रति स० ८ । पत्र सं १४ । ले काल सं १६१२ । वे सं २१४ । झ भण्डार ।

५१५० प्रति स० ६ । पत्र सं ७ । ले काल स १८८७ माह सुदी १ । वे स ६१ । म भण्डार ।

विशेष—मंडल का चित्र भी दिया हुआ है ।

५१५१ लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा .... । पत्र स ६ । आ ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र काल × । ले काल स भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे सं ७४ । ग भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल कालाडेरावाल ने प्रतिलिपि करके चौधरियों के मन्दिर में चढाई ।

५१५२ प्रति स० २ । पत्र सं १ । ले काल × । वे सं १०६ । झ भण्डार ।

५१५३ लब्धिविधानपूजा—ज्ञानचन्द्र । पत्र सं २१ । आ ११×८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र काल स १६६१ । ले काल स १६६२ । पूर्ण । वे स ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे स ७४३ ७४४/१) और हैं ।

५१५४ लब्धिविधानपूजा ..... । पत्र स १५ । आ १२×५½ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं० ६७ । घ भण्डार ।

५१५५ लब्धिविधानउद्यापनपूजा ....। पत्र स० ८। आ० ११½×५½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९१७। पूर्ण। वे० स० ६९२। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ६९१) और है।

५१५६. प्रति स० २। पत्र स० २४। ले० काल सं० १९२९। वे० स० २२७। ज भण्डार।

५१५७. वास्तुपूजा ...। पत्र स० ५। आ० ११½×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-गृह प्रवेश पूजा एव विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५२४। अ भण्डार।

५१५८. प्रति सं० २। पत्र स० ११। ले० काल सं० १९३१ वैशाख सुदी ८। वे० सं० ११९। छ भण्डार।

विशेष—उछवलाल पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

५१५९. प्रति स० ३। पत्र स० १०। ले० काल सं० १९१६ वैशाख सुदी ८। वे० स० २०। ज भण्डार।

५१६० विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—नरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० २। आ० १०×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८१०। पूर्ण। वे० सं० ६७२। अ भण्डार।

५१६१ विद्यमानबीसतीर्थङ्करपूजा—जौंहरीलाल बिलाला। पत्र स० ४२। आ० १२×७½ इंच। भाषा-हिन्दी, विषय-पूजा। र० काल स० १९४९ सावन सुदी १४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३६। अ भण्डार।

५१६२ प्रति स० २। पत्र स० ६३। ले० काल ×। वे० स० ६७५। ङ भण्डार।

५१६३ प्रति स० ३। पत्र स० ५६। ले० काल स० १९५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी २। वे० स० ६७८। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७९) और है।

५१६४. प्रति स० ४। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० स० २०६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

५१६५. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्त्ति। पत्र स० ६। आ० ११½×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-विधि विधान एव पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७७। अ भण्डार।

विशेष—कुछ पृष्ठ पानी मे भीग गये हैं।

५१६६. प्रति सं० २। पत्र स० ११। ले० काल ×। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

५१६७ विमानशुद्धिपूजा""""। पत्र सं १२। आ १२×७ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं० १९३०। पूर्ण। वे सं ७४९। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १ १२) और है।

५१६८ प्रति स० २। पत्र सं० १०। ले काल ×। वे सं० १६८। छ भण्डार।

विशेष—शान्तिपाठ भी दिया है।

५१६९. विवाहपद्धति—सोमसेन। पत्र सं २५। आ १२×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय जैन विवाह विधि। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं ६६२। क भण्डार।

५१७० विवाहविधि""""। पत्र सं ८। आ ६×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—जैन विवाह विधि। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११९६। अ भण्डार।

५१७१ प्रति स० २। पत्र सं ४। ले काल ×। वे स १७४। छ भण्डार।

५१७२ प्रति स० ३। पत्र सं ३। ले काल ×। वे स १४४। छ भण्डार।

५१७३ प्रति स० ४। पत्र स० ६ ले काल स १७२८ ज्येष्ठ बुदी १२। वे स १२२। छ भण्डार।

५१७४ प्रति सं० ५। पत्र स० ८। ले० काल ×। वे० स ३४१। ञ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स २४६) और है।

५१७५. विष्णुकुमार मुनिपूजा—बाबूलाल। पत्र सं ८। आ ११×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ७४५। क भण्डार।

५१७६ विहार प्रकरण ""। पत्र सं० ७। आ ८×६३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं १७७३। अ भण्डार।

५१७७ व्रतनिर्णय—मोहन। पत्र सं १४। आ ११×६ इंच। भाषा संस्कृत। विषय-विधि विधान। र काल स १६६२। ले काल स १६४१। पूर्ण। वे सं १८१। छ भण्डार।

विशेष—अजयदुर्ग में रहने वाले विद्वान् ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। अजमेर में प्रतिलिपि हुई।

५१७८ व्रतनाम "। पत्र सं १ । आ ११×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—व्रतों के नाम। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८३७। ट भण्डार।

विशेष—इसके अतिरिक्त २ पत्रों पर ध्वजा माला तथा छत्र आदि के चित्र हैं। कुल ६ चित्र हैं।

५१७९ व्रतपूजासग्रह""""। पत्र सं ११८। आ १२३×८३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११८। छ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	संस्कृत	ले० काल सं० १८००
विशेष—देवगिरि में पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई।			पौष सुदी ४
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	„	ले० काल १८०० पौष सुदी ६
रत्नत्रयपूजा	—	„	„ „ „ पौष सुदी ६
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	संस्कृत	
गुरुपूजा	जिनदास	„	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	„	
षोडशकारण	—	„	
दशलक्षणपूजाजयमाल	रइधू	अपभ्रंश	
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	संस्कृत	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	„	ले० काल सं० १८००
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	„	
ऋषिमंडलपूजाविधान	गुणनन्दि	„	
तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	„	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द	संस्कृत	
धर्मचक्रपूजा	—	„	
जिनगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	„	र० काल १६६५
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	अपभ्रंश	
नवकार पैंतीसीपूजा	—	संस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द	„	
रविवारपूजा	—	„	
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	„	

५१८० व्रतविधान……। पत्र सं ४। आ ११½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधि विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५७१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे स ४२४ ५६२, २ ६७) और हैं।

५१८१ प्रति सं० २। पत्र सं १। ले काल ×। वे० स ६८। क भण्डार।

५१८२ प्रति सं० ३। पत्र सं ११। ले काल ×। वे० सं ६७१। क भण्डार।

५१८३ प्रति सं० ४। पत्र सं १। ले काल ×। वे सं १७८। छ भण्डार।

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के पंचकल्याणक की तिथियां भी दी हुई हैं।

५१८४ व्रतविधानरासो—दौलतरामसघी। पत्र स १२। आ ११×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र काल सं १७६७ आसोज सुदी १। ले काल सं १८३२ प्र भादवा सुदी १। पूर्ण। वे सं ९९९। छ भण्डार।

५१८५ व्रतविवरण……। पत्र सं ४। आ १ ३×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-व्रत विधि। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ८८१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १२४९) और है।

५१८६ प्रति सं० २। पत्र सं १ से १२। ले काल ×। अपूर्ण वे सं १८२१। ट भण्डार।

५१८७ व्रतविवरण……। पत्र सं ११। आ० १ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत विधि। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १८११। ट भण्डार।

५१८८ व्रतसार—आ० शिवकोटि। पत्र सं १। आ ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७६४। ट भण्डार।

५१८९ व्रतोद्यापनसंग्रह……। पत्र सं ४११। आ ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रतपूजा। र काल ×। ले काल सं १८६७। अपूर्ण। वे सं ४५२। क भण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
पल्यमडलविधान	शुभचन्द्र	संस्कृत
अक्षयदशमीविधान	—	"
श्रीनिव्रतोद्यापन	—	"
श्रीनिव्रतोद्यापन	—	"

पचमेरुजयमाला	भूधरदास	हिन्दी
ऋपिमडलपूजा	गुणनन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	
अनन्तव्रतपूजा	—	
मुक्तावलिपूजा	—	
शास्त्रपूजा	—	
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	
दशलक्षणपूजा	—	
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [वृहद]	—	
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	
रत्नत्रयव्रतोद्यापन [वृहद्]	केशवसेन	
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	
द्वादशमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	
अक्षयनिधिपूजा	—	
सौख्यव्रतोद्यापन	—	
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	
णमोकारपैंतीसीपूजा	—	
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	
जिनगुणसंपत्तिपूजा		
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन		

५१८० व्रतविधान·····   ····। पत्र सं ४ । आ ११½×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधि विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ६७६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे स ४२४ ६६२, २ १७) और हैं।

५१८१ प्रति स० २। पत्र सं १ । ले काल ×। वे स १८ । क भण्डार।

५१८२ प्रति स० ३। पत्र सं १६। ले काल ×। वे सं ६७६। क भण्डार।

५१८३ प्रति स० ४। पत्र सं १ । ले काल ×। वे सं १७८। छ भण्डार।

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के पंचकल्याणक की तिथियां भी दी हुई हैं।

५१८४ व्रतविधानरासो—दौलतरामसघी। पत्र सं १२। आ ११×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधान। र काल स १७६७ आसोज सुदी १ । ले काल सं १८१२ प्र भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० सं ६६६। छ भण्डार।

५१८५ व्रतविवरण····· ·······। पत्र सं ४। आ ११ ३×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-व्रत विधि। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ८८१। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १२४६) और है।

५१८६ प्रति स० २। पत्र सं ६ से १२। ले काल ×। अपूर्ण वे सं १८२३। ट भण्डार।

५१८७ व्रतविवरण···· ···। पत्र सं ११। आ० १ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत विधि। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १८६६। ट भण्डार।

५१८८ व्रतसार—आ० शिवकोटि। पत्र सं ६। आ ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७६४। ट भण्डार।

५१८९ व्रतोद्यापनसग्रह········। पत्र स ४६६। आ ११×४½ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रतपूजा। र काल ×। ले काल सं १८६७। अपूर्ण। वे सं ४५२। ब भण्डार।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
पल्यमडलविधान	शुभचन्द्र	संस्कृत
धाराश्रवसमीविधान	—	"
मौनिव्रतोद्यापन	—	"
मौनिव्रतोद्यापन	—	"

पञ्चमेरुजयमाला	भूधरदास	हिन्दी
ऋषिमण्डलपूजा	गुणनन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	"
अनन्तव्रतपूजा	—	"
मुक्तावलिपूजा	—	"
शास्त्रपूजा	—	"
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	"
दशलक्षणपूजा	—	"
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [वृहद्]	—	"
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन [वृहद्]	केशवसेन	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	"
द्वादशमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	"
अक्षयनिधिपूजा	—	"
सौख्यव्रतोद्यापन	—	"
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	"
णमोकारपैंतीसीपूजा	—	"
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	"
जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	"
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	"

५१८० व्रतविधान……… —। पत्र सं ४। आ ११½×४½ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–विधि विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे स ४९४ ६९२, २०१७) और हैं।

५१८१ प्रति स० २। पत्र सं १ । ले काल ×। वे स ६८ । क भण्डार।

५१८२ प्रति स० ३। पत्र सं ११। ले काल ×। वे सं १७१। क भण्डार।

५१८३ प्रति स० ४। पत्र सं १ । ले काल ×। वे सं १७८। छ भण्डार।

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के पंचकल्याणक की तिथियां भी दी हुई हैं।

५१८४ व्रतविधानरासो—दौलतरामसघी। पत्र सं ३२। आ ११×४½ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–विधान। र काल स १७६७ आसोज सुदी १ । ले काल सं १८१२ प्र भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे सं १११। छ भण्डार।

५१८५ व्रतविवरण……—। पत्र स ४। आ १ ३×४ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–व्रत विधि। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ८८१। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १२४६) और है।

५१८६ प्रति स० २। पत्र सं ६ से १२। ले काल ×। अपूर्ण वे सं १८२१। ट भण्डार।

५१८७ व्रतविवरण— । पत्र सं ११। आ० १ ×१ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रत विधि। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १८११। ट भण्डार।

५१८८ व्रतसार—आ० शिवकोटि। पत्र सं १। आ ११×४½ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रत विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १७६४। ट भण्डार।

५१८९ व्रतोद्यापनसंग्रह………। पत्र सं ४२१। आ ११×४½ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय–व्रतपूजा। र काल ×। ले काल स १८६७। अपूर्ण। वे सं ४२२। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
पल्यमडलविधान	शुभचन्द्र	संस्कृत
प्रथमवदमीविधान	—	”
मौनिव्रतोद्यापन	—	”
मौनिव्रतोद्यापन	—	”

५१६२ वृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल स० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति सं० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । ङ भण्डार ।

५१६६. षण्णवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासघे यतिपतितिलके रामसेनस्यवंशे ।
गच्छे नदीतटाख्ये यगदितिह मुखे तु छकर्मामुनीन्द्र ॥
ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।
सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१६७. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल " । पत्र स० १८ । आ० १११/२×५१/२ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६४ भादवा बुदी १३ । वे० स० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६६ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० स० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० सं० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति स० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १६०२ मगसिर सुदी १० । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है ।

त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	—	संस्कृत
आदित्यव्रतोद्यापन	—	"
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	"

५१६२ वृहद्गुरावलीशातिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । ङ भण्डार ।

५१६६. षणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०३⁄४×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासघे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।
गच्छे नदोतटाख्ये यगदितिह मुखे तु छकर्मामुनीन्द्र ।।
ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्यनयज्ञ चकार्षीत् ।
सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ।।

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१६७. प्रति स० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल · । पत्र स० १८ । आ० ११३⁄४×५१⁄२ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६४ भादवा बुदी १३ । वे० स० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६६ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० स० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२०० प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० स० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति सं० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६०२ मगसिर सुदी १० । वे० स० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ३५६) और है ।

५१९२ वृहद्गुरावलीशांतिमडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । क भण्डार ।

५१९३. प्रति स० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० स० ६४ । घ भण्डार ।

५१९४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६८० । च भण्डार ।

५१९५ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । ङ भण्डार ।

५१९६. षणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०३/४×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासघे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।
गच्छे नदीतटाख्ये यगदितिह मुखे तु छकर्मामुनीन्द्र ॥
ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।
सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१९७. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २९२ । ख भण्डार ।

५१९८ षोडशकारणजयमाल '' । पत्र स० १८ । आ० १११/२×५१/२ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८९४ भादवा बुदी १३ । वे० स० ३२९ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ६९७, २६६, ३०४, १०९३, २०४४) और हैं ।

५१९९ प्रति सं० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७९० आसोज सुदी १४ । वे० स० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० सं० १९८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति स० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १९०२ मंगसिर सुदी १० । वे० स० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५९) और है ।

मेरुपंक्तिव्रतोद्यापन	—	संस्कृत
आदित्यव्रतोद्यापन	—	"
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	"
धर्मचक्रव्रतोद्यापन	—	"
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्री भूषण	"
जिनसहस्रनामस्तवन [1]	आशाधर	"
द्वादशव्रतमंडलोद्यापन	—	"
लब्धिविधानपूजा	—	"

५१६० प्रति सं० ३ । पत्र स० २१६ । लि० काल × । वे० सं० १८४ । ग भण्डार ।

निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
लब्धिविधानोद्यापन	—	संस्कृत
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	हिन्दी
भक्तामरव्रतोद्यापन	केशवसेन	संस्कृत
दशलक्षणव्रतोद्यापन	सुमतिसागर	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	"
पुष्पांजलिव्रतोद्यापन	—	"
सुगन्धदशमीव्रतपूजा	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीपूजा	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	"
प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मदहनपूजा	—	"
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	"

५१६१ बृहत्पतिविधान……। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–विधान । र० काल × । लि० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८७ । अ भण्डार ।

५१६२ वृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल सं० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७० । क भण्डार ।

५१६३. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ६४ । घ भण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६८० । च भण्डार ।

५१६५ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । ङ भण्डार ।

५१६६. षणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०३/४×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासघे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।
गच्छे नदोतटाख्ये यगदितिह मुखे तु छकर्मामुनीन्द्र ॥
ख्यातोसौविश्वसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।
सोमसुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालाना शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

५१६७. प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल " । पत्र स० १८ । आ० ११३/४×५१/२ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६४ भादवा बुदी १३ । वे० स० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६६ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० स० ३०३ । अ भण्डार ।

विशेष—सस्कृत मे भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२०० प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० स० ७२० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० स० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५२०२. प्रति स० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १६०२ मगसिर सुदी १० । वे० स० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है ।

५२०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं २०८ । ख भण्डार ।

५२०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं १६ । ले० काल सं १८०२ मगसिर बुदी ११ । वे स २ ८ । म भण्डार ।

५२०५. षोडशकारणजयमाल—रइधू । पत्र सं० २१ । मा० ११×५ इ च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स ७४७ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ८८६) और है ।

५२०६. षोडशकारणजयमाल······। पत्र सं ११ । मा ११×५ इ च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पूजा । र० काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १६६ । ख भण्डार ।

५२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं १५ । ले काल × । वे सं १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १२६) और है ।

५२०८. षोडशकारणउद्यापन······। पत्र सं १५ । मा १२×५३ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल × । ले काल सं १७८१ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे सं० २४१ । ख भण्डार ।

विशेष—गोधों के मन्दिर में पं सुखाराम के वाचनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

५२०९. षोडशकारणजयमाल······। पत्र सं १ । मा ११३×५३ इ च । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय–पूजा । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ६४२ । ख भण्डार ।

५२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं ६ । ले काल × । वे सं० ७१७ । क भण्डार ।

५२११. षोडशकारणजयमाल······। पत्र स ३२ । मा० १२×८ इ च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय पूजा । र काल × । ले काल सं १६५५ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वे स ६२६ । क भण्डार ।

५२१२. षोडशकारणतथा दशलक्षण जयमाल—रइधू । पत्र सं ३१ । मा १ ×७ इ च । भाषा–अपभ्रंश । विषय–पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११२ । छ भण्डार ।

५२१३. षोडशकारणपूजा—केशवसेन । पत्र सं ११ । मा १२×५३ इ च । भाषा संस्कृत । विषय पूजा । र काल सं १६६४ माघ बुदी ७ । ले काल सं १८२१ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे सं २१२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ३ ८) और है ।

५२१४. प्रति स ३ । पत्र सं २१ । ले काल × । वे सं ३ । ख भण्डार ।

५२१५. षोडशकारणपूजा······। पत्र सं २ । मा ११×५३ इ च । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ६२५) और है ।

५२१६ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५१ । ङ भण्डार ।

५२१७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२४ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमाबाद मे प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८ प्रति सं० ४ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६३ सावण बुदी ११ । वे० स० ४२५ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४२६) और है ।

५२१९ प्रति स० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ७२ । झ भण्डार ।

५२२० षोडशकारणपूजा (बृहद्) । पत्र स० २६ । आ० ११३×५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१८ । क भण्डार ।

५२२१ प्रति स० २ । पत्र स० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४२६ । ञ भण्डार ।

५२२२ षोडशकारण व्रतोद्यापनपूजा—राजकीर्त्ति । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७९९ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५०७ । अ भण्डार ।

५२२३. षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र स २१ । आ० १२×५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५१४ । अ भण्डार ।

५२२४ शत्रुञ्जयगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र सं० ९ । आ० ११३×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६७ । अ भण्डार ।

५२२५ शरदुत्सवदीपिका (मडल विधान पूजा)—सिंहनन्दि । पत्र स० ७ आ० ६×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्रीवीर शिरसा नत्वा वीरनदिमहागुरु ।
सिंहनदिरह वक्ष्ये शरदुत्सवदीपिका ॥१॥
अथात्र भारते क्षेत्रे जबूद्वीपमनोहरे ।
रम्यदेशेस्ति विख्याता मिथिलानामत पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ— एव महप्रभाव च दृष्ट्वा लग्नास्तथा जना ।
कर्तुं प्रभावनाग च ततोऽत्रैव प्रवर्त्तते ॥२३॥
तदाप्रभृत्यारम्येद प्रसिद्ध जगतीतले ।
दृष्ट्वा दृष्ट्वा गृहीत च वैष्णवादिकशैवकै. ॥२४॥

बलात्कारगणे मुनिवरतरः श्रीमूलसंघोवरः ।
सूर्यं श्रीवरपूज्यपाद ममलः श्रीवीरसेनाह्वय ।।
तच्छिष्यो वर सिद्धसेनमुनिस्तेनेयमाविष्कृता ।
लोकोद्योतनहेतवे मुनिवरः कुर्वंतु श्री सज्जनाः ।।२३।।
इति श्री धारपुस्तककथा समाप्ताः ।।१।।

इसके पश्चात् पूजा दी हुई है ।

५२२६ प्रति सं० २ । पत्र सं १४ । ले काल स १६२२ । वै स १ १ । ख भण्डार ।

५२२७ शान्तिकविधान (प्रतिष्ठापाठ का एक भाग)———— । पत्र सं १२ । आ १२½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र काल × । ले काल सं १६१२ फागुन सुदी १ । वै० सं० २३७ । ख भण्डार ।

विशेष— प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का वर्णन किया हुआ है । प्रतिष्ठा के लिये गुटका महत्व पूर्ण है ।

मण्डलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी । १४वें पत्र से कम लिखे हुये हैं जिनकी संख्या १८ है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

ॐ नमो वीतरागायनम । परमेष्ठिने नम । श्री गुरुभ्योनमः ।। सं १६१२ वर्षे फागुण सुदी १ बुरी श्री मूलसंघे भ श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्ट भ श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्ट भ श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवा तत् मंडलाचार्य ललितकीर्तिदेवा तच्छिष्यमंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति उपदेशात् ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै सं २१२ २२४) और हैं ।

५२२८. शांतिकविधान (बृहद्)———— । पत्र सं ७४ । आ १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र काल × । ले काल सं १८२६ मावण बुदी ऽऽ । पूर्ण । वै सं १७७ । ख भण्डार ।

विशेष—पं पन्नालालजी ने शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं १६ । ले काल × । अपूर्ण । वै सं ११८ । च भण्डार ।

५२३० शांतिकविधि—अर्हद्देव । पत्र सं ३१ । आ ११½×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–संस्कृत । विषय विधि विधान । र काल × । ले काल स १८३८ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वै सं ९८६ । क भण्डार ।

५२३१ शान्तिविधि———— । पत्र स ३ । आ १ ×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वै स ९८५ । क भण्डार ।

५२३२ शान्तिपाठ (वृहद्)…… ….। पत्र सं० ४० । आ० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३३. शान्तिचक्रपूजा…… …… । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५¼ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) और है ।

५२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२२) और है ।

५२३५. शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०५ । ङ भण्डार ।

५२३६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८२ । च भण्डार ।

५२३७ शांतिमंडलपूजा … । पत्र स० ३८ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । ङ भण्डार ।

५२३८. शांतिपाठ … । पत्र स० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त मे पढा जाने वाला पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४) और हैं ।

५२३९. शांतिरत्नसूची … । पत्र सं० ३ । आ० ८½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत हैं ।

५२४०. शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११½×६½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से संग्रहीत है ।

५२४१. शास्त्रगुरुजयमाल ……। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ३४२ । च भण्डार ।

५२४२. शास्त्रजयमाल—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । आ० १३½×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८८ । क भण्डार ।

५२४३. शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि…… । पत्र सं० १ । आ० १ ३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८४ । ख भण्डार ।

५२४४. शासनदेवतार्चनविधान…… । पत्र सं० २१ से २६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । ख भण्डार ।

५२४५. शिखरविलासपूजा…… । पत्र सं० ७१ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

५२४६. शीलव्रतनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

५२४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १६११ प्र० श्रावण सुदी १४ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

५२४८. शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा…… । पत्र सं० ७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८__ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । च भण्डार ।

विशेष—रचना सं० निम्न प्रकार है— शब्दे रंध्र मगलं वसु चन्द्र ।

५२४९. शुक्लपञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा…… । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१७ । ख भण्डार ।

५२५०. श्रुतज्ञानपूजा…… । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ७२१ । क भण्डार ।

५२५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

५२५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

५२५३. श्रुतज्ञानव्रतपूजा…… । पत्र सं० १ । आ० ११×८३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

५२५४. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापनपूजा…… । पत्र सं० ११ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२४ । क भण्डार ।

५२५५. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन…… । पत्र सं० ८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६२२ । पूर्ण । वे० सं० ३८ । ख भण्डार ।

५२५६. श्रुतपूजा…… । पत्र सं० ४ । आ० ११३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १७८ । ख भण्डार ।

५२५७. श्रुतस्कंधपूजा—श्रुतसागर। पत्र स० २ से १३। आ० ११३/४×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७०५। क भण्डार।

५२५८ प्रति स० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० स० ३८६। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३५०) और है।

५२५६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० स० १८४। ज भण्डार।

५२६० श्रुतस्कंधपूजा (ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा)—सुरेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सं० ५। आ० १२×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल स० १८४७। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२२। अ भण्डार।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था मे किया था।

५२६१ श्रुतस्कधपूजा ... । पत्र सं० ५। आ० ८३/४×७ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७०२। अ भण्डार।

५२६२ प्रति स० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। वे० सं० २६२। ख भण्डार।

५२६३. प्रति सं० ३। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० १८८। ज भण्डार।

५२६४ प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० स० ४६०। व्य भण्डार।

५२६५ श्रुतस्कधपूजाकथा । पत्र स० २८। आ० १२३/४×७ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा तथा कथा। र० काल ×। ले० काल वीर सं० २४३४। पूर्ण। वे० स० ७२८। ङ भण्डार।

विशेष—चावली (आगरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर सं० २४५७ को पन्नालालजी गोधा ने तुकोगञ्ज इन्दौर मे लिखवाया। जौहरीलाल फिरोजपुर जि० गुडगावा।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है।

५२६६ सकलीकरणविधि । पत्र स० ३। आ० ११×५३/४ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ८०, ५७१, ६६१) और हैं।

५२६७ प्रति स० २। पत्र स० २। ले० काल ×। वे० स० ७२३। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७२४) और है।

५२६८. प्रति स० ३। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० ३६८। व्य भण्डार।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्त्ति के वाचको के लिए प्रतिलिपि हुई थी।

५२६६. सकलीकरण .... | पत्र सं० २१ | आ० ११×५ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–विधि विधान | र काल × | ले० काल × | पूर्ण | वे सं २७१ | क भण्डार |

५२७०. प्रति सं० २ | पत्र सं० १ | ले काल × | वे सं ७५७ | क भण्डार |

५२७१. प्रति सं० ३ | पत्र सं० १ | ले काल × | वे० सं० १२२ | छ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ११६) और है |

५२७२. प्रति सं० ४ | पत्र सं ७ | ले काल × | वे सं ११४ | ज भण्डार |

५२७३. प्रति सं० ५ | पत्र सं १ | ले काल × | वे सं ४९४ | क भण्डार |

विशेष—हासिया पर संस्कृत टिप्पण दिया हुआ है | इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ४४१) और है |

५२७४. सभारविधि .... | पत्र सं० १ | आ १ ×४३ इंच | भाषा–प्राकृत, संस्कृत | विषय विधान | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे० सं १२११ | अ भण्डार |

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं १२११) और है |

५२७५. सप्तपदी .... | पत्र सं २ से १६ | आ ७६×५ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–विधान | र काल × | ले काल × | अपूर्ण | वे सं १६६६ | अ भण्डार |

५२७६. सप्तपरमस्थानपूजा .... | पत्र सं १ | आ १ ३×५ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे सं ६६६ | अ भण्डार |

५२७७. प्रति सं० २ | पत्र सं १२ | ले काल × | वे सं ७६२ | क भण्डार |

५२७८. सप्तर्षिपूजा—विश्वराम | पत्र सं ७ | आ ८×४३ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे स २२२ | छ भण्डार |

५२७९. सप्तर्षिपूजा—लक्ष्मीसेन | पत्र सं ६ | आ ११×५ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा | र काल × | ले काल × | पूर्ण | वे सं १२७ | छ भण्डार |

५२८०. प्रति सं० २ | पत्र सं ८ | ले काल सं १८२ कार्तिक सुदी २ | वे सं ४ १ | अ भण्डार |

५२८१. प्रति सं० ३ | पत्र सं ७ | ले काल × | वे सं २११ | ट भण्डार |

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति द्वारा रचित चांदनपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है |

५२८२. सप्तर्षिपूजा—विश्वभूषण | पत्र सं १६ | आ १ ३×५ इंच | भाषा–संस्कृत | विषय–पूजा | र काल × | ले काल सं १६१७ | पूर्ण | वे सं १ १ | अ भण्डार |

५२८३. प्रति स० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० स० १२७ । छ भण्डार ।

५२८४. सप्तर्षिपूजा ··· । पत्र सं० १३ । ग्रा० ११×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६१ । अ भण्डार ।

५२८५ समवशरणपूजा—ललितकीर्त्ति । पत्र स० ४७ । ग्रा० १०½×५ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४५१ । अ भण्डार ।

विशेष—खुस्यालजी ने जयपुर नगर मे महात्मा शभुराम मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६ समवशरणपूजा (वृहद्)—रूपचन्द । पत्र स० ६४ । ग्रा० ६½×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय पूजा । र० काल स० १५६२ । ले० काल स० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है— अतीतेद्गगनन्दभद्रासकृत परिमिते कृष्णपक्षेच मासे ॥

५२८७ प्रति स० २ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वे० स० २०६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० पन्नालालजी जोबनेर वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८. प्रति स० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

५२८६ समवशरणपूजा—सोमकीर्त्ति । पत्र स० २८ । ग्रा० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८०७ वैशाख सुदी १ । वे० स० ३८४ । व्य भण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक–

व्याजस्तुत्यार्चा गुणवीतराग ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमान ।
श्रीसोमकीर्त्तिविकासमान रत्नेषरत्नाकरचार्ककीर्त्ति ॥

जयपुर मे सदानन्द सौगाणी के पठनार्थ छाजूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४०५) और है ।

५२६० समवशरणपूजा ···· । पत्र स० ७ । ग्रा० ११×७ इंच । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७७४ । ङ भण्डार ।

५२६१. सम्मेदशिखरपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १० । ग्रा० ११¾×७ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८८६ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २०११ । अ भण्डार ।

विशेष—गगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५०६) और है ।

५२६२. प्रति स० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल स० १६२१ मगसिर बुदी ११ । वे० सं० २१० । ख भण्डार ।

५२९३ प्रति स० ३ । पत्र सं ७ । ले काल सं० १८९३ वैशाख सुदी ३ । वे सं ४११ । म भण्डार ।

५२९४ सम्मेदशिखरपूजा—पं० जवाहरलाल । पत्र सं १२ । आ० १२×८ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७४८ । अ भण्डार ।

५२९५. प्रति स० २ । पत्र स ११ । र काल सं १८९१ । ले काल स १९१२ । वे सं १११ । घ भण्डार ।

५२९६ प्रति स० ३ । पत्र सं १८ । ले काल सं १९९२ आसोज सुदी १ । वे स २४ । झ भण्डार ।

५२९७ सम्मेदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं ८ । आ ११½×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र काल × । ले काल स १९५५ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वे सं ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ११२१) और है ।

५२९८. प्रति स० २ । पत्र सं ७ । ले काल सं १९१८ माघ सुदी १४ । वे स ७ १ । च भण्डार ।

५२९९. प्रति स० ३ । पत्र सं ११ । ले काल × । वे सं ७९३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ७९४) और है ।

५३०० प्रति स० ४ । पत्र सं ७ । ले काल × । वे स २२२ । छ भण्डार ।

५३०१ सम्मेदशिखरपूजा—भागचन्द । पत्र सं १ । आ ११½×४ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र काल सं १९२१ । ले काल स १९१ । पूर्ण । वे सं ७६७ । क भण्डार ।

विशेष— पूजा के पश्चात् पद भी दिये हुये हैं ।

५३०२. प्रति स० २ । पत्र सं ८ । ले काल × । वे सं १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—सिद्धक्षेत्रों की स्तुति भी है ।

५३०३ सम्मेदशिखरपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं २१ । आ ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय–पूजा । र काल × । ले काल स १९१२ । पूर्ण । वे सं २९१ । अ भण्डार ।

विशेष—१ वें पत्र से आगे पञ्चमेरु पूजा दी हुई है ।

५३०४ सम्मेदशिखरपूजा········ । पत्र सं ३ । आ ११×४½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२११ । अ भण्डार ।

५३०५. प्रति स० २ । पत्र स २ । आ १ ×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७९१ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ७९२) और है ।

५३०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २९१ । भ्क भण्डार ।

५३०७. सर्वतोभद्रपूजा ·· । पत्र स० ५ । आ० ६×३½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३९३ । अ भण्डार ।

५३०८ सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३३४ । अ भण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र स० ६ । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल १९३० । पूर्ण । वे० स० १३९७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ९८६, १३११, ११०८, १०१०) और हैं ।

५३१०. सरस्वतीपूजा ··· ···। पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०३ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ८०२) और है ।

५३११ सरस्वतीपूजा—संघी पन्नालाल । पत्र स० १७ । आ० १२×८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन मे १ प्रति और है ।

५३१२ सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द बख्शी । पत्र स० ८ से १७ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल स० १९३७ । पूर्ण । वे० स० ७७१ । क भण्डार ।

५३१३. प्रति स० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० स० ८०४ । ङ भण्डार ।

५३१४ सरस्वतीपूजा—प० बुधजनजी । पत्र स० ५ । आ० ९×४½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १००६ । अ भण्डार ।

५३१५. सरस्वतीपुजा । पत्र स० २१ । आ० ११×५ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । च भण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६. सहस्रकूटजिनालयपूजा ·· । पत्र स० १११ । आ० ११½×४½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९२९ । पूर्ण । वे० स० २१३ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५३१७ सहस्रगुणितपूजा—भ० धर्मकीर्त्ति। पत्र सं ६६। आ १२३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १७११ मासाढ सुदी २। पूर्ण। वे सं ५१६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं ५५२) और है।

५३१८. प्रति स० २। पत्र सं ८२। ले काल सं १६२२। वे स० २४१। ख भण्डार।

५३१६. प्रति स० ३। पत्र स १२२। ले काल सं १६६ । वे सं० ८ १। ङ भण्डार।

५३२० प्रति स० ४। पत्र सं ६६। ले० काल ×। वे० सं ६१। छ भण्डार।

५३२१ प्रति स० ५। पत्र सं ६४। ले काल ×। वे सं ६६। भ भण्डार।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्त्ति ने जिहानाबाद में प्रतिलिपि कराई थी।

५३२२ सहस्रगुणितपूजा……। पत्र सं ११। आ १ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे स ११७। छ भण्डार।

५३२३ प्रति स० २। पत्र सं ८८। ले काल ×। अपूर्ण। वे स० १४। भ भण्डार।

५३२४ सहस्रनामपूजा—धर्मभूषण। पत्र स ६१। आ १ ३/४×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ३८३। च भण्डार।

५३२५. प्रति स० २। पत्र स ११ से ६६। ले काल सं १८८४ ज्येष्ठ सुदी ६। अपूर्ण। वे सं ३८५। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे सं ३८४ ३८६) और हैं।

५३२६ सहस्रनामपूजा……। पत्र सं ११६ से १२८। आ १२×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ३८२। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ३८७) और है।

५३२७ सहस्रनामपूजा—चैनसुख। पत्र सं २२। आ १२३×८३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स २२१। छ भण्डार।

५३ ८. सहस्रनामपूजा……। पत्र सं १८। आ ११×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७ ७। च भण्डार।

५३२६. सारस्वतयन्त्रपूजा……। पत्र स ४। आ १ ३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ५७७। क भण्डार।

५३३० प्रति सं० २। पत्र सं १। ले काल ×। वे० सं १२२। छ भण्डार।

५३३१. **सिद्धक्षेत्रपूजा—द्यानतराय**। पत्र सं० २। आ० ६३/४×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६१०। ट भण्डार।

५३३२. **सिद्धक्षेत्रपूजा (वृहद्)—स्वरूपचन्द**। पत्र सं० ५३। आ० ११३/४×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल सं० १९१९ कार्तिक बुदी १३। ले० काल सं० १९४१ फागुण सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ८९। ग भण्डार।

विशेष—अन्त मे मण्डल विधि भी दी हुई है। रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी। इसे सुगनचन्द गगवाल ने चौधरियो के मन्दिर मे चढाया।

५३३३ **सिद्धक्षेत्रपूजा**…… । पत्र सं० १३। आ० १३×८३/४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९४४। पूर्ण। वे० सं० २०४। छ भण्डार।

५३३४ **प्रति सं० २**। पत्र सं० ३१। ले० काल ×। वे० सं० २९४। ज भण्डार।

५३३५. **सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा** …… । पत्र सं० १२६। आ० १११/२×५१/२ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९४० माघ सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० २२०। ख भण्डार।

विशेष—अतिशयक्षेत्र पूजा भी है।

५३३६ **सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० भानुकीर्त्ति**। पत्र सं० १४३। आ० १०३/४×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९२२। वे० सं० १७८। ख भण्डार।

५३३७. **सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० शुभचन्द्र**। पत्र सं० ४१। आ० १२×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १९७२। पूर्ण। वे० सं० ७५०। ग भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ७५१) और है।

५३३८. **प्रति सं० २**। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० ८४५। ङ भण्डार।

५३३९ **प्रति सं० ३**। पत्र सं० ४४। ले० काल ×। वे० सं० १२९। छ भण्डार।

विशेष—सं० १९६९ फागुण सुदी २ को पुष्पचन्द अजमेरा ने संशोधित की। ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है। इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २१२) और।

५३४० **सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर**। पत्र सं० ३० से ६०। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४४। ङ भण्डार।

५३४१ **सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द**। पत्र सं० ६। आ० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६२। क भण्डार।

५३४२ सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)……। पत्र सं १४। आ १२×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वै स ६८७। ङ भण्डार।

५३४३ सिद्धचक्रपूजा……। पत्र स ३। आ ११×५३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै० सं ५२६। च भण्डार।

५३४४ प्रति सं० २। पत्र स १। ले काल ×। वै स ४ ५। च भण्डार।

५३४५ प्रति सं० ३। पत्र सं १७। ले काल सं १८६ फागुण बुदी १४। वै सं २१। छ भण्डार।

५३४६ सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—संतलाल। पत्र सं १०८। आ १२×८ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल स १६८१। पूर्ण। वै सं ७४६। च भण्डार।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड़ ने प्रतिलिपि की थी।

५३४७ सिद्धचक्रपूजा……। पत्र स ११३। आ १२×७३ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ८८६। ङ भण्डार।

५३४८. सिद्धपूजा—रत्नभूषण। पत्र स २। आ १ ३×४३ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले काल स १७६ । पूर्ण। वै स २ ६ । अ भण्डार।

विशेष—औरङ्गजेब के शासनकाल में संग्रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

५३४९ प्रति सं० २। पत्र सं १। आ ८३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ७८६। ङ भण्डार।

५३५० सिद्धपूजा—महा प० आशाधर। पत्र सं २। आ ११३×६ इंच। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल स १८२२। पूर्ण। वै स ७८८। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै सं ७८५) और है।

५३५१ प्रति स० २। पत्र सं १। ले काल सं १८२३ मंगसिर सुदी ८। वे सं २११। छ भण्डार।

विशेष—पूजा के प्रारम्भ में स्थापना नहीं है किन्तु प्रारम्भ में ही जल चढाने का मन्त्र है।

५३५२. सिद्धपूजा……। पत्र स ४। आ ६३×४३ इंच। भाषा संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं १६६ । ट भण्डार।

विशेष– इसी भण्डार में एक प्रति (वै सं १६२४) और है।

५३५३ सिद्धपूजा ... .. । पत्र सं० ४४ । आ० ६×५ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वे० स० ७१५ । च भण्डार ।

५३५४ सीमंधरस्वामीपूजा .... । पत्र स० ७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५८ । ङ भण्डार ।

५३५५. सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल स० १८६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०४१ । अ भण्डार ।

५३५६ सुखसंपत्तिव्रतपूजा—अखयराम । पत्र स० ६ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय पूजा । र० काल सं० १८०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०८ । क भण्डार ।

५३५७ सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन । पत्र स० १३ । आ० ८×६½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ७ प्रतिया (वे० स० ११११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) और हैं ।

५३५८ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल सं० १६२८ । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

५३५९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ८६६ । ङ भण्डार ।

५३६०. प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६५६ आसोज बुदी ७ । वे० स० २०३४ । ट भण्डार ।

५३६१ सुपार्श्वनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२३ । च भण्डार ।

५३६२ सूतकनिर्णय ... । पत्र स० २१ । आ० ८×४ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५ । झ भण्डार ।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला फेरने की विधि आदि भी हैं ।

५३६३ प्रति सं० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २०६ । झ भण्डार ।

५३६४ सूतकवर्णन । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४० । अ भण्डार ।

५३६५ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल स० १८४५ । वे० स० १२१४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० २०३२) और है ।

५३६६ सोनागिरपूजा—आशा । पत्र स० ८ । आ० ५½×४½ इंच । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६३८ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं गगाधर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी।

५३६७ सोनागिरपूजा.........। पत्र स ८। आ ८३×४३ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र० काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ८८१। ङ भण्डार।

५३६८ सोलहकारणपूजा—द्यानतराय। पत्र स २। आ ८×५३ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र काल ×। लि काल ×। पूर्ण। वे सं ११२९। अ भण्डार।

५३६९. प्रति स० २। पत्र सं २। ले काल स १८१७। वे सं २५। ङ भण्डार।

५३७० प्रति स० ३। पत्र स ५। ले काल ×। वे सं ६१। ग भण्डार।

५३७१ प्रति स० ४। पत्र सं ५। ले काल ×। वे स १ २। ख भण्डार।

विषय—इसके अतिरिक्त पद्मनेव भाषा तथा सोलहकारण संस्कृत पूजायें और हैं।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं० १६४) और है।

५३७२ सोलहकारणपूजा......। पत्र सं १४। आ० ८×५ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ७२२। ङ भण्डार।

५३७३ सोलहकारणमण्डलविधान—टेकचन्द। पत्र सं ४८। आ /१२×८ इ च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ८८७। ङ भण्डार।

५३७४ प्रति स० २। पत्र सं ६१। ले काल ×। वे स ७२४। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे सं ७२५) और है।

५३७५ प्रति स० ३। पत्र स ४५। लि काल ×। वे सं २ ६। छ भण्डार।

५३७६ प्रति स० ४। पत्र सं ४५। लि काल ×। वे स २६४। ख भण्डार।

५३७७ सौख्यव्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम। पत्र स १२। आ ११×४३ इ च। भाषा–संस्कृत। विषय पूजा। र काल सं १८२। लि काल ×। पूर्ण। वे स ५८१। अ भण्डार।

५३७८ प्रति स० २। पत्र सं १५। ले काल सं १८१५ चैत्र सुदी ६। वे स ४२७। च भण्डार।

५३७९ स्नपनविधान.........। पत्र सं० ८। आ १ ×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विषय–विधान। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे स ४२२। च भण्डार।

५३८० स्नपनविधि (बृहद्).........। पत्र सं २२। आ १ ×५ इञ्च। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। र काल ×। लि काल ×। वे सं ५७। ख भण्डार।

विशेष—अन्तिम २ पृष्ठों मे त्रिलोकसार पूजा है जो कि अपूर्ण है।

गुटका-सँग्रह

(शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटों की, जयपुर)

५३८१ गुटका सं० १। पत्र स० २८४। आ० ६×६ इ च। भाषा–हिन्दी सस्कृत। विषय-सग्रह। ०० काल स० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ६। अपूर्ण। दशा–सामान्य।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
१ भट्टाभिषेक	×	सस्कृत	पूर्ण
२. रत्नत्रयपूजा	×	"	"
३ पञ्चमेरुपूजा	×	"	"
४ अनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	"
५ षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	सस्कृत	"
६ दशलक्षणउद्यापनपाठ	×	"	"
७. सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्रह्मजयसागर	"	"
८. मुनिसुव्रतछन्द	भ० प्रभाचन्द्र	सस्कृत हिन्दी	" पृष्ठ १२०–१२४

मुनिसुव्रत छन्द लिख्यते—

पुण्यापुण्यनिरूपकं गुणनिधि शुद्धव्रत सुव्रतं
स्याद्वादामृततर्पिताखिलजनं दु खाग्नियाराधर ।
मोघारण्यधनंजयं घनकरं प्रध्वस्तकर्मारिगं
वदे तद्गुणसिद्धये हरिमुनं सोमान्वजं सौख्यदं ॥१॥

जलधिसमगभीरं प्राप्तजन्माब्धितीरं
प्रबलमदनवीरं पञ्चधामुक्तचीरं
[illegible]विषयविकारं मक्तसंप्रचार
[illegible] गुणधारं गुरुतो निस्तार ॥२॥

आर्या—

त्रिभुवनजनमहितकर्ता भर्ता सुपवित्रमुक्तिवरलक्ष्म्याः ।
कन्दर्पदर्पहर्ता मुव्रतदेवो जयति गुणधर्ता ॥१॥
यो नम्रमौलिसमदमुकुटमहारत्नरत्नजमिकर ।
प्रतिपादितवरचरणं दैवमदीवे भवितमुभगं ॥२॥
तं मुनिसुव्रतनाथ मत्वा कथयामि तस्य सन्तीह ।
शृण्वन्तु सकलभव्याः जिनधर्मपरा मौनसंयुक्ताः ॥३॥

अडिल्लछन्द—

प्रथम कल्याणक कहुं मनमोहन मगध सुदेस बसै अति सोहन ।
राजगेह नयरि वर सुन्दर सुमित्र भूप तिहाँ जिसो पुरंदर ॥१॥
चन्द्रमुखीमृगनयनी बाला तस राणी सोमा सुविशाला ।
पश्चिमरयणी मलिकुलबाला स्वप्न सोल देखें गुणमाला ॥२॥
श्रावे तें मति सु विचक्षण सन्तत कुमारि सेवें सुलक्षण ।
रत्नवृष्टि करें धनद मनोहर एम षमास गया सुभ सुखकर ॥३॥
हरिवर्म्मा भूपति मुनि मगध प्राकृत स्वर्ग हवो आखण्डल ।
मासणबदि बीजें गुणधारी जननी गर्भ रही सुखकारी ॥४॥

भुजङ्गप्रयात—

करंति मनंमे परं गर्भमारं न रेखात्रय भंगमायासभार ।
तदा भामता एसचन्द्राननैणामुराणागवामा न मुख्या सुभक्ता ॥१॥
पुरं त्रिपरित्याजितवैवसमा बहुं प्रास सोमित्र कत यदा या ।
स्थित गर्भवासे जिन निष्कलंकं प्रसुप्यावरातें गताहित्यसमत ॥२॥
कुमार्यो हि सेवा प्रकुर्वन्ति माब क्रियन्मोऽज्ञसद्दीपसुहकुम्भवास ।
वरं पद्मपूर्ण दवानसुपूर्ण प्रकीर्णं सितछत्रं कुंभ सुपूर्ण ॥३॥
सुरश्रेष्ठमार्सैर्मघसत्पवित्र तदद्रत्नवृष्टि शुभ पुष्पपातं ।
जिनं गर्भवासा विनिर्मुक्तदेहं परं स्तौमि सीमास्मनं सौख्यगेहं ॥४॥

अडिल्लछन्द—

श्रीजिनवर प्रवतरय । महि त्रिभुवन चिह्न हवां सुरानां महि ।
घंटा तिहं संख परहारव सुरपति सहसा करें जय जयरव ॥१।
वैशाख बदी दसमी जिन जायो सुरवरवृन्द वेगें तब आयो ।
ऐरावण आरूढ पुरंदर, सचीसहित सोहैं गुणमंदिर ॥२॥

मोतीरेणुछन्द— तब ऐरावण सजकरी, चढ्यो शतमुख आणद भरी ।
जस कोटी सतावीस छे अमरी, करें गीत नृत्य वलीदें भमरी ॥३॥
गज कानें सोहें सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कार वदि सहु भरी ।
आखण्डलअंकुशवेसेंधरी, उछवमगल गया जिन नयरी ॥
राजगणें मलया इन्द्रसहु, वाजें वाजित्र सुरंग वहु ।
शक्रें कह्यु जिनवर लावें सही, इन्द्राणी तव घर मझे गई ॥
जिन बालक दीठो निज नयणे, इन्द्राणी बोले वर वयणे ।
माया मेसि सुतहि एक कीयी, जिनवर युगतें जइ इन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है । सवसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन हैं जिसका रचना के आधे से अधिक भाग मे वर्णन किया गया है इसमे उक्त छन्दो के अतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमतछन्द, दूहा, वभाण छन्दो का और प्रयोग हुआ है। अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस— बीस धनुष जस देह जहे जिन कछप लाछन ।
त्रीस सहस्र वर वर्ष आयु सज्जन मन रञ्जन ॥
हरवशी गुणवीमल, भक्त दारिद्र विहडन ।
मनवाछितदातार, नयरवालोडसु मडन ॥
श्री मूलसघ सघद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टाभरण ।
श्रीप्रभाचन्द्र सुरिवर कहे, मुनिसुव्रतमगलकरण ॥

इति मुनिसुव्रत छद सम्पूर्णोऽय ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

सवत् १८१८ वर्षे शाके १६८४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कार-गणे श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री मल्लिभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजैनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तच्छिष्य ब्रह्मनेमसागर पठनार्थं । पुण्यार्थं पुस्तक लिखायित श्रीसूर्यपुरे श्रीआदिनाथ चैत्यालये ।

विषय	कर्त्ता	भाषा	विशेष
६ मातापमावतीछन्द	महीचन्द्र भट्टारक	संस्कृत हिन्दी	१२६–२८
९ पार्श्वनाथपूजा	×	संस्कृत	
११ कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	"	
१० अनन्तव्रतरास	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	
११ अष्टक पूजा	नेमिदत्त	संस्कृत	पं राघव की प्ररणा से
१३ अष्टक	×	हिन्दी	भक्ति पूर्वक की गई
१५ अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ अष्टक	×	संस्कृत	
१६ सिद्धपूजा	×	"	

विशेष—पत्र स १६८ पर निम्न लेख लिखा हुआ है—

भट्टारक श्री १ ८ श्री विद्यानन्दजी सं १८२१ वर्षे साके १६८६ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदादिवस रात्रि पहर पाछलीइ देवलोक थया छेवी ।

५३८२ गुटका स० ७ । पत्र स ११ । आ ८३×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र काल सं १८२ । लि काल स १८१५ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में बखतराम साह कृत मिथ्यात्व खण्डन नाटक है । यह प्रति स्वय लेखक द्वारा लिखी हुई है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यातखण्डन नाटक सम्पूर्ण । लिखतं बखतराम साह । सं १८१५ ।

५३८३ गुटका स० ३ । पत्र सं ७१ । आ ४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-× । लै काल सं १६ ४ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—फतेहराम गोदीका ने लखा था ।

१ रत्नत्रयविधि	×	हिन्दी	१–३
२ परमज्योति	बनारसीदास	"	४–१२
३ रत्नत्रयाष्टविधि	×	संस्कृत	१३–४१
४ धमरासवगाम	×	हिन्दी	४१–४४
५ मंगलाष्टक	×	संस्कृत	४५–४६
६ पूजा	पद्मनन्दि	"	५ –५४

७ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	५५–५६
८. पूजा व जयमाल	×	"	५६–७५

५३८४ गुटका स० ४ । पत्र सं० २५ । आ० ३×२ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—इस गुटके मे ज्वालामालिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, षट्लेश्यावर्णन, जैनरक्षामन्त्र आदि पाठो का सग्रह है ।

५३८५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० ८×६ इच । भाषा–संस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—भर्तृहरिशतक (नीतिशतक) हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३८६. गुटका स० ६ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ । भाषा–हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एव शातिपाठ का सग्रह है ।

५३८७. गुटका सं० ७ । पत्र स० ११६ । आ० ६×७ इंच । ले० काल १८५८ आसोज बुदी ४ शनिवार । पूर्ण ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१–६७
२. पद– होजी म्हारो कथ चतुर दिलजानी हो	विश्वभूषण	"	६७
३. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	६८–११६

५३८८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १७६८ । दशा–सामान्य ।

विशेष—पं० धनराज ने लिखवाया था ।

५३८९ गुटका स० ९ । पत्र स० ३५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदो का संग्रह है ।

५३९०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १९५४ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. पद– जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी	×	हिन्दी	१
२. बारहभावना	दौलतराम	"	
३. आलोचनापाठ	जौहरीलाल	"	
४ दशलक्षणपूजा	भूधरदास	"	

५. पञ्चमेरु एवं नंदीश्वरपूजा	द्यानतराम	हिन्दी	२-१५
६. तीन चौबीसी के नाम व दर्शनपाठ	×	संस्कृत हिन्दी	
७ परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	"	१
८ लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराम	"	६
९ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	५-६
१० तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	
११ देवशास्त्रगुरुपूजा	×	हिन्दी	
१२ चौबीस तीर्थङ्करों की पूजा	×	"	१२१ तक

५३६१ गुटका सं० ११ । पत्र सं० २२२ । आ० १ ३/४×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७४६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ रामायण महाभारत कथा [४६ प्रश्नों का उत्तर है]	×	हिन्दी गद्य	१ १४
२ कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्त्ति	"	१५–१८

अथ वेलि लिख्यते—

दोहा— कर्मचूर व्रत वे कर, जीनवाणी तंतसार ।
नरनारि भव भंजन भरे, उतर चौरासी सु पार ॥

कीवी कुरी कुण मारंम्यो सकलकीर्त्ति नाम,
कर्म सेदय कीवो,पुणी कोसंबी बसि गाम ॥
नमणी गुरु निरग्रंथ मे सारद बसगुण पुरै ।
कहो वरत वेमि जवयु करमसेण कर्मचुरै ॥
ज्ञानावर्णं दर्स साता वेदनी मोह मंवराई ।
मर्गई जीतने पेठि होसी कहाणु कर वकस सुहाई ॥
नाम कर्म पांचमीय कुष्णे मासु येवो ।
गोत्र नीच गति पीहो चाई, मन्तराई भय मेवो ॥
चिंतामणि मुचित प्रविनाशी कर्मसेण पुणयाई ॥१॥

दोहा— एक कर्म को वेदना, भु जे है सब लोइ ।

नरनारी करि उधरे, चरण गुणसस्थान सजोई ।।१।।

अन्तिमपाठ– कवित्त—

सकलकीर्त्ति मुनि आप सुनत मिटैं संताप चौरासी मरि जाई फिर अजर अमर पद पाइये ।।

जूनी पोथी भई अक्षर दीसे नही फेरु उतारी वध छंद कवित्त वेली बनाई क गाईये ।।

चंग नेरी चाटसू केते भट्टारक भये साधा पार अडसठि जेहि कर्मचूर वरत कह्यो है वणाई ध्याइये ।।

सवत् १७४६ सोमवार ७ करकौवु कर्मचूर व्रत वैठगो अमर पद चूरी सीर सीधातम जाइये ।।

नोट—पाठ एक दम अशुद्ध है। लीपि भी विकृत है।

३. ऋषिमण्डलमन्त्र	×	संस्कृत	ले० काल १७३६
			१७-१६
४. चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	अपूर्ण २०
५. अजना री रास	धर्मभूषण	हिन्दी	२१-३४

प्रारम्भ— पहेलो रे अर्हंत पाय नमैं ।

हरे भव दुख भजन त्व भगवंत कर्म कायातना का पसौ ।

पाप ना प्रभव अति सो अत तो रास भणो इति अजना

ते तो नयम माधि न गई स्वर लोक तो सतो न सरोमणि वदीये ।।१।।

यन्नं विधाधर उपनी माय, नामे तीन वनधि सपजे ।

भार गन्ता हो भवदुग जाय, ननो न सरोमणि वंदये ।।२।।

आलो रे सुंदरी वदये, राजा हो रनन तणें घर हैय ।

दान दणो तव वन गई माम ना भोगन वर्द्धाय जे हनी ।। गनी न ... ३ ।।

[illegible] ने [illegible] अजना नो नदानसा ।

[illegible] न [illegible] ।। गनी न ४ ।।

[illegible] कुमारिगा, [illegible] कुमारी [illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।। [illegible]

अन्तिमपाठ—

बर्स विद्याधरे उपनि मात नामे नवनिधि पावसो ।
भाव करंता हो भव दुख जायसो साती म सरोमणि बैरीये ॥ ५८ ॥
इम भावे धर्मभूषण रास रत्नमाल गु णो रचि रास ।
सर्व प च मिमि मंगल थयो कहे ता रास ऊपजै रस विमास ॥
ढाल सवम केरी इम भरो कठ विना राग किम होई ।
बुधि विना ज्ञान न विसोई, गुरु विना मारग कीम पानी सी ।
दीपक विना मंदर अधकार देवभक्ति भाव विना सब हार तो ॥५९॥
रस विना स्वाद न ऊपजै तिम तिम भक्ति धर्म देव गुरु पसाव ।
क्षिमा विन सील करै दुख हाणि निर्मल भाव राखो सदा ।
केवल कलक भाजि दुख भाव कुमति विनास निर्मल भावसु ।
ते समझो सवही नरनारि, अर्हंत विना दुर्लभ सरावक अवतार ।
बुहि समता भावसु स्योपुरवास, एह करी सब मंगल करी।
इति श्री मंगलारास सती सु दरी हनुमंत प्रसादात् संपूरण ॥

स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीजगत्कीर्ति तत्पट्ट भ श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीमहेन्द्रकीर्ति तस्य भ श्रीक्षेमेन्द्रकीर्ति तस्योपदेश पुण्यकीर्तिना इत्यादि तन्मध्ये पंडित कुल्याणि सिवाधि बौराव नगरे मुकामे श्रीमहावीरचैत्यालये अमुक श्रावके सर्व बघेरवाल ज्ञात कुमिति समपात यहा श्रीसुपवनाव यात्रा निमित्त गमन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्लपक्षे आसोज बदी ३ सोमवार समद १८२ शालिवाहने १६७६ शुभमस्तु ।

६ न्हवणविधि	×	संस्कृत ले काल १८२ आसोज बदी ३	
७ छियालीसगुण	×	हिन्दी	
८	×	,, पृष्ठ ११वें पर चौबीसवें तीर्थङ्करोंके चित्र	
९. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	११-३

विशेष—पत्र ४ वें पर भी एक चित्र है स १८२ में पं कुशालचन्द ने बैराठ में प्रतिलिपि की थी ।

१ भविष्यदत्तपञ्चमीकथा	ब रायमल्ल	हिन्दी	४१-८१

रचनाकाल स १६११ पृष्ठ २ पर रेखाचित्र है काल सं १८२१ बौराव (बौराव) में कुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी । पत्र ८२ पर तीर्थङ्करों के ३ चित्र हैं ।

११ हनुमंतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी		८३–१०९
१२ बीस विरहमानपूजा	हर्षकीर्त्ति	"		११०
१३ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"		१११
१४ सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	सस्कृत		११२
१५ अभिषेकपाठ	×	"		११२
१६ रविव्रतकथा	भाउ	हिन्दी		११२–१२१
१७. चिन्तामणिलग्न	×	सस्कृत	ले० काल १८२१	१२२
१८. प्रद्युम्नकुमाररासो	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी		१२३–१५१
			र० काल १६२८ ले० काल १८११	
१९. श्रुतपूजा	×	सस्कृत		१५२
२०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"		१५३–१५६
२१ सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी		१५७–१६६
२२ पूजासग्रह	×	"		१६७–१७२
२३ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सस्कृत		१८३
२४. पाशाकेवली	×	हिन्दी		१८४–२१७
२५ पञ्चकल्याणकपाठ	रूपचन्द	"		२१७–२२२

विशेष—कई जगह पत्रो के दोनो ओर सुन्दर वेल हैं।

५२९२. गुटका स० १२ । पत्र स० १०६ । आ० १०३×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१. यज्ञ को सामग्री का व्यौरा	×	हिन्दी	१

विशेष—(अथ जागी की मौजे सिमरिया मे प्र० देवाराम नै ताकी सामा आई सम्वा १७९७ माह बुदी पूर्णिमा पुरानी पोथी मे से उतारी । पोथी जीरण होगई तब उतरी । सब चीजो का निरख भी दिया हुआ है।

२ यज्ञमहिमा	×	हिन्दी	२

विशेष—मौजे सिमरिया मे माह सुदी १५ स० १७९७ मे यज्ञ किया उसका परिचय है। सिमरिया मे चौहान वश के राजा श्रीराव थे। मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे। यज्ञाचार्य मोरेना के प० टेकचन्द थे। यह यज्ञ सात दिन तक चला था।

अन्तिमपाठ—

बस विद्याधरे वरणि भाव मामे नवनिधि पावसो ।

भाव करंता हो भव दुख भागतो साठी न सरोमणि बंदीये ।। २८ ।।

इम गावे धर्मभूषण रास रत्नमाल मुणो रचि रास ।

सर्व पंचमिणि मंगल थयो कहु ता रास ऊपजे रस विलास ।।

ज्ञान भवन केरी इम भणे कठ बिना राग किम होई ।

बुधि बिना ज्ञान नविसोई गुरु बिना मारग कीम पामी सी ।

दीपक बिना मंदर अधकार, देवभक्ति भाव बिना सब हार तो ।।२१।।

रस बिना स्वाद न ऊपजे तिम तिम भति धर्म देव गुरु पसाव ।

क्षिमा बिन सील करे कुल हाणि निर्मल भाव राखो सदा ।

केतन कलस मानि कुल भाग कुमति बिनास निर्मल मानपू ।

ते समझो सबही नरनारि अर्हंत बिना दुर्लभ सरावक अवतार ।

बुद्धि समता मावसु स्योपुरवास, एह कथी सब मंगल करी।।

इति श्री मंजनारास सती सु दरी हनुमंत प्रसावाद् संपूरण ।।

स्वस्ति श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीसकलकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्ट भ श्रीमहेन्द्रकीर्ति तस्य भ श्रीक्षेमेन्द्रकीर्ति तस्योपदेश गुणकीर्तिना इत्यादि तन्मध्ये पंडित कुस्यासि लिखामि बोराव नगरे सुथाने श्रीमहावीरचैत्यालये प्रमुक श्रावके सर्व बघेरवाल ज्ञात बुधिति समपाठ रहा श्रीवृषभनाथ यात्रा निमित्त भवन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्लपक्षे मासोज बदी १ शीतवार संवत् १८२ शालिवाहने १६७१ शुभमस्तु ।

६ न्हवणविधि	×	संस्कृत	ले काल १८२ आसोज बदी १	
७ छियालीसठाणा	×	हिन्दी		
८	×	,,	पृष्ठ ११वें पर चौबीसवें तीर्थङ्करोंके चित्र	
९. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी		११-३

विशेष—पत्र ४ वें पर भी एक चित्र है स १८२ में प खुशालचन्द ने बैराठ में प्रतिलिपि की थी।

१ भविष्यदत्तपञ्चमीकथा	ब्र रायमल्ल	हिन्दी		४१-८१

रचनाकाल स १६११ पृष्ठ १ पर रेखाचित्र है काल सं १८२१ बोराव (बोराज) में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी। पत्र ८२ पर तीर्थङ्करों के १ चित्र हैं।

सुभ आसन दिढ जोग ध्यान, वर्द्धमान भयो केवल ज्ञान ।
समोसरण रचना अति वनी, परम धरम महिमा अति तणी ॥४॥

अन्तिमभाग—
चल्यौ नगर फिरि अपने राइ, चरण सरण जिन अति सुख पाइ ।
समोसरणय पूरण भयौ, सुनत पढित पातिग गलि गयौ ॥६५॥

दोहरा—
सोरह सै अठसठि समै, माघ दसै सित पक्ष ।
गुलालब्रह्म भनि गीत गति, जसोनंदि पद सिक्ष ॥६६॥
सूरदेस हथि कतपुर, राजा वक्रम साहि ।
गुलालब्रह्म जिन धर्म्मु जय, उपमा दीजे काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत सपूर्ण ॥

६ नेमिजी को मगल — जगतभूषण के शिष्य विश्वभूषण — हिन्दी — १६-१७
रचना स० १६६८ श्रावण सुदी ८

आदिभाग—
प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ गुर हीयौ धरौ ।
सरस्वती करहु प्रणाम कवित्त जिन उच्चरौ ॥
सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति वनी ।
रची इन्द्र नै आइ सुरनि मनि बहुकनी ॥
बहु कनीय मदिर चैत्य खीयौ, देखि सुरनर हरषीयौ ।
समुद विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयौ ॥
प्रिया जा सिव देवि जानौ, रूप अमरी ऊढसा ।
राति सुदरि सैन सूती, देखि सुपनै षोडशा ॥१॥

अन्तिम भाग—
संवत् सौलह सै अठानूवा जाणीयौ ।
सावन मास प्रसिद्ध अष्टमी मानियौ ॥
गाऊ सिकदराबाद पार्श्वजिन देहुरे ।
श्रावग कीया सुजान धर्म्म सौ नेहरे ॥
धरै धर्म्म सौं नेहु अति ही दैही सबकौ दान जू ।
स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पढित मान जू ॥

३ कर्मविपाक	×	संस्कृत	१-११

विशेष—ब्रह्मा नारद संवाद में से लिया गया है। तीन अध्याय हैं।

४ आदीश्वर का समवशरण	×	हिन्दी १६६७ कार्तिक सुदी	१२-१४

आदीश्वर को समोशरण—आदिभाग—

सुर गनपति मन ध्याऊं चित चरन सरन ल्याउ।
मति मांगि देउ ऐसी मुनि मांगि तैहि जैसी ॥१॥
आदीश्वर गुण गाऊं चर साव सयु (र) पाई।
चारित्र जिनेस सोया, भरत क्षे राजु दीया ॥२॥
तजि राज होइ भिखारी जिन मौन धरत धारी।
तब आपनी कमाई भई उदय अतराई ॥३॥
मुनि भीख काज आवइ नहि भातु हाथ आवइ।
देइ कन्या सरूपा कोई रतन अति अनूपा ॥४॥

अन्तिमभाग—
रिषि सहस गुन गावइ, फल बोधि बीजु पावइ।
नर जोडिह मुख भासइ प्रभु चरन सरन राखइ ॥७१॥

दोहरा—
समोसरण जिनराजी को, गावहि जे नरनारि।
मनवंछित फल भागवई तिरि पहुचहि भवपार ॥७२॥
सोलसहु सड़सठि बरष कातिक सुदी बलिराज।
सासकोट सुभ थानवर, अवउ सिध जिनराज ॥७३॥

इति श्री आदीश्वरजी को समोसरण समाप्त ॥

५ द्वितीय समोसरण	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	१४-१६

आदिभाग—
प्रथम सुमिरि जिनराज अनंत सुख निवास संयम सिव संत
जिनवाणी सुमिरत सबु करै ज्यौ गुनठौन क्रियक सिधु चढै ॥१॥
गुन्पद सेवहु ब्रह्म गुलाल देवसास्त्र गुर मंगल माल।
इनहि सुमरि वरण्यौ सुखसार, समवसरन जैसे विस्तार ॥२॥
दीठ बुधि मन भयो करै सूरिज पद माग पायौ करै।
सुनहु भव्य मेरे परवान समोसरन को करौ बखान ॥३॥

सुभ आसन दिढ जोग ध्यान, वर्द्धमान भयो केवल ज्ञान।

समोसरण रचना अति वनी परम धरम महिमा अति तणी ॥४॥

अन्तिमभाग— चल्यौ नगर फिरि अपने राइ, चरण सरण जिन अति सुख पाइ।

समोसरणय पूरण भयौ, सुनत पढित पातिग गलि गयौ ॥६५॥

दोहरा— सोरह सैं अठसठि समै, माघ दसै सित पक्ष।

गुलालब्रह्म भनि गीत गति, जसोनंदि पद सिक्ष ॥६६॥

सूरदेस हथि कंतपुर, राजा वक्रम साहि।

गुलालब्रह्म जिन धर्म्मु जय, उपमा दीजे काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत संपूर्ण ॥

६ नेमिजी को मगल जगतभूषण के शिष्य विश्वभूषण हिन्दी १६–१७
रचना स० १६६८ श्रावण सुदी ८

आदिभाग— प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ गुर हीयौ धरौ।

सरस्वती करहु प्रणाम कवित्त जिन उच्चरौ ॥

सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति वनी।

रची इन्द्र नै आइ सुरनि मनि वहुकनी ॥

वहु कनीय मदिर चैत्य खीयौ, देखि सुरनर हरषीयौ।

समुद विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयौ ॥

प्रिया जा सिव देवि जानौ, रूप अमरी ऊडसा।

राति सुदरि सैन सूती, देखि सुपनै षोडशा ॥१॥

अन्तिम भाग— संवत् सोलह से अठानूवा जाणीयौ।

सावन मास प्रसिद्ध अष्टमी मानियौ ॥

गाऊ सिकदराबाद पार्श्वजिन देहुरे।

श्रावग कीया सुजान धर्म्म सौ नेहरे ॥

धरै धर्म्म सौं नेहु अति ही देही सबकौ दान जू।

स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पडित मान जू ॥

जगतभूषण भट्टारक पै विश्वभूषण मुनिवर ।
　　नर नारी समसचार मामै पढत पातिग निस्तरै ॥

इति नेमिनाथ जू की मगल समाप्त ॥

७ पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	हिन्दी	१७-११

आदिमाग राहुनट—

पारस जिनदेव की सुनहु चरितु मनु लाई ॥ टेक ॥
मनउ सारदा माइ, मनौ गनधर चितुलाई ।
पारस कथा सबंध कही भाषा सुखदाई ॥
जबू दक्षिण भरथ मै नगर पोदना मांझ ।
राजा श्री अरविंद जू, सुगवै सुख समाझ ॥ पारस जिन ॥
विप्र तहां एकु बसै पुत्र द्वौ राय सुधारा ।
कमठु बडौ विपरीत विसन सेवै जु अपारा ॥
लघु भैया मरुभूति सौ वसुधरि दई ता नाम ।
रति क्रीडा लेख्या रच्यौ हो कमठ नाम के धाम ॥ पारस जिन ॥
कोपु कीयौ मरुभूति कह्यौ मंत्री सौ राख्यौ ।
सीख दई नहीं गह्यौ काम रस अंतर साख्यौ ॥
कमठ विषै रस कारनै अमर भूति बांधौ जाई ।
सो मरि बन हाथी भयौ दुखिनि भई तिय माइ ॥ पारस जिन ॥

अन्तिमपाठ—

अवधि हेत करि बात सही देवनि तब जानी ।
पदमावति धरणेन्द्र आय मस्तिक पर तानी ॥
सब उपसर्ग निवारिकै पार्श्वनाथ जिनंद ।
सकल करम बर जारिकै भये मुक्ति जिनचंद ॥ पारस जिन ॥
मूलसंघ पट्ट विश्वभूषण मुनि राई ।
उत्तर बैलि पुराण रचि या बई सुभाई ॥
बसै महाजन लोग जु, दान चतुर्विधि का देत ।
पार्श्वकथा निहचै सुनौ हो मोक्षि प्राप्ति फल लेत ॥
पारस जिनदेव को सुनहु चरितु मन लाइ ॥२५॥

इति श्री पार्श्वनाथजी को चरितु संपूर्ण ॥

८ वीरजिरणदगीत	भगौतीदास	हिन्दी	१६-२०
६. सम्यग्ज्ञानी धमाल	"	"	२०-२१
१० स्थूलभद्रशीलरासो	×	"	२१-२२
११. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२२-२३
१२ "	द्यानतराय	"	२३
१३ "	×	सस्कृत	२३
१४. पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	२४
१५ "	पद्मनन्दि	"	२४
१६. हनुमतकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी र० काल १६१६ ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३	२५-७५
१७. सीताचरित्र	×	हिन्दी अपूर्णं	७७-१०६

५३६३. गुटका स० १३। पत्र सं० ३७। आ० ७३/४×१० इञ्च। ले० काल स० १८६२ आसोज बुदी-७। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का सग्रह है—

१ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	पूर्ण
२ लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनाथस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	सस्कृत	"
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	"
४ भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतु ग	"	"
५. देवपूजा	×	हिन्दी सस्कृत	"
६. सिद्धपूजा	×	"	"
७ दशलक्षणपूजा जयमाल	×	सस्कृत	"
८. षोडशकारणपूजा	×	"	"
६. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	"
१०. शातिपाठ	×	सस्कृत	"
११. सहस्रनामस्तोत्र	प० आशाधर	"	"
१२. पञ्चमेरुपूजा	भूधरयति	हिन्दी	"

१३ अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	"
१४ अभिषेकविधि	×	"	"
१५ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	"
१६ पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"	"
१७ अनन्तपूजा	×	संस्कृत	"

विशेष—यह पुस्तक सुखलालजी बज के पुत्र मनसुख के पढने के लिए लिखी गई थी।

५३६४ गुटका नं० १४ । पत्र सं ११ । आ ४×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—शारदाष्टक (हिन्दी) तथा ८४ आसादना के नाम हैं।

५३६५ गुटका नं० १५ । पत्र सं ४३ । आ ५×३½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले काल १८९ । पूर्ण

विशेष—पाठ प्रमुख हैं—

१. म्हारयोजी नेमजीसू जाय म्हेतो थांही संग चालां	×	हिन्दी	१
२ हो मुनिवर कब मिलि है उपगारी	भागचन्द	"	१–२
३ ध्यावांला हो प्रभु भावसेंजी	×	"	२ ८
४ प्रभु थांकीजी मूरत मनको मोहियो	बख्तकपूर	"	८-९
५. गरज गरज गहै गवरसे देखो माई	×	"	९
६ मान लीज्यो म्हारी अरज रिषभ जिनजी	×	"	९
७ तुम सी रमा विचारी तजि	×	"	११
८ म्हारयोजी नेमिजीसू जाय म्हे तो	×	"	१२
९. मुझे तारीजी भाई साहबां	×	"	१३
१ संबोधपञ्चासिकाभाषा	बुधजन	"	१३–२
११ म्हारयोजी नेमिजीसू जाय म्हेतो थांकही समचालां	रामचन्द	"	२१–२३
१२ मान लीज्यो म्हारी श्याम रिषभ जिनजी	×	"	२३
१३ तजिके गये पीया हमको तुमसी रमा विचारी	×	"	२३–२४
१४ म्हे ध्यावांला हो प्रभु भावसु	×	"	२४
१५ साधु दिगंबर नगन उर पर संबर भूषणधारी	×	"	२५

१६ म्हे निशिदिन ध्यावाला	बुधजन	”	२६
१७. दर्शनपाठ	×	”	२६–२७
१८. कवित्त	×	”	२८–२६
१६ बारहभावना	नवल	”	३३–३५
२०. विनती	×	”	३६–३७
२१. बारहभावना	दलजी	”	३८–३६

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २२६ । आ० ५½×५ इञ्च । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाओं को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

१ वृहद्कल्याण	×	हिन्दी	३–१२
२ मुक्तावलिव्रत की तिथिया	×	”	१२
३ झाडा देने का मन्त्र	×	”	१२–१६
४ राजा प्रजाको वशमे करनेका मन्त्र	×	”	१७–१८
५. मुनीश्वरों की जयमाल	ब्रह्म जिनदास	”	२३–२४
६ दश प्रकार के ब्राह्मण	×	सस्कृत	२५–२६
७ सूतकवर्णन (यशस्तिलक मे)	सोमदेव	”	३०–३१
८ गृहप्रवेशविचार	×	”	३२
६. भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी सस्कृत	३३–३५
१०. दीपावतारमन्त्र	×	”	३६
११ काले बिच्छुके डङ्क उतारने का मत्र	×	हिन्दी	३८

नोट—यहा से फिर सख्या प्रारम्भ होती है ।

१२ स्वाध्याय	×	सस्कृत	१–३
१३ तत्वार्थसूत्र	उमास्वाति	”	४ ३
१४ प्रतिक्रमणपाठ	×	”	१६–३७
१५ भक्तिपाठ (नाम)	×	”	३७–५२

१६ बृहत्स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	"	७१–८६
१७ बलरसारण पूर्वावलि	×	"	८६–६३
१८ श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६४–१०७
१६ श्रुतस्कंध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	१०७–११८
२० श्रुतावतार	श्रीधर	संस्कृत गद्य	११८–१२३
२१ भावना	×	प्राकृत	१२३–१३२
२२ लघु प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	१३२–१४६
२३ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	"	१४६–१५५
२४ वर्द्धमान श्री जयमाला	×	संस्कृत	१५५–१५६
२५ आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	१५६–१६७
२६ तत्त्वार्थसूत्र	×	"	१६८–१७२
२७ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	१७२–१७६
२८ भूपालचौबीसी	भूपालकवि	"	१७७–१८
२६ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१८ –१८४
३० विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१८५–१८६
३१ नाममालायमाला	पं० रइधू	अपभ्रंश	१८६–१६५
३२ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१६६–२ ३
३३ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	२ ३–२०४
३४ म चालिंदइ	×	"	२०५–२११

५ सद्दृष्टि	×	संस्कृत	६–११
६. मन्त्र	×	”	१४
७. उपवास के दशभेद	×	”	१५
८. फुटकर ज्योतिष पद्य	×	”	१५
९. अढाई का ब्यौरा	×	”	१८
१०. फुटकर पाठ	×	”	१८-२०
११. पाठसंग्रह	×	संस्कृत प्राकृत	२१–२८
		गोमट्टसार, समयसार, द्रव्यसग्रह आदि मे संगृहीत पाठ हैं।	
१२. प्रश्नोत्तररत्नमाला	अमोघवर्ष	संस्कृत	२४–२५
१३. सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिषेणाचार्य	”	२६–२८
१४. गुणस्थानव्याख्या	×	”	२९–३१
		प्रवचनसार तथा टीका आदि से संगृहीत	
१५. छातीसुख की औषधि का नुसखा	×	हिन्दी	३२
१६ जयमाल (मालारोहण)	×	अपभ्रंश	३२–३५
१७ उपवासविधान	×	हिन्दी	३५–३६
१८. पाठसंग्रह	×	प्राकृत	३६–३७
१९ अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वात्रिंशिका	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत मन्त्र आदि भी है	३८–४०
२० गर्भ कल्याणक क्रिया मे भक्तिया	×	हिन्दी	४१
२१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	४२–४९
२२. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	”	४९–५२
२३. यतिभावनाष्टक	आ० कुदकुद	”	५२
२४ भावनाद्वात्रिंशतिका	आ० अमितगति	”	५३–५४
२५. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५५–५८
२६ सबोधपचासिका	×	अपभ्रंश	५९–६०
२७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६१–६७
२८. प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६७–८८
२९ भक्तिस्तोत्र (आचार्यभक्ति तक)	×	संस्कृत	८९–१०७

१६ वृहत्स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	"	७१–८६
१७ वसन्तकारयण दुर्गाविधि	×	"	८६–६१
१८ श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६४–१०७
१९. श्रुतस्कध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	१०७–११८
२० श्रुतावतार	श्रीधर	संस्कृत गद्य	११८–१२१
२१ आलोचना	×	प्राकृत	१२१–१३२
२२ लघु प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	१३२–१४६
२३ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	"	१४६–१५५
२४ चौबीस जिन की जयमाला	×	संस्कृत	१५५–१६६
२५ आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	१६६–१६७
२६ तत्त्वार्थभावासिका	×	"	१६८–१७२
२७ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	१७२–१७६
२८ भूपालचौबीसी	भूपालकवि	"	१७७–१८०
२९ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१८० –१८४
३० विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१८५–१८६
३१ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	पं. रइधू	अपभ्रंश	१८६–१६६
३२ कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१६६–२०१
३३ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	२०१–२०४
३४ सन्मतिसंग्रह	×	"	२०५–२२६

प्रशस्ति—संवत् १७२१ वर्षे शाके १५८६ प्रवर्तमाने कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा १ तिथौ मङ्गलवारे आचार्य श्री चारुकीर्ति पं. गंगाराम पठनार्थ बावमार्थ।

५३१७ गुटका सं० १७ । पत्र सं० ४७ । आ० ७×५ इञ्च ।

१ प्रधानसमितिस्वरूप	×	प्राकृत	संस्कृत व्याख्या सहित १–३
२ नमस्कारस्तोत्रमन्त्र	×	संस्कृत	४
३ बंधस्थिति	×	"	मूलाचार से उद्धृत ५–६
४ स्वरविचार	×	"	७

५६. औषधियो के नुसखे	×	हिन्दी	२११
५७ संग्रहसूक्ति	×	संस्कृत	२१२
५८ दीक्षापटल	×	"	२१३
५९. पार्श्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	×	"	२१४
६०. दीक्षा पटल	×	"	२१८
६१ सरस्वतीस्तोत्र	×	"	२२३
६२ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	२२३-१२४
६३ सुभापितसग्रह	×	"	२२५-२२८
६४ तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	२३१-२३५
६५ योगसार	योगचन्द	सस्कृत	२३१-२३५
६६. द्रव्यसग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	२३६-२३७
६७ श्रावकप्रतिक्रमण	×	सस्कृत	२३७-२४५
६८. भावनापद्धति	पद्मनन्दि	"	२४६-२४७
६९ रत्नत्रयपूजा	"	"	२४८-२५९
७० कल्याणमाला	प० आशाधर	"	२५९-२६०
७१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	२६०-२६३
७२ समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	२६४-२८५
७३ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्र श	२८६-३०३
७४ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सस्कृत	३०४-३०६
७५ परमेष्ठियो के गुण व अतिशय	×	प्राकृत	३०७
७६ स्तोत्र	पद्मनन्दि	सस्कृत	३०८-३०९
७७ प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	"	३१०-३२१
७८ देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	"	३२२-३२७
७९. अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	"	३२८-३२९
८० सुभाषित	×	"	३३०-३३१
८१. जिनगुणस्तवन	×	"	३३१-३३२

१० स्वयंभूस्तोत्र	आ समन्तभद्र	संस्कृत	१ ४-११८
११ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११८
१२ दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	"	११६
१३ सुप्रभातस्तवन	×	"	११६-१२१
१४ दर्शनस्तोत्र	×	प्राकृत	१२१
१५ बलात्कार गुरावली	×	संस्कृत	१२१-२४
१६ परमात्मस्तोत्र	पूज्यपाद	"	१२४-२५
१७ नाममाला	धनञ्जय	"	१२५-१३७
१८ वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१३८
१६ करुणाष्टकस्तोत्र	"	"	१३६
४ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१३६-१४१
४१ समयसारगाथा	आ कुन्दकुन्द	"	१४१
४२ अर्हत्पूजाविधान	×	"	१४१-१४३
४३ स्वस्त्ययनविधान	×	"	१४४-१५६
४४ रत्नत्रयपूजा	×	"	१५६-१६२
४५ जिनरतपन	×	"	१६२-१६८
४६ कलिकुण्डपूजा	×	"	१६८-१७१
४७ षोडशकारणपूजा	×	"	१७२-१७३
४८ दशलक्षणपूजा	×	"	१७३-१७५
४६ सिद्धस्तुति	×	"	१७५-१७६
५ सिद्धपूजा	×	"	१७६-१८
५१ सुभमालिका	श्रीधर	"	१८२-१६२
५२ सारसमुच्चय	कुलभद्र	"	१६२-२ १
५३ जातिवर्णन	×	" ५८ पद्य ७७ जाति	२ ७-२ ८
५४ पुण्याहवाचन	×	"	२ ६
५५ षोडशकारणपूजा	×	"	२१

८२ क्रियाकलाप	×	"	११२-११४
८३ समवशरणपद्धति	×	अपभ्रंश	११४-११७
८४ स्तोत्र	सदमीचन्द्रदेव	प्राकृत	११६-११९
८५ स्त्रीशृङ्गारवर्णन	×	संस्कृत	११६-१४१
८६ चतुर्विंशतिस्तोत्र	माघनन्दि	"	१४२-१४३
८७ पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	"	१४४
८८ मृत्युमहोत्सव	×	"	१४५
८९ प्रमलप्वंठीवर्णन (मन्त्र सहित)	×	"	१४६-१४८
९ आयुर्वेद के नुसखे	×	"	१४९
९१ पाठसंग्रह	×	"	१५ -१५४
९२ आयुर्वेद नुसखा संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी योगसत वैद्यक से संगृहीत	१५७-१७७
९३ अन्य पाठ	×	"	१८८-४ ७

इसके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके में और हैं।

१ कल्याण कथा २ मुनिश्वरोंकी जयमाल (ब्रह्म जिनदास) ३. दसप्रकार विप्र (मत्स्यपुराणेषु कथिते)
४ सूतकविधि (यशस्तिलक चम्पू से) ५. वृहविनलक्षण ६ दीपावतारमन्त्र

५३९८ गुटका सं० ९८। पत्र सं ५५। आ ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले काल सं १८ ४ श्रावण बुदी १२। पूर्ण। दशा-सामान्य।

१ जिनराज महिमास्तोत्र	×	हिन्दी	१-३
२ सतसई	बिहारीलाल	" ले काल १७७४ फागुण बुदी १	१-४८
३ रसकौतुक राज सभा रञ्जन	गङ्गादास	" " १८ ४ सावण बुदी १२	४९-५५

दोहा— अथ रस कौतुक लिख्यते—

गंगाधर सेवहु सदा गाहक रसिक प्रवीन।
राज सभा रञ्जन कहत मन हुलास रस लीन ॥१॥
संपति रति गैरोग तन विद्या सुघन सुगेह।
जो दिन जाय मनंद सौ बीतत भो फल पेह ॥२॥

सुदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।

सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥

हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।

ज्या हाथा रै वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ॥४॥

तरसै हू परसै नही, नौढा रहत उदास ।

जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हालै ग्रास ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहो, नाहुरि मिलै बिनु नेह ।

औसरि चुक्यौ मेहरा, काई वरसि करैह ॥६८॥

मुदरी लै छलस्यौ कह्यौ, श्री हौं फिर ना पैंद ।

काम सरै दुख वीसरै, वैरी हुवो वैद ॥६६॥

मानवतो निस दिन हरै, बोलत खरीबदास ।

नदी किनारै रूखडो, जब तब होइ विनास ॥१००॥

सिव सुखदायक प्रानपति, जरो ग्रान कौ भोग ।

नासै देसी रूखडी, ना परदेसी लोग ॥१०१॥

गता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।

राज सभा हहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रबध प्रभाव । श्री मितो सावरण वदि १२ बुधवार सवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखत माणिकचन्द वज वाचै जीहेने जिसा माफिक वच्या ।

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र स० ३६ । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १६३० श्राषाढ सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—रसालकुंवर की चौपई–नखरू कवि कृत है ।

५४०० गुटका स० २० । पत्र स० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल स० १६६५ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महौदधि है ।

८२ क्रियाकलाप	×	”	११२–११४
८३ समवशरणपद्धति	×	अपभ्रंश	११४–११७
८४ स्तोत्र	सकलचन्द्रदेव	प्राकृत	११५–११८
८५ स्त्रीशृङ्गारवर्णन	×	संस्कृत	११६–१४१
८६ चतुर्विंशतिस्तोत्र	माघनन्दि	”	१४२–१४३
८७ पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	”	१४४
८८ मृत्युमहोत्सव	×	”	१४५
८९ मनस्तर्गठीवर्णन (मन्त्र सहित)	×	”	१४६–१४८
९ आयुर्वेद के नुसखे	×	”	१४९
९१ पाठसंग्रह	×	”	१५ –१५४
९२ आयुर्वेद नुसखा संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी योगचन्द वैद्यक से संगृहीत	१५७–१८७
९३ अन्य पाठ	×	”	१८८–४ ७

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके में और हैं।

१ कल्याण मन्दा २ मुनिश्वरोंकी जयमाल (ब्रह्म जिनदास) ३ बधप्रकार विम्र (मत्स्यपुराणेषु कथिते)
४ सूतकविधि (यशस्तिलक चम्पू से) ५ ग्रहविवमलक्षण ६ दीपावतारमन्त्र

५३१८ गुटका सं० १८। पत्र सं ५५। आ ७×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले काल सं १८ ४ श्रावण बुदी १२। पूर्ण। दशा–सामान्य।

१ जिनराज महिमस्तोत्र	×	हिन्दी	१–३
२ सतसई	बिहारीलाल	” ले काल १७७४ फागुण बुदी १	१–४८
३ रसकौतुक राज सभा रञ्जन	गङ्गादास	” ” १८ ४ सावण बुदी १२	४९–५५

दोहा—   अथ रस कौतुक लिख्यते—

नंमाधर सेवहु सदा नाइक रसिक प्रवीन।
राज सभा रंजन कहत मन हुलास रस लीन ॥१॥
संपति रति नैरोग तन विद्या सुमन सुगेह।
जो बिन काम सनेह सौ जीवन को फल ऐह ॥२॥

सुदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
ज्या हाया रे वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ॥४॥
तरसै हू परसै नही, नौढा रहत उदास ।
जे सर सूकै भादवै, की सी उन्हालै ग्रास ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नही, नाहुरि मिलै विनु नेह ।
ग्रौसरि चुक्यौ मेहरा, काई वरसि करेह ॥६८॥
मुदरी लै छलस्यौ कह्यौ, ग्रौ हौं फिर ना पैंद ।
काम सरै दुख वीसरै, वैरी हुवो वैद ॥६६॥
मानवती निस दिन हरै, वोलत खरीवदाम ।
नदी किनारै रूखडो, जव तव होइ विनास ॥१००॥
सिव सुखदायक प्रानपति, जरो ग्रान कौ भोग ।
नासै देसी रूखडो, ना परदेसी लोग ॥१०१॥
गता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।
राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रवध प्रभाव । श्री मिती सावरण वदि १२ वुधवार सवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखत माणिकचन्द वज वाचै जीहेने जिसा माफिक वच्या ।

५३६६. गुटका स० १६ । पत्र स० ३६ । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १६३० ग्रापाढ सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—रसालकुवर की चौपई–नखरू कवि कृत है ।

५४०० गुटका सं० २० । पत्र स० ६८ । ग्रा० ६×३ इञ्च । ले० काल स० १६६५ ज्येष्ठ वुदी १२ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महोदधि है ।

५४१ गुटका सं० २१। पत्र सं० ११६। आ० ६×५ इञ्च। पूर्ण। दशा–सामान्य।

१ सामायिकपाठ	×	संस्कृत प्राकृत		१–२४
२ सिद्ध भक्ति आदि संग्रह	×	प्राकृत		२५–७
३ समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत		७२
४ सामायिकपाठ	×	प्राकृत		७३–८१
५ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत		८२–८६
६ पार्श्वनाथ का स्तोत्र	×	"		६७–१
७ चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	"		१ १ १४६
८ पञ्चस्तोत्र	×	"		१४७–१७
९ जिनवरस्तोत्र	×	"		१७ २
१ मुनीश्वरों की जयमाल	×	"		२ १–२५
११ सकलीकरणविधान	×	"		२५१–१
१२ जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी पद्य	पद्य सं० ४८	१ १–८

आदिभाग—

जिनवर चुवीसइ नमि भागु पाय नमी कहुं भवहं विचार।

सांभिलइ सुणउ ये सब ॥१॥

यशश्चय राजा पाला मणीइ, मगर भूमि माइ धरि सुणीइ।

श्रीधर देवामि देव ॥२॥

मुनिराय सातयइ भवि जाणु मच्छुतेन्द्र सोमम वखाणु।

वज्रनाभि चक्रेश ॥३॥

तप करि सर्वारथ सिद्धि पामी भव मध्यारम वृषभह स्वामी।

मुगितई ध्या जगमाह ॥४॥

विमलवाहना राजा व र जांगु पंचानुत्तरि महमिन्द्र सुभाणु।

इवं चवजिन परमपद पास्यु ॥५॥

विमल वाहन राजा भरि जांगु पंचानुत्तरि महमिन्द्र वखाणु।

अजित मनर पद पास्यु ॥६॥

विमल वाहन राजा धरि मुणीइ, प्रथमग्रीवि ग्रहमिद्र सुभणीइ ।
शभव जिन अवतार ।।७।।

अन्तिमभाग— आदिनाथ अग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।
शान्तिनाथ भवपार ।।४५।।

नमिनाथ भवदशा तम्हे जाणु , पार्श्वनाथ भव दसइ वखाणु ।
महावीर भव तेत्रीसइ ।।४६।।

अजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर हिइ धरीजई ।
त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ।।४७।।

जिन चुवीस भवातर सारो, भणता सुणता पुण्य अपारो ।
श्री विमलेन्द्रकीर्त्ति इम बोलइ ।।४८।।

इति जिन चुवीस भवान्तर रास समाप्ता ।।

१३. मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०८–३१०
१४ नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	सस्कृत	३११–१३
१५ पद–जीवारे जिणवर नाम भजै	×	हिन्दी	३१४–१५
१६ पद-जीया प्रभु न सुमरचो रे	×	"	३१६

५४०२. गुटका स० २२ । पत्र सं० १५४ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–भजन । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१ नेमि गुण गाऊ वाछित पाऊ	महीचन्द सूरि	हिन्दी	१
	बाय नगर मे स० १८८२ मे प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।		
२ पार्श्वनाथजी की निशाणी	हर्ष	हिन्दी	१–६
३ रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	"	६
४ सुख कारण सुमरो	×	"	७
५ कर जोर रे जीवा जिनजी	प० फतेहचन्द	"	८
६ चरण शरण अब आइयो	"	"	८
७ रुलत फिरचो अनादिडो रे जीवा	"	"	९

८	आदम जाय मरणाम	फतेहचन्द	हिन्दी	र काल सं० १८४	६
९	दयाम बुहेलो की	,,	,,		१
१०	उग्रसेन घर बारणे की	,,	,,		११
११	बारीजी जिनंदजी बारी	,,	,,		१२
१२	आमम मरण का	,,	,,		१३
१३	तुम जाय मनाओ	,,	,,		१३
१४	मन स्यू नेमि जिनंदा	,,	,,		१४
१५	राज ऋषभ चरण नित वंदिये	,,	,,		१५
१६	कर्म भरमाये	,,	,,		१६
१७	प्रभुजी थांके सरणे माया	,,	,,		१७
१८	पार उतारो जिनजी	,,	,,		१७
१९	थांकी सांवरी मूरति छवि प्यारी	,,	,,		१८
२	तुम जाय मनाओ	,,	,,	अपूर्ण	१८
२१	जिन चरणां चित्तलाओ	,,	,,		१९
२२	म्हारो मन साध्योजी	,,	,,		१९
२३	चक्रम जीव चरे	नेमीचन्द	,,		२
२४	मो मनरा प्यारा	सुखदेव	,,		२१
२५	आठ मवांरो बाहलो	खेमचन्द	,,		२२
२६	समदविजयजीरो लाडुराम	,,	,,		२३
२७	नाभिजी के नन्दन	मनसाराम	,,		२३
२८	त्रिभुवन गुरु स्वामी	भूधरदास	,,		२४
२९	नामिराय मोरा देवी	विजयकीर्ति	,,		२५
३	बारि २ हो बोमांजी	जीवणराम	,,		२६
३१	श्री च्यतामणि प्रभू पास	सदामानद	,,		२७
३२	परम महा उत्कृष्ट आदि गुर	मनैराम	,,		२७
३३	थे प्रभु मेरे उर बसो	भूधरदास	,,		२९
३४	थारी जिन मुखनं जिनवम	विनोदकीर्ति	,,		३

३५ श्रीजिनराय की प्रतिमा वदी जाय	त्रिलोककीर्त्ति	हिन्दी		३१
३६. होजी थाकी सावली सूरत	प० फतेहचन्द	"		३२
३७. कवही मिलसी हो मुनिवर	×	"		३३
३८. नेमीसुर गुरु सरस्वती	सूरजमल	"	र० काल स० १७८४	३३
३९. श्री जिन तुमसे वीनऊं	अजयराज	"		३५
४०. समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	,		३५
४१ शभुजारो वासी प्यारो	नथविमल	"		३६
४२. मन्दिर आछाला	×	"		३६
४३ घ्यान धरयाजी मुनिवर	जिनदास	"		३७
४४ ज्यारे सोभै राजि	निर्मल	"		३८
४५ केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"		३९
४६. समकित धारी सहलडीजी	पुरुषोत्तम	"		४०
४७. अवगति मुक्ति नही छै रे	रामचन्द्र	"		४१
४८. वधावा	"	"		४२
४९. श्रीमदरजी सुणज्यो मोरी वीनती	गुणचन्द्र	"		४३
५० करकसारी वीनती	भगोसाह	"		४४–४५
		सूआ नगर मे स० १८२६ मे रचना हुई थी।		
५१. उपदेशबावनी	×	हिन्दी		४५–६१
५२. जैनबद्री देशकी पत्री	मजलसराय	"	स० १८२१	६२–६६
५३ ८५ प्रकार के मूर्खो के भेद	×	"		६७–६९
५४ रागमाला	×	"	३६ रागनियो के नाम हैं	७०
५५. प्रात भयो सुमरदेव	जगतरामगोदीका	"	राग भैरू	७०
५६. चलि २ हो भवि दर्शन काजै	"	"		७१
५७. देवो जिनराज देव सेव	"	"		७२
५८. महावीर जिन मुक्ति पधारे	"	"		७२
५९. हमरैतो प्रभु सुरति	"	"		७३

८६ देखि प्रभु दरस कौण	फतेहचद	हिन्दी	८३
८७. प्रभु नेमका भजन करि	बखतराम	"	८३
८८ आजि उदै घर सपदा	खेमचन्द	"	८४
८९. भज श्री ऋषभ जिनद	शोभाचन्द	"	८४
९० मेरे तो योही चाव है	×	"	८४
९१. मुनिसुव्रत जिनराज को	भानुकीर्त्ति	"	८४
९२. मारे प्रभु सू प्रीति लगी	दीपचन्द	"	८४
९३ शीतल मगादिक जल	विजयकीर्त्ति	"	८५
९४ तुम आतम गुण जानि	बनारसीदास	"	८५
९५ सब स्वारथ के मीत है	×	"	८५
९६. तुम जिन अटके रे मन	श्रीभूषण	"	८५
९७. कहा रे अज्ञानी जीवकूं	×	"	८६
९८. जिन नाम सुमर मन बावरे	द्यानतराय	"	८६
९९ सहस राम रस पीजिये	रामदास	"	८६
१०० सुनि मेरी मनसा मालणी	×	"	८६
१०१ वो साधु ससार मे	×	"	८७
१०२ जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"	८७
१०३. इणविधि देव अदेव की मुद्रा लखि लीजै	×	"	८७
१०४ विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवरकी	लालचद	"	८८
१०५ काया बाडी काठकी सीचत सूके आप	मुनिपद्मतिलक	"	८८
१०६ ऐसे क्यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०७ ऐसे यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०८ ऐसे यो प्रभु पाइये सुनि पडित प्राणी	×	"	९०
१०९ मेटो विथा हमारी	नयनसुख	"	९०
११० प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हरखचन्द	"	९०
१११ रे मन विषया भूलियो	भानुकीर्त्ति	"	९१

६	मौरिपनजी को ध्यान धरा	जगतराम गोदीका	हिन्दी		७४
६१	प्रात प्रथम ही थपो	"	"		७४
६२	जागे श्री नेमिकुमार	"	"	राग रामकली	७४
६३	प्रभु के दर्शन को मैं आया	"	"		७५
६४	गुरुजी भ्रम रोग मिटावे	"	"		७५
६५	मून कंवरी नेमि पढ़ावे	"	"		७५
६६	सिवा तू आमत क्यों नहि रे	"	"		७६
६७	उठो मेरे प्राणनको पियारो	"	"		७६
६	राखोजी जिनराज सरन	"	"		७६
६६	जिनजी स मेरी लगन लगी	"	"		७६
७	सुनि हो मरज तेरे पाय परो	"	"		७७
७१	मेरी कौन गति होसी	"	"		७७
७२	देखोरी नेम कैसी रिधि पाई	"	"		७८
७३	पाजि बधाई राजा नाभि के	"	"		७८
७४	बीतराम नाम सुमरि	मुनि विजयकीर्ति	"		७९
७५	या नतम सब बुद्धि गई	बनारसीदास	"		७९
७६	इस नगरी में किस विध रहना	बनारसीदास	"		७९
७७	मैं पाये तुम त्रिभुवन राय	हरीसिंह	"		८
७८	स्यामभ्रमित संसव हरगा	म विजयकीर्ति	"		८
७९	उठो तेरो मुख देखू	बखतोवर	"		८
८	देखोरी पारश्वरस्वामी कैसा ध्यान लगाया है	कुशालचंद	-		८१
८१	जै जै जै श्री जिनराज	लालचन्द	"		८१
८२	प्रभुजी तिहारी कृपा	हरीसिंह	"		८१
८३	समकि २ तुम तामिक वि वा ना	रामभगत	"		८२
८४	विषय त्याग तुम कारज लागो	नवल	"		८२
८५	छवि जिन देखी देवकी	फतेहचन्द	"		८२

८६ देखि प्रभु दरस कौण	फतेहचद	हिन्दी	८३
८७. प्रभु नेमका भजन करि	बखतराम	"	८३
८८ आजि उदै घर सपदा	खेमचन्द	"	८४
८९. भज श्री ऋषभ जिनद	शोभाचन्द	"	८४
९० मेरे तो योही चाव है	×	"	८४
९१. मुनिसुव्रत जिनराज को	भानुकीर्त्ति	"	८४
९२. मारे प्रभु सू प्रीति लगी	दीपचन्द	"	८४
९३ शीतल गगादिक जल	विजयकीर्त्ति	"	८५
९४ तुम आतम गुण जानि	बनारसीदास	"	८५
९५ सब स्वारथ के मीत है	×	"	८५
९६. तुम जिन अटके रे मन	श्रीभूषण	"	८५
९७. कहा रे अज्ञानी जीवकूं	×	"	८६
९८. जिन नाम सुमर मन बावरे	द्यानतराय	"	८६
९९ सहस राम रस पीजिये	रामदास	"	८६
१०० सुनि मेरी मनसा मालणी	×	"	८६
१०१ वो साधु ससार मे	×	"	८७
१०२ जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"	८७
१०३. इणविधि देव अदेव की मुद्रा लखि लीजै	×	"	८७
१०४ विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवरकी	लालचद	"	८८
१०५ काया वाडी काठकी सीचत सूके आप	मुनिपद्मतिलक	"	८८
१०६ ऐसे क्यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०७ ऐसे यो प्रभु पाइये	×	"	८९
१०८ ऐमे यो प्रभु पाइये सुनि पडित प्राणी	×	"	९०
१०९ मेटो विथा हमारी	नयनसुख	"	९०
११० प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हरखचन्द	"	९०
१११. रे मन विषया भूलियो	भानुकीर्त्ति	"	९१

११२ सुमरन ही में त्यारैं	द्यानतराम	हिन्दी	६१
११३ मन में जैनधर्म को सरणौ	×	"	६१
११४ बैठे मध्यस्थ भूपाल	द्यानतराम	"	६१
११५. प्रभु सुंदर मूरत पार्श्व की	×	"	६२
११६ उठि संवारै कीजिये वरणन	×	"	६२
११७ कौन कुमारग परी रे मना तेरी	×	"	६२
११८ राम भरथ सी कहै सुभाय	द्यानतराम	"	६३
११९ कहै भरतजी सुनि हो राम	"	"	६३
१२ मूरति कैसे राखें	जगतराम	"	६३
१२१ देखो सखि कौन है नेम कुमार	विजयकीर्त्ति	"	६३
१२२ जिनवरजीसू प्रीति करी री	"	"	६४
१२३ मोर ही आये प्रभु दर्शन को	हरखचन्द	"	६४
१२४ जिनेसुरदेव आये करण तुम सेव	जगतराम	"	६४
१२५ ज्यौं बने त्यौं तारि मोकू	गुलाबकृष्ण	"	६४
१२६ हमारी बारि भी नेमिकुमार	×	"	६४
१२७ प्रभु रङ्ग राचे कमी मई	×	"	६५
१२८ एरी चलो प्रभुको दर्श करा	जगतराम	"	६५
१२९ नैना मेरै दर्शन है सुभाय	×	"	६५
१३ सामी साम्ही प्रीति तू साभै	×	"	६५
१३१ तैं तो मेरी सुधि हू न लई	×	"	६५
१३२ मानों मैं तो चिप लिधि माई	×	"	६६
१३३ आलीयै तो प्यारी तेरै मनकी महारानी	विजयकीर्ति	"	६६
१३४ नमन नबे मेरै नयन बने	×	"	६६
१३५. मुझरौं महरि करी महाराज	विजयकीर्ति	"	६६
१३६ चेतन चेत निज घट मांहि	"	"	६७
१३७. पिय बिन बस छिन परम विहाल	"	"	६७

१३८. अजित जिन सरण तुम्हारी	भानुकीर्त्ति	हिन्दी	९७
१३९ तेरी मूरति रूप बनी	रूपचन्द	,,	९७
१४०. अथिर नरभव जागिरे	विजयकीर्त्ति	,,	९८
१४१. हम हैं श्रीमहावीर	,,	,,	९८
१४२. भलेभल आसकली मुझ आज	,,	,,	९८
१४३ कहा लो दाम तेरी पूज करे	,,	,,	९८
१४४. आज ऋषभ घरि जावे	,,	,,	९९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊ	,,	,,	९९
१४६. जागो जागोजी जागो	,,	,,	९९
१४७ प्रात समै उठि जिन नाम लीजे	हर्षचन्द	,,	९९
१४८. ऐसे जिनवर मे मेरे मन विललायो	अनन्तकीर्त्ति	,,	१००
१४९. आयो सरण तुम्हारी	×	,,	,,
१५० सरण तिहारी आयो प्रभु मैं	अखयराम	,,	,,
१५१. वीस तीर्थङ्कर प्रात सभारो	विजयकीर्त्ति	,,	१०१
१५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	द्यानतराय	,,	,,
१५३. म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	बनारसीदास	,,	,,
१५४. हू सरणागत तोरी रे	×	,,	,,
१५५ प्रभु मेरे देखत आनन्द भये	जगतराम	,,	१०२
१५६. जीवडा तू जागिनै प्यारा समकित महलमे	हरीसिंह	,,	,,
१५७ घोर घटाकरि आयोरी जलधर	जयकीर्त्ति	,,	,,
१५८. कौन दिवासू आयो रे वनचर	×	,,	,,
१५९. सुमति जिनद गुणमाला	गुणचन्द	,,	१०३
१६०. जिन बादल चढि आयो हो जगमें	,,	,,	,,
१६१. प्रभु हम चरणन सरन करी	ऋषभहरी	,,	,,
१६२ दिन २ देही होत पुरानी	जनमल	,,	,,
१६३. सुगुरु मेरे वरसत ज्ञान झरी	हरखचन्द	,,	१०४

१६४	क्या सोचत मति भारी रे मन	धानतराय	हिन्दी	१०४
१६५.	समकित उत्तम भाई जगतमें	"	"	"
१६६	रे मेरे घटज्ञान बनागम छायो	"	"	१ ५
१६७	ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन	"	"	"
१६८	हो परमगुरु बरसत ज्ञानझरी	"	"	"
१६९	उप ।। । जिन धर्म को मेम	वेवसेन	"	"
१७०	मेरे मन तुम है प्रभु ते बरस्यो	रूपकीर्ति	"	१ ६
१७१	बलिहारी खुदा क बन्दे	वालि मोहमद	"	"
१७२	मैं तो तेरी आज महिमा जानी	भूधरदास	"	"
१७३	दिखारी आज नेमीसुर मुनि	×	"	"
१७४	म्हारी मनुं वसु बहुत न भावै	धानतराय	"	१ ७
१७५	रे मन करि सदा सतोष	बनारसीदास	"	"
१७६	मेरी २ करतां जनम गया रे	बरचन्द	"	"
१७७	देह बुढानी रे मै जानी	विजयकीर्ति	"	"
१७८	सायो म ग्या सुमति सवेसी	बनारसीदास	"	१ ८
१७९	तनिक जिया जाग	विजयकीर्ति	"	"
१८०	तन धन जोबन मान जगत म	×	"	"
१८१	ऐसा बन मे ठाढा वीर	भूधरदास	"	• ६
१८२	जनम मेरु न ताहि मभार	बनारसीदास		"

१९०. जगत मे सो देवन को देव	बनारसीदास	हिन्दी		१११
१९१. मन लागो श्री नवकारसू	गुणचन्द्र	"		"
१९२. चेतन अब खोजिये	"	"	राग सारङ्ग	११२
१९३ आये जिनवर मनके भावते	राजसिंह	"		"
१९४ करो नाभि कवरजी की आरती	लालचन्द	"		"
१९५ री झाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	नन्ददास	"		११३
१९६ तै नरभव पाय कहा कियो	रूपचन्द	"		"
१९७. अखिया जिन दर्शन की प्यासी	×	"		"
१९८. वलि जइये नेमि जिनदकी	भाउ	"		"
१९९ सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्त्ति	"		११४
२००. मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	"		"

स० १८२१ मे विजयकीर्त्ति ने मुक्तागिरी की वंदना की थी।

२०१ उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी		११४
२०२. नाभि के नद चरण रज वदौ	विसनदास	"		"
२०३. लाग्यो आतमराम सो नेह	द्यानतराय	"		"
२०४ धनि मेरी आजको घरी	×	"		११५
२०५ मेरो मन वस कीनो जिनराज	चन्द	"		"
२०६ धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	"		"
२०७ आज मैं नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द	"		"
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	"		११६
२०९. कलिजुग मे ऐसे ही दिन जाये	हर्षकीर्त्ति	"		"
२१० श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	"		"
२११ नेमि कवर वर वीद विराजै	×	"		११७
२१२ तेइ बडभागी तेइ बडभागी	सुदरभूषण	"		"
२१३ अरे मन के के वर समझायो	×	"		"
२१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	"		"

१६४ क्या सोवत प्रति भारी रे मन	द्यानतराय	हिन्दी	१ ४
१६५. समकित उत्तम भाई जगतमें	"	"	"
१६६ रे मेरे घटज्ञान घनागम छायो	"	"	१ ५
१६७ आन सरावर छोड़ हो भविजन	"	"	"
१६८ हो परमगुरु बरसत ज्ञानझरी	"	"	"
१६६ ज १ ।। । जिन दर्शन का मन	देवसेन	"	"
१७ मरे मन गुरु है प्रभु ने बरसा	हर्षकीर्ति	"	१०६
१७१ बलिहारी कुरा के बन्दे	आनि मोहम"	"	"
१७२ मैं ना तेरी प्राज महिमा जानी	भूधरदास	"	"
१७३ देखोरी प्राज नेमीमुर मुनि	×	"	"
१७४ म्हारी मह कछु महत न मावै	द्यानतराय	"	१ ७
१७५. रे मन करि सदा सतोष	बनारसीदास	"	"
१७६ मेरी २ करता जनम गया रे	रूपचन्द	"	"
१७७ वेह बुढानी रे मै जानी	विजयकीर्ति	"	"
१७८ माता स ग्या सुमति प्रकसी	बनारसीदास	"	१ ८
१७६ तनिक जिया जाय	विजयकीर्ति	"	"
१८ तन धन जावन माम जगत म	×	"	"
१८१ देख्या बम म ठाडो वीर	भूधरदास	"	१ ६
१८२ चेतन मेरू म ताहि सभार	बनारसीदास	"	"
१८३ लगि रह्योरे मरे	बखतराम	"	"
१ ४ मामि रह्यो जीव परमाद म	×	"	"
१८५ हम लागे आतमराम सा	द्यानतराय	"	११
१८६ निरन्तर ध्याऊ नेमि जिनंद	विजयकीर्ति	"	"
१८७ कित गयोरे पंथी बोल तो	भूधरदास	"	"
१८८ हम बैठे प्रपनी मौम स	बनारसीदास	"	"
१८६. दुखवा कब जैहंगी	×	"	१११

१९०. जगत मे सो देवन को देव	बनारसीदास	हिन्दी		१११
१९१. मन लागो श्री नवकारसू	गुणचन्द्र	"		"
१९२. चेतन अब खोजिये	"	"	राग सारङ्ग	११२
१९३ आये जिनवर मनके भावतें	राजसिंह	"		"
१९४ करो नाभि कवरजी को आरती	लालचन्द	"		"
१९५ री भाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	नन्ददास	"		११३
१९६ तैं नरभव पाय कहा कियो	रूपचन्द	"		"
१९७ अखिया जिन दर्शन की प्यासी	×	"		"
१९८. वलि जइये नेमि जिनदकी	भाउ	"		"
१९९ सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्त्ति	"		११४
२००. मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	"		"

स० १८२१ मे विजयकीर्त्ति ने मुक्तागिरी की वंदना की थी।

२०१. उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी	११४
२०२. नाभि के नद चरण रज वदौं	विसनदास	"	"
२०३. लाग्यो आतमराम सो नेह	द्यानतराय	"	"
२०४ धनि मेरी आजकी घरी	×	"	११५
२०५ मेरो मन वस कीनो जिनराज	चन्द	"	"
२०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	"	"
२०७ आज मैं नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द	"	"
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	"	११६
२०९ कलिजुग मे ऐसे ही दिन जाये	हर्षकीर्त्ति	"	"
२१० श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	"	"
२११ नेमि कवर वर वीद विराजै	×	"	११७
२१२ तेइ बडभागी तेइ बडभागी	सुदरभूषण	"	"
२१३ अरे मन के के वर समझायो	×	"	"
२१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	"	"

२१५ नेमिजिनंद बनम का	सकलकीर्ति	हिन्दी	११८
२१६ अब धाम्यो पाव बस्यो है भजसे मीमपवान	×	"	"
२१७ रे मन कामयो किस ठौर	×	"	"
२१८ मिश्चय होरणहार सो होय	×	"	"
२१९. समझ नर जीवन थोरो	रूपचन्द	"	"
२२० लग मई लगन हमारी	जगतराम	"	११९
२२१ घरे वो को कैसे २ कह समझावें	चैन विजय	"	"
२२२ माधुरी जैनवाणी	जगतराम	"	"
२२३ हम पासे है जिनराज तोरे वन्दन को	धानतराय	"	"
२२४ मन अटक्यो रे. मटक्यो	धर्मपाल	"	"
२२५. जैन बम नहीं कीना मैरन देही पापी	ब्रह्मजिनदास	"	१२
२२६ इन नैनों का यही सुभाव	"	"	"
२२७ नैना सफल भयो जिन दरसन पायो	रामदास	"	"
२२८ सब परि करम है परधान	रूपचन्द	"	"
२२९ सब परि बस मैत ज्ञान	हर्षकीर्ति	"	"
२३० रे मन कायमा किस ठौर	जगतराम	"	१२१
२३१ मुनि मन नेमजी के बैन	धानतराय	"	"
२३२ तनक ताहि है री ताहि मातनो दरस	जगतराम	"	"
२३३ चलत प्राण भयो रोयेरी माया	×	"	"
२३४ बाजन रण मृदग रसाला	जयकीर्ति	"	"
२३५. अब तुम आगो चेतनरामा	पुण्यचन्द	"	१२२
२३६ नैना ध्यान धरया है	जगतराम	"	"
२३७ परि रे म नम हित परि न	धानतराय	"	"
२३८. ना.हव नेमन है चौमास	नवराम	"	"
२३९. देव मोरा हो श्यामजी	समयसुन्दर	"	१२३
२४० दैरी परी हो रिया मै	धानतराय	"	"

२४१. मैं बंदा तेरा हो स्वामी	द्यानतराय	हिन्दी	१२३
२४२ जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द	”	”
२४३ तुम ज्ञान विभो फूली वसत	द्यानतराय	”	१२४
२४४. नैननि ऐसी बानि परि गई	जगतराम	”	”
२४५ लागि लौ नाभिनदन स्यौ	भूधरदास	”	”
२४६ हम आतम को पहिचाना है	द्यानतराय	”	”
२४७ कौन सयानपन कीन्होरे जीव	जगतराम	”	”
२४८ निपट ही कठिन हेरी	विजयकीर्त्ति	”	”
२४९. हो जी प्रभु दीनदयाल मैं बंदा तेरा	अक्षयराम	”	१२५
२५० जिनवाणी दरयाव मन मेरा ताहि मे भूले	गुणचन्द्र	”	”
२५१. मनहु महागज राज प्रभु	”	”	”
२५२ इन्द्रिय ऊपर असवार चेतन	”	”	”
२५३ आरसी देखत मोहि आरसी लागी	समयसुन्दर	”	१२६
२५४. काके गढ फौज चढी है	×	”	”
२५५. दरवाजे बेडा खोलि खोलि	अमृतचन्द्र	”	”
२५६ चेति रे हित चेति चेति	द्यानतराय	”	”
२५७ चिंतामणि स्वामी सोचा साहब मेरा	बनारसीदास	”	”
२५८. सुनि माया ठगिनी तैं सब ठिगी खाया	भूधरदास	”	१२७
२५९ चलि परसैं श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	”	”
२६० जिन गुण गानो री	×	”	”
२६१ वीतराग तेरी मोहिनी मूरत	विजयकीर्त्ति	”	”
२६२ प्रभु सुमरन की या विरिया	”	”	१२८
२६३ किये आराधना तेरी	नवल	”	”
२६४. घडो धन आजकी ये ही	नवल	”	”
२६५ मैय्या अपराध क्या किया	विजयकीर्त्ति	”	१२९
२६६ तजिके गये पीव हमको तकसीर क्या विचारी,	नवल	”	”

२६७ मैया री गिरि बानेदै मोहि नेमजीसू काम है	मीराम	”	१२६
२६८ नेम ब्याहनकू आया नेम सेहरा बंधाया	बिनाबीमलल	,	११
२६९ धन्य तुम धन्य तुम पतित पावन	×	”	१३१
२७० चेतन माकी मूसिये	मबल	”	”
२७१ प्यारी श्री महावीर मोक्ष दीन बानिक	सवाईराम	”	”
२७२ मेरो मन बस कीन्हा महावीर (चांदनपुरके)	हर्षकीर्ति	”	”
२७३ राखो सीता धमहु गेह	ख मतराम	”	”
२७४ कहे सीताजी सुमि रामचन्द्र	”	”	१३२
२७५ मोहि छांडा हो जिनराज नाम	हर्षकीर्ति	”	”
२७६ देवगुरु पहिचान बंदे	×	”	”
२७७ नेमि जिनंद गिरनेरयो	जीवराम	”	१३३
२७८ क्य परवसी को पतियारो	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१३३
२७९ चेतन नाम न सभी लियो	धानतराय	”	”
२८० सावरी मूरत मेरे मन बसी है माई	नवल	”	”
२८१ माको रे बुढापा बैरी	भूधरदास	”	”
२८२ साहिबो था श्रीमत्का म्हारो	जिनहर्ष	”	१३४
२८३ पंच महाव्रतधारा	किशनसिंह	”	”
२८४ तेरी बलिहारी हो जिनराज	×	”	”
२८५ सब्या दुनिया बिच वे कोई अजब तमाशा	भूधरदास	”	१३५
२८६ अटके नैना नहीं कहेजा	नवल	”	”
२८७ चला जिनचलिये एरी सखी	धानतराय	”	”
२८८ जगतनन्दन नग नामक बासी–रति	×	”	”
२८९ साहिब गरिब नाथु नेमजी प्यारी मतियां	रामाराम	”	१३६
२९० हांजी हम ध्यान धरजी का धरना	हेमराज	”	”
२९१ भला हो मारे साइ हो	×	”	”
२९२ तू बड़ा बूना तू बड़ा मूनो महाजी रे प्राणी	बनारसीदास	”	”

२६३	होजी हो सुधातम एह निज पद भूलि रह्या	×	हिन्दी		१३६
२६४	मुनि कनक कीर्ति की जकडी	मोतीराम	”		१३७

रचना काल स० १८५३ लेखन काल संवत् १८५६ नागौर मे पं० रामचन्द्र ने लिपि की।

२६५	छीक विचार	×	हिन्दी	ले० काल १८५७	१३७
२६६	सावरिया अरज सुनो मुझ दीन की हो	प० खेमचद	हिन्दी		१३८
२६७	चादखेडी मे प्रभुजी राजिया	”	”		”
२६८	ज्यो जानत प्रभु जोग धरचो है	चन्द्रभान	”		”
२६९	आदिनाथ की विनती	मुनि कनक कीर्ति	”	र० काल १८५६	१३९–४०
३००	पार्श्वनाथ की आरती	”	”		१४०
३०१	नगरो की वसापत का सवत्वार विवरण	”	”		१४१

सवत् ११११ नागौर मडाणो आखा तीज रै दिन।

” ६०९ दिली वसाई अनगपाल तु वर वैसाख सुदी १२ भौम।

” १६१२ अकवर पातशाह आगरो वसायो।

” ७३१ राजा भोज उजणी बसाई।

” १४०७ अहमदाबाद अहमद पातसाह बसाई।

” १५१५ राजा जौधे जोधपुर बसायो जेठ सुदी ११।

” १५४५ बीकानेर राव बीकै बसाई।

” १५०० उदयपुर राणै उदयसिंह बसाई।

” १४४५ राव हमीर न रावत फलोधी बसाई।

” १०७७ राजा भोज रै वेटै वीर नारायण सेवाणो वसायो।

” १५९६ रावल वीदै महेवो वसायो।

” १२१२ भाटी जेसे जैसलमेर वसायो सा (वन) बुदी १२ रवौ।

” ११०० पवार नाहरराव मडोवर बसायो।

” १६११ राव मालदे माल कोट करायो।

” १५१८ राव जोधावत मेडतो वसायो।

” १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछावै।

संवत् ११० कासीर सोमंडारै बसाई ।

„ १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो ।

„ ११३७ पातसाह अलावदीन लोदी चीरमदे काम आयो ।

„ ९ २ अणहल गुवाल पाटण बसाई बैसाख सुदी १ ।

„ २ २ (१२ २)? राव अजैपाल पवार अजमेर बसाई ।

„ ११४८ सिधराव जैसिंह देही पाटण मैं ।

„ १४२१ देवडो सिरोही बसाई ।

„ १६११ पातसाह अकबर मुलतान लीयो ।

„ १५६९ रावजी दैतको नगर बसायो ।

„ ११५१ फलोधी पारसनाथजी ।

„ १६२९ पातसाह अकबर अहमदाबाद लोधी ।

„ १५९९ राव मालदे बीकानेर लोधी मास २ रही राव जैतसी काम आयो ।

„ १६६९ राव किसनसिंह किसनगढ बसायो ।

„ १६१९ मालपुरी बसायो ।

„ १४९५ रैणपुरी देहुरो मांपना ।

„ ९ २ चीतोड चित्रंगद मोरीये बसाई ।

„ १२४५ विमल मत्रीस्वर हुवो विमल बसाई ।

„ १६ ९ पातसाह अकबर चीतोड लोधी चै सुदी १२ ।

„ १६३६ पातसाह अकबर राजा उदैसिंहजी गु म्हाराजा रो खिताब दीयो ।

„ १६३४ पातसाह अकबर नगोरिया लीयो ।

१ २	श्वेताम्बर मत के चौरासी बोल		हिन्दी	१४३-४९
१ ३	जैन मत का संवत्सर	×	संस्कृत	अपूर्ण
१ ४	दादूर मारोठ की पत्री	×	हिन्दी पद्य	१५१

स १८६८ अषाढ वदी १४

सकलजिनं प्रणमामि हितं सुमपान पनाका भी मिलितं ।
सुमुनी महीधमति को विदयं मनमेंद्र दुरम सुग्गं सवयं ॥१॥

किरण फुरिण मोहन जीवणाय, अपरंपुर मारोठ थानकयं ।
सरवोपम लायक थान छजै, गुरु देव सु आगम भक्ति यजै ॥२॥
तीर्थङ्कर ईस भक्ति धरै, जिन पूज पुरंदर जेम करै ।
चतुसघ सुभार धुरधरयं, जिन चैति चैत्यालय कारकयं ॥३॥
व्रत द्वादस पालस सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुथरा ।
वहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु शास्त्र सुदेव पुजै सुखदा ॥४॥
धर्म प्रश्न जु श्रेणिक भूप जिसा, सधश्रेयास दानपति जु तिसा ।
निज वस जु व्योम दिवाकरय, गुण सौख्य कलानिधि बोधमय ॥५॥
सु इत्यादिक वोयम योगि वहु, लिखियो जु कहा लग वोय सहू ।
दयुडा गोठि जु श्रावग पच लसै, शुद्धि वृद्धि समृद्धि आनन्द वसै ॥६॥
तिह योगि लिखै ध्रम वृद्धि सदा, लहियो सुख सपति भोग मुदा ।
.. .. - ... . .. ॥७॥
इह थानक आनन्द देव जपै, उत चाहत खेम जिनेन्द्र कृपै ।
अपरंच जु कागद आइ इतैं, समाचार वाच्या परमन तितै ॥८॥
सहु वात जु लाय ध्रमकरं, ध्रम देव गुरु पसि भक्ति भरं ।
मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो ॥९॥
यशवत विनैवत दातृ गहो, गुणशील दयाध्रम पालक हो ।
इत है व्यवहार सदा तुम को, उपराति तुमै नहि औरन को ॥१०॥
लिखियो लघु को विधमान यहु, सुख पत्र जु वाहुडता लिखि हू ।
वसू[८] वाण[५] वसू[८] पुनि चन्द्र[१] किय, वदि मास असाढ चतुर्दिशिय ॥११॥
इह श्रोटक छद सुचाल मही, लिखवी पतरी हित रीति वही ।
.... ॥१२॥
तुम भेजि हू येक सकर नै, समचार कह्या मुख तै सुइनै ।
इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवान सवै सुखतै ॥१३॥
॥ इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पचायती नुं ॥

२०५. शृङ्गार रस के फुटकर छन्द × हिन्दी १५२-१५४

५४०३ गुटका स० २३। पत्र सं० १८२। आ० ८×५½ इंच। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—विभिन्न रचनाओं में से विविध पाठों का संग्रह है।

५४०४ गुटका स० २४। पत्र सं० ८१। आ० ७×६ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय पूजा। पूर्ण। दशा-सामान्य।

१ चतुर्विंशति तीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१-६५
२ जिनचैत्यालय जयमाल	रत्नभूषण	हिन्दी	६६-६६
३ समस्त व्रत की जयमाल	चन्द्रकीर्ति	"	७०-७३
४ शान्तिनाथाष्टक	×	"	७३-७५
५ मणिरत्नाकर जयमाल	×	"	७५-७७
६ वागीश्वर भारती	×	"	८१

५४०५ गुटका स० २५। पत्र सं० १५७। आ० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७५५ आसोज सुदी ११।

१ पंचकल्याणपूजा	×	संस्कृत	१-५
२ लघुस्वयंभू स्तोत्र	×	"	१६-१८
३ शास्त्रपूजा	×	"	१६-२४
४ पार्श्वनाथपूजा	×	"	२४-२७
५ जिनसहस्रनाम (लघु)	×	"	२७-३२
६ सोलहकारणरास	मुनि सकलकीर्ति	हिन्दी	३३-३८
७ देवपूजा	×	संस्कृत	५०-६६
८ सिद्धपूजा	×	"	६७-७३
९ पद्मावतीपूजा	×	"	७४-७५
१० घण्टा कर्णकल्प	×	"	७६-८६
११ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	६०-१०५
१२ रत्नत्रयपूजा	पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन	"	११६-११७
१३ क्षमावर्णी पूजा	ब्रह्मसेन	"	११८-१४५
१४ सोलहकारणविधान	×	हिन्दी	१४६

१५. बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१५१–५४
१६ शास्त्रजयमाल	×	प्राकृत	१५५–५१

५४०६ गुटका स० २६ । पत्र स० १४३ । आ० ५×४ इञ्च । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१ विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१–५
२ भूपालस्तोत्र	भूपाल	"	५–९
३. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	९–१३
४ सामयिक पाठ	×	"	१३–३२
५ भक्तिपाठ (सिद्ध भक्ति आदि)	×	"	३३–७०
६ स्वयभूस्तोत्र	समन्तभद्राच	"	७१–८७
७ वन्देतान की जयमाला	×	"	८८–८९
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	८९–१०७
९. श्रावकप्रतिक्रमण	×	"	१०८–२३
१० गुर्वावलि	×	"	१२४–३३
११ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	"	१३४–१३९
१२ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१३९–१४३

सवत् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी द्वितीया रवौदिने अद्येह श्री घनौघेन्द्रगे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्दि पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणपट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयनन्दिपट्टे भ० श्रीरत्नकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीकुमुदचन्द्रास्तत्पट्टे भ० श्रीअभयचन्द्रै ब्रह्म श्री अभयसागर सहायेनेद क्रियाकलापपुस्तक लिखित श्रीमद्धनौघेन्द्रगच्छ हुंबडजातीय लघुशाखाया समुत्पन्नस्य परिख-रविदासस्य भार्या वाई कीकी तयो संभवा सुता अताइनाम्नै प्रदत्तं पठनार्थं च ।

५४०७ गुटका स० २७ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—प० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१ शास्त्र पूजा	×	सस्कृत	१–२
२ स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	३–७

३ मंगल पाठ	×	संस्कृत	८-९
४ नामावली	×	"	९-११
५ तीन चौबीसी नाम	×	हिन्दी	१२-१३
६ दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१३-१४
७ भैरवनामस्तोत्र	×	"	१४-१५
८ पञ्चमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी	१५-२
९ अष्टाह्निकपूजा	×	संस्कृत	२१-२५
१ सोलहकारणपूजा	×	"	२५-२७
११ दशलक्षणपूजा	×	"	२७-२९
१२ पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	,	२९-३
१३ अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	३१-३३
१४ जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	३४-४६
१५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग आचार्य	संस्कृत	४७-५१
१६ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	५२-५५
१७ पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५६-६
१८ पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	६१-७१
१९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७२-८७
२ सम्मेद शिखर निर्वाण काण्ड	×	हिन्दी	८८-९१
२१ ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	संस्कृत	९२-९७
२२ तत्त्वार्थसूत्र (१-५ अध्याय)	उमास्वामि	"	९९-१ ०
२३ भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	हिन्दी	१ -१६
२४ कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	"	१ ७-१११
२५. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	११२-१३
२६. स्वरोदयविचार	×	"	११४-१५
२७ बाईसपरिषह	×	"	१२ -१२५
२८ सामायिकपाठ लघु	×	"	१२६-२६

२६ श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६–२८
३० क्षेत्रपालपूजा	×	,,	१२८–३२
३१. चिंतामणीपार्श्वनाथपूजा स्तोत्र	×	सस्कृत	१३२–३६
३२. कलिकुण्डपार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६–३६
३३. पद्मावतीपूजा	×	सस्कृत	१४०–४२
३४. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	,,	१४३–४६
३५ ज्योतिष चर्चा	×	,,	१४७–१५७

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र स० २० । ग्रा० ८३⁄४×७ इञ्च । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्वन्धी पाठो का सग्रह है ।

५४०६ गुटका स० २६ । पत्र स० २१ । ग्रा० ६३⁄४×४ इञ्च । ले० काल स० १८४६ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमे सस्कृत का सामायिक पाठ है ।

५४१० गुटका सं० ३० । पत्र स० ८ । ग्रा० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमे भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११ गुटका स० ३१ । पत्र स० १३ । ग्रा० ६३⁄४×४१⁄२ इच । भाषा–हिन्दी, सस्कृत ।

विशेष—इसमे नित्य नियम पूजा है ।

५४१२. गुटका सं० ३२ । पत्र स० १०२ । ग्रा० ६३⁄४×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८६६ फागुण बुदी ३ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा–सामान्य ।

विशेष—इसमे प० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है । तनसुख सोनी ने अलवर मे साह दुलीचन्द की कचहरी मे प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रो मे लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३ गुटका स० ३३ । पत्र स० २४० । ग्रा० ५×६३⁄४ इञ्च । विषय–भजन सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनो का संग्रह है ।

५४१४ गुटका स० ३४ । पत्र सं० ४१ । ग्रा० ६३⁄४×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले० काल स० १६०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१ ज्योतिषसार कृपाराम हिन्दी १–१०

र० काल सं० १७१२ कार्तिक सुदी १ ।

आदिभाग दोहा—

सकल अमर सुर असुर नर, परसत गणपति पाय ।
सो गणपति शुभि बोलिये अब अपनों चितलाय ।।
पद परसों चरनन कमल जुगल राधिका स्याम ।
धरत ध्यान जिन चरन को सुर न (र) मुनि आठों जाम ।।
हरि राधा राधा हरि, जुगल एकता प्राण ।
जगत आरसी में तमों दूजो प्रतिबिम्ब जान ।।
सोभति ओढे मत्त पर एकहि जुगल किसोर ।
मनो लस घन मांझ ससि दामिनी चारु चौर ।।
परसे अति जय चित्त के चरन राधिका स्याम ।
नमस्कार कर जोरि कै भाषत किरपाराम ।।
साहिबहापुर सहर में कायथ राधाराम ।
तुलाराम तिहि बंस में ता सुत किरपाराम ।।६।।
लघु जातक को ग्रन्थ यह सुनो पंडितन पास ।
ताके सबै स्लोक कैं दोहा करे प्रकास ।।७।।
औ अवहु जे सुनौ लयो जु परख निकारि ।
ताको बहुविधि हेत सौं, कह्यो ग्रन्थ विस्तार ।।८।।
संवत् सत्तरह सै बरस और बारणवे जानि ।
कातिक सुदी दसमी गुरु रच्यौ ग्रन्थ पहचानि ।।९।।
सब ज्योतिष को सार यह, लियो जु परख निकारि ।
नाम धरयो या ग्रन्थ को तातें ज्योतिष सार ।।१ ।।
ज्योतिष सार जु ग्रन्थ की कलप वृक्ष मनु लेखि ।
ताको नव साखा लसत जुदो जुदो फल देखि ।।११।।

अन्तिम—

अथ वरस फल लिखते—

सवत् महै हीन करि, जनम वर (ष) लौ मित्त ।
रहै सेप सो गत वरष, आवरदा मैं वित्त ॥६०॥
भये वरष गत अङ्क अरु, लिख घर वाहू ईस ।
प्रथम येक मन्दर है, ईह वहौ इकतीस ॥६१॥
अरतीस पहलै धूरवा, अक को दिन अपनै मन जानि ।
दूजै घर फल तीसरो, चौथे अ अखिर ज ठान ॥६२॥
भये वरष गत अक को, गुन धरवावो चित्त ।
गुणाकार के अक मैं, भाग सात हरि मित ॥६३॥
भाग हरै तै सात कौ, लवध अक सो जानि ।
जो मिलै य पल मैं वहुरि, फल तै घटी बखानि ॥६४॥
घटिका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो अक ।
तामे भाग जु सप्त को, हरि ये मित न सं० ॥६५॥
भाग रहै जो सेष सो, बचै अक पहिचानि ।
तिन मैं फल घटीका दसा, जन्म मिलावो आनि ॥६६॥
जन्मकाल के अत रवि, जितने बीते जानि ।
उतनै वातै अस रवि, वरस लिख्यौ पहचानि ॥६७॥
वरस लग्यौ जा अत मैं, सोइ देत चित धारि ।
वादिन इतनी घडी जु, पल वीते लग्गुन वीचारि ॥६८॥
लगन लिखै तै गोरह जो, जा घर बैठो जाइ ।
ता घर के फल सुफल को, दीजे मित बनाइ ॥६९॥

इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार सपूर्णम्

१ पाशाकेवली	×	हिन्दी	३१–३६
२ शुभमुहूर्त्त	×	"	३६–४१

५४१५ गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १८ । मा ११३×५३ इञ्च । भाषा-× । विषय-संग्रह । ले काल सं १८८६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१ नेमिनाथजी के दश भव	×	हिन्दी पद्य		१ ५
२ निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	"	र काल १७४१	५ ७
३ दर्शन पाठ	×	संस्कृत		८
४ पार्श्वनाथ पूजा	×	हिन्दी		६-१
५. दर्शन पाठ	×	"		, ११
६ राजुलपच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	"		१२-१८

५४१६ गुटका सं० ३६ । पत्र सं १ ६ । मा ८॥×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लि काल १७८२ माह बुदी ८ । पूर्ण । अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । लिपि विकृत एवं विलकुल अशुद्ध है ।

१ ढोला मारुणी की बात	×	हिन्दी प्राचीन पद्य सं ४१५	१-२४
२ बदरीनाथजी के छन्द	×	"	२८-३
		सं काल १७८२ माह बुदी ८	
३ राम लीला	×	हिन्दी	३ -३१
४ प्रह्लाद चरित्र	×	"	३१-३४
५. माधुन्मर राजा की कथा	×	"	३५-४२
		११५ पद्य । पौराणिक कथा के आधार पर ।	
६ भगतवत्सलावलि	×	हिन्दी	४२-४४
		सं १७८२ माह बुदी ११ ।	
७ भ्रमर गीत	×	" १२१ पद्य	४४-५३
८ पुनीला	×	"	५३-५५
९. गज मोक्ष कथा	×	"	५३-५६
१ पुनीला	×	" पद्य सं २४	५६-६

११. बारहखडी	×	हिन्दी		६०-६२
१२. विरहमञ्जरी	×	"		६२-६८
१३. हरि बोला चित्रावली	×	"	पद्य सं० २६	६८-७०
१४. जगन्नाथ नारायण स्तवन	×	"		७०-७४
१५. रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत		७५-७७
१६. हरिरस	×	हिन्दी		७८-८५

विशेष—गुटका साजहानाबाद जयसिंहपुरा मे लिखा गया था। लेखक रामजी मीणा था।

५४१७. गुटका सं० ३७। पत्र सं० २४०। आ० ७३/४×५३/४ इञ्च।

१. नमस्कार मंत्र सटीक	×	हिन्दी		३
२. मानबावनी	मानकवि	"	५३ पद्य हैं	४-२८
३. चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति	×	"		३२
४. आयुर्वेद के नुसखे	×	"		३५
५. स्तुति	कनककीर्ति	"		३७

लिपि सं० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार

६. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	संस्कृत		४१

कुशला सौगाणी ने सं० १७७० में सा० फतेहचन्द गोदीका के ओल्ये से लिखी।

७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	९ अध्याय तक	६१
८. नेमीश्वररास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	र० सं० १६१५	१७२
९. जोगीरासो	जिनदास	"	लिपि सं० १७१०	१७६
१०. पद	×	"		"
११. आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"		२०४
१२. दानशीलतपभावना	×	"		२०५-२३६
१३. चतुर्विंशति छप्पय	गुणकीर्ति	"	र० सं० १७७७ असाढ वदी १४	

आदि भाग—

आदि अंत जिन देव, सेव सुर नर तुझ करता।
जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतहि अघ हरता॥

सरसुति तनउ पसाइ ग्रान समशीलि पूरइ ।
गारद लागौ पाइ जेमि गुण वाणिइ भरइ ॥
गुरु निरग्रन्थ प्रणम्य कर जिन चउवीसो मन धरउ ।
गुणकीति इम उच्चरइ गुण बखाइ र देवा तरउ ॥१॥

नाभिराय कुलचन्द मं- मरुदेवि जायउ ।
वाइ धनुष तन पंच वृषभ लांछन सु बतायउ ॥
हेम वर्ण सहि जानु, पानु लख सु चौरासी ।
पूरव गनती एह जन्म अयोध्या वासी ॥
भरथहि राजु सु सौंपि कर अष्टापद सीधउ तन्न ।
गुणकीति इम उच्चरइ, गुणभिय साह बन्दहु मना ॥१॥

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसंघ विख्यातगछ सरसुतिय वखानउ ।
तिहि महि जिन चउवीस देहु सिक्षा मन आनउ ॥
परम गुरु प्रसादु, उत्तम मूलचन्द्र प्रभुजानी ।
साहिजिहां पतिसाहि, राजु दिलीपति थानी ॥
सतरहसइउ सत्तातरा बसि प्रसाद चउदसि करना ।
गुणकीति इम उचरइ, सु सकल संघ जिनवर सरना ॥

॥ इति श्री चतुविसतीर्थंकर छप्पैया सम्पूर्ण ॥

१२ सीलरास	गुणकीति	हिन्दी	रचना स० १७११	२४

५२१८ गुटका स० ३८—पत्रसंख्या—२२१। —सा १ ×७॥ दशा—जीर्ण।

विशेष—१४ पृष्ठ तक आयुर्वेद के अच्छे नुसखे हैं।

१ प्रभावती कल्प	×	हिन्दी	कई रोगों का एक नुसखा है।
२. नाड़ी परीक्षा	×	संस्कृत	

करीब ७२ रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है।

३ शील सुदर्शन रासो	×	हिन्दी	३७-४२

४ पृष्ठ संख्या ५२ तक निम्न अवतारों के सम्मान्य रंगीन चित्र है जो प्रदर्शनी के योग्य हैं।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार (६) वराहावतार (७) नृसिंहावतार (८) कल्किअवतार (९) बुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा (११) पार्श्वनाथ चैत्यालय (पार्श्वनाथ की मूर्ति सहित)

५ शकुनावली	×	संस्कृत	५६
६ पाशाकेवली (दोष परीक्षा)	×	हिन्दी	६६
जन्म कुण्डली विचार			

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वापिस आने का पत्र है।

८. भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	संस्कृत	७३
९. वैद्यमनोत्सव (भाषा)	नयन सुख	हिन्दी	७४-८१
१०. राम विनोद (आयुर्वेद)	×	"	८२-९८
११ सामुद्रिक शास्त्र (भाषा)	×	"	९९-११२

लिपी कर्ता—सुखराम ब्राह्मण पचोली

१२ शीघ्रबोध	काशीनाथ	संस्कृत	
१३ पूजा संग्रह	×	"	१९४
१४ योगीरासो	जिनदास	हिन्दी	१९७
१५ तत्वार्थसूत्र	उमा स्वामि	संस्कृत	२०७
१६ कल्याणमंदिर (भाषा)	बनारसीदास	हिन्दी	२१०
१७ रविवारव्रत कथा	×	"	२२१
१८ व्रतो का ब्यौरा	×	"	"

अन्त मे ६४ योगिनी आदि के यंत्र हैं।

५४१९ गुटका सं० ३९—पत्र सं० ९४। आ० ९×६ इञ्च। पूर्ण। दशा—सामान्य।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

५४२० गुटका स० ४०—पत्र सं १ १ । सा० ८॥×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० सं० १८८० पूर्ण । सामान्य शुद्ध ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह तथा पृष्ठ ८ से नरक स्वर्ग एवं पृथ्वी आदि का परिचय दिया हुआ है ।

५४२१ गुटका स० ४१—पत्र संख्या—२२७ । सा०—८×६॥ इञ्च । लेखन काल—संवत् १८७५ माह सुदी ७ । पूर्ण । दशा उत्तम ।

१	समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी र० काल सं० १६६३ आसो सु० १३	१–५१
२	माणिक्यमाला	संग्रह कर्ता	हिन्दी　संस्कृत प्राकृत सुभाषित	५२–१११
	प्रश्नोत्तरी	ब्रह्म ज्ञानसागर		
३	देवागमस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	संस्कृत	लिपि संवत् १८६६

कृपारामसोगाणी ने करौली ग्राम के पठनार्थ हाडौती गांव में प्रति लिपि की । पृष्ठ १११से ११५ ।

४	अनादिनिधनस्तोत्र	×	"	लिपि सं० १८६६　११५–११६
५	परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	११६–११७
६	सामायिकपाठ	अमितगति	"	११७–११८
७	पंडितमरण	×	"	११६
८	चौबीसतीर्थंकरभक्ति	×	"	११६–२
				लेखन सं० १२७ वैसाख सुदी १
६	तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी	१२
१	दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१२१
११	पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी	१२१–१२८
१२	कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	"	१२८–१
१३	विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	"	१२ –१२
				रचना काल १७१५ ।
१४	भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी	१३२–१५
१५	एकसमादि चतुर्विंशति भाषा	भूधरदास	"	१३५–१६

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	"	१३–३७
१७ श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७–३८
१८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८–४५
१९. सामायिक बडा	×	"	१४५–५२
२०. लघु सामायिक	×	"	१५२–५३
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५३–५४
२२. बाईस परिषह	भूधरदास	"	१५४–५७
२३. जिनदर्शन	"	"	१५७-५८
२४ सबोधपंचासिका	द्यानतराय	"	१५८-६०
२५. बीसतीर्थंकर की जकडी	×	"	१६०–६१
२६. नेमिनाथ मगल	लाल	हिन्दी	१६१ १६७
			र० सं० १७४४ सावरण सु० ६
२७. दान बावनी	द्यानतराय	"	१६७–७१
२८. चेतनकर्म चरित्र	भैय्या भगवतीदास	"	१७१–१८३
			र० १७३६ जेठ वदी ७
२९. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	१८४–८९
३०. भक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	"	१८९–९२
३१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द	सस्कृत	१९२–९४
३२. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१९४–९६
३३ सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१९६–९८
३४ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१९८–२००
३५ भूपालचौबीसी	भूपाल कवि	"	२००–२०२
३६. देवपूजा	×	"	२०२–२०५
३७. विरहमान पूजा	×	"	२०५–२०६
३८. सिद्ध ्ूजा	×	"	२०६–२०७

३६ सोलहकारणपूजा	×	”		२ ७–२०८
४० दशलक्षणपूजा	×	”		२०८–२०६
४१ रत्नत्रयपूजा	×	”		२ ६–१४
४२ कलिकुण्डलपूजा	×	”		२१४–२२५
४३ चिंतामणि पार्श्वनाथपूजा	×	”		२२५–२६
४४ शांतिनाथस्तोत्र	×	”		२२६
४५. पार्श्वनाथपूजा	×	”	अपूर्ण	२२६–२७
४६ चौबीस तीर्थंकूर स्तवन	देवनन्दि	”		२२८–३७
४७ नवग्रहगर्भित पार्श्वनाथ स्तवन	×	”		२३७–४
४८ कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तोत्र	×	”		२४०–४१
		लेखन काल १८६३ माघ सुदी ५		
४६ परमात्मस्तोत्र	×	”		२४१–४३
५ लघुजिनसहस्रनाम	×	”		२४३–४६
		लेखन काल १८७ बैशाख सुदी ५		
५१ सूक्तिमुक्तावलिस्तोत्र	×	”		२४६–५१
५२ जिनेन्द्रस्तोत्र	×	”		२५२–५४
५३ बहत्तरकला पुरुष	×	हिन्दी गद्य		२५७
५४ चौसठ कला स्त्री	×	”		”

५४२ गुटका स ४२। पत्र स १२६। आ ७×४ इञ्च। पूर्ण।

विशेष—इसमें भूधरदास ी का चर्चा समाधान है।

५४२३ गुटका स० ४३—पत्र सं ५८। आ ६३×५३ इञ्च। भाषा–संस्कृत। ले काल १७८७ कार्तिक शुक्ल ११। पूर्ण एवं शुद्ध।

विशेष—अ मेरचालयमे साह श्री अमचन्द के पठनार्थ भट्टारक श्री देवचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है। सामायिक पाठ मा व का संग्रह है।

५४२४ गुटका स० ४४। पत्र स ८१। आ १ ×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी। पूर्ण। दशा जीर्ण।

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है।

५४२५ गुटका स० ४५ । पत्र स० १४० । आ० ६३/४×५ इञ्च । पूर्ण ।

१ देवशास्त्रगुरु पूजा	×	सस्कृत	१-७
२. कमलाष्टक	×	"	६-१०
३. गुरूस्तुति	×	"	१०-११
४. सिद्धपूजा	×	"	१२-१५
५. कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६-१६
६ षोडशकारणपूजा	×	"	१६-२२
७. दशलक्षणपूजा	×	"	२२-३२
८. नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२-३६
६. पचमेरुपूजा	भट्टारक महीचन्द्र	"	३६-४५
१० अनन्तचतुर्दशीपूजा	" मेरुचन्द्र	"	४५-५७
११ ऋषिमडलपूजा	गौतमस्वामी	"	५७-६५
१२ जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	६६-७४
१३. महाभिषेक पाठ	×	"	७४-६६
१४ रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	६७-१२१
१५ ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	१२२-२५
१६. क्षेत्रपाल की आरती	×	"	१२६-२७
१७ गणधरवलयमत्र	×	संस्कृत	१२८
१८ आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	हिन्दी	१२६-३१
१६ गीत	विद्याभूषण	"	१३१-३३
२० लघु सामायिक	×	संस्कृत	१३४
२१ पद्मवतीछद	भ० महीचन्द्र	"	१३४-१४०

५४२६ गुटका सं० ४६—पत्र स० ४६ । आ० ७३/४×५३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण एव अशुद्ध ।

विशेष—वसतराज कृत शकुन शास्त्र है ।

मूलसंघे बलात्कारगणे सारस्वते सति ।
गच्छे विश्वपदष्ठाने वद्ये वृंदारकादिति ॥ ४ ॥
नदिसघोभवत्तत्र नदितामरनायकः ।
कुंदकुंदार्यसज्ञोऽसौ वृत्तरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥
तत्पट्टक्रमतो जात सर्वसिद्धान्तपारग ।
हमीर-भूपसेव्योय धर्मचद्रो यतीश्वर ॥ ६ ॥
तत्पट्टे विश्वतत्वज्ञो नानाग्र थविशारद ।
रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनि ॥ ७ ॥
शकस्वामिसमामध्ये प्राप्तमानशतोत्सव ।
प्रभाचद्रो जगद्वंद्यो परवादिभयकर. ॥ ८ ॥
कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शान्तमुद्रक ।
पद्मनदी जिताक्षोभूत्तत्पट्टे यतिनायक ॥ ९ ॥
तच्छिष्योजनिभव्यौघपूजिताह्लिविशुद्धधी ।
श्रुतचद्रो महासाधु साधुलोककृतार्थक ॥ १० ।
प्रामाणिक प्रमाणेऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधी ।
लक्षणे लक्षणार्थज्ञो भूपालवृंदसेवित ॥ ११ ॥
अर्हत्प्रणीततत्वार्थजाद पति निशापति ।
हतपचेषुरम्तारिर्जिनचद्रो विचक्षण ॥ १२ ॥
जम्बूद्रुमाकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।
तत्रास्ति भारत क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रद ॥ १३ ॥
मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तम ।
धनधान्यसमाकीर्णग्रामैर्देवद्धितिसमै ॥ १४ ॥
नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्वसुखकर ।
मनोगतमहाभोग दाता दातृसमन्वित ॥ १५ ॥
तोडाख्योभूत्महादुर्गो दुर्गमुख्य श्रियापर ।
तच्छाखानगर योपि विश्वमूर्तिविधाययत् ॥ १६ ॥

४४२७ गुटका सं० ४७ । पत्र स० १४० । आ० ८×४ इञ्च पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ सूर्य के दस नाम	×	संस्कृत	१
२ बन्दो मोक्ष स्तोत्र	×	"	१-२
३ निर्वाणविधि	×	"	२-३
४ मार्कण्डेयपुराण	×	"	४-५६
५. कालीसहस्रनाम	×	"	५८-११२
६ नृसिंहपूजा	×	"	११३-१५
७ देवीसूक्त	×	"	११६-६५
८. मंत्र-संहिता	×	संस्कृत	१६६-२११
६ ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	"	२११-१६
१० हरगौरी संवाद	×	"	२१६-७१
११ नारायण कवच एवं अष्टक	×	"	२७१-७६
१२ चामुण्डोपनिषद्	×	"	२७६-२८१
१३ पीठ पूजा	×	"	२८२-८७
१४ योगिनी कवच	×	"	२८८-३१०
१५ आनंदलहरी स्तोत्र	शंकराचार्य	"	३११-२४

४४२८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं०—२२२ । आ० —६॥×५॥ इञ्च पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ त्रिलोकसार	पं० आशाधर	संस्कृत	१-१४१
२ प्रशस्ति	ब्रह्म दामोदर	"	१४१-४२

दोहा— ॐ नमः सरस्वत्यै । अथ प्रशस्ति ।

श्रीमंतं सन्मतिं नेमि, निःकर्माणम् जगद्गुरुम् ।
भक्त्या प्रणम्य वक्ष्येऽहं प्रशस्तिं तां गुणोत्तमां ॥ १ ॥
स्याद्वादिनी वाग्देवी वस्तुतत्व प्रकाशिनी ।
सद्भिराराधिता चापि वरदा मंगलकरो ॥ २ ॥
वंदित्वा गौतमादीश्च संसारार्णवतारकान् ।
जन प्रणीत-शास्त्राणकैरवामलचंद्रकान् ॥ ३ ॥

मूलसघे बलात्कारगणे सारस्वते सति ।
गच्छे विश्वपदष्ठाने वद्ये वृंदारकादिति ॥ ४ ॥
नदिसघोभवत्तत्र नदितामरनायकः ।
कुदकुंदार्यसज्ञोऽसौ वृत्तरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥
तत्पट्टक्रमतो जात सर्वसिद्धान्तपारग ।
हमीर-भूपसेव्योयं धर्मचद्रो यतीश्वर ॥ ६ ॥
तत्पट्टे विश्वतत्वज्ञो नानाग्र थविशारद ।
रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनि ॥ ७ ॥
शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सव ।
प्रभाचद्रो जगद्व द्यो परवादिभयकर ॥ ८ ॥
कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शान्तमुद्रक ।
पद्मनदी जिताक्षोभूत्तत्पट्टे यतिनायक ॥ ९ ॥
तच्छिष्योजनिभव्यौघपूजिताह्रिविशुद्धधी ।
श्रुतचद्रो महासाधु साधुलोककृतार्थक ॥ १० ।
प्रामाणिक प्रमाणेऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधी ।
लक्षणे लक्षणार्थज्ञो भूपालवृंदसेवित ॥ ११ ॥
अर्हत्प्रणीततत्वार्थजाद पति निशापति ।
हतपचेषुरस्तारिर्जिनचद्रो विचक्षण ॥ १२ ॥
जम्बूद्रुमाकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।
तत्रास्ति भारतं क्षेत्र सर्वभोगफलप्रद ॥ १३ ॥
मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तम ।
धनधान्यसमाकीर्णग्रामैर्देवह्वितिसमै ॥ १४ ॥
नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्वसुखकर ।
मनोगतमहाभोग दाता दातृसमन्वित ॥ १५ ॥
तोडाख्योभूतमहादुर्गो दुर्गमुख्य श्रियापर ।
तच्छाखानगरं योपि विश्वभूतिविधाययत् ॥ १६ ॥

स्वच्छपानीयसंपूर्णौ वापिकूपादिभिर्महद् ।
श्रीमज्जगद्वटानामहद्भूम्यापारभूषितं ॥ १७ ॥
अर्हत्चैत्यालये रेजे भगवान्नंदनादर्कै ।
जिनबिम्बमठ्यबोहे वरिष्ठजनसुमंदिरो ॥ १८ ॥
प्रजाम्याधिपतिस्तस्य प्रजापालो जसवद्गुण ।
कास्त्यार्चन्द्रो जिनास्येप देवशास्त्रपवायव ॥ १९ ॥
शिष्यस्य पासको यातो पुष्टिसिद्धकारकः ।
पंचांगमनविस्फुरो निवाम्शास्त्रविधारद ॥ २ ॥
शौर्योदार्यगुणोपेतो राजनीतिविदांवरः ।
रामसिंहो विभुर्धीमान् भूपमैन्द्रो महायशाः ॥ २१ ॥
प्रासादरिणाम्बरस्तत्र जैनधर्मपरायणः ।
पामरामाचर श्रेष्ठी हरिचन्द्रोगुणाग्रणीः ॥२२॥
श्रावकाचारसंपन्ना व्रताहारादिदायका ।
शीलभूमिरभूत्तस्य भूमरिप्रियवादिनी ॥२३॥
पुत्रस्तयोरभूत्साधुम्यक्तार्हत्सुभक्तिकः ।
परोपकरणम्बांतो जिनार्चनक्रियोद्यत ॥२४॥
श्रीवकाचारतस्नातो गुकारम्मकारिणः ।
देसहा साधु यशाधारी राजवत्तप्रतिष्ठपः ॥२५॥
तस्य भार्या महासाध्वी शीलनीरतरंगिणी ।
प्रियवदा हिताचारात्गामी सौभाग्यधारिणी ॥२६॥
तयोः क्रमेण संजातौ पुत्रौ लावण्यसुन्दरौ ।
मयाध्यपुण्यसत्स्वामी रामसमरणकांचिद ॥२७॥
ि नयम्रोस्मयानन्दधारिणौ व्रतधारिणौ ।
अर्हत्तीर्थ महायात्रासपन्नप्रतिष्ठाविनौ ॥२८॥
रामसिंहमहाभूमपानपूज्यौ पुत्रौ ।
समुद्र तमिनामारौ धर्मानापुमहोत्तमौ ॥२९।

तथ्याद्दरोभवद्धीरो नायको खचन्द्रमा ।
लोकप्रशस्यसत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥
तत्कामिनी महच्छीलधारिणी शिवकारिणी ।
चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापध्वान्तापहारिणी ॥३१॥
कुलद्वयविशुद्धासीत् सघभक्तिसुरुषणा ।
धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भर्तृ भाक्तिका ॥३२॥
पुत्रावाम्नान्तयो स्वीयरूपनिर्जितमन्मथौ ।
लक्षणाक्षूणसद्गात्रौ योषिन्मानसवल्लभौ ॥३३॥
अर्हद्दे वसुसिद्धान्तगुरुभक्तिसमुद्यतौ ।
विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्थकौ ॥३४॥
तुषारडिण्डीरसमानकीर्ति कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी ।
प्रतापवान्धर्मधरो हि धीमान् खण्डेलवालान्वयकजभानु ॥३५॥
भूपेन्द्रकार्यार्थकरो दयाढ्यो पूढ्यो पूर्णेन्दुसकासमुखोवरिष्ठ ।
श्रेष्ठी विवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ॥३६॥
हस्तद्वये यस्य जिनार्चन वैजैनोवरावागमुखपकजे च ।
हृद्यक्षर वार्हत्मक्षय वा करोतु राज्य पुरुषोत्तमोय ॥३७॥
तत्प्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधाङ्गिनी ।
सती मतल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥३८॥
चतुर्विधस्य संघस्य भक्त्युल्लासि मनोरथा ।
नैनश्री सुधावात्कव्योकोशाभोजसन्मुखी ॥३९॥
हर्षमदे सहर्षात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।
दानमानोत्सवानन्दवर्द्धिताशेषचेतस ॥४०॥
श्रीरामसिंहेन नृपेण मान्यश्चतुर्विधश्रीवरसघभक्त ।
प्रद्योतिताशेपपुराणलोको नाथू विवेकी चिरमेवजीयात् ॥४१॥
आहारशास्त्रौषधजीवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधु ।
कल्पद्रुमोयाचककामधेनुर्नाथुसुसाधुर्जयतात्चरिव्या ॥४२॥

सर्वेषु शास्त्रेषु परंप्रशस्यं श्रीशास्त्रदानहतमाम्यमाम ।

स्वर्गापवर्गैकविभूतिपात्रं समस्तशास्त्रार्थविधानवर्त्म ॥४३॥

दानेषु सारं श्रुतिशास्त्रदानं यथा त्रिलोक्यां जिनपुंगवोऽस्य ।

श्रुतीति श्रुत्वा परमबनार्थं व्यसीसिखत्साधुसमां प्रतिष्ठां ॥४४॥

मत्वा शुभाधानं प्रतिष्ठासारमुत्तम ।

बहुवामोदरायापि दत्तवान् ज्ञानहेतवे ॥४५॥

धम्याप्रवारणसूर्पाके राज्येतीतेति सुन्दरे ।

विक्रमादित्यभूपस्य भूमिपालशिरोमणे ॥४६॥

ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे सोमवारे हि सौम्यके ।

प्रतिष्ठासार एवासौ समाप्तिमगमत्परां ॥४७॥

अर्हत्कमांभोजनप्राबरांगी सदभूषणाकुन्कुटसर्पयान ।

पद्मावती शासनदेवता सा नाथू सुसाधु चिरमेव पातात् ॥४८॥

श्रुघोतिता पर येन प्रमाणपुण्यास्रो ।

श्रीमदर्धसिद्धवंशोत्थ नाथू साधुः सनन्दतु ॥४९ ।

॥ इति प्रशस्त्यावली ॥

३ कर्णपिशाचिनीमंत्र	×	संस्कृत	१४४
४ महाशान्तिकविधि	×	"	१४६
५. नवग्रहस्थापनाविधि	×	"	"
६ पूजाकी सामग्री की सूची	×	हिन्दी	१५२-५५
७ समाधिमरण	×	संस्कृत	१६ -६४
८ स्नपनविधि	×	"	१७१-६५
९ भैरवाष्टक	×	"	१६६
१ भक्तामरस्तोत्र मंत्रसहित	×	"	१६८-२१४
११ दशावारणकालिका पूजा	×	"	२१८

४४२६ गुटका सं० ७६—पत्र सं०-२८ । आ०-५×४ इंच। लेखन काल सं० —१८२४ पूर्ण। दशा—सामान्य।

१. सयोगवत्तीसी	मानकवि	हिन्दी	१–२५
२ फुटकर रचनाएं	×	"	२६–५८

५४३० गुटका सं० ५० । पत्र स० ७४ । श्रा० ८×५ इञ्च । ले० काल १८६४ मगसर सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गगाराम वैद्य ने सिरोज मे ब्रह्मजी सतसागर के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१ राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल लालचद	हिन्दी	१–५
२ चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदास	"	६–२६
३. नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	"	२७–३१

नेमीश्वर राजुल को झगडो लिख्यते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोडी करी तुम योग लियो सो कहा मन ठाणो ।
सेज विचित्र तु लाई अनोपम सु दर नारि को सग न जानू ।।
सूक्ष तनु सुख छोडि प्रतक्ष काहा दुख देखत हो अनजानू ।
राजुल पूछत नेमि कुंवर कू योग विचार काहा मन आनू ।। १ ।।

नेमीश्वर उवाच

सुन रि मति मुठ न जान जानत हो भव भोग तन जोर घटें हैं ।
पाप वढे खटकर्म धके परमारथ को सब पेट फटे हैं ।।
इंद्रिय को सुख किंचित्काल ही आखिर दुख ही दुख रटे हैं ।
नेमि कुंवर कहे सुनि राजुल योग बिना नहिं कर्म्म कटे हैं ।। २ ।।

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि घरवार भये व्रतधार त्रिलोक गोसाई ।
धूप अनूप घनाघन धार तुवाट सहो ु काई के तोई ।।
भूख पियास अनेक परिसह पावन हो कछु सिद्धन आई ।
राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कुंवार सुनु मन लाई ।। १७ ।।

नेमीश्वरोवाच

काहे को वहूत करो तुम स्यापनप येक सुनो उपदेस हमारो ।
भोगहि भोग किये भव डूबत काज न येक सरे जु तुम्हारो ।।

मानव जन्म बड़ो जगमान के काज बिना मनु कूप में डारो ।

नेमी कहे सुन राजुल तू सब मोह तजि के काज सवारो ।। १८ ।।

अन्तिम भाग—राजुलोवाच—

श्रावक धर्म्म क्रिया सुभ नेयन लाय कि सगत वेग सुनाइ ।

मोम तजि मन सुध करि जिम नेम तणी जब सगत पाइ ।।

भेद अनेक करी दृढ़ता जिन मारग को सब बात सुनाई ।

सोच करी मन भाव धरी करी राजुल मार गई तब बाई ।। ११ ।।

कलश—

आदि रचम्हा विवेक सकल मुक्ती समझायो ।

नेमिनाथ दृढ़ चित्त बहु राजुल कु समझायो ।।

राजमति प्रबोध के सुध भाव संयम लीयो ।

ब्रह्म ज्ञानसागर कहे बाद नेमि राजुल कीयो ।। १२ ।।

।। इति नेमीश्वर राजुल विवाद सपूर्णम् ।।

४ मष्टाह्निकाव्रत कथा	विनयकीर्ति	हिन्दी	१२–११
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	१५
६ शांतिनाथस्तोत्र	मुनिगुणभद्र	"	"
७ वर्धमानस्तोत्र	×	"	१६
८ चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	१७
९ निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	हिन्दी	१८
१ [illegible]	द्यानतराम	"	१९
११ गुरुविनती	भूधरदास	"	४
१२ [illegible]	बनारसीदास	"	४१–४२
१३ प्रभाती [illegible]	×	"	४२
१४ [illegible]	[illegible]	"	"
१५ [illegible]	टोडर	"	४४
१६ [illegible]	भूधरदास	"	४५

१७. ऋषभजिनन्दजुहार कशरिया	भानुकीर्ति	हिन्दी	४५
१८. करूं ग्राराधना तेरी	नवल	"	"
१९. भूल प्रमा[illegible] कोई भसै	×	"	४६
२० श्रीपालदर्शन	×	"	४७
२१. भक्तामर भापा	×	"	४८–५२
२२. सावरिया तेरे वार वार वारि जाऊ	जगतराम	"	५२
२३. तेरे दरवार स्वामी इन्द्र दो [illegible]	×	"	५३
२४ जिनजी थाकी सूरत मनडो मोह्यो	ब्रह्मकपूर	"	"
२५ पार्श्वनाथ तीन	द्यानतराय	"	५५
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदास	"	र० सं० १७५५, ५४
२७. ग्रहो जगतगुरु देव	भूधरदास	"	५६
२८ चितामणि स्वामी साचा साहब मेरा	बनारसीदास	"	५६–५७
२९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुद	"	५७–६०
३० कलियुग की विनती	ब्रह्मदेव	"	६१–६३
३१ शीलव्रत के भेद	×	"	६३–६४
३२ पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	"	६५–६८

५४५१ गुटका सं० ५१। पत्र सं० १०६। ग्रा० ८×६ इंच। विषय-सग्रह। ले० काल १७९६ फागण सुदी ४ मगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सवाई जयपुर मे लिपि की गई थी।

१ भावनासारसग्रह	चामुण्डराय	सस्कृत	१–९०
२ भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित	×	"	स० १८०० ९१–१०६

५४५२. गुटका स० ५१ क। पत्र सं० १४२। ग्रा० ८×६ इंच। ले० काल १७९३ माघ सुदी २। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—किशनसिंह कृत क्रियाकोश भाषा है।

५४५३ गुटका स० ५२। पत्र स० १९४+९८+९६। ग्रा० ८×७ इञ्च।

विशेष—तीन मधु ग गुटकों का मिश्रण है।

१ पडिक्कमरणसूत्र	×	प्राकृत
२ पञ्चक्खाण	×	"
३ वन्दे तु सूत्र	×	"
४ थंभरणपार्श्वनाथस्तवन (वृहद्)	मुनिअभयदेव	पुरानी हिंदी
५. अजितशांतिस्तवन	×	"
६. "	×	"
७ भयहरस्तोत्र	×	"
८ सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	"
९ गुरुपारतंत्र एव ससस्मरण	"	"
१ भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	संस्कृत
११ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"
१२ शांतिस्तवन	देवसूरि	"
१३ सप्तर्षिजिनस्तवन	×	प्राकृत

लिपि संवत् १७५ आसोज सुदी ४ को सौभाग्य हर्ष ने प्रतिलिपि की थी।

१४ जीवविचार	श्रीमानदेवसूरि	प्राकृत
१५. नवतत्त्वविचार	×	"
१६. अजितशांतिस्तवन	मेरुनन्दन	पुरानी हिन्दी
१७ सीमंधरस्वामीस्तवन	×	"
१८ शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दर गरिण	राजस्थानी
१९ थंभरणपार्श्वनाथस्तवन मधु	×	"
२ "	×	"
२१ शांतिनाथस्तवन	समयसुन्दर	"
२२ चतुर्विंशति जिनस्तवन	जयसागर	हिन्दी
२३ चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन	आनन्दसूरि	" रचना सं १।
२४ पासवरणी पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगरिण	राजस्थानी

२५. पार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	राजस्थानी
२६. ”	”	”
२७. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	”	”
२८. ”	जोधराज	”
२९. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तवन	लालचंद	”
३०. तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
३१. ”	समयसुन्दर	”
३२. वीसविरहमानजकडी	”	”
३३. नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	”
३४. गौतमस्वामीरास	×	”
३५. बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित	”
३६ शीलरास	विजयदेवसूरि	”
		जोधराज ने खींवसी की भार्या के पठनार्थ लिखा।
३७. साधुवदना	आनद सूरि	”
३८ दानतपशीलसवाद	समयसुन्दर	राजस्थानी
३९. आषाढभूतिचौढालिया	कनकसोम	हिन्दी
		र० काल १६३८। लिपि काल सं० १७५० कार्त्तिक बुदी ५।
४०. आर्द्रकुमार धमाल	”	”
		रचना सवत् १६४४। अमरसर मे रचना हुई थी।
४१. मेघकुमार चौढालिया	”	हिन्दी
४२. क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	”
		लिपि संवत् १७५० कातिक सुदी १३ ।अवरगाबाद।
४३. कर्मवत्तीसी	राजसमुद	हिन्दी
४४. बारहभावना	जयसोमगणि	”
४५. पद्मावतीरानीआराधना	समयसुन्दर	”
४६. शत्रुञ्जयरास	”	”

४७ नेमिजिनस्तवन	सोमराज मुनि	हिन्दी	
४८ मलीपार्श्वनाथस्तवन	"	"	
४९. पञ्चकल्याणकस्तुति	×	प्राकृत	
५ पंचमीस्तुति	×	संस्कृत	
५१ संमीतिक पार्श्वजिनस्तुति	×	हिन्दी	
५२ जिनस्तुति	×	"	लिपि सं० १७५
५३ नवकारमहिमास्तवन	जिनवल्लभसूरि	"	
५४ नवकारसज्झाय	पद्मराजगणि	"	
५५ "	गुणप्रभसूरि	"	
५६ गौतमस्वामिसज्झाय	समयसुन्दर	"	
५७ "	×	"	
५८ जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	"	
५९ जिनकुशलसूरि चौपई	धर्मसागर उपाध्याय	"	
			र संवत् १४८१
६ जिनकुशलसूरिस्तवन	×	"	
६१ नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	"	र स १६८६
६२ नेमिराजुल गीत	भुवनकीर्ति	"	
६३ "	जिनहर्षसूरि	"	
६४ "	×	"	
६५ मुनिवर गीत	×	"	
६६ नारदा दि सज्झाय	समयसुन्दर	"	
६७ सज्झाय	"	"	
६८ [illegible] सज्झाय	"	"	
६९ मेघकुमारसज्झाय	"	"	
७ धनापी [illegible] सज्झाय	"	"	
७१ मीतासीदी सज्झाय		हिन्दी	

७२. चेलना री सज्झाय	×	हिन्दी
७३. जीवकाया ,,	भुवनकीर्ति	,,
७४. ,, ,,	राजसमुद्र	,,
७५ आतमशिक्षा ,,	,,	,,
७६. ,, ,,	पद्मकुमार	,,
७७. ,, ,,	सालम	,,
७८. ,, ,,	प्रसन्नचन्द्र	,,
७९. स्वार्थवीसी	मुनिश्रीसार	,,
८०. शत्रुंजयभास	राणसमुद्र	,,
८१ सोलह् सतियो के नाम	,,	,,
८२. बलदेव महामुनि सज्झाय	समयसुन्दर	,,
८३ श्रेणिकराजासज्झाय	,,	हिन्दी
८४ वाहुवलि ,,	,,	,,
८५. शालिभद्र महामुनि ,,	×	,,
८६. वंभणवाडी स्तवन	कमलकलश	,,
८७ शत्रुञ्जयस्तवन	राजसमुद	,,
८८. राणपुर का स्तवन	समयसन्दर	,,
८९. गौतमपृच्छा	,,	,,
९०. नेमिराजमति का चौमासिया	×	,,
९१. स्थूलिभद्र सज्झाय	×	,,
९२. कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	,,
९३. पुण्यछत्तीसी	,,	,,
९४. गौडीपार्श्वनाथस्तवन	,,	,, र० सं० १७२
९५ पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	,,
९६. नन्दषेणमहामुनिसज्झाय	×	,,
९७ शीलबत्तीसी	×	,,

१८ मौनएकादशी स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी

रचना सं० १६८१ । जैसलमेर में रची गई । लिपि सं० १७२१ ।

४४६४ गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २११ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । लेखनकाल १७७१ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ रामचन्द्रगुन की चौपई	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
पद—		
३ प्रभुजी मो तुम तारक नाम धरायो	हर्षचन्द्र	"
४ आज नाभि के द्वार भीर	हरिसिंह	"
५. तुम सेवामें काम सो ही सफल घरी	बखतराम	"
६ चरन कमल उठि प्रात देख मैं	"	"
७ सोही सन्त शिरोमनि जिनवर गुन गावै	"	"
८ मंगल आरती कीजै भोर	"	"
९. आरती कीजे श्री नेमकंवरकी	"	"
१० वंदौं दिगम्बर गुरु चरन जग तरन तारन जान	भूधरदास	"
११ त्रिभुवन स्वामीजी करुणा निधि नामीजी	"	"
१२. बाबा बनिया महुरा नहीं अम्मा ही लषम कुमार	"	"
१३ नेम कंवरजी पै सखि मन्ना	सर्वदास	"
१४ भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी की जकड़ी	महेन्द्रकीर्ति	"
१५. अहो जगतगुरु जगपति परमानंद निधान	भूधरदास	"
१६ देखो दुनिया के बीच है कोई अजब तमाशा	"	"
१७ विनती—वंदौं श्री अरहंतदेव सारद नित सुमरण हिरदै धरूं	"	"

	राजमती वीनवै नेमजी अजी तुम क्यो चढ़ा गिरनारि (विनती)	विश्वभूषण	हिन्दी	
१९.	नेमीश्वररास	ब्रह्म रायमल्ल	" र० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२०	चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नो का फल	×	"
२१.	निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत
२२.	चौवीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी
२३.	पाच परवीव्रत की कथा	वेणीदास	" लेखन संवत् १७७५
२४.	पद	वनारसीदास	"
२५.	मुनिश्वरो की जयमाल	×	"
२६	आरती	द्यानतराय	"
२७	नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द	"
२८.	विनति-(वदहु श्री जिनराय मनवच काय करोजी)	कनककीर्ति	"
२९.	जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"
३०.	प्राणी रो गीत (प्राणीडा रेतू काई सोवै रैन चित्त)	×	"
३१.	जकडी (रिषभ जिनेश्वर वदस्यौ)	देवेन्द्रकीर्ति	"
३२.	जीव संबोधन गीत (होजीव नव मास रह्यो गर्भ वासा)	×	"
३३.	लुहरि (नेमि नगीना नाथ या परि वारी म्हारालाल)	×	"
३४.	मोरडो (म्हारो रे मन मोरडा तूतो उडि गिरनारि जाइ रे)	×	"
३५.	वटोइ (तू तोजिन भजि विलम न लाय वटोई मारग भूलो रे)	×	हिन्दी
३६.	पंचम गति की वेलि	हर्षकीर्ति	" र० सं० १६८३

३७ करम हिण्डोलणा	×	हिन्दी	
३८ पद–(ज्ञान सरोवर मांहि झूलै रे हंसा)	सुरेन्द्रकीर्ति	"	
३९ पद–(चौबीसों तीर्थंकर करो भवि वंदन)	नेमिचंद	"	
४० करमो की गति न्यारी हो	ब्रह्मनाथू	"	
४१ आरती (करौं नाभि कंवरजी की आरती)	लालचंद	"	
४२. आरती	भगतराम	"	
४३ पद–(चोवड़ा पूजो जी पारस जिनेन्द्र रे)	"	"	
४४ गीत (जोरी वे लगावो हो नेमजी का नाम ल्यो)	पांडे नाथूराम	"	
४५. मुकरि–(यो संसार अनादि को सोही नाम जप्यो री सो)	नेमिचन्द	"	
४६ मुकरि–(नेमि कुंवर व्याहन चढ्यो राजुल करै छ सिंगार)	"	"	
४७. जोगीरासो	पांडे जिनदास	"	
४८ कलियुग की कथा	केशव	"	४४ पद्य। ले० सं० १७७१
४९ राजुलपचीसी	लालचन्द विनोदीलाल	"	"
५० महाम्निका व्रत कथा	"	हिन्दी	
५१ मुनिवरों की जयमाल	ब्रह्मजिनदास	"	
५२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	
५३ तीर्थङ्कर जकड़ी	हर्षकीर्ति	"	
५४ जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"	
५५. हम बैठे अपने मौन सैं	"	"	
५६ ब्रह्म धवानी जीवको दुर नाम बतावै	"	"	

५७. रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी
५८. स्फुट दोहे	"	"
५९. गुणवेलि (चन्दन वाला गीत)	"	"
६०. श्रीपालस्तवन	"	"
६१. तीन मियां की जकडी	धनराज	"
६२. सुखघडी	"	"
६३. कक्का वीनती (बारहखडी)	"	"
६४. अठारह नाते कीकथा	लोहट	"
६५. अठारह नाता का व्यौरा	×	"
६६. आदित्यवार कथा	×	" १५४ पृष्ठ
६७. धर्मरासो	×	"
६८. पद–देखो भाई आजि रिषभ घरि आवे	×	"
६९. क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	"
७०. गुरुओ की स्तुति	—	संस्कृत
७१. सुभाषित पद्य	×	हिन्दी
७२. पार्श्वनाथपूजा	×	"
७३. पद–उठो तेरो मुख देखू नाभिजी के नन्द	टोडर	"
७४ जगत मे सो देवन को देव	बनारसीदास	"
७५. दुविधा कब जइ या मन की	×	"
७६ इह चेतन की सब सुधि गई	बनारसीदास	"
७७. नेमीसुरजी को जनम हुयो	×	"
७८. चौवीस तीर्थङ्करो के चिह्न	×	"
७९. दोहासंग्रह	नानिगनास	"
८०. धार्मिक चर्चा	×	"
८१. दूरि गयो जग चेती	घनश्याम	"
८२. देखो माइ आज रिषभ घर आवै	×	"

८३	चरणकमल को ध्यान मेरै	×	हिन्दी
८४	जिनजी थांकीजी मूरत मनड़ो मोहियो	×	"
८५	म्हारी मुक्ति पंथ बट पारी म्हारी	"	"
८६	समकित भर जीवन थोरो	रूपचन्द	"
८७	नेमजी पै कोई झूठ मारयो महाराज	हर्षकीर्ति	"
८८	देखरी कहूं नेमि कुमार	"	"
८९	प्रभु तेरी मूरत रूप बनी	रूपचन्द	"
९०	चिंतामणी स्वामी सांचा साहब मेरा	"	"
९१	सुखकी कब मानैगी	हर्षकीर्ति	"
९२	चेतन तू तिहूं काल अकेला	"	"
९३	पद मंगल	रूपचन्द	"
९४	प्रभुजी थांका चरणां सू सुख पायां	ब्रह्म कपूरचन्द	"
९५	लघु मंगल	रूपचन्द	"
९६	सम्मेद शिखर चली है जीवड़ा	×	"
९७	हम आये हैं जिनराज तुम्हारे वन्दन को	द्यानतराय	"
९८	ज्ञानपचीसी	बनारसीदास	"
९९	तू भ्रम भूलि न रे प्राणी सज्ञानी	×	"
१००	हुजिये दयाल प्रभु हूजिये दयाल	×	"
१०१	मेरा मन की बात कासूं कहिये	सबलसिंह	"
१०२	मूरत तेरी सुन्दर सोहै	×	"
१०३	प्यारे हो लाल प्रभु का दरस की बलिहारी	×	"
१०४	प्रभुजी स्वामियां प्रभु थाप बारणैं स्यामियां	×	"
१०५	ज्यों जाणो त्यों त्यारोजी दयानिधि	खुशालचन्द	"
१०६	मोहि लगता भी जिय प्यारा	हठमलदास	"
१०७	सुमरन ही में त्यारे प्रभुजी तुम सुमरन ही में त्यारे	द्यानतराय	"

१०८ पार्श्वनाथ के दर्शन   वृन्दावन   हिन्दी   र० सं० १७६८

१०९ प्रभुजी मैं तुम चरणशरण गह्यो   बालचन्द   "

५४३५. गुटका स० ५४ । पत्र स० ८८ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—इस गुटके मे पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशातिक पूजा विधान है । ६५ से ८१ तक अन्य प्रतिष्ठा सम्बन्धी पूजाएं एव विधान हैं । पत्र ८२ पर अपभ्रंश मे चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा मे 'रे मन रमि रहु चरणजिनन्द' नामक एक वडा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ।।ढाल।।
जह पठावहि तिहुवण इद ।। रे मन० ।।
यहु ससार असार मुणे धिरणु करु जिय धम्मु दयाल ।
परगय तच्चु मुणहि परमेट्ठिहि सुमरीह अप्पु गुणाल ।। रे मन० ।। १ ।।
जीउ अजीउ दुविहु पुणु आसव वन्धु मुणहि चउभेय ।
सवरु निजरु मोखु वियाणहि पुण्णपाप सुविशेय ।। रे मन० ।। १ ।।
जीउ दुभेउ मुक्त ससारी मुक्त सिद्ध सुवियाणे ।
वसु गुण जुत्त कलङ्क विवजिद भासिये केवलणाणे ।। रे मन० ।। ३ ।।
जे ससारि भमहि जिय सकुल लख जोणि चउरासी ।
थावर वियलिदिय सयलिदिय, ते पुग्गल सहवासी ।। रे मन० ।। ४ ।।
पच अजीव पढयमु तहि पुग्गलु, धम्मु अधम्मु आगास ।
कालु अकाउ पच कायासो, ऐच्छह दव्व पयास ।। रे मन० ।। ५ ।।
आसउ दुविहु दव्वभावह, पुणु पच पयार जिणुत्त ।
मिच्छा विरय पमाय कसायह जोगह जीव प्रमुत्त ।। रे मन० ।। ६ ।।
चारि पयार बन्धु पयडिय हिदि तह अणुभाव पयूस ।
जोगा पयडि पयूसठिदायणु भाव कसाय विसेस ।। रे मन० ।। ७ ।।
सुह परिणामे होइ सुहासउ, असुहि असुह वियाणे ।
सुह परिणामु करहु हो भवियहु, जिम सुद्ध होय नियाणे ।। रे मन० ।। ८ ।।

सवर करहि जीव अंग सुन्दर आसव वार निरोहं ।
मरहु सिव समु आपु वियाणहु, सोह सोहं सोहं ॥ रे मन ॥ ९ ॥
णिजर करहु विणासहु कारणु जिम जिणवयण समाले ।
बारह विह तव समविहु समयु, पंच महाव्रत पाले ॥ रे मन० ॥ १ ॥
प्रकविहि कम्मविमुक्क परमपउ परमप्पयकुलिय वासो ।
णिवसु मुक्कुलि राजु तहिपुरि, इंदियसु इंद्र वासो ॥ रे मन ॥ ११ ॥
जाणि असरणु सहु मया करणा पंडितु मनह विचारह ।
जिणवर सासणु सम्मु पयासणु, सो हिय वुह थिर धारह ॥ रे मन ॥ १२ ॥

५४३६ गुटका स० ५५ । पत्र स २४ । आ १×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले काल स १६८८ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५४३७ गुटका सं० ५६ । पत्र सं १५ । आ ६½×४½ इञ्च । पूर्ण एव जीर्ण । अधिकांश पाठ अशुद्ध है । लिपि विकृत है ।

विशेष—इसमें निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ कर्मनोकर्म वर्णन	×	प्राकृत	१-५
२ ग्यारह अग एवं चौदह पूर्वों का विवरण	×	हिन्दी	६-१२
३ श्वेताम्बरो के ८४ बाद	×	"	१२-१३
४ संहनन नाम	×	"	१३
५ नक्षत्राविल वचन	×	"	१४

ॐ नमः श्री पार्श्वनाथ काले बुद्धकीर्ति ... मिथ्यात्व ... स्थापितं ॥ १ ॥
संवत् १३६ वर्ष भद्रबाहुशिष्येण ... स्थापित ॥ २ ॥
श्री शीतलतीर्थंकरकाले श्रीरत्नम्बा ... स्थापितं ॥ ३ ॥
सर्वतीर्थंकराणां काले
श्रीपार्श्वनाथगणि शिष्येण ... ५ ॥
संवत् ५२६ ...
संवत् २ ५

चतु' सघोत्पत्ति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसघमडितेन अर्हद्वलिगुप्तिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामत्रय चारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसघ., सिंहसघ, सेनसघ, देवसंघ इति चत्वार संघा स्थापिता । तेभ्यो यथाक्रम बलात्कारगणादयो गणा सरस्वत्यादयो गच्छाश्च जातानि तेषा प्राव्रज्यादिषु कर्म्मसु कोपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

सवत् २५३ वर्षे विनयमेनस्य शिष्येण सन्यासभगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसघ स्थापित ॥ ६ ॥

सवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन नि पिच्छत्व स्थापितं ॥ १० ॥

सवत् १८०० वर्षे अतीते वीरचन्द्रमुने सकाशात् भिल्लसघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पचमकालावसाने सर्वेषामेषा ॥

गृहस्थाना शिष्याणा विनाशो भविष्यत्येक जिनमतं कियत्काल स्थाप्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्त ॥

६ गुणस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५–२०
७ जिनान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१–२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४–२७
६ स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२–३७
१०. यति आहार का ४६ दोष	×	"	३७
११ लोक वर्णन	×	"	३८–५३
१२ चउवीस ठाणा चर्चा	×	"	५४–८६
१३. अन्यस्फुट पाठ सग्रह	×	"	६०–१५०

५४३८ गुटका स० ५७—पत्र सं० ४–१२१ । आ० ६×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१ त्रिकालदेववदना	×	सस्कृत	५–१२
२ सिद्धभक्ति	×	"	१२–१४
३ नदीश्वरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४–१६
४ चौतीस अतिशय भक्ति	×	सस्कृत	१६–१६
५ श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१६–२१
६ दर्शन भक्ति	×	"	२१–२२
७ ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८ चरित्र भक्ति	×	सस्कृत	२२–२४
६. अनागार भक्ति	×	"	२४–२६

संवर करहि जीव जग सुन्दर पासव द्वार निरोहुं ।
प्रगट सिव सगु प्रापु विचारहु सोह सोहं सोहं ॥ रे मन ॥ ९ ॥
णिज्जर परह विणासहु कारणु, जिय जिणवयणु सम्भाले ।
बारह विह तव सगविहि सजमु, पंच महाव्रत पाले ॥ रे मन ॥ १० ॥
प्रडविहि कम्मविमुक्क परमपद परमप्पयकुलि वासो ।
णिवसु मुकुति रज्जु तहिपुरि, ईप्सिहु ईश्वर वासो ॥ रे मन ॥ ११ ॥
जाणि प्रसरण कछु क्षमा करणा पंडितु मनह विचारह ।
जिणवर सासणु वम्मु पयासणु, सो हिय थुव थिर धारह ॥ रे मन ॥ १२ ॥

४४२६ गुटका स ४५ । पत्र स २४ । प्रा ९×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले काल स १६८८ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

४४२७ गुटका स० ४६ । पत्र सं १५ । प्रा ६½×४½ इञ्च । पूर्ण एवं जीर्ण । प्रधिकांश पाठ प्रशुद्ध है । लिपि विकृत है ।

विशेष—इसमें निम्न पाठों का सग्रह है ।

१ कर्मनोकर्म वर्णन	×	प्राकृत	१–२
२ ग्यारह अग एवं चौदह पूर्वों का विवरण	×	हिन्दी	६–१२
३ श्वेताम्बरों के ८४ वाद	×	"	१२–१३
४ संहनन नाम	×	"	१३
५ सघोत्पत्ति वर्णन	×	"	१४

ॐ नम श्री पार्श्वनाथ काले बुद्धकीर्तिना एकान्त मिथ्यात्वबौद्ध स्थापितं ॥ १ ॥
संवत् १३६ वर्ष भद्रबाहुशिष्येण जिनचन्द्रेण सशयमिथ्यात्वं श्वेतपटमत स्थापित ॥ २ ॥
श्री शीतलतीर्थङ्करकाले क्षीरकदम्बाचार्यपुत्रेण पर्वतेन विपरीतमत मिथ्यात्व स्थापित ॥ ३ ॥
सर्वतीर्थङ्कराणां काले विनयमिथ्यात्वं ॥ ४ ॥
श्रीपार्श्वनाथगणि शिष्येण मस्करिपूर्णनाम्नाज्ञानमिथ्यात्वं श्री महावीर काले स्थापितं ॥ ५ ॥
संवत् ५२६ वर्षे श्री पूज्यपादशिष्येण प्राभृतवेदिना वज्रनंदिना महामोहकेन द्राविडसंघ स्थापित. ।
संवत् २ ५ वर्षे श्वेतपटात् श्रीकलशात् यापनाक संघात्पत्तिर्जाता । ७ ॥

चतु सघोत्पत्ति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसघमडितेन अर्हद्वलिगुप्तिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामत्रय चारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसघ, सिंहसघ, सेनसघ, देवसघ इति चत्वार सघा स्थापिता । तेभ्यो यथाक्रमं बलात्कारगणादयो गणा सरस्वत्यादयो गच्छाश्च जातानि तेषा प्राव्रज्यादिषु कर्म्मसु कोपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

सवत् २५३ वर्षे विनयसेनस्य शिष्येण सन्यासभगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसघ स्थापित ॥ ९ ॥

सवत् ९५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन रामसेनेन नि पिच्छत्व स्थापित ॥ १० ॥

सवत् १८०० वर्षे अतीते वीरचन्द्रमुने सकाशात् भिल्लसघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पचमकालावसाने सर्वेषामेषा ॥

गृहस्थाना शिष्याणा विनाशो भविष्यत्येक जिनमत कियत्काल स्थाप्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्त ॥

६ गुणस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५–२०
७ जिनान्तर	वीरचद्र	हिन्दी	२१–२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४–२७
९ स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२–३७
१०. यति आहार का ४६ दोष	×	"	३७
११ लोक वर्णन	×	"	३८–५३
१२ चउवीस ठाणा चर्चा	×	"	५४–८९
१३. अन्यस्फुट पाठ सग्रह	×	"	९०–१५०

५४३८ गुटका स० ५७—पत्र स० ४–१२१ । आ० ९×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१ त्रिकालदेववदना	×	सस्कृत	५–१२
२ सिद्धभक्ति	×	"	१२–१४
३ नदीश्वरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४–१६
४ चौतीस अतिशय भक्ति	×	सस्कृत	१६–१९
५ श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१९–२१
६ दर्शन भक्ति	×	"	२१–२२
७ ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८ चरित्र भक्ति	×	सस्कृत	२२–२४
९. अनागार भक्ति	×	"	२४–२६

१	योग भक्ति	×	"	२६–२८
११	निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	२८–९
१२	बृहत्स्वयम्भू स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	१–४१
१३	गुरावली (लघु आचार्य भक्ति)	×	"	४१–४४
१४	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	×	"	४४–४६
१५	स्तोत्र संग्रह	×	"	४६–५०
१६	भावना बत्तीसी	×	"	५१–५२
१७	आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	५३–६
१८	संबोधपंचासिका	×	"	६१–६८
१९	द्रव्यसंग्रह	नैमिचन्द्र	"	६८–७१
२	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	७१ ७५
२१	द्वात्रिंशत् भावना	×	"	७५–८३
२२.	परमानंद स्तोत्र	×	"	८३ ८४
२३	मदनपराजिति संधि	हरिचन्द्र	प्राकृत	८५–८६
२४	चूनडीरास	विनयचन्द्र	"	८ –९४
२५.	समाधिमरण	×	अपभ्रंश	९४–८६
२६	निर्झरपंचमी विधान	मुनि विनयचन्द्र	"	९९–१ ५
२७	सुप्पयदोहा	×	"	१ ५–११
२८	द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	११ –११२
२९	"	अल्हण	"	११२–११४
३	योगि चर्चा	महात्मा आनन्द	"	११४–११६

५४३६. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० १६–२१ । आ० ६×६ । अपूर्ण ।

विशेष—गुटका प्राचीन है ।

१	जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	अपभ्रंश	अपूर्ण	१६ २

अन्तिम भाग—

कत्तिय किण्हु चउद्दसि रत्तिहि, गउ सम्मइ णिव्वु पवम ख्तिहि ।

इय सम्मइ वहिउ सपत्तामको जिणरत्ति हि फलु भवियहु मंगलो ।

अवरुवि जोणरत्ति करेसइ, सो मरद्धयरुउ लहेसइ।

सारउ सुउ महियलि भुंजेसइ, रइ समाण कुल उत्तिरमेसइ ॥

पुणु सोहम्म सग्गी जाएसइ, सहु कीलेसइ णिरु सुकुमालिहि।

मणुवसुक्खु भुंजिवि जाएसइ, सिवपुरि वासु सोवि पावेसइ।

इय जिणरत्ति विहाणु पयोसिउ, जहजिणसासणि गणहरि भासिउ।

जे हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, त वुहारण मठु खमहु णिरुत्तउ।

एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ।

जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ अहिउ पुण्ण फलु पावइ।

घत्ता—

सिरि णरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, बड्ढमाण तित्थकरु।

जइ मागिउ देइ करण करेइ देउ सुबोहि लाहु परमेसरु ॥ २७ ॥

इय सिरि बड्ढमाणकहापूराणे सिधादिभवभावावण्णणो जिणराइविहाणफलसपत्ती ॥

सिरि णरसेण विरइए सुभव्वासण्णणाणिमित्ते पढम परिछेह सम्मत्तो।

॥ इति जिणरात्रि विधान कथा समाप्ता ॥

२ रोहिणिविधान मुणिगुणभद्र अपभ्रंश २१-२५

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयजुलु।

सिवमग्गसहायहो केवलकायहो रिसहहो पणविवि कयकमलु

परमेट्ठि पच पणविवि महत, भवजलहि पोय विहडिय कयत।

सारभ सारस ससि जोह्न जेम, णिम्मल वणिज्ज केणकेम।

जिहि गोयमए विणिव वरस्स, सेणिय रायस्स जसोहरस्स।

तिह रोहिणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावणव्व।

इय जवूदीव हो भरह खेत्ति, कुंरु जगल ए सिवि गए जणेत्ति।

हत्थिणाउरु पुरजण पवररिद्धु, जणु वसइ जित्थु सह सय समिद्धु।

तहि वीयसोउ गमसोउ भूउ, विज्जु पहरइ रइ हियय भूउ।

तहा णदणु कुलणन्दण असोउ, जमिल्लवि गउ अइ पूरि सोउ।

तह मम भिसइ जण कुणइ विसए चपाउरि पयउ गुणाइ विसए।
मद्दइ णामिणी उणाइवत्तु, सिरिमइ पियसक्ति रिउ मम्मनु।
सुय मद्दु तासु मरि कणिय तासु, रोहिणी कण्णार्यं कामपासु।
कतिय मट्ठाहिय सोरवास गयपुर वहि जिण धमु पुज्जवास।
जिणु मविवि मुणि वरिवि मसेस सिरि वासुपुज्ज पयमविसेस।
मह मज्झिणि सम्णहो णिवह वैइ गोहिणी जाणएणा पंवत्तइ।
पमसोहवि मुव कुम्मरण समेय परिणम्मण विव हयमणि समेय।
णियमवि मंतु गिभ्हिवि मभेउ णिय मुडि विमाणिवि विहियसेउ।

घत्ता—

ता पुरवउ बाहिरि कि परिउ साहि, रिवइ मंच भउ पासहि।
कणयमयमु संचिय रयण करंचिय मंचिय मडव पासहि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

निसुणइ विसवणि सावहणु वियसहएं करलमु मावमलु।
वच्चा घामतो मह सरणुणत्ति मम सावहो जीवहो सहणसत्ति।
मणु हवइ मुहासुह पक्कुमीउ तणु मिष्णु मेइ मरणाउ भीउ।
ससार सहुवत्तु पुरकर समुद्दु, मंडुवि भाउ विहडु कुसुरवु।
मत्सवइ वम्मु जो एहि विव, तही विलयं संवर होइ मव।
समं भावि सहियइ कम्मुभाउ परिसमिउ जोहु जीविउ सपाउ।
सुक्कु जिण धम्मु समुत्ति मम्मु, णवि सगहियउ कम्मेव समगउ।
इउ सुणिवि सविवि जिण सिक्ख विक्ख, हुउ मणहर राउ मसीउ भिक्ख।
कमहिय घणत्थामउ ममममलणाणु, केवलु भउ मोक्खहु सुह विहाणु।
एहि तणउ चरिवि पवण्णासमि मण्णु, एच्छि विवि यी सिगु मम्मी।
पीयउ विससि संपत्त मज्ज भउभरी विषिक्खय सुगहु सज्ज।
हुव के वमोक्ति पयहणि विकम्म मणु हवहि णिरतर मुत्ति सम्म।
भउचरिय ममकणसी चरि सुलक्खि, ग पणसिरि णाम इमी वलक्खि।
ये हुवउ विहिउ ताइएउ रोहिणि कहुविरइय तासु हेउ।

घत्ता—

सिरि गुणभद्दमुणीसरेण विहिय कहा बुधी भरेण ।

सिरि मलयकित्ति पयल जुयलणाविवि, सावयलम्रो यह मणुछविवि ।

णादउ सिरि जिणसख, णादउ तहभूमि बालुणि विग्ध ।

णादउ लक्खणु लक्खं, दितु सया कप्पतरु वजइ भिक्ख ।

॥ इति श्री रोहिणी विधान समाप्त ॥

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	अपभ्रंश	२६-२६
४ दशलक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	"	३०-३३
५ चदनषष्ठीव्रतकथा	आचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिन प्रणम्य चद्राभ कर्मौघध्वान्तभास्कर ।

विधान चदनषष्ठ्यत्र भव्याना कथमिहा ॥ १ ॥

द्वीपे जम्बूद्रुम केम्मिनु क्षेत्रे भरतनामनि ।

काशी देशोस्ति विख्यातो वर्जितो बहुधावुधे ॥ २ ॥

अन्तिम—

आचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशत ।

कृत्वा चदनषष्ठीय कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥

यो भव्य कुरुते विधानममल स्वर्गापवर्गप्रदां ।

योन्य कार्यते करोति भविन व्याख्याय सबोधन ॥

भूत्वासौ नरदेवयोर्व्वरसुख सच्छत्रसेनाव्रता ।

यास्यतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैन श्रीया ॥ ७८ ॥

॥ इति चदनषष्ठी समाप्त ॥

६ मुक्तावली कथा	×	संस्कृत	३६-३८

आरम्भ— आदि देव प्रणम्योक्त मुक्तात्मान विमुक्तिद ।

अथ सक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावलिविधि ॥ १ ॥

७ सुगंधदसमी कथा रामकीर्ति के शिष्य अपभ्रंश १८–४१

विमल कीर्ति

आदि भाग

पणवेप्पिणु सम्मइ जिणेसरहो का पुप्फसूरि प्रागम भणिया ।

णिसुणिज्जहु भवियहु इक्कमणा कहकहमि सुगंधदसमी हियधारिणया ।।

अन्तिम पाठ

दसमिहि सुगंध विहाणुकरेविणु तहय कप्प उप्पण्ण मरेविणु ।

चउदह सायरयेहि पसाहिय सामी सुहइ सु कइ अविरोहिय ।।

पुहवी मण्डणु पुर सुर मुहइ राउ पयाउ दयावरु णहइ ।

माणस सु दरि गति उपण्णी मयणावलि णामि छपुण्णी ।।

विणि विधि कुमरि वियाणहु सती मण्डलीय माणस मोहती ।

सामवण्ण मण्णवि सुणेहि तणु जिणवरु सामिउ पज्जइ मणु दिणु ।।

साणु करविहु विति ण स्वक्कइ तहु म सूल का वण्ण ण सक्कइ ।

जम्मवत पेलि णरएहि पोमाइमइ धम्म पसगहि ।

राय सापरिखाविय जामहि पुत्त कमलहि बद्दियतामहि ।।

रामकित्ति गुरुविणउ करेविणु विणु विमल कीत्ति महियलि पवेविणु ।

पयडइ पुणु तव चरणु करेविणु सइ मणुक्कमेण सोमक्कुमहेसर ।।

घत्ता

जो करइ कराबइ एहविहि सवक्खाणिय विमविण्हु दावेइ ।

सो जिणवाहु भासियहु समु मोक्खु फल पावइ ।। ८ ।।

इति सुगंधदसमीकथा समाप्ता

८ पुष्पाञ्जलि कथा × अपभ्रंश ४१–४२

आरम्भ

जय जय सयह जिणेसर हयवम्मीसर मुत्तिसिरीवरमणवरण ।

प्रमसय मणभासुर सहवमहीसर कुवि गिरायर समवरण ।। १ ।।

अन्तिम घत्ता

समवतरिणि रयणकित्ति मुणि सिस्स बुहियं विज्जइ ।

भावकित्ति कुउ प्रमतरिंतिपुन पुप्फु जनि विहि किज्जइ ।। ११ ।।

पुष्पांजलि कथा समाप्ता

६ अनतविधान कथा	×	अपभ्र श	४६–५१

५४४० गुटका सं० ५६—पत्र सख्या—१८३ । आ०–७॥×६ । दशा-सामान्यजीर्ण ।

१. नित्यवदना सामायिक	×	सस्कृत प्राकृत	१–१२
२. नैमित्तिकप्रयोग	×	संस्कृत	१५
३. श्रुतभक्ति	×	"	१५
४. चारित्रभक्ति	×	"	१६
५ आचार्यभक्ति	×	"	२१
६. निर्वाणभक्ति	×	"	२३
७ योगभक्ति	×	"	"
८. नदीश्वरभक्ति	×	"	२६
६. स्वयभूस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	"	४३
१०. गुर्वावलि	×	"	४५
११. स्वाध्यायपाठ	×	प्राकृत सस्कृ	५७
१२. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	६७
१३ सुप्रभाताष्टक	यतिनेमिचद	"	पद्य स० ८
१४. सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	"	" २५
१५. स्वप्नावलि	मुनि देवनदि	"	" २१
१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	"	"	" २५
१७. भूपालम्तवन	भूपाल कवि	"	" २५
१८. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	" २६
१६. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	"	" ४०
२० पार्श्वनाथस्तवन	देवचद्र सूरि	"	" ४४
२१ कल्याण मदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्रसूरि	सस्कृत	
२२. भावना बत्तीसी	×	"	
२३. करुणाष्टक	पद्मनदी	"	
२४. वीतराग गाथा	×	प्राकृत	

२५ मंगलाष्टक	×	संस्कृत	
२६ भावना चौतीसी	भ पद्मनंदि	"	१२-२१

आरम्भ

शुद्धप्रकाशमहिमास्तसमस्तमोहं, निद्रातिरेकमसमावममस्तभाय ।

मार्तंडवत्स्वपुरमास्तबरवानमिन्न स्वायंभुव भवतु धाम सतां शिवाय ॥ १ ॥

श्रीगौतमप्रमुखयोपि विमोर्महिम्न प्राय शमानयनम स्तवनं विधातु ।

प्रप विचार्य जडतस्तवमुमलोके सौख्याप्तये जिन भविष्य त मे किमन्यत् ॥ २ ॥

अन्तिम

श्रीमत्प्रमेन्दुप्रभुवाक्यरश्मि विकासिचेत कुमुदः प्रमोदात् ।

श्रीभावनापद्धति मात्मशुद्ध्यै श्रीपद्मनंदी स्वयं चकार ॥ ३४ ॥

इति श्री भट्टारक पद्मनंदिदेव विरचितं चतुस्त्रिंशत् भावना समाप्तमिति ।

२७ भक्तामरस्तोत्र	आचार्य मानतुंग	संस्कृत
२८ वीतरागस्तोत्र	भ पद्मनंदि	"

आरम्भ

स्वात्मावबोधविशदं परमं पवित्रं ज्ञानैकमूर्तिमगुणबगुणैकपात्र ।

मास्वादितास्वसुखाम्बलसत्पराग पश्यति पुण्यसहिता भुवि वीतरागं ॥ १ ॥

उग्रतपस्तपरमोजितपापपंक चैतन्यचिन्हमचलं विमलं विलंकं ।

देवेन्द्रवृन्दसहितं कल्याणमतागं पश्यंति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ॥ २ ॥

आद्यन्तविशुद्धिमहिमावधिमस्तलोकं धर्मोपदेशविधिवेदितभव्यलोकं ।

माचारचन्द्रमति जनतानुरागं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ३ ॥

कंदर्पे सर्प्पे भवमासनबैनतेयं मा पाप हारिजगदुत्तमनामधेयं ।

संसारतापु परिमथन मवराग पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ४ ॥

निर्णाशितमुकमलासिवं विदंभं बन्दिष्णु सर्वतपर्यामृतपूर्णकुंभ ।

क्रमादिमोहतस्कंधनबन्धनं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ५ ॥

प्रालम्बन शरीरिकृतधर्मपंथ व्यामिश्रमनिक्लिष्टतचर्मचर्यं ।

प्रम्लानवर्जित नराधाम विपाम जीर्ण पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ६ ॥

स्वच्छोच्छलव्धरिणविरिणज्जितमेघन द, स्याद्वादवादितमयाकृतसद्विपादं ।

नि.सीमसजमसुधारसतत्तडाग पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ॥ ७ ॥

सम्यक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णचन्द्रं मागल्यकारणमनतगुणं वितन्द्रं ।

इष्टप्रदाणविधिपोषितभूमिभाग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचितं किलवीतरागस्तोत्रं,

पवित्रमणवद्यमनादिनादौ ।

य कोमलेन वचसा विनयाविधीते,

स्वर्गापवर्गकमलातमल वृणीत ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्र समाप्तेति ॥

२९. आराधनासार	देवसेन	अपभ्रंश	र० सं० १०८६
३० हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयभू	„ स्वयंभू रामयण का एक अंश	११९
३१. कालावलीपद्धडी	×	„	११९
३२. ज्ञानपिण्ड की विंशति पद्धडिका	×	„	१३१
३३. ज्ञानाकुश	×	संस्कृत	१३२
३४, इष्टोपदेश	पूज्यपाद	„	१३६
३५. सूक्तिमुक्तावलि	आचार्य सोमदेव	„	१४६
३६. श्रावकाचार	महापंडित आशाधर	„ ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण	१८३

५४४१. गुटका सं० ६० । पत्र स० ५६ । आ० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२–२७
२. पचमेरु की पूजा	×	„	२७–३१
३ लघुसामायिक	×	सस्कृत	३२–३३
४ आरती	×	„	३४–३५
५ निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	३६–३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । आ० ८½×६ इञ्च । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ब्रह्मकृत हिन्दी पद संग्रह है ।

४४४३ गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२८ अपूर्ण ।

विशेष—प्रति जीर्णशीर्ण अवस्था में है । मधुमालती की कथा है ।

४४४४ गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

१ तीर्थोदकविधान	×	संस्कृत	१-११
२ जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१२-२२
३ देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	२२-३६
४ जिनयज्ञकल्प	"	"	३७-१२५

४४४५ गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

४४४६ गुटका सं० ६५—पत्र संख्या-८६-४११ । आ० -८×६॥ । लेखनकाल—१६११ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१ सहस्रनाम	पं० आशाधर	संस्कृत	अपूर्ण ।	८६-८७
२ रत्नत्रयपूजा	पद्मनंदि	अपभ्रंश	"	८७-६१
३ नवीश्वरपंक्तिपूजा	"	संस्कृत	"	६१-६७
४ बत्तीसिद्धपूजा (कर्मदहन पूजा)	सोमदत्त	"		६८-१ ६
५. सारस्वतयंत्र पूजा	×	"		१ ७
६ बृहत्कलिकुण्डपूजा	×	"		१ ७-१११
७ गणधरवलयपूजा	×	"		१११-११५
८ नंदीश्वरजयमाल	×	प्राकृत		११६
६. बृहत्षोडशकारणपूजा	×	संस्कृत		११६-१२८
१ ऋषिमंडलपूजा	ज्ञान भूषण	"		१२८-३६
११ शांतिचक्रपूजा	×	"		१३७-३८
१२ पञ्चमेरुपूजा (पुष्पाञ्जलि)	×	अपभ्रंश		१३६-४१
१३ पंचकल्याणक जयमाल	×	"		१४२
१४ बारह अनुप्रेक्षा	×	"		१४३-४७

१५ मुनीश्वरो की जयमाल	×	अपभ्रंश	१४७
१६. णमोकार पाथड़ी जयमाल	×	”	१४९
१७ चौवीस जिनद जयमाल	×	”	१५०-१५२
१८ दशलक्षण जयमाल	रइधू	”	१५३-१५५
१९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१५५-१५७
२० कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	”	१५७-१५८
२१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	”	१५८-१६०
२२ अकलंकाष्टक	स्वामी अकलंक	”	१६०
२३ भूपालचतुर्विंशति	भूपाल	”	१६१-६२
२४. स्वयभूस्तोत्र (इष्टोपदेश	पूज्यपाद	”	१६२-६४
२५ लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनदि	”	१६४
२६. लघुसहस्रनाम	×	”	१६५
२७. सामायिकपाठ	×	प्राकृत सस्कृत	ले० स० १६७५, १६५-७०
२८. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत	१७१
२९. भावनाद्वात्रिंशिका	×	”	१७१-७२
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	”	१७२-७४
३१. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	”	१७४-७८
३२ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्रंश	१७९-८८ ले० स० १६६१ वैशाख सुदी ५ ।
३३. सुप्पयदोहा	×	×	१८८-९०
३४. परमानदस्तोत्र	×	संस्कृत	१९१
३५. यतिभावनाष्टक	×	”	”
३६. करुणाष्टक	पद्मनदि	”	१९२
३७ तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	१९४
३८. दुर्लभानुप्रेक्षा	×	”	”
३९. वैराग्यगीत (उदरगीत)	छीहल	हिन्दी	१९५
४०. मुनिसुव्रतनाथस्तुति	×	अपभ्रंश	अपूर्ण १९५

४१	सिद्धचक्रपूजा	×	संस्कृत	१९९-९७
४२	जिनशासनभक्ति	×	प्राकृत अपूर्ण	१९९-२
४३	धर्मबुद्धेसा बैली का (क्षेपनक्रिया)	×	हिन्दी	२ ३-१७

विशेष—लिपि संवत् १९९९। श्रा शुभचन्द्र ने गुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के शासनकाल में मडकोटा ग्राममें हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की।

४४	नेमिजिनंद व्याहलो	सेतसी	हिन्दी	२१७-४२
४५	पराबरकमयर्मचमध्यम (कोठे)	×	"	२४२
४६	कर्मप्रकृत का मध्यम	×	"	२४३
४७	दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	हिन्दी	२४३-५४
४८	पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	"	२५४-७४
४९	रोहिणीव्रत पूजा	×	"	२७५
५	क्षेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	२७५—८६
५१	जिनगुणउद्यापन	×	हिन्दी अपूर्ण	२८६-९४
५२	पंचेन्द्रियवेलि	ठीकुल	हिन्दी अपूर्ण	१ ७
५३	नेमीसुर कवित्त (नेमासुर राजमतीवेलि)	कवि ठक्कुरसी (कविवेल्ह का पुत्र)	"	१ ७- ९
५४	विद्युच्चर की जयमाल	×	"	१ ९-११
५५	हणवतकुमार जयमाल	×	अपभ्रंश	१११-१४
५६	निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	११४
५७	कृपणछन्द	ठक्कुरसी	हिन्दी	११४-१७
५८	मानबावनी	मनासाह	"	११८-२१
५९	मान की बड़ी बावनी	"	"	१२२-२८
६	नेमीश्वर को रास	भाउकवि	"	१२९-३३
६१	"	ब्रह्मरायमल्ल	" र स १६१५,	१३३-४१
६२	नेमिनाथरास	रत्नकीर्ति	"	१४१-१४३
६३	श्रीपालरासो	ब्रह्मरायमल्ल	" र. स १६३	१४३-५५

६४. सुदर्शनरासो — ब्रह्म रायमल्ल — हिन्दी र स. १६२९ — ३५६–६६

सवत् १६६१ मे महाराजाधिराज माधोसिंहजी के शासन काल मे मालपुरा मे श्रीलाला भावसा ने आत्म पठनार्थ लिखवाया।

६५ जोगीरासा	जिनदास	हिन्दी	३६७–६८
६६. सोलहकारणरास	भ० सकलकीर्ति	"	३६८–६६
६७. प्रद्युम्नकुमाररास	ब्रह्मरायमल्ल	"	३६९–८३

रचना संवत् १६२८। गढ हरसौर मे रचना की गई थी।

६८. सकलीकरणविधि	×	संस्कृत	३८३–६५
६०. वीसविरहमाणपूजा	×	"	३६५–६७
७०. पकल्याणकपूजा	×	"	अपूर्ण ३६८–४११

५४४७ गुटका स० ६६। पत्र स० ३७। आ० ७×५ इञ्च। अपूर्ण। दशा–सामान्य।

१. भक्तामरस्तोत्र मत्र सहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१–२६
२. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	२६–२७

५४४८. गुटका स० ६७। पत्र स० ७०। आ० ८३/४×६ इञ्च। अपूर्ण। दशा–जीर्ण।

१ नवकारमत्र आदि	×	प्राकृत	१
२ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	८–२१

हिन्दी अर्थ सहित। अपूर्ण

३ जम्बूस्वामी चरित्र	×	हिन्दी	अपूर्ण
४. चन्द्रहसकथा	टीकमचन्द	"	र सं. १७०८। अपूर्ण
५ श्रीपालजी की स्तुति	"	"	पूर्ण
६ स्तुति	"	"	अपूर्ण

५४४६. गुटका स० ६८। पत्र स० ८८–११२। भाषा–हिन्दी। अपूर्ण। ले० काल सं० १७८० चैत्र वदी १३।

विशेष—प्रारम्भ मे वैद्य मनोत्सव एव बाद मे आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

५४५० गुटका स० ६६। पत्र स० ११८। आ० ९×६ इ च। हिन्दी। पूर्ण।

विशेष—वनारसीदास त समयसार नाटक है।

५४५१ गुटका सं० ७० । पत्र सं० ६४ । आ० ८३×६ इञ्च । भाषा संस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त अपूर्ण एवं अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—इस गुटके में उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र की (हिन्दी) टीका दी हुई है । टीका सुन्दर एवं विस्तृत है तथा पाण्डे रूपचन्दजी कृत है ।

५४५२ गुटका सं० ७१ । पत्र सं० ११-२२२ । आ० ८,×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ स्वरोदय	×	हिन्दी	११-४१
२ सूर्यकवच	×	संस्कृत	४२
३ राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	"	४३-५७
४ देवसिद्धपूजा	×	"	५८-६३
५. दशलक्षणपूजा	×	"	६४ ६५
६ रत्नत्रयपूजा	×	"	६५-७३
७ सोलहकारणपूजा	×	"	७३-७५
८ पार्श्वनाथपूजा	×	"	७५-७६
६. कलिकुण्डपूजा	×		७६-७८
१ क्षेत्रपालपूजा	×	"	७८-८२
११ न्हवनविधि	×	"	८२-८५
१२. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	८५
१३ तत्त्वार्थसूत्र तीन अध्याय तक	उमास्वामि	"	८५-८७
१४ शांतिपाठ	×	"	८८
१५. रामविनोद भाषा	रामविनोद	हिन्दी	८६-२२२

५४५३ गुटका सं० ७२ । पत्र सं० १ ४ । आ० ६३×६३ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१-१११
		रचना संवत् १६६३ लिपि सं० १७७६ ।	
२ बनारसीविलास	"	हिन्दी	अपूर्ण
३ स्त्रीमुक्तिखण्डन	×	" अपूर्ण पत्र सं०	११-७

५४५४. गुटका सं० ७३। पत्र सं० १५२। ग्रा० ७×६ इंच। अपूर्ण। दशा-जीर्ण शीर्ण।

१ रागु श्रासावरी — रूपचन्द — अपभ्रंश — १

प्रारम्भ—

विसउणामेण कुरुजंगले तहि यरु वाउ जीउ राजे।

धणकणकणायर पूरियउ कणयप्पहु धणउ जीउ राजे ॥ १ ॥

विशेष—गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है।

२ पद्धडी (कौमुदीमध्यात्) — सहणपाल — अपभ्रंश — २-७

प्रारम्भ—

हाहउ धम्मभुउ हिंडिउ ससारि असारइ।

कोइपए सुणउ, गुणदिठ्ठु संख विणु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम घत्ता—

पुणुमति कहइ सिवाय सुणि, साहणमेयहु किज्जइ।

परिहरि विगेहु सिरि सतियत सधि सुमइ साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहणपालकृते कौमुदीमध्यात् पद्धडी छन्द लिखितं ॥

३ कल्याणकविधि — मुनि विनयचन्द — अपभ्रंश — ७-१३

प्रारम्भ—

सिद्धि सुहकरसिद्धियहु

पणविवि तिजइ पयासण केवलसिद्धिहि कारणथुणमिहउं।

सयलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एयभत्तु एक्कु जि कल्लाणउ विहिणिव्वियडि अहवइ गणणउ।

अहवासय लहखवणविहि, विणयचदि सुणि कहिउ समत्यह ॥

सिद्धि सुहकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द कृतं कल्याणकविधि समाप्ता ॥

४. चूनडी (विणय वदिवि पच गुरु) — यति विनयचन्द — अपभ्रंश — १३-१७

५. मयणपमिति संधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	अपभ्रंश	१७–२४
६ सम्माधि	×	"	२४–२७
७ मणुवसंधि	×	"	२७–३१
८ गाहाएपिड	×	"	३१–४५
विशेष—२ कडवक हैं।			
९ श्रावकाचार दोहा	रामसेन	"	४५–५९
१० बणासमरणीकरास	×	"	५६–६
११ श्रुतपञ्चमीकथा	स्वयंभु	"	६१–६७
(हरिवंश मध्यात् विदुर वैराग्य कथानके)			
१२ पद्धडी	यशःकीर्त्ति	"	६७–७
(यशःकीर्त्ति विरचित चंद्रप्रभचरित्रमध्यात्)			
१३ रिट्ठणेमिचरिउ (८७-९८ संधि)	स्वयम्भु	" (अपभ्रंश)	७७–८६
१४ वीरचरित (अनुप्रेक्षा भाग)	रइधू	"	८६–८९
१५ चतुर्गति की पद्धडी	×	"	८९–९१
१६ सम्यक्त्वकौमुदी (भाग १)	सहणपाल	"	९१–९४
१७ भावना उगणीसी	×	"	९४–९७
१८ गौतमपृच्छा	×		९
१९ आदिपुराण (कुछ भाग)	पुष्पदन्त		
२० यशोधरचरित (कुछ भाग)	"		

५४५५ गुटका सं० ७९। पत्र सं० ३१ से १२३।

१ फुटकर पद्य	×

७ जकडी	द्यानतराय	हिन्दी		५१
८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"		५२
९ हम आये हैं जिनराज तोरे वदन को	द्यानतराय	"	ले० काल सं० १७९६	"
१०. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचन्द	"		५३–६०

विशेष—ले० काल स० १७९६ । दयाचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी । पं० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी		६१–६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति	"	"		६३–६४
१३ मना रे प्रभु चरणा ल बुलाय	हरीसिंह	"		६४
१४ हमारी करुणा ल्यो जिनराज	पद्मनन्दि	"		६४
१५. पानीका पतासा जैसा तनका तमाशा है [कवित्त]	केशवदास	"		६६–६८
१६ कवित्त	जयकिशन सुंदरदास आदि	"		६९–७२
१७. गुणवेलि	×	हिन्दी		७५
१८ पद—थारा देश मे हो लाल गढ बडो गिरनार	×	"		७७
१९. कक्का	गुलाबचन्द	"		७८–८२

र० काल सं० १७९० ले० काल स० १८००

२०. पचवधावा	×	हिन्दी		८४
२१ मोक्षपैडी	×	"		८६
२२. भजन सग्रह	×	"		९२
२३ दानकीवीनती	जतीदास	सस्कृत		९३

निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की सवत् १८१४ ।

२४ शकुनावली	×	हिन्दी	लिपिकाल १७९७	९९–१०५
२५. फुटकर पद एवं कवित्त	×	"		१२३

५४५६ गुटका स० ७५—पत्र सख्या—११६ । आ०–४¾×४¾ इ च । ले० काल स० १८४८ । दशा सामान्य । अपूर्ण ।

१ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी
२ कल्याणमदिरभाषा	बनारसीदास	"

५. मरणकमिति संधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	अपभ्रंश	१७-२४
६ सम्माधि	×	"	२४-२७
७ माणुवसंधि	×	"	२७-३१
८. खाणपिंड	×	"	३१-४५
विशेष—२ कडवक हैं।			
९ श्रावकाचार दोहा	रामसेन	"	४५-५६
१ वदलावनरणीकरास	×	"	५६-६
११ सुतपञ्चमीकथा	स्वयंभु	"	६१-६७
(हरिवंश सम्बन्ध् विदुर वैराग्य कथानके)			
१२ पद्धडी	यशःकीर्ति	"	६७-७
(यशःकीर्ति विरचित चंद्रप्रभचरित्रमध्यात्)			
१३ रिट्ठणेमिचरिउ (१७-१८ संधि)	स्वयंभु	" (अपभ्राषित)	७७-८६
१४ वीरचरित्र (अनुप्रेक्षा भाग)	रइधू	"	८६-८९
१५. चतुर्गति की पद्धडी	×	"	८९-९१
१६ सम्यक्त्वकौमुदी (भाग १)	सहस्रपाल	"	९१-९४
१७ भावना उगतीसी	×	"	९४-९९
१८ गौतमपृच्छा	×	प्राकृत	१ ०-०२
१९ आदिपुराण (कुछ भाग)	पुष्पदन्त	अपभ्रंश	१ २-११
२ यशोधरचरित्र (कुछ भाग)	"	"	११२-४१

५४५४ गुटका सं ७९। पत्र सं २१ से १२१। आ १×६ इञ्च। अपूर्ण।

१ पुष्कर पद	×	हिन्दी	२१-३१
२ पार्श्वमङ्गल	कनकचन्द	"	३२-४३
३ कर्माष्टक	×	"	४४
४ पारसनाथप्रमाण	लोहट	"	४५
५ विनती	भूधरदास	"	४७
६ ते गुरु मेरे उर बसो	"	" से काम सं १७६६	४९

७ जकडी	द्यानतराय	हिन्दी		५१
८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"		५२
९ हम आये हैं जिनराज तोरे वदन को	द्यानतराय	"	लें० काल सं० १७९६	"
१०. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचन्द	"		५३-६०

विशेष—ले० काल स० १७९६। दयाचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी। प० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी।

११ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी		६१-६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति	"	"		६३-६४
१३ मना रे प्रभु चरणा ल बुलाय	हरीसिंह	"		६४
१४ हमारी करुणा ल्यो जिनराज	पद्मनन्दि	"		६४
१५. पानीका पतासा जैसा तनका तमाशा है [कवित्त]	केशवदास	"		६६-६८
१६ कवित्त	जयकिशन सुदरदास आदि	"		६९-७२
१७. गुणवेलि	×	हिन्दी		७५
१८. पद—थारा देश मे हो लाल गढ वडो गिरनार	×	"		७७
१९. कक्का	गुलाबचन्द	"		७८-८२
			र० काल सं० १७९० ले० काल स० १८००	
२०. पचबधावा	×	हिन्दी		८४
२१ मोक्षपैडी	×	"		८६
२२. भजन सग्रह	×	"		९२
२३. दानकीवीनती	जतीदास	संस्कृत		९३
			निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की सवत् १८१४।	
२४ शकुनावली	×	हिन्दी	लिपिकाल १७९७	९९-१०५
२५. फुटकर पद एव कवित्त	×	"		१२३

५४५६ गुटका स० ७५—पत्र सख्या—११६। आ०-४३/४×४१/२ इच। ले० काल स० १८४८। दशा सामान्य। अपूर्ण।

१ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	
२. कल्याणमदिरभाषा	बनारसीदास	"	

३ लक्ष्मीस्तोत्र   पद्मप्रभदेव   संस्कृत

४ श्रीपार्श्वजी की स्तुति   ×   हिन्दी

५. साधुवंदना   बनारसीदास   "

६ बीसतीर्थंकरों की जकड़ी   हर्षकीर्ति   "

७ बारहभावना   ×   "

८ दर्शनाष्टक   ×   हिन्दी   सब दर्शनों का वर्णन है।

९. पद-चरण केवल को ध्यान   हरीसिंह   "   "

१० भक्तामरस्तोत्रभाषा   ×   "   "

५४५७ गुटका सं० ७६ । पत्र संख्या—१८ । आ —२॥×४॥ लेखन सं १७८२ । जीर्ण ।

१ तत्त्वार्थसूत्र   उमास्वामि   संस्कृत

२. नित्यपूजा व भाद्रपद पूजा   ×   "

३ नंदीश्वरपूजा   ×   "

पंडित नगराज ने हिरणोदा में प्रतिलिपि की।

४ श्रीसीमंधरजी की जकड़ी   ×   हिन्दी   प्रतिलिपि पुष्कर में की गई।

५. सिद्धिप्रियस्तोत्र   देवनंदि   संस्कृत

६. एकीभावस्तोत्र   वादिराज   "

७ जिनजपिचिन थपि बीनती   ×   हिन्दी

८ चिंतामणिजी की जयमाल   मनरथ   "   बीकानेरमें नगराजने प्रतिलिपि की थी।

९ क्षेत्रपालस्तोत्र   ×   संस्कृत

१ भक्तामरस्तोत्र   आचार्यमानतुंग   "

५४५८ गुटका सं० ७७ । पत्र सं १२१ । आ ६×४ इंच । भाषा–संस्कृत । ले सं काल १८१६

माह सुदी १२।

१ देवसिद्धपूजा   ×   संस्कृत   १–१५

२ नंदीश्वरपूजा   ×   "   १६–४४

३ सोलहकारण पूजा   ×   "   ४४–५

४ दशलक्षणपूजा   ×   "   १ –११

५ रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६–६१
६ पार्श्वनाथपूजा	×	"	६२–६७
७ शातिपाठ	×	"	६७–६९
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०–११४

५४५६. गुटका स० ७८। पत्र सख्या १६०। ग्रा० ६×४ इ च। अपूर्ण। दशा–जीर्ण।

विशेष—दो गुटको का सम्मिश्रण है।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	सस्कृत	२०–२७
२ चतुर्विशति तीर्थङ्कर पूजा	×	"	२८–३१
३. चितामणिस्तोत्र	×	"	३६
४ लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७–३८
५. पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९–४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	सस्कृत	१–४३
७ चितामणि पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	४३–४८
८. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	४८–५३
९ पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४–६१
१० चितामणि पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	"	६१–८९
११. गणधरवलय पूजा	×	"	८९–११४
१२ अष्टाह्निका कथा	यश कीर्त्ति	"	१०४–११२
१३. अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्त्ति	"	११२–११८
१४. सुगन्धदशमी कथा	"	"	११८–१२७
१५. षोडषकारण कथा	"	"	१२७–१३६
१६ रत्नत्रय कथा	"	"	१३६–१४१
१७ जिनचरित्र कथा	"	"	१४१–१४७
१८. आकाशपचमी कथा	"	"	१४७–१५३
१९. रोहिणीव्रत कथा	"	"	अपूर्ण १५४–१५७

२० ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	संस्कृत	१५८–१६१
२१ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	१६२–६३
२२ घातक होम विधि	×	"	१७४–७६
२३ चौबीसी विनती	भ रत्नचन्द्र	हिन्दी	१८६–८६

५४६० गुटका सं० ७६ । पत्र सं ३३ । आ ७×४३ इंच । अपूर्ण ।

१ राजनीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	१–२८
२ एकश्लोक रामायण	×	"	२६
३ एकश्लोक भागवत	×	"	"
४ गणेशद्वादशनाम	×	"	३०–३१
५ नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	"	३२–३३

५४६१ गुटका सं० ८० । पत्र सं १८–४४ । आ ६'×४३ इंच । भाषा–संस्कृत तथा हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष– पञ्चमगल बाईस परिषह, देवपूजा एवं तत्वार्थसूत्र का संग्रह है ।

५४६२ गुटका सं० ८१ । पत्र सं २–२६ । आ ५×४ इंच । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—नित्य पूजा एव पाठों का संग्रह है ।

५४६३ गुटका सं० ८३ । पत्र सं ३ । आ० ६×४ इंच । भाषा संस्कृत । ले काल सं १८८३ ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (पं आशाधर)का संग्रह है ।

५४६४ गुटका सं० ८४ । पत्र स १८–३१ । आ ७×४३ इंच ।

१ स्वस्त्ययनविधि	×	संस्कृत	१८–२
२ सिद्धपूजा	×	"	२१–२३
३ षोडशकारणपूजा	×	"	२४ २५
४ दशलक्षणपूजा	×	"	२६–२७
५ रत्नत्रयपूजा	×	"	२८–३०
६ पुष्पाष्टक	×	"	३१–३१

७. चिंतामणिपूजा	×	सस्कृत	३९–४१
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	४२–५१

५४६५. गुटका स० ८५ । पत्र स० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण । दशा–सामान्य।

विशेष—पत्र ३–४ नही है । जिनसेनाचार्य कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५४६६ गुटका स० ८६ । पत्र स० ५ से २५ । आ० ६×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ मे ८७ सवैयो का सग्रह है किन्तु किस ग्र थ के हैं यह अज्ञात है ।

५४६७ गुटका स० ८७ । पत्र स० ३३ । आ० ८×४ इंच । भाषा–सस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१ जैनरक्षास्तोत्र	×	सस्कृत	१–३
२ जिनपिंजरस्तोत्र	×	"	४–५
३ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	६
४ चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	७
५. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	७–१५
६ ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	१५–१८
७. ऋषि मडलस्तोत्र	गौतम गणधर	"	१८–२४
८. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	२४–२६
९ शीतलाष्टक	×	"	२७–३२
१०. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	३२–३३

५४६८ गुटका स० ८८ । पत्र सं० २१ । आ० ७×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—गर्गाचार्य विरचित पाशा केवली है ।

५४६९. गुटका स० ८९ । पत्र स० ११४ । आ० ६×५½ इ च । भाषा–सस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ मे पूजाओ का सग्रह है तथा अन्त मे अचलकीर्ति कृत मत्र नवकाररास है ।

५४७० गुटका स० ९० । पत्र स० ५० से १२० । आ० ८×४½ इच । भाषा–सस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—भक्ति पाठ तथा चतुर्विंशति तीर्थङ्कर स्तुति (आचार्य समन्तभद्रकृत) है ।

५४७१ गुटका स० ९१ । पत्र स० ७ से २० । आ० ६×६ इच । विषय–स्तोत्र । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

१ संबोध पंचासिकाभाषा	द्यानतराय	हिन्दी	७–८
२ भक्तामरभाषा	हेमराज	”	९–१४
३ कल्याण मंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	”	१५–२२

५४७२ गुटका सं० १ । पत्र सं० १३ –२ ३ । आ ८×८ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले काल १८३३ । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१ भविष्यदत्तरास	रायमल्ल	हिन्दी	११०–८५
२ जिनपंजरस्तोत्र	×	संस्कृत	१८५ ८७
३ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	१८८
४ स्तवन (अविकृत संत का)	×	हिन्दी	१८६–९१
५ चैतनचरित्र	×	”	११३–२ ३

५४७३ गुटका स० ६३। पत्र सं० २५–१ ८ । आ ५×३ इंच । अपूर्ण ।
विशेष—प्रारम्भ के २४ पत्र नही है ।

१ पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी		२५
२ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत		३४
३ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	”		६२
४ सासु बहू का झगडा	ब्रह्मदेव	हिन्दी		६५
५ पिया चले गिरवर कू	×	”		६७
६ नाभि नरेन्द्र के नंदन कू बंदन	×	”		६८
७ सीताजी की विनती	×	”		७१
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत		७२–९४
९ पद– भरज करां छा जिनराजजी राम सारंग ×		हिन्दी	अपूर्ण	९६
१ ” की परि करोजी गुमान थे के जिनका महमान बुधजन		”		९७
११ ” नय न मोरी नबी ऐसी	×	”		९९
१२ ” शुभ मति पावन माही चित धारोजी	नवल	”		९९
१३ ” बाळंबी थांरि नेम कंवार	×	”		१
१४ ” टुक नजर महर की करना	भूधरदास	”		१ २

१५. खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी (राग काफी)	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
१६ देखो करमा सूं फुन्द रहो अजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सखी नेमीजीसू मोहे मिलावोरी (रागहोरी)	द्यानतराय	"	"
१८. दुरमति दूरि खडी रहो री	देवीदास	"	१०५
१९. अरज सुनो म्हारी अन्तरजामी	खेमचन्द	"	१०६
२० जिनजी की छवि सुन्दर या मेरे मन भाई	×	"	अपूर्ण १०८

५४७४ गुटका सं० ६४ । पत्र स० ३–४७ । आ० ५×५ इंच । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्ण ।

विशेष—पत्र सख्या २९ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आयुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकातरा आदि के मंत्र हैं । स० १८२१ मे श्री हरलाल ने पावटा मे प्रतिलिपि की थी ।

५४७५. गुटका स० ६५ । पत्र स० १८७ । आ० ४×३ इञ्च । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१–११८
२. चर्चासमाधान	भूधरदास	हिन्दी	११९–१३७
३. सूर्यस्तोत्र	×	सस्कृत	१३८
४ सामायिकपाठ	×	"	१३८–१४४
५. मुनीश्वरो की जयमाल	×	"	१४५–१४६
६. शातिनाथस्तोत्र	×	"	१४७–१४८
७. जिनपजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	"	१४९–१५१
८. भैरवाष्टक	×	"	१५१–१५६
९ अकलंकाष्टक	अकलंक	"	१५६–१५९
१०. पूजापाठ	×	"	१६०–१६७

५४७६ गुटका सं ६६ । पत्र सं० १९० । आ० ३×३ इञ्च । ले० काल सं० १८५७ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१ विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	सस्कृत	१–५
२. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	

३ चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत	
४ लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	
५. चैत्यवंदना	×	"	
६ ज्ञानपच्चीसी	बनारसीदास	हिन्दी	२०-२४
७ श्रीपालस्तुति	×	"	२५-२८
८ विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	"	२९-३१
९ चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	×	"	३३-३७
१० पंचमंगल	रूपचंद	"	३८-४७
११ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	४८-५९
१२ पद-मेरी है लगावो जिनजी का नावसू	×	हिन्दी	६
१३ कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	६१-७
१४ नेमीश्वर की स्तुति	भूधरदास	हिन्दी	७१-७२
१५. बधाई	रूपचंद	"	७३-७५
१६ "	भूधरदास	"	७६-८३
१७ पद- सीखो चाम तो सीखे रे मानी जिनजी को नाम सब भलो	×	"	८४-८५
१८ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	८५-८९
१९ अष्टाह्निकामंत्र	×	"	९०-९६
२० तीर्थङ्करादि परिचय	×	"	९७-११२
२१ दर्शनपाठ	×	संस्कृत	११३-१५
२२ पारसनाथजी की निशाणी	×	हिन्दी	११६-७७
२३ स्तुति	कनककीर्ति	"	१८ ५२
२४ पद-(अब श्रीजिनराज मनवच काम करानी)	×	"	

५५६७ गुटका सं० ६७ । पत्र सं ७५ । आ ५×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष-गुटका जीर्ण शीर्ण हो चुका है । अक्षर मिट चुके हैं ।

१ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत

२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	"		
३. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"		
४. कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचद्र	"		
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"		
६. वर्धमानस्तोत्र	×	"		
७. स्तोत्र संग्रह	×	"		५६-७५

५४७८. गुटका सं० ९८ पत्र स० १३-११५। आ० २३/४×२३/४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। अपूर्ण। दशा सामान्य।

विशेष-नित्य पूजा एव षोडशकारणादि भाद्रपद पूजाओ का सग्रह है।

५४७९. गुटका स० ९९। पत्र सं० ४-१०५। आ० ४×३ इञ्च।

१. कक्कावतीसी	×	हिन्दी		४-१३
२. त्रिकालचौवीसी	×	"		१४-१७
३. भक्तिपाठ	कनककीर्ति	"		१७-२०
४. तीसचौवीसी	×	"		२१-२३
५. पहेलिया	मारू	"		२४-६३
६ तीनचौवीसीरास	×	"		६४-६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"		६७-७३
८. श्रीपाल वीनती	×	"		७४-७८
९. भजन	×	"		७९-८०
१०. नवकार बडी वीनती	ब्रह्मदेव	"	स० १८४५	८१-८२
११ राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	"		८३-१०१
१२. नेमीश्वर का व्याहला	लालचन्द	"	अपूर्ण	१०१-१०५

५४८०. गुटका स० १००। पत्र स० २-८०। आ० १०×६ इञ्च। अपूर्ण। दशा सामान्य।

१. जिनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२
२. आदिनाथपूजा	रामचद्र	"	२-३
३. सिद्धपूजा	×	संस्कृत	४-५

४ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	५–६
५ जिनपूजाविधान (देवपूजा)	×	हिन्दी	७–१५
६ बड़ामाला	द्यानतराय	"	१६–१८
७ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१६–१५
८ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५–२१
९ सोलहकारणपूजा	×	"	२२ २४
१० दशलक्षणपूजा	×	"	२५–३२
११ रत्नत्रयपूजा	×	"	३३–३६
१२ पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	हिन्दी	३७
१३ नंदीश्वरद्वीपपूजा	×	संस्कृत	३७–३६
१४ शास्त्रपूजा	×	"	४०
१५ सरस्वतीपूजा	×	हिन्दी	४१
१६ तीर्थङ्करपरिचय	×	"	४२
१७ नरक-स्वर्ग के मंत्र पृथ्वी आदि का वर्णन	×	"	४३–५
१८ जैनशतक	भूधरदास	"	४६–५६
१९ एकीभावस्तोत्रभाषा	"	"	६ –६१
२० द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	६१–६३
२१ दर्शनस्तुति	×	"	६३–६४
२२ साधुवंदना	बनारसीदास	"	६४–६५
२३ पंचमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	६५–६६
२४ जोगीरासो	जिनदास	"	६६–७
२५ चर्चायें	×	"	७ –८

५४८१ गुटका स० १०१ । पत्र सं २–२१ । आ ८३×८३ इ च । भाषा–प्राकृत । विषय–चर्चा । अपूर्ण । दशा–सामान्य । चौबीस ठाणा का पाठ है ।

५४८२ गुटका स० १०२ । पत्र सं २–२३ । आ ५×४ इ च । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण । दशा–सामान्य । निम्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

१. भूल क्यो गया जी म्हानें	×	हिन्दी	२
२ जिन छवि पर जाऊं मैं वारी	राम	"	२
३. अखिया लगी तैडे	×	"	२
४ दृगनि सुख पायो जिनवर देखि	×	"	२
५. लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	"	३
६. जिनजी का ध्यान मे मन लगि रह्यो	×	"	३
७ प्रभु मिल्या दीवानी विछौवा कैसे किया सइया	×	"	४
८. नही ऐसो जनम बारम्बार	नवलराम	"	४
९ आनन्द मङ्गल आज हमारे	×	"	४
१०. जिनराज भजो सोही जीत्यो	नवलराम	"	५
११. सुभ पथ लगो ज्यो होय भला	"	"	५
१२. छाडदे मनकी हो कुटिलता	"	"	५
१३ सवन मे दया है धर्म को मूल	"	"	६
१४. दुख काहू नही दीजे रे भाई	×	"	६
१५ मारणलाग्यो	नवलराम	"	६
१६ जिन चरणा चित लगाय मन	"	"	७
१७ हे मा जा मिलिये श्री नेमकवार	"	"	७
१८. म्हारो लाग्यो प्रभु सू नेह	"	"	८
१९ था ही सग नेह लग्यो है	"	"	९
२० था पर वारी हो जिनराय	"	"	९
२१. मो मन था ही सग लाग्यो	"	"	९
२२. घनि घडी ये भई देखे प्रभु नैना	"	"	९
२३ वीर री पीर मोरी कासो कहिये	"	"	१०
२४ जिनराय ध्यावो भवि भाव से	"	"	१०
२५. समो जाय जादो पति को समझावो	"	"	११
२६. प्रभुजी म्हारी विनती अवधारो हो राज	"	"	११

२७ ईं जिन बीनिये हो चतुर नर	नवलराम	हिन्दी	१२
२८ प्रभु गुन गावो भविक जन	"	"	१२
२९ यो मन म्हारो जिनजी सू लाग्यो	"	"	१३
३० प्रभु चूक तकसीर मेरी माफ करो जै	"	"	१३
३१ दरसन करत मन सब नसे	"	"	१३
३२. रे मन मोहिमा रे	"	"	१४
३३ भरत भूप वैराग चित भीनो	"	"	१५
३४ देव दीन को दयाल जानि चरण शरण आयो	"	"	"
३५ गावो है भी जिन जिनमत धारि	"	"	"
३६ प्रभुजी म्हारो अरज सुनो चितलाय	"	"	१६
३७ पे शिक्षा चित लाई	"	"	१६-१७
३८ मैं पूजा फल बात सुनी	"	"	१८
३९. जिन सुमरन की बार	"	"	"
४० सामायिक स्तुति वंदन करि के	"	"	१९
४१ जिनजी की रूप रूप नैन लाय	संतदास	"	"
४२ चेतो क्यों न ज्ञानी जिया	"	"	२
४३ एक अरज सुनो साहब मोरी	द्यानतराम	"	"
४४ मो से अपना कर दयार रिझाय दीन तेरा	बुधजन	"	२
४५. अपना रंग मे रंग क्योजी साहब	×	"	"
४६ मेरा मन मधुकर अटक्यो	×	"	२१
४७ भैया तुम चोरी त्यागोजी	पारसदास	"	"
४८ चली २ पग २ जिन २	दौलतराम	"	"
४९. चट चट अटचट	×	"	२२
५० मारग मरनी चोव गुसानी छोरे	×	"	"
५१ मुनि भीया रे जिनराज रे सोमो	×	"	"
५२. जग असिया रे भाई	भूधरदास	"	"

५३. आई सोही सुगुरु बखानि रे	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हो मन जिनजी न क्यो नही रटै	"	"	"
५५, की परि इतनी मगरूरी करी	"	"	अपूर्ण

५४८३. गुटका सं० १०३ । पत्र स० ३-२० । आ० ६×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा- जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

५४८४. गुटका स० १०४ । पत्र सं० ३०-१४४ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल स० १७२८ कार्तिक सुदी १५ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	३०-३२
२. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	"	३३-४७
३ स्नपनविधि	×	सस्कृत	४८-६०
४ क्षेत्रपालपूजा	×	"	६०-६४
५. क्षेत्रपालाष्टक	×	"	६४-६५
६. वन्देतान की जयमाला	×	"	६५-६६
७ पार्श्वनाथ पूजा	×	"	७०
८. पार्श्वनाथ जयमाल	×	"	७०-७३
९ पूजा धमाल	×	सस्कृत	७४
१० चितामणि की जयमाल	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	७५
११ कलिकुण्डस्तवन	×	प्राकृत	७६-७८
१२ विद्यमान बीस तीर्थङ्कर पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	सस्कृत	८२
१३ पद्मावतीपूजा	"	"	८५
१४. रत्नावली व्रतो की तिथियो के नाम	"	हिन्दी	८५-८७
१५ ढाल मगल की	"	"	८८-८९
१६. जिनसहस्रनाम	आशाधर	सस्कृत	८९-१०२
१७ जिनयज्ञादिविधान	×	"	१०२-१२१
१८ व्रतो की तिथियो का व्यौरा	×	हिन्दी	१२१-१३६

५४८५. गुटका स० १०५ । पत्र स० ११७ । आ० ६×६ इ च ।

१ षटऋतुवर्णन बारह मासा	भगराज	हिन्दी	अपूर्ण	२४–४१
२. कवित्त संग्रह	×	”		४१–५१

निमित्त कवियों के नायक नायिका सबन्धी कवित्त हैं।

३ उपदेश पचीसी	×	हिन्दी	अपूर्ण	५२–५१
४ कवित्त	सुन्दरदास	”		५६–५७

५४८६ गुटका सं० १०६। पत्र सं २४। आ १×१ इञ्च। भाषा संस्कृत। पूर्ण। जीर्ण।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र है

५४८७ गुटका सं० १०७। पत्र सं २–५४। आ १×१ इञ्च। भाषा–हिन्दी। लि काल सं० १७४८ बैशाख सुदी १४। अपूर्ण। दशा–सामान्य।

१ कृष्णरुक्मणिवेलि हिन्दी गद्य टीका सहित	पृथ्वीराज	हिन्दी	२–५४

लेखन काल सं १७४८ बैशाख सुदी १४। र काल स १६१७। अपूर्ण।

अन्तिम पाठ—

रमता जगदीश्वरतणी रहसी रस मिथ्यावचन न ता सम है।
सरसति रुकमिणी तणि सहचरि कहि या मुपेतियम कहै॥ १ ॥

टीका—रहसि एकान्तई रुक्मणी नावइ श्रीजीसूं तइ रमता क्रीडाओ जे रस ते हष्टि दीठा सरीष कह्यो। पर ते वचन माही कुडउ नैमते मानउ साच मानिज्यो। रुक्मणी सरस्वतीनी सहचरी। सरस्वती तिणइ प्रस बात कही मुभनइ मारणउं आणी॥ आणी सबबात कही तिहना मुख थकी सुणी तिमही जु कही॥ १ ॥

रूप लखण गुण तणास रुक्माणि कहिवा समरथीक कुण।
जाणिया जिसा तसितामैं जंपिया गोविंद राणि तणां गुण॥ ११॥

टोका—रुक्मणि नउ रूप लखण गुण कहिवा भणि समर्थ कुण समर्थ तर थइ प्रभितु की नहि परमइ। माहरि मतिइ अनुसार जिसा ज्याण्या तिस्या ग्रन्थ माहि गुण्या कह्या तिण कारण हु ताहरउ बालक छु भो परि हुरा करिज्यो॥ ११॥

वसु दिव नयन रस ससि वस्वर विजयदसमि रवि दिव वरणोत।
किसन रुकमणी बेलि कल्पतरु कीधी कमध ज कल्याण पत॥ १२॥

टीका—मघल पवत ससव रदु तव गुण ३ नम १ धातिवनमा १ सवत् १६१७ वर्ष मघस गुण रवि मति मंचि तात बीयर बन॥ वरि भी भरतार भवणे दिन रात कंठ बरि बीपम्म नमति प्रधार विपइ श्री सम्पी मउ भारि रुक्मणी कृष्णनउ भी रुक्मणी प्रम करी मावना बीधी ए वेमी प्रहा मणतो भवले लोभमिह रात दिन मसइ करइ भी नरनी रूप पामइ।

वेद वीज जल वयरा सुकवि जउ मडीस धर ।
पत्र दूहा गुरा पुहपवास भोगी लिखमी वर ।।
पसरी दीप प्रदीप अधिक गहरी या डवर ।
मनसुजेराति अब फल पामिइ अबर ।।
विसतार कोध जुचि जुगी विमल धरणी किसन कहरणहार धन ।
अमृत वेलि पीयल अतइ रोपी कलियाण तनुज ।। ३१३ ।।

अर्थ—मूल वेद पाठ तीको बीज जल पाणी तिको कवियरण तिये वयणे करि जडमाडीस दृढ परिणइं ।। दूहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल सुगन्ध वास भोगी भमर श्रीकृष्णजी वेलिइ माकहइ करो विस्तरी जगत्र नइ विषै दीप प्रदीप । व दीवा थी अधिक अत्यन्त विस्तरी जिके मन सुधी एह नउ की जाणइ तीको इसा फल पामइ । अबर कहिता स्वर्ग ना सुख पामे । विस्तार करी जगत्र नइ विषइ विमल कहीता निर्मल श्रीकिसनजी बेलि मा धणी नइ कहण हार धन्य तिको पिण अमृत रूपणो बेलि पृथ्वी नइ लिखइ अविचल पृथ्वी नई कविराज श्री कल्याण तम बेटा पृथ्वीराजइ कह्या ।

इति पृथ्वीराज कृत कृषण रुकमणी बेलि सपूर्ण । मुणि जग विमल वाचणार्थ । सवत् १७४८ वर्ष वैशाख मासे कीष्ण पक्षे तिथि १४ भृगुवासरे लिखतं उणियरा नग्रे ।। श्री ।। रस्तु ।। इति मगल ।।

२. कोकमजरी	×	हिन्दी		५४
३. बिरहमजरी	नददास	"		५५–६१
४ बावनी	हेमराज	"	४९ पद्य हैं	६१–६७
५ नेमिराजमति बारहमासा	×	"		६७
६. पृच्छावलि	×	"		६९–८७
७ नाटक समयसार	बनारसीदास	"		८८–११४

५४८८ गुटका सं० १०७ क । पत्र स० २३५ । आ० ५×४ इञ्च । विषय–पूजा एव स्तोत्र ।

१. देवपूजाष्टक	×	सस्कृत	१–४
२ सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४–६
३. श्रुताष्टक	×	"	६–७
४. गुरुस्तवन	शातिदास	"	८
५. गुर्वाष्टक	वादिराज	"	९

६ सरस्वती जयमाल	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	१ -१२
७ गुरुजयमाला	"	"	१३-१५
८ लघुस्नपनविधि	×	संस्कृत	१६-२३
९. सिद्धचक्रपूजा	×	"	२४-१
१ कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	यशोविजय	"	३१-३५
११ षोडसकारणपूजा	×	"	३५-३९
१२ समवसरणपूजा	×	"	३९-४२
१३ नन्दीश्वरपूजा	×	"	४३-४५
१४ जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	४६-५९
१५. अर्हद्भक्तिविधान	×	"	५९-६२
१६ सम्यक्दर्शनपूजा	×	"	६२-६४
१७ सरस्वतीस्तुति	आशाधर	संस्कृत	६४-६६
१८ ज्ञानपूजा	×	"	६७-७१
१९ महर्षिस्तवन	×	"	७१-७३
२ स्वस्त्ययनविधान	×	"	७३-७९
२१ चारित्रपूजा	×	"	७९-८१
२२ रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	×	प्राकृत संस्कृत	८१-९१
२३ बृहत्स्नपन विधि	×	संस्कृत	९१-११९
२४ ऋषिमण्डल स्तवनपूजा	×	"	११९-२९
२५ मष्टाह्निकापूजा	×	"	१२९-३१
२६ बिरदावली	×	"	१३९-६
२७ दर्शनस्तुति	×	"	१६१-६२
२८ आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	१६३-६९

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्य ॥

श्री जिणवरवाणि रणवेवि गुरु निर्ग्रन्थ प्रणमेवी ।

कहु आराधना सुविचार संक्षेपे सारो वीर ॥ १ ॥

हो क्षपक वयरण अवधारि, हवि चाल्यो तुम भवपारि ।
हो सुभट कहु तुझ भेउ, धरी समकित पालन एहु ॥ २ ॥
हवि जिनवरदेव आराहि, तू सिध समरि मन माहि ।
सुरिण जीव दया धुरि धर्म्म, हवि छाडि अनुए कर्म्म ॥ ३ ॥
मिथ्यात कु सका टालो, गरणगुरु वचनि पालो ।
हवि झान धरे मन धीर, ल्यो सजम दोहोलो वीर ॥ ४ ॥
उपप्राचित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि ।
तू क्रोध मान माया छाडि, आपुरण सू सिलि माडि ॥ ५ ॥
हवि क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार ।
तु मत्र समरे नवकार, धीए तन करे भवनार ॥ ६ ॥
हवि सवे परिसह जिपि, अभतर ध्याने दीपि ।
वैराग्य धरै मन माहि, मन माकड गाढु साहि ॥ ७ ॥
सुरिण देह भोग सार, भवलधो वयरण मा हार ।
हवि भोजन पारिण छाडि, मन लेई भुगति माडि ॥ ८ ॥
हवि छुरणक्षरण षुटि आयु, मनासि छाडो काय ।
इद्रीय वस करि धीर, कुटव मोह मेल्हे वीर ॥ ९ ॥
हवि मन गन गाठु वाधे, तू मरण समाधि साधि ।
जे साधो मरण सुनेह, ञेया स्वर्ग मुगतिय भरणेय ॥ १० ॥

× × × ×

अन्तिम भाग

हवि हइडि जारिण विचार, घणु कहिइ किहि सु अपार ।
लिआ अरणसरण दीख्या जारण, सन्यास छाड़ो प्रारण ॥ ५३ ॥
सन्यास तरणा फल जोइ, स्वर्ग सुद्धि फलि सुखु होइ ।
वलि श्रावक कोल तू पामीइ, लही निर्वारण मुगती गामीइ ॥ ५४ ॥
जे भरिण सुरिणन नरनारी, ते जाइ भववि पारि ।
श्री विमलेन्द्रकीर्ति कह्यो विचार, आराधना प्रतिवोधसार ॥ ५५ ॥

इति श्री आराधना प्रतिवोध समाप्त

	देवेन्द्रकीति	संस्कृत		१७ –१८
३ अनन्तपूजा	ब्रह्मशांतिदास	हिन्दी		१८ –११
११ गणधरवलयपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत		११६–२११
१२ पञ्चकल्याणकोद्यापन पूजा	भ. ज्ञानभूषण	"	अपूर्ण	२११–१५

५४८६. गुटका सं० १०८। पत्र सं० १२ । मा ५×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । दशा–जीर्ण ।

१ जिनसहस्रनाममाला	बनारसीदास	हिन्दी		१–२१
२ लघुसहस्रनाम	×	संस्कृत		२२–२७
३ स्तवन	×	अपभ्रंश	अपूर्ण	२८
४ पद	मनराम	हिन्दी		२६

र० काल १७१५ आसोज बुदी ६

चेतन इह घर नाही तेरो ।

घटपटादि नैनन गोचर जो नाटक पुद्‌गल केरो ॥ टेक ॥

तात मात कामनि सुत बंधु, करम बंध को बेरो ।

करि है गौन आनगति को जब कोई नही आवत नेरो ॥ १ ॥

भ्रमत भ्रमत संसार गहन वन कीयो आनि बसेरो ।

मिथ्या मोह उदै तैं समझो इह सदन है मेरो ॥ २ ॥

सतगुरु वचन जोइ घट दीपक मिटै अनादि अंधेरो ।

असंख्यात परदेस ग्यान मय, ज्यौ बालऊ निज डेरो ॥ ३ ॥

नाना विकलप त्यागि आपको आप आप महि हेरो ।

यौं मनराम अचेतन परसौं सहजैं होइ निवेरो ।

५ पद–मौ पिय विराजत परवीन	मनराम	हिन्दी		१
६ चेतन समझि देखि परमाहि	"	"	अपूर्ण	११
७ कै परमेसुरी की परचा विधि	"	"		१२
८ जयति आदिनाथ जिनदेव ग्यान गाऊ	×	"		१३
९ सम्यक्त्व वर्णविधि लिख्यते हौ	"	"		१४–१५

१०. पचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	स० १६८३ श्रावण	अपूर्ण
११ पच सघावा	×	"		"
१२. मेघकुमारगीत	पूनो	हिन्दी		४०–४५
१३ भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"		४६
१४ पद–अब मोहे कछून उपाय	रूपचद	"		४७
१५. पंचपरमेष्ठीस्तवन	×	प्राकृत		४७–४९
१६ शातिपाठ	×	सस्कृत		५०–५२
१७ स्तवन	आशाधर	"		५२
१८ वारह भावना	कविआलु	हिन्दी		
१९. पचमगल	रूपचद	"		
२०. जकडी	"	"		
२१ "	"	"		
२२. "	"	"		
२३. "	दरिगह	"		

सुनि सुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राउ रे।
तू तजि परपरवारे चेतसि सहज सुभाव रे ॥
चेतसि सहज सुभाव रे जियरा परस्यौं मिलि क्या राच रहे।
अप्पा पर जाण्या पर अप्पाणा चउगइ दुख्य अणाइ सहे ॥
अवसो गुण कीजै कर्म ह छीन्जै सुणहु न एक उपाव रे।
दसण णाण चरणमय रे जिउ तू त्रिभुवन का राउ रे ॥ १ ॥
करमनि वसि पडिया रे प्रणया मूढ विभाव रे।
मिथ्या मद नडिया रे मोह्या मोहि अणाइ रे ॥
मोह्या मोह अणाइ रे जिय रे मिथ्यामद नित माचि रह्या।
पड पडिहार खडग मदिरावत ज्ञानावरणी आदि कह्या ॥
हडि चित्त कुलाल भडयारीण अष्टाउदीग्रे चताई रे।
रे जीवडे करमनि वसि पडिया प्रणया मूढ विभाव रे ॥ २ ॥

तू मति सोवहि न चीता रे वैरिम में काहा वास रे ।
भवमण दुखदाय करै तिनका करै विनास रे ॥
तिनका करहि विनास रे जिवडे तू मूढा नहि निमपु डरे ।
जम्मजु मरण जरा दुखदायक तिनस्यौं तू नित नेह करें ॥
आपे म्याता आपे दिष्टा कहि समझाऊ काम रे ।
रे जीव तू मति सोवहि न चीता वैरिम में काहावास रे ॥
ते जगमांहि आये रे रहे पस्वरत्पनलाइ रे ।
केवल निमल भयारे प्रगटी जोति सुभाइ रे ॥
प्रगटी जोति सुभाइ रे जीवडे मिथ्या रैणि बिहाणी ।
स्वपरभेद कारण जिन्ह मिलिया ते जम हुवा वाणी ॥
सुगुरु सुधर्म पंच परमेष्ठी तिनकै लागी पाय रे ।
कहै वरिमइ जिन त्रिभुवन सेवे रहे अंतर स्थवलाइ रे ॥ ४ ॥

२४ कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	ले काल १७१५ आसोज सुदी ६
२५ निर्वाणकाण्ड भाषा	×	प्राकृत	
२६ पूजा संग्रह	×	हिन्दी	

५५६० गुटका सं० १०६ । पत्र सं १५२ । आ ९×४ इञ्च । ले काल १८१६ सावण सुदी ६ । अपूर्ण । दशा–जीर्णशीर्ण ।

विशेष–लिपि विकृत एवं अशुद्ध है ।

१ रविव्रतदेव की कथा	×	हिन्दी		११४
२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"		१५–२४
३ नेमिनाथ का बारहमासा	×	"	अपूर्ण	२५–२६
४ जकडी	नेमिचन्द	"		२७
५ सवैया (सुख हीत शरीरको शामिद भामि जाइ)	×	"		२८
६ कवित्त (श्री जिनराज के ध्यान की रुचाइ मोहे लागे		"		२६
७ निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"		३०–३१

८ स्तुति (आगम प्रभु को जव भयो)	×	हिन्दी	३४–३६
९. बारहमासा	×	"	३७–३९
१०. पद व भजन	×	"	४०–४७
११. पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्त्ति	"	४८–४९
१२. आम नीवू का झगडा	×	"	५०–५१
१३. पद–काइ समुद विजयसुत सार	×	"	५२–५७
१४. गुरुओ की स्तुति	भूधरदास	"	५८–५९
१५. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०–६३
१६. विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	भूधरदास	हिन्दी	६४–६६
१७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	६७–६८
१८. पद–मेरा मन बस कीनां जिनराज	×	हिन्दी	७०
१९. मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्षकीर्त्ति	"	७१
२०. पद–(नैना सफल भयो प्रभु दरसण पाय)	रामदास	"	७२
२१ चलो जिनन्द वदस्या	×	"	७२–७३
२२ पद–प्रभुजी तुम मैं चरण शरण गह्यो	×	"	७४
२३. आमेर के राजाओ के नाम	×	"	७५
२४ " "	×	"	७६
२५. विनती–बोल २ भूलो रे भाई	नेमिचन्द्र	"	७८–७९
२६. पद–चेतन मानि ले बात	×	"	७९
२७. मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	"	८०
२८. विनती–बदू श्री अरहन्तदेव	हर्रिसह	"	८१–८२
२९. पद–सेवक हू महाराज तुम्हारो	दुलीचन्द	"	८२–८४
३०. मन धरी वे होत उछावा	×	"	८४–८६
३१ धरम का ढोल बजाये सूणी	×	"	८७
३२ अब मोहि तारोजी जगद्गुरु	मनसाराम	"	८८
३३ लागो दौर लागो दौर प्रभुजी का ध्यानमे मन ।	पूरणदेव	"	८८
३४ आसरा जिनराज तेरा	×	"	८८

३५. तु काएो क्यों तारोगी	×	हिन्दी	८६
३६ तुम्हारे दर्श देखत ही	जोधराज	"	६
३७ सुनि २ रे जीव मेरा	मनसाराम	"	१०-११
३८ भरमत २ संसार चतुर्गति दुख सहा	×	"	११-१३
३९. श्रीनेमकुंवार हमको क्यों न उतारो पार	×	"	१२
४ आरती	×	"	१३-१७
४१ पद—विनती करांछां प्रभु मानो जी	किशनगुलाब	"	१८
४२ ये जी प्रभु तुम ही उतारोगे पार	"	"	१९
४३ प्रभुजी मोह्या छे तन मन माणा	×	"	१९
४४ वंदू श्रीजिनराज	कनककीर्ति	"	१ -१ १
४५ बाला बलम्या प्यारा २	×	"	१ २
४६ सफल भयो हो प्रभुजी	खुसालचन्द	"	१ ३
४७ पद	देवसिंह	"	१ ४-१ ५
४८ चरखा चलता नांही रे	भूधरदास	"	१ ६
४९ भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१ ७-१७
५ चौबीस तीर्थंकर स्तुति	"	हिन्दी	११६-२१
५१ मेघकुमारवार्ता	"	"	१२१-२४
५२ शनिश्चर की कथा	"	"	१२५-४१
५३ धर्मगुरु की विनती	"	"	१४२-४३
५४ पद—शरण कर्म तु वीतराग	"	"	१४३-४७
५५. स्फुट पाठ	"	"	१४८-५३

५४६१ गुटका सं० ११० । पत्र सं १४३ । मा ६×४ इ च । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

१ नित्यपूजा	×	संस्कृत	१-३६
२ मोक्षशास्त्र	उमास्वामि	"	३६-४६
३ भक्तामरस्तोत्र	आ मानतु ग	"	५ -५८
४ पंचमंगल	रूपचन्द	"	५८-६८

५. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	६८–७५
६. पूजासंग्रह	×	”	७५–१०२
७ विनतीसंग्रह	देवाब्रह्म	”	१०२–१४३

५४६२. गुटका स० १११ । पत्र स० २८ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा–सस्कृत । पूर्ण । दशा–सामान्य

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	सस्कृत	१–६
२. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	”	११
३ चरचा	×	प्राकृतहिन्दी	११–२६

विशेष—"पुस्तक भक्तामरजी की पं० लिखमीचन्द रैनवाल हाला की छै। मिती चैत सुदी ६ संवत् १६५४ का मे मिली मार्फत राज श्री राठोडजी की सूं पचासू।" यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है।

५४६३ गुटका स० ११२ । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इंच । भाषा–सस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओ का संग्रह है ।

५४६४. गुटका सं० ११३ । पत्र स० १६–२२ । आ० ६½×५ इंच । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र स० १८–२० ।

डोकरी ने राजा भोज कही डोकरी हे राम राम । वीरा राम राम । डोकरी यो मारग कठा जाय छै । बीरा ईं मारग परथी आई अर परथी गई ।। १ ।। डोकरी मेहे बटाउ हे बटाउ । ना वीरा थे बटाऊ नाही । बटाऊ तो संसार माही दोय और ही छै ।। एक तो चाद अर एक सूरज ।। २ ।। डोकरी मेहे राजा हे राजा ।। ना बीरा थे तो राजा नाही । राजा तो ससार मे दोय और ही । एक तो अन्न अर एक पाणी ।। ३ ।। डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना वीरा थे चोर ना । चोर तो ससार मे दोय और ही छै । एक नेत्र चोर और एक मन चोर छै ।। ४ ।। डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना बीरा थे तो हलवा नाही ।। हलवा तो संसार मे दोय और ही छै । कोई पराये घर बसत मागिवा जाइ उका घर मे छै परिण नट जाय सो हलवो ।। ५ ।। डोकरी तू माहा के माता हे माता । ना बीरा माता तो दोय और ही छै । एक तो उदर माही सूं काढे सो माता । दूसरी धाय माता ।। ६ ।। डोकरी मेहे तें हारया हे हरया । ना बीरा थे क्या ने हारयो । हारयो तो ससार मे तोन और ही छै । एक तो मारग चालतो हारयो । दूसरो वेटी जाई सो हारयो तीसरी जैकी भोडी अस्त्री होइ सो हारयो ।। ७ ।। डोकरी मेहे वापडा हे बापडा । ना वीरा थे वापडा नाही । वापडा तो च्यारा और छै । एक तो गऊ को जायो वापडो । दूसरो छयाली को जायो वापडो । तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो वापडो । चौथा बामण वाण्या की बेटी विधवा हो जाय सो बापडी ।। ८ ।। डोकरी आपा मिला हे

मिला। चौरा मिलवा नामा तो ससार में च्यारि मौर ही छै। जैको बाप विरघा होसी सो वो मिलसी। घर पै को बेटा परदेश सू आमो होसी सो वो मिलसी। दूसरो सौवरण भादवा को मेह बरस सी सो समन्दर सू। तीसरो भरतेज को मात पैराबा जासी सो वो मिलसी। चौथा स्त्री पुरुष मिलसी। डोकरी आच्या हे बाच्या। भरिया कहे म उजलेउ भलसी भाया। पुरवा भाई पारया बोलार साथा ॥ १ ॥

॥ इति डोकरी राजा भोज की वार्ता सम्पूर्ण ॥

५४६५ गुटका सं १९४। पत्र सं ९–७२। आ ९३×५३ इञ्च।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है।

५४६६ गुटका सं० ११५। पत्र सं ११८। आ ९×५ इ च। भाषा—हिन्दी। अपूर्ण। दशा—सामान्य

विशेष—पूजा संग्रह, जिनयज्ञकल्प (आशाधर) एवं स्वयम्भूस्तोत्र का संग्रह है।

५४६७ गुटका सं० ११६। पत्र सं १११। आ ९×५ इ च। भाषा—संस्कृत। पूर्ण। दशा जीर्ण।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं।

४ भुवनकीर्ति गीत   बूचराज   हिन्दी   १२–१४

माजि वधाउ सुणहु सहेली मझु मनु विकसइ जि महलीए।
पोहि अनन्त मित कोटिहि सारिहि सुहु गुरु सुहु गुरु वेरहि सुकरि रलीए ॥
करि रसी बन्दह सखी सुहु गुरु लबधि गोइम सम सरै।
पसु वैखि वरवणु टलहि भवदुखा होइ नित नवनिधि घरै ॥
कपूर चन्दन अगर केसरि भरिहि भावन भाव ए।
श्रीभुवनकीर्ति चरण प्रणमोहु सखी आज वधाव हो ॥ १ ॥
तेरह विधि चारित प्रतिपालइ दिनकर दिनकर जिम तपि सोहइ ए।
सर्वांगि मालिउ मम सुणावै वाणी हो वाणी भवु मन मोहइ ए।
मोहन्ति वाणी सवा भवि सुनु ग्रन्थ आगम माहए।
षट द्रव्य पंच पञ्चास्तिकाया सप्ततत्व पयासए ॥
बावीस परिग्रह सहइ संगिहु गरुय मति नित प्रणमियो।
श्रीभुवनकीर्ति चरण पणमि सु चारितु तनु तेरह विधे ॥ २ ॥
मूल गुणहं अठाइसह धारइए मौहए मोहु महामदु ताडियो ए।
रतिपति तिणु वति हु महिहउ पुणु कोवहुए कोवडुवरि तिहि टालीयो ए ॥

रालियो जिमि क वैंड करिहि वनउ करि इम बोलइ ।
गुरु सियाल मेरह जिउग्र जगमु पवरा भइ किम डोलए ।
जो पच विषय विरतु चित्तिहि कियउ खिउ कम्मह तरगु ।
श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणमइ धरइ अठाइस मूलगुरणा ॥ ३ ॥
दस लाक्षरण धर्म निजु धारि कुं सजमु सजमु भसणु वनिए ।
सत्रु मित्रु जो सम किरि देखई गुरनिरगथु महा मुनीए ॥
निरगंथु गुरु मद अट्ठ परिहरि सवय जिय प्रतिपालए ।
मिथ्यात तम निर्द्धरण दिन म जैरगधर्म उजालए ॥
तेरमव्रतह अखल चिग्रह कियउ सकयो जम ।
श्री भुवनकीर्ति चरण परणमउ धरइ दशलक्षिरण धर्म्मु ॥ ४ ॥
सुर तरु सघ कलिउ चितामरिण दुहिए दुहि ।
महो धरि घरि ए पच सवद वाजहि उछरगि हिए ॥
गावहि ए कामरिण मधुर सरे अति मधुर सरि गावति कामरिण ।
जिरणह मन्दिर अवही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसममाल चढावहि ॥
बूचराज भरिण श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो ।
श्री भुवनकीर्ति आसीरवादहि सघु कलियो सुरतरो ॥

॥ इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ॥

५. नाडी परीक्षा	×	सस्कृत	१५–१८
६. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१९–१०६
७ पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	"	१०७

सुन्दर सोहरण गुरण निलउ, जग जीवरण जिरण चन्दोजी ।
मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनदो जी ॥ १ ॥
जेसलमेरू जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।
पास जिरणेसुर जग धरणी फलियो सुरतरु कन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥
मरिण मारिणक मोती जड्यउ कचरणरूप रसालो जी ।
सिरवर सेहर सोहतउ पूनिम ससिदल भालोजी ॥ ३ ॥ जे० ॥

निरमल तिलक सोहमणउ जिन मुख कमल रिसालोजी ।
कानों कुण्डल दीपतां झिक मिग मालक मालालोजी ॥ ४ ॥ मै ॥
कंठि मनोहर कंठिमउ उरि वारि नव सिर हारोजी ।
बहिर बाजूं भला करठा मक मक कारोजी ॥ ५ ॥ मे ॥
मरकत मणि तनु दीपती मोहन मूरति साटोजी ।
मुख सोहग संपद मिलइ जिलबर नाम मयारोजी ॥ ६ ॥ मे ॥
इन परि पास् जिणेसर भेटयउ कुल-सिणगारोजी ।
जिणचन्द्र सूरि पसाउ भइ समयराज सुखकारोजी ॥ ७ ॥ मै ॥
॥ इति श्री पार्श्वनाथस्तवन समाप्तोऽयं ॥

५५६८ गुटका स० ११७। पत्र सं ११ । आ ६'×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। दशा सामान्य।

विशेष— विविध पाठों का संग्रह है। चर्चाएं पूजाएं एवं प्रतिष्ठादि विषयों से संबंधित पाठ हैं।

५५६९. गुटका सं० ११८। पत्र सं १२१। आ ६×४ इंच।

१ तिथा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	५
२ श्री जिनवर पद वन्दि कै जी	बखतराम	"	५–७
३ अरहंत चरनचित लाऊं	रामकिशन	"	८–९
४ चेतन हो तैरे परम निधान	जिनदास	"	११–१२
५. चैत्यवंदना	नवलचन्द	संस्कृत	१२ १३
६ करुणाष्टक	पद्मनंदि	"	२१
७ पद—आजि दिवसि धनि लेख लेखवा	रामचन्द	हिन्दी	१७
८ पद–प्राणजयो मुमरि देव	जगराम	"	२१
९ पद–भुवनपतीजी प्रभु	नुनामिचन्द	"	७५
१ निर्वाणभूमि मंगल	विश्वभूषण	"	८९–९

संवत् १७२९ म मुमावर में बैं केसरीसिंह ने लिखा।

११ पञ्चमगतिबेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	११५–१८

रचना सं १६८३ प्रति लिपि सं १८३

५५००. गुटका स० ११६ । पत्र स० २५१ । श्रा० ६३/४×६ इञ्च । ले० काल स० १८३० असाढ बुदी ८ । अपूर्ण । दशा–सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर मे ऋषभ देव चैत्यालय मे रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । इसमे कवि बालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमे २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नही हैं ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र स० १३३ । श्रा० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी संस्कृत । विषय सग्रह । पूर्ण । दशा–सामान्य ।

१. रविव्रतकथा जयकीर्ति हिन्दी २–३ ले० काल स० १७६३ पौष सु० ८

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित ध्याऊ ।
सद्गुरु चरण कमल नमि रविव्रत गुण गाऊ ॥ १ ॥
व णारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।
सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥
मुनिवादि सेठे लीयो रविनोव्रत सार ।
साभालि कहूं बहासा कीया व्रत नद्यो अपार ॥ ३ ॥
नेह थी धन कण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।
सात पुत्र चाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनो व्रत कर सी ।
त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ॥ २० ॥
नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी रायरत्न सुभूषन ।
जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासघ गति दूषण ॥ २१ ॥

इति रविव्रत कथा सपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृतं ।
ले० काल स० १७६३ पौष सुदी ८ पं० दयाराम ने लिपी की थी ।

२ धर्मसार चौपई पं० शिरोमणि हिन्दी ३–७३

र० काल १७३२ । ले० काल १७६४ अवन्तिका पुरी मे श्रीदयाराम ने प्रतिलिपि की ।

निरमल तिलक सोहमणउ जिन मुख कमल रिसालोजी ।
कानों कुण्डल दीपतां झिक मिग झाक झमालीजी ॥ ४ ॥ वे ॥
कंठि मनोहर कंठिला उरि बारि नव सिर हारोजी ।
बहिर बबहिं भला करता झब झब कारोजी ॥ ५ ॥ वे ॥
मरकत मणि तनु दीपतो मोहन मूरति सारोजी ।
मुख सोहग संपद मिलइ जिणवर नाम मयारोजी ॥ ६ ॥ वे ॥
इम परि पास् जिणेसर भेटयउ कुल-सिणगारोजी ।
जिणचन्द्र सूरि पसाउ सह समयराज सुखकारोजी ॥ ७ ॥ वे ॥
॥ इति श्री पार्श्वनाथस्तवन समाप्तोऽयं ॥

५४१८ गुटका स० ११७ । पत्र सं ११ । आ १'×१ इञ्च । भाषा–संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

विशेष— विविध पाठों का संग्रह है । अर्थात् पूजाएं एवं प्रतिष्ठादि विषयों से संबंधित पाठहैं ।

५४१६. गुटका सं० ११८ । पत्र सं १२१ । आ ६×४ इंच ।

१ शिक्षा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	३
२ श्री जिनवर पद वन्दि कै जी	बखतराम	”	४–७
३ अरहंत चरमचित लाऊँ	रामविजय	”	६–१
४ चेतन हो तेरे परम निधान	जिनदास	”	११–१२
५. चैत्यवंदना	सकलचन्द्र	संस्कृत	१२ ११
६ करुणाष्टक	पद्मनंदि	”	२१
७ पद—शांति जिनति मनि लेसी लिवरा	रामचन्द्र	हिन्दी	३७
८ पद–प्रभातयो सुमरि देव	जगराम	”	५१
९ पद–सुल्पनईजी प्रभु	खुशालचन्द्र	”	७५
१ निर्वाणभूमि मंगल	विश्वभूषण	”	८६–१०
		संवत् १७२६ म भूनावर मे पं केसरीसिंह ने लिखा ।	
११ चन्द्रप्रभतिवेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	११५–१८
		रचना सं १६८३ प्रति लिपि सं १८३	

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६½×६ इञ्च । ले० काल स० १८३० असाढ बुदी ८ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर मे ऋषभ देव चैत्यालय मे रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। इसमे कवि वालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमें २५२ पद्य हैं। इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र स० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रविव्रतकथा

जयकीर्ति

हिन्दी २-३ ले० काल स० १७६३ पौष सु० ८

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित ध्याऊ ।
सद्गुरु चरण कमल नमि रविव्रत गुण गाऊ ॥ १ ॥
वणारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।
सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥
मुनिवादि सेठे लीयो रविनोव्रत सार ।
सामालि कहू बहासा कीया व्रत नद्यो अपार ॥ ३ ॥
नेह थी धन कण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।
सात पुत्र चाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनो व्रत कर सी ।
त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ॥ २० ॥
नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी रायरत्न सुभूषन ।
जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासघ गति दूषण ॥ २१ ॥
इति रविव्रत कथा सपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृतं ।
ले० काल स० १७६३ पौष सुदी ८ पं० दयाराम ने लिपी की थी ।

३ विषापहार स्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	८१–८८
४ दससूत्र अष्टक	×	संस्कृत	८६–६

बखाराम ने सूरत में प्रतिलिपि की थी। सं. १७६४। पूजा है।

५ निर्वाणकाण्ड	श्रीपाल	संस्कृत	६१–६३
६ पद—मेरी मेरी मेरी सुमति भ्रमरी	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	६७
७ पद—प्रात समै सुमरो जिनदेव	श्रीपाल	"	६७
८ पार्श्वविनती	ब्रह्मनाथू	"	६८–६६
६ कवित्त	ब्रह्मगुलाल	"	१२१

गिरनार की यात्रा के समय सूरत में लिपि किया गया।

५५०२. गुटका सं० १२१। पत्र सं. ३३। आ. ६३×४३ इंच। भाषा–हिन्दी।

विशेष–विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

५५०३. गुटका सं० १२२। पत्र सं. ११। आ० ६३×४३ इंच। भाषा–हिन्दी संस्कृत।

विशेष–तीन चौबीसी नाम दर्शनस्तोत्र (संस्कृत) कल्याणमंदिरस्तोत्र भाषा (बनारसीदास) भक्तामर स्तोत्र (मानतु गाचार्य) लक्ष्मीस्तोत्र (संस्कृत) निर्वाणकाण्ड, पंचमंगल देवपूजा सिद्धपूजा सोलहकारण पूजा पचीसी (भवत) पार्श्वनाथस्तोत्र सूरत की बारहखडी बाईस परीषह जैनशतक (भूधरदास) सामायिक टीका (हिन्दी) आदि पाठों का संग्रह है।

५५०४. गुटका सं० १२३। पत्र सं. २६। आ. ६×६ इंच भाषा–संस्कृत हिन्दी। दशा–जीर्णशीर्ण।

१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित	×	संस्कृत	२–१८
२ पल्यविधि	×	"	१८–२२
३ जैनपचीसी	नवलराम	हिन्दी	२२–२६

५५०५. गुटका सं० १२४। पत्र सं. ११। आ. ७×६ इंच।

विशेष–पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

५५०६. गुटका सं० १२५। पत्र सं. ३६। आ. १२×४ इंच। पूर्ण। सामान्य शुद्ध। दशा–सामान्य।

१ कर्म प्रकृति चर्चा	×	हिन्दी
२. चौबीसठाणा चर्चा	×	"

३ चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४ द्वीप समुद्रो के नाम	×	"
५ देशो (भारत) के नाम	×	हिन्दी

१. अगदेश। २ वगदेश । ३ कलिगदेश। ४ तिलंगदेश । ५. राट्टदेश। ६. लाट्टदेश। ७. कर्णाटदेश। ८ मेदपाटदेश। ९ वैराटदेश। १०. गौरुदेश। ११ चौरुदेश। १२ द्राविरुदेश। १३. महाराष्ट्र-देश। १४ सौराष्ट्रदेश। १५ कासमोरदेश। १६ कीरदेश। १७ महाकीरदेश। १८. मगधदेश। १९ सूरसेनुदेश। २०. कावेरदेश। २१. कम्बोजदेश । २२ कमलदेश । २३ उत्करदेश । २४ करहाटदेश । २५ कुरुदेश। २६. क्ष्माणदेश। २७ कच्छदेश। २८ कौसिकदेश। २९ सकदेश। ३० भयानकदेश। ३१ कौसिकदेश। ३२." ❀ ""। ३३. कारुतदेश। ३४ कापूतदेश। ३५ कछदेश। ३६ महाकछदेश। ३७ भोटदेश। ३८. महाभोटदेश। ३९. कोटिकदेश। ४० केकिदेश। ४१ कोल्लगिरिदेश। ४२ कामरूदेश। ४३ कुण्कुणदेश। ४४ कुंतलदेश। ४५. कलकूटदेश। ४६ करकटदेश। ४७ केरलदेश। ४८ खशदेश। ४९ खर्प्परदेश। ५० खेटदेश। ५१ विल्लर-देश। ५२. वेदिदेश। ५३ जालधरदेश। ५४. टकरण टक्क। ५५. मोडियाणदेश। ५६ नहालदेश। ५७. तुङ्गदेश। ५८ लायकदेश। ५९. कौसलदेश। ६० दशार्णदेश। ६१ दण्डकदेश। ६२ देशसभदेश। ६३ नेपालदेश। ६४. नर्तक-देश। ६५. पञ्चालदेश। ६६ पल्लकदेश। ६७ पूडदेश। ६८. पाण्ड्यदेश। ६९ प्रत्यग्रदेश। ७० अंबुददेश। ७१. वसु-देश। ७२. गभीरदेश। ७३ महिष्मकदेश। ७४ महोदयदेश। ७५ मुरण्डदेश। ७६ मुरलदेश। ७७ मरुस्थलदेश। ७८. मुद्गरदेश। ७९ मगनदेश। ८० मल्लवर्तदेश। ८१. पवनदेश। ८२ आरामदेश। ८३. राढकदेश। ८४. ब्रह्मोत्तरदेश। ८५. ब्रह्मावर्तदेश। ८६ ब्रह्मणदेश। ८७ वाहकदेश। विदेहदेश। ८९ वनवासदेश। ९०. वनायुक-देश। ९१ वाल्हाकदेश। ९२ वल्लत्रदेश। ९३ अवन्तिदेश। ९४ वन्हिदेश। ९५ सिंहलदेश। ९६ सुह्मदेश। ९७. सूपरदेश। ९८ सुहृडदेश। ९९. अस्मकदेश। १०० हूणदेश। १०१ हूर्म्मकदेश। १०२ हूर्म्मजदेश। १०३ हसदेश। १०४ हूहकदेश। १०५ हेरकदेश। १०६ वीणदेश। १०७ महावीणदेश। १०८ भट्टीयदेश। १०९. गोप्यदेश । ११० गाडाकदेश । १११ गुजरातदेश। ११२ पारसकुलदेश । ११३. शवालक्षदेश। ११४. कोलवदेश। ११५ शाकभरिदेश। ११६ कनउजदेश। ११७ आदनदेश। ११८ उचीविसदेश। ११९ नीला-वरदेश। १२० गगापारदेश। १२१ सजाणदेश। १२२. कनकगिरिदेश। १२३ नवसारिदेश। १२४ भाभिरिदेश।

६ क्रियावादियो के ३६३ भेद	×	हिन्दी

❀नोट— यह नाम गुटके मे खाली छोडा हुआ है।

७ स्फुट कवित्त एवं पद्य संग्रह	×	हिन्दी संस्कृत	
८ द्वादशानुप्रेक्षा	×	संस्कृत	
९ सूक्तावलि	×	„ ले० काल १८३६ मादवा सुदी १	
१ स्फुट पद्य एवं मंत्र आदि	×	हिन्दी	

५५०७ गुटका सं० १२६। पत्र सं० ४१। आ० १ ,×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-चर्चा

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है।

५५०८ गुटका सं० १२७। पत्र सं० ११। आ० ७×५ इञ्च।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५५०९ गुटका सं० १ ७क। पत्र सं० ५५। आ० ७½×६ इञ्च।

१ शीघ्रबोध	×	संस्कृत	१–१६
२ लघुचाणक्य	×	„	१७–३६
		विशेष—वैष्णवधर्म। ले० काल सं० १८ ७	
३ ज्योतिष्पटलमाला	श्रीपति	संस्कृत	४०–५१
४ भारणी	×	हिन्दी	५१–५५
		पहों को देखकर वर्षा होने का योग	

५५१० गुटका सं० १२८। पत्र सं० १–६। आ० ७½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५११ गुटका सं० १२६। पत्र सं० ८–२४। आ० ७×५ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष—क्षेत्रपालस्तोत्र लक्ष्मीस्तोत्र (सं०) एवं पञ्चमङ्गलपाठ हैं।

५५१२ गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६८। आ० ६×४ इंच। ले० काल १७५२ भादवा बुदी १ ।

१ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१–५४
२ चौबीसदण्डक	दौलतराम	हिन्दी	५५–६७
३ पीठप्रक्षालन	×	संस्कृत	६८

५५१३ गुटका सं० १३१। पत्र सं० १४। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह।

५५१४ गुटका सं० १३२। पत्र सं० १४–४१। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

१. पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द	हिन्दी ले० काल १८२६	१५-२२
२. स्तुति	×	"	२३-२३
३. दोहाशतक	रूपचन्द	"	२५-३८
४. स्फुटदोहे	×	"	३४-४१

५५१५ गुटका सं० १३३ । पत्र सं० १२१ । आ० ५३/४×४ इंच । भाषा-सस्कृत हिन्दी ।

विशेष—छहढाला (द्यानतराय), पचमङ्गल (रूपचन्द), पूजायें एवं तत्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि का सग्रह है ।

५५१६. गुटका सं० १३४ । पत्र स० ४१ । आ० ५३/४×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—शातिनाथस्तोत्र, स्कन्दपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल । ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११ ।

५५१७. गुटका स० १३५ । पत्र सं० १३-१३४ । आ० ३३/४×४ इंच । भाषा-सस्कृत हिन्दी । अपूर्ण

विशेष—पंचमङ्गल, तत्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठो का सग्रह है ।

५५१८ गुटका स० १३६ । पत्र सं० ४-१०८ । आ० ८३/४×२ इञ्च । भाषा-सस्कृत ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, अष्टक आदि हैं ।

५५१९. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० १६ । आ० ६×४३/४ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

१ मोरपिच्छधारी (कृष्ण) के कवित्त	धर्मदास, कपोत, विचित्र देव	हिन्दी	३ कवित्त हैं ।
२ वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	"	

वाजिद के कवित्तों के ९ अंग हैं । जिनमे ९० पद्य हैं । इनमे से विरह के अग के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं ।

वाजीद विपति वेहद कहो कहां तुझ सो । सर कमान की प्रीत करी पीव मुझ सौं ।
पहले अपनी ओर तीर को तान ही, परि हा पीछे डारत दूरि जगत सव जानई ।।२।।
विन वालम वेहाल रह्यौ क्यो जीव रे । जरद हरद सी भई विना तोहि पीवरे ।
रुधिर मास के सास है क चाम है । परि हां जव जीव लागा पीव और क्यो देखना ।।२५।।
कहिये सुनिये राम और न वित रे । हरि ठाकुर को ध्यान स धरिये नित रे ।
जीव विलम्ब्या पीव दुहाई राम की । परि हा सुख सपति वाजिद कहो क्यो काम की । २६।।

५५२०. गुटका सं० १३९ । पत्र सं० ६ । आ० ७×४३/४ इंच । भापा-हिन्दी । विपय-कथा । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—मुक्तावली व्रतकथा भापा ।

५५२१. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ८ । आ० ६½×४½ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल सं० १९३१ माघाढ सुदी १५ । पूर्ण एवं शुद्ध दशा-सामान्य ।

विशेष—सोनागिरि पूजा है ।

५५२२. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० १७ । आ० ५×१ इ च । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५५२३. गुटका सं० १४२ । पत्र सं० ९ । आ० ५×४ इ च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१८ असाढ सुदी १४ ।

विशेष—गुटके में निम्न २ पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१ सहकाला	दानतराय	हिन्दी	१-६
२ सहकला	किसन	,,	१ १२

५५२४. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १७४ । आ० ५½×४ इ च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८२० । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२५. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ९१ । आ० ८×६ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२६. गुटका सं० १४५ । पत्र सं० ११ । आ० ६×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पक्षीशकुन । ले० काल १८७४ ज्येष्ठ सुदी १४ ।

प्रारम्भ के पद्य—

समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतुं सारस्वत विशारद ।
भविष्यद्वर्त्तमानस्य वक्ष्ये पक्षिशकुनं ॥१॥
प्रवेश काललाभेषु लाभे कामवर्य मति ।
फलाफल निपुण्यन्ते सर्वकार्येषु निश्चित ॥२॥

५५२७. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २५ । आ० ७×५ इ च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य

विशेष—पार्श्वनाथ पूजा (सेवकराम) भजन एवं नेमिनाथ की भावना (सेवकराम) का संग्रह है । पट्टी पहाड़े भी लिखे गये हैं । अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५२८. गुटका स० १४७। पत्र स० ३-५७। ग्रा० ६×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। दशा-जीर्ण शीर्ण।

विशेष—शीघ्रबोध है।

५५२९. गुटका सं० १४८। पत्र स० ५५। ग्रा० ७×५ इंच। भाषा-सस्कृत। विषय स्तोत्र सग्रह है

५५३०. गुटका सं० १४९। पत्र स० ८६। ग्रा० ६×६½ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८४९ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१. विहारीसतसई	विहारीलाल	हिन्दी	१-३५
२ वृन्द सतसई	वृन्दकवि	"	३६-८०
	७०८ पद्य हैं। ले० काल स० १८४९ चैत सुदी १०।		
३ कवित्त	देवीदास	हिन्दी	३६-८०

५५३१. गुटका स० १५०। पत्र स० १३५। ग्रा० ६½×४ इंच। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८४५। दशा-जीर्ण शीर्ण।

विशेष—लिपि विकृत है। कक्का बत्तीसी, राग चीतरण का दूहा, फूल भीतरणी का दूहा, आदि पाठ है। अधिकांश पत्र खाली हैं।

५५३२. गुटका स० १५१ पत्र स० १८। ग्रा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—पदो तथा विनतियो का सग्रह है तथा जैन पच्चीसी (नवलराम) बारह भावना (दौलतराम) निर्वाणकाण्ड है।

५५३३ गुटका सं० १५ । पत्र स० १०७। ग्रा० १२×५ इंच। भाषा-सस्कृत हिन्दी। दशा-जीर्ण शीर्ण।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थो मे से छोटे २ पाठो का सग्रह है। पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है।

५५३४. गुटका स० १५३। पत्र सं० ६०। ग्रा० ८×५½ इंच। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-संग्रह अपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, पूजाए एव पञ्चमगल पाठ है।

५५३५ गुटका स० १५४। पत्र स० ८६। ग्रा० ६×४ इंच। ले० काल १८७६।

१. भागवत	×	सस्कृत	१-८
२ मत्र आदि सग्रह	×	"	६-१२

३	चतुश्लोकी गीता	×	"	२३–२४
४	भागवत महिमा	×	हिन्दी	२५–५१
			तीर्थों के नाम एवं देवाधिदेव स्तोत्र है।	
५.	महाभारत विष्णु सहस्रनाम	×	संस्कृत	५२–८६

५५३६ गुटका स० १५५। पत्र सं १८। ६×६ इंच। भाषा–संस्कृत। पूर्ण।

१	सोमेन्द्र पूजा	×	संस्कृत	१–३
२	पार्श्वनाथ जयमाल	×	"	४–११
३	सिद्धपूजा	×	"	१२
४	पार्श्वनाथाष्टक	×	"	३–६
५.	षोडशकारणपूजा	आचार्य केशव	"	१–१४
६	सोलहकारण जयमाल	×	अपभ्रंश	१६–५
७	दशलक्षण जयमाल	×	"	५१–६३
८	द्वादशव्रतपूजा जयमाल	×	संस्कृत	६४–८
९	रणमोकार पैंतीसी	×	"	८१–८५

५५३७ गुटका सं० १५६। पत्र स १७। आ ५×१ इंच। ले काल १७७६ ज्येष्ठ सुदी २। भाषा–हिन्दी। पत्र सं ७६।

विशेष—यादव वंशोत्पत्ति वर्णन है।

५५३८. गुटका स० १५७। पत्र स १२। आ ६×५ इंच। ले काल १८३३।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र अक्षर बावनी (मालदराम) एवं पंचमंगल के पाठ हैं। पं सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में सं १८३३ में प्रति लिपि की।

५५३९ गुटका स० १५७ (क) पत्र स १४१। आ० ६×४ इंच। भाषा–हिन्दी। विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

५५४० गुटका सं० १५८। पत्र सं १८। आ ६×६ इंच। भाषा–हिन्दी। ले काल १८१। दशा–जीर्ण।

विशेष—सामान्य चर्चाओं पर पाठ है।

५५४१ गुटका सं० १५९। पत्र सं १५। आ ७×४। ले काल–×। दशा–जीर्ण। विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

५५४२ गुटका स० १६० । पत्र स० ६५ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५५४३ गुटका स० १६१ । पत्र स० २६ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी सस्कृत । ले० काल १७३७ पूर्ण । सामान्य पाठ है ।

५५४४. गुटका स० १६२ । पत्र स० ११ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । अपूर्ण । पूजाओ का सग्रह है ।

५५४५ गुटका स० १६३ । पत्र स० २१ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र एव दर्शन पाठ आदि हैं ।

५५४६ गुटका स० १६४ । पत्र स० १०० । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९३४ पूर्ण ।

विशेष-पद्मपुराण मे से गीता महात्म्य लिया हुवा है । प्रारम्भ के ७ पत्रो मे सस्कृत मे भगवत गीता माला दी हुई है ।

५५४७ गुटका स० १६५ । पत्र स० ३० । आ० ६½×५½ इञ्च । विषय-आयुर्वेद । अपूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष-आयुर्वेद के नुसखे हैं ।

५५४८ गुटका स० १६६ । पत्र स० ६८ । आ० ४×२½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-४०
२. कर्मप्रकृतिविधान	वनारसीदास	”	४१-६८

५५४९. गुटका सं० १६७ । पत्र स० १४८-२४७ । आ० २×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५५०. गुटका स० १६८ । पत्र स० ४० । आ० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५५१. गुटका स० १६९ । पत्र सं० २२ । आ० ९×९ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८० श्रावण सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ धर्मरासौ	×	हिन्दी	१-१८

अथ धर्म्म रासो लिख्यते—

पहली वदो जिणवर राइ, तिहि वद्या दुख दालिद्र जाइ ।
रोग कलेस न सचरै, पाप करम सव जाइ पुलाई ।।
निश्चै मुक्ति पद सचरै, ताको जिन धर्म्म होई सहाई ।। १ ।।

धर्म दुहेलो जैन को घड़ बरसत जै ही परवान ।

श्रावक जन सुणिजे दे कान सम्यग्दीव चित संभलो ॥

पढउ चित सुख होई निधान धर्म दुहेलो जैन का ॥ २ ॥

पूजा करी शारद माई मुनो भावर माणी हाइ ॥

कुमति कलेस न उपजे, महा सुमति करौं भविकाइ ॥

जिणधर्म रासो वर्णव तिहि पढत मन होइ उछाह ॥

धर्म दुहेलो जैन को ॥ ४ ॥

अन्तिम— ऊमी श्रीमण भावे सही आगम बात जिणेसुर कही ।

घर पाथा आहार लै ये भट्टारीस मूलगुण जाणि ॥

जम वती के पामही, तै मनुक्रम पहुंचे निरवाणि ।

धर्म दुहेलो जैन को ॥१५२॥

मूढ देव गुरुशास्त्र बखाणि जु पद मनायतन जाणि ।

आठ दोष शंका आदि दै आठ मद सौ तजै पचीस ॥

तै निरचै सम्यक्त पलै ऐसी विधि भासै जगदीश ।

धर्म दुहेलो जैन का ॥१५३॥

इति श्री धर्मरासो समाप्ता ॥१॥ स० १७१६ श्रावण बुदी २ सांगानायर मध्ये ।

५५५० गुटका सं० १८ । पत्र स० ५ । आ० ८×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय पूजा ।

विशेष—सिद्धपूजा है ।

५५५३ गुटका सं० १०१ । पत्र स० ६ । आ० ६×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—सम्मेदशिखर पूजा है ।

५५५४ गुटका स० १७ । पत्र स० १२ ६ । आ० १×१ इंच । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७६८ । सावण सुदी १ ।

विशेष—पूजा पद एवं विनतियों का संग्रह है ।

५५५५ गुटका स० १०३ । पत्र स० १ ५ । आ० ६×४ इंच । अपूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष —आयुर्वेद के नुसखे मन्त्र तन्त्रादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नहीं है ।

४५५६. गुटका सं० १७१ । पत्र स० ४-६३ । आ० ६X४½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार रस । ले० काल स० १७४७ जेठ बुदी १ ।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का सग्रह है ।

४५५७. गुटका सं० १८५ । पत्र स० २४ । आ० ६X४ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

४५५८. गुटका स० १७६ । पत्र स० ८ । आ० ५X३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल स० १८०२ । पूर्ण ।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है ।

४५५९ गुटका स० १७७ । पत्र स० २१ । आ० ५'X३½ इंच । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—पद एव विनती सग्रह है ।

४५६० गुटका स० १७८ । पत्र स० १७ । आ० ६X४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—प्रारम्भ मे बादशाह जहांगीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है । स० १६८४ मंगसिर सुदी १२ । तारातम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके आदेश के अनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी ।

४५६१. गुटका स० १७९ । पत्र स० १४ । आ० ६X४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद सग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पद सग्रह है ।

४५६२ गुटका स० १८० । पत्र स० २१ । आ० ६X४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरायमल्ल), आदित्यवरकथा के पाठ का मुख्यत सग्रह है ।

४५६३ गुटका सं० १८१ । पत्र स० २१-४६ ।

१	चन्द्रवरदाई की वार्ता	×	हिन्दी	२३-२६
			पद्य स० ११६ । ले० काल स० १७१६	
२	गुरुसीख	×	हिन्दी	२८-३०
३	कक्काबत्तीसी	ब्रह्मगुलाल	„ र० काल स० १७९५	३०-३४
४	अन्यपाठ	×	„	३४-४६

विशेष—अधिकाश पत्र खाली हैं ।

४५६४. गुटका स० १८२ । पत्र स० १६ । आ० ६X६ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजा हैं ।

५५६५. गुटका सं० १८३। पत्र सं० २०। आ० १ ×६ इ च। भाषा—संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। दशा—जीर्ण क्षीर्ण।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों पर पुष्पमालें हैं। तथा पत्र १०–२ तक वास्तुशास्त्र है। हिन्दी गद्य में है।

५५६६ गुटका सं० १८४। पत्र सं० २४। आ० ६½×५ इ च। भाषा—हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—वृन्द विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २५ पद्य तक है।

५५६७ गुटका सं० १८५। पत्र सं० ७–८८। आ० १ ×७½ इ च। भाषा—हिन्दी। लि० काल सं० १८२१ मंगसिर बुदी ८।

विशेष—बीकानेर में प्रतिलिपि की गई थी।

१	समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	७–७१
२	ममायीराम चौडालिया	विमल विनयगणि	" ७१ पद्य हैं	७१–७८
३	अध्यमन गीत	×	हिन्दी	७८–८३
		इस अध्याय में अलग अलग गीत हैं। अन्त में चूलिका गीत है।		
४	स्फुट पद	×	हिन्दी	८४–८८

५५६८ गुटका सं० १८६। पत्र सं० ५२। आ० ८×५ इ च भाषा—हिन्दी। विषय पद संग्रह।

विशेष—१४२ पदों का संग्रह है मुख्यतः बालमराम के पद हैं।

५५६९. गुटका सं० १८७। पत्र सं० ७७। पूर्ण।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१	चौरासी गोत	×	हिन्दी	१–२
२	बादशाह वंश के राजाओं के नाम	×	"	२–४
३	देहली राजाओं की वंशावली	×	"	५–१६
४	देहली के बादशाहों के परगनों के नाम	×	"	१७–१८
५.	सीख सतरी	×	"	१९–२
६	१६ कारणों के नाम	×	"	२१
७	चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२२ ४५

५५७० गुटका सं० १८८। पत्र सं० ११–७१। आ० ६×४½ इ च। भाषा–हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके में भक्तामरस्तोत्र कल्याणमन्दिरस्तोत्र है।

१ पार्श्वनाथस्तवन एव अन्य स्तवन	यतिसागर के शिष्य जगरूप	हिन्दी	र० स० १८००

आगे पत्र जुडे हुए हैं एव विकृत लिपि मे लिखे हुये हैं।

५५७१. गुटका सं० १८६। पत्र स० ६–७८। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य। विषय–इतिहास।

विशेष—अकबर बादशाह एव बीरबल आदि की वार्ताए हैं। बीच बीच के एवं आदि अन्त भाग नहीं हैं।

५५७२. गुटका स० १६०। पत्र स० १७। आ० ४×३ इञ्च। भाषा–हिन्दी।

विशेष—रूपचन्द कृत पञ्चमगल पाठ है।

५५७३. गुटका सं० १६१। पत्र सं० २८। आ० ८½×६ इ च। भाषा–हिन्दी।

विशेष—सुन्दरदास कृत सवैये एव अन्य पद्य है। अपूर्ण है।

५५७४ गुटका सं० १६२। पत्र स० ४५। आ० ८½×६ इ च। भाषा–प्राकृत सस्कृत। ले० काल १८००।

१. कवित्त	×	हिन्दी	१–४
२. भयहरस्तोत्र	×	प्राकृत	५–६
		हिन्दी गद्य टीका सहित है।	
३ शातिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	"	७–६
४. नमिऊणस्तोत्र	×	"	६–१२
५ अजितशातिस्तवन	नन्दिषेण	"	१३–२२
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	२३–३०
७ कल्याणमदिरस्तोत्र	×	संस्कृत ३१–३६ हिन्दीगद्य टीकासहित है।	
८ शातिपाठ	×	प्राकृत ४०–४५	"

५५७५ गुटका स० १६३। पत्र स० १७–३२। आ० ८½×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। ले० काल १८६७।

विशेष–तत्वार्थसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र है।

५५७६. गुटका सं ० १६४। पत्र स० १३। आ० ६×६ इ च। भाषा- हिन्दी। विषय–कामशास्त्र। अपूर्ण। दशा–सामान्य। कोकसार है।

५५७७. गुटका स० १६५। पत्र स० ७। आ० ६×६ इ च। भाषा–संस्कृत।

विशेष–भट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है। ४६ पद्य हैं।

५५७८ गुटका सं० १९६ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष – नाटकसमयसार है ।

५५७९. गुटका सं० १९७ । पत्र सं० १० । आ० ८×६ इंच । भाषा–हिन्दी । ले० काल १८१४ मादवा सुदी १४ । बुधजन के पदों का संग्रह है ।

५५८० गुटका सं० १९८ । पत्र सं० ११ । आ० ८½×६½ इंच । अपूर्ण । पूजा पाठ संग्रह है ।

५५८१ गुटका सं० १९९ । पत्र सं० २-२९ । आ० ८×६ इंच । भाषा–संस्कृत हिन्दी अपूर्ण । दशा–जीर्ण ।

विशेष–पूजा पाठ संग्रह है ।

५५८२ गुटका सं० २०० । पत्र सं० १४ । आ० ६,×८ इंच । पूर्ण । दशा–सामान्य

१	जिनदत्त चौपई	रलहकवि	प्राचीन हिन्दी	

रचना संवत् १३५४ भादवा सुदी ५ । ले० काल संवत् १७५२ । पाटण निवासी महानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२	पार्श्वनाथ रैवता	सहजकीर्ति	प्राचीन हिन्दी	अपूर्ण

र० काल सं० १६६७ । रचना स्थान सांगानेर । ले० काल सं० १७२१ मंगसिर सुदी ७ । महानंद ने प्रतिलिपि की थी । १२ पद्य से ४५ वें तक ११ तक के पद्य हैं ।

३	पंचकल्याणी	×	रामस्वामी सेरमइ की	"
४	कवित्त	वृन्दावनदास	हिन्दी	
५	पद–देसन रैसन जिनबिन कछु न विचार	भवसीसागर	"	रागमल्हार
६	तूही तू ही मेरे साहिब	"	"	रागकाफी
७	तूही तूही २ तूही बोल		"	×
८	कवित्त	ब्रह्म गुलाल एवं वृन्दावन	"	पत्र १५

ले० काल सं० १७१ फागण सुदी १४ । फतेहचन्द जैन ने प्रतिलिपि की थी । कैलास का वासी पाल देसा ।

९	चैत्र पूर्णिमा कथा	×	हिन्दी	पूर्ण
१०	कवित्त	ब्रह्म गुलाल	"	
११	"	×	"	

१२. समुय विजय सुत सावरे रंग भीने हो	×	"

लें० काल १७७२ मोतीहटका देहुरा दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी।

१३. पञ्चकल्याणकपूजा अष्टक	×	सस्कृत लें० काल सं० १७५२ ज्येष्ठ कृ० १०।
१४. षट्रस कथा	×	सस्कृत लें० काल सं० १७५२।

५५८३. गुटका स० २०१। पत्र स० ३६। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। पूर्ण।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) खुशालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एव लालचन्द कृत राजुल पच्चीसी के पाठ और है।

५५८४. गुटका स० २०२। पत्र स० २८। आ० ६×५½ इंच। भाषा-सस्कृत। लें० काल सं० १७५०।

विशेष पूजा पाठ सग्रह के अतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दशारास पाठ भी है।

५५८५ गुटका सं० २०३। पत्र स० २०-३६, १८५ से २०३। आ० ६×५½ इंच। भाषा सस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। दशा-सामान्य। मुख्यत निम्न पाठ है।

१ जिनसहस्रनाम	आशाधर	सस्कृत	२०-२६
२. ऋषिमण्डलस्तवन	×	"	३०-३६
३. जलयात्राविधि	ब्रह्मजिनदास	"	१६२-१६६
४ गुरुओ की जयमाल	"	हिन्दी	१६६-१६७
५. णमोकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	"	१६७-२२०

५५८६. गुटका स० २०४। पत्र स० १४०। आ० ६×४ इंच। भाषा-सस्कृत हिन्दी। लें० काल सं० १७६१ चैत्र सुदी ६। अपूर्ण। जीर्ण।

विशेष—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी। मुख्यत समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथू) का संग्रह है।

५५८७ गुटका स० २०५। नित्य नियम पूजा सग्रह। पत्र स० ६७। आ० ८½×५½। पूर्ण एव शुद्ध। दशा-सामान्य।

५५८८ गुटका स० २०६। पत्र स० ४७। आ० ८½×७। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। दशा सामान्य। पत्र स० २ नही है।

१ सुदर श्रृंगार	महाकविराय	हिन्दी	पद्य स० ८३१

महाराजा पृथ्वीसिहजी के शासनकाल मे आमेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२ स्यामबतीसी　　　नन्ददास　　　"

बीकानेर निवासी महात्मा फकीरा ने प्रतिलिपि की। मालीराम बजाने सं १८१२ में प्रतिलिपि कराई थी।

अन्तिम भाग—

दोहा—कृष्ण ध्यान बरासु मठ मवनहि सुत प्रवीन।

कहत स्याम कलमम कछु रहत न रंच समान ॥ १६ ॥

छन्द मत्तगयन्द—

ज्यो सनकादिक नारदस्मेद बहु सेस महेस कु पार न पायौ।

सो सुत ब्यास विरंचि बखानत निगम कु सौचि अगम बतायौ ॥

ईश्क मान्द नहि माय जसोमति नन्दलला धुम धामि कहायो।

सो कवि या नवि कहाम्य करी कु नस्याम कु स्यांम भले गुनगायौ ॥१७॥

इति श्री नन्ददास कृत स्याम बतीसी सपूर्ण ॥ लिखतं महात्मा फकीरा वासी बीकानेर का। लिखावतु मालीराम वामा संवत् १८१२ मिती भादवा सुदी १४।

५५८८. गुटका सं० २०७। पत्र सं २०। आ० ७×५ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले काल सं १९८९।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ पद एवं भजनों का संग्रह है।

५५९०. गुटका सं० २०८। पत्र सं १७। आ ६३ ६½ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—चाणक्य नीतिसार तथा नाथूराम कृत बालकसार है।

५५९१ गुटका सं० २०९। पत्र सं १६-२४। आ ६×५ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—सूरदास परमानन्द आदि कवियों के पदों का संग्रह है। विषय-कृष्ण भक्ति है।

५५९२. गुटका सं० २१०। पत्र सं २७। आ ६३×६३ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—चतुर्दश गुणस्थान चर्चा है।

५५९३ गुटका सं० २११। पत्र सं ४६-८७। आ ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८१०।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास का संग्रह है।

५५९४ गुटका सं० २१२। पत्र सं ९-११। आ ६×६ इंच।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पद संग्रह है।

५५६५. गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। आ० ६×५ इंच। भाषा–हिन्दी। ले० काल १८४७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं है। सम्बोधपचासिका (द्यानतराय) बूजलाल की बारह भावना, वैराग्य पच्चीसी (भगवतीदास) आलोचनापाठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयसुन्दर) राजुल पच्चीसी (विनोदीलाल) आदित्यवार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठो का संग्रह है।

५५६६ गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। आ० ६×६ इंच।

विशेष—सुन्दर शृंगार का संग्रह है।

५५६७. गुटका सं० २१५। पत्र सं० १३२। आ० ६×६ इंच। भाषा–हिन्दी।

१ कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	हिन्दी		५–७
२ सीताजी की विनती	×	,,		७–८
३ हंस की ढाल तथा विनती ढाल	×	,,		६–१२
४ जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	,,		१२
५. होली कथा	छीतरठोलिया	,,	र० सं० १६६०	१३–१८
६ विनतिया, ज्ञानपच्चीसी, बारह भावना राजुल पच्चीसी आदि	×	,,		१६–४०
७ पांच परवी कथा	ब्रह्मवेणु (भ. जयकीर्ति के शिष्य)	,,	७६ पद्य हैं	४१–४०
८ चतुर्विंशति विनती	चन्द्रकवि	,,		४५–६७
९ बधावा एवं विनती	×	,,		६७–६६
१०. नव मंगल	विनोदीलाल	,,		६६–७७
११. कक्का बतीसी	×	,,		७७–८१
१२ बड़ा कक्का	गुलाबराय	,,		८०–८१
१३ विनतिया	×	,,		८१–१३२

५५६८ गुटका सं० २१६। पत्र सं० १६४। आ० ११×६ इंच। भाषा–हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है।

१ जिनवराक्षत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१–२
		भट्टारक पट्टावली दी गई है।	
२. आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	१३–१५

३ मुक्तावलि गीत	सकलकीर्ति	हिन्दी	१५
४ चौबीस गणधरस्तवन	गुणकीर्ति	"	१
५ अष्टाह्निकागीत	भ शुभचन्द्र	"	२१
६ मिथ्या दुक्कड	ब्रह्मजिनदास	"	२२
७ क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	संस्कृत	१७-१८
८ जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१०६-११६
९ भट्टारक विजयकीर्ति अष्टक	×	"	१५

५५९९ गुटका स० २१७ । पत्र स १७१ । आ ८३⁄४×६३⁄४ इ च । भाषा संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

५६०० गुटका सं० २१८ । पत्र स १६६ । आ ६×५३⁄४ इ च । भाषा–संस्कृत ।

विशेष—१४ पूजाओं का संग्रह है ।

५६०१ गुटका सं० २१९ । पत्र सं १८४ । आ ६×७ इ च । भाषा–हिन्दी ।

विशेष—खडगसेन कृत त्रिलोकदर्पणकथा है । ले काल १७५१ ज्येष्ठ बुदी ७ बुधवार ।

५६०२ गुटका स० २२० । पत्र स ८ । आ ७३⁄४×५ इ च । भाषा–अपभ्र श संस्कृत ।

१ निर्भरपंचमीविहाणकहा	महणसिंह	अपभ्र श	१–७
२ नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत	७ –८

विशेष—गुटके के अधिकांश पत्र जीर्ण तथा फटे हुए हैं एवं गुटका अपूर्ण है ।

५६०३ गुटका स० २२१ । पत्र सं ५१-६६ । आ ८३⁄४×६ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जोधराज गोदीका की सम्यक्त्व कौमुदी (अपूर्ण) प्रीतंकरचरित्र एवं नयचक्र की हिन्दी गद्य टीका अपूर्ण है ।

५६०४ गुटका स २२२ । पत्र सं १११ । आ ५×६ इ च । भाषा–संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०५ गुटका स० २२३ । पत्र स ५२ । आ ७×४ इ च । भाषा–हिन्दी ।

विशेष—प्रश्न पृच्छाएं एवं उनके उत्तर दिये हुए हैं ।

५६०६ गुटका सं० २२४ । पत्र सं १४ । आ ७×५३⁄४ इ च । भाषा संस्कृत प्राकृत । दशा–जीर्ण शीर्ण एवं अपूर्ण ।

विशेष—गुर्वावली (अपूर्ण) भक्तिपाठ स्वयभूस्तोत्र तत्वार्थसूत्र एवं सामायिक पाठ आदि हैं ।

५६०८. गुटका स० २०५ । पत्र सं० ११-१७७ । आ० १०×४½ इच । भाषा-हिन्दी ।

१ बिहारी सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल स० १८३४ । पत्र स० ११ से १३१ । ले० काल सं० १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक मे ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं—

जद्यपि है सोभा सहज मुक्त न तऊ सुदेश ।
पोये ठौर कुठौर के लरमे होत विशेष ।।७१।।

इस पर ७१५ सख्या है । वे सातसौ से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है । केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नही है । ७१४ दोहो के आगे निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

सालग्रामी सरजु जह मिली गगसो आय ।
अन्तराल मे देस सो हरि कवि को सरसाय ।।१।।
लिखे दूहा भूषन बहुत अनवर के अनुसार ।
कहु औरे कहु और हू निकलेंगे लङ्कार ।।२।।
सेवी जुगल किसोर के प्राननाथ जी नाव ।
सतसती तिनसो पढी वसि सिंगार बट ठाव ।।३।।
जमुना तट शृङ्गार वट तुलसी विपिन सुदेस ।
सेवत सत महत जहि देखत हरत कलेस ।।४।।
पुरोहित श्रीनन्द के मुनि सडिल्य महान ।
हम हैं ताके गौत मे मोहन मो जजमान ।।५।।
मोहन महा उदार तजि और जाचिये काहि ।
सम्पत्ति सुदामा को दई इन्द्र लही नही जाहि ।।६।।
गहि अक सुमनु तात तैं विधि को वस लखाय ।
राधा नाम कहैं सुनैं आनन कान वढाय ।।७।।
सवत् अठारहसौ विते ता परि तीसरु चारि ।
जन्माठै पूरो कियो कृष्ण चरन मन धारि ।।८।।

इति हरचरणदास कृता बिहारी रचित सतसती टीका हरिप्रकाशाख्या सम्पूर्णा । संवत् १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवासरे शुभमस्तु ।

२ कविवल्लभ—ग्रन्थकार हरिचरणदास । पत्र सं १११–१७७ । भाषा—हिन्दी पद्य

विशेष—१८७ तक पद्य हैं । आगे के पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—

मोहन चरन पयोज में है तुलसी को वास ।
ताहि सुमरि हरि भक्त सब करत विघ्न को नास ।।१।।

कवित्त—

आनन्द को कन्द वृषभान जाको मुखचन्द
लीला ही ते मोहन के मानस को चोर है ।
दूजी तैसो रचिवे को चाहत विरंचि निति
ससि को बनावै अजो मन कौन मोरै है ।
फेरत है सान आसमान पै चढ़ाय फेरि
पानि पै चढ़ाय कै की वारिधि में बोरै है ।
राधिका के आनन के जोट न विलोके विधि
टूक टूक तोरै पुनि टूक टूक जोरै है ।।

ग्रन्थ दोष लक्षण दोहा—

रस आनन्द सरूप कौं दूर्षे ते हैं दोष ।
आरमा कौं ज्यों अंधता और बधिरता रोष ।।३।।

अन्तिम भाग—

दोहा—

साका सत्तरह सौ पुनी संवत् पैंतीस जान ।
अठारह सो जेठ बुदि ते ससि रवि दिन प्रात ।।२८४।।

इति श्री हरिचरणजी विरचित कविवल्लभो ग्रन्थ सम्पूर्ण । सं १८५२ माघ कृष्णा १४ रविवासरे ।

५६०६. गुटका सं० २२६ । पत्र सं १ । आ ११×६ इंच । भाषा हिन्दी । ले काल १८२५ जेठ बुदी १५ । पूर्ण ।

१ सप्तभंगीवाणी	भगवतीदास	हिन्दी	१
२ समयसारनाटक	बनारसीदास		१–१

५६१०. गुटका सं २२७ । पत्र सं २१ । आ ८×५½ । भाषा हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । ले काल सं १७४७ असाढ बुदी ६ ।

विशेष—रससागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य मे है। पोथी लिखी पंडित डूंगरसी की सो देखि लिखो–द्वि० असाढ बुदी ६ वार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोधा।

५६११. गुटका सं० २२८। पत्र स० ४६ से ६२। आ० ६×७ इ०। भाषा–प्राकृत हिन्दी। ले० काल १६५४। द्रव्य सग्रह की भाषा टीका है।

५६१२. गुटका सं० २२६। पत्र स० १८। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी।

१. पचपाल पैंतीसो	×	हिन्दी	१–६
२. अकपनाचार्यपूजा	×	”	७–१२
३ विष्णुकुमारपूजा	×	”	१३–१८

५६१३ गुटका स० २३०। पत्र स० ४२। आ० ७×६ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

५६१४. गुटका स० २३१। पत्र सं० २५–४७। आ० ६×६ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।

विशेष—नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है।

५६१५. गुटका सं० २३२। पत्र स० १४–१५७। आ० ७×५ इ०। भाषा–हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—भैया भगवतीदास कृत अनित्य पच्चीसी, बारह भावना, शत अष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूधरदास) दान बावनो (द्यानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्म्मछत्तीसी, ज्ञानपच्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मदिर भाषा, दानवर्णन, परिषह वर्णन का सग्रह है।

५६१६. गुटका स० २३३। पत्र सख्या ४२। आ० १०×४½ भाषा–हिन्दी संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६१७. गुटका सं० २३४। पत्र स० २०३। आ० १०×७½ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौवीस ठाणा चर्चा एव समयसार नाटक है।

५६१८ गुटका स० २३५। पत्र सं० १६८। आ० १०×६½ इ०। भाषा–हिन्दी।

१. तत्त्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित)		हिन्दी संस्कृत	३–६०
		६३ पत्र तक दीमक ने खा रखा है।	
२ चौवीसठाणाचर्चा	×	हिन्दी	६१–१६८

५६१६. गुटका सं० २३६। पत्र स० १४०। आ० ६×७ इ०। भाषा हिन्दी।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६२० गुटका सं० २३८ । पत्र सं० २५ । आ० ५×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । । ले काल सं १७४८ आसोज सुदी ११ ।

१ कुण्डलिया	अगरदास एवं अन्य कविगण	हिन्दी	लिपिकार विजयराम	१-११
२ पद	सुन्दरदास	"		११-१४
			ले काल १७०५ भादवा सुदी ५	
३ त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	हिन्दी		१४-२५

५६२१ गुटका सं० २३६ । पत्र सं १६८ । आ ११३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

१ आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-१४
२ कथाकोष	×	"	१४-८४
३ त्रिलोक वर्णन	×	"	८४-१६८

५६२२. गुटका सं० २४० । पत्र सं० ४८ । आ० १२३×८ इ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

विशेष—पहिले भक्तामर स्तोत्र टीका सहित तथा बाद में मन्त्र मंत्र सहित दिया हुआ है ।

५६२३. गुटका स० २४१ । पत्र स ५-१७७ । आ ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले काल १८२७ वैशाख सुदी अमावस्या ।

विशेष—लिखितं महात्मा रामराम् । बालदीपक नामक न्याय का ग्रन्थ है ।

५६२४ गुटका सं० २४२ । पत्र सं० १-२ , ४ - ५१५, ६ ५ से ७१४ । आ ४×३ इ । भाषा-हिन्दी पद्य ।

विशेष—भावदीपक नामक ग्रन्थ है ।

५६२५ गुटका सं० २४३ । पत्र सं २४ । आ ६×४ इ । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६२६ गुटका स० २४४ । पत्र सं २१ । आ ६×४ इ । भाषा-संस्कृत ।

१ त्रैलोक्य मोहन कवच	रायमल	संस्कृत	ले० काल १७११	४
२ कल्याणमूर्तिस्तोत्र	शंकराचार्य	"		५-७
३ कल्याणोपीर्वमूस्तोत्र	×	"		७-८
४ हरिद्रस्वामावलिस्तोत्र	×	"		८ १
५. द्वादशराशि पत्र	×	"		१ १२

६. वृहस्पति विचार	×	"	ले० काल १७६२	१२-१४
७ अन्यस्तोत्र	×	"		१५-२२

५६२७. गुटका सं० २४५ । पत्र स० २-४६ । आ० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

५६२८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नवीन है ।

५६२९. गुटका स० २४७ । पत्र सं० ६-७७ । आ० ७×४ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ सग्रह है ।

५६३०. गुटका स० २४८ । पत्र स० १२ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—तीर्थङ्करो के पंचकल्याण आदि का वर्णन है ।

५६३१. गुटका स० २४९ । पत्र स० ८ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—पद सग्रह है ।

५६३२. गुटका स० २५० । पत्र स० १५ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-सस्कृत ।

विशेष—वृहत्स्वयभूस्तोत्र है ।

५६३३ गुटका स० २५१ । पत्र स० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा-सस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार है ।

५६३४ गुटका स० २५२ । पत्र स० ३ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल १९३३ ।

विशेष—अकलङ्काष्टक स्तोत्र है ।

५६३५ गुटका स० २५३ पत्र स० ८ । आ० ६×४ इ० । भाषा-सस्कृत ले० काल स० १९३३ ।

विशेष— भक्तामर स्तोत्र है ।

५६३६. गुटका स० २५४ । पत्र स० १० । आ० ८×५ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—विम्व निर्वाण विधि है ।

५६३७ गुठका स० २५५ । पत्र स० १९ । आ० ७×६ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी ।

विशेष—वुधजन कृत इष्ट छत्तीसी पचमगल एवं पूजा आदि हैं ।

५६३८. गुटका सं० २५६ । पत्र स० ६ । आ० ८½×७ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—वधीचन्द कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

५६३६ गुटका स० २५७ । पत्र स ८ । भा ८×५ इ । भाषा–हिन्दी । दशा–जीर्णशीर्ण ।

विशेष—सन्तराम कृत कवित्त संग्रह है।

५६४० गुटका स० २५८ । पत्र सं १ । भा ५×४ इ । भाषा–संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष —ऋषिमण्डलस्तोत्र है।

५६४१ गुटका स० २५६ । पत्र सं १ । भा ६×४ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल १८३० ।

विशेष—हिन्दी पद एव नापू कृत मजूरी है।

५६४२ गुटका सं० २६० । पत्र सं० ४ । भा ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी ।

विशेष—नवल कृत दोहा स्तुति एवं दर्शन पाठ है।

५६४३ गुटका स० २६१ । पत्र स ६ । भा ७×५ इ० । भाषा–हिन्दी । र काल १८६१ ।

विशेष—सोनागिरि पचीसी है।

५६४४ गुटका स० २६२ । पत्र स १ । भा ६×२ इ । भाषा–संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—ज्ञानोपदेश के पद है।

५६४५ गुटका स० २६३ । पत्र स १६ । भा ६½×४ इ । भाषा–सस्कृत ।

विशेष—शकराचार्य विरचित प्रपरापमूदनस्तोत्र है।

५६४६ गुटका स० २६४ । पत्र स १ । भा ६×४ इ । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—सतसनेही मीता है।

५६४७ गुटका स० २६५ । पत्र सं ४ । भा ५½×४ इ । भाषा–सस्कृत ।

विशेष—वराहपुराण में से सूर्यस्तोत्र है।

५६४८ गुटका सं० २६६ । पत्र स० १ । भा ६×४ इ । भाषा सस्कृत । ले काल १८८७ पौष बुदी १ ।

विशेष– पत्र १–७ तक महागणपति कवच है।

५६४९ गुटका स० २६७ । पत्र स ७ । भा ६×४½ इ । भाषा–हिन्दी ।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभाव स्तोत्र भाषा है।

५६५० गुटका सं० २६८ । पत्र सं १५ । भा० ५,×४ इ । भाषा–सस्कृत । ले काल १८८५ पौष बुदी १ ।

विशेष—महात्मा बलराम ने प्रतिलिपि की थी । पद्मावती पूजा अनुगही स्तोत्र एव जिनसहस्रनाम (आशाधर) है।

५६५१. गुटका स० २६६ । पत्र सं० २७ । आ० ७½×५½ इ० । भाषा–संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

५६५२. गुटका सं० २७० । पत्र स० ८ । आ० ६½×४ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल सं० १९३२ । पूर्ण ।

विशेष—तीन चौवीसी व दर्शन पाठ है ।

५६५३ गुटका सं० २७१ । पत्र सं० ३१ । आ० ६×५ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–सग्रह । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, ऋद्धिमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं ।

५६५४. गुटका सं० २७२ । पत्र सं० ६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–सग्रह । पूर्ण ।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा है ।

५६५५. गुटका स० २७३ । पत्र सं० ४ । आ० ७×५½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत चमत्कारजी की पूजा है । चमत्कार क्षेत्र संवत् १८८९ मे भादवा सुदी २ को प्रकट हुवा था । सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६५६. गुटका सं० २७४ । पत्र सं० १६ । आ० १०×६½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । पूर्ण

विशेष—इसमे रामचन्द्र कृत शिखर विलास है । पत्र ८ से आगे खाली पडा है ।

५६५७. गुटका स० २७५ । पत्र सं० ६३ । आ० ५½×५ इ० । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है तीन चौवीसी नाम, जिनपच्चीसी (नवल), दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, सबोधपञ्चासिका (धानतराय) ।

५६५८. गुटका स० २७६ । पत्र सं० १० । आ० ६½×६ इ० । भाषा–सस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बडा कक्का (हिन्दी) आदि पाठ हैं ।

५६५९. गुटका सं० २७७ । पत्र सं० २–२३ । आ० ५½×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय-पद । अपूर्ण ।

विशेष—हरखचन्द के पदो का संग्रह है ।

५६६०. गुटका स० २७८ । पत्र सं० १–८० । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—वीच के कई पत्र नही हैं । योगीन्द्रदेव कृत परमात्मप्रकाश है ।

५६६१. गुटका सं० २७९ । पत्र सं० ६–३४ । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है ।

५६६२. गुटका सं० २८० । पत्र सं० २-४१ । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । अपूर्ण ।

विशेष—कथाओं का वर्णन है ।

५६६३. गुटका सं० २८१ । पत्र सं० १२ । आ० ६×६ इ० । भाषा-× । पूर्ण ।

विशेष—बारहसकी पूजासंग्रह, दशलक्षण सोलहकारण पञ्चमेरुपूजा रत्नत्रयपूजा तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० २८२ । पत्र सं० ११-८४ । आ० ६३×४३ इ० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है— जैनपचीसी पद (भूधरदास) भक्तामरभाषा परमज्योतिभाषा विषापहारभाषा (अचलकीर्ति) निर्वाणकाण्ड एकीभाव कल्याणमंदिरभाषा जयमाल (भगवतीदास) सहस्रनाम शत्रुंजय, विनती (भूधरदास) नित्यपूजा ।

५६६५. गुटका सं० २८३ । पत्र सं० ११ । आ० ७३×५ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । अपूर्ण ।

विशेष—११ से आगे के पत्र खाली हैं । बनारसीदास कृत समयसार है ।

५६६६. गुटका सं० २८४ । पत्र सं० २-१२ । आ० ८×६३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—पर्वाशतक (द्यानतराम) श्रुतबोध (कालिदास) ये दो रचनायें हैं ।

५६६७. गुटका सं० २८५ पत्र सं० १-४१ । आ० ८×६३ इ० । भाषा-संस्कृत प्राकृत । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा स्वाध्यायपाठ चौबीसठाणाचर्चा ये रचनायें हैं ।

५६६८. गुटका सं० २८६ । पत्र सं० ११ । आ० ८×६ इ० । पूर्ण ।

विशेष—द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

५६६९. गुटका सं० २८७ । पत्र सं० १२ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र नित्यपूजा है ।

५६७०. गुटका सं० २८८ । पत्र सं० २-४२ । आ० ६×४ इ० । विषय-संग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—यह फल आदि दिया हुआ है ।

५६७१. गुटका सं० २८९ । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार । पूर्ण ।

विशेष—रसिकराम कृत स्नेहलीला में से उद्धव गोपी संवाद दिया है ।

प्रारम्भ— एक समय व्रजवास की सुरति भई हरिराइ ।

मित्र जन अपनो जानि के ऊधो लियो बुलाइ ॥

श्रीकिरसन वचन ऐस कहे ऊधव तुम सुनि ले ।
नन्द जसोदा आदि दे व्रज जाइ सुख दे ।। २ ।।

व्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।
ताने नीमष न बीसरूं मीहे नन्दराय की आन ।।

अन्तिम— यह लीला व्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।
जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह ।। १२२ ।।

जो गाव सीष सुर गमन तुम वचन सहेत ।
रसिक राय पूरन कीया मन वाछित फल देत ।। १२३ ।।

नोट—आगे नाग लीला का पाठ भी दिया हुवा है ।

५६७२. गुटका सं० २६० । पत्र स० ५२ । आ० ६×५ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठो का सग्रह हैं ।

१. सोलहकारणकथा	रत्नपाल	सस्कृत		८-१३
२ दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	"		१३-१७
३. रत्नत्रयव्रतकथा	"	"		१७-१६
४. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	"	"		१६-२३
५ अक्षयदशमीकथा	"	"		२३-२६
६. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	"	"		२७
७. वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी पद्य	पूर्ण	३१-५२

विशेष— लाखेरी ग्राम मे दीवान श्री बुधसिहजी के राज्य मे मुमि मेघविमल ने प्रतिलिपि की थी। गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहो के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नही है ।

५६७३. गुटका स० २६१ । पत्र स० ११७ । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-सग्रह ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है । सस्कृत मे समयसार कल्पद्रुमपूजा भी है ।

५६७४. गुटका स० २६२ । पत्र स० ८८ ।

१. ज्योतिपशास्त्र	×	सस्कृत		१६-३६
२ फुटकर दोहे	×	हिन्दी	३१ दोहा है	३६-३७

१ पद्यकोष   गोवर्धन   संस्कृत   १७-४८

ले काल सं० १७६१ संत हरिवंशदास ने सवाएा में प्रतिलिपि की थी।

५६७५ गुटका सं० २६३ । संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी । पत्र सं० ७६ । मा० ५×६ इञ्च । ले० काल स० १७६१ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं मंत्रों का संग्रह है ।

५६७६ गुटका सं० २६४ । पत्र सं० ७७ । मा० ६×४ इञ्च । ले० काल १७८८ पौष सुदी ६ । पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—पं० गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी । पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

५६७७ गुटका सं० २६५ । पत्र स० ११-६२ । मा० ४×३। इञ्च भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल शक स० १६२५ सावन सुदी ५ ।

विशेष—पुण्याहवाचन एवं भक्तामरस्तोत्र भाषा है ।

५६७८ गुटका स० २६६ । पत्र सं० १-४१ । मा० ३×१½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र है ।

५६७६. गुटका स० २६७ । पत्र स० २५ । मा० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे हैं ।

५६८० गुटका स० २६८ । पत्र स० ६२ । मा० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के ११ पत्र खाली हैं । ११ से आगे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है । पत्र १ तक शृङ्गार के कवित्त हैं ।

१ बारह मासा—पत्र १०-२१ तक । सुन्दर कवि का है । १२ पद हैं । वर्णन सुन्दर है । कविता में पत्र मिलकर बताया गया है । १७ पद्य है ।

२ बारह मासा—गोविन्द का—पत्र २१-३१ तक ।

५६८१ गुटका स० २६६ । पत्र सं० ४१ । मा० ७×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार ।

विशेष—कोकसार है ।

५६८२ गुटका सं० ३०० । पत्र स० १२ । मा० ६×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र ।

विशेष—मन्त्रशास्त्र आयुर्वेद के नुसखे । पत्र ७ से आगे खाली है ।

५६८३ गुटका स० ३०१ । पत्र सं० १८ । आ० ४½×३ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । विषय–सग्रह । ले० काल १६१८ । पूर्ण ।

विशेष—लावणी मागीतु गी की– हर्षकीर्त्ति ने स० १६०० ज्येष्ठ सुदो ५ को यात्रा को थी ।

५६८४. गुटका सं० ३०२ । पत्र स० ४२ । आ० ४×३½ इ० । भाषा–सस्कृत । विषय–सग्रह । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५६८५. गुटका स० ३०३ । पत्र स० १०५ । आ० ४½×४½ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० यन्त्र दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू मे लिखे हैं । आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मपत्री स० १८१७ की जगतराम के पौत्र माणकचन्द के पुत्र की आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये है ।

५६८६ गुटका स० ३०३ क । पत्र स० १५ । आ० ८×५½ इ० । भाषा–हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ मे विश्वामित्र विरचित रामकवच है । पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तवध रामचरित्र है । इसमे छप्पय छन्दो का प्रयोग हुवा है । १–२० पद्य तक सख्या ठीक है । इसमे आगे ३५६ सख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या चली है । इसके आगे २ पत्र खाली हैं ।

५६८७ गुटका स० ३०४ । पत्र स० १६ । आ० ७½×५ इ० । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ से ६ तक पत्र नही हैं । अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगतराम एव विजयकीर्त्ति के पदो का सग्रह है ।

५६८८. गुटका सं० ३०५ । पत्र स० १० । आ० ७×६ इ० । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९. गुटका स० ३०६ । पत्र स० ६ । आ० ६½×४¾ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । पूर्ण । विशेष—शातिपाठ है ।

५६९० गुटका स० ३०७ । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है ।

५६९१ गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । आ० ५×४½ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । पूर्ण

विशेष—भक्तामरऋद्धिमन्त्र सहित है ।

क भण्डार [शास्त्रभण्डार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

५६६२. गुटका सं० १। पत्र सं० २७१। आ० ६¾×७½ इञ्च। वे० सं० ८२७। पूर्ण।

१ भाषाभूषण	जीरवसिंह राठौड	हिन्दी		१–८
२ मठोत्सव समाप्ति विधि	×	"	ले० काल सं० १७२१	११

औरंगजेब के समय में पं० समयसुन्दर ने गढ़पुरी में प्रतिलिपि की थी।

३ जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१४
४ समयसार नाटक	बनारसीदास	"	११७

बादशाह शाहजहां के शासन काल में सं० १७०८ में लाहौर में प्रतिलिपि हुई थी।

५. बनारसी विलास	×	"	१२६

विशेष—बादशाह शाहजहां के शासनकाल सं० १७११ में जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

५६६३ गुटका सं० २। पत्र सं० २२५। आ० ८×५¾ इञ्च। अपूर्ण। वे० सं० ८५८।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है।

५६६४ गुटका सं० ३। पत्र सं० २४। आ० १०¾×५¾ इ०। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। वे० सं० ८५५।

१ शांतिकनाम	×	हिन्दी	१
२ महाभिषेक सामग्री	×	"	१–८
३ प्रतिष्ठा में काम आने वाले ६६ यंत्रों के चित्र	×	"	६–२४

५६६५. गुटका सं० ४। पत्र सं० ८१। आ० ५¾×८¾ इ०। पूर्ण। वे० सं० ८६।

विषय—पूजाओं का संग्रह है।

५६६६ गुटका सं० ५। पत्र सं० ५६। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण। वे० सं० ८६१।

विशेष—सुभाषित पाठों का संग्रह है।

५६६७ गुटका सं० ६। पत्र सं० ११४। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० ८६२।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है।

५६६८ गुटका सं० ७। पत्र सं० ४१६। आ० ६¾×५ इ०। ले० काल सं० १८ ५ आषाढ सुदी ५ पूर्ण। वे० सं० ८६३।

१ पूजा पाठ सग्रह	×	सस्कृत हिन्दी
२. प्रतिष्ठा पाठ	×	"
३. चौवीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भादवा सुदी १०

५६९९. गुटका स० ८ । पत्र स० ३१७ । ग्रा० ६×५ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६२ ग्रासोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ८६४ ।

विशेष—पूजा एव प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठो का सग्रह है । पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है ।

५७०० गुटका स० ९ । पत्र स० १४ । ग्रा० ४×४ इ० । भाषा–हिन्दी । पूर्ण । वे० सं० ८६५ ।

विशेष—जगतराम, गुमानीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र ग्रादि कवियो के भजन एवं पदो का संग्रह है ।

ख भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर]

५७०१ गुटका स० १ । पत्र स० २१२ । ग्रा० ६×४३/४ इ० । ले० काल × । ग्रपूर्ण ।

१. होडाचक्र	×	सस्कृत	ग्रपूर्ण	८
२. नाममाला	धनञ्जय	"	"	९–३२
३. श्रुतपूजा	×	"		३३–३९
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	"	ले० काल १७८३	३९–६५
५ मुक्तावलीपूजा	×	"		६५–६९
६ द्वादशव्रतोद्यापन	×	"		६९–८९
७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	"	ले० काल सं० १७८३	८९–१०२
८. नवकारपैंतीसी	×	"		
९ ग्रादित्यवारकथा	×	"		
१०. प्रोषधोपवास व्रतोद्यापन	×	"		१०३–२१२
११ नन्दीश्वरपूजा	×	"		
१२ पञ्चकल्याणकपाठ	×	"		
१३ पञ्चमेरुपूजा	×	"		

५७०२. गुटका स० २। पत्र स. १६६। मा० ६X६३ इ। ले काल X। दशा—जीर्ण शीर्ण।

१ त्रिलोकवर्णन	X	संस्कृत हिन्दी	१–१०
२ कालचक्रवर्णन	X	हिन्दी	११–१४
३ विचारगाथा	X	प्राकृत	१५–१६
४ चौबीसतीर्थङ्कर परिचय	X	हिन्दी	१६–३१
५. चउबीसठाणाचर्चा	X	"	३२–७८
६ भावत्रिभङ्गी	X	प्राकृत	७६–११२
७ भावसंग्रह (भावत्रिभङ्गी)	X	"	११३–१३३
८ श्रेपनक्रिया श्रावकाचार टिप्पण	X	संस्कृत	१३४–१३४
९ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१३४–१६८

५७०३ गुटका स० ३। पत्र सं २१५। मा ६X६ इ। ले काल X। पूर्ण।

विशेष—नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसग्रह है। इसके अतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है।

१ शत्रुञ्जयतीर्थरास	समयसुन्दर	हिन्दी	३३
२ बारहभावना	जिनचन्द्रसूरि	" र काल १६६६	३३–४
३ दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	"	४१–४२
४ शालिभद्र चौपई	जिनसिंहसूरि	" र काल १६ ८	४६–६४
५. चतुर्विंशति जिनराजस्तुति	"	"	६४–१ ६
६ बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	"	"	१ ६–११७
७ महावीरस्तवन	जिनचन्द्र	"	११७–११६
८ सादीश्वरस्तवन	"	"	१२०
९ पार्श्वजिनस्तवन	"	"	१२ –१२१
१ विनती पाठ व स्तुति	"	"	१२२–१४१

५७०४ गुटका स० ४। पत्र स ७१। मा ५३X६ इ। भाषा–हिन्दी। ले काल सं १६ ४। पूर्ण।

विशेष—नित्यपाठ व पूजाओं का संग्रह है। सरवर में प्रतिलिपि हुई थी।

५७०५ गुटका सं० ५। पत्र स० ४८। आ० ५×४ इ०। ले० काल स० १६०१। पूर्ण।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एव विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है।

५७०६ गुटका सं० ६। पत्र स० ८०। आ० ८½×६½ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—गुटके मे निम्न मुख्य पाठो का संग्रह है।

१. चौरासीबोल	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४-१६
२ आदिपुराणविनती	गङ्गादास	"		१७-४३

विशेष—सूरत मे नरसीपुरा (नरसिंघपुरा) जाति वाले वणिक पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी।

३ पद- जिरण जपि जिरण जपि जिवडा	हर्षकीर्त्ति	हिन्दी		४४-४५
४ अष्टकपूजा	विश्वभूषण	"	पूर्ण	५१
५ समकितविरणबोधर्म	ब्र० जिनदास	"	"	५८

५७०७ गुटका स० ७। पत्र स० ५०। आ० ५½×४½ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—४८ यन्त्रों का मन्त्र सहित सग्रह है। अन्त मे कुछ आयुर्वेदिक नुसखे भी दिये हैं।

५७०८ गुटका स० ८। पत्र स० ×। आ० ५×२½ इ०। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासो का व्यौरा, सुभाषित (हिन्दी व सस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है।

५७०९. गुटका स० ९। पत्र स० ५१। आ० ७×५ इ०। भाषा—सस्कृत। विषय—सग्रह। ले० काल स० १७८३। पूर्ण।

विशेष—आयुर्वद के नुसखे, पाशा केवली, नाम माला आदि हैं।

५७१०. गुटका स० १०। पत्र स० ८५। आ० ६×३½ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पद सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—लिपि स्पष्ट नही है तथा अशुद्ध भी है।

५७११. गुटका स० ११। पत्र सं० १२-६२। आ० ६×५ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। जीर्ण।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है।

५०१२ गुटका सं० १२। पत्र सं २२१। आ० ९×४ इ०। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले काल सं १९०५ वैसाख बुदी १४। पूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५०१३ गुटका स० १३। पत्र सं १६१। आ ५×३½ इ। ले काल ×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

५०१४ गुटका स० १४। पत्र स ४२। आ ८½×५½ इ। भाषा-हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण।

१ त्रिलोकवर्णन	×	हिन्दी	पूर्ण	१-१८
२ संवेला की चरचा	×	"	"	१९ २९
३ त्रेसठ सलाका पुरुषवर्णन	×	"	"	२९-४२

५०१५ गुटका स० १५। पत्र सं ७६। आ ६×५ इ। ले काल ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

५०१६ गुटका स० १६। पत्र सं १२ । आ ६×५½ इ। ले काल सं १७६१ वैसाख बुदी १। पूर्ण।

१ समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१-१ ६
२ पार्श्वनाथजीकी निसाणी	×	"	११ -११४
३ शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर	"	११५-११६
४ गुरुदेवसंविनती	×	"	११७ १२

५०१७ गुटका स० १७। पत्र सं ११५। आ ६×५ इ। ले काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एव पूजाओं का संग्रह है।

५०१८ गुटका स० १८। पत्र सं १६४। आ ५½×५ इ। भाषा-संस्कृत। ले काल ×। अपूर्ण।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है।

५०१९ गुटका सं० १९। पत्र सं २११। आ ५×३½ इ। ले काल × पूर्ण।

विशेष—नित्य पाठ व मन्त्र आदि का संग्रह है तथा आयुर्वेद के नुसखे भी दिये हुये हैं।

५०२० गुटका सं० २०। पत्र सं ११२। आ ७×६ इ। ले काल स १८२२। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजापाठ पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मप्रभदेव) जिनस्तुति (रूपचन्द हिन्दी) पद (गुम मन्द ...) नदेवनाथा की उत्पत्ति तथा सामुद्रिक शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है।

५७२१. गुटका स० २१ । पत्र सं० ५-६२ । आ० ५½×५½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयसार गाथा, सामायिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र के पाठ है।

५७२२ गुटका स० २२ । पत्र सं० २१६ । आ० ६×६ इ० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—५० मत्रो एव स्तोत्रो का सग्रह है।

५७२३. गुटका सं० २३ । पत्र स० ६७-२०६ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पद- (वह पानी मुलतान गये)	×	हिन्दी	पूर्ण	६७
२. (पद-कौन खतामेरीमै न जानी तजि के चले गिरनारि)	×	"	"	"
३. पद-(प्रभू तेरे दरसन की वलिहारी)	×	"	"	"
४ आदित्यवारकथा	×	"	"	६६-१२५
५. पद-(चलो पिय पूजन श्री वीर जिनद)	×	"	"	१७८-१७६
६. जोगीरासो	जिनदास	"	"	१६०-१६२
७. पञ्चेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	"	"	१६२-१६५
८. जैनविद्रीदेश की पत्रिका	मजलसराय	"	"	१६५-१६७

ग भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४ गुटका स० १ । आ० ८×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१ पद- सावरिया पारसनाथ मोहे तो चाकर राखो	खुशालचन्द	हिन्दी
२. " मुझे है चाव दरसन का दिखा दोगे तो क्या होगा	×	"
३ दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४. तीन चौवीसीनाम	×	हिन्दी
५ कल्याणमन्दिरभाषा	बनारसीदास	"
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत
७ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

८ देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
९ अकृत्रिम जिन चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
१ सिद्ध पूजा	×	संस्कृत
११ सोलहकारणपूजा	×	"
१२ दशलक्षणपूजा	×	"
१३ शान्तिपाठ	×	"
१४ पार्श्वनाथपूजा	×	"
१५ पंचमेरुपूजा	भूधरदास	हिन्दी
१६ नन्दीश्वरपूजा	×	संस्कृत
१७ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	अपूर्ण "
१८ रत्नत्रयपूजा	×	"
१९ अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
२ निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
२१ कुकर्मों की विनती	×	"
२२ जिनपच्चीसी	नवलराम	"
२३ तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	पूर्ण संस्कृत
२४ पंचकल्याणमंगल	रूपचन्द	हिन्दी
२५. पद– जिन देख्या बिन रह्यो न जाय	किशनसिंह	"
२६ " कीजो हो चेतन सो प्यार	चालतराम	"
२७ " प्रभु मह धरज सुणो मेरी	नन्द कवि	"
२८ " भयो सुख चरण देखत ही	"	"
२९ " प्रभु मेरी सुनो विनती	"	"
३ " परचो संसार की धारा जिनको बार नहीं पारा	"	"
३१ " कला दीदार प्रभु तेरा भया कर्मन सगुर हेरा	"	"
३२ स्तुति	बुधजन	"
३३ नेमिनाथ के दश भव	×	"
३४ पद– जैन मत परखो रे भाई	×	"

५७२५ गुटका स० २। पत्र सं० ८३-४०३ । आ० ४३/४×३ इ० । अपूर्ण । वे० सं० १०१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण	८३-९३
२ देवसिद्धपूजा	×	"		९३-११५
३ सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश		११५-१२२
४. दशलक्षणपूजा	×	अपभ्रंश संस्कृत		१२३-१२९
५ रत्नत्रयपूजा	×	सस्कृत		१२८-१६७
६. नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत		१६८-१८१
७ शान्तिपाठ	×	सस्कृत		१८१-१८६
८ पञ्चमगल	रूपचन्द	हिन्दी		१८७-२१२
९. तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	अपूर्ण	२१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"		२२५-२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मत्र एव हिन्दी पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	सस्कृत हिन्दी		२६९-४०३

५७२६. गुटका स० ३ । पत्र स० ८९ । आ० १०×९ इ० । विषय-सग्रह । ले० काल स० १८७९ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० १०५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. चौबीसतीर्थंकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. अष्टाह्निकापूजा	"	"
३. षोडशकारणपूजा	"	"
४. दशलक्षणपूजा	"	"
५. रत्नत्रयपूजा	"	"
६ पचमेरुपूजा	"	"
७ सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	"	"
८. दर्शनपाठ	×	"
९. पद- अरज हमारी सुन	×	"

१	भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	×	,,
११	भक्तामरस्तोत्रऋद्धिमंत्रसहित	×	संस्कृत हिन्दी

नथमल कृत हिन्दी अर्थ सहित।

५०२७. गुटका स० ४। पत्र सं० ११। आ० ८×५ इं०। भाषा–हिन्दी। ले० काल स० १९५४। पूर्ण। वे० स० १ १।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है। इसमें दौलतराम द्यानतराम जोधराज नवल बुधजन भैय्या भागचन्दीदास के नाम उल्लेखनीय है।

घ भण्डार [दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर]

५० ८. गुटका सं० १। पत्र सं० १ । आ० ६३×६ इं०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४०।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—

१	भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत		१–६
२	बन्दितकरणमन्त्र	×	,,		६
३	बनारसीविलास	बनारसीदास	हिन्दी		७–११६
४	कवित्त	,,	,,		११७
५	परमार्थदोहा	रूपचन्द	,,		११८–१७४
६	नाममालाभाषा	बनारसीदास	,,		१७५–१६
७	अनेकार्थनाममाला	नन्ददास	,,		१६०–१६७
८	जिनरागसतकोस	×	,,		१६७–२ १
६	जिनसतसई	×	,,	अपूर्ण	२ ७–२११
१	रिसकमाला	रूपदीप	,,		२११–२२१
११	देवपूजा	×	,,		२२२–२५२
१२	जैनशतक	भूधरदास	,,		२५२–२८१
१३	भक्तामरभाषा (पद्य)	×	,,		२८४–१

विशेष—श्री टेकचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

५७२९. गुटका स० २। पत्र स० २३३। आ० ६×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४१

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१–१०६

विशेष—संस्कृत गद्य मे टीका दी हुई है।

२. धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११०–१७०
३. ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१–१९२
४ पंचलब्धिविचार	×	"	१९३–१९४
५. अठावीस मूलगुणरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१९४–१९६
६. दानकथा	"	"	१९७–२१५
७. बारह अनुप्रेक्षा	×	"	२१५–२१७
८ हसतिलकरास	ब्र० अजित	हिन्दी	२१७–२१३
९ चिद्रूपभास	×	"	२२०–२१७
१० आदिनाथकल्याणककथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	"	२२८–२३३

५७३०. गुटका स० ३। पत्र स० ६८। आ० ५½×४ इ०। ले० काल स० १९२१ पूर्ण। वे० सं० १४२

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१–३५
२. आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित	मू० क० सकलकीर्ति	हिन्दी	३६–६०
	भाषाकार-सुरेन्द्रकीर्ति र० काल १७४१		
३ पञ्चपरमेष्ठिगुणस्तवन	×	"	६१–६८

५७३१ गुटका स० ४। पत्र स० ७०। आ० ७½×६ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७४३

१ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५–२५
२ भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६–३२
३ जिनस्तवन	दौलतराम	"	३२–३३
४ छहढाला	"	"	३४–५९
५ भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	६०–६७
६ रविवारकथा	देवेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८–७०

५७३२ गुटका सं० ५। पत्र सं ११। आ ८३×७ इ । भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं १४४।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५७३३ गुटका सं० ६। पत्र स १११। आ ६१/२×५ इ । भाषा हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १४७।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५७३४ गुटका स० ७। पत्र सं २११। आ ६३/४×४३ इ । भाषा हिन्दी संस्कृत। विषय–पूजा। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १४८।

५७३५ गुटका सं० ८। पत्र सं १७–४८। आ ६३/४×५ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। वे० सं १४९।

विशेष—बनारसीविलास तथा कुछ पदों का संग्रह है।

५७३६ गुटका सं० ९। पत्र स १२। आ ६×४१/२ इ । ले काल सं १८ १ फागुण । पूर्ण। वे स १४५।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

५७३७ गुटका सं० १०। पत्र स ४। आ ६×४१/२ इ । भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा पाठ संग्रह। ले काल ×। पूर्ण। वे स १५ ।

५७३८. गुटका सं० ११। पत्र स २५। आ ७×५ इ । भाषा हिन्दी। विषय–पूजा पाठ संग्रह ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १५१।

५७३९ गुटका सं० १२। पत्र सं १४–८१। आ ८३/४×६१/२ इ । भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा पाठ संग्रह। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १४६।

विशेष—स्फुट पाठों का संग्रह है।

५७४० गुटका सं० १३। पत्र सं ४८। आ ८×६ इ । भाषा हिन्दी। विषय–पूजा पाठ संग्रह। ले काल × अपूर्ण। वे सं १५२।

क भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर सघीजी]

५७४१ गुटका सं० १। पत्र सं १७। आ ८३/४×५३/४ इ । भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले काल ×। अपूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७४२ गुटका सं० २। पत्र स० ८६ । आ० ६×५ इ० । भाषा- सस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८७६ वैशाख शुक्ला १० । अपूर्ण ।

विशेष—चि० रामसुखजी डूगरसीजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मढा नगर मे प्रतिलिपि की थी। पूजाओ का सग्रह है।

५७४३. गुटका स० ३ । पत्र सं० ६६ । आ० ६½×६ इ० । भाषा–प्राकृत सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा सुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ हैं।

५७४४. गुटका स० ४ । पत्र स० ४–६६ । आ० ७×८ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १८६८ । अपूर्णं ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का संग्रह है।

५७४५. गुटका स० ५ । पत्र स० २८ । आ० ८×६½ इ० । भाषा–सस्कृत । ले० काल स० १९०७ । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

५७४६. गुटका स० ६ । पत्र स० २७९ । आ० ६×४½ इ० । ले० काल स० १९६ माह बुदी ११ । अपूर्ण।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। पूजा स्तोत्रो के अतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है —

१. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२ सबोधपचासिका	×	,,
३. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	सस्कृत

५७४७. गुटका स० ७ । पत्र स० १०४ । आ० ६½×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—आदित्यवार कथा के साथ अन्य कथायें भी हैं।

५७४८. गुटका स० ८ । पत्र स० ३४ । आ० ४½×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

५७४९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७८ । आ० ७½×४ इ० । भाषा–हिन्दी । विपज–पूजा एव स्तोत्र सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

५७५० गुटका सं० १० । पत्र सं० १ । आ० ७½×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—द्यानतराय एवं सुन्दरदास के पदों का संग्रह है ।

५७५१ गुटका सं० ११ । पत्र सं० २ । आ० ६½×४¾ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सुन्दरदास आदि कवियों की स्तुतियों का संग्रह है ।

५७५२ गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—पञ्चमङ्गल रूपचन्द कृत बधावा एवं विनतियों का संग्रह है ।

५७५३ गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६० । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१	धर्मविलास	द्यानतराय	हिन्दी
२	जैनशतक	भूधरदास	"

५७५४ गुटका सं० १४ । पत्र सं० १५ से ११४ । आ० ६×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । विशेष—चर्चा संग्रह है ।

५७५५ गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४ । आ० ७½×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७५६ गुटका सं० १६ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७५७ गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८१ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मनू विहारी आदि कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७५८ गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पूजायें है ।

५७५९ गुटका सं० १९ । पत्र सं० १७१ । आ० ६×७½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

१	सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
२	जम्बूस्वामी चौपई	ब्र० रायमल्ल	"	पूर्ण
३	धर्मपरीक्षाभाषा	×	"	अपूर्ण
४	समाधिमरणभाषा	×	"	"

५७६०. गुटका सं० २० । पत्र सं० ५३ । आ० ८½×६½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुमानीरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५५५० गुटका सं० १० । पत्र सं १० । आ० ७½×१ इ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—आनन्दघन एवं सुन्दरदास के पदों का संग्रह है ।

५५५१ गुटका सं० ११ । पत्र सं २ । आ ६½×४½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भूधरदास आदि कवियों की स्तुतियों का संग्रह है ।

५५५२ गुटका सं० १२ । पत्र सं ५ । आ ६×४½ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण

विशेष—पद्ममंगल रूपचन्द कृत बधावा एवं विनतियों का संग्रह है ।

५५५३ गुटका सं० १३ । पत्र सं १० । आ ८×६-इ । भाषा–हिन्दी । ले काल × । पूर्ण ।

१	धर्मविलास	द्यानतराय	हिन्दी
२	जैनशतक	भूधरदास	"

५५५४ गुटका सं० १४ । पत्र सं ११ से ११४ । आ ६×६½ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । विशेष—चर्चा संग्रह है ।

५५५५ गुटका सं० १५ । पत्र सं ४ । आ ७'×५½ इ । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५५५६ गुटका सं० १६ । पत्र सं ११४ । आ ६×४½ इ । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५५५७ गुटका सं० १७ । पत्र सं ८१ । आ ६×४ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मनू बिहारी आदि कवियों के पदों का संग्रह है ।

५५५८ गुटका सं० १८ । पत्र सं ७२ । आ ६×६ इ । भाषा–संस्कृत । ले काल × । अपूर्ण । जीर्ण । विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पूजायें हैं ।

५५५९ गुटका सं० १९ । पत्र सं १०१ । आ ६×७½ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण

१	सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
२	अम्बरचार्मा चौर*	ब्र रायमल्ल	"	पूर्ण
३	समाधिमरणभाषा	×	"	अपूर्ण
४	समाधिमरणभाषा	×	"	"

५७६०. गुटका स० २० । पत्र सं० ५३ । आ० ८½×६½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुमानीरामजी ने प्रतिलिपि की थी।

१. वसतराजशकुनावली	×	संस्कृत हिन्दी	र० काल सं० १८२५ सावन सुदी ५ ।
२ नाममाला	धनञ्जय	सस्कृत	×

५७६१. गुटका स० २१ । पत्र सं० ८-७४ । आ० ८×५½ इ० । ले० काल स० १८२० अषाढ सुदी ६ । अपूर्ण ।

१. ढोलामारुणी की वार्ता	×	हिन्दी
२. शनिश्चरकथा	×	"
३. चन्दकुवर की वार्ता	×	"

५७६२ गुटका स० २२ । पत्र स० १२७ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एव पूजाओ का संग्रह हैं ।

५७६३. गुटका सं० २३ । पत्र स० ३६ । आ० ६½×५½ इ० । ले० काल × ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्रो का सग्रह है ।

५७६४. गुटका स० २४ । पत्र सं० १२८ । आ० ७×५

१. यशोधरकथा	खुशालचन्द काला
२. पद व स्तुति	×

२ प्रद्युम्नरास ब्रह्मरायमल्ल हिन्दी
३ सुदर्शनरास " "
४ श्रीपालरास " "
५ भविष्यदत्तकथा " "

५७६८ गुटका सं० २८ । पत्र सं० २७६ । आ० ७×४½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१ नाममाला धनंजय संस्कृत
२ अकलंकाष्टक अकलंकदेव "
३ त्रिलोकतिलकस्तोत्र भट्टारक महीचन्द्र "
४ जिनसहस्रनाम आशाधर "
५ पोमीरासो जिनदास हिन्दी

५७६९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २५ । आ० ७×४½ इ० । ले० काल सं० १८७४ वैशाख कृष्णा ६ । पूर्ण ।

१ नित्यनियमपूजासंग्रह × हिन्दी
२. चौबीस तीर्थंकर पूजा रामचन्द्र "
३ कर्मदहनपूजा टेकचन्द "
४ पंचपरमेष्ठिपूजा × " र० काल सं० १८६२
ले० काल सं० १८७९
स्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।
५. पंचकल्याणकपूजा × हिन्दी
६ द्रव्यसंग्रह भाषा द्यानतराय "

५७७० गुटका सं० ३० । पत्र सं० १ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ पूजापाठसंग्रह × संस्कृत
२ सिन्दूरप्रकरण बनारसीदास हिन्दी
३ लघुचाणक्यराजनीति चाणक्य "
४ वृद्ध " " " "

५ नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत

५७७१. गुटका स० ३१ । पत्र स० ६०—११० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५७७२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ५½×५½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ कक्कावत्तीसो	×	हिन्दी
२. पूजापाठ	×	सस्कृत हिन्दी
३. विक्रमादित्य राजा की कथा	×	"
४ शनिश्चरदेव की कथा	×	"

५७७३. गुटका स० ३३ । पत्र स० ८४ । आ० ६×४¾ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ पाशाकेवली (अवजद)	×	हिन्दी
२ ज्ञानोपदेशवत्तीसी	हरिदास	"
३ स्यामबत्तोसी	×	"
४ पाशाकेवली	×	"

५७७४ गुटका स० ३४ । आ० ५×५ इ० । पत्र स० ८४ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रो का सग्रह है ।

५७७५ गुटका स० ३५ । पत्र स० ६६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६४० । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है । बचूलाल छावडा ने प्रतिलिपि की थी ।

५७७६ गुटका स० ३६ । पत्र स० १५ से ७६ । आ० ७×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओ एव पद सग्रह है ।

५७७७. गुटका स० ३७ । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
२. संबोधपचासिका	द्यानतराय	"
३. पद-संग्रह	"	"

५८७८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ९१ । आ० ५३×१३ इं० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है।

५८७९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ११८ । आ० ८३×६ इं० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण ।

विशेष—मन्नू भौसा ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी।

१ कुलालपच्चीसी	मनुकुलाल	हिन्दी	
२ चन्द्रहंसकथा	हर्षकवि	"	र० काल सं० १७०८ ले० का० सं० १८९१
३ मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	"	
४ भ्रमसंबोधन	बालतराम	"	
५. पूजासंग्रह	×	"	
६ भक्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	×	संस्कृत	ले० का० सं० १८९१
७ आदित्यवार कथा	×	हिन्दी	ले० का० सं० १८९१

५८८०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८२ । आ० ५३×४ इं० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ नखशिखवर्णन	×	हिन्दी
२. मायुर्वेदिकनुसखे	×	"

५८८१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २० । आ० ७३×५३ इं० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सबंन्धी साहित्य है।

५८८२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ११८ । आ० ८×५ इं० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मनोहरलाल कृत ज्ञानचिंतामणि है।

५८८३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ८ । आ० ६×५ इं० । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा व पद । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—शनिश्चर एवं आदित्यवार कथायें तथा पदों का संग्रह है।

५८८४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६ । आ० ६×५ इं० । ले० काल सं० १९५९–फागुन सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रसंग्रह है।

५७८५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ६० । आ० ८×५½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नित्यपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
२ पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	"
३. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत

५७८६. गुटका स० ४६ । पत्र सं० २४५ । आ० ४×३ इ० । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओ तथा स्तोत्रो का सग्रह है ।

५७८७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । आ० ६×४ इ० । ले० काल स० १८३१ भादवा बुदा ७ । पूर्ण ।

१. भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत
२. वैद्यजीवन	लोलिम्मराज	"
३ सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य ले० काल स० १७३१	"

विशेष—जयपुर मे गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८. गुटका स० ४८ । पत्र सं० १७२ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ बारहखड़ी	सूरत	हिन्दी
२. कक्कावत्तीसी	×	"
३. बारहखडी	रामचन्द्र	"
४. पद व विनती	×	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं ।

५७८९. गुटका सं० ४९ । पत्र स० २८ । आ० ८½×६ इ० । भाषा हिन्दी सस्कृत । ले० काल स० १९५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रो का सग्रह है ।

५७९०. गुटका सं० ५० । पत्र स० १५५ । आ० १०½×७ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१ शातिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	संस्कृत
२ स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"

३ एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी
४ सबोधपञ्चासिकाभाषा	द्यानतराय	"
५ निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत
६ जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
७ सिद्धपूजा	आशाधर	संस्कृत
८ लघुसामायिक भाषा	महाचन्द्र	"
९ सरस्वतीपूजा	मुनिपद्मनन्दि	"

५७६१ गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इ० । ले० काल सं० १९१७ चैत्र सुदी ९ । पूर्ण ।

विशेष—चिमनलाल भांवसा ने प्रतिलिपि की थी ।

१ विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी
२ रथयात्रावर्णन	×	"
३ सांवलाजी के मंदिर की रथयात्रा का वर्णन	×	"

विशेष—यह रथयात्रा सं० १९२० फागुण सुदी ८ मंगलवार को हुई थी ।

५७६२ गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ११२ । आ० ६×५½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा स्तोत्र का संग्रह है ।

५७६३ गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ७ । आ० ६×७ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७६४ गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५ । आ० ८×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४४ फागुण सुदी १ । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—नेमिनाथ रासो (ब्रह्मरायमल्ल) एवं अन्य सामान्य पाठ है ।

५७६५ गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२८ । आ० ६×५½ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—इसमें मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) तथा समयसार भाषा (...) दिये हैं ।

५७९६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कंवर वल्लराम के पठनार्थ पं० आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१. नीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत
२ नवरत्नकवित्त	×	हिन्दी
३. कवित्त	×	"

५७९७. गुटका सं० ५७ । पत्र स० २१७ । आ० ६½×५½ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

५७९८ गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

५७९९. गुटका स० ५९ । पत्र स० ६० । आ० ५×८ इ० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाओ का संग्रह है ।

५८०० गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । आ० ९×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास एव हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं ।

५८०१. गुटका स० ६१ । पत्र स० ७२ । आ० ६×४½ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है । पुट्ठो के दोनो ओर गणेशजी एव हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२. गुटका सं० ६२ । पत्र स० १२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०३. गुटका स० ६३ । पत्र सं० ७-४९ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०४. गुटका स० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ९० । आ० ३½×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पदो का सग्रह है ।

५८०६ गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

च भण्डार [दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

५८०७ गुटका सं० १। पत्र सं १९२। आ ६३×४३ इ । भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं १७५२ पौष। पूर्ण। वे सं ७४७।

विशेष—प्रारम्भ में आयुर्वेद के नुसखे है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

५८०८. गुटका सं० २। संग्रहकर्त्ता पं० फतेहचन्द नागौर। पत्र सं २४८। आ ४×१ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं ७४८।

विशेष—ताराचन्दजी के पुत्र सेवारामजी पाटणी के पठनार्थ लिखा गया था—

१ निरयनिगम के दोहे	×	हिन्दी	ले काल सं	१८५७
२. पूजन व नित्य पाठ संग्रह	×	,, संस्कृत	ले काल सं	१८५५
३ मुक्तावील	×	हिन्दी	१ न चित्रायें हैं।	
४ ज्ञानपच्चीसी	मनोहरदास	,,		
५. भैरवस्तवना	×	संस्कृत		
६ चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	हिन्दी		
७ आदित्यवार की कथा	×	,,		
८ नवकार मन्त्र चर्चा	×	,,		
९. कर्म प्रकृति का ब्यौरा	×	,,		
१ लघुसामायिक	×	,,		
११ पाखाकेवली	×	,,	ले काल	सं १८९९
१२ जैन बद्रीदेश की पत्री	×	,,	,,	

५८०९ गुटका सं० ३। पत्र सं ५७। आ ६×४३ इ । भाषा संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा स्तोत्र। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ७४९।

५८१० गुटका सं० ४। पत्र सं २०१। आ० ५×५३ इ । भाषा हिन्दी। विषय—पद भजन। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं ७५।

५८११ गुटका सं ५। पत्र सं १९५। आ ६३×५३ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं० ७५१।

विशेप- सामान्य पूजा पाठ सग्रह है

५८१२. गुटका स० ६ । पत्र स० १५१ । आ० ६३/४×५३/४ इ० । भापा-हिन्दी सस्कृत । विपय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५२ ।

विशेप-प्रारम्भ मे आयुर्वेदिक नुसखे भी हैं ।

५८१३ गुटका सं० ७ । आ० ६×६१/२ इ० भापा-हिन्दी सस्कृत । विपय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५३ ।

५८१४ गुटका सं० ८ । पत्र स० १३७ । आ० ७३/४×५३/४ इ० । भापा हिन्दी सस्कृत । विपय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५४ ।

५८१५ गुटका स० ९ । पत्र स० ७२ । आ० ७३/४×५३/४ इ० । भापा-हिन्दी संस्कृत । विपय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५५ ।

५८१६. गुटका सं० १० । पत्र स ३५७ । आ० ६×५ इ० । भापा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५६ ।

५८१७ गुटका स० ११ । पत्र स० १२८ । आ० ६३/४×५१/४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विपय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५७ ।

५८१८. गुटका सं० १२ । पत्र स० १४९-७१२ । आ० ६×४ इ० । भाषा सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५८ ।

विशेप-निम्नपाठो का समह है—

१. दर्शनपच्चीसी	×	हिन्दी
२ पञ्चास्तिकायभाषा	×	”
३. मोक्षपैडी	बनारसीदास	”
४. पचमेरुजयमाल	×	”
५. साधुवदना	बनारसीदास	”
६. जखडी	भूधरदास	”
७ गुणमञ्जरी	×	”
८. लघुमगल	रूपचन्द	”
९. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	”

१	महुनिमवैरम्यमय जयमाल	भैया भगवतीदास	"	र सं १७४५
११	बाईस परिषह्	भूधरदास	"	
१२	निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"	र सं० १७१६
१३	बारह भावना	"	"	
१४	एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	"	
१५	मंगल	विनोदीलाल	"	र स १७४४
१६	पञ्चमंगल	रूपचन्द	"	
१७	भक्तामरस्तोत्र भाषा	नथमल	"	
१८	स्वर्गसुख वर्णन	×	"	
१९	कुदेवस्वरूप वर्णन	×	"	
२	समयसारनाटक भाषा	बनारसीदास	"	लि सं १८११
२१	दशलक्षणपूजा	×	"	
२२	एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	
२३	स्वयंभूस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२४	जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	
२५.	देवागमस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	"	
२६	चतुर्विंशतितीर्थंकर स्तुति	चन्द	हिन्दी	
२७	चौबीसठाणा	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	
२८	कर्मप्रकृति भाषा	×	हिन्दी	

५८१६ गुटका स० १३ । पत्र सं ३३ । आ ६,×४३ इ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लै काल × पूर्ण । वे सं ७११ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त लघु चाणक्य राजनीति भी है ।

५८५० गुटका सं १४ । पत्र सं × । आ १ ×६३ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण वे सं ७६ ।

विशेष—पञ्चास्तिकाय भाषा टीका सहित है ।

५८२१ गुटका स० १५ । पत्र सं १-१७४ । आ ६३×५३ इ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले काल × । अपूर्ण । वे स ७११ ।

५८२२. गुटका स० १६ । पत्र सं० १२७ । आ० ६½×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

५८२३. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । आ० ८½×७½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी प० दौलतरामजी ने स्वय के पढने के लिए पारसराम ब्राह्मण से लिखवाया था ।

१. नाटकसमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण १-८१
२. बनारसीविलास	"	"	८२-१०३
४. तीर्थङ्करों के ६२ स्थान	×	"	१६४-२२०
४ खडेलवालों की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	×	"	२२५-२३०

५८२४ गुटका सं० १८ । पत्र स० ५-३१५ । आ० ६¾×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७६४ ।

५८२५. गुटका सं० १६ । पत्र स० ४७ । आ० ८½×६½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६५ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रो का संग्रह है ।

५८२६. गुटका सं० २० । पत्र सं० १६५ । आ० ८×५½ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ ।

५८२७. गुटका सं० २१ । पत्र स० १२८ । आ० ६×३¾ इ० । भाषा- × । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—गुटका पानी में भीगा हुआ है ।

५८२८. गुटका स० २२ । पत्र स० ४६ । आ० ७×५½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

छ भण्डार [दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर]

५८२६. गुटका सं० १। पत्र सं० १७ । आ० ५×५ इं० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१२ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । बीच के अधिकांश पत्र गले एवं फटे हुए हैं । मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

१ नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्ति	हिन्दी	६५ पद्य हैं ।
२ नेमीश्वर की बेलि	ठक्कुरसी	"	८८–६५
३ पंचेन्द्रियबेलि	"	"	६६–१०१
४ चौबीसतीर्थंकररास	×	"	१०१–१०६
५. विवेकजकडी	जिनदास	"	१२६–१३३
६ मेघकुमारगीत	पूनो	"	१४८–१५१
७ ढंढाणागीत	कविवूचा	"	१५१–१५३
८ बारहअनुप्रेक्षा	अवधू	"	१५३–१६०
		ले० काल सं० १६६२ चैत्र बुदी १२	
६. शान्तिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	संस्कृत	१६०–१६३
१० नेमीश्वर का हिंडोलना	मुनिरत्नकीर्ति	हिन्दी	१६३–१६४

५८३०. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इं० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२ ।

१ नेमिनाथमंगल	लालचन्द	हिन्दी र० काल १७४४	१–११
२ रागुनपच्चीसी	×	"	११–२२

५८३१. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ४–२४ । आ० ८×६ इं० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११ ।

१ प्रद्युम्नरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	४–२७
२ पार्श्वनाथविनती	ब्रह्मकीर्ति	"	१२
३ बीस तीर्थकरों की जयमाल	हर्षकीर्ति	"	१२–२६

४. चन्द्रगुप्त के सोहलस्वप्न × हिन्दी ५२–५४

इनके अतिरिक्त विनती सग्रह है किन्तु पूर्णत अशुद्ध है।

५८३२. गुटका स० ४। पत्र सं० ७४। आ० ६३/४×६ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष–आयुर्वेदिक नुसखो का सग्रह है।

५८३३. गुटका सं० ५। पत्र स० ३०–७५। आ० ७×६ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७६१ माह सुदी ५। अपूर्ण। वे० स० २३४।

१. आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	अपूर्ण	३०–३२
२. सप्तव्यसनकवित्त	×	"		
३. पार्श्वनाथस्तुति	बनारसीदास	"		
४ अठारहनाते का चौढाला	लोहट	"		

५८३४ गुटका सं० ६। पत्र स० २–४२। आ० ६३/४×६ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–कथा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष—शनिश्चरजी की कथा है।

५८३५. गुटका स० ७। पत्र स० १२–६५। आ० १०१/२×५३/४ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २३५।

१. चाणक्यनीति	चाणक्य	सस्कृत	अपूर्ण	१३
२ साखी	कबीर	हिन्दी		१३–१६
३ ऋद्धिमन्त्र	×	संस्कृत		१६–२१
४ प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एव व्रतो का चित्र सहित वर्णन		हिन्दी		६५

५८३६. गुटका स० ८। पत्र स० २–५६। आ० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६७।

१ बलभद्रगीत	×	हिन्दी	अपूर्ण	२–६
२. जोगीरासा	पांडे जिनदास	"		७–११
३. कक्काबत्तीसी	×	"		११–१४
४. "	मनराम	"		१४–१८
५. पद– साधो छोडो कुमति अकेली	विनोदीलाल	"		१८
६ " रे जीव जगत सुपनो जान	छीहल	"		२०

५८३८. गुटका सं० १० । पत्र स० ४ । आ० ८३/४×६ इ० । विषय सग्रह । ले० काल × । वे० स० २६६ ।

१. जिनपच्चीसी	नवल	हिन्दी	१–२
२. सवोधपचासिका	द्यानतराय	”	२–४

५८३६. गुटका स० ११ । पत्र स० १०–६० । आ० ५३/४×४३/४ इ० । भाषा–सस्कृत । ले० काल × । वे० स० ३०० ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

५८४० गुटका स० ११ । पत्र स० ११५ । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा स्तोत्र । ले० काल × । वे० स० ३०१ ।

५८४१. गुटका स० १२ । पत्र स० १३० । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा–सस्कृत । विपय–पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३०२ ।

५८४२. गुटका स० १३ । पत्र स० ६–१७ । आ० ६३/४×६ इ० । भाषा–हिन्दी । विपय–पूजा स्तोत्र । ले० स० × । अपूर्ण । वे० स० ३०३ ।

५८४३. गुटका स० १४ । पत्र स० २०१ । आ० ११×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०४

विशेष—पूजा स्तोत्र सग्रह है ।

५८४४ गुटका स० १५ । पत्र स० ७७ । आ० १०×६ इ० । भाषा–हिन्दी । विपय–कथा । ले० काल स० १६०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३०५ ।

विशेष—इखलाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा मे लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा में है । छोटी २ कहानियां हैं ।

५८४५ गुटका सं० १६ । पत्र स० १२६ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०६

विशेष—रामचन्द (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६. गुटका स० १७ । पत्र स० ३–२६ । आ० ५×८ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४०७ ।

१. देवपूजा	संस्कृत	अपूर्ण
२ थूलभद्रजी का रासो	हिन्दी	१०–२१
३. नेमिनाथ राजुल का बारहमासा	”	२१–२६

५८४७ गुटका स० १८। पत्र सं ११०। मा ८३×६ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं १ ८

विशेष —पत्र सं १ से १८ तक सामान्य पाठों का संग्रह है।

१ सुन्दर शृङ्गार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	१७४ पद्य हैं	१६–८
२. बिहारीसतसई टीका सहित	×	,,	अपूर्ण	८१–८५
			७४ पद्यों की ही टीका है।	
३ बखत विलास	×	,,		८६–१०३
४ बृहद्घंटाकर्णकल्प	कवि भोपीलाल	,,		१ ४–६६

विशेष—प्रारम्भ के ८ पत्र नहीं है मागे के पत्र भी नही हैं।

इति श्री कछवाहु कुलमवतंसकासी राउराजा बखतावरसिंह मामान्द कृते कवि भोपीलाल विरचिते बखत विलासे विभाव वर्णनो नाम तृतीय विलासः।

पत्र ८–२६ नायक नायिका वर्णन।

इति श्री कछवाहा कुलभूषणमरकासी राउराजा बखतावर सिंह मामन्द कृते भोपीलाल कवि विरचिते बखतविलासनामकवर्णनं नामाष्टमो विलास'।

५८४८ गुटका सं० १६। पत्र स ५४। मा ८×६ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे स १ ६।

विशेष—बुधजनचन्द कृत जम्बूकुमार चरित्र है पत्र जीर्ण है किन्तु नवीन है।

५८४६. गुटका स० २०। पत्र स ११। मा ६×६ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११ ।

१ ऋषिमंडलपूजा	सदासुख	हिन्दी	१–१
२ अकम्पनाचार्यादि मुनियों की पूजा	×	,,	११
३ प्रतिष्ठानामावलि	×	,,	२१

५८५ गुटका स० २० (क)। पत्र सं १ २। मा ६×६ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १११।

५८५१ गुटका स० २१। पत्र सं २८। मा ८३×६३ इ । ले काल सं १८१७ मासाढ बुदी ६। पूर्ण। वे स १११।

विशेष—मंडलाचार्य केशवसेन कृष्णसेन विरचित रोहिणी व्रत पूजा है।

५८५२. गुटका सं० २२। पत्र स० १६। आ० ११X३ इ०। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३१४।

वज्रदन्तचक्रवर्त्ति का वारहमासा	X	हिन्दी	६
२. सीताजी का वारहमासा	X	"	६-१२
३. मुनिराज का वारहमासा	X	"	१३-१६

५८५३. गुटका सं० २३। पत्र सं० २३। आ० ८३/४X६ इ०। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। ले० काल X। पूर्ण। वे० स० ३१५।

विशेष—गुटके मे अष्टाह्लिकाव्रतकथा दी हुई है।

५८५४. गुटका सं० २४। पत्र स० १५। आ० ८१/२X६ इ०। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। ले० काल स० १९८३ पौष बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३१६।

विशेष—गुटके मे ऋषिमडलपूजा, अनन्तव्रतपूजा, चौवीसतीर्थंकर पूजादि पाठो का संग्रह है।

५८५५. गुटका स० २५। पत्र स० ३५। आ० ८X६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय पूजा। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३१७।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है।

५८५६. गुटका स० २६। पत्र स० ५६। आ० ७X६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० काल सं० १९२१ माघ बुदी १२। पूर्ण। वे० स० ३१८।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौवीस तीर्थंकर पूजा है।

५८५७. गुटका स० २७। पत्र स० ५३। आ० ६X५ इ०। ले० काल सं० १९५४। पूर्ण। वे० स० ३१९।

विशेष— गुटके मे निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं।

१. धर्मचाह	X	हिन्दी	२
२. वदनाजखडी	विहारीदास	"	३-४
३ सम्मेदशिखरपूजा	गंगादास	संस्कृत	५-२०

५८५८ गुटका स० २८। पत्र स० १६। आ० ८X६ इ०। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३२०।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है।

५८५९ गुटका स० २९। पत्र स० १७९। आ० ९X६ इ०। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३२१।

विशेष—विहारीदास कृत सतसई है। दोहा स० ७०७ है। हिन्दी गद्य पद्य दोनो मे ही अर्थ है टीका-काल सं० १७८५। टीकाकार कवि कृष्णदास हैं। आदि अन्तभाग निम्न है.—

प्रारम्भः— अथ बिहारी सतसई टीका कवित्त बंध लिख्यते —

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरी सोइ।

जातन की झांई परैं स्याम हरित दुति होइ ॥

टीका—यह मंगलाचरन है तहां श्री राधा जू की स्तुति ग्रंथ कर्त्ता कवि करतु है। तहां राधा और अटे मांते या तन की झांई परैं स्याम हरित दुति होइ या पद तें श्री वृषभान सुता की प्रतीति हुई —

कवित्त—

जाकीप्रभा अवलोकत ही तिहु लोक की सुन्दरता गहि वारि।

कृष्ण कहै सरसी रुहे नैननि की नामु महा सुख मंगल कारी ॥

जातन की झलकै झलकै हरित दुति स्याम की होत निहारी।

श्री वृषभान कुमारि कृपा कैं सुराधा हरौ भव बाधा हमारी ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ— माथुर विप्र ककोर कुल कह्यौ कृष्ण कवि नाउ।

सेवकु हौं सब कविनु को बसतु मधुपुरी गांउ ॥ २४ ॥

राजा मल्ल कवि कृष्ण पर ढरयौ कृपा के ढार।

भांति भांति विपदा हरी दीनी दरवि अपार ॥ २५ ॥

एक दिना कवि सौं नृपति कही कही कों बात।

दोहा दोहा प्रति करौ कवित बुद्धि अवदात ॥ २६ ॥

पहले हू मेरे यह हिय मैं हु तौ विचारु।

करौ नाइका भेद कौ ग्रंथ बुद्धि अनुसार ॥ २७ ॥

जे कीनै पूरब कविनु सरस ग्रंथ सुखदाइ।

तिनहि छांडि मेरे कवित को पढि है मनुलाइ ॥ २८ ॥

जानिय है अपनैं हियें कियौ न ग्रंथ प्रकास।

नृप कौ आइस पाइकै हिय मैं भये हुलास ॥ २९ ॥

करे सात सै दोहरा सु कवि बिहारीदास।

सब कोऊ तिनको पढै गुनै सुनै सविलास ॥ ३० ॥

बड़ी भरोसौ जानि मै गह्यौ आसरो आइ।

यातैं इन दोहानु संग दीनै कवित लगाइ ॥ ३१ ॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन।
करै सातसौ कवित मे सीखै सकल प्रवीन ॥ ३२ ॥
मै अत ही दीढ्यौ करी कवि कुल सरल सुभाइ।
भूल चूक कछु होइ सो लीजौं समझि वनाइ ॥ ३३ ॥
सत्रह सतसै आगरे असी वरस रविवार।
कातिक वदि चोथि भये कवित सकल रससार ॥ ३४ ॥

इति श्री विहारीसतसई के दोहा टीका सहित संपूर्ण।

सतसै ग्रंथ लिख्यौ श्री राजा श्री राजा साहिवजी श्रीराजामल्लजी कौं। लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी मौजे अजनगीई के प्रगनै पछोर के। मिती माह सुदी ७ बुद्धवार सवत् १७९० मुकाम प्रवेस जयपुर।

५८६०. गुटका स० ३० । पत्र सं० १६८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३५२ ।

१. तत्वार्थसूत्रभाषा	कनककीर्त्ति	हिन्दी ग०		अपूर्ण
२. शालिभद्रचोपई	जिनसिंह सूरि के शिष्य मतिसागर	"	प० र० काल १६७८	"

ले० काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४। अजमेर प्रतिलिपि हुई थी।

स्फुट पाठ	×	"		

५८६१. गुटका स० ३१ । पत्र सं० ६० । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है।

५८६२. गुटका स० ३२ । पत्र स० १७४ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२४ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है। तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखमयनानन्द) के हैं।

५८६३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२५ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चतुर्विशतिजिनपूजा है।

५८६४. गुटका स० ३४ । पत्र स० ८६ । आ० ६×६ इ० । विषय—पूजा । ले० काल स० १८६१ श्रावण सुदी ११ । वे० सं० ३२६ ।

विशेष—चौवीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एवं स्तोत्र संग्रह है। हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

५८७६. गुटका सं० ४६। पत्र सं० ४६। आ० ५×५ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४१।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१	वीनघातक	भूधरदास	हिन्दी	१–११
२	ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	संस्कृत	१४–२०
३	भक्तावलीकी	मनाराम	" ले० काल १८८८	३४–४१

५८८०. गुटका सं० ५०। पत्र सं० २६४। आ० ५×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–पूजा पाठ ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४२

५८८१. गुटका सं० ५१। पत्र सं० १६१। आ० ७½×४½ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७८२। पूर्ण। वे० सं० १४३।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं।

१	नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	×	संस्कृत	१–२
२	जीवविचार	आ० नेमिचन्द्र	"	३–८
३	नवतत्त्वप्रकरण	×	"	९–१४
४	चौबीसदण्डकविचार	×	हिन्दी	१५–६८
५	तेईस बोल विवरण	×	"	६९–६५

विशेष— दाता की कसौटी दुर्भिक्ष परै काल जाइ।
सूर की कसौटी कोई भली छुरै रन में ॥

मित्र की कसौटी मामलो प्रगट होय।
हीरा की कसौटी है जौहरी के घन में ॥

कुल की कसौटी आदर बतमान जानि।
... की कसौटी सराफन के जतन में ॥

तैसी बीमारी सो।
दूरन के बीच में ॥

हिन्दी १ १–१ ३

२. द्रव्यसग्रहभाषा	हेमराज	"		११७–१४१

र० काल स० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७९ फाल्गुन सुदी ९ ।

३. गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी		१४४–१४५
४. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	ले० काल १८८१	१४६–१४७
५. कृपणपच्चीसी	विनोदीलाल	"	" " १८८२	१४७-१५४
६ तेरापन्थ बीसपन्थ भेद—	×	"		१५५–१६३

५८८२ गुटका स० ५२ । पत्र स० ३५ । आ० ७½×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८८५ कार्तिक बुदी १३ । वे० स० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३. गुटका स० ५३ । पत्र स० ८० । आ० ६½×५½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

५८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र स० ४४ । आ० ६½×६ इ० । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण । वे० स० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एव शान्तिपाठ है ।

५८८५ गुटका स० ५५ । पत्र स० २० । आ० ६½×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६ गुटका स० ५६ । पत्र स० ६८ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा–हिन्दी सस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स ३४८ ।

५८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र स० १७ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एव कथा दी हुई हैं ।

५८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र स० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५८८९ गुटका स० ५९ । पत्र स० १२९ । आ० ६½×५ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—रुग्नविनिश्चय नामक ग्रंथ है ।

५८६५. गुटका स० ३५ । पत्र सं १७ । आ ६X७ इ । भाषा हिन्दी । ले काल X । पूर्ण । वे० सं० १२७ ।

विशेष—पार्श्वनाथ सोलाविर पूजा है ।

५८६६ गुटका स० ३६ । पत्र सं ७ । आ ८X१३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा पाठ एवं ज्योतिषपाठ । ले काल X । अपूर्ण । वे स १२८ ।

१ बृहत्षोडशकारण पूजा	X	संस्कृत	
२ शालक्षमीति यातुष	भास्कर	"	
३ अग्निहोत्र	X	संस्कृत	अपूर्ण

५८६७ गुटका सं० ३७ । पत्र सं० १ । आ ७X६ इ । भाषा—संस्कृत । ले काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६ ।

५८६८. गुटका स० ३८ । पत्र स २४ । आ ६X४ इ । भाषा—संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । इसी में प्रकाशित पुस्तकें भी बन्धी हुई हैं ।

५८६९ गुटका स० ३६ । पत्र स ४४ । आ ६X४ इ । भाषा—संस्कृत । ले काल X । पूर्ण । वे सं १३१ ।

विशेष—देवसिद्धपूजा आदि दी हुई हैं ।

५८७० गुटका स० ४० । पत्र सं ८ । आ ४X६३ इ । भाषा—हिन्दी । विषय आयुर्वेद । ले० काल X । अपूर्ण । वे सं १३२ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये हैं पदार्थों के गुणों का वर्णन भी है ।

५८७१ गुटका सं० ४१ । पत्र सं ७१ । आ ७X६३ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले काल X । पूर्ण । वे सं १३३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८७२. गुटका स० ४२ । पत्र सं० ८१ । आ ७X६३ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले काल स १७४६ । अपूर्ण । वे सं १३४ ।

त तीर्थंकरों की पूजा एवं बत्तीस और पूजा का संग्रह है । दोनों ही अपूर्ण हैं ।

५८७३ गुटका सं० ४३। पत्र सं० २८। आ० ८३/४×७ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३५।

५८७४ गुटका सं० ४४। पत्र सं० ५८। आ० ६×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३६।

विशेष—हिन्दी पद एवं पूजा संग्रह है।

५८७५. गुटका स० ४५। पत्र सं० १०८। आ० ८३/४×३३/४ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३७।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र, दशलक्षण, सोलहकारण आदि का संग्रह है।

५८७६. गुटका स० ४६। पत्र स० ५५। आ० ८×५ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय- पूजा पाठ ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३८।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्श्वपूजा, सोलहकारण दशलक्षण पूजाएं हैं।

५८७७. गुटका सं० ४७। पत्र स० ६६। आ० ७×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय–कथा। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३३६।

१. जेष्ठजिनवरकथा	खुशालचन्द	हिन्दी	१–६
		र० काल सं० १७८२ जेठ सुदी ६	
२ आदित्यव्रतकथा	"	हिन्दी	६१–१६
३. सप्तपरमस्थान	"	"	१६–२६
४ मुकुटसप्तमीव्रतकथा	"	"	२६–३०
५ दशलक्षणव्रतकथा	"	"	३०–३४
६ पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	"	"	३४–४०
७ रक्षाविधानकथा	"	संस्कृत	४१–४५
८ उमेश्वरस्तोत्र	"	"	४६–६६

५८७८ गुटका स० ४८। पत्र स० १२८। आ० ६×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–अध्यात्म। र० काल स० १६६३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३४०।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है।

५८७६. गुटका सं० ४६। पत्र सं ४१। आ ५×५ इ । भाषा–हिन्दी संस्कृत। लि० काल ×। पूर्ण। वे सं १४१।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१	जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१–१३
२	ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	संस्कृत	१४–२०
३	अक्षरबत्तीसी	नन्दराम	" ले काल १८८८	१४–४२

५८८०. गुटका सं० ५०। पत्र सं २१४। आ० ५×५ इ । भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–पूजा पाठ लि० काल ×। पूर्ण। वे स १४२

५८८१. गुटका सं० ५१। पत्र सं १६३। आ ७½×४½ इ । भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले काल सं १८८२। पूर्ण। वे सं १४३।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं।

१	नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	×	प्राकृत	१–२
२	जीवविचार	आ नेमिचन्द्र	"	३–८
३	नवतत्त्वप्रकरण	×	"	६–१४
४	चौबीसदण्डकविचार	×	हिन्दी	१५–६८
५	तेईस बोल विवरण	×	"	६६–६५

विशेष— सता की कसौटी दुरभिक्ष परे काल बार।

सूर की कसौटी दोई अनी जुरे रन में॥

मित्र की कसौटी मामलो प्रकट होय।

हीरा की कसौटी है जौहरी के बन में॥

कुल की कसौटी मादर समसाल जानि।

सोने की कसौटी सराफन के वतन में॥

कहे जिनदास जैसी वस्त तैसी कीमति सौ।

साधु की कसौटी है दुहन के बीच में॥

१	*विनती*	*समयसुन्दर*	*हिन्दी*	१ १–१ १

२. द्रव्यसग्रहभाषा	हेमराज	"		११७–१४१

र० काल स० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७६ फाल्गुन सुदी ९ ।

३. गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी		१४४–१४५
४. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	ले० काल १८८१	१४६–१४७
५. कृपणपच्चीसी	विनोदीलाल	"	" " १८८२	१४७-१५४
६ तेरापन्थ बीसपन्थ भेद—	×	"		१५५–१६३

५८८२ गुटका स० ५२ । पत्र स० ३५ । आ० ७½×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १८८५ कार्तिक बुदी १३ । वे० स० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३. गुटका सं० ५३ । पत्र स० ८० । आ० ६½×५½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र स० ४४ । आ० ६½×६ इ० । भाषा–हिन्दी । अपूर्ण । वे० स० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एव शान्तिपाठ है ।

५८८५ गुटका स० ५५ । पत्र स० २० । आ० ६½×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६ गुटका स० ५६ । पत्र स० ६८ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा–हिन्दी सस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स ३४८ ।

५८८७. गुटका स० ५७ । पत्र स० १७ । आ० ६½×५½ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एव कथा दी हुई हैं ।

५८८८. गुटका स० ५८ । पत्र स० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा–संस्कृत हिन्दी । विषय–पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५८८९. गुटका स० ५९ । पत्र स० १२९ । आ० ६½×५ इ० । भाषा–संस्कृत । विषय–आयुर्वेद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—रुग्नविनिश्चय नामक ग्रंथ है ।

५८८० गुटका सं० ६० । पत्र सं० १११ । आ ४×१ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं० १४२ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं बनारसी विलास के कुछ पद एवं पाठ हैं ।

५८८१ गुटका सं० ६१ । पत्र सं २२१ । आ ४×१ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं १५१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८८२ गुटका सं० ६२ । पत्र सं २ ८ । आ १×४ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे स १५४ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है —

५८८३ गुटका स० ६३ । पत्र स २११ । आ १×१ इ । भाषा-हिन्दी ले काल × । अपूर्ण । वे सं १५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ हनुमतरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	२४-६७
		ले काल सं १८१ फागुण बुदी ७ ।	
२ धासिमहसज्झाय	×	हिन्दी	६८-९९
३ बसालबाह्मणी की वार्ता	×	"	१ १-१४७
		ले काल १८५५ माह बुदी १	

विशेष—कोठ्यारी प्रतापसिंह पठनार्थ लिखी हलसूरिमध्ये ।

४ संमसार	×	"	पद्य स ४८	१४८-१५२
५ चन्दकुंवर की वार्ता	×	"		१५३-१५४
६ चन्दरनिसाणी	जिनहर्ष	"		१५५-१५६
७ सुदयवछसालिया री वार्ता	×	"	अपूर्ण	१७ -२११

५८८४ गुटका सं० ६४ । पत्र सं १७ । आ १×४ इ । भाषा हिन्दी संस्कृत । पूर्ण । ले काल × । वे स १५६ ।

विशेष—नवमङ्गल विनोदीलाल कृत एवं पद स्तुति एवं पूजा संग्रह है ।

५८६५ गुटका स० ६५ । पत्र स० ६३ । आ० ६×४ इ० । भापा–हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५७ ।

विशेष—सिद्धचक्रपूजा एव पद्मावती स्तोत्र है ।

५८६६ गुटका स० ६६ । पत्र स० ४५ । आ० ६×४½ इ० । भापा–हिन्दी संस्कृत । विपय–पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५८ ।

५८६७. गुटका स० ६७ । पत्र स० ४६ । आ० ५½×४½ इ० । भापा–हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५९ ।

विशेप—भक्तामरस्तोत्र, पचमगल, देवपूजा आदि का सग्रह है ।

५८६८ गुटका स० ६८ । पत्र स० ६४ । आ० ४×३ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । विपय–स्तोत्र सग्रह ले० काल × । वे० स० ३६० ।

५८६९ गुटका स० ६९ । पत्र स० १५१ । आ० ७ ४ इ० । भापा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है ।

१, सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	हिन्दी		१–१४
२ महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	”		१४–१६
३ धर्मपरीक्षा भाषा	विशालकीर्ति	”	ले० काल १८६४	३०–१५१

विशेष—नागपुर मे प० चतुर्भुज ने प्रतिलिपि की थी ।

५९०० गुटका स० ७० । पत्र स० ५६ । आ० ५½×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८०२ पूर्ण । वे० स० ३६२ ।

१ महादण्डक	×	हिन्दी	३–५३

ले० काल स० १८०२ पौष बुदी १३ ।

विशेष –उदयविमल ने प्रतिलिपि की थी । शिवपुरी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२ बोल	×	”	५४–५६

५९०१ गुटका स० ७१ । पत्र स० १२३ । आ० ६½×४ इ० भाषा सस्कृत हिन्दी । विषय–स्तोत्रसग्रह ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६३ ।

५६०२ गुटका सं० ७२ । पत्र सं १२७ । आ ४×१ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे० सं ११४ ।

विशेष—पूजा पाठ व स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५६०३ गुटका सं० ७३ । पत्र सं ४१ । आ० ४×१ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११५ ।

१	पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी	१–४४
२	आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	४५–६१

५६०४ गुटका सं० ७४ । पत्र सं ५ । आ १३×१३ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण वे सं ११६ ।

विशेष—प्रारम्भ में पूजा पाठ तथा नुसखे दिये हुये हैं तथा अन्त के १७ पत्रों में संवत् १ ११ से भारत के राजाओं का परिचय दिया हुआ है ।

५६०५ गुटका सं० ७५ । पत्र स ९ । आ ५×५३ इ । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ११७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०६ गुटका सं० ७६ । पत्र सं १८–१३७ । आ ७×११ इ । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले काल × । अपूर्ण । वे सं० ११८ ।

विशेष—प्रारम्भ में कुछ मन्त्र है तथा फिर आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५६०७ गुटका सं० ७७ । पत्र सं २७ । आ ६३×४३ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण वे० सं ११६ ।

१	ज्ञानचिन्तामरिण	मनोहरदास	हिन्दी	१२१ पद्य हैं	१–१६
२	बारह भिखचक्रवर्ती की भावना	सुखरदास	"		१६–२१
३	सम्मेदगिरिपूजा	×	"	अपूर्ण	२२–२७

५६०८ गुटका सं० ७८ । पत्र स १२ । आ ९×१३ इ । भाषा-संस्कृत । ले काल × । अपूर्ण वे सं १२१ ।

विशेष—नाममाला तथा सन्निपात आदि में से पाठ है ।

५६०६. गुटका सं० ७६ । पत्र स० ३० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८१ । पूर्ण । वे० स० ३७१ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है ।

५६१०. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ५४-१३६ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द	प्राकृत	अपूर्ण	५४-७६
२. मूलसघ की पट्टावलि	×	सस्कृत		८०-८३
३ गर्भषडारचक्र	देवनन्दि	"		८४-९०
४. स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		९०-१०५
	एकीभाव, भक्तामर एवं भूपालचतुर्विशति स्तोत्र हैं ।			
५. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	"	१० पद्य हैं	१०५-१०६
६ पार्श्वनावस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	६ "	१०६-१०७
७. परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१४ "	१०७-१०९
८. सामायिक पाठ	अमितिगति	"		११०-११३
९. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३-११९
१०. आराधनासार	"	"		१२४-१३४
११. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"		१३४-१३८

५६११. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७३० भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० ३७४ ।

विशेष—कामशास्त्र एव नायिका वर्णन है ।

५६१२. गुटका सं० ८२ । पत्र स० ९३×६ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७४ ।

विशेष—पूजा तथा कथाओं का संग्रह है । अन्त मे १०९ से ११३ तक १८ वी शताब्दी का (१७०१ से १७५९ तक) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है ।

५६१३. गुटका स० ८३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । जीर्ण । पूर्ण । वे० स० ३७५ ।

१ कृष्णरास	×	हिन्दी	पद्य सं० ७१ है	१-११

महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।

२ कालीनागदमन कथा	×	"	११-२१
३ कृष्णप्रेमाष्टक	×	"	२१-२८

५६१४. गुटका सं० ८४। पत्र सं० १५२-२४१। आ० ६½×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७६।

विशेष—वैद्यकसार एवं वैद्यवल्लभ ग्रन्थों का संग्रह है।

५६१५. गुटका सं० ८५। पत्र सं० १०२। आ० ८×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७७।

विशेष—दो गुटकों का एक गुटका कर दिया है। निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है।

१ चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हिन्दी	११ पद्य हैं	२-२१
२ बेलि	छीहल	"		२२-२५
३ टंडारणागीत	बूचा	"		२५-२८
४ चेतनगीत	मुनिसिंहनन्दि	"		२८-३
५ जिनसांकु	ब्रह्मरायमल्ल	"		३-३१
६ नेमीश्वरचौमासा	सिंहनन्दि	"		३२-३३
७ पंथीगीत	छीहल	"		४१-४२
८ नेमीश्वर के १ भव	ब्रह्मधर्मरुचि	"		४३-४७
९ गीत	कवि पल्ह	"		४७-४८
१ तीर्थंकरस्तवन	ठक्कुरसी	"		४६-५
११ आदिनाथस्तवन	कवि पल्ह	"		४६-५
१२ स्तोत्र	भ० जिनचन्द्र देव	"		५-५१
१३ पुरन्दर चौपई	ब्र० मालदेव	"		५२-८७

ले० काल सं० १६ ७ फागुण बुदी ६।

१४ मेघकुमार गीत	पूनो	"	१२-१५
१५ चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	"	१६-१६

१६. वलिभद्र गीत	अभयचन्द	,,	३०-३६
१७ भविष्यदत्त कथा	ब्रह्मरायमल्ल	,,	४०-८५
१८. निर्दोपसप्तमीव्रत कथा	,,	,,	
		ले० काल १६४३ आसोज १३ ।	
१६. हनुमन्तरास	,,	,,	अपूर्ण

५६१६. गुटका स० ८६ । पत्र स० १८८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एव स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३७८ ।

५६१७ गुटका स० ८७ । पत्र सं० ३०० । पा० ५३/४×४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्रो के अतिरिक्त रूपचन्द, वनारसोदास तथा विनोदीलाल आदि कवियो कृत हिन्दो पाठ हैं ।

५६१८ गुटका स० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदो का सग्रह है ।

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र स० २-२६६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	सस्कृत		१८-२०
२ वारह अनुप्रेक्षा	×	प्राकृत	४७ गाथायें हैं ।	२१-२५
३. भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	सस्कृत		
४. अन्य स्फुट पाठ एवं पूजायें	×	सस्कृत हिन्दी		

५६२० गुटका स० ६० । पत्र स० ३-६१ । आ० ८×५१/२ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८२ ।

विशेष—नलवराम के पदो का सग्रह है ।

५६२१ गुटका स० ६१ । पत्र स० १४-४६ । आ० ८३/४×५३/४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है ।

१ कृष्णरास	×	हिन्दी	पद्य सं ७६ है	१-१६
		महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।		
२ कालीनागदमन कथा	×	"		१६-२१
३ कृष्णप्रेमाष्टक	×	"		२६-२८

५६१४ गुटका सं० ८४। पत्र सं १५२-२४१। आ ६½×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १०६।

विशेष—वैद्यकसार एवं वैद्यवल्लभ ग्रन्थों का संग्रह है।

५६१५ गुटका सं० ८५। पत्र सं० १०२। आ ८×५ इ । भाषा-हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १०७।

विशेष—दो गुटकों का एक गुटका कर दिया है। निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है।

१ चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हिन्दी	११ पद्य है	२ -२१
२ बलि	छीहल	"		२२-२५
३ टंडाणागीत	बूचा	"		२५-२८
४ चेतनगीत	मुनिसिंहनन्दि	"		२८-३
५ जिनलाडू	ब्रह्मरायमल्ल	"		३०-३१
६ नेमीश्वरचौमासा	सिंहनन्दि	"		३२-३३
७ पंथीगीत	छीहल	"		४१-४२
८ नेमीश्वर के १० भव	ब्रह्मधर्मरुचि	"		४३-४७
९ गीत	कवि पल्ह	"		४७-४८
१ सीमंधरस्तवन	ठक्कुरसी	"		४६-५
११ शांतिनाथस्तवन	कवि पल्ह	"		४६-५
१२ रास	भ जिनदास देव	"		५ -५१
१३ पुरन्दर चौपई	ब्र मालदेव	"		५३-८७
		ले काल सं १६ ७ फागुण बुदी ६।		
१४ नेमकुमार गीत	पूना	"		१२-१५
१५ आदिनाथ के १६ स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	"		२६-२८

१६. वलिभद्र गीत	अभयचन्द	”	३०-३६
१७ भविष्यदत्त कथा	ब्रह्मारायमल्ल	”	४०-८५
१८ निर्दोषसप्तमीव्रत कथा	”	”	
		लेo काल १६४३ आसोज १३ ।	
१६ हनुमन्तरास	”	”	अपूर्ण

५६१६. गुटका स० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६X६ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विपय-पूजा एव स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भादवा सुदा १ । पूर्ण । वे० सं० ३७८ ।

५६१७ गुटका स० ८७ । पत्र स० ३०० । पा० ५३X४ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३७६ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्रो के अतिरिक्त रूपचन्द, बनारसीदास तथा विनोदीलाल आदि कवियो कृत हिन्दी पाठ हैं।

५६१८ गुटका स० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६X५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदो का सग्रह है।

५६१६. गुटका स० ८६ । पत्र स० २-२६६ । आ० ८X५ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१ पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	सस्कृत		१८-२०
२ वारह अनुप्रेक्षा	X	प्राकृत	४७ गाथायें हैं।	२१-२५
३. भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	सस्कृत		
४. अन्य स्फुट पाठ एव पूजायें	X	सस्कृत हिन्दी		

५६२० गुटका स० ६० । पत्र स० ३-६१ । आ० ८X५½ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद सग्रह । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३८२ ।

विशेष—नलवराम के पदो का सग्रह है।

५६२१ गुटका स० ६१ । पत्र स० १४-४६ । आ० ८३X५३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है।

१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्रयत्रसहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत		१–४३
२. पद्मावतीकवच	×	"		४३–५२
३ पद्मावतीसहस्रनाम	×	"		५२–६३
४ पद्मावतीस्तोत्र वीजमत्र एव साधन विधि	×	"		६३–८६
५ पद्मावतीपटल	×	"		८६–८७
६. पद्मावतीदंडक	×	"		८७–८६

५६२७ गुटका स० ६७। पत्र सं० ६-११३ आ० ६×४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण वे० सं० ३८६।

१. स्फुटवार्त्ता	×	हिन्दी	अपूर्ण	६–२२
२. हरिचन्दशतक	×	"		२३–६६
३ श्रीधूचरित	×	"		६७–६३
४ मल्हारचरित	×	"	अपूर्ण	६३–११३

५६२८. गुटका सं० ६८। पत्र स० ५३। आ० ५×५ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६०।

विशेष—स्तोत्र एवं तत्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६२६ गुटका सं० ६६। पत्र सं० ६-१२६। आ० ८३/४×५ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६१।

५६३० गुटका स० १००। पत्र स० ८८। आ० ८×५ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६२।

१. आदित्यवारकथा	×	हिन्दी	१४–३४
२. पक्की स्याही वनाने की विधि	×	"	३५
३ सकट चौपई कथा	×	"	३८–४३
४. कक्का वत्तीसी	×	"	४५–४७
५. निरजन शतक	×	"	५१–८४

विशेष—लिपि विकृत है पढने में नही आती।

५६३१ गुटका सं० १०१ । पत्र सं २१ । मा १½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६१ ।

विशेष—कवि सुन्दर कृत नायिका लक्षण दिया हुआ है । ४२ से १५ पद्य तक है ।

५६३२. गुटका सं० १०२ । पत्र सं ७८–१ १ । मा ८×७ इ । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६४ ।

१ चतुर्दशी कथा डामूराम हिन्दी र काल १७६६ प्र. जेठ सुदी १

ले काल सं० १७६६ जेठ सुदी १४ । अपूर्ण ।

विशेष—२९ पद्य से २१ पद्य तक है ।

मध्य भाग—

माता ऐंसो हठ मति करौ संजम बिना जीव न निसतरै ।
कौको माता काको बाप प्रातमराम अकेलो माप ॥ १७६ ॥

दोहा—

आप बेखि पर देखिये दुख सुख दोउ भेद ।
आतम ऐक विचारिये, भरमन कहु न छेद ॥ १७७ ॥
संमलावार कंवर को कीयो दिक्ष्या लैण कंवर जब गयो ।
सुवामी माय कीक्ष्या हाथ दीक्ष्य दोह मुनीसुर नाथ ॥ १७८ ॥

अन्तिमपाठ—

सुनि साद कथा कही रायचन्दी सुलतान ।
करम कटक में बेहुरी बैठो पचे सु जांण ॥ २२८ ॥
सतरासे पचासमै प्रथम जेठ सुदि जानि ।
सोमवार दसमी मानी पूरण कथा बखानि ॥ २२९ ॥
खंडेलवाल दीहरा गोत्र मांवावतो मैं वास ।
डालु कही मति मो हसी हूं सजन की दास ॥ २१ ॥
महाराजा जीसर्नसिहजी प्राया साहा मान की लार ।
जो या कथा पढे सुणै सो पुरिष मैं सार ॥ २३१ ॥

चौदस की कथा सपूर्ण । मिती प्रथम जेठ सुदी १४ संवत् १७६५

२ चौदरायीजयमाल × हिन्दी ९३–९४
३ तारातंबोलकी कथा × ९४–९६

४. नवरत्न कवित्त	वनारसीदास	"		६७-६६
५. ज्ञानपच्चीसी	"	"		६८-१००
६. पद	×	"	अपूर्ण	१००-१०१

५६३३. गुटका स० १०३ । पत्र स० १०-५५ । ग्रा० ८३/४×६३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका स० १०४ । पत्र स० ७ । ग्रा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

ज भण्डार [दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

५६३५ गुटका सं० १ । पत्र स० १४० । ग्रा० ७१/२×५३/४ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. देहली के बादशाहो की नामावलि एवं परिचय	×	हिन्दी		१-१६
		ले० काल स० १८५२ जेठ बुदी ५ ।		
२ कवित्तसग्रह	×	"		२०-४४
३ शनिश्चर की कथा	×	"	गद्य	४५-६७
४ कवित्त एवं दोहा संग्रह	×	"		६८-६४
५ द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	"		६५-६६
		ले० काल १८५६ पौष बुदी ५ ।		

विशेष—रणथम्भौर मे लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६ गुटका स० २ । पत्र सं० १०६ । ग्रा० ५×४३/४ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५६३७. गुटका स० ३ । पत्र स० ३-१५३ । ग्रा० ६×५१/२ इ० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	३-४
(जिणवर ध्याइयडावे, मनि चित्या फलु पाया)			

२ गीत-(जिणवर हो स्वामी चरण मनाय, सरसति स्वामिणि वीनऊ हो)

१ पुष्पाञ्जलिजयमाल	×	अपभ्रंश	७-२४
२ लघुकल्याणपाठ	×	हिन्दी	२४-२६
३ तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	४६-६
४ आराधनासार	"	"	६३-१
५ द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	"	१ -१११
६ पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	१११-११२
७ द्रव्यसंग्रह	आ नेमिचन्द्र	प्राकृत	१४६-१५१

५६३८. गुटका स० ४ । पत्र स० १५६ । आ १×८ इ । भाषा-हिन्दी । लि काल सं १८४२ माघाढ सुदी १५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ पार्श्वपुराण	भूधरदास	हिन्दी		१-१ २
२. एकसोगुनहत्तरजीव वर्णन	×	"	१८४२	१ ४
३ हनुमन्त चौपाई	ब रायमल	"	१८२२ माघाढ सुदी ३	"

५६३६ गुटका स० ५ । पत्र सं १४ । आ ७३×४ इ । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६४० गुटका सं० ६ । पत्र सं २१३ । आ ६×५ इ । भाषा-संस्कृत । लि काल × ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६४१ गुटका स० ७ । पत्र सं २२ । आ ६×७३ इ । भाषा हिन्दी । लि काल × । पूर्ण ।

विशेष—पं देवीचन्दकृत हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामें अर्थ दिया हुआ है । भाषा गद्य और पद्य दोनों में है । देवीचन्द ने अपना कोई परिचय नहीं लिखा है । जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी । भाषा साधारण है —

अब तेरी सेवा में रहि हौं । ऐसे कहि मगदत्त कुवा महि ते नीकरो ।

दोहा—छूटो काल के गाल में अब कहीं काल न खाय ।

ज्यो नर प्रगट मासहि नयो जनम तन पाय ॥

वार्ता—सांप की दाढ में तें छूटो अब म्हौ नयो जनम पायो । कुवे में तें बाहरि आय यो कही वहां सांप कितनेक बेर तो बाट देखी । न आयो जब आतुर भयो । तब यो कही में कहा कीयो । जदपि कुवा के मेंडक सब खायो पै जब लग मगदत्त को न खायो तब लग रंच बहु खायो नहीं ।

५६४२. गुटका सं० ८। पत्र सं० १६६-४३०। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—बुलाकीदास कृत पाडवपुराण भाषा है।

५६४३ गुटका स० ६। पत्र सं० १०१। आ० ७½×६½ इ०। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठो का सग्रह है।

५६४४ गुटका सं० १०। पत्र स० ११८। आ० ८½×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सग्रह। ले० काल सं० १८६० माह बुदी ५। पूर्ण।

१ सुन्दरविलास	सुन्दरदास	हिन्दी	१ से ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज खडेलवाल ने प्रतिलीपि की थी।

२ बारहखडी	दत्तलाल	"	

विशेष—६ पद्य हैं।

५६४५. गुटका स० ११। पत्र स० ४२। आ० ८½×६ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल स० १६०८ चैत बुदी ६। पूर्ण।

विशेष—वृंदसतसई है जिसमे ७०१ दोहे हैं। दसकत चीमनलाल कालख हाला का।

५६४६. गुटका स० १२। पत्र स० २०। आ० ८×६½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६६० आसोज बुदी ६। पूर्ण।

विशेष—पचमेरु तथा रत्नत्रय एव पार्श्वनाथस्तुति है।

५६४७ गुटका सं० १३। पत्र स० १५५। आ० ८×६½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १७६० ज्येष्ठ सुदी १। अपूर्ण।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, अठारा नाते का चौढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पंचपरमेष्ठी गुणमाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यवार कथा [भाउकृत] नवकार रासो, जोगी रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि।

बीच के १०० से १३२ पत्र नही हैं। पीछे काटे गये मालूम होते हैं।

भ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर]

५६४८ गुटका सं० १। पत्र सं २ । आ ५½×४ इ । भाषा-हिन्दी। विषय संग्रह। ले काल सं १६६८। पूर्ण। वे सं २७।

विशेष—आलोचनापाठ सामायिकपाठ छहढाला (दौलतराम) कर्मप्रकृतिविधान (बनारसीदास) अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल आदि पाठों का संग्रह है।

५६४६ गुटका स० २। पत्र सं २२। आ ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी पद्य। ले काल ×। पूर्ण। वे सं २६।

विशेष—वीररस के कवित्तों का संग्रह है।

५६५ गुटका स० ३। पत्र सं ६ । आ ६×६ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। जीर्ण शीर्ण। वे स १ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६६१ गुटका स० ४। पत्र सं १ १। आ ६×५½ इ । भाषा हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ३१।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है।

१ जिनसहस्रनामस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	१–११
२. लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	"	११–२१
३ पद– आतम रूप सुहावना	द्यानतराम	"	२२
४ बिनती	×	"	२३–२४
	विशेष—रूपचन्द ने मामरे में स्वपठनार्थ लिखो थी।		
५ मुखचडी	हर्षकीर्ति	"	२४–२५
६ सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	२५–४०
७ मध्यारमदोहा	रूपचन्द	"	४०–५५
८ साधुवदना	बनारसीदास	"	५५–५८
६ मोक्षपैडी	"	"	५८–६१
१ कर्मप्रकृतिविधान	"	"	७६–६१

११. विनती एव पदसंग्रह	×	हिन्दी	९१–१०१

५९५२. गुटका स० ५। पत्र स० ६–२९। आ० ४×४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३२।

विशेष—नेमिराजुलपच्चीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भौजाई का झगडा आदि पाठो का सग्रह है।

५९५३. गुटका स० ६। पत्र स० १६। आ० ६×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१।

विशेष—निम्न पाठ है—पद, चौरासी न्यात की जयमाल, चौरासी जाति वर्णन।

५९५४. गुटका स० ७। पत्र स० ७। आ० ६×४½ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल स० १९४३ बैशाख सुदी १। अपूर्ण। वे० स० ४२।

विशेष—विषापहारस्तोत्र भाषा एव निर्वाणकाण्ड भाषा है।

५९५५. गुटका स० ८। पत्र स० १८४। आ० ७×५½ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। विषय–स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१–३५
२. छहढाला (अक्षरबावनी)	"	"	३५–३९
३. धर्मपच्चीसी	"	"	३९–४२
४ तत्त्वसारभाषा	"	"	४२–४९
५. सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	सस्कृत	४९–१७५
६ जिनसहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	"	१–१२

ले० काल स० १७९८ फागुन सुदी १०

५९५६ गुटका स० ९। पत्र स० १३। आ० ६½×४½ इ०। भाषा–प्राकृत हिन्दी। ले० काल स० १९१८। पूर्ण। वे० स० ४४।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

५९५७ गुटका स० १०। पत्र स० १०५। आ० ८×७ इ०। ले० काल ×।

१ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१–१९
२ तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०–२४

३ बारहखड़ी	×	संस्कृत	२४–२७
४ समाधिरास	×	पुरानी हिन्दी	२७–२६

विशेष—पं० हालूराम ने अपने पढ़ने के लिए लिखा था।

५. द्वादशानुप्रेक्षा	×	पुरानी हिन्दी	२६–३३
६ योगीरासौ	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३२–३३
७ श्रावकाचार दोहा	रामसिंह	"	३३–६३
८ षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	८४–१ ४
९ पटलेश्या वर्णन	×	संस्कृत	१ ४–१ ५

५६५८ गुटका सं० ११। पत्र सं १५। (खुले हुये शास्त्राकार) आ ७¾×५ इ । भाषा–हिन्दी ले काल ×। पूर्ण। वे स ८४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

५६५९ गुटका सं० १२। पत्र स ५ । आ ६×५ इ । भाषा हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६६० गुटका सं० १३। पत्र सं ४ । आ ६×६ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १ १।

१ चन्दकथा	सदमण	हिन्दी	१–२१

विशेष—६७ पद्य से २६२ पद्य तक आमानेरी के राजा चन्द की कथा है।

२ फुटकर कवित्त	अमरदास	"	२२–४

विशेष—चन्दन मलियागिरि कथा है।

५६६१ गुटका सं० १४। पत्र स १६६। आ ७×६ इ । भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले काल स १६५१। पूर्ण। वे स १०२।

१ चौरासी जाति भेद	×	हिन्दी	१–१६
२ नेमिनाथ फागु	पुण्यरत्न	"	२ –२५

विशेष—अन्तिम पाठ :—

समुद्र विजय तन पुण निलउ सेव करइ बसु सुर नर वृन्द।
पुण्यरत्न मुनिवर भणइ श्रीसंघ सुखधाम नेमि जिणन्द ॥ ६४ ॥

कुल ६४ पद्य हैं।

॥ इति श्री नेमिनाथ फागु समाप्त ॥

३. प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी		२६–५०
४. सुदर्शनरास	,,	,,		५१–८०
५. श्रीपालरास	,,	,,	ले० काल स० १६५३ जेठ बुदी २	११६
६. शीलरास	,,	,,		१३३
७. मेघकुमारगीत	पूनो	,,		१३५
८. पद– चेतन हो परम निधान	जिनदास	,,		२३६
९. ,, चेतन चिर भूलिउ भमिउ देखउ चित न विचारि।	रूपचन्द	,,		२३८
१०. ,, चेतन तारक हो चतुर सयाने वे निर्मल दिष्टि अछत तुम भरम भुलाने।	,,	,,		,,
११. ,, वादि अनादि गवायो जीव विधिवस वहु दुख पायो चेतन।	,,	,,		
१२ ,,	दास	,,		२४०
१३. ,, चेतन तेरो दानो वानो चेतन तेरी जाति।	रूपचन्द	,,		
१४. ,, जीव मिथ्यात उदै चिरु भ्रम आयौ। वा रत्नत्रय परम धरम न भायौ॥	,,	,,		
५. ,, सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे	दरिगह	,,		
६. ,, हा हा भूता मेरा पद मना जिनवर धरम न वेये।	,,	,,		
१७ ,, जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा।	रूपचन्द	,,		२४७
१८. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत		२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	ले० काल १७३५	२५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	,,	ले० काल १७३५	२५७
२१. जकडी	दयालदास	,,		२३२

२२ पद— साधु बोल रै मन दुख बोलणी न भावै। हर्षकीर्ति " २१२

२३ रविव्रत कथा भानुकीर्ति " र काल १६८७ २११

(आठ सात सोलह के अक वर्ष रची सु कथा विमल)

२४ पद जो बनीया का चोरा माही धी जिण काज न ध्यावै रै। जिनसुन्दर " २४१

२५ चौबत्तीसी मनूमल " २४८

२६ ढंढाणा गीत बूचराज " २६२

२७ भ्रमर गीत मनसिंघ " १६ पद हैं २६५

(वाडी फूली अति भली-सुन भमरा रे)

५६६२ गुटका स० १५। पत्र सं २७५। आ ५×४½ इ । ले काल स १७२७। पूर्ण। वे सं १३।

१ नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१६३
		र काल स १६६३। ले काल सं १७६२	
२ मेघकुमार गीत	पुनो	"	१६३–१६६
३ तेरहकाठिया	बनारसीदास	"	१८८
४ बिनेजकरी	जिनदास	"	२ ६
५ गुणाक्षरमाला	मनराम	"	
६ मुक्तावली की जयमाल	जिनदास	"	
७ बावनी	बनारसीदास	"	२४३
८ नगर स्थापना का स्वरूप	×	"	२५४
९ पचमगति की बेलि	हर्षकीर्ति	"	२६६

५६६३ गुटका स० १६। पत्र स २१२। आ ६×६ इ । भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। वे सं १८।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६६४ गुटका सं० १७। पत्र सं १०२। आ ६×५ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १८।

१. भविष्यदत्त चौपई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	११६
२ चौवोस तीर्थङ्कर परिचय	×	"	१४२

५६६५. गुटका सं० १७ । पत्र स० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५६६६. गुटका स० १८ । पत्र स० ६८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ । पूर्ण । वे० स० १११ ।

१ लग्नचन्द्रिका भाषा	स्योजीराम सौगानी	हिन्दी	१-४३

प्रारम्भ—आदि मत्र कू सुमरिइ, जगतारण जगदीश ।
जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥
दूजा पूजू सारदा, तीजा गुरु के पाय ।
लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करू बणाय ॥ २ ॥
गुरन मोहि आग्या दई, मसतक धरि के बाह ।
लगन चन्द्रिका ग्र थ की, भाषा कहू बणाय ॥ ३ ॥
मेरे श्री गुरुदेव का, आवावती निवास ।
नाम श्रीजैचन्द्रजी, पडित बुध के वास ॥ ४ ॥
लालच द पडित तणे, नाती चेला नेह ।
फतेचद के सिष तिनै, मौकू हुकम करेह ॥ ५ ॥
कवि सोगाणी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।
कवरपाल को नंद ते, स्योजीराम वखाणि ॥ ६ ॥
ठारासै के साल परि, वरप सात चालीस ।
माघ सुकल की पचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

अन्तिम—
लगन चन्द्रिका ग्र थ की, भाषा कही जु सार ।
जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी प० ले० काल वैशाख बुदी १० १८७४	

विशेष—७०६ पद्य है ।

२२ पद– कायु बास रै मन मुक बोलणी म भावै । — हर्षकीर्ति — „ — २१२

२३ रविव्रत कथा — भानुकीर्ति — „ — र काल १६८७ — ११६

(भाठ सात सोलह के भक वर्षां रचे सु कथा विमल)

२४ पद जो बनीया का बारा माहीं भी जिण कोन न भ्यावै रे । — शिवसुन्दर — „ — १४१

२५ शीलबत्तीसी — अचलमल — „ — १४८

२६ टंटाणा गीत — बूचराज — „ — १६२

२७ भ्रमर गीत — मनसिंघ — „ — ११ पद हैं — १६५

(वाडी फूली भति भली-सुन भमरा रे)

५६६२ गुटका स० १४ । पत्र सं २७५ । भा ५×४½ इ । ले काल स १७२७ । पूर्ण । वे सं १ ३ ।

१ नाटक समयसार — बनारसीदास — हिन्दी — १६३

र काल स १६६३ । ले काल सं १७६३

२ मेघकुमार गीत — पूनो — „ — १६३–१६६

३ तेरहकाठिया — बनारसीदास — „ — १८८

४ विवेकजकडी — जिनदास — „ — २ ६

५ गुणाक्षरमाला — मनराम — „

६ सुगु रा की जयमाल — जिनदास — „

७ बावनी — बनारसीदास — „ — २४१

८ नगर स्थापना का स्वरूप — × — „ — २५४

९ पचमगति की बेलि — हर्षकीर्ति — „ — २६६

५६६३ गुटका स० १६ । पत्र स २१२ । भा ६×६ इ । भाषा–संस्कृत हिन्दी । ले काल × । वे सं १ ८ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६६४ गुटका सं० १७ । पत्र सं १४२ । भा ६×५ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं १ ८ ।

१. भविष्यदत्त चौपई ब्र० रायमल्ल हिन्दी ११६

२ चौवोस तीर्थङ्कर परिचय × " १४२

५९६५. गुटका सं० १७ । पत्र स० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५९६६. गुटका स० १८ । पत्र स० ९८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ । पूर्ण । वे० स० १११ ।

१. लग्नचन्द्रिका भाषा स्योजीराम सौगानी हिन्दी १-४३

प्रारम्भ—आदि मत्र कू सुमरिइ , जगतारण जगदीश ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ।। १ ।।

दूजा पूजू सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करू बणाय ।। २ ।।

गुरन मोहि आग्या दई, मसतक धरि के बाह ।

लगन चन्द्रिका ग्र थ की, भाषा कहू बणाय ।। ३ ।।

मेरे श्री गुरुदेव का, आबावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पडित बुध के वास ।। ४ ।।

लालचन्द पडित तणे, नाती चेला नेह ।

फतेचद के सिष तिनै, मौकू हुकम करेह ।। ५ ।।

कवि सोगाणी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

कवरपाल को नद ते, स्योजीराम वखाणि ।। ६ ।।

ठारासै के साल परि, वरष सात चालीस ।

माघ सुकल की पचमी, वार सुरनकोईस ।। ७ ।।

अन्तिम— लगन चन्द्रिका ग्र थ की, भाषा कही जु सार ।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ।। ५२३ ।।

२. वृन्दसतसई वृन्दकवि हिन्दी प० ले० काल वैशाख बुदी १० १८७४

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

१ राजनीति कवित्त　　　देवीदास　　　"　　　×　　　१२२ पद्य हैं।

५६६७ गुटका सं० १६ । पत्र स १ । आ ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय पद । ले० काल × । पूर्ण । वे सं ११२ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है। गुटका अशुद्ध लिखा गया है।

५६६८. गुटका सं० २० । पत्र सं २ १ । आ ६×५ इ । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह । ले काल सं १७७१ । पूर्ण । वे सं ११४ ।

विशेष—आदिनाथ की बीनती श्रीपालस्तुति, मुनिश्वरों की जयमाल बड़ा कक्का भक्तामर स्तोत्र आदि हैं।

५६६९ गुटका स० २१ । पत्र सं २७६ । आ ७×४½ इ । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले काल × । पूर्ण वे सं ११५ । ब्रह्मरायमल्ल कृत भविष्यदत्तरास नेमिरास तथा हनुमत चौपई है।

५६७० गुटका स० ९२ । पत्र स २६ ५१ । आ ६×५ इ । भाषा-हिन्दी । विषय–पूजा । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ११ ।

५६७१ गुटका स० २३ । पत्र स ८१ । आ ६×५½ इ । भाषा–संस्कृत । विषय पूजा पाठ । ले काल × । पूर्ण । वे सं १११ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

५६७२ गुटका सं० २४ । पत्र सं २ १ । आ ६×५½ इ । भाषा-हिन्दी संस्कृत विषय–पूजा पाठ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११२ ।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) पद्मभक्ति पाठ एवं पूजाओं का संग्रह है।

५६७३ गुटका स० २५ । पत्र सं ३–८ । आ ६×५ इ । भाषा–प्राकृत संस्कृत । विषय–पूजा पाठ । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १११ ।

५६७४ गुटका स० २६ । पत्र स ८५ । आ ६×५ इ । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजापाठ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११४ ।

५६७५. गुटका स० २७ । पत्र स १ १ । आ ६×६ इ । भाषा हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११२ ।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ रूपचन्द की जकड़ी अन्य संग्रह एवं पूजायें है।

५६७६ गुटका स० २८ । पत्र सं १११ । आ ६×७ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल स १८ २ । पूर्ण । वे सं ११६ ।

विशेष—समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें है।

५६७७. गुटका सं० २६। पत्र सं० ११६। आ० ८×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह। लि० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है।

५६७८. गुटका सं० ३०। पत्र सं० २०। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र। लि० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५५।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं निर्वाणकाण्ड गाथा हैं।

५६७९. गुटका सं० ३१। पत्र सं० ४०। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। लि० काल ×। पूर्ण। वे सं० १६२।

विशेष—रविव्रत कथा है।

५६८०. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ४४। आ० ४३/४×४१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। लि० काल ×। पूर्ण। वे सं० १७७६।

विशेष—बीच २ में से पत्र खाली हैं। १. बुलाखीदास मन्त्री की बरात जो सं० १६८४ मिती मंगसिर सुदी ३ को आगरे से अहमदाबाद गई, का विवरण दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त पद, गणेशछन्द, लहरियाजी की पूजा आदि है।

५६८१. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२। आ० ६१/२×४१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। लि० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९३।

१. राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल लालचंद	हिन्दी
२. नेमिनाथ का बारहमासा	"	"
३. राजुलमंगल	×	×

प्रारम्भ— तुम नीकस भवन सुढाढे, जब कमरी भई वरागी।

प्रभुजी हमने भी ले चालो साथ, तुम बिन नहीं रहे दिन रात।

अन्तिम— आपा दोनु ही मुकती मिलाना, तहा फेर न होय आवागवना।

राजुल अटल सुवर्धी नीहाइ, तिहा राणी नहीं छै कोई,

सोये राजुल मंगल गावत, मन वंछित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजुल मगल सपूर्ण।

५६८२ गुटका सं० ३४। पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इं० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३३।

विशेष—पूजा स्तोत्र एवं रविव्रत की चतुर्दशी कथा है।

५६८३ गुटका सं० ३५। पत्र सं० ४ । आ० ६×४ इं० । भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ है।

५६८४ गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इं० । भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १७७६ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३५।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर संस्कृत और भाषा है।

५६८५. गुटका सं० ३७। पत्र सं० २११। आ० ५×७ इं० । भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—पूजा स्तोत्र जैन शतक तथा पदों का संग्रह है।

५६८६ गुटका सं० ३८। पत्र सं० ४९। आ० ७×४ इं० । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४२।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६८७ गुटका सं० ३९। पत्र सं० ५ । आ० ७×४ इं० । ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४३।

१ श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत	१–१४
२ जयतिहुवणस्तोत्र	अभयदेवसूरि	"	१५–१६
३ अजितशान्ति जयस्तोत्र	×	"	१०–२५
४ श्रीवंतजयस्तोत्र	×	"	२६–३२

अन्य स्तोत्र एवं गौतमरासा आदि पाठ है।

५६८८. गुटका सं० ४०। पत्र सं० २१। आ० ५×४ इं० । भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४४

विशेष—सामायिक पाठ है।

५६८९ गुटका सं० ४१। पत्र सं० ५ । आ० ६×४ इं० । भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४६।

विशेष—हिन्दी पाठ संग्रह है।

५६६० गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। आ० ५×८ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एवं जिनपच्चीसी है।

५६६१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४८।

५६६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। आ० ६×४ इ० भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। आ० ८×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय—सुभाषित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। आ० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

१	भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१–३४
२	इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४–५२
३.	सम्बोधपचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३–७१
४.	सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	७२–९२
५.	चरचा	×	"	९२–१०३
६	योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४–१११
७	द्रव्यसग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२–१३३
८	अनित्यपचाशिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४–१४७
९	जकडी	रूपचन्द	"	१४८–१५४
१०	"	दरिगह	"	१५५–५६
११	"	रूपचन्द	"	१५७–१६३
१२.	पद	"	"	१६४–१६९
१३	आत्मसबोध जयमाल आदि	×	"	१७०–१७७

५६६५ गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल × पूर्ण। वे० सं० २५४।

५६६० गुटका स० ४२। पत्र स० २०। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एव जिनपच्चीसी है।

५६६१. गुटका सं० ४३। पत्र स० ४८। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४८।

५६६२ गुटका स० ४४। पत्र स० २५। आ० ६×४ इ० भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३ गुटका स० ४५। पत्र स० १८। आ० ८×५ इ०। भाषा हिन्दी। विषय—सुभाषित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २५०।

५६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। आ० ७×५ इ०। ले० काल स० १७५४। पूर्ण। वे० स० २५१।

१	भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१–३४
२	इष्टोपदेश भाषा	×	”	३४–५२
३.	सम्बोधपंचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३–७१
४.	सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	हिन्दी	७२–९२
५	चरचा	×	”	९२–१०३
६	योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	”	१०४–१११
७	द्रव्यसग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२–१३३
८	अनित्यपचाशिका	त्रिभुवनचन्द	”	१३४–१४७
९	जकडी	रूपचन्द	”	१४८–१५४
१०	”	दरिगह	”	१५५–५६
११	”	रूपचन्द	”	१५७–१६३
१२	पद	”	”	१६४-१६६
१३	आतमसबोध जयमाल आदि	×	”	१७०–१७७

५६६५ गुटका स० ४७। पत्र स० १६। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल × पूर्ण। वे० स० २५४।

५९९६ गुटका स० ४८ । पत्र स   । आ १×४ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल सं० १७ ५ पूर्ण । वे स २५५ ।

विशेष—आदित्यवारकथा (भाऊ) विरहमंजरी (नन्ददास) एवं आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

५९९७ गुटका स० ४९ । पत्र सं ४–११६ । आ ५×४ इ । भाषा–संस्कृत । ले काल × । पूर्ण वे सं २५७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५९९८ गुटका स० ५० । पत्र सं १८ । आ ५×५ इ । भाषा–संस्कृत । ले काल × । पूर्ण । वे सं २५८ ।

विशेष—पर्वों एवं सामान्य पाठों का संग्रह है।

५९९९. गुटका सं० ५१ । पत्र सं ४० । आ ८×५ इ । भाषा-संस्कृत । ले काल × । पूर्ण । वे सं० २५९ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है।

६००० गुटका स० ५२ । पत्र स ६५ । आ ८१×५ इ । भाषा–हिन्दी । ले सं १७२५ माघवा बुदी २ । पूर्ण । वे सं २६ ।

विशेष—समयसार नाटक तथा बनारसीविलास के पाठ हैं।

६००१ गुटका सं० ५३ । पत्र सं २२८ । आ ६×७ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल सं० १७५२ । पूर्ण वे सं २६१ ।

१ समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१–६१

विशेष—बिहारीदास के पुत्र भैनसी के पठनार्थ सवाराम ने लिखा था।

२ सीताचरित्र	रामचन्द्र (बालक)	हिन्दी	१–११७
३ पद	कवि संतीदास	"	
४ ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	"	
५ पदपंचासिका	×	"	

६००२ गुटका सं० ५४ । पत्र स १८ । आ ४×३ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल सं १८२७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे सं २६२ ।

१ स्वरोदय		हिन्दी	१–२७

विशेष—उमा महेश संवाद में है।

२. पंचाध्यायी ” २८–५८

विशेष—कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ५५ । पत्र स० ७–१२६ । आ० ५$\frac{3}{4}$×३$\frac{3}{4}$ इ० । भाषा–हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७२ ।

१. अनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द	हिन्दी	१४–२०
२. पद	विनोदीलाल	”	
३. पद	जगतराम	”	
(नेमि रगीलो छबीलो हटीलो चटकीले मुगति वधु संग मिलो)			
४ सरस्वती चूर्ण का नुसखा	×	”	
५ पद– प्रात उठी ले गौतम नाम जिम मन वाछित सीझै काम।	कुमुदचन्द	हिन्दी	
५. जीव वेलडी	देवीदास	”	
(सतगुर कहत सुनो रे भाई यो संसार असारा)		”	२१ पद्य है।
७ नारीरासो	×	”	३१ पद्य हैं।
८. चेतावनी गीत	नाथू	”	
९. जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	सस्कृत	
१०. महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	”	
११. नेमिनाथ स्तोत्र	प० शालि	”	
१२. पद्मावतीस्तोत्र	×	”	
१३. षट्मत चरचा	×	”	
१४. आराधनासार	जिनदास	हिन्दी	[illegible] पद्य हैं।
१५. विनती	”	”	२० पद्य हैं।
१६. राजुल की सज्झाय	”	”	३७ पद्य हैं।
१७ झूलना	गगादास	”	१२ पद्य हैं।
१८. ज्ञानपैडी	मनोहरदास	”	
१९. श्रावकाक्रिया	×	”	

विशेष—विभिन्न कवित्त एवं वीतराग स्तोत्र आदि हैं।

६००४ गुटका सं० ५६। पत्र सं० १२। आ० ४३/४×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६००५ गुटका सं० ५७। पत्र सं० १-८८। आ० ६३/४×४१/२ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १८४१ चैत बुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० २७४।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र स्तुति कल्याणमन्दिर भाषा शांतिपाठ, तीस चौबीसी के नाम एवं देवा पूजा आदि हैं।

६००६ गुटका सं० ५८। पत्र सं० ३६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७६।

१ तीसचौबीसी	×	हिन्दी	
२ तीसचौबीसी चौपई	स्याम	"	र० काल १७४१ चैत बुदी ५ ले० काल सं० १७४२ कार्तिक बुदी ५

अन्तिम—नाम चौपई ग्रन्थ यह, कीरि करी कवि स्याम।

चैनराज सुत ठोलिया जोबनपुर तस धाम ॥२१६॥

सतरासी इकचास में पूरन ग्रन्थ सुभाम।

चैत उजासी पचमी विधे स्कन्ध गुपराज ॥२१७॥

एक बार जे सरदहै, मनवा करिसि पाठ।

नरक नीच गति कै विर्वे गाडे बडे कपाट ॥२१८॥

॥ इति श्री तीस चोइसी जी की चौपई ॥

६००७ गुटका सं० ५९। पत्र सं० ३२। आ० ६×४३/४ इ०। भाषा-संस्कृत प्राकृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २९१।

विशेष—तीसचौबीसी के नाम भक्तामर स्तोत्र पंचरत्न परीक्षा की गाथा उपदेश रत्नमाला की गाथा आदि है।

६००८ गुटका सं० ६०। पत्र सं० १४। आ० ६×८ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८४१ पूर्ण। वे० सं० २८१।

१ समन्तभद्रकथा	जोधराज	हिन्दी	र० काल १७२२ वैशाख बुदी ७

२. श्रावको की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र × हिन्दी

३ सामुद्रिक पाठ × "

अन्तिम—सगुन छलन सुमत सुभ सब जनकू सुख देत।

भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनो के हेत ॥

६००९. गुटका सं० ६१। पत्र स० ११-५८। आ० ८३/४×६ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल स० १९१६। अपूर्ण। वे० स० २६६।

विशेष—विरहमान तीर्थङ्कर जकडी (हिन्दी) दशलक्षण, रत्नत्रय पूजा (संस्कृत) पचमेरु पूजा (भूधरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) अनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१९१६), पचकुमार पूजा आदि हैं।

६०१०. गुटका स० ६२। पत्र सं० १६। आ० ८३/४×६ इ०। ले० काल×। पूर्ण। वे० स० २९७।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है।

६०११. गुटका स० ६३। पत्र स० १६। आ० ६३/४×४३/४ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। विषय–सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३०८।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह एव ज्ञानस्वरोदय है।

६०१२ गुटका स० ६४। पत्र स० ३९। आ० ६×७ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३२५।

विशेष—(१) कवित्त पद्माकर तथा अन्य कवियो के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) आमेर के राजाओ की वंशावली, (४) मनोहरपुरा की पीढियो का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खडेलवालो के गोत्र, (७) कारखानो के नाम, (८) आमेर राजाओ का राज्यकाल का विवरण, (९) दिल्ली के बादशाहो पर कवित्त आदि है।

६०१३ गुटका स० ६५। पत्र स० ४२। आ० ६×४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३२६।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६०१४ गुटका स० ६६। पत्र स० १३-३२। आ० ७×४ इ० भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३२७।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६०१५ गुटका सं० ६७। पत्र सं १२। आ ६×४ इ । भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे सं १२८।

विशेष—कवित्त एवं आयुर्वेद के नुसखों का संग्रह है।

६०१६ गुटका सं० ६८। पत्र सं २१। आ ६½×४½ इ । भाषा–हिन्दी। विषय–संग्रह। ले काल ×। पूर्ण। वे स ११ ।

विशेष—पदों एवं कवितावों का संग्रह है।

६०१७ गुटका सं० ६९। पत्र सं ८४। आ ६×४ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११२।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

६०१८ गुटका सं० ७०। पत्र स ४। आ ६½×५ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं० १११।

विशेष—पदों एवं पूजाओं का संग्रह है।

६०१९ गुटका सं० ७१। पत्र सं १७। आ ४½×३½ इ । भाषा–हिन्दी। विषय–कामशास्त्र। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११४।

६०२० गुटका सं० ७२। स्फुट पत्र। वे सं ११६।

विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियां, षट्पदत्तीसी एवं जोगराज पचीसी का संग्रह है।

६०२१ गुटका स ७३। पत्र सं २८। आ ८½×५ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११७।

विशेष—ब्रह्मविलास चौबीसदण्डक मार्गणाविधान, भक्तामरस्तोत्र तथा सम्यक्त्वपचीसी का संग्रह है।

६०२२ गुटका सं० ७४। पत्र सं ३६। आ ८½×५ इ । भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह। ले काल ×। पूर्ण। वे सं ११८।

विशेष—विनतियां पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है। पाठों की संख्या १९ है।

६०२३ गुटका सं० ७५। पत्र सं १४। आ ५×४ इ । भाषा हिन्दी। ले काल सं० १९५९। पूर्ण। वे सं ११९।

विशेष—नरक दु:ख वर्णन एवं नेमिनाथ के १२ भवों का वर्णन है।

६०२४ गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८३⁄४×६ इ० । भाषा–संस्कृत । । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४२ ।

विशेष—आयुर्वेदिक एवं यूनानी नुसखो का संग्रह है ।

६०२५. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–सग्रह । ले० काल × । वे० स० ३४१ ।

विशेष—जोगीरासा, पद एवं विनतियो का सग्रह है ।

६०२६. गुटका सं० ७८ । पत्र स० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है । पृष्ठ ६४–१४६ तक वशीधर कृत द्रव्यसग्रह की वालाववोध टीका है । टीका हिन्दी गद्य मे है ।

६०२७. गुटका स० ७६ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा–हिन्दी । विषय–पद-सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५२ ।

ञ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८ गुटका सं० १ । पत्र स० २५८ । आ० ६×५ इ० । । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र सग्रह है । लक्ष्मीसेन का चितामणिस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त चतुर्दशी पूजा है ।

६०२६. गुटका सं० २ । पत्र स० ५४ । आ० ६×५ इ० । भापा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एव सामान्य पाठ सग्रह है ।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र स० ५३ । आ० ६×५ । भाषा सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर वलय पूजा, ऋषि मडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र स० १२४ । आ० ८×७३⁄४ इ० । भाषा–हिन्दी सस्कृत । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठो का संग्रह है—

१ सप्तसूत्रभेद　　　　　　　　×　　　　　　　　सस्कृत

२ मूलता मनोकुश इत्यादि	×	"	
३ श्रेपमक्रिया	×	"	
४ समयसार	आ० कुन्दकुन्द	प्राकृत	
५. आदित्यवारकथा	भाऊ	हिन्दी	
६ पोसहरास	ज्ञानभूषण	"	
७ धमतरुगीत	जिनदास	"	
८ चतुर्गतिचौपई	×	"	
९ संसारघटकी	×	"	
१ चेतनगीत	जिनदास	"	

सं १६२९ में अंबावती में प्रतिलिपि हुई थी।

६०३७ गुटका सं० ५। पत्र स ७१। आ १×५ इ । भाषा–संस्कृत। ले काल सं० १९८२। पूर्ण।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

सं १९८२ में मागौर में बाई ने लिखा की उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है।

६०३३ गुटका सं० ६। पत्र सं २२। आ १×५ इ । भाषा–हिन्दी। विषय–संग्रह। ले काल × वे सं ६।

१ नेमीश्वर का बारहमासा	खेतसिंह	हिन्दी	✶
२ पार्श्वनाथ के दशभव	गुणचन्द	"	
३ लीरहीर	×	"	

६० ४ गुटका सं० ७। पत्र सं १७७। आ ६×५ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण।

विशेष—नित्यनैमित्तक पाठ कुमावित (भूधरदास) तथा नाटक समयसार (बनारसीदास) हैं।

६०३५ गुटका सं० ८। पत्र सं १४१। आ ६×१६ इ । भाषा–संस्कृत अपभ्रंश।

ले काल ×। पूर्ण।

१ चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमाल	सोम	अपभ्रंश
२ ऋषिमंडलपूजा	मुनि गुणनंदि	संस्कृत

विशेष—निय पूजा पाठ संग्रह भी है।

६०३६. गुटका स० ६ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारो गतियो की आयु आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, आलोचना पाठ आदि हैं ।

६०३७. गुटका स० १० । पत्र स० ३८ । आ० ७×६ इ० । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष–सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमदिर स्तोत्र एव सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८ गुटका स० ११ । पत्र सं० १६६ । आ० ४×५ इ० । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र टब्बाटीका	×	संस्कृत हिन्दी	ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२. पद— हर्षकीर्ति	×	"	
	(जिए जिए जप जीवडा तीन भवन मे सारोजी)		
३ पचगुरु की जयमाल	ब्र० रायमल्ल	"	ले० काल स० १७२६
४. कवित्त	×	"	
५. हितोपदेश टीका	×	"	
६. पद–तै नर भव पाय कहा कियो	रूपचन्द	हिन्दी	
७. जकडी	×	"	
८ पद–मोहिनी वहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	"	

६०३९. गुटका स० १२ । पत्र स० १३८ । आ० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । निम्न पाठ है —

क्षेत्रपाल पूजा (सस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (सस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (स०) षोडशकारण, दशलक्षण, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा और जयमाल (प्राकृत) नदीश्वरपक्तिपूजा अनन्तचतुर्दशीपूजा, अक्षयनिधिपूजा तथा पार्श्वनास्तोत्र, आयुर्वेद ग्र थ (सस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेखाओ के चित्र भी है, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं ।

६०४० गुटका स० १३ । पत्र स० २८३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुख्यत. निम्न पाठ हैं—

१. जिनस्तुति	सुमतिकीर्त्ति	हिन्दी
२ गुणस्थानकगीत	ब्र० श्री वर्द्धन	"

अन्तिम—मणति श्री वर्द्ध न ब्रह्म एह वाणी मनियण सुख करइ

३ सम्यक्त्व जयमाल × अपभ्रंश

४ परमार्थगीत रूपचन्द हिन्दी

५. पद— म्हो मेरे जीव तू क्या भरमायो तू

चेतन मह जड परम है यामैं कहा लुभायो । मनराम ,,

६ मेघकुमारगीत पूनो ,,

७ मनोरथमाला अचलकीर्ति ,,

अचला तिहि तला गुण गाइस्यौं

८ सहेलीगीत सुन्दर हिन्दी

सहेल्यो है यो संसार असार मो चित्त मैं या उपमी जी सहेल्यो है

ज्यौ रांचे सो मवार तन धन जोबन थिर नहीं ।

९ पद— मोहन हिन्दी

जा दिन हंस चलै घर छोडि कोई न साथ चला है गोडि ।।

कण कण कै मुख ऐसी वाणी बडो वैपि मिलो प्रन पाणी ।।

भण विछडूं उनमैं सरीर, कोसि कोसि मे तनक नीर ।

चारि वरण चकुल मे वाहि, घर मैं घडी रहण दे नाहि ।

चवदा कूव मिडा में वास यो मन मेरा भया उदास ।

काया माया मूंकी चाणि मोहन होक अजन परमाणि ।।१।।

१ पद— हर्षकीर्ति हिन्दी

नहिं छोडौ हो जिनराज नाम मोहि और मिथ्यात सै क्या बनै काम ।

११ ,, मनोहर हिन्दी

सेव तो जिन साहिब की कीजे नरभव लाहो लीजे

१२ पद— जिणदास हिन्दी

१३ ,, स्यामदास ,,

१४ मोहविवेकयुद्ध बनारसीदास ,,

१५. द्वादशानुप्रेक्षा सूरत ,,

१६ द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	
१७. विनती	रूपचन्द	"	

जै जै जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करें तुम सेवा।

१८. पचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	र० काल सं० १५८५
१९. पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्त्ति	"	" " १६९३
२०. परमार्थ हिंडोलना	रूपचन्द	"	
२१. पथीगीत	छीहल	"	
२२. मुक्तिपीहरगीत	×	"	
२३. पद—अब मोहि और कछु न सुहाय	रूपचन्द	"	
२४ पदसग्रह	बनारसीदास	"	

६०४१. **गुटका सं० १४**। पत्र स० १०९–२३७। आ० १०×७ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एव उसकी विधि दी हुई है।

६०४२. **गुटका सं० १५**। पत्र स० ४३। आ० ७×५ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय-पद सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

६०४३ **गुटका स० १५**। पत्र स० ५२। आ० ७×५ इ०। भाषा—सस्कृत हिन्दी। विषय—सामान्य पाठ सग्रह। ले० काल ×। पूर्ण।

६०४४. **गुटका स० १७**। पत्र सं० १६६। आ० १३×३ इ०। ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ बुदो। पूर्ण।

१. छियालीस ठाणा	ब्र० रायमल्ल	सस्कृत	१६

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करो के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पचकल्याणको की तिथि आदि विवरण है।

२ चौबीस ठाणा चर्चा	×	"	२८
३. जीवसमास	×	प्राकृत ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ	५९

विशेष—ब्र० रायमल्ल ने देहली मे प्रतिलिपि की थी।

४. सुप्पय दोहा	×	हिन्दी	८०
५. परमात्म प्रकाश भाषा	प्रभुदास	"	९२
६. रत्नकरण्डश्रावकाचार	समंतभद्र	सस्कृत	९४

६०४५ **गुटका स० १८**। पत्र सं० १५०। आ० ७×२३ इ०। भाषा—सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

ट भण्डार [आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर]

६०४६. गुटका सं० १। पत्र सं० १७। भाषा—हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५ १।

१ मनोहरमंजरी | मनोहर मिश्र | हिन्दी | १-२६

प्रारम्भ— अब मनोहर मंजरी अब नव यौवना लक्षनं।

याके योवन अंकुरमो अंग अंग छवि मोर।

मुनि सुजान नव यौवना अकुत भेद है ठोर ॥

अन्तिमः— महलहाति मति रसमसी बहु मुबाम् अपाठ (?)

निरखि मनोहर मंजरी, रसिक भृङ्ग मंडराठ ॥

सुनि सुबनि अभिमान तजि मन बिचारि तुम बोध।

कहा बिरहु कित प्रेम रसु, तहीं होत दुख मोख ॥

चंद अस्त है दीप ले अंक बीच आकास।

करी मनोहर मंजरी मकर चांदनी प्यास ॥

माथुर का हो मधुपुरी बसत महोली पौरि।

करी मनोहर मजरी अनूप रस सोरि ॥

इति श्री सकललोकवृतमरीचिमंजरीनिकरनीराजितपदश्री वृन्दावनविहारकारिणयामकाकण्ठोपासक मनोहर मिश्र विरचिता मनोहरमंजरी समाप्ता।

कुल ७४ पद्य हैं। सं० ७२ तक ही दिये हुये हैं। नायिका भेद वर्णन है।

२ फुटकर दोहा | × | हिन्दी | १-१६

विशेष— ७ दोहे हैं।

३ आयुर्वेदिक नुसखे | × | " | १७

६०४७. गुटका सं० २। पत्र सं० २१८। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १७६४। अपूर्ण। वे० सं० १५ २।

१ नाममंजरी | नंददास | हिन्दी पद्य सं० २११ | २-२८

२ अनेकार्थमंजरी | " | " | २८-४

स्वामी खेमदास ने प्रतिलिपि की थी।

३ कवित्त	×	"	४१-४३
४ भोजरासो	उदयभानु	"	४३-४८

प्रारम्भ— श्री गणेसाय नम । दोहरा ।

कु जर कर कु जर करन कुजर आनंद देव ।

सिधि समपन सत्त सुव सुरनर कीजिय सेव ॥ १ ॥

जगत जननि जग उद्धरन जगत ईस अरधग ।

मीन विचित्र विराजकर हंसासन सरवग ॥ २ ॥

सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरैं नहि आन ।

जहा तहा स्रवन सुण जिये तहा भूपति भोज वखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी को रासो उदैभानजी को कियो । लिखतं स्वामी खेमदास मिती फागुण बुदी ११ संवत् १७६५ । इसमे कुल १४ पद्य हैं जिनमे भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५. कवित्त	टोडर	हिन्दी	कवित्त हैं	४६-४

विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८. गुटका स० ३ । पत्र सं० ११८ । भाषा–हिन्दी । ले० काल सं० १७२६ । अपूर्ण । वे० सं० १५०३ ।

१ मायाब्रह्म का विचार	×	हिन्दी गद्य	अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

"माया काहे तै कहिये अ भस्यो सवल है तातै माया कहिये । अकास काहे तैं कहिये पिंड ब्रह्मांड का आदि आकार है तातैं आकास कहीये । सुनी (शून्य) काहे तै कहीये–जड है तातैं सुनी कहिये । सक्ती काहे तैं कहिये सकल ससार को जीति रही है तातैं सकती कहिये ।"

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हस का ग्यान ब्रंभ जगीस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशकराचारीज वीरच्यते । मिती असाढ सुदी १० स० १७२६ का मुकाम गुहाटी उर कोस दोइ देईदान चारण की पोथीस्यै उतारी पोथी सा ···· म ठोल्या साह नेवसी का वेटा · कर महाराज श्री रघनाथस्यधजी ।

२ गोरखपदावली	गोरखनाथ	हिन्दी	अपूर्ण

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

म्हारा रै बैरागी जोगी जोगणि संग न छाडै जी।

मान सरोवर मनस झूलती मावै गगन मड मंड मारैजी ॥

३ सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	अपूर्ण	१–६५

ले काल सं १७२१ माघ सुदी २।

विशेष—प्रारम्भ के १२ दोहे नहीं हैं। कुल ७१ दोहे हैं।

४ वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	"	अपूर्ण ६७–११८

६०४९ गुटका स० ४। पत्र सं २१। भाषा—संस्कृत। विषय—नीति। ले काल स० १८११ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे स १५४।

विशेष—चाणक्य नीति का वर्णन है। मीचन्दजी गगवाल के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

६०५० गुटका सं० ५। पत्र सं ४। भाषा—हिन्दी। ले काल स १८११। अपूर्ण। वे स० १५५।

विशेष—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के अनूठे कवित्त है।

६०५१ गुटका सं० ६। पत्र स ८१। आ ६×४ इ। भाषा-हिन्दी। र काल सं १६८८। ल काल सं १७२८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वे सं १५६।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दरशृङ्गार है। भेयदास गोधा मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

६०५२ गुटका सं० ७। पत्र सं ४५। आ ६×७½ इ। भाषा—हिन्दी। ले काल स १८११ वैशाख सुदी ८। अपूर्ण। वे स १५७।

१ कवित्त	अमर (अग्रदास)	हिन्दी	अपूर्ण	१–१

विशेष—कुल ११ पद्य हैं पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं। इनका छन्द कुण्डलिया सा लगता है एक छन्द निम्न प्रकार है—

आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय।
पाछै बछरा खाय गहत गुरु सील न मानै।
ग्यान पुरान मसान जिनके मैं करम मुमानै ॥
करो विप्रली रीत मुतम जन मित न माजै।
नीच न समझै मीच परत विषया कै काजै।
अमर जीव ग्रादि तै यह बंध्यौस करै प्रनाम।
आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय ॥१॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा लोहट हिन्दी १७–२१

ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त मे १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं।

अन्तिम— अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर अज्ञान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभै भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा सपूर्ण । मिती वैशाख बुदी ८ सवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपच्चीसी भारमल हिन्दी २१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं।

अन्तिमपद्य— करम भ्रा तोर पच महावरत धरू जपू चौवीस जिणदा ।

अरहत ध्यान लैव चहूं साह लोयण वदा ॥

प्रकृति पच्यासी जाणि कै करम पचीसी जान ।

सूदर भारैमल ... स्यौपुर थान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पच्चीसी सपूर्ण ॥

५. पद–(वासुरी दीजिये व्रज नारि) सूरदास ” २६

६ पद–हम तो व्रज को बसिवो ही तज्यो ” ” २७–२८

व्रज मे बसि वैरिणि तू वंसुरी

७ श्याम वत्तीसी श्याम ” ३७–४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमे ३४ सवैये तथा १ दोहा है—

अन्तिम— कृष्ण ध्यान चतु अष्ट मे श्रवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहु रहत न रख्नक नाम ॥

८ पद–विन माली जो लगावै वाग मनराम हिन्दी ४०

९. दोहा–कवीर औगुन एक ही गुण है कवीर ” ”

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त × ” ४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्णन × ” अपूर्ण ४१-४५

म्हारा रे बैरागी जोगी जोगसि संग न छाडै थी।

मान सरोवर मगस मुक्ती मावे मगन मड मंड मारैकी ॥

३ सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	अपूर्ण	१–६५

ले काल सं १७२५ माघ सुदी २।

विशेष—प्रारम्भ के १२ दोहे नहीं हैं। कुल ७१ दोहे हैं।

४ वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	"	अपूर्ण १७–११८

६०४६ गुटका सं० ४। पत्र सं २१। भाषा–संस्कृत। विषय–नीति। ले काल स १८१२ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे स १५ ४।

विशेष—चाणक्य नीति का वर्णन है। नौनदजी गंगवाल के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

६०५० गुटका सं० ५। पत्र सं ४ । भाषा–हिन्दी। ले काल स १८११। अपूर्ण। वे स १५ ५।

विशेष—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के फुटकर कवित्त है।

६०५१ गुटका सं० ६। पत्र स ८१। आ ६×४ इ । भाषा हिन्दी। र काल सं १६८८। ले काल सं १७१८ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वे सं १५ ६।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दरशृङ्गार है। श्रेयदास गोधा मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

६०५२ गुटका सं० ७। पत्र सं ४५। आ ६×७½ इ । भाषा–हिन्दी। ले काल स १८११ वैशाख सुदी ८। अपूर्ण। वे स १५ ७।

१ कवित्त	अगर (अग्रदास)	हिन्दी	अपूर्ण	१–१

विशेष—कुल ६१ पद्य है पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं है। इनका छन्द कुण्डलिया सा लगता है एक छन्द निम्न प्रकार है—

आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय।
पाछै बछरा खाय बहुत गुर सीख न मानै।
व्यास पुराण मशाल छिनक मैं धरम बुझावै ॥
करी विप्रको रीठ मूतव बन नैत न लाजै।
नीच न समझै नीच परत विपदा कै काजै।
अगर जीव मांहि तै यह संयोग करै उपाय।
आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय ॥१ ॥

६०५६. गुटका सं० ११। पत्र सं० ४६। आ० १०×८ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५१४।

१. रसिकप्रिया	केशवदेव	हिन्दी	अपूर्ण	१-४८
		ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४		
२. कवित्त	×	"		४६

६०५७. गुटका स० १२। पत्र सं० २-२६। आ० ५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है।

१. स्नेहलीला	जनमोहन	हिन्दी	६-१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह।

जनमोहन जो गाव ही सो पावै नर देह ॥११६॥

जो गावै सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत।

रसिकराय पूरण कृपा मन वाछित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला सपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ मे कृष्ण ऊधव एव ऊधव गोपी सवाद है।

६०५८. गुटका स० १३। पत्र स० ७६। आ० ८×६३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० ×। पूर्ण। वे० स० १५२२।

१. रागमाला	स्याम मिश्र	हिन्दी	१-१२

र० काल स० १६०२ फागुण बुदी १०। ले० काल स० १७४६ सावन सुदी १५।

विशेष—ग्रन्थ के आदि मे कासिमखा का वर्णन है। ग्र थ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है।

अन्तिम—सवत् सौरह सै वरण ऊपर बीते दोय।

फागुन वदी सनो दसी सुनो गुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर स्याम आगरे नगर के।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ स्याम मिश्र कृत सपूर्ण। सवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोववार पोथी सेरगढ प्रगनैं हिंडोण का मे साह गोरधनदास अग्रवाल की पोथी थे लिखी लिखतं मौजीराम।

२. द्वादशमासा (बारहमासा)	महाकविराइसुन्दर	हिन्दी

६०५३ गुटका स० ८ । पत्र सं ८६ । प्रा० ६×८ इ । ले काल सं १७७६ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे सं १२ ब ।

१ कृष्णरुक्मणि वेलि	पृथ्वीराज राठौर	राजस्थानी डिंगल	१-८५
		र काल स १६३७ ।	

विशेष—ग्रन्थ हिन्दी गद्य टीका सहित है । पहिले हिन्दी पद्य हैं फिर गद्य टीका दी गई है ।

२ विष्णु पंजर रक्षा	×	संस्कृत	८६
३ भजन (गढ बंका कैसे लीजै रे भाई)	×	हिन्दी	८७-८८
४ पद-(बैठे नव निकुंज कुटीर)	चतुर्भुज	"	८६
५ " (धुनिसुनि मुरली बन बाजै)	हरीदास	"	"
६ " (सुन्दर सांवरो भावै चल्यो सखी)	नंददास	"	"
७ " (बालगोपाल छीगन मेरे)	परमानन्द	"	"
८ " (बन ते आवत गावत गौरी)	×	"	"

६०५४ गुटका सं० ६ । पत्र स ८६ । प्रा ६×७ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२ ६ ।

विशेष—केवल कृष्णरुक्मणी वेलि पृथ्वीराज राठौर कृत है। प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीकाकार अज्ञात है । गुटका स ८ में भाई हुई टीका से भिन्न है । टीका काल नहीं दिया है ।

६०५५ गुटका स० १० । पत्र सं १७ -२ २ । प्रा ६×७ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १५११ ।

१ कवित्त		राजस्थानी डिंगल	१७१-७६

विशेष—शृङ्गार रस के सुन्दर कवित्त हैं । विरहिनी का वर्णन है । इसमें एक कवित्त सीहल का भी है ।

२ श्रीरुक्मणिकृष्णजी को रासो	तिपरदास	राजस्थानी पद्य	१७६-१८५

विशेष—इति श्री रुक्मणी कृष्णजी को रासो तिपरदास कृत संपूर्ण ।। संवत् १७३५ वर्षे प्रथम चैत्र मासे शुभ शुक्ल पक्षे तिथौ दशम्यां बुधवासरे श्री मुकन्दपुर मध्ये लिखापितं साह सजन मोहु साह मूणाजी तत्पुत्र सजन साह मोहु दामूजी वाचनाथ । लिखतं व्यास पदमा मान्ना ।

३ कवित्त	×	हिन्दी	१८६-२०२

विशेष—सूरदास सुन्दरदास बिहारी तथा केशवदास के कवित्तों का संग्रह है । ४० कवित्त हैं ।

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१४ ।

१. रसिकप्रिया	केशवदेव	हिन्दी	अपूर्ण	१–४८
		ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४		
२. कवित्त	×	"		४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २–२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. स्नेहलीला	जनमोहन	हिन्दी	६–१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावै नर देह ॥११६॥

जो गावै सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वाछित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला सपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ मे कृष्ण ऊधव एव ऊधव गोपी सवाद है ।

६०५८. गुटका स० १३ । पत्र स० ७६ । आ० ८×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० × । पूर्ण । वे० स० १५२२ ।

१. रागमाला	श्याम मिश्र	हिन्दी	१–१२

र० काल स० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल स० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि मे कासिमखा का वर्णन है । ग्र थ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है ।

अन्तिम—सवत् सौरह से वरण ऊपर बीते दोय ।

फागुन वदी सनो दसी सुनो गुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर स्याम आगरे नगर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ स्याम मिश्र कृत सपूर्ण । सवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोववार पोथी सेरगढ प्रगनै हिंडोण का मे साह गोरधनदास अग्रवाल की पोथी थे लिखी लिखत मौजीराम ।

२. द्वादशमासा (बारहमासा)	महाकविराइसुन्दर	हिन्दी

विशेष—कुल २४ कवित्त हैं। प्रत्येक मास का विरहिणी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त में सुन्दर भाव हैं। सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है।

३ नखशिखवर्णन केशवदास हिन्दी १४-२८

ले० काल सं० १७४१ माह बुदी १४।

विशेष—शेरगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

४ कवित्त- गिरधर, मोहन सेवग आदि के हिन्दी

६०५६. गुटका स० १४। पत्र सं० ११। आ० ५×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५२१।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६०. गुटका स० १५। पत्र सं० ११८। आ० ८×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पद एवं पूजा। ले० काल सं० १८११ आसोज बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० १५२४।

१ पदसंग्रह हिन्दी १-५८

विशेष—जिनदास हरीसिंह, बनारसीदास एवं रामदास के पद हैं। राग रागनियों के नाम भी दिये हुये हैं

२ चौबीसतीर्थङ्करपूजा रामचन्द्र हिन्दी ५८-११८

६०६१. गुटका सं० १६। पत्र सं० १७१। आ० ७×६ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६४०। अपूर्ण। वे० सं० १५२५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१ विरदावली × संस्कृत

विशेष—पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है।

२. अक्षरबावनी मतिशेखर हिन्दी ६८-१ २

विशेष—रचना प्राचीन है। ५१ पद्यों में कवि ने अक्षरों की बावनी लिखी है। मतिशेखर की लिखी हुई कथा चउपई है जिसका रचनाकाल सं० १५७४ है।

३ त्रिभुवन की विनती गङ्गादास

विशेष—इसमें १ १ पद्य हैं जिसमें ११ शलाका पुरुषों का वर्णन है। भाषा गुजराती लिपि हिन्दी है।

६०६२. गुटका स० १७। पत्र सं० १२-७। आ० ५×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल स० १८४०। अपूर्ण। वे० सं० १५२६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६३. गुटका सं० १८। पत्र सं० ७०। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ। पूर्ण। वे० सं० १५२७।

१. चतुर्दशीकथा टीकम हिन्दी र० काल सं० १७१२

विशेष—३५७ पद्य हैं।

२. कलियुग की कथा द्वारकादास "

विशेष—पचेवर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३ फुटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है।

४. कपड़ा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानी

विशेष—इसमे ३१ पद्यो मे कवि ने नायिका को अलग २ कपड़े पहिना कर विरह जागृत किया तथा फिर पिय मिलन कराया है। कविता सुन्दर है।

६०६४ गुटका स० १६। पत्र स० ५७-३०५। आ० ६½×६½ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-सग्रह। ले० काल स० १६६० द्वि० वैशाख सुदी २। अपूर्ण। वे० स० १५३०।

१. भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायमल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र परिमल्ल " १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति मे है। अकबर के शासन काल मे रचना की गई थी।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास) × " २८३-२६८

६०६५. गुटका सं० २०। पत्र स० ७३। आ० ६×६½ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८३६ चैत्र बुदी ३। पूर्ण। वे० स० १५३१।

विशेष—स्तोत्र पूजा एव पाठो का संग्रह है। बनारसीदास के कवित्त भी हैं। उसका एक उदाहरण निम्न है —

कपडा की रौस जाणै हैवर की हौस जाणै।

न्याय भी नवेरि जाणै राज रौस माणिवौ॥

राग तौ छत्तीस जाणै लषिण बत्तीस जाणै।

चूंप चतुराई जाणै महल मे माणिवौ॥

वात जाणै सवाद जाणै खूबी खसवोई जाणै।

सगपग साधि जाणै अर्थ को जाणिवौ।

कहत बणारसीदास एक जिन नाव विना।

.... वूडौ सब जाणिवौ॥

६०६३. गुटका स० १८ । पत्र स० ७० । आ० ६×४ इ० । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० स० १५२७ ।

१ चतुर्दशीकथा टीकम हिन्दी र० काल सं० १७१२

विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा द्वारकादास "

विशेष—पचेवर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३ फुटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानी

विशेष—इसमे ३१ पद्यो मे कवि ने नायिका को अलग २ कपडे पहिना कर विरह जागृत किया तथा फिर पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४ गुटका स० १९ । पत्र स० ५७–३०५ । आ० ६¾×६¾ इ० । भाषा–हिन्दी सस्कृत । विषय–सग्रह । ले० काल स० १६६० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायमल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७–१०६

२. श्रीपालचरित्र परिमल्ल " १०७–२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति मे है । अकबर के शासन काल मे रचना की गई थी ।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास) × " २८३–२९८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र स० ७३ । आ० ९×६¾ इ० । भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १८३९ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एव पाठो का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण निम्न है —

कपडा की रौस जाणै हैवर की हौस जाणै ।
न्याय भी नवेरि जाणै राज रौस माणिवौ ।।
राग तौ छत्तीस जाणै लषिण वत्तीस जाणै ।
रूप चतुराई जाणै महल मे माणिवौ ।।
बात जाणै सवाद जाणै खूबी खसवोई जाणै ।
सगपग साधि जाणै अर्थ को जाणिवौ ।
कहत बणारसीदास एक जिन नाव विना ।
.. .. बूडौ सव जाणिवौ ।।

६०७८. गुटका स० ३३। पत्र सं० १२४। आ० ५×४ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल सं० १७२१ बैसाख सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० १५४५।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०७९. गुटका सं० ३५। पत्र सं० ११८। आ० ६×९ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४६।

विशेष—मुख्यतः नाटक समयसार की प्रति है।

६०८०. गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। आ० ५×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४७।

६०८१. गुटका सं० ३७। पत्र सं० १७। आ० ६×४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४६।

विशेष–नित्यपूजा पाठ संग्रह है।

६०८२. गुटका सं० ३८। पत्र सं० १४। आ० ५×४ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल १८४२ पूर्ण। वे० सं० १५४८।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१ पदसंग्रह	मनराम एवं भूधरदास	हिन्दी	
२ स्तुति	हरीसिंह	"	
३ पार्श्वनाथ की गुणमाला	लोहट	"	
४ पद– (दर्शन दीज्योजी नेमकुमार	मिलीराम	"	
५ आरती	सुभचन्द	"	

विशेष—अन्तिम–आरती करता आरति भाजै सुभचन्द नाम मगन में साजै ॥८।

६ पद– (मै तो थारी आज महिमा जानी)	मेला	"	
७ भारताष्टक	बनारसीदास	"	ले० काल १८१

विशेष—जयपुर में कालीदास के मकान में लालाराम ने प्रतिलिपि की थी।

८ पद– मोह नींद में छकि रहे हो लाल	हरीसिंह	हिन्दी	
९ " उठि तेरो मुख देखूं नाभि जू के नंदा	टोडर	"	
१० चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	"	
११ विनती	मनैराम	"	

६०८४ गुटका स० ३६ । पत्र स० २-१५६ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५५० । मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है.—

१. आरती सग्रह	द्यानतराय	हिन्दी	(५ आरतिया है)
२. आरती–किह विधि आरती करौ प्रभु तेरी	मानसिंह	"	
३. आरती–इहविधि आरती करो प्रभु तेरी	दीपचन्द	"	
४. आरती–करो आरती आतम देवा	विहारीदास	"	
५. पद संग्रह	द्यानतराय	"	३
६. पद– संसार अथिर भाई	मानसिंह	"	१७
७. पूजाष्टक	विनोदीलाल	"	४०
८. पद–संग्रह	भूधरदास	"	५३
९. पद–जाग पियारी अब क्या सोवै	कवीर	"	६७
१०. पद–क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुन्दर	"	७७
११ सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	"	७७
१२. आरती सिद्धो की	खुशालचन्द	"	८०
१३. गुरुअष्टक	द्यानतराय	"	८१
१४ साधु की आरती	हेमराज	"	८३
१५ वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	"	८५
१६ पार्श्वनाथाष्टक	मुनि सकलकीत्ति	"	"

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्घ उतारो सकलकीत्तिमुनि काज मुदा ॥ " "

१७ नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	हिन्दी	
१८ पूजासग्रह	लालचन्द	"	११७
१९. पद–उठ तेरो मुख देखू नाभिजी के नदा	टोडर	"	१३८
२०. पद–देखो माई आज रिषम घरि आवै	साहकीरत	"	१४५
२१ पद–सग्रह	शोभाचन्द शुभचन्द आनद	"	"
२२ न्हवरण मंगल	वसी	"	१४६
२३. क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	"	१४७
		"	१४९

२४ महबरण भारती मिरुदास हिन्दी १५

अन्तिम— केसवनवन करहिसु सेव, भिरुदास भणै जिण चरण सेव ॥

२५. भारती सरस्वती ब्र जिनदास " १५१

६०८४ गुटका स० ४० । पत्र स ७-६८ । आ ८×६ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल सं १८८४ । अपूर्ण । वै सं १५५१ ।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है।

६०८५ गुटका स० ४१ । पत्र स २२१ । आ ८×४½ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले काल सं १७४२ । अपूर्ण । वै सं १५५२ ।

पूजा एव स्तोत्र संग्रह है । तथा समयसार नाटक भी है ।

६०८६ गुटका स० ४२ । पत्र स १३६ । आ ५×४½ इ । ले काल १७२१ चैत सुदी १ । अपूर्ण । वै सं १५५१ ।

विशेष—मुख्य २ पाठ निम्न है—

१ चतुर्विंशति स्तुति	×	प्राकृत	१
२ सम्यिविधान चौपई	भीषम कवि	हिन्दी	१

र काल सं १६१७ फागुण सुदी १३ । ले काल सं १७१२ वैसाख सुदी ३ ।

विशेष—संवत सोलसी सतरौ फागुण मास जबै ऊतरौ ।

उजलपाखि तेरस तिथि जाणि ताविन कथा चढी परवाणि ॥१६६॥

बरतै निवासी मांहि विख्यात जैनि धर्म तमु गोवा जाति ।

यह कथा भीषम कवि कही जिनपुराण मांहि जैसी सही ॥१६७॥

× × × × ×

बडा बन्ध चौपई जाणि पूरा हुआ दोहसै प्रमाणि ।

जिनवाणी का अन्त न जास मनि जीव कै सहै सुखवास ॥

इति श्री सम्पि विधान चौपई सपूर्ण । लिखितं चोखा लिखापित साह श्री भोगीदास पठनार्थं । सं १७१२ वैसाख सुदि ३ बृहस्पतवार ।

३ जिनकुशल की स्तुति	साधुकीर्ति	हिन्दी
४ नेमिजी की लहरि	विश्वभूषण	"

५ नेमीश्वर राजुल की लहुरि (बारहमासा) खेतसिंह साह   हिन्दी

६ ज्ञानपञ्चमीवृहद् स्तवन   समयसुन्दर   "

७ आदीश्वरगीत   रंगविजय   "

८. कुशलगुरुस्तवन   जिनरंगसूरि   "

९ "   समयसुन्दर   "

१० चौबीसीस्तवन   जयसागर   "

११. जिनस्तवन   कनककीर्ति   "

१२. भोगीदास की जन्म कुण्डली   ×   "   जन्म स० १६६७

६०८७. गुटका स० ४३। पत्र स० २१। आ० ५½×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल स० १७३० अपूर्ण। वे० सं० १५५४।

विशेष—तत्वार्थसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है। मलारना मे प्रतिलिपि हुई थी।

६०८८. गुटका स० ४४। पत्र स० ४-७६। आ० ७×४¾ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल×। अपूर्ण वे० सं० १५५५।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१ श्वेताम्बर मत के ८४ बोल   जगरूप   हिन्दी   र० काल सं० १८११ ले० काल स० १८९९ आसोज सुदी ३।

२. व्रतविधानरासो   दौलतराम पाटनी   हिन्दी   र० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०

६०८९ गुटका स० ४५। पत्र स० ५-१०३। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८६६। अपूर्ण। वे० स० १५५६।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१ सुदामा की बारहखडी   ×   हिन्दी   ३२-३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं।

२. जन्मकुण्डली महाराजा सवाई जगतसिंहजी की   ×   संस्कृत   १०३

विशेष—जन्म सं० १८४२ चैत बुदी ११ रवौ ७।३० धनेष्टा ५७।२४ सिध योग जन्म नाम सदासुख।

६०९० गुटका स० ४६। पत्र स० ३०। आ० ६½×५¾ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल × पूर्ण। वे० स० १५५७।

विशेष—हिन्दी पद सग्रह है।

६०११ गुटका सं० ४७। पत्र सं ११। आ १×४२ इ । भाषा संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५५८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६०१२ गुटका सं० ४८। पत्र सं ६। आ १×१३ इ । भाषा—संस्कृत। विषय-व्याकरण। ले० काल ×। अपूर्ण। वे सं १५५९।

विशेष—अनुभूतिस्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है।

६०१३ गुटका सं० ४९। पत्र सं ११। आ १×५ इ । भाषा—हिन्दी। ले काल सं १८६८ सावन बुदी १२। पूर्ण। वे सं १५६२।

विशेष—देवाब्रह्म कृत विनती संग्रह तथा लोहट कृत अठारह नाते का चौढालिया है।

६०१४ गुटका सं० ५०। पत्र सं ७४। आ १×४ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५६४।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०१५. गुटका सं० ५१। पत्र सं १७। आ ५,×४ इ । भाषा—हिन्दी। ले काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५६१।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ है।

१ कवित्त	कन्हैयालाल	हिन्दी	१ ५-१ ७

विशेष—१ कवित्त है।

२ रागमाला के दोहे	जैतश्री	"	११९-११८
३ बारहमासा	जसराज	" १२ दोहे हैं	११८-१२१

६०१६ गुटका सं० ५२। पत्र सं १७८। आ ११×६ इ । भाषा—हिन्दी। ले काल × ८पूर्ण। वे सं १५६६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०१७ गुटका सं० ५३। पत्र सं १ ४। आ ६,×५ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले काल सं १७८३ माह बुदी ४। पूर्ण। वे सं १५६७।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ मट्टारकरासो	विनयकीर्ति	हिन्दी	१५८

२ रोहिणी विधिकथा	बंसीदास	हिन्दी	१५६-६०

र० काल सं० १६९५ ज्येष्ठ सुदी २।

विशेष— सोरह से पच्यानऊ ठई, ज्येष्ठ कृष्ण दुतिया भई
फातिहाबाद नगर सुखमात, अग्रवाल शिव जातिप्रधान ।।
मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्त्ति गोयम सममान ।
ता शिष वशीदास सुजान, मानै जिनवर की आन ।।८६।।
अक्षर पद तुक तनै जु हीन, पढौ बनाइ सदा परवीन ।।
क्षमौ शारदा पडितराइ पढत सुनत उपजै धर्मी सुभाइ ।।८७।।

इति रोहिणीविधि कथा समाप्त ।।

१, सोलहकारणरासो	सकलकीर्त्ति	हिन्दी	१७२
२. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी	ब्रह्मसेन	सस्कृत	१७५-१८६
५. विनती चौपड की	मान	हिन्दी	२४३-२४४
६. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	"	२५१

६०९८ गुटका सं० ५४। पत्र स० २२-३०। आ० ६३/४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५६८।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है।

६०९९. गुटका सं० ५५। पत्र स० १०५। आ० ६×५३/४ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८८४। अपूर्ण। वे० सं० १५६९।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१ अश्वलक्षण	पं० नकुल	सस्कृत	अपूर्ण	१०-२६

विशेष—श्लोको के नीचे हिन्दी अर्थ भी है। अध्याय के अन्त मे पृष्ठ १२ पर—

इति श्री महाराजि नकुल पडित विरचिते अश्व सुभ विरचित प्रथमोध्याय ।।

२. फुटकर दोहे	कबीर	हिन्दी

६१००. गुटका सं० ५६। पत्र सं० १४। आ० ७३/४×५३/४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५७०।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नही है।

६१०१ गुटका सं० ५७। पत्र सं० ७५। आ० ९×४½ इ०। भाषा–संस्कृत। ले० काल सं० १८४७ चैत सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १५७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१ वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७१२ दोहे हैं।
२ प्रस्तावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	"	
३ कवित्त चुगलखोर का	शिवलाल	"	

६१०२ गुटका सं० ५८। पत्र सं० ८२। आ० ५×५½ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३ गुटका सं० ५६। पत्र सं० ११६। आ० ७×४½ इ०। भाषा–हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४ गुटका सं० ६०। पत्र सं० १८। आ० ७×५½ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	संस्कृत	
२. आराधना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	५५ पद्य हैं

६१०५ गुटका सं० ६१। पत्र सं० १७। आ० ९×४ इ०। भाषा–संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८१४ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ बारहखड़ी	×	हिन्दी	११
२ विनती—पास जिनेसर वदिये रे साहिब सुरति तणू दातार रे	कुशलविजय	"	४
३ पद–किये आरापना तेरी हिये आनन्द अपारा है	नवलराम	"	"
४ पद–देखी देख्यो रित जाय दै मैम कुमार	टीकाराम	"	"

५. पद–नेमकवार री वाटडी हो राणी

राजुल जोवै खडी हो खडी

६. पद–पल नही लगदी माय मैं पल नहि लगदी

पीया मो मन भावै नेम।

७. पद–जिनजी को दरसण नित करां हो

सुमति सहेल्यो

८. पद–तुम नेम का भजन कर जिससे तेरा भला

९. विनती

१०. हमीररासो

११. पद–भोग दुखदाई तजभवि

१२. पद

१३ ,, (मङ्गल प्रभाती)

१४ रेखाचित्र आदिनाथ,

१५ वसंतपूजा

विशेष—अन्तिम पद्य

भावैरि स०८

मजैराज करि

६१०६ गुटका सं० ६२।

र्ण। वे० स० १५७६।

विशेष—सामान्य पाठों का सग्रह है।

६१०७ गुटका सं० ६३। पत्र स० १

० स० १५८१।

विशेष—देवाब्रह्म कृत पद एवं भूधरदास

६१०८ गुटका सं० ६४। पत्र स० ४०

पूर्ण। वे० सं० १५८०।

६१०१ गुटका सं० ५७। पत्र सं ७५। आ १×४३ इ०। भाषा—संस्कृत। ले काल सं १८४७ जेठ सुदी ५। पूर्ण। वे सं १५७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१ वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७१२ दोहे हैं।
२ प्रस्तावलि कवित्त	वैद्य नंदराम	"	
३ कवित्त चुगलखोर का	खिगलाल	"	

६१०२ गुटका सं० ५८। पत्र सं ८२। आ० ५×५३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३ गुटका सं० ५६। पत्र सं ११६। आ ७×४३ इ। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले काल × अपूर्ण। वे सं १५७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४ गुटका सं० ६०। पत्र सं १८। आ ७×५३ इ। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	संस्कृत	
२. आराधना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	५५ पद्य हैं

६१०५ गुटका सं० ६१। पत्र सं १७। आ० ६×४ इ। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले काल सं १८१४ भादवा सुदी ६। पूर्ण। सं १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ बारहखड़ी	×	हिन्दी	१६
२ विनती—पार्श्व जिनेश्वर वंदिये रे साहिब मुकति तणू दातार रे	कुशलविजय	"	४
३ पद—किये आरापना तेरी हिये मानन्द ध्यावत है	नवलराम	"	"
४ पद—हेली देहली रित जाय छै मन क बार	टीकाराम	"	"

५. पद-नेमकवार री वाटडी हो राणी राजुल जोवै खडी हो खडी	खुशालचंद	हिन्दी	४१
६. पद-पल नही लगदी माय मैं पल नहिं लगदी पीया मो मन भावै नेम पिया	वखतराम	,,	४३
७. पद-जिनजी को दरसण नित करा हो सुमति सहेल्यो	रूपचन्द	,,	--
८. पद-तुम नेम का भजन कर जिससे तेरा भला हो	वखतराम		
९. विनती			

६१०१ गुन्का स० ५७। पत्र सं ७१। मा० ६×४½ इ । भाषा-संस्कृत। ले काल सं १५४७ जेठ सुदी ५। पूर्ण। वे सं १५७१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१ वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७१२ दोहे हैं।
२ प्रतापकवि कवित्त	बैन मंडसाल	"	
३ कवित्त चुगलखोर का	जिनसाल	"	

६१०२ गुटका सं० ५८। पत्र स ५२। मा ५×५½ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे० सं १५७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३ गुटका सं० ५६। पत्र स १६६। मा ७×४½ इ । भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल × अपूर्ण। वे सं १५७३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४ गुटका स० ६०। पत्र स १८। मा ७×५½ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। वे स १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

१ लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	संस्कृत	
२. आराधना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	५५ पद्य हैं

६१०५ गुटका सं० ६१। पत्र सं ६७। मा ६×४ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल सं १८१४ भादवा सुदी ६। पूर्ण। सं १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

१ बारहखडी	×	हिन्दी	११
२ विनती-पार्श्व जिनेश्वर वदिये रे साहिब मुकति तणू दातार रे	कुशलविजय	"	४
३ पद-जिये आराधना तेरी हिये आनन्द भ्यारत है	नवलराम	"	"
४ पद-ऐसी बेहली रित जाय सी नेम कवार	दौलाराम	"	"

६१०१ गुटका स० ५७। पत्र सं० ७५। मा १×४ ३/४ इ । भाषा—संस्कृत। ले
पेठ सुदी ५। पूर्ण। वे सं १५७१।

विशेष—निम्न पाठ है—

१ वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७
२ प्रस्तावति कवित्त	वैद्य नंदलाल	"	
३ कवित्त कुमखोर का	सिवलाल	"	

६१०२ गुटका सं० ५८। पत्र सं ८२। मा ५×५ ३/४ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी।
पूर्ण। वे सं १५७२।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०३ गुटका सं० ५६। पत्र स ११६। मा ७×४ ३/४ इ । भाषा—हिन्दी संस्कृत।
अपूर्ण। वे सं १५०३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६१०४ गुटका स० ६०। पत्र स १८ । मा ७×५ ३/४ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी। स
अपूर्ण। वे स १५७४।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

१ लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	संस्कृत	
२. आराधना प्रतिबोधसार	×	हिन्दी	५५ पद्य है

६१०५ गुटका सं० ६१। पत्र सं १७। मा० ६×४ इ । भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले काल सं
१८१४ मासवा सुदी ६। पूर्ण। सं १५७५।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

१ बारहखडी	×	हिन्दी	३६
२ विनती—पार्श्व जिनेश्वर वदिये रे साहिब मुरति लागू बालार रे	कुमतविजय	"	४
३ पद—जिये आराधना तेरी हिये भागन्द स्यारत है	नवलराम	"	"
४ पद—हेमी देहनी रिव जाय ही मैम क बार	टीमाराम	"	"

६११८ गुटका स० ७४ । पत्र स० ६ । आ० ६¾×५¾ इ० । भापा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९६ ।

विशेप—मनोहर एव पूनो कवि के पद हैं ।

६११९. गुटका स० ७५ । पत्र स० १० । आ० ६×५½ इ० भापा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९८ ।

विशेष—पाशाकेवली भापा एव वाईस परीपह वर्णन है ।

६१२० गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २९ । आ० ६×४ इ० । भापा–सस्कृत । विपय- सिद्धान्त । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९९ ।

विशेप—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१ गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ९–४२ । आ० ६×४½ इ० । भापा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है ।

६१२२ गुटका सं० ७८ । पत्र स० ७-२१ । आ० ६×४½ इ० । भापा–संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०१ ।

विशेप—उमास्वामि कृत तत्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका स० ७९ । पत्र स० ३० । आ० ७×५ इ० । भापा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४ गुटका स० ८० । पत्र स० ३४ । आ० ४×३½ इ० । भापा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०५ ।

विशेष—देवाब्रह्म, भूधरदास, जगराम एव बुधजन के पदो का संग्रह है ।

६१२५ गुटका स० ८१ । पत्र स० २-२० । आ० ४×३ इ० । भापा–हिन्दी । विपय–विनती सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०६ ।

६१२६. गुटका स० ८२ । पत्र स० २८ । आ० ४×३ इ० । भापा–सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७ गुटका स० ८३ । पत्र न० २-२० । आ० ६¼×५½ इ० । भापा–सस्कृत हिन्दी । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० १६०९ ।

विशेप—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदो का संग्रह है ।

६१०६ गुटका स० ६५। पत्र स १७३। मा ६३⁄४×४३⁄४ इ । भाषा-हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५८१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है।

६११० गुटका सं० ६६। पत्र सं० १२। मा ६१⁄४×४३⁄४ इ । भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १५८२।

विशेष—पंचमेरु पूजा महाह्निका पूजा तथा सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजाएं हैं।

६१११ गुटका स० ६७। पत्र स १८५। मा ८३⁄४×७ इ । भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले काल सं १७४३। पूर्ण। वे सं १५८६।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६११२ गुटका स० ६८। पत्र सं ११५। मा ६×५ इ । भाषा हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५८८।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है।

६११३ गुटका स० ६६। पत्र सं १५१। मा ४३⁄४×४ इ । भाषा-सस्कृत। ले काल ×। अपूर्ण वे सं १५८८।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

६११४ गुटका स० ७०। पत्र स १०-५ । मा ७१⁄४×५ इ । भाषा-संस्कृत। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५८६।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है।

६११५. गुटका सं० ७१। पत्र सं १८। मा ५×५३⁄४ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल ×। पूर्ण। वे सं १५६ ।

विशेष—चौबीस ठाणा चर्चा है।

६११६ गुटका सं० ७२। पत्र सं १७। मा ४३⁄४×१२ इ । भाषा हिन्दी सस्कृत। ले काल × पूर्ण। वे सं १५६१।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह एव भीतराग स्तुति आदि है।

६११७ गुटका सं० ७३। पत्र सं १-५ । मा ६३⁄४×५ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल । अपूर्ण। वे सं १५६५।

६११८ गुटका स० ७४ । पत्र स० ६ । आ० ६३/४×५१/२ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९६ ।

विशेष—मनोहर एव पूनो कवि के पद है ।

६११९. गुटका सं० ७५ । पत्र स० १० । आ० ६×५१/२ इ० भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९८ ।

विशेष—पाशाकेवली भाषा एव बाईस परीषह वर्णन है ।

६१२० गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २९ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय सिद्धान्त । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५९९ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ९—४२ । आ० ६×४१/२ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है ।

६१२२ गुटका सं० ७८ । पत्र स० ७-२१ । आ० ६×४१/२ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका स० ७९ । पत्र स० ३० । आ० ७×५ इ० । भाषा—सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४ गुटका स० ८० । पत्र स० ३४ । आ० ४×३१/२ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०५ ।

विशेष—देवाब्रह्म, भूधरदास, जगराम एव बुधजन के पदो का सग्रह है ।

६१२५. गुटका स० ८१ । पत्र स० २-२० । आ० ४×३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—विनती सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०६ ।

६१२६. गुटका स० ८२ । पत्र स० २८ । आ० ४×३ इ० । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७ गुटका स० ८३ । पत्र स० २-२० । आ० ६१/४×५१/२ इ० । भाषा—सस्कृत हिन्दी । ले० काल × अपूर्ण । वे० स० १६०९ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदो का सग्रह है ।

६१२८ गुटका स० ८५ । पत्र स १५ । मा ८¾×६ इ । भाषा हिन्दी । र काल × । अपूर्ण । वे स १६११ ।

विशेष— देवाब्रह्म कृत पदों का संग्रह है ।

६१२६. गुटका स० ८६ । पत्र सं ४ । मा ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले काल १७२१ । पूर्ण । वे सं १६५६ ।

विशेष—उदयराम एवं बखतराम के पद तथा मेत्रीराम कृत कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा है ।

६१३० गुटका स० ८७ । पत्र स ७ –१२८ । मा ६×५½ इ । भाषा हिन्दी । ले काल १२६४ अपूर्ण । वे स १६५७ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६१३१ गुटका स० ८८ । पत्र स २८ । मा ६½×५½ इ । भाषा-संस्कृत । ले काल × । अपूर्ण वे सं १६५८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है

६१३२ गुटका सं० ८६ । पत्र सं १६ । मा ७×४ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे स १६५६ ।

विशेष—भगवानदास कृत आचार्य शान्तिसागर की पूजा है ।

६१३३ गुटका स० ६० । पत्र सं २६ । मा ६½×७ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल १६१८ । पूर्ण । वे सं १६६ ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाओं का संग्रह है ।

६१३४ गुटका सं० ६१ । पत्र सं ७२ । मा ६½×६ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल स १६१४ पूर्ण । वे सं १६६१ ।

विशेष—प्रारम्भ के ११ पत्रों पर १ से ५ तक पहाडे हैं जिनके ऊपर नीति तथा शृङ्गार रस के ४७ दोहे हैं । गिरधर के कवित्त तथा शनिश्चर देव की कथा आदि हैं ।

६१३५ गुटका स० ६२ । पत्र स २ । मा ५×४ इ । भाषा-हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १६६२ ।

विशेष—कौतुक रत्नमञ्जूषा (मंत्र तंत्र) तथा ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

६१३६ गुटका स० ६३ । पत्र सं १७ । मा ५×४ इ । भाषा-संस्कृत । ले काल × । पूर्ण । वे सं १६६३ ।

विशेष—सघीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था। स्तोत्रों का संग्रह है।

६१३७. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ८-४१। आ० ६×५ इ०। भाषा-गुजराती। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६६४।

विशेष—वल्लभकृत रुक्मणि विवाह वर्णन है।

६१३८ गुटका स० ६५। पत्र स० ४२। आ० ४×३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६६७।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पद (चारु रथ की बजत बधाई जी सब जनमन आनन्द दाई) है। चारो रथो का मेला स० १६१७ फागुण बुदी १२ को जयपुर हुआ था।

६१३९. गुटका स० ६६। पत्र सं० ७६। आ० ८×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६६८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१४०. गुटका सं० ६७। पत्र स० ६०। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६६९।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र संग्रह है।

६१४१ गुटका स० ६८। पत्र स० ५८। आ० ७×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६७०।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैये, लक्षण तथा नीतिग्रन्थ एवं शनिश्चरदेव की कथा है।

६१४२. गुटका सं० ६९। पत्र स० २-१२। आ० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६७१।

विशेष—मन्त्र यन्त्रविधि, आयुर्वेदिक नुसखे, खण्डेलवालो के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनो की ७२ जातिया जिसमे से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति आदि है। गुमानीराम की पुस्तक से चाकसू मे सं० १७२७ मे लिखा गया।

६१४३ गुटका स० १००। पत्र स० ५४। आ० ६×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १६७२।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। ५४ से आगे पत्र खाली हैं।

६१४४ गुटका स० १०१। पत्र सं० ८-२५। आ० ६×४½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८५२। अपूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं।

६१४५ गुटका सं० १०२ । पत्र सं० ३१ । आ ७×७ इ । भाषा–हिन्दी संस्कृत । र काल । अपूर्ण । वे स १५७४ ।

विशेष—बारहखडी (सूरत) मरक दोहा (भूधर) तत्वार्थसूत्र (उमास्वामि) तथा फुटकर सवैया हैं ।

६१४६ गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १६ । आ ५×४ इ । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे सं १५७५ ।

विशेष—विषापहार, निर्वाणकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एवं परीषह वर्णन है ।

६१४७ गुटका सं० १०४ । पत्र सं० १८ । आ ६×५ इ । भाषा हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे स १५७६ ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीगुण बारहभावना, बाईस परिषह, सोलहकारण भावना आदि हैं ।

६१४८ गुटका सं० १०५ । पत्र सं ११ ४० । आ ६×५ इ । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे सं १५७७ ।

विशेष—स्वरोदय के पाठ है ।

६१४९ गुटका सं० १०६ । पत्र सं ३६ । आ ७×५ इ । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे सं १५७८ ।

विशेष—बारह भावना पञ्चमंगल तथा समवसरण पूजा हैं ।

६१५० गुटका सं० १०७ । पत्र स ८ । आ ७×५ । भाषा-हिन्दी । ले काल × । पूर्ण । वे सं १५७९ ।

विशेष—सम्मेदशिखरमहात्म्य निर्वाणकांड (सेवग) फुटकर पद एवं नेमिनाथ के दस भव हैं ।

६१५१ गुटका सं० १०८ । पत्र सं २४ आ ७×५ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे स १५८ ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत कलियुग की वीनती है ।

६१५२ गुटका सं० १०९ । पत्र सं ६६ । आ ५×६½ इ भाषा–हिन्दी । विषय–संग्रह । ले काल × । अपूर्ण । वे स १५८१ ।

विशेष—१ से ४ तथा १४ से ५२ पत्र नहीं हैं । निम्न पाठ हैं —

१ हरजी के दोहा × हिन्दी ।

विशेष—७६ से २१४ ४४० से ५५१ दोहे तक हैं आगे नहीं है ।

हरजी रसना सी नहीं, ऐसो रस न और ।
तिसना तु पीवत नहीं फिर पीहे किहि ठौर ॥ १६३ ॥

हरजी हरजी जो कहै रसना वारवार।

पिस तजि मन हू क्यो न ह्वै जमन नाहि तिहि वार ॥ १६४ ॥

२ पुरुष—स्त्री सवाद रामचन्द हिन्दी १२ पद्य है।

३. फुटकर कवित्त (शृ गार रस) × " ४ कवित्त है।

४ दिल्ली राज्य का व्यौरा × "

विशेष—चौहान राज्य तक वर्णन दिया है।

५ आधाशीशी के मत्र व यन्त्र हैं।

६१५३. गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६८२ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड, भक्तामरस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, एकीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं।

६१५४. गुटका स० १११ । पत्र स० ३८ । आ० ६×४ । भाषा हिन्दी । विषय—सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड-सेवग पद संग्रह-भूधरदास, जोधा, मनोहर, सेवग, पद—महेन्द्रकीर्ति (ऐसा देव जिनद है सेवो भवि प्रानी) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन आदि पाठ हैं।

६१५५ गुटका स० ११२ । पत्र स० ६१ । आ० ५×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६८४ ।

विशेष-जैनेतर स्तोत्रो का सग्रह है। गुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुआ है।

६१५६ गुटका स० ११३ । पत्र स० १३६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । ले० काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० स० १६८५ ।

विशेष—२० का १०००० का, १५ का २० का यत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तामरस्तोत्र, पद सग्रह तथा राजस्थानी मे शृ गार के दोहे हैं।

६१५७ गुटका स० ११४ । पत्र स० १२३ । आ०-७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—अश्व-परीक्षा । ले० काल × । १८०४ असाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह गिलवाडी वालो की है खुशालचन्द ने पाश्टा मे प्रतिलिपि की थी। गुटका सजिल्द है।

६१५८ गुटका सं० ११५। पत्र सं० १२। आ० ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११५।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६१५९. गुटका सं० ११६। पत्र सं० ७७। आ० ८×६ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७०२।

विशेष—गुटका सचित्र है। खण्डेलवालों के ८४ गोत्र विभिन्न कवियों के पद तथा दीवाण अमयचन्दजी के पुत्र आनन्दीलाल की सं० १९११ की जन्म पत्री तथा आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६१६० गुटका सं० ११७। पत्र सं० ११। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७०१।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है।

६१६१ गुटका सं० ११८। पत्र सं० ७६। आ० ८×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७०५।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है।

६१६२ गुटका सं० ११९। पत्र सं० २४०। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८४१ अपूर्ण। वे० सं० १७११।

विशेष—भागवत गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपाख्यान हिन्दी पद्य में है दोनों ही अपूर्ण है।

६१६३ गुटका सं० १२०। पत्र सं० १२-१२८। आ० ४×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१२।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१ नवपदपूजा	देवचन्द	हिन्दी	अपूर्ण	१२-४१
२ सप्तप्रकारीपूजा	"	"		४४-५०

विशेष—पूजा का क्रम श्वेताम्बर मान्यतानुसार निम्न प्रकार है—जल चन्दन पुष्प धूप दीप अक्षत नैवेद्य फल इनकी प्रत्येक की अलग अलग पूजा है।

३ सत्तरभेदी पूजा	साधुकीर्ति	"	र० सं० १६७८ ५-६१
४ पदसंग्रह	×	"	

६१६४ गुटका सं० १२१। पत्र सं० ६-१२२। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१३।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. गुरुजयमाला	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	१३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीर्ति	संस्कृत	३८
३ सरस्वतीस्तुति	आशाधर	"	५२
४ देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	६८
५. गणधरवलय पूजा	"	"	१०७–११२
६. आरती पचपरमेष्ठी	प० चिमना	हिन्दी	११४

अन्त मे लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारको का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलात्कार गण मूल संघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट मे भट्टारक शातिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

६१६५. गुटका सं० १२२ । पत्र स० २८–१२६। आ० ५३/४×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका स० १२३। पत्र सं० ६–४६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियो ने हिन्दी पदो का सग्रह है।

६१६७। गुटका स० १२४। पत्र स० २५–७०। आ० ४×५१/२ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१६।

विशेष—विनती संग्रह है।

६१६८ गुटका स० १२५। पत्र स० २–४५। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१७।

विशेष—स्तोत्र सग्रह है।

६१६९. गुटका स० १२६। पत्र स० ३६–१८२। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७१८।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७। पत्र स० ३६–२४६। आ० ८×४१/२ इ०। भाषा—गुजराती। लिपि—हिन्दी। विषय-कथा। र० काल सं० १७८३। ले० काल स० १९०५। अपूर्ण। वे० स० १७१९।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र हैं।

६१७१ गुटका सं० १२८ । पत्र सं० ११-१२ । आ० ५×४ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×। अपूर्ण । वे० सं० १७२ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१७२. गुटका सं० १२६ । पत्र सं० १२ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० १७२१ ।

विशेष—भक्तामर भाषा एवं चौबीसी स्तवन आदि है ।

६१७३ गुटका सं० १३० । पत्र सं० ५-११ । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी पद्य । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२२ ।

रसकौतुकराजसभारंजन ४२ से १ तक पद्य है ।

प्रारम्भ— कता प्रेम समुद्र है ग्राहक चतुर सुजान ।

राजसभा रंजन यहे, मन हित प्रीति निधान ॥१॥

इति श्री रसकौतुकराजसभारंजन समस्या प्रबन्ध प्रथम भाग संपूर्ण ।

६१७४ गुटका सं० १३१ । पत्र सं० १-४१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८६१ अपूर्ण । वे० सं० १७२३ ।

विशेष—भवानी सहस्रनाम एवं कवच है ।

६१७५ गुटका सं० १३२ । पत्र सं० १-११० । आ० १ ×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८० । अपूर्ण । वे० सं० १७२४ ।

विशेष—हनुमन्त कथा (ब्र० रायमल्ल) पद्यकरण मंत्र विनती बधावलि (भगवान महावीर से लेकर सं० १८२२ सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक तक) आदि पाठ है ।

६१७६ गुटका सं० १३३ । पत्र सं० २२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२५ ।

विशेष—समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनों के ही अपूर्ण पाठ है ।

६१७७ गुटका सं० १३४ । पत्र सं० ११ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७२६ ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

६१७८ गुटका सं० १३५ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१८ । अपूर्ण । वे० सं० १७२८ ।

१ पद– राखो हो वृजराज लाज मेरी	सूरदास	हिन्दी
२. „ म्हिडो विसरि गई लोह कोउ काह्लन	मलूकदास	„
३ पद–राजा एक पडित पोली तुहारी	सूरदास	हिन्दी
४ पद–मेरो मुखनीको भक तेरो मुख थारी ०	चंद	„
५ पद-अब मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी०	कबीर	„
६ पद-बादि गये दिन साहिब विना सतगुरु चरण सनेह विना	„	„
७ पद–जा दिन मन पछी उडि जौ है	„	„

फुटकर मत्र, औषधियो के नुसखे आदि हैं।

६१७६. गुटका सं० १३६। पत्र स० ५-१६। आ० ७×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले० काल १७८४। अपूर्ण। वे० स० १७५५।

विशेष—वख्तराम, देवाब्रह्म, चैनसुख आदि के पदो का सग्रह है। १० पत्र से आगे खाली हैं।

६१८०. गुटका स० १२७। पत्र स० ८८। आ० ६३×५ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० १७५६।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ एव दिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिह, हरषचन्द, लालचन्द, गरीबदास, भूधर एव किसनगुलाब के पदो का संग्रह है।

६१८१. गुटका स० १३८। पत्र स० १२१। आ० ६३×५३ इ०। वे० स० २०४३।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	हिन्दी सस्कृत
२ नेमिनाथ पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत
३ क्षीरोदानी पूजा	अभयचन्द	„
४ हेमभारी	विश्वभूषण	हिन्दी
५ क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	„
६. शिखर विलास भाषा	धनराज	„

६१८२ गुटका स० १३९। पत्र सं० ३-४६। आ० १०३×७ इ०। भाषा–हिन्दी प०। र० काल सं० १८४८। ले० काल स० १६५५। अपूर्ण वे० स० २०४०।

विशेष—जानकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालकार भी है। भैरूंलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

६१८३ गुटका स० १४० । पत्र सं ४–४१ । आ १ ३×७ इ । भाषा–संस्कृत । ले० काल स १६ १ ह्वि भादवा सुदी २ । अपूर्ण । वे सं २०४५ ।

विशेष—अमृतचन्द सूरि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४ गुटका स० १४१ । पत्र सं १–१ ९ । आ १ ३×६३ इ । भाषा–हिन्दी । ले काल सं १८५१ असाढ सुदी ९ । अपूर्ण । वे स २ ४६ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोत्सव (र सं० १६४६) तथा बनारसीविलास आदि के पाठ हैं ।

६१८५ गुटका स० १४२ । पत्र स ८–६१ । भाषा–हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे स २ ४७ ।

विशेष—द्यानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६१८६ गुटका स० १४३ । पत्र सं १६–१०१ । आ ७३×६३ इ । भाषा–संस्कृत । ले काल स १६१६ । अपूर्ण । वे स २०४८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

संवत् १६१६ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीमाविलासपर्वस्थानेयेषु स्वामी सुमतस्वामी म श्रीसकलकीर्ति भ भुवनकीर्ति म ज्ञानभूषण भ विजयकीर्ति भ शुभचन्द्र आ पुरन्देशात् आ श्रीरत्नकीर्ति आ यशःकीर्ति मुणचन्द्र ।

६१८७ गुटका सं० १४४ । पत्र सं ४६ । आ ८×६ इ । भाषा हिन्दी । विषय–कथा । ले काल सं १६२ । पूर्ण । वे सं २ ४६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ मुक्तावलिकथा	भारमल्ल	हिन्दी	र काल सं १७८८
२. रोहिणीव्रतकथा	×	"	
३ पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्ति		
४ दशलक्षणव्रतकथा	ब्र ज्ञानसागर	"	
५. अष्टाह्निकाकथा	विनयकीर्ति	"	
६ लब्धिविधानव्रतकथा	देवेन्द्रभूषण [भ विश्वभूषण के शिष्य]	"	
७ आकाशपञ्चमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	"	र काल सं १७ १
८ निर्दोषसप्तमीकथा	"	"	" " १७०१

९. निशल्याष्टमीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी	
१० सुगन्धीदशमीकथा	हेमराज	"	
११. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पांडे हरिकृष्ण	"	
१२ बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"	

६१८८. गुटका सं० १४५। पत्र सं० २१९। आ० ९×६½ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५०।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. विरुदावली (पट्टावलि)	×	संस्कृत	७
२. सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	"	६१
३. दशलक्षण जयमाल	सुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४. दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	संस्कृत	९०
५. मेरुपूजा	"	"	
६. चौरासी न्यातिमाला	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्हीं की एक चौरासी जातिमाला और है।

७. आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	"	१५०
८. अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९. सप्तऋषिपूजा	भ० देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१७६
१०. ज्येष्ठजिनवरमोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११ ज्येष्ठजिनवर लाहान	ब्र० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२ पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१९१
१३ शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४. व्रतजयमाला	सुमतिसागर	हिन्दी	२१३
१५ आदित्यवारकथा	प० गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	"	२१९

६१८९. गुटका सं० १४६। पत्र सं० ११-८८। आ० ८¾×४¾ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७०१। अपूर्ण। वे० सं० २०५१।

विशेष—बनारसीविलास एवं नाममाला आदि के पाठो का संग्रह है।

६१८३ गुटका स० १४० । पत्र सं ४–४१ । आ १ ३X७ इ । भाषा–संस्कृत । ले० काल स० ११ १ द्वि भादवा बुदी २ । अपूर्ण । वे सं २०४२ ।

विशेष—अमृतचन्द्र सूरि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४ गुटका स० १४१ । पत्र सं १–१०१ । आ १०३X६३ इ० । भाषा–हिन्दी । ले काल सं १७२१ असाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे स २ ४६ ।

विशेष—नयनसुख कृत वैद्यमनोत्सव (र० सं १६४९) तथा बनारसीविलास आदि के पाठ हैं ।

६१८५ गुटका स० १४२ । पत्र स ८–६१ । भाषा–हिन्दी । ले काल X । अपूर्ण । वे स २ ४७ ।

विशेष—धानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६१८६ गुटका स० १४३ । पत्र सं १६–१७१ । आ ७३X६३ इ । भाषा–संस्कृत । ले काल स १६१२ । अपूर्ण । वे स २ ४८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

संवत् १६१२ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीमाविलावचरायामयेनु मामी शुभस्थाने भ श्रीसकलकीर्ति भ भुवनकीर्ति भ ज्ञानभूषण भ विजयकीर्ति भ शुभचन्द्र आ सुरजेदाच् आ श्रीरत्नकीर्ति आ यश कीर्ति पुण्यचन्द्र ।

६१८७ गुटका सं० १४४ । पत्र सं ४६ । आ ८X६ इ । भाषा हिन्दी । विषय–कथा । ले काल सं १६२ । पूर्ण । वे सं २ ४६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ मुक्तावलिकथा	भारमल्ल	हिन्दी	र काल सं १७८८
२. रोहिणीव्रतकथा	X	„	
३ पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्ति		
४ दशलक्षणव्रतकथा	ब्र ज्ञानसागर	„	
५. अष्टाह्निकाकथा	विनयकीर्ति	„	
६ सद्रुटचौदसकथा	देवेन्द्रभूषण [भ विश्वभूषण के शिष्य]	„	
७ आकाशपञ्चमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	„	र काल सं १७ ६
८. निर्दोषसप्तमीकथा	„	„	„ „ १७०१

६१६८. गुटका स० १५४ क। पत्र स० ३२। भाषा–संस्कृत। विषय–पूजा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६६।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१६९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७–१५२। आ० ७३/४×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य मे है।

६२००. गुटका स० १५६। पत्र स० १८–३९। आ० ७३/४×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। आ० ७३/४×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय–आयुर्वेद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२. गुटका सं० १५८। पत्र स० २–३०। आ० ७×५ इ०। भाषा–सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रो एवं स्तोत्रों का सग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र स० ६३। आ० ७१/२×६ इ०। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओ के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर स० १८२४ मे बैठना लिखा है।

२ दिल्ली नगर की वसापत तथा वादशाहत का व्यौरा है किस वादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा घडी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३ वारहमासा, प्राणीडा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया आदि है।

६२०४ गुटका स० १६०। पत्र स० ५६। आ० ६×४१/२ इ०। भाषा–हिन्दी सस्कृत। ले० काल × अपूर्ण। वे० स० २२०५।

विशेष—वनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ है।

६१६० गुटका स० १४७ । पत्र सं ३ -६१ । आ ४×४½ इ । भाषा-संस्कृत । ले काल × । अपूर्ण । वे सं० २१८६ ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

६१६१ गुटका स० १४८ । पत्र सं १५ । आ ८×६ इ । ले काल स १८४१ । पूर्ण । वे स २१८७ ।

१ पञ्चकल्याणक	हरिचन्द	हिन्दी	१-२
		र काल सं १८३१ ज्येष्ठ सुदी ७	
२ वैराग्यक्रियाप्रतोधारम	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	

विशेष—मीमैदा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

३ पट्टावलि	×	हिन्दी	१५

६१६२ गुटका स० १४६ । पत्र स २१ । आ ६×६ इ । भाषा—हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल सं १८२१ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । वे सं २१९१ ।

विशेष—गिरनार यात्रा का वर्णन है । चांदनगांव के महावीर का भी उल्लेख है ।

६१६३ गुटका स० १५० । पत्र सं ६४१ । आ ८×६ इ । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले काल १७१० । पूर्ण । वे स २१९२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं दिल्ली की बादशाहत का ब्योरा है ।

६१६४ गुटका स० १५१ । पत्र सं ६२ । आ ६×६ इ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २१९५ ।

विशेष—मार्गणा चौबीस ठाणा चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र आदि हैं ।

६१६५ गुटका सं १५२ । पत्र सं ४ । आ ७½×५½ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले काल × अपूर्ण । वे सं २१९६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६६ गुटका स० १५३ । पत्र स २७-२२१ । आ ६½×६ इ । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे स २१९७ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६७ गुटका स० १५४ । पत्र सं २७-१४७ । आ ८×७ इ । भाषा—हिन्दी । ले काल × । अपूर्ण । वे सं २१९८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६८ गुटका स० १५४ क। पत्र स० ३२। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१६६।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१६६. गुटका सं० १५५। पत्र स० ५७-१५२। आ० ७३/४×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य मे है।

६२००. गुटका स० १५६। पत्र स० १८-३६। आ० ७३/४×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र स० १०। आ० ७३/४×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२. गुटका स० १५८। पत्र स० २-३०। आ० ७×५ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रो एवं स्तोत्रो का सग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५६। पत्र स० ६३। आ० ७१/२×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वंश के राजाओ की वशावली, १०० राजाओ के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिह का गद्दी पर स० १८२४ में बैठना लिखा है।

२ दिल्ली नगर की वसापत तथा वादशाहत का व्यौरा है किस वादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा घडी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३ वारहमासा, प्राणीडा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया आदि है।

६२०४ गुटका स० १६०। पत्र स० ५६। आ० ६×४१/२ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल × अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—वनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६२०५ गुटका स० १६१। पत्र सं ११। भा० ७×६ इ०। भाषा–प्राकृत हिन्दी। ले० काल ×। मपूर्ण। वे स २२ ६।

विशेष—श्रावक प्रतिक्रमण हिन्दी अर्थ सहित है। हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है।

१ से ५ तक की गिनती के मन्त्र हैं। इसके बीस मंत्र हैं १ से ६ तक की गिनती के ६६ कार्यो का मन्त्र है। इसके १२ पत्र हैं।

६२०६ गुटका सं० १६२। पत्र सं १६–४६। भा० ६३×७३ इ०। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले काल सं १६५५। मपूर्ण। वे सं २२ ८।

विशेष—सेवग अमतराम नवल बलदेव मारणक, धनराज बनारसीदास खुसालचन्द बुधजन न्यामत आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद हैं।

६२०७ गुटका स० १६३। पत्र सं ११। भा ५३×६ इ। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। मपूर्ण। वे सं २२ ७।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ है।

६२०८ गुटका स० १६४। पत्र सं ७७। भा ६३×६ इ। भाषा सस्कृत। ले काल ×। मपूर्ण। वे सं २२ ६।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०६ गुटका स० १६५। पत्र सं ३२। भा ६३×४३ इ। भाषा–हिन्दी। विषय–पद। ले काल ×। मपूर्ण। वे स २२१।

विशेष— नवल जगतराम उदयराम कुशपूरण चैनविजय रेखराम, जोधराज चैनसुख धर्मपाल भगतराम भूधर साहिबराम बिनोदीलाल आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद हैं। पुस्तक मोमतीलालजी ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६ १० गुटका स० १६६। पत्र स २४। भा ६३×४३ इ। भाषा–हिन्दी। ले काल ×। मपूर्ण। वे सं २२११।

१ अठारह नाते का चौढालिया	लोहट	हिन्दी	१–७
२ मुहूर्तमुक्तावलीभाषा	पद्मराज	”	१–२६

६२११ गुटका स० १६७। पत्र स १४। भा ६×४३ इ। भाषा–संस्कृत। विषय–मन्त्रशास्त्र। ले काल ×। मपूर्ण। वे सं २२१२।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध मे जीत का यन्त्र, सीचा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्रभाविकस्तोत्र हैं।

६२१२. गुटका सं० १६८। पत्र स० १२-३६। आ० ७¾×५¾ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१३।

विशेष—वृन्द सतसई है।

६२१३. गुटका स० १६६। पत्र सं० ४०। आ० ८½×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१४।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रो का संग्रह है।

६२१४. गुटका स० १७०। पत्र स० ६६। आ० ८×५½ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-संग्रह। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२१५।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एव रत्नकोश हैं।

६२१५ गुटका स० १७१। पत्र स० ३-८१। आ० ५½×५½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २२१६।

विशेष—जगतराम के पदो का संग्रह है। एक पद हरीसिंह का भी है।

६२१६. गुटका स० १७२। पत्र स० ५१। आ० ५×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१७।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं रति रहस्य है।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७ अष्टोत्तरीस्नात्रविधि ···। पत्र स० १। आ० १०×५½ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि विधान। र० काल ×। ले० का० ×। पूर्ण। वे० स० २६१। अ भण्डार।

६२१८. जन्माष्टमीपूजन ···। पत्र स० ७। आ० ११½×६ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। वे० स० ११५७। अ भण्डार।

६२१६ तुलसीविवाह । पत्र स० ५। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-विधिविधान। र० काल ×। ले० काल स० १८८६। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० २२२२। अ भण्डार।

६२२०. परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण) ···। पत्र सं० २। आ० ६¾×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-नापने तथा तोलने की विधि। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१३७। अ भण्डार।

६२२१ प्रतिष्ठापाठविधि...... । पत्र सं २ । आ ८३×६३ इ । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा विधि । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स० ७७२ । ङ भण्डार ।

६२२२. प्रायश्चित्तचूलिकाटीका—नन्दिगुरु । पत्र सं २५ । आ ८×५ इ । भाषा–संस्कृत । विषय–आचारशास्त्र । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स० ५२८ । ङ भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५२१) और है ।

६२२३ प्रति स० २ । पत्र सं १ ३ । ले काल × । वे सं ६५ । घ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम प्रायश्चित्त विनिश्चयवृत्ति' दिया है ।

६२२४ भक्तिरत्नाकर—वनमाली भट्ट । पत्र सं १६ । आ ११३×५ इ । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वे स २२६१ । अ भण्डार ।

६२२५ भद्रबाहुसंहिता—भद्रबाहु । पत्र सं १७ । आ ११३×४२ इ । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं ५१ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स १६६) और है ।

६२२६ विधि विधान........ । पत्र स ७२–१५३ । आ १२×५१ इ । भाषा–संस्कृत । विषय–पूजा विधान । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स १ ८१ । अ भण्डार ।

६२२७ प्रति स० २ । पत्र सं ५२ । ले काल × । वे स ६६१ । ङ भण्डार ।

६२२८. समवशरणपूजा—पन्नालाल दूनीवाले । पत्र सं ८५ । आ १२३×८ इ । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र काल सं १६२१ । ले काल × । पूर्ण । वे सं ७७५ । ङ भण्डार ।

६२२६ प्रति सं० २ । पत्र सं ४१ । ले काल सं १–२६ भादपद शुक्ला १२ । वे सं ७७७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे स ७७६) और है ।

६२३० प्रति सं० ३ । पत्र स ७५ । ले काल स १६२८ सावण सुदी ३ । वे स २ । छ भण्डार ।

६२३१ प्रति स० ४ । पत्र सं १३६ । ले काल × । वे सं २७८ । ज भण्डार ।

६२३२. समुच्चयचौबीसतीर्थङ्करपूजा....... । पत्र स २ । आ ११३×५३ इ । भाषा–हिन्दी । विषय पूजा । र काल × । ले काल × । पूर्ण । वे स २ ५ । ङ भण्डार ।

ग्रन्थानुक्रमणिका

अ

ऋ

ए

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चतुर्दशीकथा	डालूराम	(हि)	७४२
चतुर्दशीविधानकथा	—	(स)	२२२
चतुर्दशीव्रतपूजा	—	(सं)	४९६
चतुर्विधध्यान	—	(सं)	१ ५
चतुर्विंशति	गुणकीर्त्ति	(हि)	६ १
चतुर्विंशतिगुणस्थानपीठिका	—	(सं)	१८
चतुर्विंशतिजयमाल	यति माघनंदि	(स)	४६६
चतुर्विंशतिजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि)	७२६
चतुर्विंशतिजिनराजस्तुति	जिनसिंहसूरि	(हि)	७
चतुर्विंशतिजिनस्तवन	जयसागर	(हि)	६१६
चतुर्विंशतिजिनस्तुति	जिनलाभसूरि	(स)	१८७
चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	(सं)	५७४
चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल	—	(प्रा)	६५७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(सं) ४०	६४५
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	नेमिचन्द पाटनी	(हि)	४०२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	बख्तावरलाल	(हि)	४०१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	मनरङ्गलाल	(हि)	४०१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि)	४०२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	वृन्दावन	(हि)	४०१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सुगनचन्द	(हि)	४०१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सेवाराम साह	(हि)	४०
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(हि)	४०१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तवन	हमविमलसूरि	(हि)	४१७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तवन	कमलविजयगणि	(सं)	१८८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	चन्द्र	(हि)	७२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	समन्तभद्र	(स)	६४७
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	—	(स)	१८८ ६२८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	माघनन्दि	(सं)	१८८ ५०६
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	—	(सं)	१८८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चतुर्विंशतितीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५६४
चतुर्विंशतिपूजा	—	(हि)	४०१
चतुर्विंशतिमण्डलविधान	—	(हि)	६४८
चतुर्विंशतिविनती	चन्द्रकवि	(हि)	६०५
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	(स)	५१६
चतुर्विंशतिस्थानक	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा)	१८
चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा	—	(स)	५०६
चतुर्विंशतिस्तवन	—	(स)	१८७ ४२१
चतुर्विंशतिस्तुति	—	(प्रा)	७७८
चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	(हि)	७७६
चतुर्विंशतिस्तोत्र	भूधरदास	(हि)	४२६
चतुरशीतिगीता	—	(सं)	६७६
चतुःषष्ठिस्तोत्र	—	(सं)	६६२
चतुःशरीस्तोत्र	—	(सं)	१८८
चन्दकथा	लालमल	(हि)	७४८
चन्दकु वर की वार्ता	—	(हि)	७१४
चन्दनबालारास	—	(हि)	६६१
चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	(हि)	२२१
चन्दनमलयागिरीकथा	चतर	(हि)	२२१
चन्दनमलयागिरीकथा	—	(हि)	७४८
चन्दनषष्ठिकथा	ब्र० श्रुतसागर	(स)	२२४ ५१४
चन्दनषष्ठिकथा	—	(सं)	२२४
चन्दनषष्ठिकथा	प० हरिचन्द्र	(अप)	२४१
चन्दनषष्ठीपूजा	सुशालचन्द	(हि)	५१६
चन्दनषष्ठीविधानकथा	—	(अप)	२४६
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	आ० छत्रसेन	(स)	६११
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं)	५१
चन्दनषष्ठीव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि)	२२४
			२४४ २४६

झ

ट–ठ–ड–ढ–ण

ध

भ

नोट—रचना के यह नाम और हैं–

१ भविष्यदत्तचौपई भविष्यदत्तपञ्चमीकथा भविष्यदत्तपञ्चमीरास

य

व

ह

ग्रंथ एवं ग्रंथकार

प्राकृत भाषा

ग्रन्थकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	आकाशपंचमीकथा	६४५
	कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	४६८
	चौसठशिवकुमारका	
	कांजी की पूजा	५१४
	जिनचरित्रकथा	६४५
	दशलक्षणीकथा	६६५
	पल्यविधानपूजा	५ ६
	पुष्पांजलिव्रतकथा	६६५
		७६४
	रत्नत्रयव्रतकथा ६४५	६६५
	रोहिणीव्रतकथा	६४५
	षोडशकारणकथा	६४५
	समवसरणपूजा	५४६
	सुगंधदशमीकथा	६४५
लोकसेन—	दशलक्षणकथा २२७	२४२
लोकेशकर—	सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका	२६६
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	७१५
लौगाक्षिभास्कर—	पूर्वमीमांसार्थप्रकरण संग्रह	१३७
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	३ १
वनमालीभट्ट—	भक्तिरत्नाकर	८
वरदराज—	लघुसिद्धान्तकौमुदी	२६१
	सारसंग्रह	९४
वररुचि—	एकाक्षरीकोश	२७
	योगशत	१ २
	[illegible]पिण्डी	२६४
	श्रुतबोध	३१५
	सर्वार्थसाधनी	९७८

ग्रन्थकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
वराहमिहिर—	षट्पञ्चाशिका	२९१
भ० वर्द्धमानदेव—	वरांगचरित्र	१६४
वर्द्धमानसूरि—	सम्यग्शास्त्र	२९१
वल्लाल—	भोजप्रबन्ध	१८५
वसुनन्दि—	देवागमस्तोत्रटीका	११५
	प्रतिष्ठापाठ	५२१
	प्रतिष्ठासारसंग्रह	५२२
	मूलाचारटीका	७६
वाग्भट्ट—	नेमिनिर्वाण	१७७
	वाग्भट्टालंकार	३१२
वादिचन्द्रसूरि—	कर्मदहनपूजा	५६
	ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१६
	पवनदूतकाव्य	१७८
वादिराज—	एकीभावस्तोत्र	३८२
		४२५ ४२७ ५७२ ५७४
		५६५, ६ ५ ६३३ ६३७
		६४४ ६५१, ६५२ ६५७,
		७२१
	पुर्वाष्टक	६५७
	पार्श्वनाथचरित्र	१७८
	यशोधरचरित्र	१६
वादीभसिंह—	क्षत्रचूडामणि	१६२
	पंचकल्याणकपूजा	५
वामदेव—	त्रिलोकदीपक	३२
	भावसंग्रह	७८
	सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	३२१
वासवसेन—	यशोधरचरित्र	१६
वाहडदास—	सन्निपातनिदान	३ ६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नागराज—	भावशतक	३३४
श्रीनिधिसमुद्र—		
श्रीपति—	जातककर्मपद्धति	२८१
	ज्योतिषयटलमाला	६७२
श्रीभूषण—	अनन्तव्रतपूजा	४५६, ५११
	चारित्रशुद्धिविधान	४७४
	पाण्डवपुराण	१५०
	भक्तामरउद्यापनपूजा	५२३, ५४०
	हरीवंशपुराण	१५७
श्रुतकीर्त्ति—	पुष्पाजलीव्रतकथा	२३४
श्रुतसागर—	अनतव्रतकथा	२१४
	अशोकरोहिणीकथा	२१६
	आकाशपचमीव्रतकथा	२१६
	चन्दनषष्ठिव्रतकथा	२२४, ५१४, ५१७
	जिनसहस्रनामटीका	३९३
	ज्ञानार्णवगद्यटीका	१०७
	तत्वार्थसूत्रटीका	२८
	दशलक्षणव्रतकथा	२२७
	पल्यविधानव्रतोपाख्यानकथा	२३३
	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६
	मेघमालाव्रतकथा	५१४
	यशस्तिलकचम्पूटीका	१८७
	यशोधरचरित्र	१९२
	रत्नत्रयविधानकथा	२३७
	रविव्रतकथा	२३७
	विष्णुकुमारमुनिकथा	२४०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	व्रतकथाकोष	२४१
	षट्पाहुडटीका	११६
	श्रुवस्कधपूजा	५४७
	षोडशकारणपूजा	५१०
	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	सिद्धचक्रपूजा	५५३
	सुगन्धदशमीकथा	५१४
सकलकीर्त्ति—	अष्टागसम्यग्दर्शन	२१५
	ऋषभनाथचरित्र	१६०
	कर्मविपाकटीका	५
	तत्त्वार्थसारदीपक	२३
	द्वादशानुप्रेक्षा	१०९
	धन्यकुमारचरित्र	१७२
	परमात्मराजस्तोत्र	४०३
	पुराणसारसंग्रह	१५१
	प्रश्नोत्तरोपासकाचार	७१, ९१
	पार्श्वनाथचरित्र	१७९
	मल्लिनाथपुराण	१५२
	मूलाचारप्रदीप	७९
	यशोधरचरित्र	१२८
	वर्द्धमानपुराण	१५३
	व्रतकथाकोश	२४२
	शातिनाथचरित्र	१९८
	श्रीपालचरित्र	२०१
	सद्भाषितावलि	३३८, ३४२
	सिद्धान्तसारदीपक	४६
	सुदर्शनचरित्र	२०८

हिन्दी भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जम्बूस्वामीचरित्र	७१
	निर्दोषसप्तमीकथा	६७६
	नेमीश्वररास	११३ १ १
		६२१ ६३८ ७५२
	पंचगुरुकीजयमाल	७६३
	प्रद्युम्नरास	१६५ ३१६
		७१२ ७१७ ७४६
	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	४ ८
	भविष्यदत्तरास	११४ ३१४
		६४८ ७४ ७११
		७५२ ७७१ ७०५
	राजाचन्द्रगुप्तकीचौपई	६२
	शीलरास	७४६
	श्रीपालरास	११८
		६८४ ७१२
		७१७ ७४६
	सुदर्शनरास	३११ ६१६
		७१२ ७४६
	हनुमच्चरित्र	२११ ५६५
		५६६ ७१७ ७३४
		७४ ७५२
		७४४ ७१२
साधर्मीभाईरायमल्ल—	ज्ञानानन्दश्रावका चार	५८
रूपचन्द—	अध्यात्मदोहा	७४६
	जकड़ी	६५ ७५२
		६११ ७५५
	जिनस्तुति	७ २

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पंचमंगल	४०१ ४२८ ४४७
		५१८ ५६५ ५७
		६२४ ६४२ ६५
		६५८ ६६१ ६६४
		६७१ ७ ४, ७ ५
		७१५, ७२
	पंचकल्याणकपूजा	५
	दोहाशतक	७४ ७४१
	पद	५८५ ५८७ ५८८
		६२४ ६६१ ७२४
		७४६ ७५५ ७६१
		७६५ ७८१
	परमार्थगीत	७६४
	परमार्थदोहा	७ १
	परमार्थहिंडोलना	७६४
	लघुमंगल	६२४ ७१६
	विनती	७६५
	समवसरणपूजा	५४६
पांडे रूपचंद—	तत्वार्थसूत्रभाषाटीका	१४
रूपदीप—	पिंगलभाषा	७ १
रेखराज—	पद	७१८
लखमण—	चन्दकथा	७४८
लक्ष्मीवल्लभ—	नवतत्वप्रकरण	३७
लक्ष्मीसागर—	पद	६८२
लब्धिविमलगणि—	ज्ञानार्णवटीकाभाषा	१ ८
पं० लाखा—	पार्श्वनाथचौपई	४४३
लाल—	पद	४४५ ६८६
लालचन्द—	भारती	६२२

★ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ★

★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×४	अय प्रकाशिका	अर्थ प्रकाशिका
१×८	विकछ	किमच
७×२६	गोमट्टसार	गोम्मटसार
१६×९	१०४	११४
१७×१९	१८१४	१८४४
३१×११	तत्वार्थ सूत्र भाषा	तत्वार्थ सूत्र भाषा–जयचन्द
३८×१०	वे सं २२१	वे सं १९१७
४७×५	५४५	५४६
४४×२४	वप	वर्षे
४८×२२	—	५९९
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
५३×१	कात	काल
५५×२६	सह	साह
५९×१५	र काल	से० काल
६३×६	न्योपार्जि	न्यायोपार्जित
६९×१०	भूधरदास	भूधरमिश्र
६९×१२	१८७१	१८०१
७५×१८	बालाविबेध	बालावबोध
७५×२१	आधार	आचार
७६×१३	भीनंदिगण	—
८८×१	सोनगिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
९९×९	१४ वी शताब्दी	१९ वीं शताब्दी
१०५×२०	१४४१	१३४१
१२१×१	धर्म एवं आचारशास्त्र	अध्यात्म एवं योग शास्त्र

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ
१३१×१	त्र
१४०×२८	१७२८
१४९×७	
१४९×७	
१६४×१०	
१६५×१	
१७१से१७६	
१७९×२८	
१८१×१७	
१९२×६	
१९२×१४	
२०८×९	
२१६×११	
२१९×६	
२४२×२५	
२९४×१६	
३११	
३१९×१	
३२०×१	
३३६×१३	
३६९×–	
३८५×१	
३८६×५	
३९६×४	
४०१×२१	
४५६×२५	
४६४×१२	
५०२×८	
५५७×२	

★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×४	अथ प्रकाशिका	अर्थ प्रकाशिका
६×८	चिकड	किवड
७×२६	गोमट्टसार	गोम्मटसार
१७×६	२०४	११४
१७×१६	१८१४	१८४४
३१×११	तत्वार्थ सूत्र भाषा	तत्वार्थ सूत्र भाषा-जयच
३८×१०	वे सं २९१	वे सं ११६२
४४×५	५४५	५४६
४४×२३	वप	वर्षे
४८×२२	—	५६६
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
५३×१	काव	काल
५५×२६	सह	साह
५६×१५	र काल	से० काल
६३×६	न्योपार्जि	न्यायोपार्जित
६६×१०	भूधरदास	भूधरमिश्र
६६×१३	१८७१	१८०१
७५×१८	बालाविवेक	बालावबोध
७५×२१	आधार	आचार
७६×१३	श्रीनंदिगण	—
६८×१	सोनगिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
६६×६	१४ वी शताब्दी	१६ वी शताब्दी
१०५×२०	१४४१	१५४१
१२१×१	धर्म एवं आचारशास्त्र	अध्यात्म एवं योग शास्त्र

★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×४	अथ प्रकाशिका	अर्थ प्रकाशिका
१×८	थिकच	किथच
७×२६	गोमट्टसार	गोम्मटसार
१६×९	३०४	३१४
१७×१६	१८१४	१८४४
३१×११	तत्त्वार्थ सूत्र भाषा	तत्त्वार्थ सूत्र भाषा–जयचन्द
३८×१०	वे सं २३१	वे सं १११२
४३×५	५४५	५४६
४४×२७	वप	वर्ष
४८×२२	—	५११
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
५३×१	काल	काल
५५×२६	सह	साह
५९×१५	र काल	ले० काल
६३×६	न्योपार्जि	न्यायोपार्जित
६९×१०	भूधरदास	भूधरमिश्र
६९×१२	१८०१	१८०१
७५×१८	बालाविबध	बालावबोध
७५×२१	आधार	आचार
७६×१३	श्रीनंदिगण	—
८८×१	सोनगिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
९९×९	१८ वीं शताब्दी	१९ वीं शताब्दी
१०५×२०	१४४१	१३४१
१२१×१	धर्म एवं आचारशास्त्र	अभ्यास एवं योग शास्त्र

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१३१×१	त्र	न्न
१४०×२८	१७२८	१८२८
१४६×७		र० कालसं० १६६६

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
५७३×१६	संस्कृत	प्राकृत
५७४×१२	संस्कृत	प्राकृत
५७४×१३	—	संस्कृत
५७५×१०	सस्कृत	अपभ्रंश
५७६ २०	रसकौतुकरामसभा रञ्जन	रसकौतुकराजसभा रञ्जन
५८८×१७	ज्ञानतराय	धानतराय
५९१×१०	,,	—
५९४×१८	सोलहकारणरास	सोलहकारणरास
६०७×२२	पद्मावतीछन्द	पद्मावतीछन्द
६११×२	पडिकम्मणसूत	पडिकम्मणसूत्र
६१५×१७	५४५१	५४३१
६२३×२३	मानिगरास	नानिगराम
६२३×२४	वरा	वच
६२८×१४	प्राकृत	अपभ्रंश
६२८×२१	योगिचर्या	योगचर्या
६३५×१०	अपभ्रंश	प्राकृत
,, ×१६	आ० सोमसेन	सोममम
६३६×१४	अपभ्रंश	संस्कृत
६३७×१०	स्वयम्भूस्तोत्रइष्टोपदेश	इष्टोपदेश
६३९×१०	पंचकल्याण पूजा	पंचकल्याणपूजा
,, ×२६	त	कृत
६४२×६	रामसेन	रामसिंह
६४५×४	,,	सस्कृत
६४८×६	रायमल्ल	ब्रह्म रायमल्ल
६४९×१७	कमलप्रभसूरि	कमलप्रभसूरि
६६१×२	पचाचा	बधावा
६७०×१५	पच्चीसी	जैन पच्चीसी
६७१×१२	ज्योतिस्पटमाला	ज्योतिपपटलमाला
६८०×२५	कल्याणमन्दि स्तोत्र	कल्याणमन्दिर स्तोत्र
६९१×६	नन्दराम	नन्ददास